लोक महाकाव्य लोरिकायन

(लोरिक और चंदा की लोक-गाथा)

मूल पाठ, भावार्थ तथा टिप्पणियाँ

डॉ० श्याम मनोहर पाण्डेय
ओरियंटल विश्वविद्यालय, नेपुल्स, इटली

साहित्य भवन [प्रा] लिमिटेड
के.पी. कक्कड़ रोड, इलाहाबाद-२११००३

LOK MAHAKAVYA LORIKAYAN

By
DR. SHYAM MANOHAR PANDEY
Istituto Universitario Orientale,
Naples, ITALY

प्रथम संस्करण : १९८५ मूल्य : १५०.००

साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, ९३, के० पी० कक्कड़ रोड, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित तथा स्टार प्रिण्टर्स, २८७, दरियाबाद, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित

विषय-सूची

□ □

प्राक्कथन

'लोकमहाकाव्य लोरिकायन' लोरिक कथाचक्र का तृतीय पाठ है। 'लोकमहाकाव्य लोरिकी' (१९७९) तथा 'लोकमहाकाव्य चनैनी' (१९८२) की ही भाँति यह पाठ अपने आप में स्वतन्त्र है। सच बात तो यह है कि मेरे संग्रह के सभी पाठ अपने आप मे पूर्ण हैं। सभी गायक मूलकथा को लेकर अपने ढंग से लोरिकायन की कथा को गाते हैं। सभी पाठ परस्पर भिन्न हैं। इसीलिए मुझे सभी पाठो को स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित करने का निर्णय लेना पड़ा। यह संपूर्ण योजना दस भागों मे पूर्ण होगी। एक भाग में लोरिकायन का विस्तृत अध्ययन और विषयवस्तु का विवेचन होगा। एक भाग मे शब्द कोश होगा।

प्रस्तुत लेखक ने 'लोकमहाकाव्य लोरिकी' और 'लोकमहाकाव्य चनैनी' की भूमिकाओ मे लोकमहाकाव्यों की सूत्र शैली तथा रचना प्रक्रिया आदि पर विस्तार से विवेचन किया है। इस जिल्द में लोरिकायन की कथा का उद्गम और भौगोलिकता पर विचार किया गया है। विद्वानों और पाठकों ने जिस प्रकार लोरिकी और चनैनी को अपनाया है उससे इस कार्य को आगे बढ़ाने मे बड़ा बल मिला है। आशा है यह भाग भी सबको पसंद आयेगा।

भाई नामवर सिंह, श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, डॉ० पारस नाथ तिवारी, श्री त्रिलोकी नाथ पांडेय, आदि ने इस कार्य मे रुचि ली है। इसके लिए मैं इन विद्वानों का आभारी हूँ।

श्री अमीन अंसारी, श्री उमानाथ तिवारी तथा साहित्य भवन के कर्मचारियों विशेषकर श्री रामनाथ लाल 'दीवान' जी और श्री रामचन्द्र शर्मा ने इस कार्य में दिलचस्पी ली। इन सबको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

मेरी पत्नी श्रीमती कृष्णबाला पांडेय, एम॰ ए० (हिन्दी, संस्कृत) ने इस पाठ को टेप से सुनकर प्रथम प्रतिलिपि तैयार की। उनकी सहायता के बिना यह कार्य और समय लेता।

अमेरिकन इंस्टीच्यूट आफ इंडियन स्टडीज़ की फेलोशिप पर १९६६ में इस महाकाव्य का संग्रह सभव हुआ। प्रकाशन के लिए मेरे विश्वविद्यालय इस्तीत्यूतो यूनिवर्सितारियो ओरियंताले (ओरियंटल विश्वविद्यालय) नेपुल्स, इटली ने सहायता दी। इन सबको धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। साहित्य भवन प्राइवेट

लिमिटेड के मैनेजिंग डाइरेक्टर भाई गिरीश जी भवानी पेपर मिल्स के कार्य में व्यस्त रहते हुए भी मेरे इस कार्य की प्रगति के बारे में हमेशा पूछताछ करते रहते हैं। उनका मेरे ऊपर सहज स्नेह है। उनकी सहायता के बिना यह कार्य कितना आगे बढ़ पाता यह कहना कठिन है। मैं उनका विशेष रूप से आभारी हूँ।

९, अप्रैल १९८५

श्याममनोहर पांडेय
ओरियंटल यूनिवर्सिटी
नेपुल्स, इटली

भूमिका

'लोरिकायन' का प्रस्तुत पाठ उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर[1] जिले मे अगोरी[2] के पास अक्तूबर १९६६ ई० में संगृहीत किया गया था। सभवत: इसी अगोरी मे मंजरी के साथ लोरिक का विवाह सम्पन्न हुआ था। अत: अगोरी के पास का यह पाठ स्वाभाविक रूप से महत्वपूर्ण बन जाता है। इसके गायक भी ददई केवट हैं, अहीर नही। मेरे आठ गायको मे ददई केवट ही ऐसे गायक हैं जो अहीर नही हैं। अन्य सभी गायक अहीर हैं। ददई केवट के गुरु भी ददई अहीर थे जो गायक के गाँव कुरहुल के रहने वाले थे। प्रस्तुत गायक ददई केवट का गाँव कुरहुल अगोरी से लगभग पाँच मील की दूरी पर है। चोपन से यह स्थान सोन नदी पार करके दो मील पड़ता है।

प्रस्तुत पाठ का कथानक

१. अगोरी, लोरिक का विवाह

'लोरिकायन' की कथा अगोरी से प्रारम्भ होती है जहाँ लोरिक और मंजरी का विवाह सम्पन्न होता है। मेरे अन्य कतिपय गायक 'सवरू का विवाह' या 'सुहवल' से कथा प्रारम्भ करते हैं। अगोरी का राजा मोलागत है वह मजरी को अपने रनिवास मे रखना चाहता है क्योकि जब मंजरी गर्भ मे ही थी तब उसका पिता महर जुए मे उसे हार चुका था।[3] महर वीर लोरिक के पास सदेश भेजता है। वह मंजरी से विवाह करने के लिए सवा लाख बारातियो को लेकर आता है जिनमे अनेक वीर योद्धा सम्मिलित हैं। अनेक प्रकार की कठिनाईयो और लडाईयो के बाद लोरिक मंजरी से विवाह करता है तथा मोलागत का सहार कर अपने घर गउरा वापस आता है। इस अश को गायक 'अगोरी' या 'लोरिक का विवाह' कहते हैं।

अगोरी की कथा के निम्नलिखित तत्व हैं :

- अगोरी की कथा प्रारम्भ करने के पूर्व गायक अनेक देवताओ का सुमिरन करता है। गायक रामनाम का स्मरण करता है। धरती, डीह के देवता, श्मशान की आत्माएँ तथा गोरइया[4] देवता की प्रार्थना करता है जिन्हे पूजा मे सूवर चढाया जाता है। गायक बघौता[5] का भी स्मरण करता है जिन्हे टोना टटका करने वाले ओझा स्मरण करते हैं। फिर गायक राम-लक्ष्मण, गौरी-गणेश, दुर्गा आदि की प्रार्थना करता है। दुर्गा से गायक यह भी कहता है "ऐ दुर्गा, तू मेरी जिह्वा के लिए अलंकार हो। तुम मेरे भूले हर्फों को जोड देने वाली हो। ऐ देवी, यदि कहीं एक भी शब्द मद पड़ गया तो मैं फिर तुम्हारा नाम नही स्मरण करूँगा।"[6]

गोरी की कथा के तन्तु :

प्रार्थना के वाद गायक अगोरी का वर्णन करता है जहां वारह पल्लियां हैं। तरपन गलियां और वाजार हैं। वहां का सूवा राजा मोलागत है।

(१) एक दिन अगोरी का राजा मोलागत अपने राज्य की परिक्रमा करने जाता है और देखता है कि उसके राज्य में महर अहीर है जो वड़ा धनी और शक्तिशाली है। वह राजा मोलागत की उपेक्षा कर देता है। अपनी उपेक्षा से राजा अत्यन्त दुःखी होता है।

(२) मंत्री राजा मोलागत को सलाह देते हैं कि वह महर से जुआ खेले और उसे पराजित करे।

(३) राजा के सिपाहियों का महर के यहां जाना और मोलागत की चाँदनी में उसे ले आना।

(४) राजा मोलागत का महर के साथ जुआ खेलना। जुए में राजा की पराजय। राजा का राज्य त्यागना।

(५) ब्राह्मण के वेश में ब्रह्मा का प्रकट होना और मोलागत को सहायता का आश्वासन देना।

(६) मोलागत और महर का फिर जुआ खेलना। इस वार महर जीते हुए राजपाट, धन, पशु, नौकर-चाकर आदि को खो वैठता है। सब कुछ हार जाने पर वह अपनी पत्नी की कोख दाँव पर रख देता है। राजा मोलागत महर की पत्नी की कोख भी जीत लेता है।

(७) महर की पत्नी को कन्या उत्पन्न होती है जिसका नाम मंजरी रखा जाता है। उसके जन्म के अवसर पर सोने की वर्षा होती है।

(८) गायक ने मंजरी के जन्म के साथ ही साथ लोरिक के जन्म की कथा भी गायी है। भादों का महीना था। आधीरात थी उसी समय वोहा में खोइलनि के गर्भ से लोरिक का जन्म होता है। गायक उसे कृष्ण कन्हैया की संज्ञा देता है।[७]

(९) मोलागत को नोनवा चमारिन से पता चलता है कि महरिन के गर्भ से मंजरी पैदा हुई है और उसके जन्म पर स्वर्ण की वर्षा हुई है।[८]

(१०) मंजरी का नित्य प्रति वढ़ना तथा विवाह करने का प्रण करना—अपने भावी पति के सम्वन्ध में मंजरी का संकेत देना—ब्राह्मण, नाऊ आदि का लोरिक के यहां गउरा में तिलक चढ़ाने के लिए आना।

(११) लोरिक का तिलक सम्पन्न होना—सवा लाख वारातियों के साथ लोरिक का मंजरी से विवाह करने के लिए अगोरी प्रस्थान करना।

(१२) अगोरी पहुँचने के पूर्व की वाधाएं :

(क) गउरा के राजा सहदेव द्वारा विघ्न उपस्थित किया जाना। स्मरणीय है कि सहदेव की लड़की चनवा (चंदा) है जिससे वाद

में चलकर लोरिक का प्रेम हो जाता है। फिर दोनों गउरा छोड़ कर हल्दी भाग जाते हैं। चनवा का पिता लोरिक की बारात में जाने वालो को दण्डित करने के लिए घोषणा करता है। बाद में लोरिक और उसके परिवार से सहदेव का समझौता हो जाता है।

(ख) लोरिक की बारात का आगे बढना तथा उसका कोटवा[१] भदोखरि नामक स्थान पर डेरा डालना। कोटवा के ग्वालों का लोरिक की बारात के लिए भोजन बनाना—लोरिक के बूढ़े पिता द्वारा कोटवा के ग्वालों का अपमान—ग्वालों का राजा बामदेव के पास जाना—अपमान का बदला लेने के लिए राजा बामदेव का लोरिक से झगड़ा मोल लेना—लड़ाई में लोरिक द्वारा बामदेव पराजित।

(१३) बारात का अगोरी के निकट पहुँचना—बाजे-गाजे की तुमुल ध्वनि और बारात की कोलाहल सुनकर अगोरी का राजा मोलागत चिंतित।

(१४) सोन नदी मे बाढ—लोरिक के अनुनय-विनय पर झीमल मल्लाह का बारात को अगोरी के पार उतारना।

(१५) मंजरी की माँ द्वारा बारातियों की परीक्षा लिया जाना—अगोरी में कँटीली झाड़ी और गन्दे खेत में बारात के टिकने के लिए महरिन द्वारा जगह दिलवाया जाना—लोरिक के पिता कठइत द्वारा कँटीली झाड़ियों को साफ़ कराया जाना और बारात का टिकना।

(१६) बारातियो को खाने के लिए चावल, घी तथा सवालाख बकरे भेजना—मंजरी की माँ यह संदेश भेजती है कि बाराती सब कुछ नही खा जायेंगे तो बारात वापस कर दी जायगी और मंजरी का विवाह सम्पन्न नही होगा। बारात का भरपेट भोजन करना तथा शेप सामग्री को सोन नदी में चुपके से फेंकवा देना।

(१७) मंजरी की माँ द्वारा समधी की बुद्धि की परीक्षा लिया जाना :

(क) मंजरी की माँ महरिन समधी की अक्ल की परीक्षा लेने के लिए, मिट्टी के कुल्हड से रस्सी बनाने का आग्रह करती है।

(ख) समधी द्वारा उलटी चलनी में पानी मँगाना—कठइत की बुद्धि पर महरिन चकित।

(ग) समधी कठइत द्वारा महरिन से सोलह चूचियों वाली भैंस की माँग करना—माँ की परेशानी देखकर मंजरी का सोलह टोटियों वाला गिलास भेजवाया जाना—इस बुद्धि-कौशल पर कठइत का आश्चर्य मे पड़ जाना।

(१८) बारात का द्वारचार करना—मंजरी और लोरिक का विवाह सम्पन्न। लोरिक और मंजरी के विवाह के उपरान्त लोरिक को अपनी वीरता का

परिचय देना पड़ता है। वह मंजरी को बार-बार आश्वासन देता है कि उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता है। वह सिंहनी का पुत्र है। किन्तु मंजरी की चिन्ताएँ कम नहीं होतीं। लोरिक अनेक वीरों को परास्त करता है और मंजरी को गउरा लाता है।

विवाह के उपरान्त 'लोरिकायन' में निम्नलिखित घटनाएँ घटती हैं :

(१९) मंजरी की विदाई होती है तब अगोरी का राजा मोलागत अपने सहायकों के साथ आकर मंजरी की डोली छेंकता है। लोरिक की मार से मोलागत तथा अन्य सभी सहायक भाग खड़े होते हैं।

(२०) मंजरी की डोली उठने पर मोलागत का क्रन्दन—सिपाहियों का वीर भांट के यहाँ जाना। मोलागत का आधा राज्य पाने के लोभ में वीर भांट का लोरिक से लड़ने के लिए उद्यत होना।

(२१) लोरिक के प्रहार से भांट का खून से लथपथ-होना और मैदान छोड़ कर भाग जाना।

(२२) मोलागत ने पश्चिम में बघेल राजाओं को पत्र लिखा जो तुपकी (छोटी तोप) चलाने में कुशल थे। उसने दक्षिण के कोल राजाओं को पत्र लिखा जो तीर चलाने में प्रवीण थे। पूर्व के राजाओं को भी उसने पत्र लिखा जो लोहा में (तलवार चलाने में) पटु थे। उसने उत्तर के रवसेल राजाओं को पत्र लिखा जो सेला चलाने में तेज थे। यहाँ यह भी प्रकट होता है कि मोलागत क्षत्रिय था। उसकी लड़ाई ग्वाल अहीर लोरिक से थी। मोलागत लिखता है "यदि कोई क्षत्रिय है तो पत्र पाते ही अन्न खाना छोड़ दे। अन्न उसके लिए हराम है तथा पानी पीना रुधिर पीने के समान है। (पृष्ठ १११) परदेशी अहीर चढ़ आया है तथा अगोरी में संघर्ष छिड़ गया है।"[१०]

(२३) लोरिक के हाथों समस्त सेनाओं की पराजय। दुर्गा सदैव गाढ़े समय में लोरिक की सहायता करती हैं।

(२४) लोरिक को मारने के लिए मोलागत द्वारा इन्द्रावत[११] हाथी भेजा जाना। हाथी का प्रबल आक्रमण—इन्द्रावत हाथी का सूंड़ दुर्गा द्वारा पकड़ लिया जाना।

(२५) लोरिक को परास्त करने के लिए मोलागत के भांजे निरम्मल का आना—निरम्मल द्वारा बार-बार आक्रमण किया जाना। दुर्गा की सहायता से लोरिक का बच जाना।

(२६) लोरिक का अहंकार—दुर्गा को श्रेय न देने से लोरिक युद्ध में आहत और मृत।

(२७) दुर्गा के प्रयास से लोरिक जीवित।

(२८) लोरिक द्वारा बार-बार सिर काटे जाने पर भी निरम्मल[१२] का जीवित हो उठना।

(२९) निरम्मल का अन्त में धराशायी होना तथा उसकी पत्नी का शव के साथ सती होना।

(३०) मंजरी के साथ लोरिक का गउरा वापस आना।

अगोरी की कथा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नायक अहीर जाति की गरिमा की रक्षा के लिए मंजरी से विवाह करता है और दुष्ट राजा मोलागत को, सहायकों को अपने पौरुष, शक्ति और पराक्रम से नष्ट करता है। किन्तु युद्ध के समस्त प्रसंगों से यह बात उभर कर आती है कि देवी दुर्गा की शक्ति और सहायता के बिना अन्य वीरों के समक्ष लोरिक का पौरुष निर्बल पड़ने लगता है। वह कई बार श्रीहत हो जाता है। यदि दुर्गा को उसके जीवन से निकाल दिया जाय तो वह उच्च-कोटि का वीर नहीं रह जाता। चाहे उसका युद्ध निरम्मल से हो या इनरावत (इन्द्रावत) हाथी से हो या भांट से हो, सर्वत्र दुर्गा ही लोरिक को विजय का श्रेय दिलाती है, यद्यपि बार-बार लोरिक अपनी वीरता का कथन करता है तथा अपनी प्रबल शक्ति का परिचय देता है। शायद यह इसलिए भी होता है कि लोरिक जिन वीरों से युद्ध करता है उनमें कई सामान्य चरित्र नहीं हैं। निरम्मल में देवी शक्ति का प्रकाश है, उसे देवी वरदान प्राप्त है। हाथी इनरावत भी देवी शक्ति से सम्पन्न है। देवी कृपा से सम्पन्न वीरों का पराभव भी देवी शक्ति या पराक्रम से होना चाहिए। लोरिक की तुलना गायक कृष्ण से अवश्य करता है और कहता है कि जब भादों का महीना था, आधी रात थी, तब कृष्ण कन्हैया लोरिक का जन्म हुआ। पर लोरिक में कृष्ण के चरित्र के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते। दुर्गा की सहायता से ही वह असम्भव कार्य सम्भव बना लेता है।

२. सुहवल—मलसांवर का विवाह

पटना, बलिया, गाजीपुर, बनारस आदि के गायक सर्वप्रथम सुहवल की लड़ाईयाँ तथा मलसांवर के विवाह के प्रसंग गाते हैं जिनमें मलसांवर से बमरी की पुत्री सतिया का विवाह अनेक युद्धों के बाद सम्पन्न होता है। इलाहाबाद के मेरे गायक रामअवतार जिनका पाठ मैं प्रकाशित कर चुका हूँ[१३] अगोरी तथा लोरिक के विवाह के प्रसंग ददई केवट की ही भाँति पहले गाते हैं। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि वे अगोरी और नायक लोरिक के विवाह के प्रसंगों को अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हैं। बनारस और उसके पूर्व के क्षेत्रों, गाजीपुर, बलिया, पटना आदि के गायक सांवरु या मलसांवर का विवाह पहले इसलिए गाते हैं कि बड़े भाई का विवाह पहले होना चाहिए। मलसांवर लोरिक के बड़े भाई थे अतः उनके विवाह के पहले ही लोरिक का विवाह करा देना इन गायकों की दृष्टि में उचित नहीं है। मलसांवर खोइलनि के पालित पुत्र हैं। खोइलनि के गर्भ से लोरिक बाद में उत्पन्न हुआ था।

परिचय देना पड़ता है। वह मंजरी को बार-बार आश्वासन देता है कि उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता है। वह सिंहनी का पुत्र है। किन्तु मंजरी की चिन्ताएँ कम नहीं होतीं। लोरिक अनेक वीरों को परास्त करता है और मंजरी को गउरा लाता है।

विवाह के उपरान्त 'लोरिकायन' में निम्नलिखित घटनाएँ घटती हैं :

(१९) मंजरी की विदाई होती है तब अगोरी का राजा मोलागत अपने सहायकों के साथ आकर मंजरी की डोली छेंकता है। लोरिक की मार से मोलागत तथा अन्य सभी सहायक भाग खड़े होते हैं।

(२०) मंजरी की डोली उठने पर मोलागत का क्रन्दन—सिपाहियों का वीर भांट के यहाँ जाना। मोलागत का आधा राज्य पाने के लोभ में वीर भांट का लोरिक से लड़ने के लिए उद्यत होना।

(२१) लोरिक के प्रहार से भांट का खून से लथपथ होना और मैदान छोड़ कर भाग जाना।

(२२) मोलागत ने पश्चिम में बघेल राजाओं को पत्र लिखा जो तुपकी (छोटी तोप) चलाने में कुशल थे। उसने दक्षिण के कोल राजाओं को पत्र लिखा जो तीर चलाने में प्रवीण थे। पूर्व के राजाओं को भी उसने पत्र लिखा जो लोहा में (तलवार चलाने में) पटु थे। उसने उत्तर के रक्सेल राजाओं को पत्र लिखा जो सेला चलाने में तेज थे। यहाँ यह भी प्रकट होता है कि मोलागत क्षत्रिय था। उसकी लड़ाई ग्वाल अहीर लोरिक से थी। मोलागत लिखता है "यदि कोई क्षत्रिय है तो पत्र पाते ही अन्न खाना छोड़ दे। अन्न उसके लिए हराम है तथा पानी पीना रुधिर पीने के समान है। (पृष्ठ १११) परदेशी अहीर चढ़ आया है तथा अगोरी में संघर्ष छिड़ गया है।"[१०]

(२३) लोरिक के हाथों समस्त सेनाओं की पराजय। दुर्गा सदैव गाढ़े समय में लोरिक की सहायता करती हैं।

(२४) लोरिक को मारने के लिए मोलागत द्वारा इन्द्रावत[११] हाथी भेजा जाना। हाथी का प्रबल आक्रमण—इन्द्रावत हाथी का सूंड़ दुर्गा द्वारा पकड़ लिया जाना।

(२५) लोरिक को परास्त करने के लिए मोलागत के भांजे निरम्मल का आना—निरम्मल द्वारा बार-बार आक्रमण किया जाना। दुर्गा की सहायता से लोरिक का बच जाना।

(२६) लोरिक का अहंकार—दुर्गा को श्रेय न देने से लोरिक युद्ध में आहत और मृत।

(२७) दुर्गा के प्रयास से लोरिक जीवित।

(२८) लोरिक द्वारा बार-बार सिर काटे जाने पर भी निरम्मल[१२] का जीवित हो उठना।

(२९) निरम्मल का अन्त मे धराशायी होना तथा उसकी पत्नी का शव के साथ सती होना।

(३०) मजरी के साथ लोरिक का गउरा वापस आना।

अगोरी की कथा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नायक अहीर जाति की गरिमा की रक्षा के लिए मजरी से विवाह करता है और दुष्ट राजा मोलागत को, सहायको को अपने पौरुष, शक्ति और पराक्रम से नष्ट करता है। किन्तु युद्ध के समस्त प्रसगो से यह बात उभर कर आती है कि देवी दुर्गा की शक्ति और सहायता के बिना अन्य वीरो के समक्ष लोरिक का पौरुष निर्बल पडने लगता है। वह कई बार धीहत हो जाता है। यदि दुर्गा को उसके जीवन से निकाल दिया जाय तो वह उच्च-कोटि का वीर नही रह जाता। चाहे उसका युद्ध निरम्मल से हो या इनरावत (इन्द्रावत) हाथी से हो या भाट से हो, सर्वत्र दुर्गा ही लोरिक को विजय का श्रेय दिलाती है, यद्यपि बार-बार लोरिक अपनी वीरता का कथन करता है तथा अपनी प्रबल शक्ति का परिचय देता है। शायद यह इसलिए भी होता है कि लोरिक जिन वीरो से युद्ध करता है उनमे कई सामान्य चरित्र नही हैं। निरम्मल मे दैवी शक्ति का प्रकाश है, उसे दैवी वरदान प्राप्त है। हाथी इनरावत भी दैवी शक्ति से सम्पन्न है। दैवी कृपा से सम्पन्न वीरो का पराभव भी दैवी शक्ति या पराक्रम से होना चाहिए। लोरिक की तुलना गायक कृष्ण से अवश्य करता है और कहता है कि जब भादो का महीना था, आधी रात थी, तब कृष्ण कन्हैया लोरिक का जन्म हुआ। पर लोरिक मे कृष्ण के चरित्र के लक्षण नही दिखाई पडते। दुर्गा की सहायता से ही वह असम्भव कार्य सम्भव बना लेता है।

२. सुहवल—मलसांवर का विवाह

पटना, बलिया, गाजीपुर, बनारस आदि के गायक सर्वप्रथम सुहवल की लडाईयाँ तथा मलसावर के विवाह के प्रसग गाते हैं जिनमें मलसावर से बमरी की पुत्री सतिया का विवाह अनेक युद्धो के बाद सम्पन्न होता है। इलाहाबाद के मेरे गायक रामअवतार जिनका पाठ मैं प्रकाशित कर चुका हूँ[१३] अगोरी तथा लोरिक के विवाह के प्रसग ददई केवट की ही भाँति पहले गाते हैं। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि वे अगोरी और नायक लोरिक के विवाह के प्रसगो को अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हैं। बनारस और उसके पूर्व के क्षेत्रो, गाजीपुर, बलिया, पटना आदि के गायक सवरू या मलसावर का विवाह पहले इसलिए गाते हैं कि बडे भाई का विवाह पहले होना चाहिए। मलसावर लोरिक के बडे भाई थे अत. उनके विवाह के पहले ही लोरिक का विवाह करा देना इन गायको की दृष्टि मे उचित नही है। मलसावर खोइलनि के पालित पुत्र हैं। खोइलनि के गर्भ से लोरिक बाद मे उत्पन्न हुआ था।

परिचय देना पड़ता है। वह मंजरी को बार-बार आश्वासन देता है कि उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता है। वह सिंहनी का पुत्र है। किन्तु मंजरी की चिन्ताएँ कम नहीं होतीं। लोरिक अनेक वीरों को परास्त करता है और मंजरी को गउरा लाता है।

विवाह के उपरान्त 'लोरिकायन' में निम्नलिखित घटनाएँ घटती हैं :

(१९) मंजरी की विदाई होती है तब अगोरी का राजा मोलागत अपने सहायकों के साथ आकर मंजरी की डोली छेंकता है। लोरिक की मार से मोलागत तथा अन्य सभी सहायक भाग खड़े होते हैं।

(२०) मंजरी की डोली उठने पर मोलागत का क्रन्दन—सिपाहियों का वीर भांट के यहाँ जाना। मोलागत का आधा राज्य पाने के लोभ में वीर भांट का लोरिक से लड़ने के लिए उद्यत होना।

(२१) लोरिक के प्रहार से भांट का खून से लथपथ-होना और मैदान छोड़ कर भाग जाना।

(२२) मोलागत ने पश्चिम में बघेल राजाओं को पत्र लिखा जो तुपकी (छोटी तोप) चलाने में कुशल थे। उसने दक्षिण के कोल राजाओं को पत्र लिखा जो तीर चलाने में प्रवीण थे। पूर्व के राजाओं को भी उसने पत्र लिखा जो लोहा में (तलवार चलाने में) पटु थे। उसने उत्तर के रक्सेल राजाओं को पत्र लिखा जो सेला चलाने में तेज थे। यहाँ यह भी प्रकट होता है कि मोलागत क्षत्रिय था। उसकी लड़ाई ग्वाल अहीर लोरिक से थी। मोलागत लिखता है "यदि कोई क्षत्रिय है तो पत्र पाते ही अन्न खाना छोड़ दे। अन्न उसके लिए हराम है तथा पानी पीना रुधिर पीने के समान है। (पृष्ठ १११) परदेशी अहीर चढ़ आया है तथा अगोरी में संघर्ष छिड़ गया है।"[१०]

(२३) लोरिक के हाथों समस्त सेनाओं की पराजय। दुर्गा सदैव गाढ़े समय में लोरिक की सहायता करती हैं।

(२४) लोरिक को मारने के लिए मोलागत द्वारा इन्द्रावत[११] हाथी भेजा जाना। हाथी का प्रबल आक्रमण—इन्द्रावत हाथी का सूँड़ दुर्गा द्वारा पकड़ लिया जाना।

(२५) लोरिक को परास्त करने के लिए मोलागत के भांजे निरस्मल का आना—निरस्मल द्वारा बार-बार आक्रमण किया जाना। दुर्गा की सहायता से लोरिक का बच जाना।

(२६) लोरिक का अहंकार—दुर्गा को श्रेय न देने से लोरिक युद्ध में आहत और मृत।

(२७) दुर्गा के प्रयास से लोरिक जीवित।

(२८) लोरिक द्वारा बार-बार सिर काटे जाने पर भी निरम्मल[12] का जीवित हो उठना।

(२९) निरम्मल का अन्त मे धराशायी होना तथा उसकी पत्नी का शव के साथ सती होना।

(३०) मजरी के साथ लोरिक का गउरा वापस आना।

अगोरी की कथा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नायक अहीर जाति की गरिमा की रक्षा के लिए मजरी से विवाह करता है और दुष्ट राजा मोलागत को, सहायको को अपने पौरुष, शक्ति और पराक्रम से नष्ट करता है। किन्तु युद्ध के समस्त प्रसंगो से यह बात उभर कर आती है कि देवी दुर्गा की शक्ति और सहायता के बिना अन्य वीरो के समक्ष लोरिक का पौरुष निर्बल पडने लगता है। वह कई बार श्रीहत हो जाता है। यदि दुर्गा को उसके जीवन से निकाल दिया जाय तो वह उच्च-कोटि का वीर नही रह जाता। चाहे उसका युद्ध निरम्मल से हो या इनरावत (इन्द्रावत) हाथी से हो या भाट से हो, सर्वत्र दुर्गा ही लोरिक को विजय का श्रेय दिलाती है, यद्यपि बार-बार लोरिक अपनी वीरता का कथन करता है तथा अपनी प्रबल शक्ति का परिचय देता है। शायद यह इसलिए भी होता है कि लोरिक जिन वीरो से युद्ध करता है उनमे कई सामान्य चरित्र नही हैं। निरम्मल मे दैवी शक्ति का प्रकाश है, उसे देवी वरदान प्राप्त है। हाथी इनरावत भी दैवी शक्ति से सम्पन्न है। दैवी कृपा से सम्पन्न वीरो का पराभव भी दैवी शक्ति या पराक्रम से होना चाहिए। लोरिक की तुलना गायक कृष्ण से अवश्य करता है और कहता है कि जब भादो का महीना था, आधी रात थी, तब कृष्ण कन्हैया लोरिक का जन्म हुआ। पर लोरिक मे कृष्ण के चरित्र के लक्षण नही दिखाई पडते। दुर्गा की सहायता से ही वह असम्भव कार्य सम्भव बना लेता है।

२. सुहवल—मलसावर का विवाह

पटना, बलिया, गाजीपुर, बनारस आदि के गायक सर्वप्रथम सुहवल की लडाईयाँ तथा मलसांवर के विवाह के प्रसग गाते हैं जिनमें मलसावर से बमरी की पुत्री सतिया का विवाह अनेक युद्धो के बाद सम्पन्न होता है। इलाहाबाद के मेरे गायक रामअवतार जिनका पाठ मैं प्रकाशित कर चुका हूँ[13] अगोरी तथा लोरिक के विवाह के प्रसग ददई केवट की ही भाँति पहले गाते हैं। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि वे अगोरी और नायक लोरिक के विवाह के प्रसगो को अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हैं। बनारस और उसके पूर्व के क्षेत्रो, गाजीपुर, बलिया, पटना आदि के गायक सवरू या मलसावर का विवाह पहले इसलिए गाते हैं कि बडे भाई का विवाह पहले होना चाहिए। मलसावर लोरिक के बडे भाई थे अत. उनके विवाह के पहले ही लोरिक का विवाह करा देना इन गायको की दृष्टि मे उचित नही है। मलसावर खोइलनि के पालित पुत्र हैं। खोइलनि के गर्भ से लोरिक बाद मे उत्पन्न हुआ था।

ददई केवट का 'सुहवल' या मलसांवर के विवाह का यह अध्याय अन्य गायकों की अपेक्षा बहुत ही संक्षिप्त है। ददई केवट न तो लोरिक के जन्म की परिस्थितियों को विस्तार देते हैं और न तो मलसांवर के जन्म की कहानी बताते हैं। खोइलनि वंध्या थीं। संवरू की माता एक ब्राह्मणी थी जिसने पैदा होते ही बच्चे को फेंक दिया था। खोइलनि ने उस फेंके हुए बच्चे को घर लाकर उसका पालन-पोषण किया था। मेरे गायक शिवनाथ चौधरी[१४] ने मलसांवर की कहानी विस्तार से कही है। खोइलनि की तपस्या करने पर सूर्य की कृपा से लोरिक बाद में उत्पन्न हुआ, यह कथा भी शिवनाथ चौधरी ने विस्तार से गायी है। संवरू के जन्म की कथा को शिवनाथ चौधरी ने इस प्रकार गाया है—

"एगो आजु बाम्हनि लड़किया बीतल बारह बरिस रहलीं
अ गउरा में परलि रहलिन बरिया रे कुंवारि
....
आजु रनियां चोहुँकिय के अंखिया आपन खोलि जो देले
आगे डीठि सुरुज के मिलल लेलकार—
इहे आज सुरुजइ ना लड़िकी के डीठिय मिलल
ओ रनियां के सांचो के गरभवे रहिन जाइ"

(मेरे संग्रह के अप्रकाशित पाठ से उद्धृत)

("एक ब्राह्मण की लड़की थी। वह बारह वर्ष की हो चुकी थी तथा गउरा में बालकुमारी थी। उसने अचकचाकर आंख खोली तो सूर्य की दृष्टि लग गयी। सूर्य से दृष्टि मिल जाने पर रानी लड़की को सचमुच गर्भ रह गया।")

नवें महीने में उसके दो वीर पुत्र, मलसांवर और सुबच्चन, उत्पन्न हुए। उसने दोनों बच्चों को एक पात्र में भरवा कर एक छोटे गड्ढे में फेंकवा दिया। वंध्या खोइलनि दही बेचने गयी थी। उसने एक बच्चे को उठा लिया और घर लाकर उसका पालन-पोषण किया। बच्चे का नाम मलसांवर पड़ा। दूसरे बच्चे को पिपरी के एक दुसाध की वंध्या स्त्री ले गयी। उस लड़के का नाम सुबच्चन पड़ा।

"आजु पंचे संवरू पी लेहलनि छीर खोइलनि के
गउरा में अहीर के बाल भइलन कहाय
सुबच्चन जाइ के पी लेहलनि छीर—
बरम्हदे दुसाधिनि के परि गइलन दुसाध कहार"

(मेरे द्वारा संग्रहीत शिवनाथ चौधरी के अप्रकाशित पाठ से)

शिवनाथ चौधरी कहते हैं "संवरू ने खोइलनि का दूध पी लिया अतः गउरा में वे अहीर कहलाये। सुबच्चन ने दुसाध स्त्री बरम्हदे का दूध पी लिया अतः वह दुसाध कहे गये।"

मलसांवर के जन्म तथा खोइलनि द्वारा पालित-पोषित होने की कथा न तो बनारस के पांचू भगत के पाठ में पाई जाती है और न इलाहाबाद के रामअवतार

यादव कि पाठ मे। ददई केवट के पाठ मे भी केवल यही सकेत मिलता है कि वे बोहा मे रहते थे और लोरिक से उनका प्रगाढ प्रेम था। जैसा बताया जा चुका है ददई केवट लोरिक के विवाह के बाद सवरू के विवाह का प्रसग गाते हैं। अपने विवाह के उपरान्त लोरिक एक दिन गउरा मे होली खेलने जाते हैं। वह राजा सहदेव की लडकी चनवा पर रग फेक देते हैं। ग्रामीण प्रथा के अनुसार गाँव की लडकी पर रग फेंकना वर्जित है। चनवा की माँ सेल्हिया लोरिक का अपमान करती है। इस अपमान से ही मलसावर या सवरू के विवाह की प्रस्तावना बनती है।

'मलसावर का विवाह' की कथा के तत्व

(१) मंजरी से विवाह करके लौटने के बाद लोरिक का होली के अवसर पर अपने मित्रो के साथ गउरा होली खेलने जाना और चनवा पर रग फेकना।

(२) चनवा की माँ सेल्हिया द्वारा लोरिक को अपमानित किया जाना—"ऐ लोरिक तुमने अगोरी मे दुर्बल राजा को मारा, गरीब किसानो को मारा तो तुम्हारा मन बढ गया है। तुमको मैं मर्द तब समझूँगी जब सुरहुल (सुरवलि) मे जाकर बमरी की पुत्री सतिया से सवरू की शादी सम्पन्न करा लाओगे।"

(३) अपमानित लोरिक का अन्न-जल त्यागना तथा भाई सवरू का विवाह कराने का प्रण करना।

(४) गुरु अजयी धोबी द्वारा लोरिक की सहायता का आश्वासन दिया जाना। प्रस्तुत पाठ के अनुसार अजयी मूलतः सुरवली[१५] (सुरहुल) का था। वह गउरा आकर बस गया था। उसने सतिया, उसके भाई भीमली तथा सतिया के पिता बमरी आदि के बारे मे लोरिक को सूचना दी।

(५) गागी नाऊ का बोहा जाना तथा सवरू को गउरा लाना। दूल्हा सावर का परछावन[१६] होना—सवा लाख बारातियो का सुरहुल के लिए प्रस्थान करना।

(६) सवरू की बारात चलने से ब्रह्मा का इन्द्रासन तथा विष्णु का सुरधाम प्रकम्पित हो उठा। ब्रह्मा द्वारा बारात को निगल जाने के लिए एक दानव दूत भेजना—सारी बारात दानव के पेट मे।

(७) ब्रह्मा द्वारा भेजे गये दानव द्वारा बारात निगल जाने पर लोरिक का चिंतित होना और पाताल लोक मे नाग के यहाँ जाना। नाग का सूचना देना कि ब्रह्मा के कोप से बारात को दानव निगल गया है। नाग का कहना कि ब्रह्मा अपने को शक्तिशाली समझते थे। तुम उनसे बढ़ कर हो गये हो। तुम्हारे गाजे-बाजे की तुमुल ध्वनि से धरती

ददई केवट का 'सुहवल' या मलसांवर के विवाह का यह अध्याय अन्य गायकों की अपेक्षा बहुत ही संक्षिप्त है। ददई केवट न तो लोरिक के जन्म की परिस्थितियों को विस्तार देते हैं और न तो मलसांवर के जन्म की कहानी बताते हैं। खोइलनि वंध्या थीं। संवरू की माता एक ब्राह्मणी थी जिसने पैदा होते ही बच्चे को फेंक दिया था। खोइलनि ने उस फेंके हुए बच्चे को घर लाकर उसका पालन-पोषण किया था। मेरे गायक शिवनाथ चौधरी[१४] ने मलसांवर की कहानी विस्तार से कही है। खोइलनि की तपस्या करने पर सूर्य की कृपा से लोरिक बाद में उत्पन्न हुआ, यह कथा भी शिव नाथ चौधरी ने विस्तार से गायी है। संवरू के जन्म की कथा को शिवनाथ चौधरी ने इस प्रकार गाया है—

"एगो आजु बाम्हनि लड़किया बीतल बारह बरिस रहलीं
अ गउरा में परलि रहलिन बरिया रे कुंवारि
....
आजु रनियां चोहुँकिय के अंखिया आपन खोलि जो देले
आगे डीठि सुरुज के मिलल लेलकार—
इहे आज सुरुजइ ना लड़िकी के डीठिय मिलल
ओ रनियां के सांचो के गरभवे रहिन जाइ"

(मेरे संग्रह के अप्रकाशित पाठ से उद्धृत)

("एक ब्राह्मण की लड़की थी। वह बारह वर्ष की हो चुकी थी तथा गउरा में बालकुमारी थी। उसने अचकचाकर आंख खोली तो सूर्य की दृष्टि लग गयी। सूर्य से दृष्टि मिल जाने पर रानी लड़की को सचमुच गर्भ रह गया।")

नवें महीने में उसके दो वीर पुत्र, मलसांवर और सुवच्चन, उत्पन्न हुए। उसने दोनों बच्चों को एक पात्र में भरवा कर एक छोटे गड्ढे में फेंकवा दिया। वंध्या खोइलनि दही बेचने गयी थी। उसने एक बच्चे को उठा लिया और घर लाकर उसका पालन-पोषण किया। बच्चे का नाम मलसांवर पड़ा। दूसरे बच्चे को पिपरी के एक दुसाध की वंध्या स्त्री ले गयी। उस लड़के का नाम सुवच्चन पड़ा।

"आजु पंचे संवरू पी लेहलनि छीर खोइलनि के
गउरा में अहीर के बाल भइलन कहाय
सुबच्चन जाइ के पी लेहलनि छीर—
बरम्हदे दुसाधिनि के परि गइलन दुसाध कहार"

(मेरे द्वारा संग्रहीत शिवनाथ चौधरी के अप्रकाशित पाठ से)

शिवनाथ चौधरी कहते हैं "संवरू ने खोइलनि का दूध पी लिया अतः गउरा में वे अहीर कहलाये। सुबच्चन ने दुसाध स्त्री बरम्हदे का दूध पी लिया अतः वह दुसाध कहे गये।"

मलसांवर के जन्म तथा खोइलनि द्वारा पालित-पोषित होने की कथा न तो बनारस के पाँचू भगत के पाठ में पाई जाती है और न इलाहाबाद के रामअवतार

यादव के पाठ में। ददई केवट के पाठ में भी केवल यही संकेत मिलता है कि वे बोहा में रहते थे और लोरिक से उनका प्रगाढ़ प्रेम था। जैसा बताया जा चुका है ददई केवट लोरिक के विवाह के बाद संवरू के विवाह का प्रसंग गाते है। अपने विवाह के उपरान्त लोरिक एक दिन गउरा में होली खेलने जाते है। वह राजा सहदेव की लड़की चनवा पर रंग फेंक देते हैं। ग्रामीण प्रथा के अनुसार गाँव की लड़की पर रंग फेंकना वर्जित है। चनवा की माँ सेल्हिया लोरिक का अपमान करती है। इस अपमान से ही मलसांवर या संवरू के विवाह की प्रस्तावना बनती है।

'मलसांवर का विवाह' की कथा के तत्व

(१) मंजरी से विवाह करके लौटने के बाद लोरिक का होली के अवसर पर अपने मित्रों के साथ गउरा होली खेलने जाना और चनवा पर रंग फेंकना।

(२) चनवा की माँ सेल्हिया द्वारा लोरिक को अपमानित किया जाना—"ऐ लोरिक तुमने अगोरी में दुर्बल राजा को मारा, गरीब किसानों को मारा तो तुम्हारा मन बढ गया है। तुमको मैं मर्द तब समझूंगी जब सुरहुल (सुरवलि) में जाकर बमरी की पुत्री सतिया से संवरू की शादी सम्पन्न करा लाओगे।"

(३) अपमानित लोरिक का अन्न-जल त्यागना तथा भाई संवरू का विवाह कराने का प्रण करना।

(४) गुरु अजयी धोबी द्वारा लोरिक की सहायता का आश्वासन दिया-जाना। प्रस्तुत पाठ के अनुसार अजयी मूलतः सुरवली[१५] (सुरहुल) का था। वह गउरा आकर बस गया था। उसने सतिया, उसके भाई भीमली तथा सतिया के पिता बमरी आदि के बारे में लोरिक को सूचना दी।

(५) गांगी नाऊ का बोहा जाना तथा संवरू को गउरा लाना। दूल्हा सांवर का परछावन[१६] होना—सवा लाख बारातियों का सुरहुल के लिए प्रस्थान करना।

(६) संवरू की बारात चलने से ब्रह्मा का इन्द्रासन तथा विष्णु का सुरधाम प्रकम्पित हो उठा। ब्रह्मा द्वारा बारात को निगल जाने के लिए एक दानव दूत भेजना—सारी बारात दानव के पेट में।

(७) ब्रह्मा द्वारा भेजे गये दानव द्वारा बारात निगल जाने पर लोरिक का चिंतित होना और पाताल लोक में नाग के यहाँ जाना। नाग का सूचना देना कि ब्रह्मा के कोप से बारात को दानव निगल गया है। नाग का कहना कि ब्रह्मा अपने को शक्तिशाली समझते थे। तुम उनसे बढ़ कर हो गये हो। तुम्हारे गाजे-बाजे की तुमुल ध्वनि से धरती

काँपने लगी है। उससे ऋषि-मुनियों का ध्यान टूट गया है, विष्णु का सुरधाम काँप उठा है। ब्रह्मा चिंतित हो गये हैं।

(८) दुर्गा की सहायता से लोरिक द्वारा दानव का वध किया जाना तथा बारात को उसके पेट से बाहर निकालना।
सूर्य द्वारा चारों ओर बादल-बादल कर देना। बारात शीत लहरी की चपेट में।

(९) लोरिक द्वारा क्रमशः गांगी नाऊ तथा अगुवा अजयी धोबी को आग लाने के लिए भेजना। ब्रह्मा द्वारा डाइन का सृजन करना। डाइन द्वारा गांगी नाऊ तथा अजयी धोबी को निगल लिया जाना।

(१०) दुर्गा की सहायता से लोरिक द्वारा डाइन का वध किया जाना तथा अजयी धोबी और गांगी नाऊ को उसके पेट से निकालना।

(११) बारात का आगे बढ़ना—बरईपुर में बारातियों द्वारा फल के बागीचों को नष्ट करना। खटिकों की प्रार्थना पर बरईपुर की रानी का पुरुष वेश में लोरिक से लड़ना—हार जाने पर अहीर से प्रेम प्रस्ताव करना।

(१२) सवा लाख बारातियों का सुरवली पहुँच कर शंभू सागर पर डेरा डालना। खाद्य सामग्री की कमी हो जाने पर अगुवा अजयी धोबी का अपने नगर सुरवली में महीचन साह के यहाँ जाना।

(१३) महीचन साह के आदेश पर महाजनों द्वारा शंभू सागर पर बाजार लगा देना तथा बारात को उधार खाद्य सामग्री देना।

(१४) बारात के आगमन का समाचार पाकर बमरी को चिन्ता। यहाँ गायक बमरी के पुत्र वीर भीमली को कुम्भकर्ण की भाँति चित्रित करता है जो छः महीने सोता था और छः महीने जागता था।

(१५) लोरिक और भीमली का युद्ध—भीमली की मृत्यु।

(१६) सतिया का अपने सत से छत्तीस नाग उत्पन्न करना। नागों का बारात को डंस लेना। दुर्गा का सतिया के पास जाना। दुर्गा के आग्रह पर सतिया द्वारा बारात को जिलाया जाना।

(१७) सात समुद्र पार जाकर बमर-सिन्दूर लाये बिना मलसांवर का विवाह संभव नहीं। सतिया का दुर्गा से कथन।

(१८) हंस-हंसिनी के पंखों पर बैठकर लोरिक का अमर सिन्दूर लाने के लिए सात समुद्र पार जाना। दुर्गा का साथ में होना।

(१९) डाइन अगिया कोइलिवा के देश से लोरिक का सौभाग्य का सिन्दूर लाना। रास्ते में लोरिक का अपनी जाँघों से मांस काट कर हंस-हंसिनी को खिलाना। दुर्गा द्वारा लोरिक को यथापूर्व कर देना।

(२०) बारात का शंभू सागर पर जश्न मनाना। कस्बी और पातुरियों का नाच-गान होना—भाडों का चुटकियो पर ताल देना।

(२१) मलसावर और सतिया का विवाह सम्पन्न।

(२२) बारात सतिया को लेकर गउरा वापस—मलसावर और सतिया का कोहबर मे जाना।

(२३) सतिया और मलसावर का वोहा मे निवास।

लोरिक के विवाह के प्रसग मे देवी हस्तक्षेप अधिक नही है। यह सच है कि दुर्गा सदैव लोरिक की सहायता करती हैं पर संवरू के विवाह मे ब्रह्मा स्वयं बाधक के रूप में हैं। लोरिक की बारात चल रही है। उसके कोलाहल से ब्रह्मा का आसन डोल उठा है, विष्णु का सुरधाम कांप उठा है। ब्रह्मा एक दानव दूत भेजकर बारात को निगलवा लेते हैं। दुर्गा की सहायता से बारात की रक्षा होती है। ब्रह्मा एक घर की रचना करते हैं, आग की सृष्टि करते हैं तथा एक डाइन को वहाँ बैठा देते हैं। गागी नाऊ और अजयी धोबी ठंड खायी हुई बारात को गर्मी दिलाने के लिए आग लेने जाते हैं तब डाइन उन्हे निगल जाती है। लोरिक भी वहाँ जाता है पर दुर्गा की सहायता से वह बच जाता है। डाइन का वधकर वह उसके पेट से अजयी तथा गागी नाऊ को निकालता है। बरईपुर की रानी बरइनि लोरिक से लडती है और हार जाने पर प्रेम प्रस्ताव करती है। लोरिक बारात की वापसी पर उसे गउरा ले चलने का वचन देता है। पर लौटते समय वह उसको बरईपुर मे ही छोड देता है। सुरवली के पास भी बारात मुसीबत मे फँसती है क्योकि सवा लाख बारातियो के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री नही थी। अजयी धोबी की मध्यस्थता पर महीचन साहु वहाँ के महाजनो से बाजार लगवाते हैं, और बारात को खाद्य सामग्री उपलब्ध होती है। लोरिकायन के अन्य पाठो मे सतिया के पिता बमरी का यह प्रण बार-बार दुहराया गया है कि—

"नाहि देसे में हम ससुरा कहावै,नाहि मोरि लरिका कहइहैं सार"[१७]

[न तो अपने देश मे मैं ससुर कहलाऊँगा और न मेरे लडके साले कहे जायेंगे]

इलाहाबाद के पाठ मे भी इस प्रण की पुनरावृत्ति हुई है।

"एहं क राजा वा अडवगी, नात जतनो जाति पाति कीं लड़की
सुरवलि राखेवा वारि कुवारि।
आपन वेटवा वियहि के ले आवइ
कहवावइ ना ससुर अउ सार"[१८]

[वहाँ का राजा टेढा है। सुरवलि की सभी जातियों की लडकियों को उसने कुंवारा रखा है। उसका प्रण है—मैं अपने लडकों का विवाह कर लाऊँगा। पर न ससुर और मेरे लडके सार नही कहे जायेंगे।]

बमरी अपने राज्य की कन्याओं का विवाह नहीं होने देना चाहता था। दर

दूसरे देश की कन्याएँ उसके राज्य में आयें, इस पर उसको आपत्ति नहीं थी। अपनी पुत्री सतिया का विवाह भी वह इसीलिए नहीं होने देता था। ददई केवट के पाठ में यह बात नहीं दुहराई गई है। सतिया के भाई भीमली और लोरिक का विवाह यहाँ संक्षिप्त है। भीमली के अन्य भाई वीर दसवंत की लड़ाई का उल्लेख यहाँ नहीं है। यहाँ सतिया का एक ही भाई भीमली है। बनारस के पाठ में सतिया के सात भाई हैं। गायक ने मलसांवर के विवाह के प्रसंगों में अलौकिक तत्वों का समावेश अधिक किया है। लोरिक के विवाह में गायक के चित्रण अधिक यथार्थ हैं। सांवर के विवाह में यहाँ घटनाएँ अधिक अलौकिक और चमत्कारपूर्ण हैं। दुर्गा सदैव लोरिक की सहायता करती हैं।

३. हल्दी-चनवा का उढ़ार

लोरिक के विवाह के उपरान्त ददई केवट 'चनवा का उढ़ार' गाते हैं। मलसांवर के विवाह का प्रसंग अन्य गायकों द्वारा विस्तार से गाया गया है। ददई केवट ने इस प्रसंग को अत्यन्त संक्षिप्त कर दिया है। अपने विवाह तथा भाई सांवर के विवाह के अवसर पर अनेक युद्धों और आपदाओं का सामना करने के बाद लोरिक के जीवन में एक नया मोड़ आता है। वह सहदेव की लड़की चनवा के प्रेम में फँस जाता है और उसके साथ हल्दी भाग जाता है। वहाँ एक अन्य स्त्री जमुनी कलारिन के प्रेम में फँसता है। उसकी विवाहिता पत्नी[१९] मंजरी गउरा में अनेक विपत्तियाँ सहती है। लोरिक हल्दी से नेउरी (नेउरापुर) जाता है, हरेवा परेवा को हराता है, अनेक आपदाओं पर विजय प्राप्त करने के बाद गउरा वापस आता है।

'चनवा का उढ़ार'[२०] में निम्नलिखित प्रसंग हैं। गायक प्रारम्भ में सुमिरन करता है; देवी दुर्गा का स्मरण करता है। वह कहता है कि "हे माता, मेरी जीभ पर बैठो ताकि भूली हुई श्रृंखला या कड़ी को मैं जोड़ लूं। हे देवी, यदि एक भी शब्द भूल जायेगा तो मैं तुम्हारा नाम नहीं लूंगा। सतयुग में जितनी कीर्ति गायी गयी है, उस सबको तुम जोड़ दो, तब तुम्हारी शक्ति को मैं पहचान सकूंगा।" गायक के अनुसार प्रस्तुत कथा सतयुग की है। इस प्रार्थना के बाद गायक ने 'चनवा के उढ़ार' के प्रसंगों को विस्तार दिया है।

'चनवा का उढ़ार' की कथा के तंतु :

(१) चनवा का सिवहरिया से विवाह—सिवहरिया का चनवा की उपेक्षा करना—चनवा का पति को छोड़कर गउरा आने का उपक्रम।

(२) रास्ते में चमार बांठा का छेड़खानी करना।

(३) चनवा द्वारा अपने सत का सुमिरन करना–बांठा का पेड़ की लताओं में बँध जाना तथा चनवा से छेड़खानी करने में असफल रहना।

(४) बांठा का उत्पात–गउरा के सागर पर घेरा डालना तथा सारे कुँवों

में हड्डियाँ और गोबर फेंक देना—गउरा मे पीने का पानी नही रहा—लोग अन्न और पानी के लिए तबाह ।

(५) चनवा की माँ सेल्हिया का लोरिक के यहाँ जाना—चनवा को पाने के लिए बांठा द्वारा ढाई गई विपत्ति का हाल कहना ।

(६) लोरिक का सागर के तट पर जाना तथा बांठा का हाथ पांव तोड़कर उसे मार डालना । दुर्गा की सहायता से लोरिक के शरीर की रक्षा होना । चनवा का बाठा को देखने जाना ।

(७) चनवा के अपराध के लिए जाति बिरादरी के चौधरी द्वारा चनवा के पिता सहदेव को दंडित किया जाना । सहदेव द्वारा भोज का आयोजन ।

(८) चनवा और लोरिका का प्रेम बढना—बरहा (रस्सी) की सहायता से लोरिक का रात मे सहदेव के महल की ऊपरी चौखडी मे चढ़ना तथा चनवा के साथ प्रेमालाप करना ।

(९) चनवा और लोरिक के मिलन की सर्वत्र चर्चा फैलना—मंजरी को लोरिक के गुप्त प्रेम की खबर मिलना—झगड़ू कोईरी के कोड़ार मे चनवा और मजरी की लड़ाई ।

(१०) चनवा के आग्रह पर लोरिक हल्दी भाग जाने के लिए उद्यत ।

(११) लोरिक और चनवा का हल्दी के लिए प्रस्थान करना ।

(१२) प्रथम पडाव बोहा मे—लोरिक संवरू की भेट ।

(१३) बेवरा नदी के तट पर चनवा के पति सिवहरिया का आना तथा लोरिक पर आक्रमण करना तथा पराजित होना ।

(१४) लोरिक और चनवा का बेवरा पार कर हल्दी पहुँचना ।

(१५) लोरिक और कलवारिन जमुनी का प्रेम सम्बन्ध । चनवा एक नयी सौत के कारण दुःखी ।

(१६) पशुओ को चराने के लिए हल्दी के राजा महुअरि का लोरिक को चरवाहा नियुक्त किया जाना ।

(१७) चरवाहा के रूप मे लोरिक का उत्पात—पशुओ को किसानो के खेत मे छोड देना—फसल नष्ट हो जाने से किसान परेशान ।

(१८) राजा महुवरि का तग आकर लोरिक को नेउरापुर कर वसूलने के लिए भेजना ।

(१९) लोरिक द्वारा कट्टाह और भयंकर घोडे को वश मे किया जाना । लोरिक को महुवरि ने यह घोड़ा इसलिए दिया था कि वह लोरिक को मार डालेगा ।

(२०) नेउरापुर (नेउरी) मे लोरिक का बचपन के एक साथी से मिलना—

साथी का लोरिक को नेउरी की कठिनाईयों के बारे में बताना तथा सहायता करना।

(२१) लोरिक द्वारा नेउरी के राजा हरेवा परेवा पर चढ़ाई—हरेवा परेवा द्वारा लोरिक को मारने के लिए विषैली कुतियों तथा ब्रह्म फांस का उपयोग करना—लोरिक का दुर्गा की सहायता से बच निकलना—लोरिक द्वारा पांच सौ कैदियों को मुक्ति दिलाना—मुक्त कैदियों का लोरिक को सहायता पहुँचाना। लोरिक का एक अपराध—नेउरी में स्त्रियों का वध करना—उनमें गर्भिणी स्त्रियाँ भी थीं। लोरिक का हल्दी का राजा बनना।

(२२) पिपरी के कोल चंड़ार, गाजनगढ़ के तुर्क, परानापुर के निवासी सभी लोरिक के शत्रु बन गये थे—सबका एक जुट होकर गउरा तथा बोहा पर आक्रमण करना।

(२३) बोहा में मलसांवर का वध।

(२४) मंजरी पर विपत्ति—गउरा का सारा धन लुट लिया जाना—चिथड़े पहन कर मंजरी का जीवन यापन करना।

(२५) गांगी नाऊ का गउरा से मंजरी का संदेश लेकर लोरिक के पास हल्दी जाना—चनवा के वर्गलाने पर मंजरी की विपत्ति, मलसांवर की मृत्यु तथा गउरा की सारी सम्पत्ति लुट जाने की खबर लोरिक को न देना—शोभा नायक द्वारा लोरिक को मंजरी की विपत्ति, सांवर की मृत्यु, तथा गउरा के सारे धन के लुट जाने का समाचार देना।

(२६) लोरिक का गउरा वापस आने की तैयारी।

अगोरी की लड़ाईयाँ तथा सुहवल के संघर्षों के बाद लोरिक के जीवन में एक प्रकार का विश्राम आता है। इस विश्राम की अवधि में नायक के जीवन में चनवा आती है। चनवा से प्रेम सम्बन्ध बढ़ जाने पर वह उसे लेकर हल्दी जाता है। यह नायक के लिए एक प्रकार से प्रवास (देस-निकाला) है। जिसमें नायक के जीवन में शिथिलता आती है। हल्दी में लोरिक कुछ दिनों के लिए चरवाहा बनता है। नायक के चरित्र की यह अधोगति है। विवाहिता पत्नी से विछोह, एक नयी स्त्री से सम्पर्क, चरवाहे का काम यह सब कुछ वीर योद्धा की मर्यादा के प्रतिकूल है। किन्तु शीघ्र ही नायक अपना गौरव फिर प्राप्त कर लेता है। वह हल्दी में भयंकर घोड़े को वश में करता है, नेउरापुर में जाकर वहाँ के राजा को परास्त करता है, फिर हल्दी का राजा बनता है। महुअरि स्वयं हल्दी का राज्य लोरिक को सौंप देता है। इसी बीच शोभा नायक[21] मंजरी का सदेश लेकर पहुँचता हे। वह लोरिक को बताता है कि कैसे कोलों तथा अन्य शत्रुओं ने मिलकर गउरा का धन लूट लिया तथा कैसे सांवर मारे गये। शोभा नायक मंजरी की दारुण विपत्ति की कहानी भी कहता है। यह सुनकर लोरिक दुःखी होता है और गउरा वापस आने की तैयारी करता है।

चनवा के उद्धार के लगभग सभी प्रसंग थोडे अन्तर के साथ सभी पाठो मे पाये जाते हैं। अन्तर इतना ही है कि ददई केवट वर्णन-विस्तार नही करते। उनमे घटनाओ के चित्रण को सक्षिप्त कर देने की प्रवृत्ति है।

४. हल्दी से लोरिक की बोहा में वापसी—पिपरी का युद्ध—लोरिक की मृत्यु

लोरिक भाई सावर की मृत्यु, मजरी को विपत्ति तथा शत्रुओ के अत्याचा की कहानी सुनकर बोहा वापस आता है। वहाँ बाजार लगवाता है। मजरी वह मट्ठा बेचने जाती है। चनवा उसकी टोकरी मे चुपके से सोना-चाँदी भरवा देती है तथा उसके ऊपर से चावल रखवा देती है। मजरी बेवरा नदी पार कर जब घर आती है तब उसकी सास को उसके चरित्र पर सन्देह होता है। उसको लगता है कि मजरी ने अपना सत गँवा दिया है, उसके बदले मे उसे सारा धन मिला है। सार खौलती कड़ाही मे सारा द्रव्य, रुपये आदि रखवा देती है। सती मजरी तेल से भरी खौलती कड़ाही मे हाथ डालकर रुपये निकाल लेती है और उसका हाथ नही जलता पुनः केवट मजरी को बेवरा नदी पार नही कराना चाहता तब वह अपने सत के सुमिरन से नदी की धारा को दो भागो मे रोक देती है और नदी पार कर जाती है लोरिक को मृत समझ कर वह सती होना चाहती है तब लोरिक प्रकट होकर उसकी रक्षा करता है तथा धधकती चिता को बिखेर देता है। लोरिक गउरा आता है पिपरी के कोलो से युद्ध करता है फिर अपने सारे पशुओ को वापस करा लेता है वह देवसिया कोल के बाण से आहत होता है। घोडा मगर लेकर उसे गउरा उ जाता है। लोरिक का पुत्र अमोरिक देवसिया को पराजित करता है, आहत करत है। लोरिक को अमोरिक देवसी के पास ले जाता है। लोरिक के बाण से देवसी म जाता है। अन्त मे लोरिक चिता बनवाता है और उसमे जलकर भस्म हो जाता है। लोरिक की बोहा वापसी, पिपरी का युद्ध और लोरिक के अग्निदाह के प्रसग निम्नलिखित तत्व महत्वपूर्ण है :

(१) हल्दी से सारा सामान, धन-दौलत लादकर लोरिक और चनवा क बोहा आना—तम्बू और कनात खडा करवाना तथा उर्दू बाजा लगवाना।

(२) लोरिक का घूम-घूम कर बोहा देखना—अपने पशुओ को न देखक दु:खी होना।

(३) लोरिक का सिपाहियो से गउरा मे डुग्गी पिटवाना कि बोहा का राज दूध-दही खरीदेगा।

(४) मजरी का अन्य ग्वालिनो के साथ बोहा मे मट्ठा बेचने जाना—मजरी का फटे चिथडो मे होना तथा अपना मट्ठा और टोकरी दूर रख देना।

(५) लोरिक के कहने पर चनवा द्वारा मजरी की टोकरी मे सोना, द्रव्य

साथी का लोरिक को नेउरी की कठिनाईयों के बारे में बताना तथा सहायता करना ।

(२१) लोरिक द्वारा नेउरी के राजा हरेवा परेवा पर चढ़ाई—हरेवा परेवा द्वारा लोरिक को मारने के लिए विषैली कुतियों तथा ब्रह्म फांस का उपयोग करना—लोरिक का दुर्गा की सहायता से बच निकलना—लोरिक द्वारा पांच सौ कैदियों को मुक्ति दिलाना—मुक्त कैदियों का लोरिक को सहायता पहुँचाना । लोरिक का एक अपराध—नेउरी में स्त्रियों का वध करना—उनमें गर्भिणी स्त्रियाँ भी थीं । लोरिक का हल्दी का राजा बनना ।

(२२) पिपरी के कोल चंड़ार, गाजनगढ़ के तुर्क, परानापुर के निवासी सभी लोरिक के शत्रु बन गये थे—सबका एक जुट होकर गउरा तथा बोहा पर आक्रमण करना ।

(२३) बोहा में मलसांवर का वध ।

(२४) मंजरी पर विपत्ति—गउरा का सारा धन लुट लिया जाना—चिथड़े पहन कर मंजरी का जीवन यापन करना ।

(२५) गांगी नाऊ का गउरा से मंजरी का संदेश लेकर लोरिक के पास हल्दी जाना—चनवा के वर्गलाने पर मंजरी की विपत्ति, मलसांवर की मृत्यु तथा गउरा की सारी सम्पत्ति लुट जाने की खबर लोरिक को न देना—शोभा नायक द्वारा लोरिक को मंजरी की विपत्ति, सांवर की मृत्यु, तथा गउरा के सारे धन के लुट जाने का समाचार देना ।

(२६) लोरिक का गउरा वापस आने की तैयारी ।

अगोरी की लड़ाईयाँ तथा सुहवल के संघर्षों के बाद लोरिक के जीवन में एक प्रकार का विश्राम आता है । इस विश्राम की अवधि में नायक के जीवन में चनवा आती है । चनवा से प्रेम सम्बन्ध बढ़ जाने पर वह उसे लेकर हल्दी जाता है । यह नायक के लिए एक प्रकार से प्रवास (देस-निकाला) है । जिसमें नायक के जीवन में शिथिलता आती है । हल्दी में लोरिक कुछ दिनों के लिए चरवाहा बनता है । नायक के चरित्र की यह अधोगति है । विवाहिता पत्नी से विछोह, एक नयी स्त्री से सम्पर्क, चरवाहे का काम यह सब कुछ वीर योद्धा की मर्यादा के प्रतिकूल है । किन्तु शीघ्र ही नायक अपना गौरव फिर प्राप्त कर लेता है । वह हल्दी में भयंकर घोड़े को वश में करता है, नेउरापुर में जाकर वहाँ के राजा को परास्त करता है, फिर हल्दी का राजा बनता है । महुअरि स्वयं हल्दी का राज्य लोरिक को सौंप देता है । इसी बीच शोभा नायक[२१] मंजरी का संदेश लेकर पहुँचता है । वह लोरिक को बताता है कि कैसे कोलों तथा अन्य शत्रुओं ने मिलकर गउरा का धन लूट लिया तथा कैसे सांवर मारे गये । शोभा नायक मंजरी की दारुण विपत्ति की कहानी भी कहता है । यह सुनकर लोरिक दुःखी होता है और गउरा वापस आने की तैयारी करता है ।

चनवा के उद्धार के लगभग सभी प्रसग थोडे अन्तर के साथ सभी पाठो मे पाये जाते हैं। अन्तर इतना ही है कि ददई केवट वर्णन-विस्तार नहीं करते। उनमे घटनाओ के चित्रण को सक्षिप्त कर देने की प्रवृत्ति है।

४. हल्दी से लोरिक की बोहा मे वापसी—
पिपरी का युद्ध—लोरिक की मृत्यु

लोरिक भाई सावर की मृत्यु, मजरी की विपत्ति तथा शत्रुओ के अत्याचार की कहानी सुनकर बोहा वापस आता है। वहाँ बाजार लगवाता है। मजरी वहा मट्ठा बेचने जाती है। चनवा उसकी टोकरी मे चुपके से सोना-चाँदी भरवा देती है तथा उसके ऊपर से चावल रखवा देती है। मजरी बेवरा नदी पार कर जब घर आती है तब उसकी सास को उसके चरित्र पर सन्देह होता है। उसको लगता है कि मजरी ने अपना सत गँवा दिया है, उसके बदले मे उसे सारा धन मिला है। सास खौलती कडाही मे सारा द्रव्य, रुपये आदि रखवा देती है। सती मजरी तेल से भरी खौलती कडाही मे हाथ डालकर रुपये निकाल लेती है और उसका हाथ नही जलता। पुन केवट मजरी को बेवरा नदी पार नही कराना चाहता तब वह अपने सत के सुमिरन से नदी की धारा को दो भागो मे रोक देती है और नदी पार कर जाती है। लोरिक को मृत समझ कर वह सती होना चाहती है तब लोरिक प्रकट होकर उसकी रक्षा करता है तथा धधकती चिता को बिखेर देता है। लोरिक गउरा आता है। पिपरी के कोलो से युद्ध करता है फिर अपने सारे पशुओ को वापस करा लेता है। वह देवसिया कोल के बाण से आहत होता है। घोडा मगर लेकर उसे गउरा उड जाता है। लोरिक का पुत्र अभोरिक देवसिया को पराजित करता है, आहत करता है। लोरिक को अभोरिक देवसी के पास ले जाता है। लोरिक के बाण से देवसी मर जाता है। अन्त मे लोरिक चिता बनवाता है और उसमें जलकर भस्म हो जाता है।

लोरिक की बोहा वापसी, पिपरी का युद्ध और लोरिक के अग्निदाह के प्रसग में निम्नलिखित तत्व महत्वपूर्ण है :

(१) हल्दी से सारा सामान, धन-दौलत लादकर लोरिक और चनवा का बोहा आना—तम्बू और कनात खडा करवाना तथा वहाँ बाजार लगवाना।

(२) लोरिक का घूम-घूम कर बाहा देखना—अपने पशुओं को न देखकर दु खी होना।

(३) लोरिक का सिपाहियो से गउरा में डुग्गी पिटवाना कि बोहा का राजा दूध-दही खरीदेगा।

(४) मजरी का अन्य ग्वालिनों के साथ बोहा में मट्ठा बेचने जाना—मजरी का फटे चिथडों मे होना तथा अपना मट्ठा और टोकरी दूर रख देना।

(५) लोरिक के कहने पर चनवा द्वारा मजरी की टोकरी में सोना, रूपा

रुपये आदि रख देना तथा ऊपर से दस-पाँच सेर चावल रखकर द्रव्यों को ढक देना।

(६) मंजरी की सास को उसके चरित्र पर सन्देह होना—मंजरी का तेल घि भरी हुई खौलती कड़ाही में हाथ डाल कर द्रव्य निकालना तथा अपने सत की परीक्षा देना।

(७) मंजरी का मट्ठा लेकर फिर बोहा जाना—लोरिक की आज्ञा पर बेवरा नदी के तट पर मल्लाह का मंजरी को रोकना और बोहा न जाने देना। मंजरी के सत के सुमिरन से दुर्गा का प्रकट होना तथा बेवरा नदी की धारा का दो भागों में विभक्त हो जाना तथा बीच में मैदान बन जाना। मंजरी का पैदल उस पार चला जाना।

(८) मंजरी का लोरिक की बिजली वाली तलवार देखकर चिन्ता में पड़ जाना कि शायद मेरे पति लोरिक को मार कर इस राजा ने तलवार छीन ली हैं।

(९) पति की तलवार लेकर मंजरी द्वारा सती होने की तैयारी। मंजरी का सुलगती चिता में बैठना—लोरिक का आकर आग को बिखेर देना तथा मंजरी का हाथ पकड़ कर बाहर निकालना।

(१०) ग्वालिनों का घर आकर खोइलनि को सारी कहानी बताना।

(११) लोरिक की माँ खोइलनि का धोबी अजयी के यहाँ जाना और कहना कि मेरी बहू बोहा में हर ली गयी हैं। अजयी का खोइलनि को सहायता करने से इन्कार करना। पत्नी बिजवा की चुनौती पर अजयी का बोहा में जाना।

(१२) अजयी का जाकर लोरिक से लड़ना—लोरिक का गुरु अजयी को पहचान लेना तथा गले लगकर दोनों का फूट-फूट कर रोना।

(१३) अजयी द्वारा लोरिक को बताया जाना कि संवरू कैसे कोलों द्वारा मारे गये। कैसे गायों को कोल हर ले गये। नान्हूँ चरवाह (लोरिक का साला, और मंजरी का भाई) कैसे आजकल भाड़ झोंक रहा है।

(१४) लोरिक का नान्हूँ को भड़भूजे के यहाँ से बुलवाना—नान्हूँ का लोरिक पर क्रुद्ध होना—फिर विपत्ति की सारी कहानी कहना। लोरिक के कहने पर नान्हूँ चरवाह का पिपरी जाना—कोलों के यहाँ जाकर गायों के बारे में यह पता लगाना कि कुछ ही दिनों में कोलों की बेटियों का गौना होगा और शीघ्र गायें दहेज में बाहर चली जायँगी।

(१५) लोरिक का पिपरी के कोलों पर आक्रमण—कोलों से सारा धन और पशु वापस ले लेना तथा पिपरी में आग लगा देना।

(१६) देवसिया के बाण से लोरिक घायल—घोड़ा मंगर का लोरिक को लेकर गउरा उड़ जाना—लोरिक के पुत्र अभोरिक के बाणों से कोल

. देवसिया आहत—अमोरिक के कहने पर लोरिक का आकर घायल देवसिया का सिर काट लेना ।

(१७) दो पात्रो मे दूध लेकर लोरिक का पीपल के पेड से कूदना—दूध हिल जाने से लोरिक को अपनी दुर्बलता का आभास होना ।

(१८) लोरिक द्वारा गउरा[२२] मे गड्ढा खुदवाया जाना—चिता सजवाना—उसमे हविष्य डलवाना—अग्नि तेज होने पर अहीर का उसमे कूद जाना तथा 'सीताराम' कहते हुए अपने शरीर को जलाकर राख कर देना।

चनवा के उद्धार के बाद लोरिक का पतन प्रारम्भ हो जाता है । एक स्त्री का अपहरण, नेउरापुर मे स्त्रियो का वध आदि ऐसी परिस्थितियाँ हैं जो नायक को दुर्बल बना देती है । हल्दी मे घोडा मगर उसको सहायक मिलता है । उसकी सहायता से वह नेउरापुर की लडाई मे विजय प्राप्त करता है । विवाहिता पत्नी की विपत्ति, भाई सावर की मृत्यु आदि का समाचार सुनकर वह अपने घर गउरा के लिए प्रस्थान करता है । बोहा मे डेरा डालता है । यहाँ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं कि मजरी के सत की परीक्षा होती है । मजरी की विपत्ति और उसका सत गायको का प्रिय प्रसग है । बोहा मे लोरिक का गुरु अजयी तथा चरवाह नान्हूँ मिलता है जो मजरी का भाई था । विपत्ति के दिनो मे गउरा के एक भडभूजे के यहाँ भाड भूँजने की नोकरी करता था । इन दोनो की सहायता पाकर लोरिक आक्रमण करता है तथा अपने सारे पशुओ तथा धन को वापस लेता है । देवसिया कोल से युद्ध करने मे लोरिक आहत होता है । यद्यपि अपने पुत्र अमोरिक की सहायता से वह देवसिया का वध करता है पर यहाँ प्रकट हो जाता है कि लोरिक का पोरुष घट गया है । वह अन्तिम बार अपनी शक्ति की परीक्षा करता है । दो पात्रो मे दूध लेकर वह कूदता है पर आशा के विपरीत दूध हिल जाता है । अन्त मे वह अपना जीवन समाप्त करने को उद्यत हो जाता है । वह गड्ढा खुदवाता है, चिता जलवाता है, घी की आहुति दिलवाता है और अग्नि मे अपने को स्वाहा कर देता है । एक वीर योद्धा का यह दु खद अन्त है । उसके अनेक अनैतिक कार्यों और ढलती हुई उम्र की निर्बलता की यह चरम परिणति है ।

टिप्पणियाँ

१. मिर्जापुर—यह नगर २३°-५२' तथा २५°-३२' (Latitude) अक्षांश (उत्तर) तथा ८२-०७' और ८३°-३३' पूर्व देशान्तर (Longitude) पर स्थित है ।

२. अगोरी—२४°-४१' उत्तर अक्षाश तथा ८२°-५८' देशान्तर पर स्थित है । यह रिहाद तथा सोननदी के सगम पर है । यह स्थान मिर्जापुर

से ६२ मील तथा राबर्ट्सगंज से १४ मील की दूरी पर है।

३. जुए में राज्य हार जाने तथा पांडवों में सर्वश्रेष्ठ युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी को दाँव पर रखने की कथा तो महाभारत (सभापर्व) में भी आती है पर पत्नी की कोख को दाँव में रखना भारतीय साहित्य में मुझे अन्यत्र नहीं मिल सका।

४. गोरइया—'गोरइया' की पूजा शाहाबाद, बक्सर तथा पटना के दुसाध' करते हैं। पूजा करने वाले इसको राहु की पूजा से जोड़ते हैं।

५. बघौता—बाघ-देवता (tiger ghost) तथा बनसत्ती माता की पूजा कोल आदिवासियों में प्रचलित है, इसका उल्लेख विलियम क्रूक ने किया है।

देखिये : William Crooke—The tribes and castes. Calcutta, 1896 Vol. III Page 312.

६. सभी गायक देवी को स्मरण करते हैं ताकि उनके गायन का प्रवाह भंग न हो। सभी गायक यह कहतें हैं कि देवी की सहायता के बिना इतना बड़ा पंवारा गाया नहीं जा सकता।

७. ददई केवट ने लोरिक के जन्म को विस्तार से नहीं गाया है। शिवनाथ चौधरी के पाठ में सूर्य की आराधना से खोइलनि के गर्भ में लोरिक आता है। इलाहाबाद के राम अवतार के पाठ में खोइलनि शिव की आराधना करती है तब लोरिक पैदा होता है।

८. मंजरी के जन्म के अवसर पर स्वर्ण की वर्षा होती है, इसका उल्लेख लगभग सभी गायक करते हैं।

९. कोटवा भदोखरि—गउरा और अगोरी के बीच का एक गाँव है। इसका ठीक-ठीक पता बताना कठिन है।

१०. आजु कहैं लीखई ना पतियाह् रे बनाई
देख भाई छतिरीय ना जतिया जे जवन रे होईहंय
पतिया में लीखत ना हउवंह रे तीलऽकय
पतियाह् गइलेह् ना बंचियाह् कइ रे देखले
घरवांह् अन्नइ ना खइहंइ जाइ हराम
पनिया पीहइं रुधिरया रे समानऽ

प्रस्तुत पाठ के पृष्ठ १११ पर देखिये।

११. इनरावत—एक हाथी का नाम—ऐरावत हाथी इन्द्र का वाहन है। लगता है 'ऐरावत' की समानता पर इनरावत बन गया है। इनरावत और मंजरी पूर्व जन्म में बहनें थीं।

१२. निरम्मल—ददई केवट के पाठ में निरम्मल की गर्दन बार-बार कटती है और जुड़ जाती है। तब वह ब्रह्मा के यहाँ जाता है। उसकी

प्रार्थना पर ब्रह्मा कहते हैं कि एक बूंद रक्त तुम्हारे शरीर से धरती पर गिर गया तो लोरिक का बचना सम्भव नही है, पर दुर्गा लोरिक की सहायता करती हैं और निरम्मल मारा जाता है। वाराणसी के पाचू भगत के पाठ मे, दसवंत और लोरिक के युद्ध मे ऐसा होता है। यह एक कथानक अभिप्राय (Motif) का स्थानान्तरण मात्र है। दुर्गा से ब्रह्मा कहते है कि दसवत अमर है यदि सातवी बार उसकी गर्दन कटी तथा धरती पर रक्त का बूद गिर गया तो चाहे जितनी अमर दुर्गा तैयार हो जायें लोरिक नही बचेगा।

देखिए : मेरे द्वारा सम्पादित लोक महाकाव्य लोरिकी, इलाहाबाद १९७९ पृष्ठ १२४।

१३. देखिये : श्याममनोहर पांडेय, लोकमहाकाव्य चनैनी, इलाहाबाद १९८२

१४. मेरे गायको मे सबसे बड़ा पाठ शिवनाथ चौधरी का है। उनका पाठ मैंने १९६६ मे संग्रहीत किया था। वे उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के उजियार भरौली के रहने वाले थे। लगभग ८५ वर्ष की उम्र मे उनकी मृत्यु लगभग दो वर्ष पहले भरौली मे ही हुई। इनका पाठ अभी अप्रकाशित है।

१५. लोक परम्परा मे एक ही स्थान को सुरवल, सुहवल, सुरहुल, सुरवली आदि कई नाम दिये गये हैं।

१६. परछावन या परछन—विवाह के अवसर पर वर की आरती उतारने की रीति। बारात जाने के पहले भी स्त्रियाँ वर का परछन करती हैं उसके बाद बारात विदा होती है।

१७. श्याममनोहर पाण्डेय, लोकमहाकाव्य लोरिकी, इलाहाबाद, १९७९, पृष्ठ ३।

१८. श्याममनोहर पाण्डेय, लोकमहाकाव्य चनैनी, इलाहाबाद, १९८२, पृष्ठ २२९।

१९. नेउरापुर, नेउरी एक ही स्थान का नाम है।

२०. चनवा का उद्धार—चनवा का उद्धार मौलाना दाउद कृत 'चंदायन' की कथा का आधार है। लोरिक का चनवा से प्रेम हो जाता है। वह अपनी विवाहिता मंजरी को छोड़ कर चनवा के साथ हल्दी भाग जाता है। इस कथा मे सूफी दर्शन के अनेक तत्वो को जोड़कर मौलाना दाउद अपनी कथा का ठाट तैयार करते है! 'चदायन' की रचना १३७९ ई० मे हुई। विस्तृत अध्ययन के लिए देखिए :

1. Shyam Manohar Pandey : Maulana Daud and his Contribution to the Hindi Sufi Literature
Istituto Orientale di NAPOLI, 1978, Vol. 38, pp. 75-90.

(2) Shyam Manohar Pandey : Some problems in Studying Candayan, Early Hindi devotional literature in current research, ed. Winand, M. Callewert, Leuven, Belgium 1980, pp. 127-140.

(3) Shyam Manohar Pandey : Love Symbolism in Candayan Bhakti in Current research 1979-1982.
Monika Thiel—Horstmann, Berlin 1983.

२१. झांझा नायक— वाराणसी के पाठ में संदेशवाहक का नाम जगू बनजारा है, शिवनाथ चौधरी के पाठ में उसका नाम नायक बनजारा है। इस प्रकार के नामों का परिवर्तन लोककाव्यों में सामान्य बात है।

२२. नायक लोरिक सभी पाठों में अपना जीवन स्वयं समाप्त कर लेता है। कुछ पाठों में वह मथुरा में अग्नि की चिता बनाकर अपने को स्वाहा करता है, कुछ में वाराणसी जाकर 'मरण कर्णिका' घाट पर चिता बना कर जलता है। गोंडा जिले के पाठ में वह हिमप्रवेश करता है। यह महाभारत का प्रभाव लगता है।



गायक—ददई केवट

(मृत्यु २२ फरवरी १९७० ई०)

'लोरिकायन' के प्रस्तुत गायक ददई केवट अपने को केवट कहना अधिक पसंद करते थे। भगवान राम को एक केवट ने वन जाते समय गंगा पार कराया था[1] अतः मल्लाह लोग इस घटना का उल्लेख कर अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। ददई केवट ने सदैव इस बात पर बल दिया कि वे केवट हैं। अन्य मल्लाह भी अपने को केवट या निषाद कहते हैं।

१७ अक्टूबर, १९६६ को मैंने ददई केवट के लोरिकायन की रिकार्डिङ्ग प्रारम्भ की थी। गायक ने तब बताया कि इस महाकाव्य का नाम 'लोरिकी' या 'लोरिकायन' दोनों है। गायक प्रायः इसके लिए 'पंवारा'[2] शब्द प्रयुक्त करते हैं। लोकमहाकाव्य ओरल एपिक (oral epic) के आधार पर दिया गया एक साहित्यिक शब्द है। गायक कुरुहुल नामक गाँव में पैदा हुए थे। यह कुरुहुल उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में अगोरी के पास है। मिर्जापुर की स्थिति २३°-५२ और २५°-३२ अक्षांश उत्तर तथा ८२.०७ और ८३° ३३ देशान्तर पर है। अगोरी २४° ४० उत्तर तथा ८२° ५८ पूर्व में है। यहाँ एक बड़ा सा किला भी है। अगोरी में सोन और रिहान्द नदी का संगम भी है। मिर्जापुर शहर से यह ६२ मील दक्षिण पूर्व की ओर स्थित है। राबर्ट्सगंज तहसील यहाँ से १४ मील है। गायक का गाँव कुरुहुल अगोरी से लगभग ५ मील पूर्वोत्तर में है। चोपन से कुरुहुल लगभग तीन मील है। जिस समय मैंने १९६६ में चोपन में रिकार्डिङ्ग की थी उस समय वहाँ एक रेलवे कॉलोनी बस चुकी थी। रेलवे कॉलोनी में मेरे सहायक और स्नेही श्री ओम प्रकाश कुलश्रेष्ठ के एक सम्बन्धी ने जो रेलवे में काम करते थे और वहीं रहते थे, मेरे रहने की व्यवस्था कर दी थी। रिकार्डिङ्ग चोपन में १७ अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक रात में और अवसर मिलने पर दिन में भी होती रही। गायक पैदल चलकर रोज कुरुहुल से अपने एक मित्र के साथ आया करता था। (कुरुहुल गाँव में उन दिनों बिजली नहीं थी।) उसके यह सहयोगी मित्र गाँजा बनाने, चिलम बोझने तथा गायक के गायन में कहीं-कहीं अन्त में तुक मिलाकर सहयोग करते थे। बिना गाँजा पीये 'लोरिकायन' का गायन गायक के लिए संभव नहीं था। उसके सहयोगी भी गाँजा पीते थे।

गायक की उम्र लगभग सत्तर साल[3] की थी और श्रोताओं के बीच बैठकर वह नहीं गा रहे थे अतः उत्साह की कमी उनमें सहज देखी जा सकती थी। श्रोताओं में मैं, श्री ओमप्रकाश कुलश्रेष्ठ, गायक का सहयोगी केवल यही व्यक्ति थे। कभी-कभी परिवार के बच्चे तथा एकाध पड़ोसी उत्सुकतावश आ जाते थे। पर थोड़ी देर गायन सुनकर वे वापस चले जाते थे। स्पष्ट है गायक उपयुक्त वातावरण में, अपने उपयु

श्रोताओं के बीच नहीं गा रहा था। अतः उसमें नाटकीयता की कमी थी, प्रवाह में यदाकदा शिथिलता थी, कथाक्रम में भी कभी-कभी त्रुटि हो जाती थी। उस समय गायक का सहयोगी उसे भूली-बिसरी कड़ियों को जोड़ने में सहयोग करता था।

गायक के गुरु

गायक के गुरु का नाम भी ददई था। वे जाति के अहीर थे तथा कुरुहुल के रहने वाले थे। गायक ने १९६६ में मुझे बताया कि हम लोग पशु चराने जाया करते थे। पशुओं को खेतों और चरागाहों में छोड़कर हम लोग लोरिकायन गाने बैठ जाते थे। गुरु ददई गाते थे फिर मैं उसको दुहराता था। इसी तरह कड़ी-कड़ी करके मैंने लोरिकायन सीखा। गायक को लोरिकायन सीखने में दो तीन वर्ष लगे थे। गायक ने मुझे बताया कि लोरिकी आदि आमतौर पर चरवाही करते सीखी जाती है अतः वहाँ बाजे का प्रयोग सम्भव नहीं है। स्मरणीय है 'लोरिकायन' के गाने वाले किसी प्रकार का वाद्ययन्त्र नहीं प्रयुक्त करते।

अक्तूबर १९६६ में गायक के गुरु ददई अहीर को मरे दस साल हो चुके थे। ददई अहीर के गुरु मध्य प्रदेश के सरगुजा (छत्तीसगढ़) के थे। अतः लगता है मिर्जापुर जिले के कुरुहुल का प्रस्तुत पाठ छत्तीसगढ़ी परम्परा के अधिक पास है। वैसे लोक परम्परा के गायक अनेक परम्पराओं से प्रभावित होते रहते हैं।

गायक का पेशा

ददई मल्लाह या केवट होते हुए भी नाव खेने का कार्य नहीं करते थे। उनके घर में खेती होती है। उन्होंने १९६६ ई० में मुझे बताया कि उनके यहाँ दो बैलों की खेती होती है।[५] उनके दो लड़के खेती-बारी का काम सँभालते थे। ददई मल्लाह स्वयं हलवाहा थे जो अपना खेत स्वयं जोतते थे।

गायक का एक पेशा ओझइती का भी था।[६] वह भूत-प्रेत की झाड़-फूंक करते थे। २१ अक्तूबर १९६६ की रात को मैंने चोपन में गायक और उसके सहयोगी को एक ढाबे में भोजन कराया। गायक के सहयोगी ने या तो कुछ अधिक भोजन कर लिया या उसकी तबियत कुछ पहले से खराब थी। बहरहाल, उसको कय हो गयी। गायक ने झट उसका मस्तक पकड़ा तथा झाड़-फूंक शुरू किया। थोड़ी देर में उसकी तबीयत ठीक हो गयी तो गायक ने बताया कि खाते समय किसी की नजर लग गयी थी अतः उसके मित्र को कय हो गयी। उसके बाद गायक और उसके मित्र मेरे बार-बार आग्रह पर भी चोपन के ढाबे में खाना नहीं खा सके। मैं उन्हें पैसे दे दिया करता था। वे घर से भोजन करके आ जाया करते थे। गायक के सहयोगी मित्र को यह विश्वास था कि वह झाड़-फूंक से स्वस्थ हुआ। मिर्जापुर, चोपन, अगोरी के इलाके में उन दिनों ओझइत झाड़-फूंक करने वाले बहुत सम्मान पाते थे। यद्यपि अब गाँवों में वैद्य और आधुनिक डाक्टर भी पहुँच गये हैं। वहाँ लोगों की जीवन-प्रणाली अब काफी तेजी से बदल रही है।

जीवन के प्रति दृष्टिकोण

ददई केवट ने यह भी बताया कि जब से मिर्जापुर से रिहैंड डैम तक पक्की सडक बन गयी है तथा यहाँ पढे-लिखे बाबू लोग आ गये हैं, तब से हम लोग बेईमान हो गये हैं। पहले यहाँ दूध मे कोई पानी नही मिलाता था, अब दूध मे पानी मिलाकर बेचा जाने लगा है।[७] ददई केवट ने कहा—पहले यहाँ लोग किसी की चीज नही छूते थे, अब चोरियाँ बढ गयी हैं। ददई केवट ने कहा सारा दोष इस पक्की सडक का है। इस पर ट्रक, कारें सब कुछ चलने लगी हैं। इनमे आने-जाने वाले बेईमान हैं। उनसे हमने भी बेईमानी, छल, प्रपच सीखना शुरू कर दिया। अन्यथा इस इलाके के लोग ईमानदार, सादे और बचन के पक्के होते थे। आवागमन के साधनो के विकास के फलस्वरूप जो बुराइयाँ आती हैं उसको ददई केवट कोसते है। जन-सम्पर्क, आवागमन के साधन के लाभ बिजली आदि के प्रकाश तथा रहन-सहन के स्तर मे उन्नति को वह महत्त्व नही दे रहे थे क्योकि उनकी दृष्टि मे इन सबसे इन्सानी मूल्यो का हनन हो रहा था। गायक की दृष्टि मे इन्सानी मूल्य अधिक महत्वपूर्ण थे।

गायक का बचपन

गायक ने १९६६ मे अपनी उम्र लगभग ७० साल बतायी थी। अर्थात् वह १८९६ ई० के आसपास पैदा हुआ होगा। गायक ने बचपन मे पशुओ की चरवाही का कार्य किया था। बताया जा चुका है कि गुरु के साथ बैठकर लोरिकायन उसने उसी समय सीखा था। गायक मल्लाहो के गीत के अलावा भजन तथा अन्य पूर्वी गाने भी गा सकता था। युवावस्था में वह नाच की मडलियो मे भाग लेता था तथा नाचने वालो लौंडो का गिरोह भी बनाया करता था। स्पष्ट है ऐसे चरित्रो को गाँव वाले सदेह की दृष्टि से देखते हैं।[८]

गायक पतला दुबला सावले रग का था। उसको देशी शराब पीने का शौक था। अगोरी के पास १९६६ मे देशी शराब बनाने की भट्टियाँ भी थी।

गायक का व्यक्तित्व

गायक आमतौर पर विलक्षण प्रतिभा के व्यक्ति होते हैं। उनकी कलात्मक और लोक-दृष्टि प्रखर होती है। ग्रामीण परम्पराओ, लोक-कथाओ, लोक-गीतो तथा लोक-विश्वासो से उनका प्रगाढ परिचय होता है। उनकी स्मरण शक्ति भी असाधारण होती है। यद्यपि यह सच है कि कोई गायक लोकमहाकाव्य को कठाग्र नही करता।[९] घटनाओ का क्रम उनके मस्तिष्क मे स्थिर रहता है। छद, लय और कुछ विशेष वर्णनो का नमूना उनके मस्तिष्क मे सुरक्षित रहता है। इनके आधार पर गायक हर बार नयी रचना कर लिया करते हैं। गायक समय और परिस्थिति के अनुकूल अपने प्रसगो को छोटा या बडा करते रहते हैं। ददई केवट मे भी यह प्रतिभा थी। वे तीस साल से लोरिकी गा रहे थे यद्यपि अहीर समाज ने उनको

मान्यता कम दी। अहीर लोगों की दृष्टि में मल्लाह या अन्य जाति का गायक 'लोरिकायन' ठीक से नही गा सकता। गायक 'लोरिकायन' मे पहले अगोरी का प्रसंग गाता है क्योंकि अगोरी उसका क्षेत्र है। अगोरी में नायक लोरिक ने अनेक लड़ाइयां कीं और मंजरी से विवाह किया। अगोरी में एक बड़ा किला आज भी विद्यमान है। उसमें एक फारसी लिपि में शिलालेख भी है पर शिलालेख का 'लोरिक' की कथा से कोई सम्बन्ध नहीं है।[10]

गायक जातीय गौरव का गायक नहीं

ददई केवट जातीय गौरव के गायक नहीं बन सके क्योंकि वे जाति के अहीर नहीं थे। एक अहीर गायक जिस प्रकार नायक लोरिक अहीर के साथ अपना भावात्मक सम्बन्ध जोड़ लेता है वैसा शायद ददई केवट नहीं कर पाते थे। हो सकता है वह इसलिए भी हो कि मैं उपयुक्त श्रोताओं के बीच बैठ कर रिकार्डिंग नहीं कर रहा था। उनमें ओज की कमी तथा रूप खड़ा करने की कला कम थी। नायक के उत्थान और पतन के साथ वे उतने भाव-विभोर नहीं हो पाते थे जितने मेरे अन्य गायक। मेरे अन्य गायक अहीर हैं अतः उनको अपने गायन में जातीय गौरव का बोध कराना लक्ष्य होता था। ददई केवट यह नहीं कर सकते थे। वे लोगों का मनोरंजन तो खूब करते थे। उनके गायन से लोग आकृष्ट भी होते थे पर उनका प्रभाव या प्रतिष्ठा एक जातीय गौरव के गायक के रूप में नहीं हो सकती थी।

गायक का धर्म

केवट हिन्दू होते हैं। गायक भी हिन्दू था पर उसका व्यक्तित्व धार्मिक नहीं लगता था यद्यपि वह देवी-देवताओं की पूजा करता था, और तंत्र-मंत्र में उसका विश्वास था। गंगा नदी को माँ के रूप में सभी केवट स्मरण करते हैं। ददई केवट के परिवार में शिव, सीता राम आदि हिन्दू देवताओं में विश्वास प्रकट किया जाता है। इनके परिवार में अन्य मल्लाहों की तरह शिवरात्रि, होली, दीवाली आदि मनायी जाती है। भूत, पिशाच, चुड़ैल, डाइन आदि के कुप्रभाव पर गायक ही नहीं उसके संपूर्ण परिवार का विश्वास दीख पड़ता है। ददई केवट जल के देवता 'जलवाह' की पूजा में भी आस्था रखते थे क्योंकि नाव खेते समय जल के देवता नाविकों की रक्षा करते हैं। लगता है जलवाह की पूजा एक प्रकार से वरुण की पूजा होती है।

गायक के शिष्य

गायक ने बताया कि उसके तीन शिष्य हैं। उनमें बुलारक अच्छा गाता है। उसने ढाई-तीन सालों में 'लोरिकायन' सीखा। बुलारक के बारे में मुझे अधिक जानकारी नहीं प्राप्त हो सकी। उनका एक शिष्य नूरे भी था जिसकी मृत्यु कुछ साल पहले सोन नदी की बाढ़ में नाव चलाते समय डूब कर हो गयी थी।

गायक के केवट होने से लोरिकायन पर क्या प्रभाव पडा है ?

गायक के केवट होने के कारण लगता है लोरिकायन मे कई ऐसे तत्व जुड गये हैं जो उल्लेखनीय है। ऐसा प्रतीत होता है कि नायक लोरिक के साथ गायक का जातीय व्यक्तित्व नही जुड पाया है अत. उसने उन कई प्रसगो को सक्षिप्त कर दिया है जिनमे लोरिक की वीरता उभर कर आती है और जहाँ वह अपने शौर्य से एक विशेष छाप छोडता है। (१) उदाहरण के लिए सुहवल के प्रसग मे मेरे सग्रह के अन्य पाठो मे लोरिक सतिया के दो भाइयो दसवत और भिम्हली दोनो से भयकर युद्ध करता है।[११] कई बार लोरिक आहत होता है। दुर्गा उसकी सहायता करती हैं और जीवित होकर वह बार-बार लडता है। बमरी के अन्य पुत्रो अर्थात् सतिया के अन्य भाईयो का यहाँ उल्लेख नही होता। वाराणसी के पाठ मे दसवत और लोरिक की लडाई एक महत्वपूर्ण प्रसग है।

(२) गायक ददई केवट लोरिक की वीरता के प्रसगो को सक्षिप्त कर अलौकिक तत्वो तथा चमत्कारिक प्रसगो को अधिक महत्व प्रदान करता हुआ प्रतीत होता है। लोरिक का हस हसिनी के पखो पर बैठ कर सात समुद्र पार जाना तथा सतिया और मलसावर के विवाह सम्पन्न कराने के लिए पाताल लोक से सिंदूर लाना आदि प्रसगो को गायक ने बढा-चढा कर गाया है। ये प्रसग आकर्षक हैं तथा अन्य पाठो मे भी हैं। किन्तु अन्य पाठो मे विशेष ध्यान लोरिक की वीरता और युद्धो की ओर दिया गया है। सवरू के विवाह के प्रसग मे बारात का दानव दूत के पेट मे चला जाना, सतिया का माया से छत्तीस नाग उत्पन्न करना तथा सारी बारात को साँप द्वारा डस लिया जाना आदि प्रसग अन्य पाठो मे भी हैं पर अन्य गायको ने लोरिक की वीरता और युद्धो को गौण नही होने दिया है। अहीर गायको का जातीय नायक सदैव वीर रहता है। ददई केवट का उद्देश्य श्रोताओ का मनोरजन करना अधिक लगता है। अत: अलौकिक चमत्कार पूर्ण घटनाओ को वह बढ़ा-चढ़ा कर गाते हैं।

(३) ददई केवट के गायन मे मल्लाहो के लोक-गीतो के स्वर का प्रभाव अधिक पड गया है।

(४) ददई केवट के पाठ मे उस केवट का चरित्र जा मजरी के साथ आनन्द करना चाहता था और जहाँ मजरी अपने सत का परिचय देकर नदी सुखा देती है, काफी सतुलित है[१२]। केवट यहाँ लोरिक के कहने से मजरी को अपने नाव पर बैठा कर नदी पार नही कराना चाहता है। यहाँ ददई केवट ने केवट का चरित्र कमजोर नही पडने दिया है। लगता है यह इसलिए भी है कि ददई केवट की भावात्मक एकता केवट से जुडी हुई है। वह उसके चरित्र का हनन नही करना चाहते।

साराश यह है कि लोरिकायन के प्रस्तुत पाठ मे लोरिक की वीरता और शौर्य को घटा कर चमत्कारिक प्रसगो पर गायक द्वारा अधिक बल दिया गया है। ये

अलौकिक प्रसंग कौतूहल की सृष्टि तो करते हैं, श्रोताओं का मनोरंजन भी करते हैं किन्तु यह स्पष्ट है कि लोरिक के विशिष्ट गुणों के साथ भावात्मक एकता स्थापित करना गायक का लक्ष्य नहीं प्रतीत होता। अहीर गायक लोरिक की विजय के साथ उल्लसित होते हैं, गौरव का अनुभव करते हैं, और उसकी हार के साथ करुण और विषाद मग्न हो जाते हैं।

टिप्पणियाँ

१. देखिये तुलसीकृत 'श्रीरामचरितमानस', गीता प्रेस गोरखपुर, संवत् २०३१, दोहा ८८ से १०४ तक।

२. लोरिकायन के गायक इस महाकाव्य को 'पंवारा' कहते हैं। इस पर डाक्टर नित्यानन्द तिवारी ने अपनी पुस्तक 'मध्ययुगीन रोमांचक प्रेमाख्यान' में विस्तार से विचार किया है। डाक्टर तिवारी के अनुसार गाजीपुर जिले के डेहगा ग्राम निवासी सेवक राम यादव नामक गायक ने इस महाकाव्य को पंवारा कह कर सम्बोधित किया। अवधी क्षेत्र के एक पनेनी गायक श्री महावीर ने भी इसे पंवारा कहा। नित्यानन्द तिवारी, मध्ययुगीन रोमांचक प्रेमाख्यान, दिल्ली, १९७०, पृष्ठ १००, टिप्पणी २। मेरे अधिकांश गायक इस महाकाव्य को पंवारा कहते थे। इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत 'प्रवाद' से है। यह शब्द 'महाभारत' में आया है। पालि में 'पवाद' तथा प्राकृत में 'पवाय' हो गया है। हिन्दी में 'पवाड़ा', गुजराती में 'पवाड़' मराठी में 'पवाड़' शब्द इसके लिए प्रयुक्त है। हिन्दी, मराठी, गुजराती में पंवारा का अर्थ लम्बी कहानी, महाकाव्य, तथा ऐतिहासिक लोकगाथा आदि भी पाया जाता है। देखिये Turner. R. L. : A Comparative Dictionary of the Indo-Aryan Languages. 1973 (second impression) पृष्ठ ४९४।

३. ओमप्रकाश कुलश्रेष्ठ लोक साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय सत्येन्द्र के भांजे हैं। कुरुहुल के गायक के पाठ के संग्रह में उन्होंने मेरी सहायता की थी। कुलश्रेष्ठ उन दिनों आगरा के, आगरा कालेज में विद्यार्थी थे। उन दिनों मैं आगरे में रहता था। हम दोनों साथ ही चोपन गये थे जहाँ लोरिकायन की रिकार्डिङ्ग हुई।

४. मेरे सभी गायक अपनी उम्र अनुमान से बतलाते हैं। अतः गायकों की एकदम ठीक उम्र बता सकना संभव नहीं है।

५. दो बैलों की खेती का अर्थ लगभग १०–१५ बीघे जमीन का मालिक समझना चाहिए। पूर्वी उत्तर प्रदेश में यदि कोई कहता है कि उनके

यहाँ दो बैलो की खेती होती है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि उस व्यक्ति के पास दस पद्रह बीघे जमीन है।

६ मेरे सभी गायक एक से अधिक गुणो या कलाओ से सम्पन्न है या रहे हैं। इलाहाबाद के स्वर्गीय रामअवतार विरहिया, पशुओ की हड्डी बैठाने से लेकर कठिन परिस्थिति मे बच्चा पैदा कराने मे भी सहायता करते थे। वे देशी दवाइयो के भी जानकार थे। बनारस के पाचू भगत देवी की पूजा कराने तथा कड़ाहा चढवाने अभी भी दूर-दूर तक जाते हैं।

७ ग्वाले या दूध बेचने वाले आमतौर पर बदनाम किये जाते हैं कि वे दूध मे पानी मिलाते हैं। ददई केवट का कहना था कि उनके क्षेत्र मे पहले दूध बेचने वाले पानी नही मिलाते थे। पहले शुद्ध दूध मिलना सभव था।

८. आजकल पूर्वी उत्तर प्रदेश मे चमार तथा कुछ अन्य जातियो के लड़के गाना बजाना सीखकर 'विदेसिया' नाच का गिरोह बना लेते हैं। ये विदेसिया नाच पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार मे काफी प्रचलित हैं। बिदेसिया नाचने वाले लडके तथा गिरोह बनाने वालो ने अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी कर ली है और अपने समाज मे उनकी प्रतिष्ठा काफी बढ गयी है। यह बात मुझे गत वर्ष १९८४ मे बलिया मे बतायी गयी थी। 'विदेसिया' नाच के प्रवर्तक बिहार के श्री भिखारी ठाकुर थे।

९. देखिये—श्याममनोहर पाण्डेय, लोक महाकाव्य चनैनी, इलाहाबाद, १९८२, भूमिका पृष्ठ ३८ से ५० तक। अधिक विस्तार से अध्ययन के लिए इसका अग्रेजी सस्करण देखिये—

Shyam Manohar Pandey,
The Hindi Oral Epic Canaini, Allahabad, 1982, pp 38-82.

१०. अगोरी के किले मे जो फारसी का शिलालेख है वह इस प्रकार है।

سرکار چناد ابرمن اعمال پرگنہ اگوری

محل مادھوسنگھ ۔ ہر کہ محل بکانند تلاف زن و دختر بان

بان باشد - ۱۵۲۶

[सरकार चनाद अहदे मन ऐमाल परगना अगोरी महल माधोसिंह हरकि महल बेकानद तलाफ जन-ओ-दुख्तर बान बाशद १५२६]।

चुनार सरकार के अन्तर्गत परगना अगोरी माधोसिंह का महल। जो व्यक्ति इस महल को गिरायेगा वह अपनी पत्नी तथा लड़की से अलग कर दिया जायेगा। यह सन् १५२६ हिजरी का अर्थात् १६१७ ई० का शिलालेख है। उस समय जहाँगीर का शासनकाल था। जहाँगीर ने १६०५ से १६२८ ई० तक राज्य किया था।

११. विस्तार के लिए देखिये—श्याममनोहर पाण्डेय—लोकमहाकाव्य लोरिकी, इलाहाबाद, १६७८, पृष्ठ १११ से १५१ तक।

१२. श्याममनोहर पाण्डेय—लोक महाकाव्य लोरिकायन, यह ददई केवट का प्रस्तुत पाठ है। देखिये पृष्ठ ३४६ से ३४८ तक। अन्य पाठों में केवट को लोरिक की पत्नी मंजरी पर आसक्त होते दिखाया गया है। इस पाठ में लोरिक के कहने पर वह मंजरी का हाथ पकड़कर उसे नाव से उतार देता है।



मल्लाह जाति

'मल्लाह'[1] शब्द अरबी का है जिसका अर्थ नाव चलाने वाला होता है। स्पष्ट है यह शब्द भारत मे मध्ययुग मे प्रचलित हुआ होगा। मल्लाह जाति को नाविक, केवट, निषाद, माँझी आदि नामो से अभिहित किया जाता है। आधुनिक यातायात के साधनो के विकास के पूर्व इस जाति का बडा महत्व था। सभी प्रकार के सामानो का एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना इस जाति का काम था। नदियो द्वारा सम्पन्न होने वाले व्यापार मे मल्लाह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे। प्रयाग, बनारस आदि तीर्थ स्थानो मे तीर्थयात्रियो को नौका मे बैठाकर स्नान आदि कराना आज भी मल्लाह करते हैं। मल्लाह और पडो का तीर्थ स्थानो पर गहरा सम्बन्ध है। कुछ मल्लाह प्रयाग और काशी मे तीर्थ-यात्रियो को सूर्य की पूजा[2] के लिए और गगा आदि मे दूध चढाने के लिए नदी मे खडे होकर दूध भी बेचते हैं।

इन मल्लाहो का दूसरा पेशा मछली मारना भी है। ये आमतौर पर बडी नदियो के किनारे रहते है अतः जाल से मछली मारने का काम भी करते हैं। ये अच्छे तैराक होते हैं और इनमे से बहुत से मल्लाह नाव बनाने का काम भी करते हैं। किन्तु ट्रेनो, मालगाडियो तथा ट्रको के विकास के कारण इनका नाव से सामान ढोने का काम लगभग ठप सा पड गया है। बहुत से मल्लाह खेत खरीद कर अब अच्छी खेती करने लगे हैं तथा नौका चलाने का पुराना व्यवसाय उन्होने छोड दिया है। नाव से सामान ढोना व्यय साध्य है और समय साध्य भी। अत. मल्लाहो को लोग तभी काम देते हैं जब कोई विकल्प न हो। कुछ गरीब मल्लाहो ने पान, बीडी, गल्ला आदि की दूकानें कर ली हैं। कुछ शहरो मे जाकर रिक्शा आदि चलाने का काम भी करने लगे है।

मिर्जापुर जिले मे अगोरी के पास जहाँ रिहान्द तथा सोन नदी का संगम है, मल्लाहो की अच्छी बस्ती है। इलाहाबाद जिले मे टोस नदी के तट पर सिरसा मे मल्लाहो का कभी मुख्य स्थान हुआ करता था।[3] सिरसा मे गगा और टोस का सगम है। यहाँ मिर्जापुर और इलाहाबाद जिले के मल्लाहो मे सम्पर्क रहता था। मिर्जापुर जिले मे मल्लाहो की निम्नलिखित उपजातियाँ पायी जाती हैं : (१) मुडिया (मुडियारी, (२) बघवा या बघरिया, (३) चँइ, चैन या चैनी, (४) गुरिया या गोरिया, (५) तियार (६) सुरहिया या सोरहिया। बिंद, खरबिंद भी मल्लाहो की उपजातियाँ हैं।[4]

'लोरिकायन' के गायक ददई केवट ने केवट झीमल को 'बिन' (बिनवा)[5] भी कहा है। वाराणसी जिले मे मल्लाह की जो उपजातियाँ पायी जाती हैं वे निम्नलिखित हैं :

[illegible] (५) उल्वा (६) मुर्ह (७)

[illegible] वाराणसी जिले में अब कुछ नाव [illegible] को वाराणसी में मारवाड़ी भी [illegible] है।

[illegible]

[illegible] जो विन्ध्याचल की पर्वत-श्रेणियों [illegible] जिन्होंने विदर्भ की कन्या [illegible] पर्वत शृंखला में स्थित [illegible] गंगा तट के शृंगवेर में [illegible] इन निषादों ने राम की सेवा की

[illegible]

[illegible] विवाह करते हैं। यही [illegible] है। शादी-विवाह या अन्य [illegible] जाते हैं। पंचायत या बा[illegible] कर दिया जाता है। जाति से बहि[illegible] है। विवाह या मृत्यु के अवस[illegible] भोज के अवसर पर दंडित परि[illegible] होता है अतः जाति की पंचायत [illegible] जाति में मिलने के लिए बहिष्कृत परिवार [illegible]

[illegible] बाल-विवाह प्रचलित था पर यह [illegible] विवाह मल्लाह प्रायः करते हैं पर [illegible] की कन्या या वर का अपनी कुरी [illegible] मल्लाह पंडितों से वर-कन्या [illegible] है। 'वर ठेकनी' एक प्रकार का वर[illegible] निकालते हैं। विवाह के पूर्व [illegible] है। इसको 'देव उठनी' कहते हैं। बारा[illegible] की पूजा होती है। स्त्रियाँ वर [illegible] अन्य जातियों की भाँति मल्लाहों में [illegible] है। विवाह सिंदूरदान के बाद समाप्त होता है। कोहब[illegible] जाता है।

[illegible] मल्लाहों में विधवा विवाह हो सकता है पर विधवा विवाह कम[illegible]

होता है। आमतौर पर यदि पति का कोई छोटा भाई होता है तो विधवा की शादी उससे कर दी जाती है।

अन्य सस्कार

मल्लाहो मे बच्चा पैदा होने पर छठे दिन छठी का सस्कार होता है। यदि लडकी पैदा होती है तो यह सस्कार आठवे दिन होता है। पुरोहित राशि का नाम देता है। पुकार का नाम घर वाले देते है। आठ साल से कम उम्र के बच्चो की मृत्यु होने पर मल्लाह उन्हे जमीन मे गाडते है। अन्य हिन्दुओ की भाँति मल्लाहो के यहाँ श्राद्ध सस्कार भी होता है।

धर्म

अन्य हिन्दुओ की भाँति मल्लाह राम, हनुमान, शिव, विष्णु आदि की पूजा करते हैं पर गंगा मैया की मान्यता मल्लाहो के यहाँ अधिक है। गगा पापनाशिनी हैं, भवसागर से पार करने वाली है। मल्लाहो की अर्थ-व्यवस्था और आजीविका मे गगा का बडा योगदान रहा है। अत. स्वाभाविक रूप से उनकी मान्यता मल्लाहो मे विशेष है। मिर्जापुर के मल्लाह काली, भगवती, महावीर, महालक्ष्मी और सरस्वती की पूजा मे विश्वास करते है।

ग्रामदेवता के रूप मे मल्लाह डीह की पूजा करते हैं। मिर्जापुर के मल्लाह पाँचो पीर की भी पूजा करते है। पाँचो पीर मे बहराइच के ग़ाजी मियाँ भी शामिल हैं। कुछ मल्लाह ग़ाजीमियाँ की मज़ार पर बहराइच भी जाते है। ओझइती, भूत-प्रेत, डाइन, चुडैल आदि मे अन्य ग्रामीणों की ही तरह मल्लाह भी विश्वास करते हैं। मल्लाहो के अपने लोकगीत हैं, अपनी लोककथाएँ हैं, इन पर अभी तक किसी ने कार्य नही किया है। ये लोकगीत और कथाएँ धार्मिक और लौकिक दोनो हैं।

शिक्षा

मल्लाहो का पारम्परिक व्यवसाय दिनो-दिन कम होता जा रहा है। अत वे अपने बच्चो को विद्यालयो मे शिक्षा के लिए भेजने लगे हैं किन्तु आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण बहुत से मल्लाह बच्चो का अन्य ग्रामीणो की ही भाँति अच्छी शिक्षा नही दे पाते। यद्यपि तीर्थ यात्रियो के सम्पर्क मे होने से काशी और प्रयाग के मल्लाह भारत के विभिन्न भागो के लोगो के बारे मे काफी अच्छी जानकारी रखते हैं।

अहीर और मल्लाह

मिर्जापुर में अगोरी के पास कुरहुल, चोपन आदि मे मल्लाह और अहीरो का सम्पर्क गहरा है। मल्लाह और अहीर इन इलाको मे साथ-साथ रहते हैं। ददई केवट अपने गुरु ददई अहीर के साथ पशुओ की चरवाही । उन्होने लोरिकायन सीखा। इसी प्रकार अहीर और मल्लाहो का

के अवसर पर भी हो जाता है। ये दोनों जातियाँ मिलकर काम करती हैं। इसीलिए अहीरों का लोक महाकाव्य या पँवारा सीखने में ददई केवट को कोई संकोच या कठिनाई नहीं हुई।

टिप्पणियाँ

१. देखिए, मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ 'मद्दाह', उर्दू-हिन्दी शब्दकोश, हिन्दी समिति, लखनऊ, १९७२, पृष्ठ ४८०।

२. गंगा में स्नान करने के बाद लोग सूर्य को अर्घ्य चढ़ाते हैं। अपनी अंजुलि में दूध और गङ्गाजल लेकर भक्त यह अर्घ्य चढ़ाते हैं।

३. William Crooke, The tribes and castes of the North Western Provinces and Oudh, Calcutta, 1896, p 461.

४. वही, पृष्ठ ४६२।

५. देखिये 'लोरिकायन' का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ ३४५।
"बिनवा देलेसि नइया रे उतारी"

६. प्रस्तुत सूचना विस्कांसिन विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी जेम्स वी० वेल्फोर्ड द्वारा लिखे गये एक निबन्ध से ली गयी है। श्री वेलफोर्ड ने वाराणसी मे जाकर 'फील्ड वर्क' किया था। यह निबन्ध मुझे प्रोफेसर जोसेफ एल्डर के सौजन्य से प्राप्त हुआ था, अतः लेखक उनका आभारी है।

७. विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये, William Crooke, The tribes and castes of the North Western Provinces and Oudh Calcutta, 1896 p. 461.

८. 'लोरिकायन' में चंदा का बांठा के प्रति झुकाव होने के कारण बिरादरी उसके परिवार को दंडित करती है। चौधरी के कहने पर परिवार को क्षमा किया जाता है। चंदा के पिता को इसीलिए बिरादरी को भोज देना पड़ता है (देखिये 'लोरिकायन' का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ २४८ से २५१ तक)। चंदा के माता-पिता अहीर हैं पर बिरादरी की पंचायत मल्लाह तथा अन्य कई जातियों में भी सशक्त है। ब्राह्मण तथा क्षत्रियों में यह जातीय पंचायत उतनी सशक्त नहीं है।

९. गाज़ी मियाँ—महमूद गजनवी (मृत्यु १०३० ई०) के समय में भारत आये थे। वे हिन्दुओं से लड़ते हुए मारे गये थे। उत्तर प्रदेश के बहराइच में उनकी कब्र है। गाज़ी मियाँ सैयद सालार मसूद गाज़ी का संक्षिप्त रूप है। उनके मज़ार पर हिन्दू-मुसलमान दोनों मनौती मनाने जाते हैं।

□ □

'लोरिकायन' की कथा का उद्गम और भौगोलिक विस्तार

लोरिकायन की कथा का उद्गम और विस्तार पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे कानपुर से लेकर पूर्व मे बिहार में मिथिला तक पाया जाता है। उत्तर मे नैपाल की सीमा गोंडा से लेकर दक्षिण मे छत्तीसगढ़ तक इसके गायक फैले हुए हैं। भारत मे ऐसा कोई अन्य लोकमहाकाव्य नही है जिसका इतना विस्तार हो। सभवतः अहीर जाति जहाँ-जहाँ जाकर बसती गयी वहाँ-वहाँ लोरिकायन का भी प्रचार होता रहा, पर यह कहना कठिन है कि लोरिकायन का उद्गम कहाँ हुआ। उसके भौगोलिक स्थानो को ठीक-ठीक निर्धारित कर पाना सभव नही है। इसका एक कारण यह भी है कि एक ही नाम के कई स्थान उत्तर प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ मे पाये जाते हैं। हर गायक अपने निकट के कतिपय स्थानो को 'लोरिकायन' की कथा से जोड़ देता है। मिर्जापुर जिले के प्रस्तुत गायक ददई केवट ने मुझे बताया कि अगोरी, गउरा, हल्दी, नेउरी आदि सभी स्थान मिर्जापुर जिले मे हैं। इसी प्रकार बिहार के पटना जिले के गायक सुक्खूदास यादव ने गया के आसपास के कई स्थानो को लोरिकायन' की कथा से सम्बद्ध बताया। इलाहाबाद जिले के गायक रामअवतार यादव के पाठ मे सारी घटनाएँ बेतवा नदी के तट पर घटित होती हैं। लोकमहाकाव्य के गायको की भौगोलिक दृष्टि प्रायः सीमित होती है। अधिकाश गायक दूर के स्थान के सम्बन्ध मे बस इतना ही बताते हैं कि अमुक स्थान पूरब मे है या पश्चिम मे है। स्थानो के नाम भी लोकमहाकाव्यो मे बदल जाते हैं। उदाहरण के लिए पटना जिले के पाठ मे लोरिक का जन्मस्थान गउरा कनउजा हो गया है। लोरिक की पत्नी मजरी का जन्मस्थान अगोरी अगवढी हो गया है। इन सारी कठिनाईयों के होते हुए भी लोरिकायन के कुछ स्थानो की भौगोलिक स्थिति के सम्बन्ध मे कुछ सकेत किया जा सकता है। उदाहरण के लिए इस बात के सकेत मिलते हैं कि लोरिक का जन्मस्थान गउरा देवहा नदी के तट पर होना चाहिए। यद्यपि इसके लिए निश्चित रूप से ऐतिहासिक अथवा पुरातात्विक प्रमाण दे पाना कठिन है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के गायक प्रायः बलिया जिले में देवहा के किनारे गउरा की भौगोलिक स्थिति इगित करते हैं। बलिया पूर्वी उत्तर प्रदेश मे २५°-४३ उत्तर (अक्षाश) तथा ८४°११ पूर्व (देशान्तर) पर स्थित है। पटना जिले के सुक्खूदास यादव ने बताया

पच्छिम देसवा ओही कासी परयाग
जेकर बगलवा मे वहै सरयूजी के धारा रे राम

जेकर वगलवा में वसे कनउजपुर गाँव[1]

यह कनउजापुर अन्य पाठों में वर्णित लोरिक का जन्मस्थान गउरा है। गायक ने स्वयं भी अपने गायन में इस कनउजापुर को गोउरवा[2] कहा है। वलिया के शिवनाथ चौधरी के पाठ में गउरा का उल्लेख अनेक स्थलों पर आया है।

उतर वहल मय देवहा दखिन गंगा दरे ललकार
वीचे झील वहल सरजू के जाके मीलल वलिया मोहान
वलिया भटपुर वसे परगना वोहियापुर डंडार
ऊंचे चउर ब्रम्हाइनि नीचे गजन गउर गढ़पाल[3]

लोरिक की कथा पर आधारित एक आधुनिक पाठ में जिसके रचयिता महादेव सिंह हैं गउरा की स्थिति सुरहा झील के पीछे वतायी गयी है।

वायें वहे सरजू दहीने वहेली गंगा माय
ओही नीचे वसल वा गउरा गुजरात
तेकरा तो पीछे वहेला सुरहा के दरीआव[4]

महादेव सिंह द्वारा रचित पाठ 'चानवाँ का उद्धार' १९३८ में भार्गव पुस्तकालय, गायघाट वनारस से प्रकाशित हुआ था। यद्यपि यह पाठ परम्परागत नहीं है तव भी इतना अवश्य प्रतीत होता है कि महादेव सिंह ने किसी परम्परागत गायक से कहानी सुनकर अपने काव्य की रचना भोजपुरी में की है[5] जिसमें गउरा सरजू और गंगा के वीच में स्थित वताया गया होगा। वास्तव में देहवा और सरजू एक ही नदी के दो नाम हैं।

वनारस के पान्नू भगत के पाठ में यह संकेत मिलता है कि लोरिक का जन्मस्थान देवहा के किनारे था

जव देवहा के किनारे गइलैं
हनि के एड़ा वीर लोरिक-मरलैं
आरे करार गिरल भहराय[6]

लोरिक की पत्नी देवहा के तट पर सत का सुमिरन करती है और देवहा का पानी सूख जाता है

'आरे मंजरी घींचि कै मैं सतवा देववहा में मारि रे देलैं
आरे देवहा क पनिया रे मइया मो गयल वाड़ँ ना रे झुराय'[7]

मिर्जापुर के प्रस्तुत पाठ में मंजरी वेवरा नदी में सती होना चाहती है। वेवरा नदी गायक के एक छंद के अनुसार, लगता है, सरजू नदी ही है:

"हमहूँ करीं असननवा वेवरा में
अइसन लेंइय जलवा में नहरेवाइ
जव हम एकइन वपवा के होवइ विटिया
के फेरि एकइ पुरुसवा के वहुरे यारि

वरम्हाजी छोडि दह खगरवाजे सरजू से
हमहूँ जे लेइ मे सतियवा जे होइ रे जाव"[८]

बेवरा नदी पार कर लोरिक चनवा के साथ हल्दी जाता है। इससे भी पता चलता है कि लोरिक की जन्मभूमि के पास बेवरा नदी है।

"अहीरा खेवत ना ओठियन परि रे कइले
बेवरा उतरि गय्यल बा ओहि रे पार"[९]

बेवरा के तट पर चनवा का पति सिवहरिया लोरिक से लड़ाई करता है।[१०] किन्तु मिर्जापुर के पाठ मे एक कठिनाई यह है कि सोन नदी को भी गायक बेवरा नदी कहता है

आजु कहँ बारहना पलिया बा अगोरी
तिरपन कसकलि वानीय ना लिए जाई
तव केनि घुमि घुमि ना खोजिलह्भऽयने
तब फेरि बेवरवाह बाइ रे सोन ।[११]

बेवरा का अर्थ विकट नदी भी हो सकता है विकट से बेवरा बन जाना असम्भव नही है। किन्तु कठिनाई यह है कि अन्य कुछ गायक भी बेवरा को एक नदी के रूप मे चित्रित करते हैं। बेवरा नदी सोनभद्र नदी के पास है इसका सकेत एक स्थान पर शिवनाथ चौधरी के पाठ मे भी मिलता है

"सोनभद्दर मे जेवन नद्दी बहल रहल ओही बेवरा पर बरात टिकल रहल"।[१२]

यद्यपि बेवरा की स्थिति स्पष्ट नही है तथापि इसका उल्लेख प्रायः सभी पाठों मे मिलता है। यदि बेवरा की स्थिति का ज्ञान हो जाय तो लोरिकायन की भौगोलिकता पर कुछ अधिक स्पष्टता से प्रकाश पड सकता है। पर एक बात अधिक स्पष्ट प्रकट होती है कि गउरा सरजू और गगा नदी के बीच मे कोई स्थान रहा होगा। इस सरजू को देवहा कहा जाता था। १३७९ ई० मे लिखे गये मौलाना दाउद कृत चादायन मे भी गोबर (लोकमहाकाव्य का गउरा) देवहा नदी के तट पर है। चदायन के छन्द ३८१ मे गोवर हल्दी से बीस कोस है, एक प्रति मे यह तीस कोस है। चदा के साथ लोरिक वहाँ हल्दी से बीस दिन मे वापस आता है। देवहा के तट पर लोरिक के आने का समाचार पाकर लोगों को भय होता है।

कोस बीस तेहिं गोवरां लागइ
उतर देवहाँ लोग डरि भागइ
घर घर गोवराँ वात जनाई
देवहाँ कौन उतरिगा आई[१३]

घाघरा नदी को जिसका एक नाम वही सरयू है, उत्तर प्रदेश के बलिया तथा देवरिया जिले मे देवहा कहते हैं। बिहार के कुछ भागो मे भी इसको देवहा कहते हैं।

इसका उल्लेख इम्पीरियल गजेटियर आफ इंडिया, बंगाल, भाग १, कलकत्ता १६०६, पृष्ठ २१० पर मिलता है।

Gogra (ghagra) Skt (संस्कृत) Gharghara = rattling or laughter; other names Sarju or Saryu (the Sarabos of ptolemy एक ग्रीक यात्री का नाम) and in the lower part of its course Deoha or Dehwa.[१४]

घाघरा नदी तिब्बत ३०'४० उत्तर ८०°-४८ पूर्व से निकलती है। नेपाल में इसे कर्नाली या कौरियाला कहते हैं। यह नदी उत्तर प्रदेश में खेरी या बहराइच में प्रवेश करती है। गोरखपुर, देवरिया के पूर्व में यह सारन (बिहार) और बलिया (उत्तर प्रदेश) में प्रवेश करती है और गंगा में बलिया जिले में २५° ४० उत्तर और ८४° ८२ पूर्व में मिल जाती है।[१५]

बलिया में घाघरा या सरयू को देवहा आज भी कहते हैं। गंगा और देवहा के बीच गउरा की स्थिति अनेक गायक बताते हैं। मौलाना दाउद की कृति 'चंदायन' (१३७६ ई०) से यह बात प्रकट होती है कि गउरा 'देवहा' के तट पर है। अतः गउरा कहीं बलिया जिले में होना चाहिए। बलिया में ब्रह्माइन है, सुरहाताल है जिसका उल्लेख कई गायक गउरा के प्रसंग में करते हैं। बलिया जिले में ब्रह्माइन, बसंतपुर, जीराबस्ती, गोठहुली, बोहा आदि में आज भी लोग लोरिक की कथा से अपने गांवों का सम्बन्ध जोड़ते हैं। बलिया जिले में बोहा में एक संवरूबान्ह है जिसका सम्बन्ध लोरिक के भाई संवरू से जोड़ा जाता है। कहते हैं ब्रह्माइन की भगवती लोरिक की सहायता करती थीं। ब्रह्माइन में भगवती का एक पुराना मन्दिर भी है। लोरिक की कथा से तादात्म्य स्थापित करने वाले गाँव बड़ी संख्या में बलिया जिले में पाये जाते हैं। चंदायन, गायक और लोक परम्पराओं के प्रमाणों को एकत्र करने पर यह संभावना अधिक प्रबल हो जाती है कि लोरिक की जन्मभूमि बलिया में रही होगी और यहीं से यह कथा विकसित होते हुए अन्यत्र गयी होगी।

अगोरी

गउरा की भाँति मंजरी की जन्मभूमि अगोरी भी गायक ठीक-ठीक इंगित नहीं कर पाते। पटना के गायक सुक्खूदास ने केवल इतना ही मुझे बताया कि अगवढ़ी (अगोरी) भदवखरी नदी पार करके जाया जाता था।[१६] महादेव प्रसाद सिंह के आधुनिक पाठ[१७] के अनुसार अगोरी गंगा नदी के पास था।[१८] बनारस के गायक पांचू भगत मंजरी की कथा के प्रसंग में अगोरी का उल्लेख करते हैं पर वह किस नदी के किनारे है वह इसका संकेत नहीं करते। इलाहाबाद के गायक राम अवतार[१६] के पाठ के अनुसार वह बेतवा के तट पर था। पर मेरे कतिपय गायक अगोरी के साथ सोनभद्र नदी का उल्लेख करते हैं। प्रस्तुत पाठ में अगोरी की स्थिति का उल्लेख करते हुए गायक ददई मल्लाह कहते हैं "लोरिक की बारात अगोरी जा रही है वह सोनभद्र के उस पार है।"

आजु कहैं जातिय बरतिया जे वाइ अगोरीयाँ
अउ फेरि सोनइ भदरवा जे ओहि रे पार[२०]

ददई मल्लाह अगोरी के पास के थे अतः अगोरी को महत्त्व देना उनके लिए स्वाभाविक ही है। बलिया जिले के शिवनाथ चोधरी के पाठ में अगोरी का उल्लेख सोनभद्र नदी के साथ आता है :

नउ नदी नव गंडा तीन सै तेरह डांके के वाटे पहाड़
नारा नूरी के केवन गनती सोनभदर उतरि जाइ पार
आजु एनियां लमहरि डहरिया रहल कीलवा के
आजु वीरवा के अगोरिया में परलें विवाह[२१]
······· ······ ······
अब वीर चीन्हि न गइलन सोनभद्र
चलि गइलें रइनि अगोरिया पाल[२२]

बलराम पुर गोंडा के गायक ओरीलाल के पाठ में मंजरी सोन-सागर पर स्नान करने आती है किन्तु यह सोन-सागर सोनभद्र नदी है ऐसा प्रतीत नही होता।

आरे, चला न चली हो सोने सगरा सगरेकइ करी स्नान[२३]

मिर्जापुर जिले मे अगोरी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अगोरी के पास के गायक 'संवरू का विवाह' के बजाय 'लोरिक का विवाह' पहले गाते हैं। उनका कहना है कि मंजरी अगोरी की थी और कथा वीर लोरिक की है अतः हम पहले लोरिक और मंजरी के विवाह का प्रसंग गाते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के गायक पहले 'संवरू का विवाह' गाते हैं, क्योकि वह लोरिक के बडे भाई लगते थे।

अगोरी का राजा एक दुष्ट क्षत्रिय राजा था। उसका नाम मोलागत था। वह अपने राज्य की कन्याओ का अपहरण करवाता था। अगोरी और उसके आसपास लोरिक और मंजरी के विवाह की गाथा काफी प्रचलित है। अगोरी में रिहन्द तथा सोननदी का संगम भी है। मिर्जापुर से ६२ मील दक्षिण पूर्व मे अगोरी का किला और उसके ध्वंसावशेष अभी भी वर्तमान हैं। किले के एक भाग मे फारसी का १०२६ हिजरी (१६१६ ई०) का शिलालेख भी है। इस भाग को माधव सिंह ने बनवाया *था जो राजा मदनशाह के भाई थे। हिजरी १०२६ मे अगोरी चुनार सरकार के* अन्तर्गत था।[२४] कहते हैं कभी अगोरी वाराणसी की भाँति बड़ा था। यहाँ खरवार जाति के बलंद राजाओ का आधिपत्य था। तेरहवीं शताब्दी मे महोबा के चदेलों ने इन्हे भगाकर अगोरी पर अधिकार कर लिया था। बाद मे वलंद राजा घाटम ने विजयपुर के गाहड़वाल राजाओं की सहायता से फिर उसे हस्तगत कर लिया।[२५] किन्तु अगोरी के इतिहास मे दुष्ट राजा मोलागत का कही उल्लेख नही आता। यद्यपि वीर लोरिक से लड़ने के लिए 'लोरिकायन' मे मोलागत पश्चिम के बघेल, दक्षिण के कोल, उत्तर के रक्सेल तथा पूर्व के राजाओं को अपनी सहायता के लिए आमंत्रित करता है।

हथवा में लेनह् कलमियाह् मसि रे हान
आजु कहँ लीखई ना पतियाह् चारि रे कोने
पहिलेह् भेंजरा ना पतिया बा लेई रे पछिवां
जाइ कनि नेवतइं ना सुबवाह् बाइ बघेला
अब जेन बानह् तुपकिया में बरि रे याऽर
दुसरी पातीय दाखिनवाँह् कइ ए लीखऽ
पतियाह् देलह् दाखिनवां में दव रे राई
आजु भाइ नेवतइ ना सूबवाह् रे कोरइया
जब जेन बानह् ना तं रवा में बरि रे यारऽ
आजु कहैं नेवतइ ना सुबवाह् रे पुरुवहा
अब जेन बानह् ना लोहवा में बरि रे याऽरय
आजु कहैं उत्तर ना देसवाँह् पाती रे गइलीं
रजवाह् नेवतइ ना जहियाह् रकरे सेलाऽ
जेनकर बारह ना मनवा के गीरइ रे सेलाऽ[२६]

सोन (शोण) नदी[२७] अभी भी अगोरी के पास बहती है। वह अमरकंटक (२२°४२ उत्तर ८२°४ पूर्व) की पहाड़ियों से निकलती है। मध्य प्रदेश में बिलासपुर से होते हुए रीवा (२३°६ उत्तर ८१°५८ पूर्व) में प्रवेश करती है। सोन महानदी के साथ भी संगम बनाती है। शोण का भारतीय साहित्य में बड़ा महत्व था। कभी पाटलिपुत्र (पटना) में गंगा और सोन का संगम था।[२८]

मेरे कुछ गायक अगोरी और सोनभद्र के घाट का उल्लेख करते हैं जहाँ अपने शत्रु मोलागत और उसके सहायकों को पराजित कर लोरिक मजरी के सम्मान की रक्षा करता है। क्षत्रिय राजा मोलागत का संहार कर विवाहिता मंजरी के साथ बीर अहीर लोरिक गउरा वापस आता है। किन्तु इस घटना का किसी इतिहास में या अन्यत्र उल्लेख नहीं है। गउरा के सम्बन्ध में चंदायन (१३७९ ई०) का यह प्रमाण कि वह देवहा के किनारे था, कुछ अधिक पुष्ट है। अगोरी, मोलागत आदि के सम्बन्ध में लोकमहाकाव्य तथा स्थानीय मौखिक परम्पराओं से प्राप्त प्रमाणों के अतिरिक्त लोरिक की अगोरी की लड़ाइयों और उसके मंजरी से विवाह के सम्बन्ध में कोई अन्य प्रमाण नहीं मिलते।

अगोरी से कुछ दूरी पर स्थित मारकुण्डी में एक पत्थर है जिसको लोरिक ने दो भागों में खंडित किया था।[२९] पर यह कथा भी लोक परम्परा में ही प्राप्त होती है। ददई केवट के अनुसार ३ महीने तेरह दिन में अगोरी से लोरिक की बारात गउरा वापस आती है।[३०] इलाहाबाद के पाठ के अनुसार पाँच दिनों में अगोरी से लोरिक गउरा वापस आता है। किन्तु इलाहाबाद के पाठ 'चनैनी' में सारी घटनाएँ बेतवा के तट पर घटित होती हैं। पर इसमें संदेह नहीं कि लोरिकायन की कथा का

अगोरी से गहरा सम्बन्ध है। सभी गायक अगोरी और सोरिक-मंजरी के विवाह का प्रसग उल्लास सहित गाते हैं।

हल्दी

लोरिक सुहवल तथा अगोरी की लडाईयो के बाद गउरा वापस आता है तथा पास के राजा सहदेव की लडकी चनवा से प्रेम करने लगता है। फिर उसको लेकर हल्दी भाग जाता है। सर्वे आफ इडिया की सूची के अनुसार उत्तर प्रदेश मे ६ तथा बिहार मे २ हल्दी हैं।[३१] लोरिकायन का हल्दी कौन है यह प्रश्न जटिल है। कुछ गायक हल्दी को बगाल देश मे बताते हैं। शिवनाथ चौधरी के अनुसार हल्दी पूरब देश बगाल मे था :

"अब चनवा सगवे ना वोर कान बाटे लगावत
अब चानल पुरुबे देसवा रे बगाल"[३२]

लोरिक कहता है :

"एगो हम तिरिया सगे लगाय के
जात रहली ह पूरब देस बंगाल"[३३]

शिवनाथ चौधरी के पाठ के अनुसार हल्दी पहुँचने के पूर्व चनवा को साँप डसता है।[३४] शिव पार्वती आकर उसकी रक्षा करते हैं। हल्दी पहुँचने के पूर्व लोरिक और चनवा बेवरा नदी पर पहुँचते है :

(अ) "अब भइया सुनिलऽ खेला न अलबेल्हा
अब मोर पहुँचत बेवरवा पर बाइ"[३५]

(ब) "ईत अब अगवा नदी ना परि गईल नाही नाव लवन्त नदिया में वाय
सइया तनी वइठि जा बेवरा पर तनी डफ उगे सुन्ज लन्कार"[३६]

इसी प्रसग मे गायक इस नदी को खेरी नदी भी कहता है :

"अगवा परि गइल नदिया जो खेरी अवहो त साफ होते नाहीं नाय"[३७]

बेवरा नदी से हल्दी की दूरी अधिक नही है। चनवा लोरिक से [illegible] है :

"अब ईहे थोरे दूर गउवा बाटे हल्दी,
हरदी क किलवा लेली जा नियरान"[३८]

पटना जिले के सुवछूदास यादव के मगही पाठ के [illegible] नदी थी।[३९] उसको पार करके नेउरापुर जाया [illegible]। [illegible] बैठकर लोरिक नेउरापुर गया था और उसने [illegible] यह लगभग प्रत्येक पाठ मे पाया जाता है। [illegible] जार्ज ग्रियर्सन ने कराया था धेरा नदी पार [illegible]।[४०]

ददई नेवट के प्रस्तुत पाठ मे [illegible] जाता है, किन्तु गायक ने मुझे बताया कि [illegible] गायक श्री रामसकल यादव[४१] के [illegible] का हल्दी चेर और हैहयवंशी [illegible]।[४२] [illegible] के अनुसार शिवनाथ चौधरी के [illegible]

नगीचे वसल वा पुरुब हरदी देस बंगाल
उहवां के राजा, महुअरि जतिया कें हउवें मसान[४४]

इस आधुनिक पाठ में हल्दी जाने के रास्ते में पहले लोरिक बक्सर में गंगा पार करता है फिर बेवरा नदी पार करता है।

करि दतुअनियाँ नदी बेवरा में वीर नहाय
धोती तो बदलि के सुरूमा हो गइल तइयार[४५]

पटना के गजेटियर के १९०७ के संस्करण में यह उल्लेख मिलता है कि सोननदी हरदी छपरा में गंगा से मिलती है।[४६] हरदी छपरा पटना जिले में दिनापुर और बांकीपुर के पास है। १७७२ ई० के एटलस के अनुसार गंगा और सोन का संगम मनेर के पास था।[४७] यदि सोन नदी ही बेवरा नदी है तो हरदी-छपरा, मनेर और दिनापुर के पास अर्थात् पटना जिले में कहीं हरदी (हल्दी) होनी चाहिए। यदि घाघरा (देवहा) को बेवरा कहा जाता था तब भी बलिया जिले के पूर्व में हल्दी होनी चाहिए। बिहार और बंगाल मध्य युग में पृथक् नहीं थे। मौलाना दाउद के चंदायन (१३७९ ई०) के अनुसार हल्दी से गोवर (गउरा) बीस कोस है। चंदायन के मैन-चेस्टर वाली प्रति में यह दूरी तीस कोस बतायी गयी है।[४८] 'चंदायन' में हल्दी जाने के लिए लोरिक और चंदा गंगा पार करते हैं। चंदायन में इस गंगा पर ही चनवा का पति बावन (लोकमहाकाव्य का सिवहरिया) आकर लोरिक से युद्ध करता है और वह पराजित होता है। लोक परम्परा के कई पाठों में चनवा का पति बेवरा नदी पर आकर लोरिक से युद्ध करता है और परास्त होकर वापस लौट जाता है। ये सारी परिस्थितियाँ यह संकेत करती हैं कि लोरिकायन का हल्दी गंगा तथा घाघरा (देवहा) या गंगा-सोनभद्र के संगम के पास कहीं रहा होगा। ये नदियाँ अपनी धाराएँ बदलती रही हैं। उदाहरण के लिए पहले संभवतः घाघरा (देवहा) और गंगा का संगम बलिया जिले में सुरहाताल के पास था।[४९] १८४० ई० में यह संगम बिहार के छपरा जिले से ८ मील पश्चिम हो गया।[५०] इसी प्रकार सोन भी पहले बिहार के मनेर में गंगा के साथ संगम बनाती थी। अब यह संगम पटना जिले में हरदी-छपरा के पास है। जो भी हो इतना तो स्पष्ट है कि गंगा, घाघरा (देवहा) सोन के संगम के आस-पास ही कहीं लोरिकायन की कथा विकसित हुई होगी। सुहवल नेउरापुर, पीपरी तथा अन्य स्थान जिनका उल्लेख लोरिकायन में आता है इन्हीं नदियों के आसपास रहे होंगे।

टिप्पणियाँ

१. सुक्खूदास का मगही का पाठ मैंने १९६७ में संगृहीत किया था। १८ अप्रैल १९६७ को उन्होंने बताया कि सरयू के किनारे लोरिक का जन्मस्थान 'कनउजा' है। गायक अपने पाठ में इसको गोउरवा भी कहता है।

२ गोंरवा के ऊपर गौरवा उपरि नियाहीं चलल ये आय [कुवर लोरिक के पिता का नाम है ये गोंरवा (गउरा) के रास्ते पर आ रहे हैं।]

३ लोरिकायन गायक बलिया जिले के उजियार भरौली के रहने वाले थे। इनकी मृत्यु १९८८ में हुई। उनका पाठ मैंने १९६६ में संगृहीत किया था। देखें का टंकित पाठ, भाग १ पृष्ठ २३५.

४ गाथा का उद्धार, लेखक महादेव प्रसाद सिंह, बनारस १९२८, पृष्ठ १ ८। महादेव प्रसाद सिंह का लोरिकायन कई खण्डों में प्रकाशित हुआ था। कुछ भाग श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, कलकत्ता तथा कुछ भाग बनारस के भार्गव पुस्तकालय गायघाट, बनारस से प्रकाशित हुए थे।

५ महादेव प्रसाद सिंह ने लोरिकायन में स्वयं बताया है कि गायकों की कथा सुनकर उन्होंने अपने काव्य की रचना की है। महादेव सिंह ने स्वयं कहा है कि किस्सा पुराना है इसको हम तथा विस्तार दे रहे हैं।

जहां जैसन देखेन्हे तहां तैसन देले लाके सिंगार
महादेव सिंह यह पवारवा लिखे बनाय
अपना जुगुती से रचि के भ रे री तइयार
किस्सा ह पुराना लेकिन भइल ह विस्तार

—चानवा का उद्धार, बनारस, १९१८ पृष्ठ ११।

लगता है महादेव सिंह ने किसी इन्द्रासन साहु से लोरिकायन सुना था फिर अपने ढंग से उसे भोजपुरी में लिखकर किताब छपवाई थी —

गावें ले इन्द्रासन साहु लोरिकवा गत मे बाद
मैं तो लोरिकवा के भइया किताबा छिती ले छाप
नव तो पवरवा के भइया लिखली हो बनाय
महादेव सिंह ये लिख ले कथिया अब मे तार

लोरिकायन (प्रथम भाग), महादेव सिंह, मुकाम तावाप, जिला आरा, श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, सुतापट्टी, कलकत्ता, १९५४ ई० (८ वीं बार), पृष्ठ ६।

६. लोकमहाकाव्य लोरिकी सम्पादक श्यामसमनोहर पाण्डेय, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, १९७९ ई०, पृष्ठ १८४।

७. वही, पृष्ठ ३४७।

८. देखिये ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ ३५०।

९. ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ २८०।

१०. वहीं, पृष्ठ २८१।

११. वही, पृष्ठ २१।

१२. मेरे संग्रह के टंकित पाठ के भाग २ के पृष्ठ ३७ पर य

नगीचे बसल बा पुरुब हरदी देस बंगाल
उहवां के राजा, महुअरि जतिया के हउवे मसान[४४]

इस आधुनिक पाठ में हल्दी जाने के रास्ते में पहले लोरिक बक्सर में गंगा पार करता है फिर बेवरा नदी पार करता है।

करि दतुअनियाँ नदी बेवरा में बीर नहाय
धोती तो बदलि के सुरूमा हो गइल तइयार[४५]

पटना के गजेटियर के १९०७ के संस्करण में यह उल्लेख मिलता है कि सोननदी हरदी छपरा में गंगा से मिलती है।[४६] हरदी छपरा पटना जिले में दिनापुर और बाँकीपुर के पास है। १७७२ ई० के एटलस के अनुसार गंगा और सोन का संगम मनेर के पास था।[४७] यदि सोन नदी ही बेवरा नदी है तो हरदी-छपरा, मनेर और दिनापुर के पास अर्थात् पटना जिले में कहीं हरदी (हल्दी) होनी चाहिए। यदि घाघरा (देवहा) को बेवरा कहा जाता था तब भी बलिया जिले के पूर्व में हल्दी होनी चाहिए। बिहार और बंगाल मध्य युग में पृथक् नहीं थे। मौलाना दाउद के चंदायन (१३७९ ई०) के अनुसार हल्दी से गोवर (गउरा) बीस कोस है। चंदायन के मैन-चेस्टर वाली प्रति में यह दूरी तीस कोस बतायी गयी है।[४८] 'चंदायन' में हल्दी जाने के लिए लोरिक और चंदा गंगा पार करते हैं। चंदायन में इस गंगा पर ही चनवा का पति बावन (लोकमहाकाव्य का सिवहरिया) आकर लोरिक से युद्ध करता है और वह पराजित होता है। लोक परम्परा के कई पाठों में चनवा का पति बेवरा नदी पर आकर लोरिक से युद्ध करता है और परास्त होकर वापस लौट जाता है। ये सारी परिस्थितियाँ यह संकेत करती हैं कि लोरिकायन का हल्दी गंगा तथा घाघरा (देवहा) या गंगा-सोनभद्र के संगम के पास कहीं रहा होगा। ये नदियाँ अपनी धाराएँ बदलती रही हैं। उदाहरण के लिए पहले संभवतः घाघरा (देवहा) और गंगा का संगम बलिया जिले में सुरहाताल के पास था।[४९] १८४० ई० में यह संगम बिहार के छपरा जिले से ९ मील पश्चिम हो गया।[५०] इसी प्रकार सोन भी पहले बिहार के मनेर में गंगा के साथ संगम बनाती थी। अब यह संगम पटना जिले में हरदी-छपरा के पास है। जो भी हो इतना तो स्पष्ट है कि गंगा, घाघरा (देवहा) सोन के संगम के आस-पास ही कहीं लोरिकायन की कथा विकसित हुई होगी। सुहवल नेउरापुर, पीपरी तथा अन्य स्थान जिनका उल्लेख लोरिकायन में आता है इन्हीं नदियों के आसपास रहे होंगे।

टिप्पणियाँ

१. सुक्खूदास का मगही का पाठ मैंने १९६७ में संगृहीत किया था। १८ अप्रैल १९६७ को उन्होंने बताया कि सरयू के किनारे लोरिक का जन्मस्थान 'कनउजा' है। गायक अपने पाठ में इसको गोउरवा भी कहता है।

२ तब न हो बुढवा कुबड़ू गोठरवा डगरि नियाहीं चलल ये जाय [कुबड़ू लोरिक के पिता का नाम है वे गोठरवा (गउरा) के रास्ते पर जा रहे हैं।]

३ शिवनाथ चौधरी बलिया जिले के उजियार भरौली के रहने वाले थे। उनकी मृत्यु १९८२ में हुई। उनका पाठ मैंने १९६६ में संगृहीत किया था। मेरे संग्रह का टंकित पाठ, भाग १ पृष्ठ २८५.

४. थानवा का उद्धार, लेखक महादेव प्रसाद सिंह, बनारस १९३८, पृष्ठ १५८। महादेव प्रसाद सिंह का लोरिकायन कई खण्डों में प्रकाशित हुआ था। कुछ भाग श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, कलकत्ता तथा कुछ भाग बनारस के भार्गव पुस्तकालय गायघाट, बनारस से प्रकाशित हुए थे।

५ महादेव प्रसाद सिंह ने लोरिकायन में स्वयं बताया कि गायकों की कथा सुनकर उन्होंने अपने काव्य की रचना की है। महादेव सिंह ने स्वयं कहा है कि किस्सा पुराना है इसको हम नया विस्तार दे रहे हैं।

जहा जैसन देखेलें तहा तैसन देले लाके मिलाय
महादेव सिंह यह पवारवा लिखे बनाय
अपना जुगुती से रचि के करे ले तइयार
किस्सा ह पुराना लेकिन नया ह विस्तार

—थानवा का उद्धार, बनारस, १९३८ पृष्ठ ५१।

लगता है महादेव सिंह ने किसी इलाहाबाद भाट से लोरिकायन सुना था फिर अपने ढंग से उसे भोजपुरी में लिखकर किताब छपवाई थी—

गावे ले इलाहाबाद भाट लोरिकवा गुन ये बाट
सेहू तो लोरिकवा के भइया किरतवा दिहलें ये छाप
सब तो पवरवा ये भइया लिखली हो बनाय
महादेव सिंह ये दिल से [illegible] ये गाय

लोरिकायन (प्रथम भाग), महादेव सिंह, [illegible], [illegible], श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, [illegible], कलकत्ता, १९४७ ई० (८ वीं बार), पृष्ठ ८।

६ लोकमहाकाव्य लोरिकी: सम्पादक श्याम मनोहर पाण्डेय, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, १९७९ ई०, पृष्ठ १२४।

७ वहीं, पृष्ठ ३७३।

८. देखिये ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ ३४०।

९ ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ २८०।

१०. वहीं, पृष्ठ २८१।

११ वहीं, पृष्ठ २९।

१२ मेरे संग्रह के टंकित पाठ के भाग २ के पृष्ठ ३० पर यह उल्लेख है।

१३. मौलाना दाउद कृत चंदायन, सम्पादक, माता प्रसाद गुप्त, आगरा, १९६७ छंद ३८१।

१४. Imperial Gazetteer of India, Bengal, by L. S. S. O'malley, Vol. I, Calcutta 1909 पृष्ठ २१०।

१५. वही, पृष्ठ २१०।

१६. १८ अप्रैल १९६७ की बातचीत के दौरान गायक सुक्खूदास ने यह बात बतायी।

१७. महादेव प्रसाद सिंह के पाठ के लिए देखिये टिप्पणी संख्या ५।

१८. दुःखी मंजरी गंगा में जाकर अपना प्राण त्याग देना चाहती है क्योंकि उसके लिए कहीं योग्य वर नहीं मिल रहा था। मंजरी कहती है—'गंगाजी में प्राणवां तेजे सुरलभवा होई हमार' लोरिकायन, मंजरी का विवाह, कलकत्ता, तिथि नहीं है, पृष्ठ ४१।

१९. देखिये लोकमहाकाव्य चनैनी, सम्पादक श्याममनोहर पाण्डेय, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, १९८२।

२०. देखिये ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ १४०।

२१. शिवनाथ चौधरी (श्रीनाथ चौधरी) इनका पाठ मेरे संग्रह में है टाइप किये हुए पाठ के भाग २ पृष्ठ १२ पर यह उद्धरण है। १९६६ ई० में मैंने यह पाठ संगृहीत किया था।

२२. वही, पृष्ठ १७।

२३. ओरी लाल, गोंडा जिले के गुजर पुरवा के रहने वाले हैं। बलराम गोंडा में मैंने १९६७ में उनके पाठ की रिकार्डिंग की थी। यह पाठ मेरे संग्रह में है।

२४. विस्तार के लिए देखिये मिर्जापुर का डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर Mirzapur, (A Gazetteer) by Drake Brockman, 1911, में अगोरी सम्बन्धी सूचनाएँ विस्तार से दी गयी हैं, देखिये पृष्ठ २५१ से २५८ तक।

२५. वही, मिर्जापुर गजेटियर, पृष्ठ २५२।

२६. ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ १११।

२७. सोननदी के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए देखिये—Imperial Gazetteer of India, Bengal, Vol. I Calcutta 1909, पृष्ठ २११-१३। सोन नदी के सम्बन्ध में Patna (Bengal District Gazetteers) by L. S. S. O'malley, Calcutta 1907, पृष्ठ ५ भी देखिए। पटना के इस गज़ेटियर को १९२४ में J. F. W. James ने संशोधित किया था।

२८. Imperial Gazetteer of India, Bengal, पृष्ठ २१३।

२९. मारकुंडी में लोरिक द्वारा खंडित किये गये पत्थर का उल्लेख मेरे गायक ददई केवट ने किया है। पत्थर को लोरिक दो टुकड़ों में करता है और मंजरी उस पर अपना सिंदूर छिड़क देती है।

ओहि घड़ी खींचत ना खंडिया जे बाइ दो गाहो
खींचि कनि मारत बीचेट् रे तर रे वारि
....
पलकी से निकलनि ना विदवा वा महरे कज्य
जेकर ग्रिक भयल पत्तीनवा जे देख रे वाय
उहे भाई सेनूर नहितव जे काढ़िए लिहलेन
घुमि घुमि छिरकति पायरवा जे पर रे वाय

ददई केवट का प्रस्तुत पाठ, पृष्ठ १५७

मारकुंडी के पत्थर का उल्लेख Folksongs of Chattisgarh में वेरियर एलविन तथा The tribes and castes of the North-Westen Provinces and Oudh मे W. Crooke ने भी किया है।

३०. ददई केवट का प्रस्तुत पाठ पृष्ठ १५८
बीति गयल तीनिय महिनवाह् तेर रे रोजय
तेरहे के आइलि ना डंड़ियाह् रे पहुँची।

३१. मौलाना दाउद कृत चंदायन, सम्पादक परमेश्वरी लाल गुप्त, बम्बई १९६४, पृष्ठ २९९।

३२. मेरे संग्रह के टंकित पाठ से उद्धृत।

३३. शिवनाथ चौधरी का पाठ मेरे संग्रह में है।

३४. सर्पदंश का प्रसंग मौलाना दाउद कृत चंदायन (१३७९ ई०) मे भी है। चंदायन में शिव-पार्वती नहीं, गारुडी साप झाड़ने वाला ओझा चंदा का सर्पदंश ठीक करता है।

३५. शिवनाथ चौधरी के पाठ से उद्धृत।

३६. शिवनाथ चौधरी के पाठ से उद्धृत।

३७. शिवनाथ चौधरी के पाठ से उद्धृत।

३८. शिवनाथ चौधरी के पाठ से उद्धृत।

३९. सुकृतदास (जिला पटना) से हुई १८ अप्रैल १९६७ की बातचीत

४०. यह इंडियन आफिस लाइब्रेरी, लंदन मे सुरक्षित है। इंडियन आफिस की श्रीमती उषा त्रिपाठी से मुझे इस पाठ की सूचना मिली। लेखक उनका आभारी है।

४१. रामसकल यादव बलिया जिले के बरम्हाइन हनुमानगंज के रहने वाले हैं। उनका पाठ मेरे संग्रह मे सुरक्षित है। १९६६ मे मैंने उनका पाठ संगृहीत किया था।

४२. रामसकल यादव से प्रस्तुत लेखक की बातचीत १९६७ में फिर १९८२ में हुई। उन्होंने यह सूचना दी कि हल्दी बलिया जिले का हल्दी है जो गंगा के तट पर है। हल्दी राज्य मध्ययुग में काफी प्रसिद्ध रहा है।

४३. बलिया जिले के हल्दी के सम्बन्ध में ए० फरर ने लिखा है कि यह बलिया तहसील में गंगा के दाहिने तट पर बलिया से दस मील की दूरी पर है। यहाँ १६४३ ई० का एक किला था, जिसे १६४३ ई० में धीरदेव ने बनवाया था। शाहाबाद जिले में बिहियां के हैहयावंशी और चेर राजाओं के संघर्ष प्रसिद्ध हैं। हैहयवंशी राजपूतों का गढ़ बलिया का हल्दी भी था। हल्दी के एक राजा रामदेव ने भंड़सर की स्थापना ११वीं शताब्दी में की थी। हल्दी और बिहिया के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये—

1. The antiquarian remains in Bihar by D. R. Patil, Patna, १९६३ पृ० १७०, पृ० ५५.
2. The monumental antiquities & inscriptions in the N. W. Provinces & Oudh, by A Furher, (reprint) Varananasi, १९७० पृ० १९२.
3. Ballia (District Gazetteer) by H. R. Nevill, Allahabad १९०७. शाहाबाद के चेरु राजाओं का हरिहोवंश (हैहयवंशी) के राजपूतों से संघर्ष होता रहा। इसका उल्लेख History of Bengal, (Muslim period १२००-१७५७) Jadunath Sarkar, Patna, १९७३ पृष्ठ १७१ पर भी है। इन चेरुओं और हरिहोवंशी क्षत्रियों का सम्बन्ध हल्दी से भी था।

चेरों का सम्बन्ध आदिवासी कोलों से था, इसका उल्लेख मिर्जापुर के गजेटियर में भी आता है। यदि चेर कोल थे तब यह बात महत्वपूर्ण बन जाती है। मृत्यु के पहले लोरिक की लड़ाइयाँ कोलों और भीलों से हुई। चेरों शाहाबाद, तथा गंगा के तट पर बलिया, पटना आदि में वर्तमान थे।

चेरों के सम्बन्ध में देखिये Mirzapur (a Gazetteer) by Drake Brockman, Allahabad १९११, पृष्ठ १०८।

४४. मानवों का उद्धार, महादेव प्रसाद सिंह, बनारस १९३८, पृष्ठ ३४।

४५. वही, पृष्ठ ११६।

४६. Patna (Bengal District Gazetteers) by L. S. S. O'malley; Calcutta १९०८, पृष्ठ ५

४७. Imperial Gazetteer of India, Bengal, Vol I, १८६४ by L. S. S. O'malley Calcutta १९०९ पृष्ठ २१३ ।

४८. मौलाना दाउद कृत चंदायन, सं० परमेश्वरी लाल गुप्त, बम्बई छंद ४३६/४ माता प्रसाद गुप्त के संस्करण में हल्दी से गोवर २० कोस है। चादायन ३८१/४

४९ *Ballia, District Gazetteer, H R. Nevill, Allahabad* १९०७ पृष्ठ ११ ।

५०. वही, पृष्ठ ९ ।



४२. रामसकल यादव से प्रस्तुत लेखक की वातचीत १९६७ में फिर १९८२ में हुई। उन्होंने यह सूचना दी कि हल्दी वलिया जिले का हल्दी है जो गंगा के तट पर है। हल्दी राज्य मध्ययुग में काफी प्रसिद्ध रहा है।

४३. वलिया जिले के हल्दी के सम्वन्ध में ए० फरर ने लिखा है कि यह वलिया तहसील में गंगा के दाहिने तट पर वलिया से दस मील की दूरी पर है। यहां १६४३ ई० का एक किला था, जिसे १६४३ ई० में धीरदेव ने वनवाया था। शाहावाद जिले में विहियां के हैहयावंशी और चेर राजाओं के संघर्ष प्रसिद्ध हैं। हैहयवंशी राजपूतों का गढ़ वलिया का हल्दी भी था। हल्दी के एक राजा रामदेव ने भंड़सर की स्थापना ११वीं शताब्दी में की थी। हल्दी और विहिया के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन के लिए देखिये—

1. The antiquarian remains in Bihar by D. R. Patil, Patna, १९६३ पृ० १७०, पृ० ५५.
2. The monumental antiquities & inscriptions in the N. W. Provinces & Oudh, by A Furher, (reprint) Varanansi, १९७० पृ० १९२.
3. Ballia (District Gazetteer) by H. R. Nevill, Allahabad १९०७. शाहाबाद के चेरु राजाओं का हरिहोवंश (हैहयवंशी) के राजपूतों से संघर्ष होता रहा। इसका उल्लेख History of Bengal, (Muslim period १२००-१७५७) Jadunath Sarkar, Patna, १९७३ पृष्ठ १७१ पर भी है। इन चेरुओं और हरिहोवंशी क्षत्रियों का सम्वन्ध हल्दी से भी था।

चेरों का सम्बन्ध आदिवासी कोलों से था, इसका उल्लेख मिर्जापुर के गज़ेटियर में भी आता है। यदि चेर कोल थे तव यह बात महत्त्वपूर्ण बन जाती है। मृत्यु के पहले लोरिक की लड़ाइयां कोलों और भीलों से हुई। चेरों शाहाबाद, तथा गंगा के तट पर बलिया, पटना आदि में वर्तमान थे।

चेरों के सम्बन्ध में देखिये Mirzapur (a Gazetteer) by Drake Brockman, Allahabad १९११, पृष्ठ १०८।

४४. चानवां का उद्धार, महादेव प्रसाद सिंह, बनारस १९३८, पृष्ठ ३४।

४५. वही, पृष्ठ ११६।

४६. Patna (Bengal District Gazetteers) by L. S. S. O'malley; Calcutta १९०९, पृष्ठ ५

४७. Imperial Gazetteer of India, Bengal, Vol I, १८६४ by L. S. S. O'malley Calcutta १६०८ पृष्ठ २१३।

४८. मौलाना दाउद कृत चंदायन, सं० परमेश्वरी लाल गुप्त, बम्बई छंद ४३६/४ माता प्रसाद गुप्त के संस्करण मे हल्दी से गोवर २० कोस है। चांदायन ३८१/४

४९ Ballia, District Gazetteer, H R. Nevill, Allahabad १६०७ पृष्ठ ११।

५०. वही, पृष्ठ ६।



चंदायन और लोरिकायन*

चंदायन की कथा लोरिकायन की कथा के एक अंश पर आधारित है। वह अंश है 'चनवा का उढ़ार'। मौलाना दाउद ने १३७९ ई० में चंदायन की रचना की थी। इससे स्पष्ट होता है कि चौदहवीं शताब्दी में लोरिकायन या चनैनी पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुकी थी। 'चंदायन' को सूफ़ी काव्य बनाने के लिए तथा उसे साहित्यिक रूप एवं सौष्ठव प्रदान करने के लिए मौलाना दाउद ने अनेक तत्व जोड़े जो लोक-महाकाव्य की परम्परा में नहीं पाये जाते। जैसे गोवर नगर का विस्तृत वर्णन, चंदा का नख-शिख, विरह और प्रेम का दर्शन आदि। लोरिकायन की कथा की एक विशेषता यह है कि वह वीर गाथा है। उसका नायक लोरिक मलसांवर के विवाह में अनेक युद्ध करता है। अपने विवाह के उपरान्त भी लड़ाइयाँ करता है। 'चनवा के उढ़ार' के प्रसंग में भी हल्दी में, फिर नेउरापुर में युद्ध करता है। कथा के अंत में वह दु:खद मृत्यु का आलिंगन करता है। मौलाना दाउद ने इस शौर्य को उतना महत्व नहीं दिया है। चंदायन में युद्ध कम हैं और लोरिक का प्रेमी व्यक्तित्व यहाँ अधिक उभर कर आया है। सूफ़ी कवि की दृष्टि प्रेम-दर्शन की अभिव्यक्ति पर केन्द्रित है अत: लोरिक के शौर्य और युद्धों को उसने गौण कर दिया है तथापि लोरिकायन के 'चनवा का उढ़ार' के अनेक प्रसंग चंदायन में सुरक्षित हैं।[1]

'चंदायन' और 'चनवा के उढ़ार' के प्रसंगों का तुलनात्मक अध्ययन

[चंदायन में मलसांवर और लोरिक के विवाहों के प्रसंग नहीं आते। 'चनवा का उढ़ार' जिसमें लोरिक-चंदा का प्रेम वर्णित है, चंदायन का आधार है।]

चंदायन	लोरिकायन
(१) स्तुति-खण्ड सृजनहार, पैगम्बर मुहम्मद, पैगम्बर के चार मित्रों का उल्लेख फ़ारसी मसनवी परम्परा के अनुकूल है (छंद १-७)	(१) लोरिकायन में नहीं है।
(२) समसामयिक बादशाह फीरोज शाह का उल्लेख (छंद ८)	(२) नहीं है
(३) गुरु शेख ज़ैनुद्दीन का उल्लेख (छंद ९)	(३) नहीं है
(४) वजीर खानजहाँ का उल्लेख (छंद १०-१४)	(४) नहीं है
(५) डलमऊ के प्रशासक मलिक मुबारक का उल्लेख (छंद १५-१६)	(५) नहीं है

बसावन

(१) बसावन की रचना तिथि [illegible]
(सवत् यहाँ [illegible]) [illegible]
उल्लेख
[illegible] आरम्भिक १३ छन्द [illegible]
[illegible]
[illegible] है। स्पष्ट है [illegible]
[illegible]
(७) [illegible]
[illegible]
(८) [illegible]
[illegible]
(९) [illegible]
[illegible]
(१०) [illegible]
[illegible]
(११) [illegible]
[illegible]

लोरिकायन

नोरिकायन में भी है।
यन मे धनवा और मंजरी
कोडार मे झगडती हैं। मिर्जापुर
पाठ मे कोइरी का नाम झगड़
ही बसावन भी नाम मिलता है।
ह लोकगाथा मे भी है।

ह प्रसंग लोरिकायन मे है।
का नाम सवरू है। लोकगाथा
और सवरू का मिलन बहुत
है।
ह प्रसग लोरिकायन मे भी
का नाम मिर्जापुर के प्रस्तुत
रा है।
प्रसग लोकगाथा मे भी हैं।
। प्रसग वाराणसी, इलाहाबाद
पुर के प्रस्तुत पाठ मे नही है।
टना, गोंडा तथा चोपन
के तुलसी यादव के पाठ मे
प्रसग है। लोकगाथा मे हल्दी
महुअरि है। यहाँ लोरिक
वारिन से प्रेम करने लगता
महुअरि लोरिक की उद्दडता
र लोरिक को लडने के लिए,
एक भयकर घोडा 'मगर' पर
लोगो को विश्वास था कि
ट लोरिक को खा जायगा पर
वह मित्र और सहायक बन

यन मे सग है।
र रू की
हुई
।

चंदायन	लोरिकायन
	और बांठा दोनों के गुरु अजयी हैं। रूपचंद का उल्लेख लोरिकायन में नहीं है।
(१२) वाजिर द्वारा रूपचन्द से चंदा का 'नखशिख' (शिखनख) निवेदन करना (छंद ६४ से ८५ तक)	(१२) नख-शिख, रूपचंद तथा वाजिर का उल्लेख लोरिकायन में नहीं है।
(१३) रूपचन्द का गोवर पर हाथी घोड़े के साथ चढ़ाई करना (छंद ८६ से १३१ तक)	(१३) लोरिकायन में नहीं है
(१४) बांठा का युद्ध में आगे रहना—लोरिक के शौर्य से रूपचन्द बांठा आदि का पराजित होना, चंदायन में युद्ध बड़े पैमाने पर है। इस युद्ध के प्रसंग में 'डांग', 'ओड़न', 'खांड', 'रमाउलि', 'पागा', 'सारतार का आंगा', 'घन सहरी', टाटर, 'सारंग', 'फरसां', 'कुंत', 'कटारी' आदि अनेक आयुधों का वर्णन है। (छंद १०६)[२]	(१४) लोरिकायन में यहां युद्ध का वर्णन नहीं है। बांठा पति के घर से आते हुए चंदा के साथ छेड़खानी करता है। फिर उसके पिता सहदेव का द्वार छेंक लेता है। चंदा को प्राप्त करने के लिए अनेक उपद्रव करता है। लोरिक उसको मार डालता है। लोक गायक यहां द्वन्द्व-युद्ध का ही उल्लेख करते हैं।
(१५) विजेता लोरिक का सहदेव द्वारा स्वागत—गोवर में बधावा—सहदेव द्वारा प्रीति-भोज का आयोजन—यह आयोजन शाही ठाटबाट का है। लोरिक को देख कर चंदा का विमोहित होना—लोरिक का चंदा को देखना और प्रेम का पल्लवित होना।	(१५) लोरिकायन में ये प्रसंग किंचित् भिन्न हैं। बांठा को मारकर लोरिक विजेता होता है पर बंधु बांधव सहदेव पर आरोप लगाते हैं कि चनवा का बांठा चमार के प्रति स्नेह था। पाप से मुक्ति के लिए सहदेव द्वारा भोज का आयोजन—लोरिक भोजन को भूलकर चनवा (चंदा) को देखता रहता है। दोनों में प्रेम विकसित होता है। लोकगाथा में ग्रामीण स्तर का प्रीति भोज है।
(१६) चंदा और लोरिक में प्रेम बढ़ता है। लोरिक रस्सी के सहारे राजा सहदेव के महल के ऊपरी भाग में जहां चंदा सोती है, रात में चोरी छुपके प्रवेश करने लगता है। इसके पूर्व लोरिक एक वर्ष तक मढ़ी में तप करता है। योगी वेश में रहता है।	(१६) महल के ऊपरी प्रकोष्ठ में रस्सी के सहारे चढ़कर चनवा (चंदा) से लोरिक के मिलने का प्रसंग लोरिकायन में भी है। लोरिकायन में प्रेम-दर्शन की बात नहीं है। न तो लोरिक योगी बनकर यहां तप ही करता है।

चंदायन	लोरिकायन
(१७) लोरिक का चंदा के साथ नियमित रूप से मिलन। लोरिक चदा के गुप्त प्रेम की सर्वत्र चर्चा होना---मैना माजरि और चदा के बीच सोमनाथ के मन्दिर मे झगडा होता है।	(१७) लोरिकायन मे भी है। लोरिकायन मे चनवा और मंजरी कोइरी के कोडार मे झगडती हैं। मिर्जापुर के प्रस्तुत पाठ मे कोइरी का नाम झगड़ू है। कही-कही बसावन भी नाम मिलता है।
(१८) चदा का लोरिक से हल्दी भाग चलने का प्रस्ताव।	(१८) यह लोकगाथा मे भी है।
(१९) हल्दी जाने के पूर्व लोरिक अपने भाई कुवरू (सवरू) से बोहा मे भेट करता है---कुवरू का लोरिक को हल्दी जाने से मना करना।	(१९) यह प्रसग लोरिकायन मे है। यहाँ भाई का नाम सवरू है। लोकगाथा मे लोरिक और सवरू का मिलन बहुत ही मार्मिक है।
(२०) चनवा के पति का गगा के तट पर आना और लोरिक से युद्ध मे पराजित होना।	(२०) यह प्रसग लोरिकायन मे भी है। नदी का नाम मिर्जापुर के प्रस्तुत पाठ मे बेवरा है।
(२१) चनवा के पति को परास्त कर लोरिक का हल्दी मे प्रवेश करना---हल्दी मे प्रवेश के पूर्व साप द्वारा चदा को डसा जाना---सर्प दश का प्रसग 'चदायन' मे इसके पूर्व भी आता है। लोरिक का हल्दी में प्रवास। यहाँ का राजा क्षेतम है।	(२१) ये प्रसग लोकगाथा मे भी हैं। सर्प दश का प्रसग वाराणसी, इलाहाबाद तथा मिर्जापुर के प्रस्तुत पाठ मे नही है। बलिया, पटना, गोंडा तथा चोपन (मिर्जापुर) के तुलसी यादव के पाठ मे सर्पदश का प्रसग है। लोकगाथा मे हल्दी का राजा महुअरि है। यहाँ लोरिक जमुनी कलवारिन से प्रेम करने लगता है। राजा महुअरि लोरिक की उद्दडता से तग आकर लोरिक को लडने के लिए, नेउरापुर एक भयकर घोडा 'मगर' पर भेजता है। लोगो को विश्वास था कि घोडा मगर लोरिक को खा जायगा पर लोरिक का वह मित्र और सहायक बन जाता है।
(२२) मैना का हल्दी मे लोरिक के पास सदेश भेजना।	(२२) लोरिकायन मे भी यह प्रसग है। लोकगाथा मे लोरिक के भाई सवरू की दु:खद मृत्यु और मजरी पर आयी हुई विपत्ति का विस्तृत विवरण है जो 'चदायन' में नहीं है।

चंदायन	लोरिकायन
(२३) लोरिक की बोहा में वापसी—मैना मांजरि का बोहा में दही बेचने जाना—लोरिक और मैना का मिलना—मंजरी के सत की परीक्षा साधारण सी है। मैना के सत का विस्तृत चित्रण साधन कृत 'मैनासत', गव्वासी कृत 'मैना सतवंती' तथा हमीदी के 'अस्मतनामा' (फ़ारसी) में अधिक प्रखर है।	(२३) लोरिकायन में भी यह प्रसंग है। लोकगाथा के गायक इस प्रसंग को बहुत महत्त्व देते हैं। यहाँ मंजरी के सत सुमिरन से नदी सूख जाती है। वह अनेक प्रकार से, जैसे खौलते तेल में हाथ डालकर अपने सत का परिचय देती है।
(२४) लोरिक का घोड़े पर चलकर घर आना—माँ खोइलनि से मिलना—माँ खोइलनि का, कुंवरू (संवरू नाम भी आता है, छंद ३८६ देखिए) की मृत्यु का समाचार देना।	(२४) लोरिक का घर वापस आना—माँ तथा गुरु अजयी से मिलना। फिर लड़कर शत्रुओं से सारी सम्पत्ति वापस लेना और अपने दो पुत्रों भोरिक और चंद्राइत को राज्य सौंप कर अग्नि समाधि लेना—ये प्रसंग चंदायन की प्राप्त पांडुलिपियों में नहीं हैं। लोरिक की गाथा समाप्त होने पर अच्छे लोक-गायक उसके पुत्र भोरिक की भी गाथा गाते हैं।

मौलाना दाउद ने 'लोरिकायन' की मूलकथा को लेकर अपने काव्य 'चंदायन' का ठाट खड़ा किया किन्तु लोकमहाकाव्य के सीधे-सादे चित्रण यहाँ कवि द्वारा पर्याप्त साहित्यिक बना दिये गये हैं। कुछ विशेष प्रसंगों से उदाहरण देकर इस बात की पुष्टि की जा सकती है। कवि ने फ़ारसी की मसनवी की परम्परा का पालन करते हुए सृजनकर्ता, पैगम्बर मुहम्मद, चार मित्र, समसामयिक बादशाह आदि का वर्णन किया है। यह एक सामान्य शैली है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नगर वर्णन, भोज, युद्ध और प्रेम के चित्रण को कवि ने सामान्य नहीं रहने दिया है। उसने इन चित्रणों में तत्कालीन मान्य साहित्यिक परम्पराओं का सन्निवेश कर दिया है।

'चंदायन' में चंदा की जन्मभूमि तथा उसके पिता सहदेव का नगर गोवरगढ़ है। लोकमहाकाव्य में यह स्थान गउरा है। लोक-गायक इस स्थान का चित्रण सादगी से करते हैं। मिर्जापुर के पाठ में गउरा का उल्लेख मात्र है, वहाँ एक सागर (तालाब) है। बलिया के शिवनाथ चौधरी के पाठ में गउरा का वर्णन कुछ विस्तार से है। इनके पाठ के अनुसार 'गउरा बलिया में हैं। उसके उत्तर में देवहा हैं। दक्षिण में गंगा हैं। वहाँ ब्रह्माइन का गढ़ है उसके पास ही गढ़ गउरा है। उसमें बाजार हैं। यहाँ उत्तर में ब्राह्मण रहते हैं, दक्षिण में कोइरी हैं। पश्चिम में मुग़ल, पठान तथा जुलाहे रहते हैं। पूर्वी टोले में अहीर रहते हैं। यहाँ सोलह सौ यदुवंशी हैं। खेती-बारी यहाँ नहीं होती। घर-घर में यहाँ अखाड़ा है।'[3]

वाराणसी के पाँचू भगत के पाठ में भी गउरा का वर्णन विस्तृत नहीं है।

'गउरा बारह पल्लियो का है। इसमे तिरपन बाजार हैं। तेली, तमोली, कलवार, तथा भड़भूजे भी यहाँ हैं। रघुवशी राजपूत यहाँ हैं जिनकी कटि मे तलवारें झूलती हैं। यदुवशी और ग्वाल अहीर यहाँ रहते हैं। गउरा मे घर-घर अखाड़ा है। यहाँ दिन रात लेज़म घूमता रहता है।'[४]

लोरिकायन के समस्त वर्णन सामान्य हैं और सामान्य श्रोताओं के मस्तिष्क को ये बोझिल नही बनाते। सूफ़ी कवि मौलाना दाउद ने चदा और उसके पिता के नगर गोवरगढ को, जहाँ का निवासी लोरिक है, बडे विस्तार मे चित्रित किया है, यद्यपि चदायन का कवि केवल पाठको के लिए नही श्रोताओ के लिए भी अपनी रचना करता जान पड़ता है।[५]

मौलाना दाउद ने गोवरगढ का चित्रण लगभग पन्द्रह छन्दों मे किया है :

उद्यान-वर्णन[६]

गोवर मे कूप, वापी तथा आम्र के कुज हैं। वहाँ नारियल तथा सुपारी के पेड़ हैं, अनार और अगूर हैं। नारगी, कटहल, जामुन के पेड़ के अतिरिक्त वहाँ बाँस, खजूर, बट, पीपल, और इमली के पेड भी हैं। वाटिका मे वहाँ दिन मे भी अधकार रहता है।

पक्षी[७]

आम्र वाटिका मे शुक सारिकाएँ चहचहाती रहती थी। पपीहा पी पी पुकारता रहता था। मोर भी वहाँ नाचते रहते थे। महर, पडुक, हारिल, उलूक सभी पक्षी वहाँ रहते थे।

सरोवर[८]

सरोवर, झरनो आदि का उल्लेख भी गोवरगढ के चित्रण मे है। उनमे कोई स्नान नही कर सकता था। दो लाख कुमारियाँ वहाँ पानी भरने के लिए जाती थी। सरोवर में हंस, माछ, चकवा, चकवी, तैरते हैं।

गोवर की खाई[९]

गोवर की खाई पचास परोसे की (१७५ हाथ) थी। उसमे हमेशा जल भरा रहता था। उसमे गिर जाने पर मृत्यु अवश्यभावी थी। खाई पर अधिकार करना बीस-बीस रायों के लिए भी सरल नही था।

जातियाँ[१०]

ब्राह्मण, क्षत्रिय, ग्वाल, खडेलवाल, अग्रवाल, तिवारी, पचवान, धाकड, जोशी मख करने वाले यजमान, गधी, बनजारे, श्रावक, परमार (पवार), सोनी, रावत, सभी गोवरगढ़ मे बसे हुए थे। विद्वान्, पडित, भाट, छत्तीस कुलो के राजपूत सभी चदा के पिता महर की सेवा मे थे।

हाट[११]

हाट में वटुक रामायण पढ़ते थे, गीत गाते थे, नृत्य करते थे। वे राधाकृष्ण का अभिनय भी करते थे। फूल, चंदन, अगरु, खस, कर्पूर, पान, जायफल, सोपारी, लवंग, छुहारा सभी चीजें वहाँ बिकती थीं। खांड, चिरौंजी, मुनक्का, खुरहुरी वहाँ के लोग मोल लेते थे। हीरा, प्रवाल, सोना आदि भी वहाँ बिकते थे।

महर का प्रासाद[१२]

महर का धौराहर, प्रासाद सात मंजिलों का था। उसमें सात चौखंडियाँ थीं। चौखंडियों पर सात कलश थे। महल में चौरासी रानियाँ थीं। प्रासाद में हिंडोले भी थे। राज महल अन्न, धन, पाट, रेशमी वस्त्रों से परिपूर्ण था। चंदायन के छन्द २८ में सिंह द्वार का चित्रण है। वीर सिंह द्वार को देखकर भाग जाते थे। पौरी के कपाट वज्र या फौलाद के थे। रात्रि में वहाँ चौकी पर पहरेदार प्रहरी का काम करते थे।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि गोवरगढ़ के चित्रण में कवि ने साहित्यिक परम्परा का निर्वाह अधिक किया है। लोकमहाकाव्य में चित्रित गउरा गाँव का एक सामान्य नगर है जबकि चंदायन में चित्रित नगर में परम्परागत चित्रणों की भरमार है। लोकमहाकाव्य की वास्तविकता से यह चित्रण काफी दूर है।

मिथिला के आचार्य ज्योतिरीश्वर ने 'वर्ण रत्नाकर' में शहर के वर्णन का एक आदर्श प्रस्तुत किया है। 'वर्ण रत्नाकर' की रचना चौदहवीं शताब्दी में हुई थी। 'वर्ण रत्नाकर' संभवतः ऐसे लोगों के लिए लिखा गया जो कवि बनना चाहते थे। कवि बनने के लिए कुछ वर्णनों और चित्रणों की परम्परा की रक्षा आवश्यक सी थी। इसीलिए गोवरगढ़ के चित्रणों से मिलता-जुलता 'वर्ण रत्नाकर' का नगर और उपवन का वर्णन है। दोनों एक विशेष परिपाटी का पालन करते हुए जान पड़ते हैं।

'वर्ण रत्नाकर' में उपवन के वर्णन के संदर्भ में कहा गया है कि गुआ, नारिकेर, नारङ्ग, नागकेसर, नमेरु, खीरा, वउर, उतति, दाप, दालिम्ब, छोलंग, करुण, चम्पक, चन्दन, लवङ्ग, अशोक, अनेक पुष्प द्रुम उपवन में होने चाहिए।[१३] वन वर्णन के संदर्भ में ताल, तमाल, रसाल, हिन्ताल, शाल पियाल, पितशाल, शमी, सरल, शल्लकी, सिरिसि, सिम्वलि, सिद्ध, सिसप, सहोल, सोहिजन, पिप्पल, पलाश, पाउल, पनस, प्रियंगु आदि का उल्लेख यहाँ है[१४]। 'चंदायन' और 'वर्ण रत्नाकर' की तुलना से यह विदित हो जाता है कि गुवा (सोपारी), नारिकेल, नारंग, आम (रसाल), दाड़िम (दालिम्ब, अनार) दोनों में हैं। तुलनात्मक अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि दोनों वर्णनों की सूचियाँ भिन्न-भिन्न हैं पर उनमें समानता कम नहीं है। नारियल, सुपारी आदि के पेड़ उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में जहाँ चंदायन की मूलकथा विकसित हुई होगी, नहीं पाये जाते। ये वर्णन परम्परागत ही हैं।

पक्षियों के संदर्भ में चंदायन में शुक, सारिका, पपीहा, हारिल, पंडुक आदि

का उल्लेख है। 'वर्ण रत्नाकर' मे भी शुक, सारिका, कोकिल, पाडु आदि
का वर्णन है।[१५] 'वर्ण रत्नाकर' की सूची मे जल-पक्षियो मे हस, मत्स्य,
आदि का उल्लेख है[१६]। चदायन के छन्द २२ में भी हंस, मत्स्य, चकवा,
सरोवर मे तैरते हैं। नगर वर्णन मे, इन दोनों ग्रथो मे जो लगभग समक
समानता अकस्मात् नही है। ये दोनो अपने युग की काव्य परम्पराओ औ
तालो की ओर सकेत करते हैं। 'वर्ण रत्नाकर' काव्य ग्रथ नही है। यह
रचयिताओ के उपयोग के लिए लिखा गया एक आदर्श ग्रथ सा प्रतीत ह
इसमे आठ अध्याय हैं। इन अध्यायो मे नगर, नायक-नायिका, कुट्टनी, वेश
उपवन, पुष्कर, पर्वत, नदी, तीर्थ, श्मसान, मरुस्थल, ऋषि, चौरासी ि
नामावली, नृत्य के प्रकार, राज्य, विवाह के प्रकार, नौका वर्णन तथा व
और वैद्यो के सम्बन्ध मे विस्तृत सूचनाएँ दी गयी हैं। ये अध्याय सभवत.
लिखे गये हैं कि एक नया कवि काव्य रचना के लिए आदर्श के रूप मे इन
रखे। चदायन एक काव्य ग्रथ है। मौलाना दाउद अपने समय की काव्य-प
के आदर्शों की रक्षा करते जान पड़ते हैं। 'चदायन' मे भोज के अवसर पर
पकड कर लाये जाते हैं। मौलाना दाउद स्पष्ट कहते हैं कि मैं पक्षियो क
वैसे कर रहा हूँ जैसे वे काव्यो मे पाये जाते हैं :

जो कवि आइ समाने सरसि वरन गये तेहि
अउर पखि जे मारे तिन्हकर नाउ को लेहि। छद १४४।६

['जो काव्यो मे आकर प्रवेश पा गये हैं मैं उनको सरस रूप मे व
गया और जो पक्षी भोज के लिए मारे गये उनका नाम कौन ले' ?]

'चंदायन' मे राजपूतो की छत्तीस कुरियो का उल्लेख मात्र है। 'वर्ण
मे इन छत्तीस कुरियो का उल्लेख विस्तार से हुआ है। यद्यपि इस सूची मे
का ही समावेश किया गया है। ये वर्ग निम्नलिखित हैं—

(१) डोह (२) पमार (३) बिन्द (४) छोकोर (५) छेवार (६)
(७) राओल (८) चाओट (९) चाङ्गल (१०) चन्देल (११) चउहान (१२)
(१३) रठउल (१४) करचुरि (१५) करम्ब (१६) बुधेल (१७) बीरब्रह
चन्दाउत (१९) वएस (२०) वछोम (२१) वर्द्धन (२२) गुडिय (२३) गुहलउत
सुवकि (२५) सहिआउत (२६) शिपर (२७) सूर (२८) खातिमान
सहर ओट (३०) भोण्ड (३१) मद्र (३२) भञ्जमटी (३३) कूढ (३४)
छत्तीशओ कुली राजपुत्र।[१७]

चदायन मे राजकुमारो की गोष्ठियो मे विद्वान्, भाट, पडित आदि स
हैं। वर्ण रत्नाकर मे भी विद्यामत, वदीजन तथा पडित का उल्लेख है।[१८]

मौलाना दाउद के 'चदायन' के गोवरगढ़ की तुलना विद्यापति की क
में वर्णित जौनपुर से भी की जा सकती है। विद्यापति का समय सभवत: १३

हाट[११]

हाट में बटुक रामायण पढ़ते थे, गीत गाते थे, नृत्य करते थे। वे राधाकृष्ण का अभिनय भी करते थे। फूल, चंदन, अगरु, खस, कर्पूर, पान, जायफल, सोपारी, लवंग, छुहारा सभी चीजें वहां बिकती थीं। खांड, चिरौंजी, मुनक्का, खुरहुरी वहां के लोग मोल लेते थे। हीरा, प्रवाल, सोना आदि भी वहां बिकते थे।

महर का प्रासाद[१२]

महर का धौराहर, प्रासाद सात मंजिलों का था। उसमें सात चौखंडियां थीं। चौखंडियों पर सात कलश थे। महल में चौरासी रानियां थीं। प्रासाद में हिंडोले भी थे। राज महल अन्न, धन, पाट, रेशमी वस्त्रों से परिपूर्ण था। चंदायन के छन्द २६ में सिंह द्वार का चित्रण है। वीर सिंह द्वार को देखकर भाग जाते थे। पौरी के कपाट़ बज्र या फौलाद के थे। रात्रि में वहां चौकी पर पहरेदार प्रहरी का काम करते थे।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि गोवरगढ़ के चित्रण में कवि ने साहित्यिक परम्परा का निर्वाह अधिक किया है। लोकमहाकाव्य में चित्रित गउरा गांव का एक सामान्य नगर है जबकि चंदायन में चित्रित नगर में परम्परागत चित्रणों की भरमार है। लोकमहाकाव्य की वास्तविकता से यह चित्रण काफी दूर है।

मिथिला के आचार्य ज्योतिरीश्वर ने 'वर्ण रत्नाकर' में शहर के वर्णन का एक आदर्श प्रस्तुत किया है। 'वर्ण रत्नाकर' की रचना चौदहवीं शताब्दी में हुई थी। 'वर्ण रत्नाकर' संभवतः ऐसे लोगों के लिए लिखा गया जो कवि बनना चाहते थे। कवि बनने के लिए कुछ वर्णनों और चित्रणों की परम्परा की रक्षा आवश्यक सी थी। इसीलिए गोवरगढ़ के चित्रणों से मिलता-जुलता 'वर्ण रत्नाकर' का नगर और उपवन का वर्णन है। दोनों एक विशेष परिपाटी का पालन करते हुए जान पड़ते हैं।

'वर्ण रत्नाकर' में उपवन के वर्णन के संदर्भ में कहा गया है कि गुआ, नारिकेर, नारङ्ग, नागकेसर, नमेरु, खीरा, बउर, उतति, दाष, दालिम्ब, छोलंग, करुण, चम्पक, चन्दन, लवङ्ग, अशोक, अनेक पुष्प द्रुम उपवन में होने चाहिए।[१३] वन वर्णन के संदर्भ में ताल, तमाल, रसाल, हिन्ताल, शाल पियाल, पितशाल, शमी, सरल, शल्लकी, सिरिसि, सिम्बलि, सिद्ध, सिसप, सहोल, सोहिजन, पिप्पल, पलाश, पाउल, पनस, प्रियंगु आदि का उल्लेख यहां है[१४]। 'चंदायन' और 'वर्ण रत्नाकर' की तुलना से यह विदित हो जाता है कि गुवा (सोपारी), नारिकेल, नारंग, आम (रसाल), दाड़िम (दालिम्ब, अनार) दोनों में हैं। तुलनात्मक अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि दोनों वर्णनों की सूचियां भिन्न-भिन्न हैं पर उनमें समानता कम नहीं है। नारियल, सुपारी आदि के पेड़ उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में जहां चंदायन की मूलकथा विकसित हुई होगी, नहीं पाये जाते। ये वर्णन परम्परागत ही हैं।

पक्षियों के संदर्भ में चंदायन में शुक, सारिका, पपीहा, हारिल, पंडुक आदि

का उल्लेख है। 'वर्ण रत्नाकर' मे भी शुक, सारिका, कोकिल, पांडु आदि पक्षियों का वर्णन है।[१५] 'वर्ण रत्नाकर' की सूची मे जल-पक्षियो मे हंस, मत्स्य, चक्रवाक आदि का उल्लेख है[१६]। चंदायन के छन्द २२ मे भी हंस, मत्स्य, चकवा, चकवी, सरोवर मे तैरते हैं। नगर वर्णन मे, इन दोनो ग्रंथो मे जो लगभग समकालीन हैं, समानता अकस्मात् नही है। ये दोनो अपने युग की काव्य परम्पराओ और मान्यताओ की ओर संकेत करते हैं। 'वर्ण रत्नाकर' काव्य ग्रंथ नही है। यह काव्य रचयिताओं के उपयोग के लिए लिखा गया एक आदर्श ग्रंथ सा प्रतीत होता है। इसमें आठ अध्याय हैं। इन अध्यायो में नगर, नायक-नायिका, कुट्टनी, वेश्या, वन, उपवन, पुष्कर, पर्वत, नदी, तीर्थ, श्मसान, मरुस्थल, ऋषि, चौरासी सिद्धो की नामावली, नृत्य के प्रकार, राज्य, विवाह के प्रकार, नौका वर्णन तथा वणिक पुत्रों और वैद्यो के सम्बन्ध मे विस्तृत सूचनाएँ दी गयी हैं। ये अध्याय संभवतः इसलिए लिखे गये हैं कि एक नया कवि काव्य रचना के लिए आदर्श के रूप मे इन्हें स्मरण रखे। चंदायन एक काव्य ग्रंथ है। मौलाना दाउद अपने समय की काव्य-परम्पराओं के आदर्शों की रक्षा करते जान पड़ते हैं। 'चंदायन' मे भोज के अवसर पर पक्षी पकड़ कर लाये जाते हैं। मौलाना दाउद स्पष्ट कहते हैं कि मैं पक्षियों का विवरण वैसे कर रहा हूँ जैसे वे काव्यों मे पाये जाते हैं :

> जो कवि आइ समाने सरसि बरन गये तेहि
> अउर पखि जे मारे तिन्हकर नाउ को लेहि। छंद १४५।३

['जो काव्यो में आकर प्रवेश पा गये हैं मैं उनको [illegible] गया और जो पक्षी भोज के लिए मारे गये उनका नाम कौन [illegible]']

'चंदायन' मे राजपूतो की छत्तीस कुरियों का उल्लेख [illegible] है। [illegible] में इन छत्तीस कुरियों का उल्लेख विस्तार से हुआ है। [illegible] का ही समावेश किया गया है। ये वर्ग निम्नलिखित हैं—

(१) डोड (२) पमार (३) दिन्द (४) [illegible] (७) राठोल (८) चायोट (९) चाङ्गुल (१०) [illegible] (१३) रठउल (१४) करचुरि (१५) करन्द [illegible] बन्दाउत (१९) बएस (२०) बटोन (२१) [illegible] सुधकि (२५) सहिआउत (२६) [illegible] सहर कोट (३०) मोण्ड (३१) [illegible] छत्तीसओ कुली राजपुत्र।[१७]

चंदायन में राजकुमारों [illegible] है। वर्ण रत्नाकर में भी [illegible] का उल्लेख है।[१८]

मौलाना दाउद के 'चंदायन' के [illegible] में वर्णित जौनपुर के [illegible] लगभग १३७० ई०

से १४५० ई० तक है।[१९] १४०२ से १४०६ ई० तक इब्राहिम शाह शर्की जौनपुर का बादशाह था। विद्यापति ने इब्राहिम शाह का उल्लेख किया है :

इबराहिम साह पआन पुहुवि नरे सर कमनसह
गिरि सा अर पार उँवार नहीं रैअति भेले जीव रह[२०]

['इब्राहिम शाह के प्रयाण को कौन नरेश सह सकता था ? गिरि तथा सागर पार जाने पर भी उससे उबार (रक्षा) नहीं था। रैअत बन जाने पर ही उससे जीवन की रक्षा हो सकती थी।']

'कीर्तिलता' की रचना चंदायन से कुछ ही बाद की है। इसके दूसरे पल्लव में जौनपुर का वर्णन है। जौनपुर नगर मेखला से घिरा हुआ है।[२१] उसके उपवन में आम, चम्पक, सुशोभित हैं।[२२] नगर में पुष्कर और जलाशयों का भी उल्लेख है।[२३] राजप्रासाद पर स्वर्ण कलश हैं।[२४] कपूर, केसर, धूप, गंध का वहाँ बाजार है।[२५] काव्य, नाटक, गीत, खेल-तमाशे का उल्लेख भी विद्यापति करते हैं।[२६] नगर में विभिन्न जातियों जैसे ब्राह्मण, कायस्थ, राजपूतों आदि का उल्लेख है।[२७] सोना हीरे आदि भी जौनपुर में बिकते थे।[२८] कवि यह भी कहता है कि 'नगर विन्यास की कथा क्या कहूँ ? जैसे दूसरी अमरावती का यहाँ अवतार हो गया है।'[२९] जौनपुर नगर के चित्रण और 'चंदायन' के गोवरगढ़ के वर्णनों में बहुत अंशों तक समानता देखी जा सकती है। मौलाना दाउद ने भी गोवरगढ़ की तुलना 'कैलास' (स्वर्ग) से की है।

अगरु चंदन उषंटना अछई सुहाई बासु
देवलोक अस भाषहि मकहुँ आहि कबिलासु[३०]

—चंदायन ३०/६, ७

['अगरु, चंदन, और उबटनों की सुगन्ध वहाँ सुहावनी लगती थी। देवलोक के प्राणि कहते हैं जैसे (वह) गोवरगढ़ कैलाश (कविलास) हो।']

मध्यकालीन 'वर्णक समुच्चय' नामक ग्रंथ से विदित होता है कि नगर की उपमा 'अमरावती' अलकापुरी आदि से दी जाती थी।[३१] कहने का तात्पर्य यह है कि अहीरों की लोकगाथा को लेकर मौलाना दाउद ने उसमें साहित्यिक रंग भर दिया है। परम्परा से चली आती हुई वर्णन शैली का उपयोग कर उन्होंने लोकमहा-काव्य की सरलता को शिष्ट काव्य की क्लिष्टता में बदल दिया है।

'चंदायन' के रचयिता मौलाना दाउद ने अनेक प्रसंग अपने काव्य में जोड़े हैं। उनका 'शिखनख' चित्रण भी साहित्यिक परम्परा का पालन करता है। 'चंदायन' के इस शिखनख या नखशिख परम्परा पर प्रस्तुत लेखक ने अन्यत्र विस्तार किया है।[३२] चंदा को मौलाना दाउद ने अप्रतिम सौंदर्य प्रदान किया है। चंदा की मांग, केश, ललाट, भौंहों, नयनों, नाक, अधरों, दातों, जिह्वा आदि का सौंदर्य चित्रित करते हुए कवि उसका श्रवण, तिल, ग्रीवा, भुजाएँ उरोजों, पेट, पीठ और पगों का वर्णन

करता है और लगभग बाइस छंदों मे चंदा का दिव्य स्वरूप प्रस्तुत करता है। चंदा के चरणों के स्पर्श से पुरुषों के पाप मिट जाते हैं। चंदा के चरणों की सुगन्ध से चारों दिशाओं में बसंत ऋतु उपस्थित हो जाती है। उसके अंग के सुवास से नौखंड सुवासित हो जाते हैं। इंद्र, गोपेन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु, मुरारि, गण, गन्धर्व, ऋषि और देवता उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो जाते हैं।[३३] मौलाना दाउद चंदा को दैवी सौंदर्य से अलंकृत कर देते हैं। नायक लोरिक उस सौंदर्य का प्रेमी है। कवि सूफी है अतः सूफी दर्शन के प्राण तत्व कवि चंदायन मे भर देता है। लोक-परम्परा मे प्रचलित लोरिकायन या चनैनी के किसी पाठ मे नखशिख का विस्तार नही है। संस्कृत और फारसी साहित्य की परम्पराओ मे नखशिख या शिखनख का चित्रण पाया जाता है। मौलाना दाउद का चित्रण सामान्य शरीर के अवयवो का चित्रण नहीं है। रूप की सीमा मे सूफी कवि अलौकिक सौंदर्य का दर्शन कराता चलता है। यह लोकसाहित्य की परम्परा मे रचे गये काव्य की दृष्टि नहीं। यह एक सचेत साहित्यिक कवि का सृजन है। लोक साहित्य का गायक दर्शन से अपने काव्य को बोझिल नही बनाता।

मौलाना दाउद ने प्रेम दर्शन का चंदायन मे विस्तार से सन्निवेश किया है। लोरिक एक स्थान पर कहता है कि जिसको प्रेम होता है उसको विरह सताता है। प्रेम का घाव जिसको लग जाता है उस पर कोई औषधि काम नही करती।[३४] प्रेम की चिनगारी से धरती, आकाश, पाताल सभी भस्मीभूत हो जाते हैं।[३५] प्रस्तुत लेखक ने अन्यत्र 'चंदायन' के प्रेम दर्शन पर विस्तार से विचार किया है।[३६] इस प्रेम दर्शन की अभिव्यक्ति भी चंदायन की अपनी विशेषता है। लोकमहाकाव्य में चनवा (चंदा) 'चंचल नारि चनैनी' है, वह उच्छृङ्खल है। ददई केवट के मिर्जापुरी पाठ मे उसे बार-बार वेश्या कहा गया है।[३७] मैना-माजरि से विवाह करने के बाद लोरिक चंदा के प्रेम मे फँस जाता है। फिर हल्दी मे उसका उद्धार करता है। लोकगाथा नैसर्गिक प्रेम की गाथा है। मौलाना दाउद ने उसे एक साहित्यिक सूफी कृति के रूप मे बदल दिया है।

इस साहित्यिकीकरण की प्रक्रिया के बावजूद चंदायन के कुछ चरित्र अपने मूल रूप में बहुत नही बदले हैं। उदाहरण के लिए अजयी लोकगाथा मे लोरिक का गुरु और लड़ाकू वीर तो है पर उसमे भीरुता और आन बचाकर भागने की प्रवृत्ति है। चंदायन मे उसका उल्लेख आता है। गोर के युद्ध मे लोरिक अजयी की सहायता माँगने जाता है तो वह पहले से ही दाँत कँपकँपाने लगता है। "उसने घाव काटकर उसमे गेरु भर रखा था। अपने अंग को ढक कर वह पुकार लगा रहा था—ऐ सृष्टिकर्ता तुमने मुझे किस प्रकार मृत्यु दे दी।"

'पहिलेहि अबई दोख उपावा, मिसु कइ परिगा दांत कँपावा
घात काटि घसि गेरू भरी, खपरी लइ पुंदीतर धरी
आंग मूँदि असि करइ पुकारा, कवनि मीचु दीन्ही करतारा।'[३८]

['अजई ने पहले से ही दोष उत्पन्न कर रखा था। बहाना बनाकर वह लेट

गया तथा दांत कँपकँपाने लगा। उसने स्वयं फाटकर घाव कर लिया और उसमें गेह भर लिया तथा अपने नीचे अँगीठी रख ली थी। अपने शरीर को ढँक कर वह ऐसे पुकार रहा था—ऐ विधाता तूने कैसी मृत्यु दी !']

बाँठा चमार लोकगाथाओं में लोरिक का गुरु भाई है। बाद में वह उसका शत्रु बन जाता है। 'चंदायन' में वह रूपचंद का मंत्री है और जब रूपचंद चंदा को पाने के लिए गोवर पर चढ़ाई करता है तब युद्ध में वह मारा जाता है। लोकगाथाओं में भी लोरिक उसे मारता है। पर बाँठा के उपद्रव यहाँ दूसरे प्रकार के हैं, जैसे कुँवों, तालाबों में हड्डी फेंकना, चंदा के पिता के घर को छेंक लेना आदि। लोरिक द्वंद्व युद्ध में उसे जान से मार डालता है। लोकगाथाओं में लोरिक की माँ खोइलनि है। 'चंदायन' में भी लोरिक की माँ का नाम खोइलनि है। 'चंदायन' में कुँवरू लोरिक के भाई हैं (छंद ३८६ में उन्हें संवरू कहा गया है)। लोकगाथाओं में उन्हें संवरू, सांवर, मलसांवर या धर्मी कहा गया है क्योंकि वह अपना समय भजन और धर्म के पालन में लगाते थे। हल्दी जाने के पूर्व लोरिक उनसे मिलता है। वह लोरिक को परदेश जाने से रोकते हैं और अपनी छलछलायी आँखों से अपरमित प्रेम का परिचय देते हैं। 'चंदायन' में भी यह प्रसंग है। चंदा लोरिक को हल्दी चलने के लिए विवश करती है और लोरिक-चंदा आगे बढ़ जाते हैं। मैना लोक गायाओं में सतीत्व के लिए एक आदर्श चरित्र है। वह अनेक प्रकार से अपने सत की परीक्षा देती है तथा इन परीक्षाओं में सफल रहती है। 'चंदायन' में उसके सत का चित्रण संक्षिप्त है। साधन कृत 'मैनासत', गव्वासी कृत 'मैना सतवंती', हमीदी कृत 'असमतनामा' आदि में उसके सत को अधिक महत्त्व दिया गया है। लगता है 'चंदायन' के बाद की रचनाओं के रचयिताओं को 'चंदायन' में मैना मांजरी की उपेक्षा अच्छी नहीं लगी तो उन्होंने उसके सत को आधार बनाकर स्वतंत्र रचनाएँ ही कर डालीं। लोकगाथाओं की चनवा (चंदा) चंचल है, उसे वेश्या तक कहा गया है। 'चंदायन' में वह देवी बन गयी है। लोरिक उसका अप्रतिम प्रेमी है।

संदर्भ

*लोरिकायन के विस्तृत अध्ययन के लिए प्रस्तुत लेखक की कृतियाँ देखिये—लोकमहाकाव्य लोरिकी, साहित्य भवन, इलाहाबाद १९७९, लोकमहाकाव्य चनैनी (१९८२) तथा इनके अंग्रेजी संस्करण The Hindi oral epic, Loriki, (Allahabad, 1979) तथा The Hindi oral epic Chanaini (1982).

टिप्पणी

१. मौलाना दाउद ने गोवरगढ़ के वर्णन में नृत्य करने वालों, गीत गाने वालों तथा 'पंवारा कहने वालों' का उल्लेख किया है। 'लोरिकायन' को आज भी 'पंवारा' कहा जाता है।

गावहिं गीत औ कहहिं पंवारा, नट नाचहिं अउ बाजहिं तारा।

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि 'चंदायन' श्रोताओं के समक्ष गाया जाता था और उसको लिखा भी जाता था।

६. चांदायन, छन्द १८
७. चांदायन, छन्द १६
८. चांदायन, छन्द २१
६. चांदायन, छन्द २३
१०. चांदायन, छन्द २५
११. चांदायन, छन्द २८
१२. चांदायन, छन्द ३०, ३१
१३. ज्योतिरीश्वर ठाकुर, वर्णरत्नाकर, सम्पादक सुनीतिकुमार चटर्जी तथा बबुआ मिश्र, रायल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल; कलकत्ता १६४० पृष्ठ ३७—३८। ज्योतिरीश्वर चौदहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में विद्यमान थे। (सुनीति कुमार चटर्जी की) भूमिका पृष्ठ २०। ज्योतिरीश्वर मिथिला के जाने-माने संस्कृत आचार्य और लेखक थे। उनकी कृतियाँ 'पञ्च शायक', 'धूर्त समागम' प्रसिद्ध हैं। उनकी एक कृति 'रङ्गशेखर' का भी उल्लेख मिलता है। सुनीति कुमार चटर्जी की भूमिका पृष्ठ १३, १४ देखिये।
१४. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ ३७
१५. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ ३७
१६. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ ४०
१७. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ ३१
१८. वर्णरत्नाकर, पृष्ठ १०
१६. विद्यापति, कीर्तिलता, सम्पादक और व्याख्याकार, वासुदेवशरण अग्रवाल, चिरगांव, झांसी १६६२, भूमिका, पृष्ठ १३।
२०. कीर्तिलता, पृष्ठ १८०।
२१. पेखिवअउ पट्टन चारु मेखल जजोन नीर पखरिया
['उन्होंने सुन्दर खाई (मेखला) से घिरा हुआ नगर देखा।']
—कीर्तिलता, पृष्ठ ५८
२२. पल्लविअ कुसुमिअ फलिअ उपवन चूअ चम्पक सोहिया
['उपवन पल्लवित, कुसुमित, और फलित था। उसमें आम और चम्पक सुशोभित थे।']
—कीर्तिलता, पृष्ठ ५६
२३. कीर्तिलता, पृष्ठ ५६
२४. धअ धवलहर घर सहस पेखिअ कन अ कलसहि मण्डिया
['धौराहर (राजप्रासाद) ध्वजा से युक्त था, सहस्रों घर वहाँ दिखाई पड़ते थे। राजप्रासाद पर कलश मंडित थे।']
—कीर्तिलता, पृष्ठ ६२
२५. कीर्तिलता, पृष्ठ ६४

२६. सम्मान दान विवाह उच्छव गीअ नाटक कव्वहीं
आतिथ्य विनअ विवेक कौतुक समय पेल्लिअ सव्वही
['सब लोग सम्मान, दान, विवाह, उत्सव, गीत, नाटक, काव्य, आतिथ्य, शिक्षा, विवेक और खेल तमाशे में समय व्यतीत करते थे।']
—कीर्तिलता, पृष्ठ ६४, ६५

२७. कीर्तिलता—वासुदेवशरण अग्रवाल, पृष्ठ ८०

२८. कीर्तिलता, पृष्ठ ७३, ८४

२९. कोसीस, प्राकार पुर विन्यास कथा कहओ का
जनि दोसरी अमरावती का अवतार भा
['····कंगूरा, परकोटा पुर विन्यास (नगर निर्माण) की कथा क्या कहूँ ! लगता है दूसरी अमरावती (स्वर्ग) का अवतार हुआ हो'] —कीर्तिलता पृष्ठ ७०, ७१

३०. चांदायन, माता प्रसाद गुप्त ३०।६७

३१. कीर्तिलता, वासुदेवशरण अग्रवाल, पृष्ट ७१, 'अमरावती' पर टिप्पणी देखिये।

३२. देखिये Shyam manohar Pandey, Maulana Daud and his contributions to the Hindi Sufi literature, Annali, Istituto Orientale, Napoli (Naples) Italy 1978, Vol, 38 pp. 75—90.

३३. श्यामनोहर पाण्डेय, सूफ़ी-काव्य-विमर्श, आगरा १९६८
'चंदायन मे नखशिख और उसका आध्यात्मिक स्वरूप' १ से २६ तक।
चांदायन मे नखशिख (शिखनख) के लिए छन्द ६४ से ८३ तक देखिये।

३४. पिरम घाउ ओषधि नहिं मानइ। पिरम बान जेहिं लाग सो जानइ
['प्रेम को घाव पर औषधि कारगर नही होती। जिसको प्रेम बाण लगता है वही इसे जानता है।'] चांदायन ३२४—४

३५. चिनगि एक जउ बाहेर मारइ एहिं पिरम कइ झार
भसम होइ जरि धरती खिन एक सरग पतार
['प्रेम की यह ज्वाला यदि एक चिनगारी बाहर मार दे तो एक क्षण मे धरती, स्वर्ग और पाताल भस्म हो जायें।'] चांदायन ३२३।६, ७

३६. *Shyam manohar Pandey, Love Symbolism in Candayan*, in Bhakti in Current Research, (ed) Monikathiel Horstmann, Dietrich Reimer Verlag, Berlin, (Germany) 1983 pp. 269—293.

३७. कुषहुस (मिर्जापुर) का मेरा पाठ जिसके गायक ददई केवट हैं, प्रस्तुत पुस्तक में है।

३८. चांदायन, छन्द १०१३, ४, ५।



त्रुटि सुधार—पृष्ठ ३५ पर फ़ारसी में १०२९ f₂
उपर्युक्त पढ़ें जाएँ।



गायक ददई केवट—कुरहुल, मिर्जापुर
मृत्यु २७ फरवरी १९७० ई०



गायक ददई केवट—कुरहुन, मिर्ज़ापुर, १९६६ ई०

डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय चोपन में 'लोरिकायन' की रिकार्डिंग करते हुए

लोरिकायन

गायक—बदई केवट
ग्राम—कुरहुल, मिर्जापुर
रिकार्डिंग तिथि—
१७ अक्टूबर से
२३ अक्टूबर, १९६६ तक

सुमिरन

है राम, राम, राम, राम हो राम, कहलेनि रामइना रामवा जे गुन हो गावऽ
केहू, राम लीहल ना नउवाँ जे देख तोहारऽऽ
केहू, भाई जीनिय ना रामवा जे तू हो बीसरऽऽ
जब तक रहि हुइं न मटिया जे राम पराऽनऽ
आजु कहैं नीचवाहू, से सुमीर लीहू, मइया धरती
ऊपराहू, सूमिरि लीहू, लीहू ना भग हो वाऽनऽ
एठियन सुमिरल ना डिहवा जे डीह हो ठाकुर
इहू कर सुमिरल ना मरिया जे बाबा मऽसान
चिहू, भाई सुमिरल देवतवा जे बाबा गोरइया
जिन्ह पूजा खइलहं सुवरवा तू दम हो तर
किहू, भाइ सुमिरल देवतवा जे बाबा बधौता
अब जेन्ह हउवहू, टोनहियन के जय हो आर
सूप भाइ बान्हहू, ना टोनवा जे टोनहीन कऽय
ओझवा के बान्हहू, भउहवाँ जे तूह लील्लार
अब मारि देहहू, दमदवा जे डऽइनी कऽय
देसवाहू, सुगई भिनउवन मरि रे जाइ
आज कहैं रामईं ना सिरजी जे बा रामायन
लछिमन सिरिजइ ना कठियहू, हो पयार
केहू, फिर सीतइ सीरिजले जे जइये नईहर
जेइ जाइके धनुस तोडल बा भग होऽ बा न
आजु कहैं पठहिं ना बइठहू, माइ कठेसरि
हिरदह मे बइठहू, ना गउरी हो गनेस



गायक ददई केवट—कुरहुन, मिर्ज़ापुर, १९६६ ई०

डॉ० श्याममनोहर पाण्डेय चोपन में 'लोरकायन' की रिकार्डिंग करते हुए

आजु भाइ कुल्लवह् मूखरिया कइये लेलंऽ
मुखवा मे लेलह ना बिरवा हो दवाई
अब सूवा कूचईं मगहिया ढोलो रे पानऽ
ओहि घहि सुवरन ना छड़िया सूवा ऊठउलेन
गोड़वा मे सोनेह् खरउवा हो पहिनी
जउने घहि उतरइ ना सिढ़िया कोलवा कऽ
अरे भाई हलत सऱ्हरिया मेनि हो गइल
ओहि घहि देखई ना सहुवा हो महाऽऽजन
उठ भाई कालिय कुरूसिया लेइ के दउर
धइ कइ निहुरि करत बा पर हो नामऽ
अब राजा आसिर ना बदिया वा हो देतऽ
आजु भाई परजाह् ना सुनिलऽ हो हमारऽ
आज तुह आखह् अमरवा जे होइये रहब (३
तुप भाई जियह् ना लखवाह् रे बरीस
जइसे भाई बाढत बा पनिया जे गगा कऽ
ओइसइ बाढइ ना अइयाह् रे तोहार
अब फेरि देतह् ना ओठियन बा रे खातिर
सहुवाह् हलल भीतरिया वा चलि रे जात
ओहि घरि दूधइ न चिनियाह् लेइये लिहलेन
सरवत देलेह वा आठियन रे बनाइ
ओहि घरि लोटह् ना पनियाह् रे गिलसिया
लेइ बरि सुबह् के अगवाह चलि रे जाय
आहि घरि ऊठइ ना रिदवह् रे मोलागत (४०)
उप भाई पीयत वा पनियह लेइ रे वाय
सुनना हलिया आठियन कऽ
सूवह् ऊहउ दूभरवा छोड़िये कामे
अपने जानह् पऽरजवा के देर रे वारऽ
धातनह् ऊहउ ना खातिर वात रे कइ कऽ

राजा मोलागत का महर अहीर से भेंट करना—
जुए मे राजा की हार

अइसइ गल्लीय घूमलवाह् वाय अगोरी
जउने घरी बावन ना गलिया जे घुमि रे गइलऽ
एक नाहि गयनह् पऽरजवाह् रे चिह्लाय
जउने घड़ी तिरपन ना गलिया मे हलि रे गइलऽ
गल गइनह् अहीरवा के दर रे वार

अंगने में बइठल ना महरा जे बाड़ये कुरूसी
अउ फेरि\जूटल ना सुबवा जेवन रे जात
ओहि घड़ि नाहीं अहिरवा जे बाय रे ताकत
न त सूबा बोलत जऽबनिया से देख रे बाय
ओहि घरी पक्का पहरवा जे ठाढ़ रे भयना
नाहि भाई मनवाह् ना कइलेनि रे गुलाम
आजु हम कुकुरि का हुई दुअरा पर जुटि रे गइलीं
परजाह् बइठल ना रहिगा जे हमार
आजु भाई सरम के मरवा जे नहिनी ऊठत
अउ चार परग न सुबवा जे जाऽन पछेल
जेहि घरी मरलेनि खंखरिया जे फरके से
महराह् ऊठल कुरूसिया से लेइ रे बाय
आजु कहैं हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् न मझवांह् रे लीलार
आजु कहैं·······सुनह् न हलिया अहीरे कऽ
गरभिय बोलल महरवाह् लेइ रे बानं
आजु कहैं हो हो दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् मंझवाह् रे लीलार (पुन०)
सूबाह् देखत परजवा के बाइ रे चूल्हा
कउन हम लेइंय मुलुकवाह् तड़ि रे याइ
एतना जे सुनइ ना रजवा हो मोलागत
उय भाइ ओठिन से उठियं चलि रे गइलंऽ
चुप से रेंगल चाननिया पर जालंऽ
ओहि घरी गोड़ेह ना मुड़वा रे चदरी
लेइ फेरि तानिय सूतल वा लेइ रे बानऽ
आजु सूबा सातइ घरियवा कइ खवइया
दिनवाह् दुपहर चऽढ़लवा बाइ रे जात
ना त सूबा मानह् ना बोल रे बोलावत
ना त उहै ताकै मऽलकिया रे ओघारी
ओहि घड़ी मचीय गइलि वा अन रे खानी
ओहि घरि उठनह् ना सुववाह मोर मोलागत
जाइ केनि वइठई कचहरीय में नि हो जाइ
ओहि घड़ी बोलल ना मंतिरिह् लेइ रे बानऽ
आजु कहैं सुनवह् ना राजाह् महरे राजा
एठियन मनवह् कहनवाह् तू हमाऽरऽ

आजु कहैं परजाह् ना (के) महरे के
कहलसि कइसन मूतलवाह् बाड रे आजू
आजु कहैं महराह् के जल्दी बल रे चईब
अह फिर दे दह् चननिया बइ रे ठाई
उनके दूसे के साथरिया देइये देहा
अपने के लेइ ला कुरूसिया मय रे दाना
ओहि घडी खेलह् कउडिया अऽहीरे से
एहि मे मिलोय न वलवा अन रे दाजा
ओहि घरी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
मश्री मतवाह् न ओठियन ठाठिये दीहलेन
सूबा के गयनाह् ना मनवा हो बईठी
ओहि दम छूटनह् ना तुरकीय ये सिपाही
रेंगल जानह् मऽहरवा केनि रे घऽरऽ
जाइके भाइ ठाडा दुअरवा होइ रे गयनऽ
महराह् वानह् आगनवा मेनि रे ठाढऽ
आजु कहे सुनबह् अहीरवा जे बीर रे तू हं
तोहार सुवाह् ना कइलेनि रे बलाय
ओही घडी बोलत महरवा न जबने से
हम भाइ नाहिय ना चननीय पर रे जाइबऽ
ए महं जावन ना मनवा जे होइ रे होइ
ओहि घडी सुनलह् सीपहियन कइ रे मंता
ओनके हाथेह् ना गोड़वा जे धइये लें
टेकीह् टेकह् चननिया पर लेइये चलनऽ
अउ फिर देखत अगोरिया क वाने रे लोग
ओही परी बोलनह् अगोरियाह कय महाजन
पचह् मनवह् काहनवह् रे हमार
तब आही अहीरे के सघवा जे चलि रे चऽलऽ
अब चलि चऽलह् चाननिया पर रहि रे दऽम
आजु भाइ कऽवन कऽसुरवा जे अहीरा कइलेसि
एनकर एतनी जाचनवा जे होत रे वाइ
ओहि घडी एतनाह् ना रे हल्लइये रेगल
परजाह् रेगल चाननिया पर वान रे जात
जाइ केनि छोड़लेनि सीपहिया जे चाननीय पर
अहीराह् ठाढह् ना हथवाह् जोरि रे थाय
आजु कहैं राजाह् ना सुनिलह् महरे राजा

एठियन तू मनबह् काहनवाह् रे हमार
आजु हम कऽवन कसूरवा जे अइसन कइलीं
हम्मार कइलह् जाचनवा जे बरि रे यार
ओहि घड़ी बोलनह् ना सुववा मोर मोलागत
आजु फिर कहत जाबनिया से दोहरे राय
आजु भाइ सुनबह् न अहीराह् तोडंए मऽहर
एठियन तूं मनबह् काह न वह् रे हमाऽर
अब तुय कवनेह् गऽरमिया से दुअरा पर बोललऽ
उहे गरमी हम्महं ना देतह् रे देखाय
जे अपने धनह् ना सठियंह् के गऽरमिया
आरे मोर बोललह् न बोलियाह् रे कुबोल
जौ अपने सोनह् दरबिया केनी गऽरमिया
अइसन बोलह् लऽ बतियह् रे बनाय
के भाई कवने देहियह् ना जोमवाह् के रे जोरे
अइसन कइलह् ना बतियाह् ले ल रे कार
जउनेह मानेह् ना तोहरे जे लेइये रहनऽ
उहे हमरा आयल ना बतियाह् लेह् रे वाय
आज तुय बऽईठि दुअरवा पर चांननिया पर रे जातऽ
दुइ हाथ चालत न पसवा जे लेल रे कार
जेकि भाइ रामइ ना देतह् देइये ते के
छन्नेह जातइ झगड़वा जे फरि रे याय
आवत अहीरवा जे सथरीय पर
राजह् बइठल कुरूसियह् पर रे बानऽ
हथवा में ले लह् काउड़ियह् लेइये महरा
उहे भाइ छावइ ना दानवा बा लेरिये यात
जउने घड़ी छः छः ना दानवाह् लेल रे करलेऽसि
अब खुलि गयल ना दानवाह् छवरे आजऽ
आजु भाइ जीतल घऽसीहटा ओनकर हो जानंऽ
जवन हइ गोहूँ गोजइयह् कइ रे ठाने
दुसरह ना हथवा जे फेकिये देहलेन
आधह् जितलेनि अगोरियाह् लेइ रे पालऽ
ओहि घड़ी तिसराह् काउड़ियाह् ओहि पवरलेऽ
उन्हें भाइ जीतल ना किलवाह् भईं रे नाऽर
आजु कहीं पंचवाह् काउड़िया जे बाइये फेंकत
वेलकुल हथिय ना छोड़वाह् घोड़ रे सार

अब सूवा जीतल ना अहीरहृ् लेइ रे बानऽ
ओहि घड़ी छठईंय बाउडियाहृ् रे पवरलेऽ
नोकर चाकर हुकुमिया जे आपन चढा देऽ
एतना जे कहत ना बोलियहृ् बाये ओठियऽन
कान धइके देलेसि फुरूसिया से ओन्हे उताऽरि
ओही घड़ी रोवईं ना सुववाहृ् मोर मोलागत
जेकर भाई उरदून कवलवा वा बिहरे लातऽ
आजु भाई गलतीय सरीरवा मे होइ रे गयलऽ
एमह सरबस गल्तीयाहृ् बाय हमाऽरऽ
एकतह जबरीय पारजवा जे भगरेवउले
परजा खेलत ना पसवाहृ् लेल रे कारी
उहे परजा बेलकुल ना धनवा जे जीति रे लेहलेन
कान धइ के देलेसि ना ओठियन से उताऽरी
ओही घरी उल्टीय हुकुमिया वा लगरेवउलेऽऽ
सुववा तूं मनवहृ् चाहनवहृ् रे हमाऽरऽ
इनके भइया के छिन ना धोतिया जे पहिरे रहव
अगोरी से देबहृ् पुरूबवा रे डहुरे राइ
ओही घरी छुटनहृ् सिपहिया जे सुववा कऽ
एक छिन देलेनि ना धोतिया जे पहिरे राय

ब्राह्मण के वेश में ब्रह्मा का आगमन और मोलागत को सहायता का आश्वासन देना

ओइ घरी यक छिन ना धोतिया जो सूवा पहिर कऽ
रोवत उतरल चाननिया जे बान रे जात
ओई घरी आगेहृ् ना नदिया जे बाइ बीजुलिया
उअ पार होतइ गमल ना डगमगाइ
ओहि घरि बरम्हा से आसन डगमगाइनंऽ
ओन्हइ देतइ न वानहृ् बर रे दान
उअ भाई बाभन ना रूपवा जे धइये लिहलेन
जाइकेनि आगेहृ् डऽहरवा पर भइनं रे ठाढ
ओइ घडि बोलइ न बतियाहृ् सऽरमे से
मूबाहृ् षहाहृ् रेंगलवाजे बाड रे आऽत
आजु भाई कऽउनि मुसीबति परि रे गइली
रोवत जालहृ् अगोरिया जे ओहि रे पार
ओहि घरी बोलनहृ् ना सुववहृ् लेइये ओठियन

आजु भाई मनवह् काहनवह् रे हमार
आजु तोहार जातीय ना हउवें जे बाभने कऽ
जाइकेनि मांगह् दुअरवाह् पर रे भीख
इकाह् जनवह् रोइववा के हमरे मतलब
अब तूंये घरह् डहरिया जे चलि रे जाय
अब बरम्हा उनहूँ से हट्ठू जे परि रे गइनऽ
उअ भाई ले लेनि ना हथवां लेइ रे जात
आजु कहीं सुनवह् ना सुववाजे मोर मोलागत
कहनां तूं मनवह् ना एठियन रे हमार
आजु भाई आपन मतलववा जे हमें बतावा
हमहूंय देइय उपइया जे तोहें बताय
कहत ना रहलीं हम रऽमायन
कइसन परल जियरवाह् बा रे मोरऽ
अब जिनि भूलह् ना संघियाह् मोर समउरी
मति भूलि जायह् दुरूगवाह् मोरि हो भाई
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
बरम्हा जी बोलल बां ओठियन लेइये बानऽ
उय राजा देतइ जवाववाह् ओन्हे हो बानऽ
आजु कहीं सुनवह् बराभन मोर हो देवता
एम्महं अहीरे के कसूरवा तनिको हो नाहिनी
गलतीय बा नाइ कामूरवा हो हमाऽरऽ
आजु भाई देखह् ना हलिया परजा कऽ
अब तोहि देलेसि ना देसवा हो निकालि
अब तुयं लवटि अगोरियां तनि हो जावऽ
अब चढ़ि जावह् चाननिया केनि रे बीचऽ
जाइकेनि हाथइ ना जोरिया कइ रे बोलऽ
आजु भाई सूनह् ना सुववा मोर हो माहर
अब तूंय मनवह् काहनवा हो हमाऽरऽ
आजु कहीं आंखिनि अगोरिया बाय जे छूटत
एक हाथ अवरूह न खेलतह् हो बनाई
ओहि घरी गरभीय अहीरवा बाइ रे महरा
बोलत बानह् गारभवा कइ रे बोलऽ
आजु कहं सुनबह् ना सूबाह् मोर मोलागत
एठियन तूं मनबह् काहनवहं रे हमाऽर
आजु भाइ एक दाई ना दू दांई कवन रे गनती

तूं हाथ खोलह् ना पसवाह् रे पचास
ओहि घडी बोलइं ना सुववाह् मोर मोलागत
जाके भाई बईठ सावरियाह् पर रे गइनऽ

पुनः महर और मोलागत का पासा खेलना—सब कुछ हार जाने पर पत्नी की कोख दाव पर रखा जाना

अब राजा बईठि ना अहीराह् कुर्सी पर
सूवाह् ले लेहु काउडियाह् हथवा मे
पहिलेह् छऽवई ना दनवा जे वा खेलावत
उय धन जीतनह् ना ओठियन रे बनाऽई
आपन जीत लेनि घटिहटा लेहि रे गांवऽ
जवन हइ गोहूँय गोजइयाह् कइ रे खानी
ओहि घडी दुसराह् सावरिया वा फेंकि रे दीहले
अब जीति गयल अगोरियाह् अपने पालऽ
ओहि घडी तिसराह् काउडियाह् वा निकालाऽ
अब जीति गयल ना किलवाह् भइँ रे नारऽ
के भाई चउथाह् काउडियाह् लेइये फेंक लेनि
हाथीय जीतइं घोडवा रे आजऽ
के भाई पंचवह् कउडियाह् फेंकि रे देहलेन
नोकर चाकर ना जितलेनि अब बनाई
ओहि घड़ी पचवह् काउडिया जे फेंकिये दिहलेन
अब जीति गयनह् ना अगोरियाह् सब रे राजऽ
कान धइके देहलनि कुरुसिया से ओन्हे उतारी
ओहि घडि छठवंह् ना दानवा जे वा पवरले
अउ फेर बोलत जावनियाह् लेनि रे वाय
आजु कहं सुनवह् माहरवा जे तू ये अहीरू
एठियन मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर
आजु तोर धानइ ना पुजिया जे कुछ ना धरवय
हम तोर धरब बीमहिया के देखु रे कोख
आजु जेतने बिटियाह् ना जतियाह् रे जानमिहैं
ले जाब बिल्लाह् भोगब हम रनि रे वास
जेतनिय बेटवाह् ना जतियाह् रे जानमिहैं
हमरे घोड़ह् कऽ होइहइं रे सहीस
ओही घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
अहीराह् रोवत चाननियह् घर रे बानऽ

आजु कहैं सूबाह् ना सुनिलह् मोर मोलागत
आजु भाई सोनह् दारबिया के होब रे भूखलऽ
किलवा में देइयं ना हमहूं रे ढूसाई
नाहि भाई गइयाह् भइसियां क होबे भूखल
दानवा पर धइलह् लऽछिमियाह् रे हमाऽर
उहे भाई नाहिय ना दानवाह् पर रे बोलऽ
अब छोड़ि देबह् बीयहियाह् केइ रे कोखऽ
दिनवाह् दिनके बंधकवा के जे परि रे जइहंऽ
जियनह् होइय बीरिथवाह् रे हमाऽरऽ
ओहि घड़ि बाजति थापोरिया जे सूबवा कऽ
अब हंसल बानह् कऽचहरीह् कइ रे लोग
आजु कहैं हो हो ना दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा रखलह् ना बतियाह् रे हमाऽरऽ
आजु पूरा भईल ना बतियाह् रे हमाऽरऽ
महरा के चलि दीहें ना घरवा जे दरबार
ओहि घरि बड़ेह् सबेरवा केनि रे जूनऽ
अब फेरि रेंगल माहरवाह् घर रे जालाऽ
एकदम नीकलि आंगनवाह् मेंनि रे गइलंऽ
महरिन ढुरि ढुरि आंगनवा जे बाइ बटोरत
जाइके माहर बइठल कूरूसियाह् पर रे बाऽनऽ
ओहि घड़ि बोलति न धनवा जे बाईं ए माहरिन
सइयांह् सुनिलह् ना एठियन रे हमाऽरऽ
तोहें भाई धइलेंह सिपहियाह् चलि रे गयनऽ
कीलवा पर कऽवन जाचनवा जे भयल तोहाऽरऽ
तब फेरि बोलल ना बतियाह् बाइये ओठियन
बियहीय मनबेह काहनवह् रे हमाऽरऽ
न त राजा मरलेनि ना हमके जे गरि रे यउलेन
न त उहां बोलनह् ना रेहवा रे तूकारऽ
कायदे से हमसेइ ना पसवाह् जुआ रे खेललेन
अब हम जितलींय ना बेल्कुल उनकर सामाऽनऽ
आपन देलीं हुकुमियांह् रे चलाईं
अह माई पुरवेह ना देसवां में चलि रे देहलेन
सूबाह् देहलनि बऽचनियाह् रे सूनाई
आजु भाई बहूत गारहवा जे डालि रे देहलेन
अब कहं परीय बंधकवा जे कोखिया में

अव फेरि देखह् ना हलियाह् रे ओपाई
ओहि घडी लेइकऽ बऽढनिया जे लेइये हाथवा
महरिन दवरिल महरवा जे ओर रे जाय
ओहि घडि भागल कूरूसिया से गिर रे माहरा
सोझइ चढि गयल ना परवत हो पहाऽड
ओहि घडी मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
केहि फेरि ओहूय समइयाह् कई ये हालऽ
अइसे अइसे वारह बरीसवा जे बीति रे गऽयल
चऽढल बानह् तेरहवाह् लेइ रे माऽसऽ
ओकरेह् अदर ना सुनिला माहरीन कऽ
ओकरे अदर छवई बीटियवा रे जनमली
पारि पारि छवओ लेइ गय नऽ भंवरे नाऽरऽ
आजु कहैं मूनह् ना हलिया सतयें कऽ
आजु भाई देखइं ना हलिया लेइ रे पाऽलऽ

लोरिक का जन्म

आ फेरि मूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
के भाइ ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽल
जबने घडी भादव महीनवा जे रहले चऽढल
अउ फेरि आधीय ना रतिया जे निकरे राऽय
जबने घडी होल्लाह् जानमवा जे क्रिस कन्हाई कऽ
तेही घडी तडकत पहरवाह् लेइ रे बाय
आजु कहैं देहहि ना बुढिया जे बाइ रे खोइलनि
जे फेरि ओहूय ना बिरमी जे कोलु रे बाइ
बोहवा मे आगिय ना कठिया जे गोठ लगाइ कऽ
अउ फेरि गाजत गोवरधन कइ रे बाय
ओहि घडी सडकलि ना बिजुली जे लेइ ये ओठियन
अउ फेरि आचर बुढियवा जे फइ रे लाय
जउने घड़ी घ्यानइ वारम्हवा पर धइये लीहलेन
अउ फेरि गीरत धऽरनिया जे तर रे बाय
ओकरेह् ऊपर लोरिकवा जे गिरि रे गयऽनऽऽ
बुढिया के गयल आचरवा जे देख रे वाय
ओकरेह् ऊपर सुवमा जे गीरल सुबच्चन
उप भाइ गीरिय धऽरतिया जे बानऽ फेंकाय
ओहि घरि बिरम्हीय कोलिनिया जे ओठि रे रहली
ओन्हे लेइके भगनिय पीपरिया जे लेइ रे पाल

अगोरी में मंजरी का जन्म

ओही घड़ी सूनह न हलिया महरे कऽ
तब भाई सतयेंह् गारभवा रहि रे गऽयल
तब फेरि नागर अगोरिया कइ रे हाऽल
अठयें से नऽवइ महीनवा लेइये चऽढ़ऽ
भादवं चऽढ़ल मऽहीनवा वर रे सातऽ
जउने घड़ी कीसुन कन्हइया के जनम रे होला
ओहि घड़ी होलाह् जनमवा मांजरी कऽ
एहि जउ नागर अगोरिया दई रे पालऽ
आजु भाई पूरूब बऽ हलि वा पुर रे वइया
पछुवांह देलेसि ना वड़वा रे झिकोरी
आजु भाई उतराह् मरले वा भवंकिया
दखिन दउ वरसत लोढ़नवा कइ रे धारऽ
ओहि घड़ी सगरउ आगोरिया भर वरसइ रे पानी
महरा के घेरि कह् वाखरिया जे वरसइ रे सोन
ओहि घड़ी होलाह् जानमवां जे मंजरी कऽ
ओहि फेरि जानेह् आधी रतियां कऽ सगवाह् रे सबेर
ओहि घड़ी होइ गयल जनमवा जे मंजरी कऽ
धियवाह् गीरल धरतिया लेइ रे वाय
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे माहरीन कऽ
अउ फेरि बोललि भीतरियाह् सेनि रे बाय
आजु कहं सुवचन ना सुवचन वाइ पुकारत
सुवचन अंगने में भइयवा जे ठाढ़ रे बाय
आजु कहैं सुनब्रह् ना भइयाह् मोर सुबच्चन
एठियन तूं मनवह् काहनवाह् रे हमार
चलि जाह् लोनाह् चऽमइनी के दर रे बाऽरऽ
अब लेइ आवह् ना नोनवाह् रे बलाय
आजु भइया जनमलि भऽयनवा जे लेइये घरवां
जल्दी से लेइ आवऽ ना नोनवा के बल रे वाय

नोनवा चमारिन का नाल काटने आना

ओही घरी रेंगल ना मलवा जे बाऽ सुबच्चन
अब फेरि रेंगल चऽमरवा जे घर रे जाय
दुअरा से नोनवाह् ना नोनवा जे बा पुकाऽऽरत
भितरी से बोलति चऽमइनी जे फेरि रे बाय

अब कहँ गरभिन चऽमाइनी बाइ रे नोनवा
भितरी से बोलति गऽरभवा कऽ बानी रे बोल
आजु भाई केह दुअरवा पर लेइ ये एला
बोलत बाडह् मेह्यिवाह् कइ रे बोल
ओही घड़ी बोलल ना भइया जे वा सुवच्चन
नोनाह् मनबह् काहनवाह् रे हमार
आजु मरे जनमलि मऽयनवा जे बाइ ये घरवा
बहिल तोहार कइलेह् पूकरवा जे लेइ रे बाय
चलि केनि नारइ चेवरवा जे छेकि रे देबऽ
अब तूय लेबह् ना कमवा जे अपन पुडाय
ओहि घडि नाहिय ना नोनवा जे बाइ कुछ बोऽलत
फेरि भाई चारि परग फरवचा जे हटि रे जाय
आजु कहँ भइयाह् न सुनिलाह् तू सुवच्चन
एठियन मनबह् काहनवाह् रे हमार
एठियन ब ड् इ ना गँउवाह् लेइये घरवा
तब तुह कारन काहलिया रे हमार
आज तू यइठह् न ओठियन वल रे वइबऽ
कइसे नोना बोलति गारभवा क वाड रे बोल
ओहि घरी मूनह् ना हलिया जे नोनवा कऽ
सुवचन से कहति ना बतिया बा समुरझाय
भइयाह् तोहरेह् ना बहिनिय केनि ये कोखिया
ऊहे भई छवइ बीटियवा जो होइ रे जाय
छवइ जनमलि गोबरवा क याइं ये हीना
एहि दाईं जनमलि भगमनियाँ जे लेइ रे बाय
आजु पह बीनाह् दीयना लेइये बातियाँ
जेकरि भइलि सोवरिया वा अजरे रार
तय पह् सगरउ अगोरिया भर बरसे रे पनिया
महरा के घेरि का बाम्हरिया जे गोरय रे सोन
······नोनवाह् बा चमाइनि
सुवचन मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
देखऽ भाइ छऽवइ बीटियवाह् महरो के जनमल
छहवई जनमलि गोबरवा कऽ बानी रे हीना
एक दाईं जनमलि वा घियवा जे पेट रे पोंछनी
जेकरेह् जऽरत ना छत्तर लेइये बाऽनऽ
तब पह सगरउ आगोरिया जे बरसल बा पनिया

महरा के घेरि कहृ बाखरियां जे गिर रे सोना
आजु भाई बीनहृ दीयनवा जे बतीया कऽ
जेकर भाई भईल सोवरिया बा अंज रे राऽर
आजु बीना डांड़ीय ना डोलवा जे हमरे चढ़ि कऽ
ना त चलि चलब ना नारवा जे छिनबे बाय
ओहि घड़ी एतनाह् ना बतिया जे सुनऽ सुबच्चन
एकदम लवटल महरवा जे घर रे गयनऽ
अँगने से बोलत ना मलवा जे बा सुबच्चन
बऽहिन मनबह् काहनवाह् रे हमाऽरऽ
नोनवाह् भारिय ना ठनगन कइये दीहलेस
आजु भाई बोलल गारभवाह् कइ रे बोलऽ
जउ फेर बेटवाह् ना जतियाह् रे जनमतऽ
अऽऊर आईल साइत नह् लेइ रे खम्मऽ
आजु भाइ बीनह् डंड़िया जे डोलवा कऽ
ना छीने चलब ना नारवाह् रे बेवार
तब फेरि बोललि भीतरिया से बाय रे महरीन
भइयाह् कवन ना डंड़ियां में बुनि रे यादऽ
झट देनी आलर ना बसवांह् कट रे वइबऽ
डोलिया दे दह् न ओठिवन रे फनाऽऽई
उपरा से डालिदह् ओहरवा जे डोलिया पऽर
चमइनि आवइ ना छीनइ नार बेवाऽरा
ओहि घड़ी लेतनह् ना बतिया बाइ रे कऽहत
ढालर देलेसि ना बसंवा कट रे वाई
अब डोली देलेसि ना ओठियां फन रे वाई
आजु भाइ कंहरा ना ले ले बल रे वाई
डोलिया पर डललेह् ओहरवा बाइ रे जाई
उय ले ले जालाह् चामरवा केनि रे घऽर
जाइ केनि डांड़ीय जूटलि बा दुअरा पऽर
ओहि घड़ी बइठलि ना नोनवा जे वा चामारिन
उहे भाई देखत नऽजरिया जे भइल पाताल
आज कहँ हो हो न दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् न मथवांह् रे लील्लार
कवनेह् ना दिनवांह् राम समइंयां
केहि फेरि ओहूय समइया कइये हाऽल
सुवचन डोलियाह् खऽटोलियाह् रे मँजुसवा

दुअरेह् से हमरेह् ना जल्दी से हट रे वइवा
हम ना छीनब ना नरवाह् रे बेवाराऽ
ओहि घडी बोललि ना नोनवा बाइ चमाइन
सुवचन मनबह् काहनवा तू हमाऽरऽ
जवन भाई बाडइ पालकिया मञ्हरीन कऽ
उप भाई पीतरीय वा पालकिवा हउ रे सोनकर
जे मह वान्हइ न माढवा रे उरेहाऽ
जेमा भाई बत्तीस काहरवा दखऽ रे लागऽ
हुम्मिय हुम्मा ना डडिया लई रे चऊलव
ऊपरा से डालल ना पचरंग रे ओहाराऽ
जब भाई ऊहइ ना अइहइ रे पालकिया
तब चलि के छीनब न नरवाह् रे बेवाऽर
' ' बानह् रे सुबच्चन
आइ चलि मवनह् आगनवाह् मेनि र ठाढऽ
आजु कहैं सुनबेह् बहिनियाह् रे हमाऽरऽ
नोनवाह् मारिय ना ठनगनिया जे कइये देहलेस
आजु तोहार छोटकीय पालकिया जे पितरीय कऽ
जोडवाइ गयनह् ना मोढयाह् रे उरहऽ
जमह बत्तिमह् कहारवा जे लागि र जानऽ
हुम्मिय हुम्मा सामानियाह् चलि रे दलाऽ
ऊपराह से पचरंग ना छाडलह् र ओहाऽरऽ
जब भाइ उहई पालकिया जे दख र अइहुऽ
तब चलि र छीनब ना नरवा जे हम बेवार
आहि घडी सूनह् ना हलिया जे आठियन कऽय
महरिन बोलनि लारमवाह् कइये बाल
भइया नारीह बेवरवा जे तोर भयनवाऽ
आजु भाई बाडय बाहरवह् र झूराऽत
पुजरिय धऊवनि पालकिया कऽ बुनि रे बादऽ
हमरे न लवजोह् पलकिया जे उठरेवाइ
आहि घडि ऊहइ पऊलकिया जे नीकसवाइ बऽ
अउ पेरि दहलनि बाहरवा कढ र बाऽ
अब भाई पँचरग ओहरवा जे छोडि रे गऊयनऽ
बत्तिसो लागल कहरवा जे डाठि रे बाघ
जउन घडी उही उठि गइल पलकिया जे मञ्हरिन कऽ
उहइ से लह चामरवाह् जे घर र जाय

मोलागत की नोनवा चमारिन से भेंट— मंजरी के जन्म के बारे में मोलागत को जानकारी

तउने घड़ी भांभर ना भोरवा जे भयल वीहानवाऽ
उह भाई वड़े सवेरवाह् कइ रे जून
जउने घड़ी उठनह्, ना सुववा मोर मोलागत
उह फेरि वइठल चाननियाह्, पर रे वाऽ
सूवह्, कुल्लाह्, गाललिया जे करत जे रहनऽ
तव तक चमकलि पालकिया जे लेइ रे वाय
तव फिर वोललंह ना रजवा जे मोर मोलागत
सुनवह्, हमरउ ना मुंसिय रे देवान
आजु भाई वहुत आदरवा जे होत रे वानऽ
का दउं जनमल माहरवा जे माहरवा जे घर रे वाय
आजु छऽवइ वीटियवा जे देख जऽनमलें
एतनाह आदर पालकिया जे नाहि रे जाय
चाहि एद वेटवाह्, ना जतियाह्, वाइ रे जनमल
नोनवाह घरेह्, पालकियाह्, वड़ रे जात
अव कह सुनवह्, सीपहिया जे ओठियन कऽ
भाई·······करह्, न पहराह्, पुड़ रे आय
जउने घड़ी वारह ना दीनवा जे वरहीय (वीतिहेयं)
नोनवा के लवटीय ना डंड़िया जे एहि दाम
ओहे भाइ डांड़िय साहितवा जे लेइ लीआवले
अब हमरे आवाह्, चाननियाह्, मय रे दान
ओहि परे पुछि लेब ओठियन कय सबूतऽ
आगवंह करब उपइया जे हमरे जाय
जेवनी घड़ी जूटलि ना डंड़िया बा लेईये दुअरां
अंगने में गईल महरवाह्, के ऊआरी
ओहि घड़ी बोललि ना डंड़िया से वाइ रे नोनवा
महरिन सुनबह न बतियाह्, रे हमाऽरऽ
एइं दायें जनमलि बीटियवा बा पेट रे पोछनी
नेगवाह्, बढ़ल ना बानह्, रे हमाऽरऽ
आजु भाइ धरबह्, न सोनवाह्, सूपऽ भरि कऽ
ओहि पर धरब पयरवाह्, देख रे हमऽ
तब तोहे आईब सोअरियाह केनि रे घरऽ
तब हम छीनब ना नरवाह्, रे बेवाराऽ

ओहि घरी भरि कह् न सोनहवाह् सूप रे देहलेन
अब धइ देलेनि पालकियाह् के दुवारऽ
नोनवाह् धरइ ना गोडवाह् रे दहिनवा
अब फेरि लेलेसि ना सोनवाह् सूपऽ भरि कऽ
पालकी मे देलेसि ना नोनवाह् अपने धऽई
अब हलि गईलि भीतरिया वा सोअरियऽ मे
जाइ केनि देखइ न रूपवाह् मजरीय कऽ
आजु याबू बीनह् दीयनवाह् विन रे वतिया
बिटिया क सोअरि भईल बा अज रे रार
ओही घडी जाइ केह् सारूपवा जे बाइ रे देखत
नोनवाह् फेरि जावनियाह् दे सुनाई
जब भाई सोने क हमुववा जे बनरेवइवऽ
तब चलि के छीनव ना नरवाह् रे बेवाराऽ
ओन्हें भाइ सोलइ न हसुवा पट पिटायाऽ
अब लेइ अयनह् ना नोनवा के हथ रे देहलेन
नोनवाह् ले लेह् भीतरियाँ बाइ रे जाती
जाइ केनि छीनइ ना नरवा रे बेवाराऽ
जउने घडी देखइ चेहरवा मजरी कय
जेतना भइली बउखरिया अजरे रारऽ
ओहि समय ओहिय फोकिरिया मे नि रे वाहऽ
अइसे अइसे बारह ना दीनवा बीति रे गइना
छठियाह् बरहीय भयल बा मय रे दान
जउने घऽडी डाडीह् ना होइगा धन महरिनी
नोनवा क करत वीदइया ओहि रे दऽम्मऽ
ओन्हे भाई सोनेह् कोरहवा कइ रे धोतिया
सोनवाह् दलेनि मरघनिया रे बनाई
नोनवा के धइलेह् सीगरवा बाइ रे मऽहरीऽ
पालकी देलेनि बऽमइनी बइ रे ठाई
उह भाई ऊठल पालकिया चमाईनि कऽ
चलि गईल वानह घरवा बइ रे खोरऽ
खोरिया धइलेह् ना जालइ रे अगोरिया
तब तक छूटल सीपहिया सूववा कऽ
जाइ केनि छेकलेह् पऽलकिया क वान रे आय
आजु कहें गुनवह् बाहनवा जे नोनवा कऽ
सूना घऽ उलटीय हुकुमिया जे देख रे वाय

२

चलि कनि पलकीय ना चलनी पतोहड़ जइहंऽ
तोहसे पुछिहइं ना सुववाह् रे हमाऽर
ओहि घड़ी चढ़लि पालकिया वा ओठियन से
एकदम रेंगल चाननियांह् परि रे जाइ
जाइ केनि छिपि गइल पालकिया जे नोनवा कऽ
नोनवाह् देलेसि न पंचरंग फेंकि ओहाऽर
आजु भाई खोलि कह् दुअरिया जे वाइ रे ताकत
सूवाह् वइठल कुर्रुसियाह् पर रे वाइ
जउने घड़ी देखइं ना सुववाह् रे मोलाऽगत
नोनवाह् ऊगलि दुईजिया के वाड़ऽ रे चान
ओहि घड़ी सूनऽह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
के फेरि ओहूय समइया क देख रे हाल
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
चमइन ताकइ ना सुववाह् ओर गुरेरी
सूवा क लड़ि गइल नऽजरिया जे कूरुसीय से
चमइनि गइलि ना मुखवा से मुसरे काई
ओनकर चमकलि वऽतीसिया वा दंतवा कऽय
ओन्हें आइ गइलींय मूरूछवाह् कइये दाऽरऽ
अब राजा गीरऽल कुरूसिया से भइ रे राई
बोलत वानह् लऽरमियाह् कइये वोलऽ
आजु कहें सुनवह् देवनाह् मोर रे मुखिया
एठियन मनवह् काहनवाह् रे हमाऽरऽ
आजु हम सुरतीय सोपरिया जे देख रे खइलीं
उपरांह खइलींय ना जरदांह् रे तुलाऽवऽ
आजु भाई नासाह् न हमहूं के होइये गइलीं
आजु गिरि गइलींय कुरूसियाह् लेइ रे हम्मऽ
एतनाह् कऽहत न सूववाह् बा मोलाऽगतऽ
तब फेरि समतुल सरीरवा जे होइ रे गऽयऽनऽ
बोलत बानह् लऽरमिया क बोलऽ
आजु कहें नोनवह् न सुनि ले मोर चमाऽइन
एठियन मनबेह् काहनवंह् रे हमार
देख भाई छवइ बीटियवा जे लेखु रे बानऽ
हमरेह् किल्ला भोगत बाइ रनि रे वासऽ
आज काह् जनमल ना महरा जे घर रे गयऽन
एतनाह् आदर भयल बाह् बड़ रे वार

ओहि घड़ी बोललि ना नोनवा जे बा चामाइनि
दरियाह, कऽरई ना बेडवाह रे जवाब
आजु राजा छव्इ बीटियवा जे जवन रे जनमल
छवइ सेइयल ना कीलवा जे भइ रे नार
उ छवइ जनमलि गोवरवा के वाईं रे हीनऽ
एह दाइ जनमलि ना धियवा जे देख रे वाइ
आजु कहँ जनमलि ना धियवा बा पेट रे पोछनी
जेकर भाई दावन माजरिया जे परी रे नाम
सूनह, ना हलियाह, ओठियन कऽ
नोनवा के हुकुम ना सूबवा वानऽरे देतऽ
नोनवा ते चलि जोह, ना अपने दर रे वारऽ
आहि घड़ी ऊठलि पऽलवियाह, सूबवा से
अब चलि जालई ना नोनवाह, दर र वाऽरऽ
नोनवह, उतरि पालबियाह, से नि रे गइलीऽऽ
आपन देनिय सामनियाह, रे नीकाऽली
ऊहवा से रँगलि पालकियाह, ओठियन सेऽऽ
फेरि रखि गईलि महरवाह, बेनिरेघऽरऽ

मंजरी का क्रमशः बढ़ना—सहेलियो से खेल मे झगड़ा—मंजरी का क्रोध

ओहि दिन सूनह, ना हलियाह, ओठियन कऽ
जउ भर बाढति बीटियवा घरि से घऽरी
अब फेरि पाल्हीय देखह,त पर रे देखा
ऊगलि आवति दूइजिया क बाइ रे चानऽ
जउने घड़ी तिनियह, महीनवा जे होइ रे गइली
धियवाह, खेलइ पटहेरिया जे होइ रे जानी
अब कहँ कुरूईय मउनिया जे लेइये लिहलीं
अब फेरि लेलेह, ना ओठियन खेले रे लगली
एक ठेनि रऽहलि बीटियवा वऽमने कऽ
एक ठेनि रऽहलि बीटियवा वऽनिया कऽ
एक ठेनि रऽहलि बीटियवा कायथे कऽ
ार पाचि खेलइ लऽडिकिया गर रे जोरीऽऽ
रसइ खेलत खेलतवा किछु दिन बीतल
ने मे देलेनि झागडवा रे भिडाई
ा लडि गईलि लाडिकिया लेइये आठियन
री से सडलि कपघवा कइये लडिकी
त बानिय ना देहया रे तुहारऽ

अब त नाहिय न होत बा वर रे दासऽ
लड़िकीय लड़ि गइँ ना खोलिया मय रे दाऽनऽ
ओहि घड़ी लड़इँ गऽरदवा रे मैंसानऽ
अव तेजधारिय विटियवा वा महरे कऽ.
जेकर वानऽ दावन मंजरिया पड़ले नाऽमऽ
अब भाई मरलेसि ना दउवां लेइये ओठियन
लड़िकी गीरल घऽ रतियाँ भइ रे राईऽऽ
जउने घड़ी उठिकइ भईलि वा सम रे तूलऽ
वोलत वानिय ना वोलिया रे कुवोलऽ
महरा के गाड़लि दऽरविया माटी रे होइजाऽ
गइयाह् भइसींय ना तिलहा रे मनाऽरऽ
एतना वड़ विटियाह् ना भइनीं रे अगोरियांऽ
एक नाहिं कइलेसि वऽहिलवा कइ विवाऽहऽ
मंजरीय अपनेह् ना मंगवा क हम सेनूरवा
तोर हम दरव ना संघट रे लीलाऽरऽ
आजु भाई वारह् ना पलिया जे वाइ अगोरी
तिरपनि कसकलि ना गलियाह् रे वऽजार
आजु भाई सावति ना लगवे जे मोंह अगोरिया
मंजरी तूं मनवेह् काहनवह् रे हमाऽरऽ
······धियवा वा महरे कय
महरा के लीहे ना घरवाह् छोड़ि ये कानी
अव भाई चऽढ़लि चाननियाह् पर रे जाई
गोड़े मूड़ तानति चऽदरियाह् बाई रे ओठियन
घरवा कऽ कोई सावाङ्वा ना जानत रे बानऽ
तब फिर सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
सातइ घरियवा कइ खवइया
दिनवाह् भयल दुपहरवा वाई रे जाती
दउर दउर खोजइ ना धानवा लेइ रे महरिन
रोवत वानिय ना जरवा रे वेजारऽ
आजु काह् भऽईलि बीटियवा रे हमाऽरऽ
के भाई राजह्ना जितले रहनऽ कोखिया
डांड़ेह घाटेह् लऽड़िकिया गइल भेंटाइ
लेइ जन किल्लाह् भोगत बाड़नि रनिवाऽसऽ
एहिय जे सुबहें ना धनवा रोइ रे महरी
महरी के रोवत वा नयना हो कुल परोसऽ

आजु कहँ जयावलि जोगावलि मोर बिटियवा
गायव भइनीय अगोरिया बाई रे पाऽलऽ
आजु कहँ भइयाह् ना सुनिलह् मोर सुबच्चन
एठियन मनवह् काहनवह् रे हमाऽर
आजु कहँ नदियाह् ना नारवाह् जे गइँ खोजइनी
कतनहुँ नाहीय ना पतवा जे बाड ठेकाऽन
का जानी जोतल ना कोखिया मे बानऽ हो सूबा
आजु पाई गऽयनह् डऽहरवा जे भय रे दान
जबरीय धई कह् बीटियवा जे लेइ रे गऽयनऽ
उहे भाई किल्लाह् भोगइ नाँहि रनि रे वास
एतना जब कहत वा बतिया बा जे अर रे थाइ कऽ
ऊ फेरि बोलत ना मलवाजे देखऽ रे बाऽ
आजु कहँ सुनबे बहिनिया तेँ र महरी
एठियन मनवेह् काहनवाह् हमाऽ रऽ
आजु कहँ बारह ना पलिया बा अगोरी
तिरपन कसकलि बानीय ना लिये जाई
तब केनि घुमि घुमि ना खोजिलह् अऽपने कै
तब फेरि नदिया बेवरवाह् बाइ रे सोनऽ
लडकीय गईलि ना सोनवा मे बुडि रे धऽसी
आजु कहाँ भईल भयनवा रे हमाऽरऽ
आजु कहँ तीनिय ना रतियाह् तिन रे दीऽनऽ
महरेह् परेह् मचलि बाडन अन रे खानि
तब कह बीनह् ना दऽनवाह् त्रिन रे पनिया
मरत बानह् ना महरा के घर रे सोग
मुना ना हुलियाह् ओठियन कऽ
धावत बाहई ना ममवा रे सुबच्चन
हथवा मे लेलह् रुमलिया मुह रे देले
पोछत रुमलिया अऽसुवाह् धऽनने पऽर
जह भाई बाडे बहनोइया कइ चाननिया
ओहि पडे चढल अहीरवाह् बाइ रे जाऽतऽ
जाइ केनि देखइ चऽननियाह् कइ रे हाऽलऽ
भीतरी से जडलि आगरिया बाइ देखाती
सूमहा भयन ना ममवाह् केनि रे बाऽडऽ
आजु भाई केहीय ना घरवां मे चाही भयनवा
भितरा से देलेसि आगरियाह् रे चढ़ाय

उहे भाई वानह् ना मंजरी जे नरियाऽतऽ
मंजरीय बोलति ना बतियाह् देखऽ रे वाय
कइसइ जइसइ ना हाथवा जे लेइये डालि कऽ
उहे भाई टारति आगरिया जे लेइ रे वाऽ
जउने घरी ऊघरिया अगरी जे होइ रे गइलीं
अब खुलि गयल केवरवा जे मयरे दान
मम्माह् रेंगल खटियवाह् चलि रे गऽयनऽ
जाइ केनि वईठि खटियवाह् पर रे.वाऽ
ओहि घरी तानइ चदरिया जे मूहवां कऽ
मंजरी के वऽहति आंनुइयां जे लेइये वाऽ
ओही घरी बोलल ना ममवां जे वा सुवऽच्चन
दरियांह् करई ना वेड़वां रे जवाव
आजु कहें सुनवह् भयनेह् मोर मंऽजरिया
एठियन मनवेह् काहनवंह् रे हमाऽर
के भाई तोहइं ना मरलेसि गरि रे यवले
के बोल देलेसि अगोरिया में रेह् तुकाऽरऽ
जल्दी से हमरेह् सऽरेखवा में भयने लगइवऽ
ठड़ ठड़ फारिय अड़ाइ देवऽ हमरे गाल
······घड़ी कवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां

बिना विवाह किये अन्न-जल नहीं ग्रहण करूँगी—मंजरी का प्रण

मंजरिय उठि कइ ना गइली रे वईठी
रोइ रोइ कहति ना वतिया वा मम्मा से
मम्माह् मनवह् काहनवह् रे हमाऽरऽ
देख मामा पांचइ लऽड़िकिया जे खेललीं रोजऽ
रोज रोज खेललीं ना गुड़हिय रे कुरूइया
एक दिन मचि गई लड़िकवन में अन रे खानी
बीगड़ि गईल लड़कियाह् कयथे कऽ
हमकेह् मरलेसि मेहनवाह् वड़ि रे याऽरऽ
आंजु भई कहै जे सेन्नुरा जे मंगिया कऽ
मंजरी के दरंव ना संघट रे लीलाऽरऽ
वसलि वारह ना पलिया बाइ अगोरिया
एहि छिन लगवह् सावतिया रे हमाऽरऽ
एतनाह् कहति ना वतियाह् वाइ मंजरिया
मम्माह् मनबह् काहनवांह् रे हमाऽरऽ

आजु भाई झगडाह्, लडिकिया जे गुन रे कइलेन
हमसे नाहिय झगडवा जे मम्मा सहाई ना
आजु हम मारल ना दउवाह्, लेइये घाउतऽ
लडिकीय गीरलि धऽरतिया मे महरे राई
आजु मम्मा अइसीय मेहनवा जे मारि रे देहलेसि
मम्माह्, आजुह्, ना सिरवा मे परिहइ सेनुरा
पछवाह्, अनई गऽरहवई जल रे पाऽन
...... ममवा रे सुवच्चन
एकदम ऊतरि चाननिया जे भय रे ठाड
आजु कहँ सुनवेह्, अहीनिया जे मोरि रे महऽरी
अब जिनि रोवह्, ना कलपह्, कोइये जाने
जिन केन पटकऽह्, धऽरतिया मे नि रे माथ
आजु कहँ भयनेह्, चाननिया पर बाडे मऽजरिया
उहँ भाई अन्नइ छोडल बा जल रे पाऽन
ओवे भाई अइसन ना धउवा जे लागि रे गऽयनऽ
उहो भाई हुवई ना सयवाजेकर लडिकीया
ओनेह लागल ना बतिया पे घाउ रे घाऽ
जब ओकरे आगेह्, बीयहवा जे कइये देऽऽ
पछवा से अन्नइ गऽरहिहइ जल रे पान
आजु कहँ गइयाह्, पाचुलिया जे लिखल बा अन्नइ
पानीय लीखल रूधिरिया जे बाइ सामान
मम्माह आजुह्, सेन्हुरवा जे सिर रे परिहऽईं
चलकेनि कऽरब ठऽहरिया पर जेब रे नार
ओहि घरी सूनह ना हलिया जे ओठियन कऽ
उहे भाई ओहू समझयाह्, कई रे हाल
उहे भाइ नीकलि दूबरवा से ना अपना
बहीन बहीन ना कइलेह्, रे पुकाऽर
आजु बहिन सगरउ फीकिरिया जे छोडि रे देबऽ
ओहू से जब्बरि फीकिरिया जे होइ रे जाऽ
भयनेह्, अन्नई ना पनिया जे सब तियगलेन
आजु भाई धरतह्, अगोरिया मे होइ रे जाइ
जब ओकर आगेह्, बीयहवा जे बहिन जे करबऽ
पीछे धाइ ना अनवाह्, पानि तोहाऽर

सुमिरन

हां, राम, राम, राम, राम हो राम

कहलेनि सांझेह् सुमरलींय हम संझेसर
आधीय रातिय अऽरजुन मूनऽल हो वान
अव भिनुसहरां सुमिरलीं जे हरि ये कारन
इहे तीनि धरम करमवा कहइँ रे जून

पंडित मोहनिया, नाऊ तथा सुबच्चन का मंजरी के लिए घर खोजने जाना

ओहि दिन एतनाह् ना वतिया जे सुनऽरे महरिन
उह भाई ठाढ़ई धऽरतिया में गिरि रे जाइ
आजु कहँ हो हो ना दइया जे मोर नारायन
का वरम्हा लीखलहे् ना मंझवा जे तक रे दीर
कइ दिन में लगिहइं वीयहवा जे वीटिया कऽय
कइ दिन सिरेह् सेनुरवा जे परि रे जाय
तव ऊत अन्नइ ना खइहंइ जे जल रे पनियां
सहजे में मरि गइल वीटियवा जे देखऽ हम्मार
ओही घड़ी वोललि ना धनवां जे वाई ये महरिन
भइयाह सुनवह् सुवच्चन रे हमाऽर
आजु कहँ पन्नित मोहनिया के वल रे वइवऽ
अन्न फेरि नउवाह् हजमवाह् ऐहि रे दाम
आपन भाई पोथीय पातरवा जे ले ले रे अइहंऽ
तिलका के देइहंइ मंजरिया क वइरे ठाइ
ओहि दिन रेंगल ना भइया जे वा सुवच्चन
एक दम रेंगल पन्नितवा जे घरि रे जाइ
दुअरा से मोहनीय ना मोहनीय पन्नित पुकारऽय
भितरींय वोलत मोहनिया जे पन्नित रे लाग
ओहि घड़ी वोलल ना भइयाह् लेइ रे ओठियन
आजु तोहार कइलेह् वलउवा जे वहिन रे वाय
अव चलि चलवह् वखरिया जे महरी के
तोहार वानह् वलउवाह् ओहि रे दाम
ओही घड़ी रेंगल ना ओठियन से रेंगावल
ओहि घड़ी ओठियन से रेंगनह् रे रेंगावल (पुन०)
अव चलि गयनह् मऽहरवा के दर रे वार
आजु कहँ सूनह् ना वहिनिया जे मोरि रे महरिन
एठियन मनवेह् काहनवांह रे हमाऽरऽ
उहे भाई पन्नित मोंहनियाह् नाऊ रे अयऽनऽ
अव तू कहह् ना वतिया जे अर रे थाई

ओहि घरी नीकलि ना धनवा जे अइली रे महरी
अगने मे पन्नित ना नउवा जे बइठल रे वाय
पजरेंह् भइयाह् ना वानह् रे सुवच्चन
अब फेरि बोलति ना धनवा जे देख रे वाय
पन्नित लरिकाह् गऽदेलवनि के खाये के खरचा
नाउ बाभन लेइ जाह् न घरवा द पहुँरेचाय
अपने के वान्हि लह् रोकडवा जे हथवा मे
अब तूथ चऽलीय ना देसवा ज चलिये जा
देखा भाई चारिय ना खुटवा च हवे पिरिथिमी
बरवाह् खोजह् ना जोडवाह् केनि रे तोड
आजु कहँ मजरीय ना जोगवा जे बर रे खोजऽ
महराह् जोगेह् अहोरवा जे खोजऽ गरार
• • ना रे बाभनवा
पठवाह् खोजत मुलुकवा वा सवरे साऽरऽ
चारि ओर घूमय ना नउवाह् रे बमनवा
कतउ नाही जोडइ ना तोडवा के बाति रे बानी
नात भाई मजरीय ना जोगवाह वर रे मोलऽनऽ
नात फिर समधीय महरवाह् अस गराऽरऽ
कतहूं घरइ मीलइ तह वर रे नाही
कतहूं घरवाह् मीलइ तह घर ठेकाऽनाऽ
घूमल जानह् मुलुकवाह् लेइये दखिन
दखिन खोजलेनि मूलुकवाह् छिति रे राई
उहउ नाही यहठल ना तिलकठ लेइये बाऽनऽ
एकदम पुरूब ना नऽगरवाह् सोसिरे ववसेन
अउ भाई खोजय ना देसवाह् रे पईठी
मजरीय जोगेह् दुलेरवा जे नाहि दखयनऽय
ना त गहर जागेह् अहीरवा र गराऽर
नउवाह् बमनह् ना दऽडियाह् बढि रे गइनी
खोजत खोजत ना दिनवाह् विति रे जानऽ
घूम केनि अयनह् ना देसवाह् र पवारो
जउन घरी आईय आगनवा म दुन्नो वइठय
पटकत वानह ना पाथियाह् लेइये आज
आजु कहँ मजरी के करमवा जे जरि रे गऽयनऽ
एन्ह नाही दुल्लर ना वरवाह् मिसें रे आज
एतनाह् कऽहीय ना देसवाह् लेइ रे ओठियन

आजु सुनु घरेह् ना रोदन होइ रे जाय
जवने घड़ी रोवइ ना धनवांह् लेइये महरी
पटकत वानींय धरतियाह् रे कपाऽरऽ
आजु भाई जीयावलि जोगावलि मोरि मऽञ्जरिया
दाना विना मरि जाई बीटियवाह् रे हमाऽरऽ
एतनेहू फिकिरिय में रोवति बाइ रे महरी
अउ फेरि ओहूय समइया क देखऽ रे हाल
ओही घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अब मचि गइलि रोवनि सुबड़वारी
सवा लाख रोवइं गोतिनियांह् महरे कऽ
सहजे में गईलि बीटियवा अव रे मऽरी
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
मम्माह् रोवत ना बानह् लेइ हो जातऽ
फेरि भाई जानह् चाननिया पर दोहराई
जाइ कनि पूछइं न बतियाह् अर रे थाई
भयनेह् काहे कहींय नह काये नाहीं
कुछ मोरे बूते कऽहलवा बा नाहीं जाऽतऽ
भयनेह् तोहरे जीनिगियाह् केनि रे कऽरने
आजु भाई तीनिय मूलुकवाह् सं रे साऽरऽ
घुमि केनि होइय गयल ना बांवरे डोलऽ
जोगे तोरे नाहींय ना बरवाह् लेइ रे मीलऽ
अब नाहीं वइठल ना तिलकठ रे तोहाऽरऽ
आजु कहीं सहजे में पऽरनवा जे चलि रे जइहइं
ता तूंह अन्नइ छोड़ल तूंह जल रे पान
एतना जे सहति ना धनवा जे वाइ रे मंजरी
मंजरी बोलति लरमवां क बाइ रे बोल
मम्माह् काहेह् कहींह नह् काये नाहीं
कुछु मोरे बूते कऽहलवा वा नाहीं रे जात
आजु भाई कहब ना बतिया लरमें से
अव फेरि जाईय या देसवा में छिति रे राई
एतनाह् जे सूनत नां मम्मवा जे बा सूबच्चन
गरवा में नउछी ना गिरनह् ना रे लपेट

मंजरी द्वारा अपने भावी पति लोरिक के सम्बन्ध में सूचना दिया जाना—ब्राह्मण, नाऊ तथा सुवच्चन का लोरिक के यहां तिलक ले जाना

जाइ के गोड धइलेह्, भयनवाह्, कइ रे बाने
अउ फेरि बोलत लऽरमवा क वाइ रे बोल
आजु कहँ भयनेह्, ना सुनिलह्, मोरि मजरिया
एठियन मनवेह्, बज्हनवा रे हमाऽर
आजु भाई तिलकठ ना आपन रे वतवते
काहे होति बानी हलकनियाह्, रे हमाऽर
तब फेरि बोलति ना धियवा वा महरे कऽ
जेकर भाई दावन मजरिया जे पडल रे नाव
मम्माह्, का एह्, चाहीय नह चाहे नाही
कुछ मारे घूतेह्, काहलवा वा नाहि रे जाऽत
आजु कहँ सुनहइ ना लोगवा जे एठियन कऽ
निनवाह्, करिहइ ना हमरउ रे वनाय
आजु कहँ मजरीय ना जनमल रे कल रे जुगही
आपन वर अपनेह्, ना देहलेसि रे वताय
एतना जे सूनत ना ममवा जे वा सुवच्चन
हाथ जोडि के वोलत भयनवा ना सेइ रे वाइ
आजु कहँ भयनेह्, ना सुनिलह्, मोरि मजरिया
एठियन मनवह्, काहनवाह्, रे हमाऽर
एठइत हमहीय जानव नह के तुहइ
दूसर केहुय ना उपरह देले वाय
एतना जो कहत ना वतियाह्, लेइ रे वानऽ
तब फेरि वोलति मऽजरिया जे लेइ रे वाय
अब कहे सुनवह्, ना मम्माह्, मोर सुवच्चन
धरनी पर टागल वा पुस्तक लेइ ये वानिल कय
अब आनि लेवह्, ना हमरेह्, आगे रे धर
ओहि घडि रेंगल ना भइया जे वाय सुवच्चन
जाइ केनि लेहलेह्, पुस्तपवा वा रे कवाऽर
ओहि घडि खोलत पागदवा जे वाय नीकालत
हपवा मे ले लइ कलमिया जे मसि रे हान
मजरीय लोखति ना अपवा विल रे गाई
पहिलेह्, उत्तर ना देसवा लिखय कबूतर
एक गांव लोखति गउरवा गुजरे रातऽ

अब कहँ मऽसूर ना लीखती बाइ कठइता
भसूर लीखत संवरूआ बाई रे माऽलऽ
ओहि घड़ी लीखई सरूपवा लोरिके कऽ
उहे भाई हवे सेनुरवा कइ रे वऽन्नऽ
अब जइसन रहल सरूपवा सवहिन कऽ
उय छापा रूह रूह ना देहले बाइ उतारी
जइसीय बाढ़इ वदनियां लोरिके कऽ
फोटवाह् देलेसि ना धनवा रे ऊतारी
आजु भाई देलेसि ना कागद मुरि रे हाई
उहे कागद पन्नित मोहनिया केनि रे हाऽथऽ
पन्नित लेइ लह् मोहनिया तुंव रे लाऽल
चल तनी उत्तर न देसवा तड़ि रे आई
ओहरउ होइहइं ना तिलकठ जउ रे लीखल
भयने के कइ देइं ना सदिया लेल रे कारी
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
ए भाई ओहूय समइयन कइये हाल
अब कहँ लिखिकह् ना पतियाह् धन मंजरिया
मम्माह् के हाथेंह ना देहलेह् वा टेकाऽ
आजु कहँ पातीय ना लेइकह् ओठियन से
धावन के देलेह् ना हथवांह् रे टेकाय
आजु कहँ रेंगल ना पन्नित रे मोहनियां
अब फेरि पीछेह् ना नउवाह् रे हजाम
आज तेकरे पीछेह् ना मुमवाह् वा सुवच्चन
उत्तर लेहलेनि रस्ताह् तड़ि रे आई
आजु भाई रातिय रेंगत वांय दिन रे दऊरत
कतनउ वदत ना०कुरवाह् रे मोकाम
तब कह दीनह् अठारहइ क वांय रे पंयड़ा
अब दिन नवयेह् गइलवा वा गोंइ रे ड़ाय
जवने घड़ी जूटल ना नागर बन गउरवा
चढ़ि गयन सेम्भू सागरवा के देख रे भेंट
आजु भाई पूछहं ना घरवा जे लोरिके कय
ओहि गाउं पनिघट ना गयनह् रे बईठि
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
गउरा के सहदेउ ना रजवां जे हवं रे अऽहीर
महदेउ बानह् बेटउनाह् लेइ रे आज

आजु भाई ऊहइ ना सुववाह् बाय……

चनवा द्वारा तिलक चढ़ाने वालों को वर्णनाया जाना

जवने घडी चलल तिलकवा बा ओठियन से
उय भाई गयल दुअरवाह् पर रे वा
आजु भाई रहलि ना धनवा जे बा चनइनी
सोरह सइ सहदेउ ना रजवा न पनि रे हार
आग आगे रेंगइ ना धधवाह् पनि रे हारिन
बिचवा मे चनाह ना चलियह् बाइ रे जात
जवने घडी परि गइल नजरिया जे चनवा कऽ
अब धिया बोलति लरमवाह कइ रे बोल
अब कहँ सुनयह् ना भइया तू दूर देसिया
बहताह् मनवह् ना एठियन रे हमाऽर
अब सोहार काहँह् ओतनवा जे हउरे गोतन
कहाँ पर टूटीय गईलिया वा बुनि रे याद
कहवा से कइल्लह् चढइयाह् लोधे एठियन
पूछत बाडह् लोरिकवा क तूय रे घऽर
आजु हमरे पीठिय ना भइया जे हव रे लोरिक
चलः हम घरवाह् ना देईं जे तोहै देखाइ
आगे आगे रेंगलि ना वेसवा बाइ चनइनी
पिछवाह् तीनि मूरतिया बाय हो जातऽ
जवने घडी रेंगल दुअरवा ओर रे जानऽ
चनवाह् घूमिकह् खीरिकिया हलि रे जालऽ
महदेउ भइयाह् भीतरिया बाइ रे वइठल
ओहि भाई देखह् ना हलिया रे हवाऽल
चनवाह् तेलइ फूलेलवा ओन्हे रे मीजय
सोनहुल देलाह् गाहनवा पहूँरे चाई
जवने घडी अढिय ना रथवा स रे जेऽन
उपरा से देलेन ना देहिया पहिरे राई
कन्हवा पर रेसमीय रूमलिया रखि रे देने
दुअरा पर देलेस ना महदेउ के रेंगाई
जउने घडी देखइ ना नउवा रे बभना
निवन्नल बानह् जेवनवा सर रे दाऽरऽ
सब केनि नीहूरि ना मथवा बाइ ओनावत
भरि मुख देवइ ना नउवा असिरे वाऽदऽ

भइया आवेह् अमरवा होइये रऽहऽ
अब तूं जीयह् ना लखवा रे बरीसऽ
आजु कहैं देसइ दूनियवांह् कइ रे अइल्या
तोह्रेह् घेवरेउ ना जंघियाह् रे सरीर
आजु कहैं तवनेह् ना दिनवांह् राम समइया
किह् फिर ओह्य समइयाह् कइ रे हाऽलऽ
अउ फेरि रेंगल ना ओठियन रे रेंगवलऽ
अब जूटल जानह् तारि''''''
ओकर भाई गयल सलमिया रे ओराई
तब फेरि देखह् ना हलियह् ओठियन कऽ
अब फेरि देखत ना पन्नित रे मोह्निया
जरि मरि भयल ना बेंड़वांह् रे खंगाऽरऽ
इय वीर का येह् जउ गाड़ल बांस अगोरी कऽ
की आइ गइहइं गउरवा गुजरे राऽत
का जाइ के छतियहं् वसवांह् रे अंगइहंऽ
मह्राह् क धेरियह् वियहिह्इं लेलरे कारी
आजु भाई हथवा में ना छेकनाह् रे उठउतऽ
जाइ केनि छेकतहं सूअरियाह् कइ आगाऽर
एतना जउ कहति ना धनवांह लेइये ओठियन
पन्नित मरलेह् मेहनवा वा वरि रे याऽर
उहवां से रेंगल ना नउवाह् रे वभनवा
अउ फेरि वानह् पन्नितवा जे जकरे रार
आजु कहैं दगियाह् ना लागे गांउ गउरवा
चूवत वानह् कोइलवाह् रे खंगार
आजु भाई वहूत ना ठगवा जे चोर रे वाऽनऽ
कइसन ठगत तिलकवा में हमरे रे वाय
ओहि घरि लोरिक क घरवा जे जाइ रे पूछत
अगवांह वानह् आदिमियाह् देखऽ रे ठाढ़
आजु भइया ऊहई लोरिकवा के वाइ घर लवकत
उपरां छन्नाह् पीपरवा में फरि रे आय
जिनकर छोटई घंघरवा वा पीतरिय कय
वाइ फेरि भीतर वानइ नह खंड रे हार
अब कहैं वायेंह दाहिनवा जे वाइ रे पीपर
दहिनेह् वानीयना दुरूगा क असरे थान
एतनाह् सगरउ ना बतियाह् वायं वतावत

लोरिक के द्वार पर तिलक चढ़ाने वालों का पहुँचना

तीनिउ रेंगलइ मूरतिया जे बान रे जात
एकदम रेंगल लोरिकवाह् घर रे गअनऽ
दुअरा से करत बानइ नह् रे पुकार
दुअरा से लोरिक ना लोरिक बाय पुकारत
बुढवाह् मारत हूमनिया जे फिरि रे बाय
आजु कहैं हो हो न दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् दा मअवाह् रे लीलार
आजु भइया कंहवाह् ओतनवाह् तोहरे गोतन
कहवा पर टूटीय गइलिया वा बुनि रे याद
कहवा से कइलह् चढइया जे दूरं देसिया
लोरिक लोरिक ना बाडह् ने रि रे यात
ओहि घडी बोलनह् ना पक्षित रे मोहनियां
दरियाह् करई ना लगनह् रे जवाब
आजु भइया अगोरी ओतनवा जे हंव गोतन
अगोरिया मे टूटीय गइलीया वा बुनि रे याद
अब हम कइलीय चढइया जे गउरा के
तीलक लेहलीय दुलेदवाह् रे तोहाऽर
ओहि घडी मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
अब फेरि बोलल न बुढवाह् वा कठइता
भइया बइठह् दुअरवाह् हो हमाऽरऽ
आजु कहं पानीय पञ्तरवाह सेइ रे पीयऽ
हमहू देहं लोरिकवइ तांहे देखाई
ओही घडी नउवाह् बामनवाह् बोल रे लागे
भइयाह् नाहि ना पनिया जे अस रे पियवऽ
गउरा मे बहूत बानह् ना ठग रे चोरऽ
आजु भाइ लोरिक ना दूसर रे देखावऽ
अब नाही मानीय जोनिगियाह् रे हमाऽरऽ
ओहि घडी मूनह् ना हलिया ने बूढ मठइत के
गगियाह् नउवाह् के बानह् नरि रे यात
जउने घडी परल सबदिया जे गागी नउवा
उय भाई दवरल दुअरवा जे भइन रे ठाढ़
ओहि घडी बोलल ना बुढवा जे मटइवा
नउवाह् मनवेह् कऽहनमाह् रे हमाऽर
बेटवाह् गयल अपढ़वाह् मे देगुरं बाऽनऽ

हथवा में लेइलेह्, ना मलवा में तेल रे हाथें
बेटवाह् के वहरेह्, ना तेलवाह् रे लगाये
रुखर मूखर बेटवना जे वाड़ हमार
ओहि घड़ी गूनह् ना हलिया जे गंगिया कय
अहे माई ले लेसि न मलवाह् रे उठाइ
मलवा में तेलइ भरलवा जे एक हाथ लेहलेसि
रेंगल जालाह् अखड़वाह् केनि रे बीच
ओहि घड़ी परि गइल नजरिया जे लोरिके कय
लोरिका दांतन अंगुरिया जे बान चबात
आजु कहें हो हो ना दिनवांह् मोर नारायन
का वरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् रे लीलार
आजु बाबू एतनाह् ना दिनवां जे बीति रे गयल
नउवा नाहीं देखलसि अखड़वाह् हमारऽर
घरवा पर कवनि मोसीबति परि रे गइलीं
नउवाह् दवरल न आवत बान हमाऽर
ओही घड़ी जुटल ना संघवाह् लेइ रे बाऽनऽ
जाइ केनि बोलत लरमवा कऽ बान रे बोल
ओही घड़ी मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
उहे माई ओहू समइया कइ रे हाऽल
लोरिकाह् नीकलि अखड़वाह् से भयल रे ठाढ़ऽ
नउवा देलेसि ना सगरउ बात मुनाई
अब कहें लोरिक ना भइयाह् सुन हो आजऽ
कभकाह् मालेनि कठइता तोहार वलावयऽ
तीलक आयल दुअरवाह् पर हो बानऽ
ओहि घड़ी रेंगल न मलवाह् वा लोरिकाऽ
पीछे-पीछे रेंगल ना नउवाह् जाय हजाऽमऽ
नउवाह् मोलाह् में तेलवाह् बोरि रे लेलाऽ
पीठिया पर ठोकत लोरिकवाह् केनि रे बाऽनऽ
ऊलटि ताकइ अहीरवाह् कइ रे पूतऽ
अब कहें वाउर ना नउवा वउ रे रइले
तब तो हरि गईलि ना मतिया रे गियाऽनऽ
गंगियाह् खिचि कइ मूसुकवा मारि रे देवऽय
तोर झरि जइहइं बतीसवां देखु रे दांऽतऽ
आजु मोरे देहंह् भोगिया हउ रे धूरऽ
कहें तोहें देह लेह ना तेलवा रे चुवाई

तब फेरि बोलल ना गंगिया बाइ हजाऽमऽ
मालिक मुनवह् ना लोरिक रे हमाऽरऽ
आजु बइठल ना दुअरवा पर दूरं देसिया
तोहइं रूखर ना भूखरइँ देखिहइँ दुअरा
कइसे होइहइं ना काजवा रे विवाऽहऽ
ओहि दिन बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
आजु भाई मनवेह् काहनवाह् रे हमाऽर
जेकरे सातइ ना दवंवा जे लेइ रे गऽरज
ओकरेह् होइहइं कपरवा पर नेरि रे यात
उहे भाई झंखइ ना मरिहइ आइ रे गउरा
अब फेरि पुजहइं ना पउयाह् रे हमाऽर
जउने घडी रेंगल अहीरवाह् रे रेंगावल
अब चलि गयल भीतरियाह् मय रे दाऽन
जाइकेनि बइठल आगनवाह मेनि रे बाऽनऽ
दुअरा पर बइठल बानह् ना दूरन् देसिया
दोहरी वहारइ ना सुनिलह् एकर मतलब
अब फेरि देलेसि ना हुकुम रे लगाई
आजु भइया आयल दुअरवा पर महि रे माऽनऽ
उहे भाई निकलल अहीरवा रे रेंगवलस
जाइ कनि निकलल दुअरवा पर बाइ रे ठाढऽ
पन्नित लेइ लेइ कगदवा जे हथवा मे
जइसइ देखइ ना छपवा जे कगदे मे
ओइसइ सनमुख लोरिकवाह् रे देखाऽनऽ
ओहि घडी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
जाइ के फेरि नीहुरि ना मथवा बाइ नेवरले
पन्नित भरिमुख देतइ था असि रे बाऽदऽ
आजु लोरिक आवेह् अमरवा होइ रे रहवऽ
अब तू जीयह् न लखवाह् रे बरीसऽ
जइसेह् बाढइ ना पनिया जमुनी कऽ
ओइसइ बाढइ ना अइया हो तोहाऽर
ओहि दिन सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
तिलक आयल ना दुअरा बाइ तोहाऽरऽ
तब फेरि बोलल ना भइयाह् बाइ लोरिकवा
अबहोय कइसेह् तिलकठवा जे मोर रे बाय

आजु हम जोड़ह् ना भइयाह् बाइ रे एठियत
धरमीय जेठह् ना बोहवा में मोर रे बाय
जब हम धरमीय ना भइया के करब रे सदिया
पिछवांह् सादीय ना होइहइं रे हम्मार
आजु कहैं तवनेह् ना दिनवांह राम समइया
बोहह् देलेनि ना गंगिया के दवरे राई
संवरू क होतइ ना बानह् रे बलावा
तब तक सूनह् ना हलियाह् सहदेव कऽ
चनवाह् के नाऊ बभनवाह् भेज रे वउले
लोरिका के संघेह् ना करई के विवाह
अब फेरि अपने ना बुधिया से वायं रे राखत
आजु हम चनवा के वीयहि देइं लोरिके के
जवन भाई अगोरी के तिलकवा जे लेइ रे आयल बा
झंख मारि हमरेह् बेटवना के देइ चढ़ाई
एहि फेरि देलेनि ना तीलक भेज रे वाई
दुदुय बानह् तिलकहरू टेय रे टीकल
तब सेनि दुदुय बेटवनाह् अहीरे कऽ
ऊहे भाई लेहलेन ना ऊहइ बल रे वाई
तब फेरि बोलल ना बाड़इ बूढ़ कठइता
बेटवाह् मनवह् संवरूवा हो हमाऽर
आजु हमरे दुइय बेटवना देख रे बाड़ऽ
दुन्नो संघे ना कइ देईं हम विवाहऽ
आजु कहैं एकइ खरचवा केनि रे लगले
दुन्नोह् जइहंइ ना सदिया रे निपटी
तब फेरि बोलल न मलवा बाइ रे धरमी
सांवर बोलल ना बतिया अर रे थाई
आजु भाई सुनबह् बाबिलवा रे हमाऽर
अबहिन करब ना सदिया हमरे आऽपन
जबसे हमें लछमीय हुकुमिया नाहि रे देइहंऽ
तबसेन करब ना कजवा रे विवाऽहऽ
एतनाह् बाड़ई परनवा संवरू कऽयऽ
आजु भाई बोलल धरमिया दोह रे राई
आजु भाई अगोरी कऽ तीलकवा जवन रे बाऽड़ऽ
हमरेह् लोरिक दुलेरूवा के चढ़ि रे जाऽला
आजु कहैं चनवा क तिऽलकवा फेर रे वइवऽ

तीलक चलि जाइ न सहदेव दर रे बाऽरऽ
आजु भाइ करव बीवाहवा न हमरे गउवा
दिनवाह् दिन धइ होइय रे चल रे काऽनऽ
चदनों घडी खातिर आपदवा होइ रे जइहऽ
सेल्हियाह् घगिहइ दुवरवा रे हमाऽर
ओहि दिन मारव भूवनवा जे होइ रे जइहऽ
एतना तं मनवह् काहनवा जे देख हमाऽर

लोरिक का तिलक सम्पन्न—सवा लाख बारातियों का अगोरी के लिए प्रस्थान करना

अब घूमऽल तिलकवा वा सेल्हिया कऽ
तीलक बइठल अगोरियाह् धइ र याऽनऽ
तब फेनि बोलल ना मलवाह् बाडऽरे सावर
कथकाह् मनवह् चाहनवाह् रे हमाऽरऽ
अवहीय भइयाह् लोरिकवा क करऽ रे सादी
चलि के नगर अगोरियाह् दइ रे पाऽनऽ
जबने घडी ठीयल तिलकवा वा सहदेव कऽ
चलि गयल लडकेह् ना विलवाह् भवरे नाऽर
जब फेरि वचल तीलकवा वा अगोरीय कऽ
उध भाई बइठल अगनवा म रहि रे आऽनऽ
ओनचेह् दीनइ मोकमवाह् बान रे देखऽल
पसरा मे बाचइ ना अववाह् बिर रे गाई
आजु घहै नीनह् ना दिनवाह् परत वाइ सुक रे बाऽरऽ
जातराह् पऽहहुति सइतियाह् लेइ रे बानी
दधिनेह् चलीय मुनुषयाह् स रे साऽरऽ
सदियाह् मगर ना दिनवाह दखिन रे चलिहऽ
देसवा मे हाइहड नीहलवा रे वजाई
ओऊ भाई देहलनि सइतियाह् रे सुनाई
ओहि घडी बारह् बरदवा रे सोपाऽरी
सारिखा लेलेह् बऽजरियाँ बाइ रे जाऽत
जाइ मेनि बसलेसि बरदली रे सोपाऽरी
उध भाई ले लेह् गिरिहिपो चलि रे अयऽनऽ
चादिय छटवलि दुअरवा पर रे बाने
ओहि घडी बानह् ना चोहवा मे चलि रे *गऽयऽल*
छरि भरि लेहलन परइवा रे जेवाऽनय

आजु भाई चउविस जेवनवा रे बनाई कऽ
कांखि तरे देहलनि ना जोरवा दव रे वाई
जोड़वन क मोहड़ाह् न खोलिया वांय ओघारी
नेवताह् वांटत सोपरिया वान रे जाऽतऽ

गउरा भी बारह पल्लियों का है

आज कहें वारह ना पलियाह् वा गउरवा
कसमसि कऽसीय वानइ नाह् रे वऽजार
आजु भाई सवकेह् नेवतवा जे बायं रे वांटत
तीलक चढ़त दुअरवाह पर रे वाऽय
आजु भाई आजुय न दीनवा जे बीति रे जइहइं
बिहनाह् दीनई वारिय ना सुक रे वाऽर
ओहि दिन चढ़िहइं तिलकवा जे लोरिके कऽ
मंगर के दक्खिन वऽरतिया जे रेंगि रे दे
जउनेह् ना दिनवांह् राम समइयां,
के फेरि ओहू समइयाह् कइ रे हाऽलऽ
जउने घड़ी बिहनह् न भयनऽह् रे भूरूहर
पूरवई देहले कउववाह् वान रे रोरऽ
ओहि घरी ऊठल ना बुढ़वाह् वाइ कऽठइता
दुअरा पर देलेसि जाजिमवाहं् गिर रे वाई
आजु ठाढ़ दलइ वा दरवा वा कर रे वाऽयऽ
झम्पुर लेतई ना गेसिया रे बनाऽईऽ
ऊहे भाई कइलेसि ना दुअराह् अज रे राऽर
जउ धीरे धीरे जूटई नेवतहरू जे लेइ हो लगऽनंऽ
ओहि घरी दूरी से दूलेरुयाह् दर रे वाऽरऽ
ओही घरी वटि गयल नेवताह् जेनही के
सब जाति जूटत वानय नाह् पर रे जाऽत
दुअरा जलसा ना होत वाह् अहीरे के
अऊ फेरि नाचीय ना कंचियाह् रे मंगाऽवंयं
भंड़वाह् तोरइं चिट्ठुकियाह् पर रे ताऽलऽ
ओहि घड़ी चाढ़त तिलकवा वा सूववा कय
लोरिके के चढ़त तिलकवाह् लेइये वाऽनऽ
आजु कहें थानह् पऽगरिया रे दियाऽवऽ
सोनवाह् चढ़ई करधनियांह् रे पिटाड़ा
ऊय भाई धइ गयल नरियरवाह् लेइये चुंदर

अहीरे से चढ़ि गयल तिलकवा ओहि रे दम्मऽ
पतिया मे लीपल ना बानहू लेइसे आऽजऽ
तीलक सगेहू बरतियाहू चलि रे थइहइं
हमरेहू नगर अगोरियाहू दई रे पाऽनऽ

चनवा के पिता सहदेव द्वारा विघ्न उपस्थित किया जाना

अउ भाई साजलि बरतिया बा ओठियन से (११८०)
दुअराहू भयल बानहू नह लेइ रे ठाढ
तब तक सूनहू ना हलिया जे रजवा कय
सहदेउ राजाहू रूठलवा जे रुह ले बाय
ओहि घडी डाटस न आवत बान दरेरत
अउ फेरि बोलत ना रेहवा जे बान तूकार
अब सारे सुनवहू परजवा जे हमरे गउरा
गउरा के सुनिलहू परजवाहू रे हमाऽर
जिनि भाई जावहू बारातिया जे लोरिके के
बाल बच्चा देवई कोल्हुइया मे पेर रे बाइ
एतनाहू सूनई पारजवा जे गउरा कऽय (११९०)
ऊय भाई डगमग सरीरवा जे होइ रे जाय
बेहूय पानीय वहनवा जे घर रे भऽगनऽ
बेहूय ओढ़ना के बहनवा जे चलि रे जाय
बेतनाहू दीसाहू मयदनवाहू के जानऽ बऽहनवा
बेरवून भरि जाइ दुअरवा जे मय रे बाऽज
ओहि घडी थोडाहू ना अदमी जे रहि रे गऽयऽन
जउन भाई रहनहू ना बजवा के बज रे लेय
एक ठेनि बंचल ना गुरूआ जे बाइ अजइया
एकठेनि बचल धरमिया जे बाइ रे भाय
एक ठेनि बुढ़वाहू कठहताहू लेई रे बाऽलऽ (१२००)
एक ठेनि दुल्लर दूलेरवा जे बाइ देवाऽत
ओहि दिन सूनहू ना हलिया जे ओठियन कय
अब फेरि दुल्लर रोवतवा जे लेइ रे बाय
अब घईं हो हो ना इइवा जे मोर नारायन
का बरम्हा लिघलहू ना मड़वाहू रे सीलार
आजु घईं सादीय बिवहवा जे छप्पर फारय
ई का होलइ पंयडवाहू कइ रे राहू
पइमन घइयड़ि ना होनियाहू बाइ रे पहिले

अवहीं जाइके दूरन देस लेइ रे बाई
अब कइसन गड़बड़ पहिलवां जे होइ रे गयलीं
कुछु मोरे बूते काहलवा वा नाहि रे जात
ओहि दिन बोलल ना बुढ़वा वाइ कठईता
दरियइं करईं ना बेड़वां हो जबाऽबऽ
आजु कहैं सुनवेह् बेटवना जे मोर रे लोरिका
एठियन ते मनबेह् काहनवाहं रे हमाऽर
बेटवा तें संचेह पलकिया में बइठल रऽहऽ
अब देखि लेबेह ना बुढ़वा क मनु रे सा इ
ओहि घड़ी लेलेसि छेकनवा जे हांथवा में
अब फेरि रेंगल खऽरकवा पर चलि रे जात
जाइ केनि तिन सई ना सठिया बा चर रे वाऽहऽइ
ऊहे फेरि ले लेह् ना संगवा जे बान ले आय
अब कहैं ले लेह् ना चलि गयन करत बजरियाँ
सब केनि कीनत सामनियां जे लेइ रे बाइ
आजु कहैं एक्कई ना चालवाह् उर्दि फरेसिया
एक्कइ चालइ सीयवले बा पत रे लोक
एक्कइ सारइ ना बूटवा जे गोड़वा कय
एक चाल देलेह पगरिया जे लेइ रे बाय
जउने घरी पहीर ना ओढ़ि के तइये यारय
जइसे भाई जालइं तिलंगवन कइ रे गोल
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
अब फेरि रेंगल ना एठियन रे रेंगवलन
अब चलि गयल ना घरवांह् रे दुआऽर
ओहि घरी ऊठई पालकिया जे लोरिके कऽ
अउ धइ लेलह् डहरियाह् ओहि रे दम्मऽ
लोरिकाह् ऊधमध बाजनवा बा बजरे व उतयऽ
अब दक्खिन रेंगल दिहतिया में चलि रे जाऽनऽ
तब फेरि बोलंय ना रनियांह् बाइ ये सेल्हिया
राजाह् सहदेउ ना सुनबह् हो हमाऽरऽ
अब तोहार अकसर परजवा जे निकलल जातइ बा
अब फेरि जालह् दूर न वाह् बाइ रे देसऽ
जात भाई जातइ बंदूहवां जूझि रे जइहंऽ
दिनवांह् दिनकइ झगड़वाह् टुटि रे जइहंऽय
नहि जउ सादीय बिबहवाह् कइये लेइ हंऽय

लोरिकाह् लउटीय गउरवाह् गुजरे राउत
उहे भाई नेईय ना देइहईं खुद रे वाई
सरसऊ राई ना देइहईं छिट रे वाई
एतना वहत ना वतियाह् ओहि रे दम्मऽ
सब के नि देलेह् हुकुमियाह् लेई रे वाने
आजु कहैं मुनयह् ना रजवा मोर रे सहदेव
आज तुव पाचइ रूपियवा हाथवा मे लेइ कऽ
अपने तू हलि जाह् गउरवाह् लेइये गाव
जउन तोहार हवह ना जतिया कइ चउधरी
उनके तू देवह् ना हडवा हाथ से दे दे
हाथ जोरि के करवह् वीनितिया लेइ रे आऽज
देव भाई राजीय करजवा तुह रे हऽवऽ
जतिया क राजाह् चऽउधरी हव तोहाऽरऽ
तवई कहई ना देइहइ रे नीवाली
अहीरे के जाईय सोभई ना वरि रे याऽतइ
एतना जव पहत ना ओठियन लेई रे बाऽनऽ
ओहि दिन सजल बरतिया बा अहीरे कऽ
अय फेरि देनह् दूअरवाह् बइरे ठाई
सब फोई खानह् पीयनवाह् होइ रे गऽ्यनऽ
परिछन होइय गईल बा तई रे याऽरऽ
अब घई ले लई रहतवा जे दखिने कय
रानीय झयति ना ओठियन लेइ रे वानी
मूयाह् जाइ के दोहइयाह् धान रे देतऽ
चउधरीय सुनवह् मलिववाह् रे हमाऽरऽ
जेतनाह् रोवल परजवाह् जे बान हमाऽरऽ
सगेह् चलि जा करइ नाह् वरि रे याऽव
हुकुम देलेह् ना बानह् रे लगाऽई
पऽच रूपिया देलेनि ना हडवाह् चउधुरी के
ऊहे भाई रँगल सवरावा बा वरि रे याऽत
ओहि दिन रातिय रँगत वा दिन रे दऊरऽव
चतहीं वऽदत ना कुरवाह् रे मोकाम
आजु भाई भारीय सीवनवाह् परि रे गयऽनऽ
जहवाह् टपाह् परलवाह् मय रे दाऽनऽ
ओहि फेरि ठाढ़िय वरतिया जे सब रे महली
लोरिकाह् नीवल पऽलविया से बान रे ठाऽढ़

दस बीस नीकलि जेवनवा जे अब रे वहरे
गनतीय एक ओर से लेवह् रे चढ़ाई
केतनाह् बानीय वरतियाह् रे हमाऽर
ओहि घड़ी देखह् ना हलियाह् ओठियन कय
अउ फेरि गन्तीय मऽरदवा जे बा लगावऽत
गञनत गञनत टोटरवा जे लेइ मीलाई
ओहि घड़ी एकइ ना दरवंह् जू मीले कइ
अंकवाह् वानह् ना लीखत बिल रे गाई
आजु सवा लाखइ वऽरतिया बा अहीरे कय
निकललि जाति बाह् गउरवा जे छोड़ि रे गाँव
आजु कहँ जातिय वरतिया जे बाइ अगोरियां
अउ फेरि सोनई भदरवा जे ओहि रे पाऽर
कहँ तवनेह दिनवांह् राम समइयां
अब फेरि रेंगलि वरतिया बा अहीरे कय
लकड़ीय बाजत बा बजवाह् अन रे हद्दइ
आजु कहँ रातिय रेंगत बा दिन रे दउरऽत
कतों दिन बऽदत ना कूरवा रे मोकाऽम
एकदम धइलेनि दऽखिनवांह् कइ रे राऽहऽ
उहे भाई दखिनी मुलुकवाह् तड़ि रे यावऽइ
अब चलि अयनह् ना कोटवाह् रे भदोखा
ओहि दिन बोलल लोरिकवाह् पुनि रे बाञनऽ
आजु कहँ कत्रकाह् ना सुनिलऽ मोर कठइता
एठियन मनवेह् कहनवांह् रे हमाऽर
जेतनाह् बानह् धोरइया बोहवा कऽय
उह भाई वाड़ेह् सवेरवा कइ खवइया
अब फेरि खानह् ना डिलडिलिया दूधवा कऽय
आजु भाई वाड़ेह् सबेरवा कइये जूनऽ
तेनि केनि दू दुय ना दिनवा रे बीतल
ओन्हें अन्नई मीलल ना जल रे पानी
अब कइका देइदऽ परोठवा जे एहि रे कोटवां
सवा लाख लाइ लेइ वरतिया जे देखऽ हमाऽर
आजू कहँ खाईय ना पीअइ जे सम रे तूलऽ

कोली घाट पर बारात का उतरना

अब चलि के-ऊतरल कोलियवा के देख रे घाट
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ

बड़ बीम नीकलि केवनवा जे अब रे वहरे
गन्तीय एक ओर से नेवह् रे चढ़ाई
केवनाह् बानीय बरतियाह् रे हमाऽर
ओहि घड़ी देखह् ना हलियाह् ओठियन कय
अब फेरि गन्तीय मऽरदवा जे वा लगावऽत
गऽनत गऽनत टोटरवा जे लेइ मीलाई
ओहि घड़ी एकइ ना दरवंह् जू मीले कइ
केकवाह् बानह् ना लीखत बिल रे गाई
आजु सबा लाखइ बऽरतिया वा अहीरे कय
निकलनि जाति बाह् गऽरवा जे छोड़ि रे गाँव
आजु कहँ जानिय बरतिया जे बाइ अगोरियां
अब फेरि सोनई भदरवा जे ओहि रे पाऽर
कहँ तवनह् दिनवांह् राम समइयां
अब फेरि रेंगलि बरतिया वा अहीरे कय
लकड़ीय बाजत वा बजवाह् अन रे हहइ
आजु कहँ रातिय रेंगत वा दिन रे दउरऽत
कतों दिन बऽदत ना कूरवा रे मोकाऽम
एकदम धइलेनि दऽखिनवांह् कइ रे राऽहऽ
उहे भाई दखिनी मुलुकवाह् तढ़ि रे यावऽइ
अब चलि अयनह् ना कोटवाह् रे भदांखा
ओहि दिन बोलल लोरिकवाह् पुनि रे बाऽनऽ
आजु कहँ कबकाह् ना सुनिलऽ मोर कठइता
एठियन मनबेह् कहनवांह् रे हमाऽर
जेतनाह् बानह् धोरइया बोहवा कऽय
उहे भाई बाढ़ेह् सबेरवा कइ खवइया
अब फेरि खानह् ना ढिलढिलिया दूधवा कऽय
आजु भाई बाढ़ेह् सबेरवा कइये जूनऽ
तेनि केनि दू दुय ना दिनवा रे बीतल
ओन्हें अन्नई गीलल ना जल रे पानी
अब फठका देखदऽ परांठवा जे एहि रे कोटवां
राबा लाख लाट नेद बरतिया जे देखऽ हमाऽर
आजु कहँ खाईय ना पीअइ जे राग रे तूलऽ

कोली घाट पर बारात का उतरना

अब चलि गै उतरल कोलियवा के देख रे घाट
ओहि घड़ी सुनह् ना हलियाह् ओठियन कइ

ओहि दाँव कोटवाह् भदोखरी के लेइ रे वाऽत
तव फेनि लादलि वरतिया जे अहीरे कऽ
रऽसदि लादलि वरदवा पर वानि रे जाती
अव जूटि गइल रऽसधिया वा अहीरे कय
वायाह् दस वीस ना गयनह् रे वईठी
सव केनि देनह् रऽसधिया रे तऊली
जेतनाह् रइनह् ना जतियाह् पर रे जाऽत
आजु कहँ वचि गयल अहिराह् रे गुअरवा
आजु यूढा मारत हूमनिया जे देख रे वाप
आजु भाई एतनेह् मऽरदवन कइ रे खाई
के फेरि जइहइ रसोइह् रे वनाइ
घहतत गउवाह् ना कोटवा मे चलि रे जाई
हमहूँयँ खोजित ना जतियाह् अपने पात
ओनकेह् भेज देइत रसधिया लेइये घरवा
ठटि घेनि कइय देतीय नह जेवरेनार
ठटि केनि कइ लेइ भाजनवा जे मार वरतिया
तव फेरि चलीय अगोरिया जे दइ रे पाऽल
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
केह् फेरि ओहूय समझ्याह् कइ रे हाऽल
उहवां से रेगलि वरतिया वा अहीरे कय
आपन आपन भोजनवाह् कई रे खाई
जाइ फेनि चाम्रइ ना विरमा जे लेइये ओठियन
घूचइ लगनह् मगहिया ढोलि रे पाऽनऽ
आज जेतनाह् वचि गयें अहीरवाह् रे गुवाऽल
उप भाई वानह् जाजिमवा पर पट पटाऽवय
तव तक रामइ रसोइया केनि रे ठाऽरऽ
अव फेरि रेगल ना वूढ़वा वाइ रे जाऽतऽ
अव हलि गयल ककोटवा लेइ रे गाँऽवऽ
जाइ केनि खोजत वाडइ ना अहिरे राना
दसवीस वानह् ना घरवा गोपि गुआ लऽ
ऊप भाई गयनह् ना ऊहइ कवि रे होई
ओनवर रामइ रसोइया वे वइरे याऽरऽ
पठइत पुछि वह् ना सवटल वाइ रे जाऽतय
जाइ के सदि देलाह् वरदवा ओठियन से
ऊहे भाई रसदि दूअरवा पर गिरि रे जाला

आजु भाई खातइ ना अहिरा लेइये ओठियन
अब फेरि बइठल मेंड़रिया के वान रे वात
आज कहैं कसविन पातुरिया जे बाइं रे ठूरत
भड़ंवाह् तोरत चिटुकिया पर वान रे तान
सूनह् ना हलिया ओठियन कय
अब फेरि भईलि रसोइयां बा तइरे याऽर
लड़िकाह् देलेनि ना इहवां से दव रे राई
उय लड़िका रेंगल वरतिया में चलि रे गयऽनऽ
जाइ केनि हाथइ ना जोरिया क भल रे ठाऽढ़ऽ
पंचह् सुनिलह् ना जतियाह् रे हमाऽरऽ
जेतनाह् होवह् ना गोपियाह् मोर गुआऽलऽ
पंचह् बीजई भईलि वाह् तइरे याऽरऽ
ओहि घड़ी गईलि ना गोलिया खड़भड़ाई
केनहुय नरखह ना धोतियाह् वा संकेलत
केनहू क उतरत वाचनवांह् देख रे बाऽनऽ
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया कठईत कऽय
अव बूढ़ मारत हूमनियां देख रे बाऽनऽ
कऽय लड़िका गयलंह् तोहन ना खर भराई
अउ कहैं दूरन ना देसवा बाई अगोरिया
अब हीं परदेसइ गउरवा बाइ रे घऽरऽ
का जानीं नूनइ ना खरवा बाई रे सेवय
अव कइसे होइहंइ नीमकवा कइ रे ख्याऽलऽय
आजु कहैं देखल ना पनियां पत रे नहिनीं
जउने घड़ी लागिय पियसिया पयंड़े में
पानी बिना आलर पऽरनवा चलि रे जाऽनऽ
लड़िकाह् हमइं तियनवा जे चीखइ देवह्
तव जाइके कऽरह् ठहरिया पर जेवरेनार
उहवां से रेंगल ना बुढ़वा जे बाइ कठईता
आज बूढ़ऽ मारत हूमनिया वा चलि रे जात
आजु कहैं जाइ कह् भोजनवांह् किह् रे गइऽनऽ
लोटाह् धयल दुअरियाह् पर रे वाय
आज बूढ़ जोड़इ ना हथवा जे धोइये लेहलेन
कठइत रेंगल ठहरिया पर देख रे जाय
जाइके वूढ़ा बइठल ना पिढ़वाह् पर रे बाऽनऽ
अब फेरि सुनह् भीतरियाह् कइ रे हाऽल

आजु भाई सेनुर काजरवा जे अहिरी पहीर ले
टठिया परोसलेह् ना वूढवाह् ओर रे जाय
जउने घडी नीहुरि टाटठिया जे वाई रे घऽरत
अब वूढ कई परलि नजरिया जे देखऽ बाय
वूढवाह् बायेह् ना लतवा ज मारे थऽरियवा
अब वूढ़ गयल ना ओनहूँ पर लपरे टाप्य
आजु भाई घइ कह् सापेटवाह् रे गिरावइ
आपन ऊनरि गयलवा बा ओहि रे पाउर
उहवा से भागल ना वुढवा जे धाई कठईंता
अब हल्ला कइलेनि गुवालेनि ओहि रे दाम
आजु कहँ सूनह् ना सुबवाजे वाम रे देवाउ
एठियन मनवह् काहनवाह् रे हमाउर

राजा वामदेव और लोरिक की लड़ाई

ओहि दिन सूनह् ना हनिया जे ओठियन कच
अउ फेरि ओहूय समइया क देख रे हाज्न
जब सूनह् ना हलियाह् कठईत कज्य
उहै धूढ नीकल जाजिमवाह् पर रे अइनऽ
तब तक मारून डकवा जे वाजि रे गइनऽ
लवडीय बोलल ना ओठियन रे गोहाउरऽ
ओहि घडी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
जवन भाई सुबाह वानइ ना कोटवा कज्य
अब वामदेवह् ना रजवाह् लेइये ओठियन
उप भाई बयठल ना वानह् लेइये चऽननी
उप भाई गउयल गुवलवन कइ सवाऽलय
आजु कहँ राजाह् ना सुनिलह् तू वम देवा
एठियन मनबह् काहनवाह् रे हमाउर
एकतह् तूहई जवरवा जे मूवा रे रहऽनऽ
तोहरे से आवर न दसवा मे नाहि रे कोय
का जानी काहा के जव्वरवा जे आइ कऽ टीऽकल
हमरउ वनि कह् ना गोपियाह् रे गुवाऽल
सरने रसधिया हीरवा जे भेंज रे धउलेनि
अब फेरि रेलीय रसोइया जे बन रे वाइ
उहे भाई रानइ रसोइया जे नहि रे खइनेनि
ईजति कइलेनि ना एठियन रे हमाउर

आजु राजा हमरीय ईजतिया जे नाहिं रे गईली
सुबवाह् गईलि ईजतिया जे देखऽ तोहाऽरऽ
एतना जे सूनइं ना रजवाह् बम रे देवा
रन पर देहलनि लाकुड़िया जे ठोक रे वाय
ओहि घड़ी सूनह् न हलियाह् ओठियन कय
फउदि साजल ना ओठियन सेनि रे जाला
आजु कहै बइठल जाजिमवांह् पर रे सांवर
एक ओरि बइठल ना बानह् ए लोरिकवा
बिचवां में बइठल ना बुढ़वाह् बा कठइता
उह भाई बोलत लोरिकवाह देख रे बाऽनऽ
आजु कहै भइयाह् ना सुनिलह् बीर रे सांवर
एठियन तूं मनबह काहनवांह् रे हमाऽर
जहाँ जहाँ ककवाह् ना जइहइं रे कठइता
तेहं तेहं देइहइं झऽगड़वाह् मच रे वाई
जेकरह् जांघेह् ना बलवाह् कहं रे रहिहंऽइ
केकरेह् भूजाह् रहीय ना बउ रे साई
कइसेह् देबई झागड़वाह् बर रे काऽई
एतना जे कहत अहीरवा जे बाई रे लोरिकाऽ
बुढ़वाह् जरि मरि ना भयनहं रे खंगार
आजु कहैं बाउर बेटवना से बउरे रइले
हरि तोरि गईलि ना मतियाह् रे गियाऽन
बेटवा तू बइठल जाजिमवा पर रहले लोरिका
एठियन देखिलह् ना बुढ़वा क मनु रे साई
बुढ़वा लेइ कह् छेकनवा जे बाड़ऽ रे डांकऽय
ओहि घड़ी तड़कल बयालीस जाला रे हांथ
ओहि घड़ी बोलल ना मलवां जे वानऽ रे सांवर
दरियांह् करई ना बेड़वांह् रे जऽबाब
आजु कहैं भइयाह् ना सुनि लेह् बीर रे लोरिका
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
जेकर भाई दू दूय ठे ललवा जे वाड़ी रे बईठल
जेकर पिता ठूरत ना खेतवा जे मेनि रे बाय
कतहूं जो खालेह् ना गोड़वांह् ऊँच रे परिहइं
कक्काह् देइहइं ना मथवा रे गोंवाइ
ओहि घड़ी धीरिक जोनिगिया जे होइ रे जइहइं
आजु डूबि जाईय वंसवा क देख रे ओर

एतना जे कहत ना अहीरा जे बीर रे बानऽ
तब फेरि सूनहू ना आठियन बनि रे हाऽल
ओह घरी कवनेहू ना दिनवाहू राम समइया
अहिराह बोलत लऽरमियाहू कइ रे बोऽलऽ
लोरिके के गयल ना मनवाहू रे बईठी
सावइ बूढई ना बखवा जे गिरि रे जइहइ
हसीय होइहइ बारतियाहू रे हमाऽरऽ
जब्बर भाई दुद्धुय ठे ललवा जे बाडि रे बईठल
अब हुरपूरत ना युडवा ज टेक रे बाऽनऽ
एतनहू कहि कहू ना ओठियन विर रे लोरिकाऽ
अय फेरि गऽयल ना बक्सेहू केनि रे पाऽसय
जाइकेनि जामहू जोरवा बाइ नीकालऽत
अब अपन देहे के घइले बा दुल रे हाई
उहे भाई धइलेस दुलहइया देहिया कऽय
जाइ केनि खोल्हत बाक्सवा अपने बाऽनऽ
ओहि घडी अगवाहू ना पहिरत बाइ अगरऽखा
गोड़वा में गूलइ वऽदनियाहू रे तमाऽय
आजु कहँ तरखुस ना गुजवा वा पऽनही कऽय
ऊहे बीर चावइ ना एडवई रे चढाऽइ
आजु भाई साठिय न गजवा ध बाइ दुपऽट्टा
उहे बीर बान्हत ना पेटियाहू रे सम्हाऽर
आजु कहै धारइ ना पगिया जे लऽरमे कय
जवने भाई मथहू डवल्या ज घह रे राऽय
आजु कहँ छप्पन ना छूरिया जे पवन कटारी
अहिर के दूबलि बऽगलिया में तर रे वार
आजु कहै बायेंहू ना हथवा जे लेइ ओढनिया
दहिनहू हायेंहू बीजुलिया वा तर रे बाऽर
जबन घडी मरगस ना मरगस बीर रे रेंगनऽ
जइसे भाई दोमति हुथिनिया वा चलि रे जात
सूनहू ना हलिया आठियन कय
अब फेरि छँरलेहू फउदियाहू बाइ र जाती
अहीरा नीमलि दहरवहू भयन रे ठाडऽय
आपन छोडि साबलवाहू बरि रे मातऽ
जवने घडी चारिय नाँ कोनवाहू घारि रे घोवाऽ
अब फेरि रहनहू दूपटिया बरि र याऽरऽ

आजु राजा हमरीय ईजतिया जे नाहिं रे गईलीं
सुववाह् गईलि ईजतिया जे देखऽ तोहाऽरऽ
एतना जे सूनइं ना रजवाह् बम रे देवा
रन पर देहलनि लाकुड़िया जे ठोक रे वाय
ओहि घड़ी सूनह् न हलियाह् ओठियन कय
फउदि साजल ना ओठियन सेनि रे जाला
आजु कहँ बइठल जाजिमवांह् पर रे सांवर
एक ओरि बइठल ना वानह् ए लोरिकवा
विचवां में बइठल ना बुढ़वाह् बा कठइता
उह भाई बोलत लोरिकवाह देख रे वाऽनऽ
आजु कहँ भइयाह् ना सुनिलह् वीर रे सांवर
एठियन तूं मनवह काहनवांह् रे हमाऽर
जहाँ जहाँ ककवाह् ना जइहइं रे कठइता
तेहं तेहं देइहइं झऽगड़वाह् मच रे वाई
जेकरह् जांघेह् ना वलवाह् कहं रे रहिहंऽइ
केकरेह् भूजाह् रहीय ना वउ रे साई
कइसेह् देवई झागड़वाह् वर रे काऽई
एतना जे कहत अहीरवा जे वाई रे लोरिकाऽ
बुढ़वाह् जरि मरि ना भयनहं रे खंगार
आजु कहँ बाउर बेटवना से बउरे रइले
हरि तोरि गईलि ना मतियाह् रे गियाऽन
बेटवा तू बइठल जाजिमवा पर रहले लोरिका
एठियन देखिलह् ना बुढ़वा क मनु रे साई
बुढ़वा लेइ कह् छेकनवा जे बाड़ऽ रे डांकऽय
ओहि घड़ी तड़कल बयालीस जाला रे हांथ
ओहि घड़ी बोलल ना मलवां जे वानऽ रे सांवर
दरियांह् करई ना वेड़वांह् रे जऽबाब
आजु कहँ भइयाह् ना सुनि लेह् बीर रे लोरिका
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
जेकर भाई दू दूय ठे ललवा जे बाड़ी रे बईठल
जेकर पिता ढूरत ना खेतवा जे मेंनि रे बाय
कतहूँ जो खालेह् ना गोड़वांह् ऊँच रे परिहइं
कक्काह् देइहइं ना मथवा रे गोंवाइ
ओहि घड़ी धीरिक जोनिगिया जे होइ रे जइहइं
आजु डूबि जाईय बंसवा क देख रे ओर

एतना जे कहत ना अहोरा जे बीर रे बानउ
तब फेरि सूनहु ना सोठ्यिन कनि रे हान्न
ओह घरी कवनेहु ना दिनवाहु चान [illegible]
अहिराह वोलत लजरनियाहु कन्द रे [illegible]
लोरिके के गयल ना मनवाहु रे [illegible]
साचइ बूढई ना कस्वा जे गिरि रे [illegible]
हसीय होइहइं बारत्रियाहु रे हनान्न
जेकर भाई दुइ ठे ललवा जे बाटि रे [illegible]
अब हरखूरत ना तुरवा जे टेक रे [illegible]
एतनहु कहि कहु ना सोठिन बिर रे [illegible]
अब फेरि गय्यल ना वकनेहु केनि रे [illegible]
जाइकेनि जामहु ओरवा बाट [illegible]
अब अपन देहे के घरले बा दुन रे [illegible]
उहे भाई धरलेस दुनहरवा देहिना [illegible]
जाइ केनि खोन्हत बाकलवा [illegible]
ओहि घडी अंगवाहु ना पहिरत बाट [illegible]
गोडवा मे गूनर वजनियाहु रे [illegible]
आजु कहें तरकुस ना गुडवा बा [illegible]
उहे बीर चावड ना [illegible] रे [illegible]
आजु भाई साठिय न गडवा क बाट [illegible]
उहे बीर बान्हत ना पेटियाहु रे [illegible]
आजु कहें धारइ ना पनिला जे [illegible]
जवने भाई सेयहु डवब्या जे बह रे [illegible]
आजु कहें छप्पन ना छुरिया जे [illegible]
अहिरे के हूकनि वजनिया मे [illegible]
आजु कहें बायेंहु ना हनवा जे [illegible]
दहिनेहु हायेहु बीजुनिया बा [illegible]
जवने घडी मरगल ना [illegible]
जइसे भाई दोमति हदिनिया बा चलि रे [illegible]
`सूनहु ना हलिया सोठ्यिन [illegible]
अब पेरि छेकंनेह फटकियाहु बाट रे [illegible]
अहीरा नीकनि कहरवहु मनन रे [illegible]
आपन छोडि साकनवाहु बरि रे [illegible]
जवने घडी चारिय नो कोनवाहु चारि रे [illegible]
अब पेरि रहनहु दुअरिया बरि रे [illegible]

अब पलटनियाह् चढ़लि बा बीचवां में
हूकुमि देतई बानह् ना लेल रे कारी
आजु कहें बीचिय ना अहिरा के छेकि रे लेव्या
कांड़ि केनि कइ दह् सेतुववा कई रे लूनऽ

लोरिक द्वारा दुर्गा का स्मरण

ओहि घड़ी सूनह् न हलियाह् अहीरे कऽ
सूरत बानह् आपन पुज रे माऽनऽ
आजु कहें कहवां ना भइयाह् मोर दुरूगाऽ
एठियन लागह् ताकतियाह् रे गोहाऽरी
देवियाह् तोहरेह् न बलवांह् बलु रे सइयां
चऽलिहं दारून ना देसवाह् रे खंगारऽय
फिनि छोड़ि मइयाह् दुरूगवा जे भागि रे गईंलीं
आफति पऽरलि जीनिगियाह् रे हमाऽरऽ
एतनाह् सुमिरत भांवनियांह् लेइ दुरूगा
राजाह् मारत टिकसहवा लेइ रे बानऽ
जउने घरी चऽलईं पंयतराह् खेतवा पऽ
अइसेइ भादवं भइंसवा मकरे राऽनऽ
दांव परि अयनह् मऽरदवाह् नियरे राई
तब फेरि बोलल ना रजवा बा बम रे देवा
अब सूवा मनबेह् कहनवांह् रे हमाऽर
अब भाई मरबेह् ना मरबे जे तोईं रे सूववा
दम भाई तोरेह् आवरिया में आई रे जाय
तब फेरि बोलल मऽरदवा बा बिर रे लोरिका
सुववा के मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
देखु भाई आगेह् ना घंउवन ना चलइवऽ
नात घाउ पीछेह् ना रखवइ रे गोवाऽय
आगेह् मारे के कीरियवा जे गुरू अजइया
पतिया में लिखियह् ना देहले जे बाड़े तीलाक
नात हम आगेह् आवरिया जे अपने छोड़बऽ
नात हम पाछेय ना रखबई रे गोवाय
ओहि घड़ी सूरूकि ना फेंकले जे बा मीयनवां
अब फेरि मारइ अहिरवा के टिक रे हाथ
ओहि घड़ी खेलल अहिरवा बा बीर रे लोरिकाऽ
चम्फाह् डांकिय आकासवा में देख रे जाय

ऊहे भाई गोरल ना तेगवा जे धरतीय मे
तेगवा उनकर चूरई ना चुरवा होइ रे जाय
तवने घरी दू दू अवरिया छुटि रे गइनी
अब नाहीं आगुनि आवरियाह् देखऽ रे भइनी
ओहि दिन सूरुकि ना देहले बाय रे दोह तिहराऽ
अब फिर मारई अहिरवा के सिर रे हाऽनाऽ
अब माई येलल अहीरवा वा वीर रे लोरिका
ऊहे फेरि बावन तिरिछवाजे होइ रे गयऽनाऽ
खहियाह् गईलि ना दहरह् रे फेकाऽई
तन तक मूनह् ना हलिया अहीरे कऽय
दववेनि नीचलि भयल बा मम रे दाऽन
अब जोडी मनवेह् काहनवाह् रे हमाऽर
देख माई पक्काह् आवरिया तोर रे थाम्हल
अब कचलुइयाह् ना थाम्हउ रे हमाऽर
ओहि घडी मुरुकि ना फेंकले जे वाइ मोयानवा
अब दहतम्गिय तानत बाह् तर रे वार
जइसे माई घारिय अगुरवा जे भइनी रे बहूरे
जेकर भाई तडक अऽकसवा मे चलि रे जा
आजु कहुँ नियवाह् ना मरले जे धा दयन्हरा
पारसन गइलीय लवरिया जे गूरे याइ
आजु घूमि गईलि पऽनविया जे बमदेव कऽ
पडिया गइलीय गरद मे रे विसाय
आजु कहुँ पुरुब कातवा जे पहू रे घूमऽनाऽ
पहूवे के कादत दखिनवा मे घुमि रे जाय
जइसेह् काटई कोइरिया जे कोइ रे रडवाऽ
ओइसइ काटत अहीरवा क बाढइ रे पूत
ओहि घडी मूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
तय माई घीचत वोजुलियाह् वाइ रे खाँडऽ
अब रखि देनेह मीयनवा मेनि रे बान
उहवा से सजलि बरतिया वा अहीरे कऽ
कोटवा के गयलं झगडवा फरि रे वाई
अहीराह् योनह् ना दनवाह् बिन रे पनिया

बाजे-गाजे की ध्वनि अगोरी में सुनाई पड़ना—झीमल मल्लाह का बारात को अगोरी में उतारना

मारत रेंगनह् दखिनवा के धइये राह्
ओहि धरी रातिय रेंगइं ना दिन रे दवरऽ
कतों नाहिं बदत ना कोलिया रे मोकाऽम
एकदम रेंगलि बऽरतियाह् रे रेंगावल
अब चलि अइलींय कोलियवा क ऽ देखऽरे घाट
ओहि घड़ी बाजलि लकुड़िया बा कोलिया पर
सबदि नीकलि अगोरिया जे गइलीं रे पाऽल
आजु सूनह् ना हलिया सूबवा कय
जेकर बइठल बानइ नह दर रे बाऽरऽ
ओही घड़ी कानेह् सबदिया सबके गइलीं
राजाह् बोलत मोलागत देख रे बानऽ
चाहे सारे महरह् मूदइया होइ रे गऽयनऽ
चाहे रन्दा सूवाह् चढ़वले बा बरि रे याऽर
का जानीं कवनेह् सहरिया में बाड़ बऽरतिया
लकड़िय बाजति बाड़इ नह अन रे हद
आजु कहैं सुनवह् ना नोकर रे सिपाही
अब तुव जावह् ना सोनवाह् छिति रे राई
जेतनाह् बानइ ना सोनवाह् कइ रे घाऽट'
······अगोरियाँ दई रे पाऽलऽ
जवने घड़ी घाटइ ना ऊतरि चलि रे अइनऽ
एकदम अइनह् कासीयवा केनि रे घाऽटऽ
अब छपि गईलि बऽरतिया अहीरे कय
नदियाह् दूनोहं कररवा फुफुरे कर ले सि
कहिं नहिं बाड़इ रे ओठियन रे उताऽरऽ
ओहि पार टहरई ना झिमलाह रे केवटवा
नइयाह् घाटेहं ना घटवाह् जे बोर रे बाइ
ओहि दिन बोलल दुलेरुवा बा लेइये लोरिका
अब तुय सुनबह् ना सुवचन ससु हमार
आई के हवई ना घटवा कऽ ठीक रे दाऽरइ
के फेरि हवई ना नइया के मल······
सूनह् ना मलवाह् रे सुबच्चन
उय फेरि देवइ सऽरेखवा में बान रे लाख

आजु कहँ झीमन ना हवह ठीक रे दाउरऽ
समनाह् हव ना नदया के मन्ने लाह्
ग्ये भाई झीमल ना झीमल बाइ पुकारत
लोरिकाह् करई पुकरवाह् नेरि रे या ई
झीमल बोलत बानइ नह ओहि रे पाउर
तब फेरि बोलल दुलेरुवाह् अहिरे कउ्य
अब जेकर लोरिक दुलेरुवाह् वाई रे नाउम
आजु भाई सुनवह् ना झीमल मोर केंवटवा
अब तुय लेइ आवा ना नइयाह् रे करा रे
ठेकनि करतह् अगोरियाह् ओहि रे पाउरऽ
तब फेरि बोलल झीमलवाह् बाइ रे केंवट
आजु भाई मनवह् काहनवाह् तू हमाउरऽ
मुरवा के उल्टी हुकुमियाह् बाइ रे लगने
अब जे दिन उतरिहैं वरतिया जे अहीरे कऽ
बाल बच्चा देबई कोल्हुइया मे पेर रे वाई
के आपन जानइ ना देइहइ लेइये एठ्यिन
के कइ डेइहइ ना ओठियह् लेइ ये पाउरऽ
ओही घड़ी बोलल मरदवा जे वीर रे लोरिक
झीमल मनवह् काहनवा जे देखऽ हमाउरऽ
देखा हम नागर गउरवा जे बाटौं रे टीकल
सुनलीं ज बलीय ना रजवा जे बाटे अगोरी
ओनकर कोई खोजलेह् जोडियवा जे नाहीं रे बाज्यऽ
तब हम बीयहइ माजरिया के देख रे अइनीं
देर देख अइनीय हऽ मुरवा क मनु रे साई
झीमल छेइकाह् लगवतऽ तू ओही रे पाउर
आजु झीमल जाइह पसीनवा जे तोहार रे गिरिहउ्य
तहा गिरि जइहइ लोरिकवा के देखा रे खूनऽ
जब आगे लोरिक कोल्हुइया में देखऽ पेरइहउ्य
तब पीछे वालउ ना बचवा जे झीमल तोहाउर
एतना जे सुनई झीमलवाह् लेइये केंवटा
एकदम दवरल गीरिहिया वा लेउ्ये जात
जाइ के नि डोबीय थारियवा जे घरे उठवलेस
बाल बच्चाह् ले नेइ् ना नदिया मे चलि रे जाय
आजु कहँ हाथे मे गाहनिया जे लेइ झीमलवा

नइयाह् गहत ना पनियाह् में नि रे वाय
पनियांह् ठँउकि ना.कइलेनि तइरेयरिया
नइया गईलि ना जलवा में उति रे राऽइ
तव फेरि मारइ ना लगीले हो झीमल
अव फेरि कइलेसि उपरा ओहि पाऽरऽ
आजु कहैं सवइ पचासइ खेप चऽलऽ
अव फेर भारी ना नइया झीमला कय
खेइ केनि करत अगोरिया जे पाऽरऽ
आजु सवा लाखइ वऽरतिया अहीरे कय
राति दीनेह् ना कइलेसि एहि रे पाऽरइ
तव फेरि देखह् ना हलियाह् ओठियन कय
अउ फेरि लवटल ना नइयाह् एहि पार से
फेन भाई गईलि कररवां ओहि लगाई
ओहि घरी ऊठल ना बुढ़वा जे वाइ कऽठइता
आजु वुढ़ ठेघत ना ठेघनवां वा चलि रे जात
जवने घड़ी नइया के करीववा में चलि रे गयनऽ
नइयाह् पर धरत डंड़इयाह् देख रे वाय
नइयाह् तंरेह् ना गइलींय रे दवाई
झिमलाह् गीरल ना छतियाह् रे ठठाय
आजु कहैं हो हो ना दइया जे मोर नरायन
का वरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् तक रे दीर
आजु कहैं सवाह् ना लखवा जे अहीरे के ब्रातऽय
खेइ केनि कइलींय अगोरिया जे ओहि रे पाऽर
एक ठेनि बुढ़वाह् वांचलऽ वाह् लेइ ये एठियन
अव लेइ अइलीह नइया जे एहि रे पाऽर
आजु वावू डंड़ईय ना धरतइ नइया डूव ने
आजु भाई बुढ़वाह् चऽढ़ई के वाकी रे वाय
अव सुना ना हलिया ओठियन कय
आज वूढ़ मारत हूमनियां जे वानऽ
ओहि घड़ी डंडा ना हथवा में उठाइ कय
अव बुढ़ ले लेसि ना फरके ले रेंगाई
अपनेह् नइयाह् पर चढ़ि कइ रे वईठा
डंड़ई पानी ना पनियां वह वे उले
खेइ केनि कइलेह् अगोरिया जे एहि रे पाऽर
आजु बूढ़ उतरि ना नइया सेनि गयऽनऽ

जाइ केनि भयनह् कारखा लेइ रे ठाढ
ओहि घड़ी सुनहू ना हलिया जे कठईत कथ
समधीय सुनवह् सूवच्चन रे हमाउर
आजु जाइके पूछि आवा खवऽरिया जे घरवा जे
कहवाह् ठाढ़ीय वारातिया जे मोर रे आय
कहवाह रहीय जनवसिया ज मोर वारतिया
हमें भाई देतेंह् जागहियाह वई रे ठाई
ओहि घड़ी रेंगल ना मलवाह् वा सुनच्चन
एकदम रेंगल गीरिहिया वा चनि रे जात
जाइ केनि वहिन वहीनिया जे वा पुकरऽले
महरिन नीकलि आगनवा मे भइनी रे ठाढ
आजु वहें मुनवेह् वहीनिया जे मोरि रे महरिन
समधी क उलटीय हुकुमिया जे सुनि रे ले
कहवा पर टीकइ वऽरतिया जे आहीरे कय
कहवह जाजिम गीरइ न ओहि रे ठाम
कहयह् रहिहइ वऽरतियाह् अहीरे कऽय
ओन्हइ अहटुन ना दरिया जे दयह् वताय
तब फेर बोलल ना धनवा वा महरी
महरिन करइ ना वेहवा जवाबऽ
आजु यहँ भइया ना सुनऽ मोर सुवच्चन
कहना मनब्यऽ नऽ एठिन रे हमारऽ
सनी सुनह् ना हलिया जे ओठियन कय
के फेरि ओहुऽभ समइयाह् घइ रे हाऽल
महरिनि बोललि नऽ वतिया वा लऽरमे से
भइयाह् मनयह् पाहुनवाह् रे हमाऽर
देवऽ इहाँ कुछुय तइयरिया जे नहि रे भइली
विवहिय अयलह् वऽरतियाह् सूभ लिआऽय
वहि दह् दस दिन के अहीरवा जे लवटि जाऽनऽ
आपन घइ लेइति ना हमहूअ रे समाऽन
देवऽ भाई गोतिय ना भयवा जे नाहि नेवतले
न त आपन नेयतल कुटुमवा जे चलि रे वार
ना त आपन नेयतल आजम ना गढ़वा क देवऽ वऽइया
पवन फेरि दनह् गम्हियवा जे सुना ऊरेह
अवहीय देरीय वऽरतियाह् केनि के रऽने
दस रोज के मांगह् समधिया जे देइ रे द

जिरवा खेतार पर कंटीली झाडियों में वारात टिकाने का महर की पत्नी का उपक्रम

······मोकाह् समधिया का देइ रे देतां
ठाटि केनि लगतहं दुअरवाह् दर रे बार
तब फेरि रेंगल ना ओठियन जाइ सुवच्चन
कहत वाड़इं न ओठियन अर रे थाई
आजु कहैं समधी ना सुनिलह् बूढ़ कठईता
एठियन मनवह् काहनवांह रे हमाऽर
इय वहिन कुछुय इतजमवा जे नाहिनो कइले
बाड़ह् बिगड़ति वहिनिया जे मोर रे बाय
कहति बाड़ें दस रोज के दिनवा तरि रे जातऽ
तब आइ ठठिकह् ना करतह् सादि रे बिवाह्
ओहि घड़ो बोलल ना बुढ़वा जे बाइ कठइता
समघी तूं मनवह् कहनवांह् रे हमाऽर
आजु हम दस पांच ना दिनवा जेका मुनवलेन
हम टिकि रहब पुहुतिया जे दुइ रे चार
हम केनि रहइ के जगहियां जे तनी बतउती
आपन ठठिकह् ना करतीयं रे बिवाह
कहैं तवनेह न दिनवांह् राम समइयां
केहि फेरि ओहय समइयाह् कंइ रे हाऽलऽ
ओहि घड़ी दवरल सुवच्चन वन रे जाऽतऽ
आजु मोर सुनवेह् वहिनियांह् लेइ रे बाऽत
समधी के उल्टी हुकुमियांह् सुनि रे लेइवेऽ
ओन्हके तू देवह् जागहियाह् रे बताई
तूंय का दस पांच ना दिनवां जे ओन्हें सुनउल्या
ऊय टिकि के रहिहइं पुहुतियाह् दुइ रे चारी
ओहि घड़ी बोललि ना धनवां जे बाइ ए महरीन
भइयाह् मनवह् काहनवांह रे हमाऽरऽ
अब लेइ जावह् वारतियाह् जिरवा खेते
जहवां पर नउ सइ ना गोभियाह् वा घमोई
जेनकर चारि चारि अंगुरवाह् कइ रे कांटऽ
उहे भाई तनिकउ बऽदनियांह् ले छुअइहंय
खुनवाह् देइहंइ ना देहियांह् रे निकाली
ओठिन देबह् जागहियाह् रे बताई

ओहि घरी रैंगल ना भइया बाइ मुबच्चन
एक्दम रैंगल ना तिरवा चलि रे अइनऽ
समधीय सुनबह् कठइता हो हमाऽर
चम हम देईं जऽगहिया रे बताई
ओहि दिन परि जाउ बारतिया जन रे बासा
आगे आगे रैंगल ना मलवा बा सुबच्चन
पिछवाह् सवाह् ना लपवा बा वरि रे यात
जउने घडी बिरवा खेतरवा पर चढ़ि रे गयऽनऽ
जहवाह नउ सइ ना गोभियाह् र घमोय
ओहि ठाद होइ गयन ना मलवाह् रे सुबच्चन
अउ फेरि देखह् ना हलियाह् रे हवाल
जउने घडी सवा ना लखपह् वरि र यतिया
गोभिया के ठाडेह् देखतवा ज सग रे वाय
आजु बाबू एक ना भइया प बानऽरे दूल्लर
आजु यहँ एक भूपरवा जे सर रे दार
आजु यहँ लोरिकाह् के रितियाह् रे मोहबते
एक बानह् दईयवा बऽ ओन्ह र लाल
आजु यहँ उपरेह बऊनिया मे खुन रे नाचय
तेँ कइसे सहीय ना फटवाह् मइ रे धार
एतनाह् सोचत अहीरवा जे याइ रे लोरिका
अउ फेरि बढ़ठत जाजिमवाह् पर रे आय
आजु सुनह् ना हलिया बठइत कऽप
धुकवाह् मारत हूमनिया लेइ रे आऽनऽ
रैंगल जालह् पलकियाह् के नगीचय
अब खिगरायल सरीरवाह् लोरिके कऽय
देखत बाडद ना धुकवाह् रे घुमारी
ओहि घडी डाटत अहीरवा जे बुढ रे बठईत
बेटवाह् मारद गुनचलह् मनऊज के
चढल हूँ दारून ना देरवाह र धगाऽर
धनमी के देखत ना सूववाह् नाई कुरइया
थर थर कापतिया जघियाह् रे ताहाऽर
एतनाह् पहुत ना घतियाह् लेइ ये ओठियन
जरि गरि भमम ना बेहवाह् रे धंगाऽर
कहैं सुनह् बेटवनाह् रे हमाऽर
आजु कहैं बायेंह् ना हपवाह् लेइ पगतिया

डंड़वा दहिनेह् ना हथवाह् लेइ उठाई

लोरिक के पिता कठइत द्वारा कंटीली झाड़ियों की सफाई कराया जाना और बारात का टिकना

बुढ़वाह् चलल पयंतराह् ओठियन ते
चम्फाह् डांकत वयालिस जाइये हांऽथ
ओहि दिन पूरुब डांकतवा जे पछु रे गयऽनऽ
पंछुवे के डांकत दखिनवा जे घुमि रे जाऽन
जउने भाई डंडाह् ना संगवा जे गोभि धमोइया
जाइ केनि आधेह् सोनवा के गिरऽ रे धाऽरऽ
एक दम वहलि पुरुववाह् वाइ रे जाती
उंह् वुढ़ दरीयना घुमियाह् फेरि रे देहलेन
जइसे खेलइं लरिकवाह् वद रे गउराऽ
ओइसइ होई गयल वा मय रे दाऽन
ओहि पर गीरल जाजिमवा वा अहीरे कऽ
ओहि दिन दलइ वदरवा जे रेइ रे ठाढ़ऽ
आजु कहँ झम्पू ना गेसिया लट रे कउंले
कोने कोने भयल ना सुववाह् दिन रे राऽतय
जलसाह् होतइ न वानह् ए अगोरियां
मऽउज कऽरति वरतियाह् लेइ रे वानी
आजु भाई कसविन ना हूरति वायं पतूरिया
भड़वांह् तोरत चिटिकुयाह् पर रे ताऽनऽइ
ओहि जउ जीरवाह् ना वहतरि रे खेताऽर
आजु कहँ वइठल अहिरवा जे खेतवा पर
अउ फेरि सुनह् ना अगवांह कइ रे हाल
ओही घरी वोललि ना धनवा जे वाड़इ रे म्हरीन
भइयाह् सुनवेह् सुवच्चन हो हमाऽर
केतनीय वाड़इ वारतिया जे अहीरे कऽय
हमके तूं देवह् सारेखवां जे देखऽ लगाई
ओहि दिन वोलल ना मलवा जे वा सुवच्चन
दरियांह् करई ना वेड़वांह् रे जवाव
आजु सवा लाखइ वऽरतिया वा अहीरे कय
सगरउ जातीय लेहलया वा पर रे जात
सवा लाख आईलि वऽरातिया वा जीरंवा पर
वइठल वानह् मेंड़रिया जे देख रे माऽर

ओही घडी मुनह् ना हलिया जे महरीन घय
महरिन बोलति लरमवा के चाइ रे बोल
ओजु भइया चलि आह् ना गलियाह् रे अगोरिया
सहुवाह् वागह् महिचना जे वड रे वार
ओनसेंह वयल ना गढियाह् लेइ ये हाकी
अब लेइ लेवह् ना बोरवाह् रे उठाय
आजु सवा लाखइ ना मनवा जे कसि दा चाउर
अर फेरि जिरवाह् ना बहतरि देव गौराइ
आजु सवा लाखइ ना मनवो जे लेइला चउरा
अर सवा लाखइ पसेरिया जे भल रे गेह
एक रे मोतउविल ना हरदिय रे मसाला
अउ फेरि बेलकुल सामनिया जे लेइ रे लउ
अब फेरि एक रेह् ना बदयाह् लेइ ये खटिया
सवा लाखे लिहलह् ना खटियाह रे सिगार
जाइकनि बाटि दह् रासधिया जे जीरवा पर
सवा लाख बइठल अहीरवा कइ बारि रे याति
कहि दह् एक्कइ जुअरवा का इहई ह भोजन
ए मह एकउ चाउरवा न बचि रे जाय
नाइ भाई पोडउ न रासधि बचि रे जइहइ
आपन घरिहइ डाहरियाह् ओहि रे आज
अउ धइलेहइ डहरिया जे गउरा घय
चलि जइहें नगर गउरवा जे गुज रे राख
ओही घरी रेगल ना मलयाह् वा सुवच्चन
अब चलि गउयल ना घोरियाह् रे अगोरियाँ
अब चलि गयनह् सहुवयन क दर रे बाउर
जाइ केनि देलेनि हुकुमियाह् रे लगाई
आजु भइया गाडिय ना देइ दा बयल रे गडिया
हम देइ देवह् ना बोरवा रे सहीजउ
दस पाच हकनेनि ना गडिया ओठियन से
पसर लगनह् ना यथंबाह् रे तऊनी
तऊलि घनि भरलनि ना बारवाह् सब रे बखउय
उय भाई लदि गइलि ना गडिया चउरे घउ
आजु लादि गइलि न गडियाह् चाउरे घय
ओहि मे घनि गईलि ना बेलबुल रे समाउन
ओहि घरी जोतलि ना गडियाह् बोलवा से

चलि गईल जिरवाह् ना बहतरि रे खेतार
फरके भारिय जाजिमवाह् रे गिराई कऽ

चावल, घी तथा सवा लाख बकरे आदि बारातियों के भोजन के लिए महर की पत्नी द्वारा भेजा जाना

चाउर उझिलत (दरियंह्) पर रे बाय
उय भाई रासधि ना गंजिया के सवा लाखई मन
अब सवा लाखइ पतेरिया जे भरऽ रे घीउ
अब सवा लाखइ ना खंसियाह् अउ सिघारा
सब केनि होलइ भोजनवा जे एहि रे दाम
जउने घड़ी गंजि गयल चाउरवा जे लेइ जाजिमवा
सम्मइ परवत पऽहरवा जे लगि रे जाय
उहे भाई लगनह् ना देखि कह् रे मरदवा
हंहरत वानह् गउरवा क सब रे लोग
आजु वाबू एकक ना मइया के वाऽनऽ ए दूल्लर
एकक वानह सूधरवा जे सर रे दार
आजु भाई पावइ ना भरवा के बांड़े खवइया
कइसे एक मनई चाउरवा जे खाइ रे जायं
कइसे एक खइहंइ पसेरिया जे भर रे घीउवा
कइसेह् खसीय सिघरवा जे खाइ रे जायं
जाजु भाई फीरय क ना पंहलेह् डहरि देखाति बा
आजु भाई होइहइ ना काजवा जे इहंइ बीवाह्
एतना जो कहत ना बतियाह् वांय ए ओठियन
हह॒ल बानह् गउरवा क सब रे लोग
··········जवने ना दिनवाह राम समइया
अउ फेरि झंखत अहीरवाह् बाय रे लोरिका
उहे भाई दांतेह् अंगुरियाह् बांय रे दाबी
आजु बावू नाहिय रासधिया रे खवइहंय
कुछ मोरे बूतेह् कहलवा बा नाहीं जातय
ओहि दिन घूमत ना बूढवा बाइ कठईता
आजु घूमि के गऽयल अहिरवा केनि रे आगे
आजु कहैं बेटवाह् ना सुनि ला बीर रे लोरीक
एठियन मनबह् काहनवांह् तू हमार
कइसेह् बइठल जाजिमवा पर बेटा हो रहऽबऽ
एठिन देखिलह् ना बुढ़वा क मनु रे साई

जउने घड़ी तउलि रसधिया रे घरतिहा
अब चलि गयनह् अगोरिया लेइ रे घउरऽ
वचि गयनह् खालीय गउरवाह् कइ वरतिहा
अब वूढ देनेसि ना मतवा रे सुनाई
आजु भाई सुनिलह् वारतिया सवा रे लाऽख
अपनेह् पेटे के खोरकवा रे तउलि कय
खाये खाये भरे क रासधिया लऽजनाई
जतनाह् फलूय रासधिया रे जो वचिहइ
ओहिजा सोनइ भदरवा मे वहि रे जालऽय
खाये भरेह्क घोउवा रखि रे लेवय
सोनवाह् मे देनह् ना घोउवा रे लडाई
अब वहि जातइ पुरुखवा केनि रे देख
जेतनाह् वानीयना खसिया रे सिपारऽ
जउन भाई खाये क ना होइहइ ना दुइ एव रेवा
अब फेरि खावह् ना खसिया रे अमोचा
जतनाह् फलतूय ना खसिया वचि रे जइहइ
काटि केनि देवह् ना सोनवा मे वह रे बाइ
एतना जो बहुत न बतिया जे बाइ कठइता
सब केनि भूललि नाजरिया जे उह रे बाय
जवने ना दिनवाह् राम समइयां
अन घात वानह् मारदवाह् रे वनाई
ओहि घरी सूनह् ना हलिया कठइत कय
नउवाह् सुनवेह् हाजमवाह् रे हमाऽर
दसु भाई वेलवुलि रासधिया जे वनि रे गईनी
इहां पर एक्कउ अछतवा ज नाहि रे वाऽनऽ
एक ठेनि सीहेइ लऽरिकवा जे तोय वराति कय
लेलेह जायेह् माहरवा केनि रे घरे
जाइ केनि दीहे सउदियाह् रे सुनाई
वहि दीहे सासेह रसदिया जे बम रे होइनी
सरिका के यासिउ तिवनवा जे नाहि रे वाऽनऽ
आजु भाई भीतरीय ना जुठवा रे बाठ रे होत
अब तुप देतह् सरिकवाह् जे मोर रे खाऽत
एतनाह् कहि कह् ना वुढवाह् रे बठइता
उहे भाई गूतस जाजिमवाह् पर रे वाय
अबु सया लायइ वारतिया जे अहीरे बऽ

सूतल वानीयं ना जिरवाह् देख खेताऽर
जउने घड़ी आधीय ना रतियाह् निच रे लइयां
के फेरि ओहूय समइयाह् केनि रे हाल
आजु भाइ रेंगल ना ओठियन सेनि रे नउवा
अब फेर उठल ना बहुतइ रे सबेर
एक ठेनि सूतल लरिकवा जे धइये लेह्लेनि
नेटुवाह् धनेलेह् माहरवा जे धरे रे जाय
आजु कहँ वड़ेह् सबेरवाह् केनि ऐ जुनियां
महरिन बहारति दुअरवाह् पर रे बाय
अब जुटि गयल ना नउवा जे वाने रे गंगिया
लरिका के धइलेह चेचुरवा जे चलि रे जात
ओहि दिन बोलल ना गंगिया जे वा हाजमवा
महरिन गंवहिनि ना सुनिलह् रे हमाऽर
जइसे हम लागीय ला नउवा जे लोरिके कऽय
ओइसय लागव ना नउवा जे देख तोहार
संझवाह् कम्मइ रासधिया जे होइ रे गइलीं
लड़िका क वासिउ तिवनवां जे नाहि रे बाय
भितरीं में जूठउ ना कठवां जे बचल रे होतां
अब तुय देतह लरिकवा जे मोर रे खात
एतना जे सूनति ना धनवा जे बाइये महरिन
उहे भाई दातनि आंगुरिया जे बानी चबात
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
महरिन बोललि ना बानीह् ओहि रे दम्म
नउवाह् सुनबह् ना गंगियाह् रे हमाऽर
भइयाह् पानीय मुखरिया जे लेइये लेबऽ
आँख मुंह धोवह मुखरिया तुंय रे काई
अब हम बासीय न कुसियाह् कये देई
तातइ देबइ खिचड़ियाह् उतरे वाई
दुनो मीला कइकह् भोजनवांह् तव रे जान्याऽ

गायक द्वारा देवी का स्मरण
(रामायण से तुलना)
राम राम राम राम हो राम

आजु हम कहत ना रहलीय हो राऽमायन
कइसन परल जियरवा बाइ ए मोरऽ

अउ जिनि भूलह्, ना संगियाह्, मोर समउरी
जिनि भूलि जायह्, दुस्मवाह्, मोरि रे माई
ओहि दिन सूनह्, ना हलिया ओठियन कउ्य
आजु भाई नउवाह्, लरिकवा केनि रे धय कउ्य
एक्दम से लेह्, याराविया वाइ रे जाउ्त

महर की पत्नी द्वारा समधी की अक्ल की परीक्षा लिया जाना कुल्हड़ से रस्सी बनाने का आग्रह

ओहि दिन सुनह्, ना हलिया जे महरीन कउ्य
महरिन सेनेह्, चउक्यिाह्, वाइ रे जात
आजु वहें भइयाह्, ना मुनिलह्, मोर सुवच्चन
एठियन मनंबह्, नाहनवाह्, रे हमार
आजु भाई एक भरुका ना लेइलह्, कुट रे नउसी
लेइजा जिरवाह्, ना वहतरि रे घेतार
जाइवेनि धइदह्, अगवाह्, समधी के
एहिकनि धरि देव ना अब ही रे वन रे वाय
अउने धरी वरी बनवरिया जे समधी देईहहं
अउ रसरी वान्हन मडउवा मे गुम रे राइ
ओहि दिन सूनह्, ना हलिया जे ओठियन कउ्य
सुवचन ले लेह्, मउपवा मे नि रे जाय
जाइ के भाई धइलेसि ना कुरुवा के कठइत के अंगवा
घालत थानह्, लरमियाह्, मइ रे वोल
आजु पहें समधीय ना सुनिलह्, रे कठउ्ईत
एठियन मनबह्, बहनयाह्, रे हमार
आजु भाई जउवाह्, कुटनवा जे कुट रे न उसी
एहि वेनि धरीय देयह्, ना थन रे वाय
आजु वहें इहई रसरिया जे मडये मे
रसरिय थान्हिय जानिय नह्, गुम रे राय
तब भाई सादीय बिबहवा जे देख रे होइहय
नाहि नाहि सागिय ठेनवा जे मेंह तो हाउर
आजु भाई जयनइ राहुतवा जे धइ के अहला
ऊ रहता धइलेह्, गउरवां तू चलि रे जा
ओहि घरी सूनह्, ना हलिया जे कठइत कय
आज यूइ भारत हुमनियाह्, सेइ रे वाउ्न
नाहि फेरि मानह्, ना मनवाह्, मुसुरे काउ्तय

आजु भाई समधीय ना सूनिल्या तूं सुबच्चन
एठियन मनबह् कहनवां रे हमाऽर···मनबह् कहनवांह रे हमाऽर
आजु भाई सादीय बीवहवा जाइ रे कऽरऽ
बुजरीय कऽवन रसरिया कइ बुनियादी
हमकेह् उल्टाह् चालनिया जे भरि कऽ पनिया
अब देई देवह् भेंइयवा क वर बे हम
ओहि घरी रेंगल ना मलवा जे जन सुबच्चन

समधी द्वारा उल्टी चलनी में पानी मंगवाया जाना—कठईत की बुद्धि पर महरिन चकित

रेंगल गयनंह माहरवा के देखऽ रे घऽर
आजु कहैं बहिन बहिनिया जे बाय पुकारत
महरिन बोलल भीतरियाह् सेनि रे बाइ
आजु कहै सुनबेह् बहिनिया जे मोरि रे महरिन
एठियन तूं मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
समधीय बरय के रसरिया जे तईयारइ वा
बाकिये के मगलेनि ना पनियांह् रे बनाय
कहलेनि जे उलटाइ चलनियां में भेइं देउ पनिया
भेइं केनि बऽरब ना हमहूं रे लइ रे आजु
एतना जो सूनति ना धनवा जे बाइ रे महरिन
उय भाई ओहीय समइयाह् कइ रे हाल
आजु भाई धनि धनि ना पनियाह् पउन तीर्थ कय
जहवां क होराइ मारदवा बा बुधि रे मान
आजु भाई बड़ बड़ ना अड़गड़ हमरे डाली
समधीय काटिय करत बाड़ें खय रे कार
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् कठईत कऽय
बोलत बानह् लारमवांह् कइ रे बोलऽ
आजु भाई बड़ बड़ अयगड़वा जे समधिन डललेन
काटि केनि हमहूंय ना कइलीं खयं रे काऽर
एक बाति हमरउ ना अड़गड़ परति रे बानी
जल्दी से करउ उपइया एहि रे दम्मऽय
ओहि दिन बोलत ना बतियाह् बा दो गाहें
अउ फेरि बोलत ना बतियाह् अर रे थाई,
आजु कहैं सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
उह्वां से रेंगल ना मलवा वा सुबच्चन

फेरि माई गयनह् सऽमधिया केनि रे पाऽस

कठइत द्वारा सोलह चूचियों वाली
मंस की मांग करना—मंजरी के निर्देश
पर सुवचन द्वारा सोलह टोंटियों का गिलास बनवाया जाना

ओहि घडी बोलल ना बुढ़वा जे बाइ काठईता
समधीय सुनऽह् सुवच्चन रे हमाऽर
आजु भाई वड वड ना अडगड समधी चल लेनि
हम भाईं कइलीय ना वतिया जे खय रे का र
एक ठेनि हमरऊ जा अडगड सुनि रे ले बयऽ
जाइ केनि फहि दह् ना समधिन के समुरे ज्ञाय
फहि दह् सोरह ना चिचियाह् कइ रे भइसइ
जवन फेरि एवइ ना सोवयाह् रे पेन्हाय
जल्दी से हमरेह् वऽपतिया मे भेजि रे देइहइ
सवा लाख पीहइ सवलवा जे वरि रे यात
नाहि नाहि आहर पऽहरवा जे जोहि रे लेवऽय
नाहि कुच याजिय लकुडियाह् रे हमाऽर
आजु पेरि करव वीवहवा जे अहीरे वय
लवटि करत वीयहया जे चलि रे जात
आजु हरदियावलि वीटियवा जे महरे कय
रहि जइहइ नऽगर अगोरिया जे दइरे पाल
आजु कहँ चवनेह् ना दिनवाह् राम समइया
फेहि पेरि ओहूय समइयाह् कइ र हाऽलय
आहो पहो गूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
महरिन मूनति ना वतियाह् रे अहीरऽय
आजु वाबू यड वहना अड गड डालि ए देठली
समधिय माटिय ना पइलेनि खय रे काऽरऽ
समधिय एवइ अपगडवा जे डालि रे दिहलेन
हमरव अविल पयतरा जे नाहि रे मयनी
एतनाह् जे गूनह् ना हलिया जे ओठियन कय
अउ फरि गऽइलि वऽघरिया या त्रिस रे माद
आजु भाई वुढ़िय ना ववना जे नाहि नो पऽड़त
एहो म मपल सरीरवा जे बऽन मलाल
आहि दीन बोललि ना धियवा जे वाई मजरिया
मईया तू मनयह् माहनवाह् रे हमाऽर

तुय भाई बड़ बड़ ना भड़ गड़ डालि रे देह लऽ
ससुर हमार काटीय कईलवा वा मय रे दाऽन
आजु भाई एकई अड़ गड़वा जे सासुर डललेनि
मइयाह् अकिल ठेकनवाह् वा नाहि रे तोर
आजु तुय सेर भर ना सोनवा जे लेइये लेवय
अब चलि जावह् सोनरवाह् केनि दूकान
आजु कहें देइदह् पातरवा जे पीटवाइ कऽ
के फेरि देवह् गोलसिया जे बन रे वाय
पेनियां में ओरेह् ना ओरवा जे सोर डोंटा
अब फेरि एकई ना डोंटवा में बीचि रे दे
जल्दी से भेंजि दह ना अहिरे के वरियतिया
एहि में नि पोहइं अहिरवा जे सब रे मद
जवने घरी सेर भरना सोनवांह् सिवचन लेहलेन
अब चलि गंयनह् सौनरवाह् के दूकाने
जाइ केनि सोरह पतरवा जे पिट रे वउलें
अब फेरि देलेनि गोलसियाह् गढ़ रे वाई
पेनियां में देलेनि ना डोंटवाह् सोर वनाई
आजु कहें पन्दरह ना डोंटवा जे ओर रे ओरी
सोरह में वरल ना वोचवांह् वाइ रे वीधय
आजु भइया ईहइ गिलसियाह् रे खरइया
अब भेजि देवह् अहिरवा के वरि रे यातऽ
एहि मेंनि पीहइं ना मदियाह् रे अघाई
ओहि घरी गईलि गीलसिया वाई गढ़ाई
उहे होइ गईलि गोलसिया तइ रे या रऽ
उहवां से लेइ कह् गिलसिया भेजि रे दिहलेन
जहं अहं जीरवह् ना वहतरि रे खेतार
अब जहं सवाह् ना लखवा रे वरियेयाऽत
वइठल वानह् मेंड़रिया देख रे मारी
ओहि ठिन भेजति गीलसिया लेई रे बानऽ
अब देइ देहलेह् कऽठइता केनि रे हाऽथ
···ओठियन लेइ रे देखऽ हंऽसत बानह् ना बुढ़वा
आजु कहें धनि धनि ना पनियांह् कहें छिट कऽय
उहे होति टीनह् ना कोईय देख रे बाय
आज कोइ गुनीह् मतियवा जे'बाइ रे मारी
अब भेज देलेह् बानह् रे चढ़ाय

अब भेजि देलह् गिलसियाह् लेइ बऽरतिया
भट्ठिह् देलेह् अगोरिया में तोर् रे बाई
आजु मद पीयइं ना एठियन बरि रे याऽतऽय
आजु भाई जिरवह् ना बहुतरि रे खेतारऽ
तब तक देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
महरिन कसीय ना भइली तई ये याऽरऽ
समधीय नाहीय ना बतियाह् मे ओनावऽ
समधीय अपनेह् अयेढिया बाप हो जात य
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ये सुवचन
भइयाह् मनवह् काहनवाह् रे हमाऽरऽय
चलि जाह् नदीय ना बेवराह् केई रे तीरवा
सवा लाख बइठलि बरतियाह् जह रे बाडय
जाइ केनि देइ दह् हुकुमिया समधीय कऽ

सवा लाख बारात का द्वारचार करना

ठाट केनि चलऽ दुअरवाह् बरि रे याऽतय
अब आत लागइ बरतियाह् महरा के दुअरा
आजु भाई होइहइ ना सदियाह् रे बिआहइ
एतना जे लेइ कह् धावनियाह् बाइ रे जातय
अउ फेरि देलेसि जाजिमवाह् पर रे काइ
आजु कहै सुनवह् ना भइयाह् ए बऽरतिया
अउ फेरि सुनिलह् गउरवा क सब रे लोग
यहोन के उल्टे हुकुमिया जे बाइ रे लागत
चलि बेगि ठाटइ बारातिया जे कई ए दऽ
चलि बेनि दुअराह् बरतियाह् रे लगइवह्
आपन भाई करवह् ना सदियाह् रे बिनाह
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
बालल बानह् दुलेरूवा जे अहीरे कऽय
जकर बानह् धरमियाह् दइ रे मालय
आजु कहै सुनवह् चमरवा ज बजवा कऽय
आजु भाई जेतनाह् ना बजवा के बज रे गीरय
ठटि बेनि अइसीय ना हथवाह रे जुझावय
एहि जउन नगर अगोरियाह् दइ रे पाऽल
जउने घडी नागर अगोरिया से चलि रे चलऽऽय
अपने नागर गउरवाह् गुज रे राऽतय

जाइ भाई रोकइ मजूरिया के कवन रे गन्तीय
एक एक गइयाह् ना देबई रे ईनामय
ओहि घड़ी बाजलि लकुड़िया बा अहीरे क य
सवा लाख भईलि बऽरतिया बा तइ रे यार
जेउनी घड़ी ऊठलि ना जिरवा जे खेतवा से
एकदम हलिल ना गलिया में जाइ रे जाय
ओहि घड़ी देखह् ना हलिया जे अहीरे क य
पलकी में झंखत ना दंतवा जे बाऽन दबाय
आजु कहँ हो हो ना दईवा मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् मोर लीलार
आजु भाई सांकरि ना गलिया बा ले अगोरिया
आजु फेरि कसमस बंजरियाह् लेइ रे बाय
आजु कवनो खटीय आपदवा जे परि रे जइहइं
कहं मोर घूमीय बीजुलिया जे तर रे वार
चललि बरतिया बा अहीरे क य
धइलेह् गल्लिय अगोरियाह् कइ रे खोरय
चलि केनि देखह् न अगवांह् कइ रे हाऽल
महरिन ले लेह् ना गुनवांह् बा बनाई
मड़ये में बइठल ना गुनवां जे सर रे दार
ओहि घड़ी बोलनह् गुवलवाह् लेइये ओठियन
आजु भाई संवरुय के डलियाह् देइ रे देबऽ
धरमीय नाचत कऽरगही जे चऽल्हि रे नाचय
एतना जउ सूनइ ना मलवाह् रे संवरूवा
ओकर भाई गयल बा मनवां बा कुम्हि रे लाय
आजु कहँ हो हो ना दइवा जे मोर नारायन
क्या बरम्हा लिखलह् ना मंझवांह रे लीलार
जब सेनि लेहलींय पयदवा जे हम पिरिथिमी
तब सेनि देखल ना गइयाह् कनि अड़ार
हम का डालब ना जतियाह, लेइ ये डलिया
कइसेह् नाचब करगही जे देखा रे नाच
एतना जे सूनत ना बुढ़वा ज बा कठइता
जरि मरि भयल ना दरियां जे बान खंगार
आजु कहँ सुनवह् ना एठियन लेइये लोरिका
बेटवा तूं संचेह पलकिया में रहि रे जा
एठियन देखिलह् ना बुढ़वा का मनु रे सइया

आजु भाई देखहू, ना हंसियाहू, रे हमाउर
.... ना गलिया बुढ़ बउरहवा
अब बुढ़ बइठल बयासीस जाइ रे हाथइ
आजु भाई लेइबहू, न हंसियाहू, हंयवा में
आगे आगे नाचत करगहीय जाइ रे नाचय
ठेकरेहू, पीटेहू, ना चलनि रे बारातय
सवा लाख ठेकनिहू, बजरतियाइ बाइ रे जाती
अब लगि गईलि दुअरवा जे अहीरे के
जवन भाई रहनहू, ना गुड़वाहू, दस रे बीसम
ओही भाई गयनहू, ना कुड़वाहू, पर लपटी
कुड़याहू, ले लेहू, वा हंसिया जे हंयवा में
नाचत आताहू, करगहीय देख हो नाची
गुंड़याहू गयनहू, ना कुड़वा पर लप रे टाई
आजु केन्हीं हाथइ ना पड़यहू, बड़ आन्हावइ
आज बुढ़ हाथेंह में लेने वा लट रे पाई
नाचत बाइइ बजरगहीय देख रे नाचय
जउने घरी तन्नीयं ना देहिया जे बाइ दो मउने
गुंड़याहू, गिरनहू, धरतिया में भह रे राय
फेनहू क गोड़इ ना हथवा जे टुटि रे गइनउ
बेहू मरि गयल बतीसवा जे देख रे दात
अब धयनेंहू ना दिलवाहू, राम समझया
केहि फेरि ओहूप समझयाहू, बड़ रे हालत्म
जउने घरी देखत न मनवाहू, वा मुअल्चन
दवरल आसहू, समधियाहू, फेनि रे आगे
समधीय आपइ ना हुठवंहू, तिर रे थाना
आजु भाई अपनें न हथवा के डाली नाहीं
केहू के छोरम अगोरियाहू, रे छोड़इहय
मुंनेहू, हमदं ना डनियाहू, सब रे लेवउ
दुन्नोहं रहि आइ ना दनवाहू, पय सिंगारय
ओहि घरी सुचेहू, ना हंसियाहू, दइये देहुनेन
सिवचन से लेहू, मड़उवा में घमि रे जाय
ओहि घरी सूनहू, ना हंसिया जे बटियन बउ
दुअराहू, मागति ना बानींय बाँर रे यांति
टहवा पर नउवाहू, बामनवा जे लेट्ये बईठन

अब फेरि होतइ दुअरवाह् पर कऽमान
आजु भाई दुअराह् ना होत बा दुअरे रइता
अउ फेरि होतइ तीलकवाह् रे समान
आजु दुअर पूजाह् दुअरवा क होये रे लगनऽ
आजु रव बाजत बजनवां बा उन रे हृद्द
आजु सवा लाखइ बरतिया अहीरे कय
छेंक लेह् बानीय महरवा के दर रे बाऽर
ओहि घरी दुअराह् ना होइ गयल खट रे करमा
अब फेरि नउवाह् बांभनवाह् ओठिये दिहलेन
अब चलि गयनह् आंगनवांह् मऽड़ये में
लेइ केनि भाजीय न बरवाह् के खियावय
आजु भाजी लेइ कह् दुअरवांह् चलि रे गयऽनऽ
जहवां पर टीकलि सफलवा बा बरि रे याऽतय
आजु कहैं पांचय लरिकवाह् रे उठउलेन
लोरिकाह् दहीय ना गुड़वाह् बाइ रे खातय
खाइकनि हाथइ ना मुँहवाह् रे पऽ खर तय
जाइके भाई बइठल पलकियाह् पर रे बाऽनऽ
तब तक सूनह् ना हलियाह् मड़ये कऽय
बोलत बानह् ना पंडित लेइये नउवा
पटकि देलेनि पातरवाह् मड़ये मे
देखत बानह् न सदिया के सन रे बन्हय
कब केनि बानीय साइतिया सदिया कऽय
कब केनि बानह् सइतियाह् सेनुरे कऽय
अब छोड़ि देइति ना सिरवाह् रे लीला रय
दिनवांह् दिनकइ झगड़वा जे छूटि रे जाऽत
चलि चलि नगर गउरवा अपने रे घऽरे
एतनांह कहत ना बुढ़वा जे बाइ कऽठइता
ओहि जउं ना दुअराह् अहीरवाह् दर रे बाऽर
अब सवा लाखइ बऽरतिया वा अहीरे कऽय
दुअरा पर बइठल मेंड़रिया जे बन रे वाय
ओहि घड़ी भितरी से हुकुमिया जे आइ रे गऽयनी
ऊव भाई पानीय पतरवा जे होइ रे जाय
ओहि घड़ी आयल ना नउवाह् रे हजाम्मय
अय भाई बइठल ना ओठियन रे बनाई
जउ कहैं आइलि समनियां वा लड़िकीय के

मड़ये मे वानह् ना ओकर देख रे भागउय
आजु धहुँ साठिय मोहारवाह् कह र हाउर
आजु भाई आयल ना देहियाह् रे सिंगारउ
आजु भाई वायलि वा सरियाह् रेसमिय कउय
जे मे भाई चारि चारि अगुरवा पर वान रे तारउय
ओहि भाई अइनीय ना सरियाह् रे चढ़ाई
आजु धहुँ वइठि ना गयनह् रे मड़उवा
होवय लगनह् ना कथवाह् र पुराउनउ
जउने घडी लहिपोय लहिववा व माग रे भइनउ
अव फेरि लेइकह् ना अहिराह् चलि रे गउयनउ

मजरी और लोरिक का विवाह सम्पन्न

आजु भाई सादीय वियहवा जे हात रे वानउ
एहि जउ नगर अगोरियाह् दह रे पाउलउ
जउने घडी सदियाह् बीवाहवाह् होइ रे गयन
अउ फेरि मागेह् सेन्हुरवाह् छुटि र जानउ
उहवा से उठलि वारातिया वा अहिर कउय
अउ फेरि हइयह मचनवा वा देखउ रे वाय
आजु भाई साधीय बीवहवा जे होइ रे गयनउ
मोहबर से छुटीय अहीरवा ज पाइ रे जाय
जउने घडी निकलि ना वाहर वान र जातय
अब मे बउरत पालगिया वा पर रे नाम
सब धनि आसीर ना यादवा जे लारिक लेतय
जाइवेनि वईठि पलगियाह् मे नि र वाय
जउने घडी उहा ना जउयह् रे वईठस
पलथिय ऊठलि ना आठियन सनि रे वाय
आजु भाई सदियाह् बीयहवा ज धइ धउ उठनउ
चलि गयनह् नदीय वेवरवाह् कइये तीर
जाइ वेनि जिरयाह् ग्रतरवा जे जाजिम परनउ
सबा साथ वइठनि बउरतिया वा मेड रे माउर
दिनवा राम समइयो मिह् फेरि आहू समइयाह् घइरे हाउल
आजु भाई चसविन पातुरिया ज हूर रे लगनी
भइवाह् तारत चिटुरिया पर याड रे ताउन
आजु भाई वइटइ ना मागवाह् गउरा कय
सूचत आइह् मगहियाह् ठाक र पाउनउ

अब फेरि होतइ दुअरवाह् पर कऽमान
आजु भाई दुअराह् ना होत बा दुअरे रइता
अउ फेरि होतइ तीलकवाह् रे समान
आजु दुअर पूजाह् दुअरवा क होये रे लगनऽ
आजु रव बाजत बजनवां बा उन रे हृद्द
'आजु सवा लाखइ बरतिया अहीरे कय
छेंक लेह् बानीय महरवा के दर रे बाऽर
ओहि घरी दुअराह् ना होइ गयल खट रे करमा
अब फेरि नउवाह् बांभनवाह् ओठिये दिहलेन
अब चलि गयनह् आंगनवांह् मऽड़ये में
लेइ केनि भाजीय न बरवाह् के खियावय
आजु भाजी लेइ कह् दुअरवांह् चलि रे गयऽनऽ
जहवां पर टीकलि सफलवा बा बरि रे याऽतय
आजु कहैं पांचय लरिकवाह् रे उठउलेन
लोरिकाह् दहीय ना गुड़वाह् बाइ रे खातय
खाइकनि हाथइ ना मुँहवाह् रे पऽ खर तय
जाइके भाई बइठल पलकियाह् पर रे बाऽनऽ
तब तक सूनह् ना हलियाह् मड़ये कऽय
बोलत बानह् ना पंडित लेइये नउवा
पटकि देलेनि पातरवाह् मड़ये में
देखत बानह् न सदिया के सन रे बन्हय
कब केनि बानीय साइतिया सदिया कऽय
कब केनि बानह् सइतियाह् सेनुरे कऽय
अब छोड़ि देइति ना सिरवाह् रे लीला रय
दिनवांह् दिनकइ झगड़वा जे छूटि रे जाऽत
चलि चलि नगर गउरवा अपने रे घऽरे
एतनांह कहत ना बुढ़वा जे बाइ कऽठइला
ओहि जउं ना दुअराह् अहीरवाह् दर रें बाऽर
अब सवा लाखइ बऽरत्तिया बा अहीरे कऽय
दुअरा पर बइठल मेंड़रिया जे बन रे वाय
ओहि घड़ी भितरी से हुकुमिया जे आइ रे गऽयनी
ऊब भाई पानीय पतरवा जे होइ रे जाय
ओहि घड़ी आयल ना नउवाह् रे हजाम्मय
अय भाई बइठल ना ओठियन रे बनाई
जउ कहैं आइलि समनियां वा लड़िकीय के

मड़ये मे वानह् ना ओकर देख रे मागऽय
आजु कहे साठिय मोहारवाह् कइ र हाऽर
आजु भाई आयल ना देहियाह् रे सिगारऽ
आजु भाई आयलि वा सरियाह् रेसमिय कऽय
जे मे भाई चारि चारि अगुरवा पर वान रे तारऽय
ओहि भाई अइनीय ना सरियाह् रे चढ़ाई
आजु कहे वइठि ना गयनह् रे मड़उवा
होवय लगनह् ना कथवाह् र पुराऽनऽ
जउने घड़ी सड़िकीय लड़िकवा क माग रे भइनऽ
अब फेरि लेइकह् ना अहिराह् चलि रे गऽयनऽ

मंजरी और लोरिक का विवाह सम्पन्न

आजु भाई सादीय वियहवा जे होत रे वानऽ
एहि जउ नऽगर अगोरियाह् दइ रे पाऽलऽ
जउने घड़ी सदियाह् बीवाहवाह् होइ रे गयन
अउ फेरि मागेह् सेन्हुरवाह् छुटि र जानऽ
उहवा से उठलि वारातिया वा अहिरे कऽय
अउ फेरि हुड़वड़ मचलवा वा देखऽ रे वाय
आजु भाई सादीय वीवहवा जे होइ रे गयनऽ
कोहवर से छुट्टीय अहीरवा जे पाइ रे जाय
जउने घड़ी निकलि ना वाहर वान रे जातय
अब के चऽरत पालगिया वा पर रे नाम
सब धनि आसीर ना वादवा जे लोरिक लेतय
जाइवेनि वइठि पऽलकियाह् मे नि रे वाय
जउने घड़ी उहा ना जऽइयह् रे वइठल
पलकिय उठलि ना आठियन सेनि रे वाय
आजु भाई सदियाह् वीयहवा जे कइ घऽ उठनऽ
चलि गयनह् नदीय वेवरयाह् कइये तीर
जाइ वैनि जिरवाह् खेतरवा जे जाजिम परनऽ
सवा लाख वइठलि वऽरतिया वा मेड़ रे माऽर
दिनवा राम समइया विह् फेरि ओहू समइयाह् भइरे हाऽल
आजु भाई पसनिन पातुरिया जे ठूर रे लगनी
भड़वाह् तारत विदुरिया पर वाड़ रे ताऽन
आजु भाई वइठइ ना लागवाह् गउरा कय
धूघत वानह् मगहियाह् ढोलि रे पाऽनऽ

अब फेरि होतइ दुअरवाह् पर कऽमान
आजु भाई दुअराह् ना होत वा दुअरे रइता
अउ फेरि होतइ तीलकवाह् रे समान
आजु दुअर पूजाह् दुअरवा क होये रे लगनऽ
आजु रब बाजत बजनवां वा उन रे हद्द
आजु सवा लाखइ बरतिया अहीरे कय
छेंक लेह् बानीय महरवा के दर रे वाऽर
ओहि घरी दुअराह् ना होइ गयल खट रे करमा
अब फेरि नउवाह् बांभनवाह् ओठिये दिह्लेन
अब चलि गयनह् आंगनवांह् मऽड़ये में
लेइ केनि भाजीय न बरवाह् के खियावय
आजु भाजी लेइ कह् दुअरवांह् चलि रे गयऽनऽ
जह्वां पर टीकलि सफलवा वा बरि रे याऽतय
आजु कहैं पांचय लरिकवाह् रे उठउलेन
लोरिकाह् दहीय ना गुड़वाह् खाइ रे खातय
खाइकनि हाथइ ना मुँह्वाह् रे पऽ खर तय
जाइके भाई बइठल पलकियाह् पर रे वाऽनऽ
तब तक सूनह् ना हलियाह् मड़ये कऽय
बोलत बानह् ना पंडित लेइये नउवा
पटकि देलेनि पातरवाह् मड़ये में
देखत बानह् न सदिया के सन रे बन्हय
कब केनि बानीय साइतिया सदिया कऽय
कब केनि बानह् सइतियाह् सेनुरे कऽय
अब छोड़ि देइति ना सिरवाह् रे लीला रय
दिनवांह् दिनकइ झगड़वा जे छूटि रे जाऽत
चलि चलि नगर गउरवा अपने रे घऽरे
एतनांह कहत ना बुढ़वा जे बाइ कऽठइता
ओहि जउं ना दुअराह् अहीरवाह् दर रे वाऽर
अब सवा लाखइ बऽरतिया वा अहीरे कऽय
दुअरा पर बइठल मेंड़रिया जे बन रे वाय
ओहि घड़ी भितरी से हुकुमिया जे आइ रे गऽयनी
ऊब भाई पानीय पतरवा जे होइ रे जाय
ओहि घड़ी आयल ना नउवाह् रे हजाम्मय
अय भाई बइठल ना ओठियन रे बनाई
जउ कहैं आइलि समनियां बा लड़िकीय के

मड़ये मे बानह् ना ओवर देख रे मागऽय
आजु कहें साठिय मोहारवाह् कइ र हाऽर
आजु भाई आयल ना देहियाह् रे सिंगारऽ
आजु भाई आयलि बा सरियाह् रेसमिय कऽय (२१९०)
जे मे भाई चारि चारि अगुरवा पर बान रे तारऽय
ओहि भाई अइनीय ना सरियाह् रे चढाई
आजु कहें बइठि ना गयनह् रे मड़उवा
होवय लगनह् ना कथवाह् र पुराऽनऽ
जउने घड़ी लरिकीय लड़िकवा क माग रे भइनऽ
अब फेरि लेइक्ह् ना अहिराह् चलि रे गऽयनऽ

मजरी और लोरिक का विवाह सम्पन्न

आजु भाई सादीय वियहवा जे होत रे बानऽ
एहि जब नगर अगोरियाह् दह रे पाऽलऽ
जउने घड़ी सदियाह् बीवाहवाह् होइ रे गयन
अउ फेरि मागेह् सेन्हुरवाह् छुटि र जानऽ (२२००)
उहवा से उठलि बारातिया बा बहिरे कऽय
अउ फेरि हइवइ मचनवा बा देखऽ रे बाय
आजु भाई सादीय बीबहवा जे होइ रे गयनऽ
कोहबर से छुट्टीय अहीरवा ज पाइ रे जाय
जउने घड़ी निचलि ना बाहर बान र जातय
अब के बऽरत पालगिया बा पर रे नाम
सब धनि आसीर ना बादवा ज लोरिक लेतय
जाइचे नि बईठि पऽलकियाह् मे नि र बाय
जउने घड़ी उहाँ ना जऽइयह् रे बईठल
पलकिय ऊठलि ना आठियन सनि रे बाय (२२१०)
आजु भाई सदियाह् बीवहवा ज चइ चऽ उठनऽ
चलि गयनह् नदीय बेवरवाह् बइये तीर
जाइ सेनि जिरयाह् खतरवा जे जाजिम परनऽ
सया साथ बइठलि बऽरतिया बा मेह रे माऽर
दिनया राम समइया बिह् फेरि आहू समइयाह् बइरे हाऽन
आजु भाई बसविन पातुरिया ज ठूर रे लगनी
भइवाह् सारत चिटुकिया पर बाह र ताऽन
आजु भाई बइठइ ना सामवाह् गउरा चय
हूमत याऽह् मऽहियाह् ढोलि रे पाऽनऽ

आजु कहँ रूठइ ना गंजवाह् वूटउल कऽय (२२२०)
धोरहीय मारत चीलमियां पर वान रे दम्मं
जलसा होतइ ना जीरवाह् वा खेताऽर
कहनांह देखऽना ओठियन रे वनाई
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कय
के फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽल
······अहीरवा जे जाजिमें पर
उय भाई लेइकह् गोलसिया रे उठावंऽय
पीयत बांनह् मदिलवाह् लेल रे कारी
ओहि घड़ी पीयइ ना गुरूवाह् रे अजइया
घोवियाह् नऽसाह् में बांनह् मत रे वाऽला (२२३०)
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
अब फेरि होलेय ना रतिया बड़ रे वारय
अव फेरि गईलि वारतियाह् नसवा में नाची
वोलत वाड़इ ना वुढ़वाह् देख रे वातय
आजु कहँ वेटवाह् ना सुनिलह् वीर रे एठियन
कहना मनवह् ना इहंवा रे हमाऽरय
सवा लाख मूतति वारतिया वाइ हमाऽरय
वेटवाह् जारत पलितवा रहय तोहाऽरय
केहू कनी चीजइ विस्तुरवा ना रे होइहंय
नाइ फेरि कवनि जाववियां विहना देवय (२२४०)
जेनकर टुटहिय पनहिया हटि रे जइहंऽय
विहनाह् मगिहंइ चाढ़नवां केनि रे घोड़ा
जेनकर टूटहीय डंड़इया हटि रे जइहंय
विहनाह् मंगिहंइ ना ढलिया तर रे वाऽ रऽ
जेनकर फटहीय कामरिया जे डगि रे जइहंइ
विहना हमसे मागीय पुरवहीय देख रे राल
वेटवा तूं पूरा पहरवा जे देखऽ रे कऽरऽ
सूतति बाड़इ साकलवा जे वरि रे याति

लोरिक की मृत्यु की आशंका पर मंजरी का करुण क्रंदन—
गांगी नाऊ का मंडप में जाना

जेवने घड़ी आधीय ना रतियाह् निच रे लइयां
मंजरीय निकलि मड़उवा मेंनि रे बईठल (२२५०)
देखले रहई सरूपवा जे लोरिके कऽय

अउ फेरि अढिय पीछउरीय केनि रे ओढि कय
अहीरा के देखलेसि सरीरवाह् रे मिलाई
ओहि दिन रोवइ विटियवा जे महर कय
आजु भाई हमरेह् फूठहियाह् केनि रे वरने
जेकर अइसन ना ललवा जे जूझि रे जइहय
मइयाह् धाइ वह् धनियवा जे मरि रे जइहय
हमवेह् बहुत सोंचीय नह् मप रे राउअ
एतनाह् सोचति ना धियवा धा महरे कय
जेकर दावन मजरियाह् बाइ रे नाउम
मजरीय अइसिय रोवइयाह् रांइ ये देहलेस
अब नाहीं सहल धमोरिया मे देख रे जात
आजु महय मजरीय ना केनिय रे रोइबवा
भउरलि जाति था सारुनिया ब देख रे पात
आजु महय मवनेह् ना दिनबाह् राम समइया
के फेरि ओहीय समइयाह् कइ रे हालय
अउ फेरि एतन ना बतियाह् सोरिका मूनय
आपन देखत ना थानह् रे धाराती
ओहि दिन हहरल मउगदवा बीर रे सोरिका
ओकर रोईन मुनीय वा ओहि रे दम्मय
के भाई रोवति बीटियवा जे बा बमने कय
चाहि होइ गइनीय चउमवाह् पर रे राह
के फेरि रोवति बीटियवा धा धनिया कय
जेकर पियवाह् लदनिया वा चलि जाय
के फेरि रोवति बीटियवा वा बयथे कय
जेकर पियवाह् लीधनिया या चलिये जात
जउं फेरि रोवति गोतिनिया या महरे कय
जेकर घटि गयल भीतिउरी कइ बाइ रे भात
जवनेह् ना दिनवाह् राम समइया
सोरियाह् बोलल ना मनवाह् रे बिचारी
जाइ मेनि मूतल हाजमवा वा देख रे गगिया
ओकर धइकह् चेथुरवाह् लेइ ओठावाउय
आजु बहें बोलल ना बतिया वा अर रे पाई
गगियाह् मुनबेह् हाजमवाह रे हमाउरय
एक टेनि रोवति जननिया बिलवा कय
ओकर दायनवां रोवइ बाइ रे सागत

हमसे वूते सहलवा नाहिं रे जाला
के फेरि रोवति विटियवा वंभ्रने कय
होइ गइलीं ओहि चउकवा पर रे रांड़
जाइ के नउवाह् पातह् ठेकनवा तूं ए लगावऽ
रोवति वाड़ इ तीवइयां जे अधि रे राति
तव फेरि वोलल ना गगिया जे वाइ हजमवां
मालिक मनवह् कहनवांह रे हमार
आजु हम आधीय ना रतिया जे निच रे लइयां
कइसे हम जावइ अगोरिया जे दइउ रे पाल
गलिया में चोरइ ना चोरवा जे लेइए करिहंय
आजु भल मारीय जीनिगिया जे करिहें खराव
एतना जे कहत ना वतिया जे ओठियन वाय
अउ फेरि आधीय नीवड़यांह् देख ए रात
आजु तोहार जातीय ना नउवा कहउ रे गंगिया
एक वुधि लेवेह ना ओठवा में उपरे राय
तव फेरि वोलल ना गंगिया जे वाइ हाजमवां
मालिक मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु हमार छत्तीस ना वुधिया जे लेइए काने
आजु मोरे गऽईलि ना अन्दर रे घुसूर
एक्कउ वुद्धिय न आवत नाहिं नीं कामय
का हम कहव जावविया जे एहि रे दाम
ऐ राम, राम, राम राऽम हो राम
आजु कहें रामइ ना सिरजै जे वान रामायन
लछिमन सिरजइं ना कसिया जे देख पयाऽग
ऊहे फेरि सीतइ सिरजले जे वानीं ए नइहर
जहाँ जाइके धनुस तोरेलें वांड़ रे भग रे वाऽनइ
ओहि दिन वोलल अहीरवा जे वीर रे लोरीक
गंगियाह् सुनवेह् हजामवांह् रे हमाऽर
देखु भाई अधिय ना रतिया जे निच रे लइया
अव तूंय जावह् माहरवा जे केनि रे घरे
जाइ केनि कहि देह् ना वतिया तूं अर रे थाई
कहि दह् सांभरि ना नुनवा क हवं खवइया
अव पेलि देहलेंह वा वसहा जे देखि रे नूनाऽ
उन्हें नात उलटि ना पनियां जे जालऽ पीवअले
अव तोहार दुल्लर पीयसले जे वाऽन दामादय

ओहि दिन बोलिहइ ना समुवा जे मोरि मदागीन
कहिहइ जे नादीय ना तिरवा जे वाडइ वराती
दुल्लर के देतह् ना पनिया जे आनि पियाई
नाहि भाई दसबीस ईनरवा जे बाडय अगोरी
धीचि कनि देतह् ना जलवाह् रे पियाई
कहि नद्दीय कऽ पनिया जे बाडे वहुलुया
इनरा क पानीय यानइ नह् गह रे डोरी
आजु कहय सावरि ना बुइया था मूरवा कय
नाहिनीय पहुँचत रे समियाह् गइ र डोर
कहि दय् ठडाह् ना पनिया जे कलसा कय
अव सोहार दुल्लर पीयसले जे थाडे दामाद
फिन रेंगल ना गगियाह था हजामऽ
अय धइ लेलह् अगोरियाइ् यइ ए थोरी
नउवाह् छपकत दवपतवा था चलि रे जाऽतऽ
अव चलि गयनह् माहुरवा य दर रे बाऽर
आजु भाई बानीय ना महराह् घरे गोतिनिया
मडये मे सूतलि ना पटयाह् याइ उघारी
मजरीय वईठि मडउवाह् मुगवा के
रावति याडइ ना जारवाह् रे बेजाऽरय
आजु कहे हमरेह् फूठइयाह् सेनि रे कऽरने
जिनकर अइसन ना ललवा जे जुझि रे जईहय
मइयाह् थाइवेह् पनियवा जे मरि रे जइहअ
हमवेह् वहुत परीय नह अप रेराञ
नउवाह् जाइ पेह् दुअरिया पर रे ठाड
अव नाहि वोलत ना वोलिया वाइ रे चाऽन
नउवाह् धारिय परगवा पिछ रे हटि कञ
आजु कहे मरलेसि यथरिया वरि रे याऽरय
गजरी के पानह् सयदिया जे परि रे गइऽनी
धियवाह् डावलि ओठियाह् सेनि रे वाय
जवने घरी जाइ कह् ना महरिन मे पेटे गीरलि
महरिनि ऊऽलि याडइ ना जव रे लाइ
आजु कह गुनवेह् वीटियवाह् मोरि मजरिया
एठियन तू मनवेह् बाऽनयह् र हमाऽर
विटियाह् साझेह् ना सिरवा मे परल रे सेनुर
अव आधिय रतियाह् गईस तूह मस रे साथ

ओहि दिन बोललि ना धियवाह् जे महरे कऽय
जेकर दायन मंजरिया जे बाइ रे नांव
मइया तू अइसीय मेंहनवा जे मारि रे देहलऽ
कुछ मोरे बूतेह् सहलवा बाइ नाहि जाऽत
न त माई सिरवाह् परन नह हमरे सेनुर
न त आधि रतियांह् गईलींय बउ रे राय
आजु भाई दुअरांह मनइया जे एक ठे बाऽनय
पूछि ल्या घरातीय नाह उवंह् कि बाराति
ओहि दिन निकलल ना धियवा बाइ महारिन
दुअरा से पूछति ना बूतिया बा अर रे थाई
आजु भइया कांह हं ओतनवा जे हवे तोहार गोतन
कहवां पर टूटीय गईलि बाह् बुनि रे याद
आजु तूं कहां चढ़इया जे कइए दीहलाऽ
अब तू अयलह् ना आधीय लेइ रे रात
ओहि दिन बोलल ना गंगिया जे बाइ ए नउवा
मलिकिन मनबह् काहनवांह् रे हमार
जइसे हम लागीय ला नउवा जे लोरिके कय
ओइसइ लागब ना नउवाह् रे तोहार
आजु तोहार दुल्लर दऽमदवा जे बान पियासल
मंगलेनि ह ठंडह् कलसवा क देख रे जल
ओहि दिन बोलालि ना धनवां जे बानी रे महरिन
नउवा तूं मनबह् काहनवांह् रे हमार
आजु भाई नदीय ना तिरवा पर बाइ बरतिया
दूलरू के नदीय ना पनियां जे देत पियाय
नाहिं भाई दसबीस ईनरवा जे बाइ अगोरियां
भरि केनि देतह् ना जलवा जे ओन्हे पियाय
ओहि दिन बोलल ना गंगिया जे बाय हाजमवां
मलकिन मनबह् काहनवांह् रे हमार
आजु कहे नद्दीय ना पनियां जे बाइ बहतुआ
ईनरा क पानीय बानइ नह गहं रे डोल
आजु कहीं सांकरि ना कुइयां बा रजवा कऽय
नाहिंनिय पहुंचत रेसमियां क देख रे डोर
मंगलेन ह् कलसाह् ना ठंडाह् जुड़ रे पनिया
अब तोहार दुल्लर पियसले जे बान दामाद
ओहि घड़ी निकललि ना धनवांह् बाइ ये महरिन

उव भाई गइनीय दुअरवाह् भई हो ठाढ
आजु तू हवह् घरतिहा की वरतिहा
हमके तू देवह् सरेखियाह् रे लगाई
ओहि दिन बोलल ना गगिया बाइ हजामऽ
दरियाह् करई ना वेडवा हो जवाव
हम जइसे लागी लऽ नउवा लोरिके कऽम
ओइसइ हईय ना नेउवा हो तोहार
एतना जब कहत ना बतियाह् लेइ ये बानय
महरीन अनुपीय क कइले जे बाइ पुकार
ओहि घडी अनुपी ना अनुपिय बाइ पुकारत
अनुपीय नीचलि आगनवा मे भइली रे ठाढ

मंडप मे गांगी नाऊ की दुर्गति

आजु कहैं सुनवेह् भतीजिन मोरि अनूपिया
नउवा के सेन्हुर कजरवा जे बइ रे देय
एन्हे भाई एतनीय घाघरियाह् पहिरे राइबे
कल सेनि घनरस ना देवेइ टिकुली चिटिकाय
आजु कहैं नाचइ ना नउवाह् लेइ कऽरगही
मडये मे बडवड बीपतिया जे बइ रे जाय
आजु सवा लाघइ गोतिनिया जे मोरि रे बानी
गूतलि नाचट उमरवा जे देख रे बाय
जाइ केनि निसाह् ना नउवा जे करी बरतिया
अब फेरि हसिहइ गउरवा के सव रे लोग
ओहि घरी निकललि ना घियवाह् रे अनूपिया
दधिनीह् सेइ आई ना सपियाह् रे उतारी
नउवा के सेनुर काजरवा जे बइये दिहलेन
मयवाह् घनरस टीकुलिया चट रे कउलेन
ओन्हे भाई रतनीय घघरिया बा पहि रे रवले
अब गइयइयाह् ना नचियाह् बाडे नचावत
गगियाह एवइ ना हथवा घर रे खपरा
एक हाथ धरत बाडइ ना धरि ए हाई
ओहि घडी नाचइ ना ओहिय रे अगोरिया
रोयत बानह् रकतवा बइ ए आस
ओहि घडी नाचत नाचतवा थकि रे गयल
नाहि जाइबे गीरस घरतिया भइ रे राई

आजु कहँ महरिन ना लखवाह् रे दोहइया
आल्हर गयल परनवांह् रे हम्मार
ओहि दिन बोललि ना धनवां जे बाइ ए महरिन
अनुपीय बन्नई ना नचिया जे कइए दे
नउवा क सेनुर काजरवा जे धइये देवे
चनरस टिकूलवा आपन नह रे उतार
एकर भाई रतनीय घंघरिया जे छोड़ रे वइवे
एन्ह देदऽ ठंडाह कलसवा क भरि रे लेइ
आजु लेइ जातह् ना जिरवाह् रे खेतरवां
जहां दुल्लर पीयसले जे बाड़ दामाद
नउवाह् आपन फजिहतिया ना रे कहि हंय
ना त जाइ कहिहंइ न निन्नवा रे हमाऽर
ओहि घड़ी रेंगलि ना धनवां बाइ अनूपिया
अब हलि गईलि कोठरिया में नि रे वानी
जाइ कनि मांझिय ना पलवा बाइ रे धऽरअ
अब धरि लेह लेह् ना लोटवा भरि उठाई
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् मंऽजरी कऽय
मंजरी देखत अनुपिया केनि रे वाड़य
अब घिया हहरलि ना धनवां बाइ मंजरिया
आजु बाबू जवन बारफवा जे माघ पूस कऽय
ठाड़इ चोलाह् ना गिरि जाइ जरि रे जाई
जउने घरी पीहइं ना सइयां सुख रे नन्नन
ओनकर आल्हर करेजवा जे जरि रे जाय
बिहना होइहंइ ना एठियन रे भुरूहरा
पुरुबइ देइहंइ कउववाह् देखऽ रे रोर
अब लागि जाई झगड़वा जो बरिरेयाऽ रय
कइसेह् थमिहंई ना लोहवा सइंया हमार
एतना जब कहति न बतिया जे बाई मंजरिया
ऊय भाई गईलि दुऽवरिया के देखऽ रे छोर
ओहि घड़ी माघीय ना पलवा के फेंकि रे दिहलेन
अउ फेरि फगुनीय कालसवा में धर रे देन
आजु कहँ जऽलइ ना भरि दे कलसा में
अब फेरि ले लेह् ना जऽलइ रे टेकाय
जवने घरी लेइकह् ना जलवाजे गंगिया रेंगल
महरीन बोलति लारमवा क बाइ रे बोल

आजु यहँ सुनवह्, ना नउवाह्, मोर हजमवा
एठियन मनवेह्, काहनवाह रे हमार
जाइ केनि कहि देह्, सनेसवा रे दुलरूय से
ओनसे कहेय ना बतियाह्, समु रे झाय
कहि देह्, एईल फुले रउवाह्, बन रे बेईल
एक फूल फूनलि चमेलिया बा कच र नाऽर
कहि दह रतिहइ अहीरवा ज लाढि र जइहइ
नाहि दिन सूरूज ऊगल जाई कुम्हि रे लाइ
रँगल ना गगियाह्, बाई हजमवा

लोरिक का चुपके से मजरी से मिलने जाना

चलि गयल जिरवाह्, न बहतरि र बेताऽरय
उहवा पर जरत पहरवा बा लोरिके कऽय (२४७०)
सवा लाख सूतलि बरतियाह बाइ र जाई
जवने घरी जुटि गयल ना नउवाह्, लेइये ओठियन
लारिकाह्, पूछत ना हलियाह्, बाइ र चाली
नउवाह्, कवनि जननिया ज रावति र रहनी
आजु भाई आधिय ना रतियाह्, निच रे लइयऽ
आकरे पर कवन मोसीबति परल रे रहनीं
तब फेरि बोलल ना मलयाह्, बाइए गगिया
मालिक मनवह्, काहनवह रे हमारऽ
अउ भाई तोहरइ बीयहिया जे बइठ कऽ रोवली
ओइ जउ भाजह्, मडउवाह्, केनि रे बीचय (२४८०)
का जानी कायेह्, मोसीबत ओन्हे रे परली
रोवत रहनीय ना जरयाह्, र बेजारय
मगलीय कलसाह्, न ठडवाह्, जल रे पनिया
लेइ केनि आवत ना रहली जे दुअरा पर
सामु तोहरइ ना कइलेह थानी बतावति
कहली जे एईल फूनेलि बाह्, बन र बेईलि
एक फूल फूनल बा चमेलिया कचरे नाऽरय
कहि दह्, रतियाह्, अहिरवा जे लोढ़ि र जइहय
नाहि दिन सूरूज ऊगत जाइ कुम्हि र साय
आहि दिन बोलल अहीरवा बीर रे लोरिका (२४९०)
दरियाह्, करइ ना बेडवाह्, रे जवाबऽ
आजु मोरे सावह्, ना सयवा बरि र बतिया

आजु कहैं महरिन ना लखवाह् रे दोहइया
आल्हर गयल परनवांह् रे हम्मार
ओहि दिन बोललि ना धनवां जे बाइ ए महरिन
अनुपीय बन्नई ना नचिया जे कइए दे
नउवा क सेनुर काजरवा जे धइये देवे
चनरस टिकूलवा आपन नह रे उतार
एकर भाई रतनीय घंघरिया जे छोड़ रे वइबे
एन्ह देदऽ ठंडाह कलसवा क भरि रे लेइ
आजु लेइ जातह्ना जिरवाह् रे खेतरवां
जहां दुल्लर पीयसले जे बाड़ दामाद
नउवाह् आपन फजिहतिया ना रे कहि हंय
ना त जाइ कहिहंइ न निन्नवा रे हमाऽर
ओहि घड़ी रेंगलि ना धनवां बाइ अनूपिया
अब हलि गईलि कोठरिया में नि रे बानी
जाइ कनि मांझिय ना पलवा बाइ रे धऽरअ
अब धरि लेह लेह् ना लोटवा भरि उठाई
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् मंऽजरी कऽय
मंजरी देखत अनुपिया केनि रे बाड़य
अब धिया हहरलि ना धनवां बाइ मंजरिया
आजु बाबू जवन बारफवा जे माघ पूस कऽय
ठाड़इ चोलाह् ना गिरि जाइ जरि रे जाई
जउने घरी पीहइं ना सइयां सुख रे नन्नन
ओनकर आल्हर करेजवा जे जरि रे जाय
बिहना होइहंइ ना एठियन रे भुरूहुरा
पुरुबइ देइहंइ कउववाह् देखऽ रे रोर
अब लागि जाई झगड़वा जो बरिरेयाऽ रय
कइसेह् थमिहंई ना लोहवा सइंया हमार
एतना जब कहति न बतिया जे बाई मंजरिया
ऊय भाई गईलि दुऽवरिया के देखऽ रे छोर
ओहि घड़ी माघीय ना पलवा के फेंकि रे दिहलेन
अउ फेरि फगुनीय कालसवा में धर रे देन
आजु कहैं जऽलइ ना भरि दे कलसा में
अब फेरि ले लेह् ना जऽलइ रे टेकाय
जवने घरी लेइकह् ना जलवाजे गंगिया रेंगल
महरीन बोलति लारमवा क वाइ रे वोल

आजु कहँ सुनवह् ना नउवाह् मोर हाजमवा
एठियन मनवेह् काहनवाह रे हमार
जाइ बेनि कहि देह् सनेसवा रे दुलरूय से
ओनसे कहेय ना बतियाह् समु रे झाय
कहि देह् एईल फुले रउवाह् बन रे बेईल
एक फून फूनलि चमेलिया बा कच रे नाऽर
कहि दह रतिहइ अहीरवा ज लोढ़ि रे जइहंइ
नाहि दिन सूरुज ऊगत जाई कुम्हि रे लाइ
.......रँगल ना गागियाह् बाई हजमवा

लोरिक का चुपके से मंजरी से मिलने जाना

चलि गयल जिरवाह् न बहुतरि रे खेताऽरय
उहवा पर जरत पहरवा बा लोरिके कऽय (२४७०)
सया लाख सूतलि बरतियाह् बाइ रे जाई
जबने घरी जुटि गयल ना नउवाह् लेइये ओठियन
लोरिकाह् पूछत ना हलियाह् बाइ रे चाली
नउवाह् कवनि जननिया जे रोवति रे रहनी
आजु भाई आधिय ना रतियाह् निच रे लइयऽ
ओकरे पर कवन मोसीबति परल रे रहनी
तब फेरि बोलल ना मलवाह् बाइए गगिया
मालिक मनवह् काहनवह रे हमारऽ
अउ भाई तोहरइ बीयहिया जे बइठ कऽ रोवलीं
ओह जउ माजेह् मडउवाह् केनि रे बीचय (२४८०)
का जानी कायेह् मोसीबत ओन्हे रे परली
रोवत रहनीय ना जरवाह् रे बेजारय
मगलीय कलसाह् न ठडवाह् जल रे पनिया
लेइ बेनि आवत ना रहली जे दुअरा पर
सासु तोहरइ ना कइलेह बानी बलावति
कहली जे एईल फुलेलि बाह् बन रे बेईलि
एक फूल फूनल वा चमेलिया कचरे नाउरय
कहि दह् रतियाह् अहिरवा जे लोढ़ि रे जइहंय
नाहि दिन सूरुज ऊगत जाइ कुम्हि रे लाय
ओहि दिन बोलल अहीरवा बीर रे लोरिका (२४९०)
दरियाह् करइ ना बेडवाह् रे जबावऽ
आजु मोरे साथह् ना सखवा बरि रे यतिया

सूतल बाड़इ ना जिरवाह् रे खेतारऽ
आजु मोर अकसर पहरवा जे बाइये एठियन
कइसेह् करइ जाईह् ना ससुरे रारऽ
ओहि दिन बोलल ना गंगियांह् बाइ हजामऽ
मालिक जाइ कह् करह नाह ससु रे रारी
घुमि-घुमि करब पाहरवा जे एहि अगोरिया
जाइ केनि घूमीय आवह् ना ससु रे रारी

लोरिक की वेष-भूषा

ओहि दिन अंगवाह् ना पहिरत बाइ अंगरखा (२५००)
गोड़वा में गूलई बदनियांह् रे तमाय
आजु कहँ तरकुस ना गूजवा बा पनहीय कऽय
आजु बीर ले लहं् ना एंड़वाह् रे चढ़ाय
इय भाई साठीय ना गजवाह् कइ दुपट्टा
अब बीर बान्हत ना फेटियाह् वाइ सम्हार
आजु भाई छप्पन ना छुड़ियाह् मोर कटारी
अहीरे के झूकलि वऽगलिया में तर रे वार
आजु कहं बायें ना हथवां जे लेइए ओड़निया
दहिनेह हाथेंह् बीजुलिया बा तर रे वार
अब धइ ले लह् पगड़िया जे लरमें कऽय (२५१०)
जेमे भाई मेघइ डबरूंवा बा घह रे रात
जवने घरी रेंगल ना बानह् लेइ बराती के
जइसेह् दोमति हथिनियां बा चढ़ि रे जात
कहँ बरत दीपकवा वा दुअरे कऽय
गेसिया ना जरत ना बानीह् एहि रे दम्मय
जेवने घरी देखइं अहीरवा जे बाइ रे आवत
आजु भाई बेलकुल दुअरियाह् बन्न रे भइलीं
आजु कहँ एकक केवरवाह् केनि रे बीचवां
लोहवा के देलेन ना मूसर पहि रे राई
ओहि घरि दुअराह् बोलल बा दुअरे रइता (२५२०)
खिरकीय बोलल बानइनह् ना कोत रे वाऽलय
अहिरिन कऽ तोहकेह् बलउवा वा भीतरीय में
जइसीय कूब्बत ना होई तसि ए जावऽ
एतना जउ कहत न दुअरा क दुअरे रइता
खिरकी के बोलत बानह् नाह् कोत रे वाल

जवने घरी चारिय परगवा जे पाछिन [illegible]
अहिराह् उठन ना एडवा जे देय लगाय
ओहि घडी टूटि गयल मूसरवा जे सोहवन [illegible]
घडवाह् गिरनी केवडिया जे भह र राय
आजु भाई पहिलाह् डेवढ़वा मे हलि रे गयना
दुसराह् मारत हूमचवा जे पुनि रे वा
आजु कहें अइसन ना एडवा जे वाइ चढवले
आयाह् दनेह् देवलिया जे गिरि रे जाय
ओहि घडी रेंगल अहीरवाह् ज रेंगावल
कुरसीय घईलि मडउवाह् मनि र वाय
जाइ के भाई वायी कुरसियाह् पर रे वईठल
आजु परि गयल ना सुगवाह् पर न गाह
आजु कहें आजमगढवा क रहल र वढई
ऊय भाई सुगह् खम्हियवा जे वाडे उरह
जेतनाह् धनइ ना पुजिया वा लोरिके कज्य
उहे भाई सुगा खम्हियवा मे देह् उरह
आजु जेतना पूजीय ना गउवाह् र भइसिया
सब भाई दलेसि खम्हियवाह् र उरह
आजु कहें छोटइ ना घरवा या पितरीय वय
मितराह् वहुत वानइ ना फर रे हार
दुअरा पर वानह् ना पेडवा जे [illegible]
घमाह् गानह दुअरवा पर [illegible]
आजु कहें वायेंह् ना दहिनह् [illegible]
दहिनेह् वानह् दुम्नाया [illegible]
जबर भाई थाने प मीवनवा [illegible]
दुइ सून परत ना पुबवाह् [illegible]
आजु कहें धवनेह् ना [illegible]
देथि केरि [illegible]
नाव [illegible]
ऊह भाई [illegible]
महरिन [illegible]
दुल्लर [illegible]
आठि दिन [illegible]
[illegible]
[illegible]

मंजरी के गयल करमवा वाइ रे जऽरी
भइया जे अइसन मंजरिया जे भर रे रहलीं
काटि केन देतह् ना सोनवां में खहि रे राय
आजु कहीं कइ दिन विटियवा जे हमरे जीहइं
कइ दिन इहे अंगुरी क वतइहंइ देख रे सान
एतना जे कहति ना धनवां जे वाइ ए महरीन
भइयाह् वोलत सुवच्चन लेइ रे वाय
आजु कहीं सुनवेह् वहीनियां जे मोर रे महरीन
एठियन मनवेह् काहनवांह् रे हमार
जउने घड़ी नागर गाउरवा जे हम रे गइलीं
अउ वर लेहलीं ना हमहूँय रे वरेख
जइसेह् पिंजड़ाह् में सुगवा जे पढ़इ रे ओठिन
तइसइ वोलइ ना वरचा जे सीता रे राम
आजु कहीं अवतइ अगोरिया में का ए भयनऽ
आजु भाई मंजरी क करमवा जे जरि रे जाय
आजु कहीं सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
वोलति वाड़इ ना धनवांह् ओनकर रे सासू
आजु भाई अइसइं ना रोटिया क रहतंई खरचा
आजु कहीं सुनवेह् विटियवाह् मोरि अनुपिया
आपन सेनुर काजरवा जे कइये लेवे
रतनीय लेवेह् घंघरिया तुंय पहीरी
आजु भाई नचवेह् कारगहीय लेइये नाचो
विटियाह् कतहूंय ना नचिया नाचत जायऽ
जाइ केनि मारह् दुलेरूवाह् आगे रे तालऽ
ओनकेह् वऽरीय खूदुकवा जे गलवा में
दुल्लर वोलतह् ना हमरउ रे दामादऽ
ओहि घरी सेनूर काजरवा में धियवा जे कइले
वत्तीस ले लेसि ना अमरन आपन वनाई
नाचइ लागलि करगहीय लेइ नाची
ओहि घरी सूनह् ना हलिया ओठियन कय
अनूपीय नाचत नाचतवा थकि रे गइलीं
ना त अहीर ताकत मलकवा वाइ उघारी
ओही घड़ी जोदलि ना ससुआ वाइ रे महरीन
वोलत वानीय ना वोलिया रे कुवोलऽ
आजु भाई अइसइ ना रोटिया क रहतइं खरखर

गउरा मे रहतंह् ना बरवा रे बुढाऽतय
ओहि घरी बोलल अहीरवा जे बीर रे लोरिका
सामुय मनबह् काहनवाह् रे हमार
आजु कहँ अइसइ ना रोटिया क रहतिउ खरखर
अइसिह् फिल्लह् बोलवले बा रति रे वार
आजु कहँ सतयँह् ना जनमलि पेट रे पोछनी
तब हम देलह् खाबरियाह् रे लगाय
आजु भाई तोहरेह् नअरवाह् चढि रे अइनो
मेहनाह् मारति बाडिय ना वड रे यार
ओहि घडी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
ओहि जेउ नागर अगोरियाह् कइ ए हाऽल
एतना ज सूनति ना धनवाह् धाइ अनुपिया
महरिन हसलि थपोरियाह् रे लगाई
तब फेरि बोलल अहीरवा वा बीर रे लोरिका
सामुय मनवह् ना अम्माह् रे हमाऽर
आजु हम जीयत बढइया के जउ रे पाई
अउ दुइ भागेह् देईत ना ढालि रे थाई
आजु जेतन धनई ना पुजिया रे हमारऽ
ऊ लिखि देनेस ना गुंगियाह् रे उरेहय
आजु कहँ मइयाह् बाखिलवा जे दुनो जुटाइ कऽ
आजु भाई एकइ खटियवा पर देने मुताय
आजु भाई देखली ना हमहँय ओकर चलित्तर
गोस्साह् याढलि सरीया मे मोरे रे बाय
जउने हम जीयतेह् बढइया के जउरे देखे
अउ दुइ भागेह् देइति ना ढोढि रे याय
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् आठियन कऽम
अउ फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ ए महरीन
अनुपी मनयेह् भतीजिन रे हमाऽर
इन्हें भाई गादीय गीरिदवाह् रे लगइवे
गोनवा क देयेह् ना मचवाह् रे डसाई
गदियाह् सेजेह् ना ओठियन रे लगाई
दुन्नर के ले जोह् पलगिया रे चढ़ाई
उहया पर सुतिहइ ना दुलरूय रे दमादय
ओहि घरी आगेह् ना अगवा जाइ अनूपिया
पिठवाह् रँगल ना लोरिका धाइ रे आऽनय

ओहि घड़ी बोलति ना धियवा वा महरे कऽ
जेकर भाई दावन मजरियाह् बाड़ रे नाव
सइयाह् तोहरइ ना छोड के जे आन क ना होवइ
आजु कहँ बिचवाह् धरह् ना तर रे वाऽरऽ
एक बरे तूहइ करह् ना मवि र सासय
एक थरे हमहूँय मरव ना मवि रे सासऽ
आजु कहँ भइयाह् बहिनियाह् के नतइया
आजु फेर सूताह् पलगिया पर लेल र कार
ओहि घड़ी दूनोह् ना जोडियाह् सुति रे गइनऽ
अहीरे के लागलि नीदरियाह् देख रे बानी
उठि कनि बइठल ना धियवा वा महरे कऽ
देखत बाड्य आहीरवाह् मइ सरूपइ
ऊप भाई दावनि आगुरिया रे चवानी
आजु कहँ हो हो ना दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मझवाह् रे लीलाऽर
आजु कहँ हमरेह् जूठइयाह् केनि रे करने
जिनकर अइसन ना ललवाह् जुझि रे जइहय
मइयाह् खाइवह् कनियवा जे मरि रे जइहऽ
दिनवाह् दिननेह् लीखीय जाई अप रे राधय
ओहि घरी मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
देखति बाड्ह् अहीरवा के देखऽ सरूपय
ओहि घरी हहरल ठोकति बाह् तक रे वीरऽ
आजु बाबू कवनेह् ना जतया के खइले पीसल
कवनेह् पीयलेन सागरया कइ र नीरऽ
मजरी पे कवनेह् खटियवा लेइ सुतवलेन
एहँ एडल खटियवा कइ रे बाधऽ
आजु कहँ हमरेह् जूठहियाह् केनि रे करने
इय धीर आलर ना तेजलेनि रे परान
एतना सोचत ना सोचत रे मजरिया
नाहि फेरि रोदन ना कइले वा बरि र यार
आजु कहँ मजरीय ना केनिय ना रोइववा
अहीरा क भीजिय गईलि बा दुल रे हाड़
ओहि घरी उचटलि ना नीदिया वा अहीरे कऽय
सिगसिग सागति बदनियाह् देख रे बानी

हम भाई टीकल गउरवा रहली रे गर्ये
सुनलीं जे बल्लीय ना सुबवा वाइ अगोरियाँ
ओनकर खोजले जोटियवा नाहिं रे थानः
·······कम हम वियहुई ना वियहुई तोहके आइली
ढेर देखे अइली हूं सुववा क मनु र साय
कइसउ जिहनहू ना होतई ना सुल्हुरा
दुइ हाथ चलति अगोरिया मे तर रे वारि
जे के भाई रामइ ना देतहू तेईये लेतय
छन मेनि जातय सागरवा जे फरि रे याय
·······ना दिनवा राम समइया (२७४०)

सोलह टोटियों वाले गिलास की डाकू खरकरिया द्वारा चोरी

लोरिकाहू रंगल ना ओठियन सेनि रे धाउनः
अब चलि गयल जाजिमवा वा जिरवा येते
जाइ केनि बइठल ना पहरा रे अगोरी
तब फेरि गूनहू ना हुलिया जेवा महूरीन कय
जवन भाई गढ़लि गोलसिया वा सोनवां कय
पेनिया मे सोरह ना टोंटवाहू था उरेहय
ऊ भाई पीयई ना लोगवाहू गउरा कय
मदियाहू पीयई दवइया लेल र कारी
पीयत पीयत जाजिमवा पर लेटि रे गईनः
सवा लाख सूतल बरतियाहू रे अनेरय (२७५०)
ओहि घड़ी बोलल ना बुढ़वा वाइ कठईता
बेटवाह सुनबहू लोरिकवा रे हमाउर
आज पूड़ा करहू पहरवा जोरवा पउर
बेहु करि बिस्तर ना होइ जाइ लि समाधी
जिनकर टूटहीय ना सकड़ी चलि रे जइहं
धिहनहू मगिहई चड़नवा केनि रे घोड़ा
जेनकर टूटहीय डंडइयां हटि रे जइहंय
विहनाहू मांगीय ना डलिया रे तर रे वाउर
जेनकर फटहीय भामरिया जे दागि रे जइहइ
विहना त मांगीय पुरवही जे देखा रे राल (२७६०)
आजु पहै पड़बहू ना इड़वाहू वीर रे लोरिका
पहराहू करहू बरतिया के घुमि रे घूम
आजु कहै बचने ना दिनवा राम समइयां

की फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽल
ओहि घरि उठलि ना ससुवा वाइ रे महरीन
एकदम रेंगल भीतरियांह् चउरा गऽईन
जहवां पर वानह् ना चोरवाह् खर रे फरिया
ओहि चोर केनीय ना कइलनि रे वलावा
आजु कहँ मुनलेह् ना चोरवा खर रे फरिया
भइयाह् तें गनवेह् ना काहनवां रे हमाऽर
देसवा में वहुत ना चोरिया जे कइले रे होवऽ
अव चोरी करह् ना एठियन रे हमारऽ
जउ भइया हमरउ ना चोरिया जे कइ लियवतऽ
होहइ कऽ देति अगोरिया रे अऽजादय
वइठेंह् खातह् पुहुतियाह् दुइ रे चारी
ओही घरी आगेहं ना अगवांह् रेंगले रे महरीन
पिछवांह् रेंगल न चोरवा वा चलि रे जाऽतय
जाइकनि आंगनेह् ना महराह् के वइठऽनऽ
महरिन कहति वा वतियाह् समुरं झाई
देख भइया सोने क गिलसिया जे वाई रे गहीर
सवा लाख पीयत वरतियाह् लेइ रे वानीं
कहवां पर रखलि गीलसिया जे देख रे होइहंय
जवन भइया हमरेह ना हथवां जे आनि कऽ देतय
तोहई जिनगीय आजदवा जे कइ रे देव
एतना जे कहति ना धनवां जे वाइ ए महरीन
ऊय चोर रेंगल ना जीरवा पर चलि रे जाय
जहां सवा लाखइ वारातिया जे अहीरे कय
सूतल वानह् न जरवांह् रे वेजार
आजु कहें लोरिकाह् के जंघवा पर वाइ गीलसिया
लोरिकाह् पीयई ना उहऊ रे उठाय
आजु कहँ पीयइना मदिलवा जे वीर रे लोरिका
फेरि भाई जंघवा पर गिलसिया जे रखि रे देइ
उहवां से देखि कह् ना चोरवा जे फेरि रे लवटत
चलि गयल महराह् अहीरवा के देखऽ रे घर
आजु भुंइ ना सइना अंगने से वाइ रे खानत
तरे तरे आयल ना वाहर रे नीकाल
जवने घरी आइ कह् जाजिमवाह् पर रे गइनऽ
भितरींह बोलत धरतियाह् मेंनि रे वाय

आजु कहें वाढिय ना मनियाँह् मोरि भगउती
तनी एक चढ़ीय नजरिया पर हमरे जा
वहवा पर चाढइ ना सोनवाह् कइ गिलसिया
हमें तुय देतिउ ना कइय पहि रे चान
ओही घरी मनियाह् भगउती जे चढि रे गइनी
घोरवाह् ताकइ ना अखियाह् रे गुरेर
लोरिका पे पलयी पर गीलसिया जे वाइए लबकल
उय भाई हलल दुअरवा मेनि रे वाय
जाउ केनि अगवाह् गीलसियाह् केनि रे कटलेन
आजु वेध कइलेह् जाजिमया पर रे वाय
लोरिका के लागति नींदरिया या पल्यीय पर
अहिरा झपत घइठलेंह लेइ रे वाय
कब केनि निकललेस ना हथवा लेइ ये ओठियन
ऊय भाई लेह् लेह् गीलसिया रे उठाय
एकदम नीकलि मुइनसवा मे हलि रे गउयनउ
जाइ पेनि निथलल महरवा पे देख रे घर
जाइ केनि महरिन पे हथवा देइ गीलसिया
महरीन ले लेह् ना नदिया ओर रे जाय
जवने घरी लेर कह् गीलसिया जे धन रे महरीन
जाइ पे फेंकलनि सोनइ भदरवाह् केनि रे घाट
उहवा से बहलि गीलसिया जे चलि रे गइली
एकदम एही हरदिया जे दह रे पाल
अब रातवादीय धीटियवा जे महीचन कउ
ऊ आधि रातिय करतियाह् अस रे नान
जाइ केनि ठटि गईल गीलसिया जे देहिया मे
ऊप पेरि से लेरि लाइकियाह् रे उठाय
एकदम से लेह् ना घरवा जे चलि रे गइली
ओहि पेरि कच्ची पीतरियाह् रे नीकलि कउ
से लेह् गईलि सोनरवाह् केनि रे घउर
ओहि जारे पितरीय गीलसिया जे बन रे यवलेन
दुसोह् से लेह् गिलसिया वा चलि रे जात
जाइ केनि बतीरा ना गउवा मे वाई रे कुठिला
जाद केनि दुसोंह गिलसिया जे छोटि रे दें
जागस ना मनयाह् वाय सोरिकवा
ओंहि घरी गूतल ना घरमो जे वाइ संवस्वा

ओनकेह् लेहलेनि ना ओनहूँ रे जगाई
आजु कहँ सुनवह् ना भइयाह् मोर संवरूवा
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽरय
भइयाह् हमरेह् पहरवाह् में चोरी भइनीं
गायब भईलि गिलसियाह् लेइ रे वानी
जवने घरी विहनांह् ना होइहइं रे भुरूहुरा
आजु भाई मांगइ घरतिया के होइ रे जइहइं
आजु कहां पाईवि गीलसियाह् देख रे हम्मऽ
कहि हइं ललचीय ना रहना जे गउरा कऽ
गायव कइलेन गीलसिया रे हमारय

दुर्गा की सहायता पाकर लोरिक द्वारा गिलास की खोज के लिए निकलना

ओहि घड़ी नउवाह् ना गंगिया के दुनों जगउलेन
नउवा तू देखह् वरतिया सवा रे लाखय
हम जात वाड़ीय गीलसियाह् देख रे खोजय
ओहि घड़ी सुमिरई भवनिया माई दुरुगवा
दुरुगाह् भइनीय न परगट रे वहालय
अब धई लेलेनि चिल्होरिया कइ रे रूपय
दुरुगाह् देहलेनि ना डेनवा वइ रे ठाई
आजु कहें वायें ना डेनवा पर वइठल लोरिका
दहिनेह् डेना संवरूयाह् वाइ रे माल
ऊहवां से उड़लि ना गइयाह् वा दुरूगवा
अब लेई गईलि ईनरवा पर सूर रे धाम
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
उहां सेनि ऊगल चनरमाह् जर जराइ कऽ
दूनों भाई गयनह् ना ओनहूँ पर लपटी
ओन्हे भाई बन्हलेनि मुसुकियाह् देख रे फेरी
ओहि घरी रोवइं देवतवाह् इह चनरमा
पटकत बानह् इनरवाह पुर कपाऽर
अहिरूय हमरेह् पहरवां में चोरी अइलीं
नाहीं एतना हमहूंय जतनवां जे नाहीं करीं
अब तोहें देईत ना चोरियाह् रे बताई
ऊहई ऊगल आवत बा सुक रे देवता
ऊहई तोहें देइहंइ ना चोरियाह् रे बताइ

ओनवर ढीलई बन्हनवा जे भइए दिह्लेन
अब फेरि जुटनह ना पटवा रे अगोरि
तब फेरि लगनह् ना मुक्खर देइ ए देवता
दूनो एहि गयनई् ना भइयाह् रे लपटि
ओहि येह् छाडि यह् मुगुवियाा जे वान्हि रे देह्लेन
ऊहई भाई रोवट देवतवा ज ओहि रे दम्म
ओहि घरी रोवइ देवतवा ज मुक्खर देवता
अहीर वह थड जातनवा ज जिनि रे बउरउ
आजु नाहि एतनाह् जातनवा जे नारे कजरीत
तोहार हम दईत ना चोरियाह् रे बताय
हमरह् पहराह् म चोरिया जे नाहि रे भईल
नाहि फेरि देईति ना चोरियाह् र तोए बताय
ऊगनि आवति ना तरई जे गोवर सईंतो
तहै तोहार देहइ ना चारियाह् रे बताय
ओनवर ढीलइ बन्हनवा जे भइये दिह्लेन
जाई पे दुनो बइठइ ना पटवाह् रे अगोरि
जवने घड़ी उगलि तरइया वा गोवर सइती
दूनो भाई गयनह् ना कोठियन रे लपट
ओह घडी बान्हि यह् मुगुविया जे ओन्हें ढकेलनेन
डग्राह् देवेनि ना बहियाह रे चढ़ाय
ओहि दिन गूाह् ना हलियाह् आठियन क्य
रिह् भाई ओहूय समरयाह् बइ दे हाल
तरई पे बन्हनेन ना दूनोह् भाई ढकेली
तरईय बवलइ ना चोरियाह् इन रे रासने
आजु तहै गुनयह् अहीरवा बीर रे लोरिक
सावर मनयह् चाहनवा रे हमार
आजु भाई एतनाह् जातावा जिनि रे बउरउ
तभी एर ढीलइ बान्हनवा भइये देत
हम तोहार देवई ना चोरिया रे बताई
ओहि घडी ढीलइ बान्हावा जे भइये देह्लेन
तरईय बइठन बानोय ना सम रे तूल
ओहि घरी बवलइ तरइया जे गोवर सइती
बानति बानीय सारमवां क देख रे बोल
आजु तहै गूनयउ् धरमियाह मोर रे सांवर
लोरिक मनयह् चाहनवांह् रे हमार

जवन तोहार सासुय ना महरिन हई रे ओठियन
चलि गइनीं गउवांह् चउरवा लेइ रे जाय
आजु कहें भीतरीय ना टोलवा जे चोर खरफरिया
ऊहे लेइ अइलींय ना ओनहूँ रे बलाय
कहे भाई मोकाह् ना देखलसि गिलसिया कऽ
ओनकेह् अंगनेह् खनवलेसि भुइं रे साऽर
खनत खनत ना जिरवा पर चलि रे गऽयनऽ
अब फेरि जाहूंह् लोरिकआ जे रहलऽ तूं बइठल
तोहरेह् जंघियई पर रहलींय रे गिलाऽस
ओहि घरी चोरवाह् ना अगवांह काटि रे देहलेस
अउ फेरि लेइ गयल गीलसिया रे नीकाल
तड़तड़ भागल ना चोरवा जे खर रे फरिया
जाके गिलास देहलेसि ना सामु के तोहरे रे हांथ
सासुय फेंकीय ना सोनवां में देलेनि गीलसिया
ऊहे भाई बहलि हरदिया जे चलि रे जायं
आजु भकसालीय बीटियवा वा महिचन कय
ऊह आधी रातिय करति बाह् अस रे नान
ओनके देहियांह् गिलसिया जे फेकि रे गइलीं
उय भाई हांथेह् गिलसिया जे लेइ रे ले
घरवांह् कच्चीय पीतरिया जे बाइ रे लिहले
अब चलि गईलि सोनरवाह् केनि दूकान
आजु भाई ओहीय ना रूहवाह् जाइ गिलसिया
पीतरी क देलेसि गीलसियाह् बन रे बाइ
उय भाई दुन्नोह् गीलसिया जे तई रे या रअ
लेइ गईलि अपनेह् ना घरवां दर रे वार
ओनकर बत्तीस ना गोड़वा क बाइ रे कुठिला
ओहि मेनि देलेह् गीलसियाह् रे लगाइ
आजु तुय हमरउ जातनवां जे जिनि रे कऽरऽ
चलि जाह तूहंउ हरदिया जे एहि रे पाल
आजु कहें सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
ओनकर ढीलइ बान्हनवा जे कइये देहलेन
तरईं रेंगल पछिमुवां बा चलि रे जातय
अपनेह् उतरि ना अयनह् लेइये एठियन
सुमिरत बाह् दुरूगवाह् पुज रे मान
दुरूगह् तोहरेह् ना बलवांह् बउ रे सइयां

दवरीह्ऽ दारून ना देसवाह्ऽ ले उगारऽ
मइयाजे अइसड ना चितवाह्ऽ पट रे कइलऽ
एहि मह हानीय ना पहुँचीय रे हमाऽर
तनी एक घरतिउ ना रूपवा जे चिल्हिया कउ्य
पट देनी देवह्ऽ ना जिरवा जे हमे बताय
ओहि घरी भिरवाह्ऽ वे तरवा धाय ये चूवल
अब फेरि देखह्ऽ ना हलियाह्ऽ रे हवाल
ओहि घरी दूभाह ना भइया ज उठि क ऽ टहरय
अब फेरि देखत ना हलिया जे बाड रे चाल
गगिया ते करेह्ऽ पाहरया जे एही र ठिया
सबा लाख मूतति वरतिया जे देगु रे वाय
हम जात वाडीय ना चलियाह्ऽ र हरदियां
ओहि ठिन गईलि गीलसिया जे मोर रे धाइ
आजु कहुँ घोलत वाकरावा जे बा मलरेसायर
आजु भाई फाड़त दूसलवा जे लइ रे वाय
आजु फाड़ि देहलेस दूसलया जे लेइ रे आपन
जेसे भाई हीराह्ऽ ना मोतिया क बान रे गोट
उय भाई बिन्चेह्ऽ दूसलवा जे फारि रे देहलेन
आधाह्ऽ देलेनि लोरिकवाह्ऽ केनि रे हाथ
बिचयाह्ऽ फारि फारि गूदरिया जे डारि रे लेहलेन

लोरिक और सांवर का योगी वेश धारण करना—गिलास की प्राप्ति

सूतल रहनह्ऽ ना चनिया सब रे लोग
सांवर सरगीय ना हयवां मे बाय उठवले
लोरिकाह्ऽ लेइलेह्ऽ धजडिया रे उठाय
उहवां से दूनोह्ऽ ना भइया जे चलि रे गयनय
अब फेरि आधीय ना रतियाह्ऽ निच रे लाय
जाइ केनि हरदीय ना केंगी पनि रे घटवां
दूनोह्ऽ पइनेन ना जोगवाह्ऽ रे बनाय
जोगियाह्ऽ गावइं ना गीतिया जे मउजे मे
अउ ओंहि गईलि हरदिया जे देहु रे पास
आजु ओहि गईलि बिटियवा जे महिचन कय
उय भाई टांगलि बा धोतिया जे बसवा पर
हथवा मे से लेह्ऽ हरदियांह्ऽ चलि रे जाय

आजु कहँ हरदीय ना केनीय पनि रे घटवां
दूनो जोगी गावत मउजवा में वांड़ऽ रे गीत
ओहि घड़ी वोललि ना धियवा जे महीचन कय
बावा सूनवह् गोसइयांह् मोरि रे वात
केतनाह् दीनइ ना भरवां जे घूमि कऽ मंगलऽ
अव हम देवह् सऽरेखवांह् रे लगाय
ओकरे से अद्धिक ना हमहूँ घरे रे देवय
चलि के दुअरा पर वईठि मउजवा गाव रे गीत
जवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
वईठि गावत मउजवा कवाड़ं ऽ रे गीतऽ
ओहि घरी हरदीय ना मोहि गईल रे म ऽ हरिया
आजु मोहि गईलि बिटियवा महिचन कय
बाबा मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
जोगिया कवन ना नसवा बाबा रे खालऽ
तवन नसा देईंय ना हमहूंय रे मंगाई
तव फेरि बोलई ना जोगियाह् मल रे सांवर
अउ फेरि लोरिक हूंकरियाह् बाइ रे देतऽ
बच्चाह् गांजा तमखुइया जे छोड़ि रे देहलेन
जब से नि कइलींय ना सातउ हम रे धामऽ
खालिय अववर ना एक्कइ मत रे वानी
जउन भाइ भठियाह् दरुइया वाइ रे खातऽ
उहइ नसा हमहींय ना बाड़ीय दुनों रे पीयत
बाकि फेरि कइलीय ना तीरथ बड़ रे वाऽर
जेतनाह् अत्तह् ना पतवाह् कुलि रे रहनऽ
कलुवाह् देहलींय ना रूपवाह् सुन से आजऽ
सब संकलप ना दनवां पर धइ ए देहलीं
एकउ नाहीं रखलींय ना बरतन रे बनाई
खाली एक बर्तन ना सोनवा क बाई रे छूटल
बचवाह् सोने क गीलसिया जे जब रे रही हयं
तव हम पीयब ना मदवाह् रे तोहार
एतना जे सूनति वीटियवा जे बा महीचन कऽ
आपन हललि बखरिया में चलि रे जाय
जाइ केनि मारति काथरियाह् लेइ रे लड़िकी
अब हलि गईलि कुठिलवाह् में नि रे बाय
जाइ केनि पितरी क गीलसिया रे निकलि कऽय

अब लेइ गईलि ना जोगियन के हाथ रे देइ
ओहि घरी देखइ ना जोगियाह् दूना रे भइया
रह रूह उहइ गीलसिया जे देख रे हव
आजु भाई देखइ ना दुनोह् लेई ए ओठियन
सोरिका के भयल छोडहवा जे तनी रे वाय
आजु कहैं धनि धनि ना मइया मोर दुल्गवा
आजु मोर खादीय ना दिनवा क पुज रे मान
तनी एक चढ़ि जा नजरिया जे लेइ रे हमरे
सोनह् पीतरि ना कइ दह् पहि रे चान
ओहि घरी चढ़ि गईलि दुल्गवा जे नजरीय पर
सोरिकाह् ताकत ना अखिया जे बाइ गुरेर
ओहि घरी पितरी क थरतनवा जे बाइ रे ठहरल
अहिराह् फेंकत गीलसियाह् देख रे वाय
बचवाह् कवन ना तोहइ देईं सरापऽ
जरि मरि जाखइ कोइलवा जे होइ रे जा
आजु जवन हाथे से सकलप कइ ए देहली
सवन पितरी देलह् ना हथवाह् रे छुवाय
आजु हम सोने क थरतनवा जे तोहरो मगली
तब तोहार पीईति दरूइया जे लेत रे मार
लड़िकीय फेरीय दोहरइया जे बाइ रे घुमुरल
अब हुनि गईनि कुठिलवा ज मय रे दान
जाइ पेनि सोने क गीलसिया जे आनि रे देहलेन
जोगियाह् देखइ गीलसियाह् रे उलटि कऽ
ईहइ हवइ गीलसियाह् रे हमार
दूनो भाई पीयइ गीलसिया जे ढारि ढारि मदवा
अधिया पर चढ़ल सुन्धियाह् देख रे वाय
ओहि घडी मूनह ना हलिया जे जोगीयन बय
अउ फेरि पटकत सारगिया जे ओहि रे वाय
आजु भाई खखडिय ना थोरिया फेंकि ये देहलेन
अउ धूर झारत मरदवा जे चलि र जायं
आजु कहैं तडकत ना दुनोह् जाइ रे भइया
उन्हे भाई झाकत बयालीस जाइ रे हाथ
आजु कहैं धरीय ना लिखवा केनि रे भीतर
अब जुटि गयनह् ना जिरयाह् र येतार
ओहि घरी बिहनह् ना भयनह् रे भुरहुरा

पुरुवइ देहलेन कउववाह् देख रे रो रऽ
महरिन सुबचन ना सुबचन वाइ पुकारय
सुवचन दवरल ना भइयाह् बान रे ठाढ़ऽ
आजु कहैं भइयाह् ना सुनिलऽ मोर सुबच्चन
एठियन मनबह् काहनवां रे हमाऽर
जवन भाई साझेंह् गीलसिया गईल वारतियां
आजु भाई पियलेन सकलवा बरि रे थात यं
जाइकेनि मागि कह् गीलसिया लेइ रे अइतय
एतनी बेर पीहइं घरतिहा रे हमारऽ

महरिन को लोरिक द्वारा गिलास लौटाया जाना महर की पत्नी आश्चर्यचकित

ओहि घड़ी रेंगल ना मलवा बाय सुबच्चन
एकदम रेंगल ना जिरवा चलि रे जानऽ
जहवां पर सूतलि बारतिया आहिरे कऽ
अगवां रक्खल गीलसिया बाइ रे जाई
ओहि घड़ी बोलल ना मलवा बाय सुब्रच्चन
कठइत मनबह् ना बढ़वा तुव रे बातऽ
जवन समधी आईलि गीलसिया रहल रे संझवा
अब तोहार पियलेनि बरतिया सवा रे लाखय
एतनी बेर बऽहिन हुकुमिया हमरे देहलेन
आजु भाई बाड़इ गीलसिया कइ रे मांगऽ
एतनी बेर पीहइं गीलसिया लेइ घरंतिहा
अब तुव देबह् ना हथवा रे टेकाई
ओहि घड़ी लेइ कह् गीलसिया हाथ रें देहलेन
सुबचन ले लेह् गिलसिया बाइ रे जातय
जाइ केनि देह लेनि ना हथवा महरी के
महरी देखई गीलसिया रे उलऽटी
ऊय भाई छाती ठठवले वाइ रे महरी
ऊह भाई बोलति ना बोलिया रे बनाई
आजु बाबू अइसन अहीरवा जे नाहिं रे देखलीं
आजु हम घुम्मीय मुलुकवा जे सवं रे सार
आजु जवन पानीय के बुड़ले जे नाहिं रे बचलें
कइसे परगट ना दूसर लेइ ये जात
जवने घरी आधिय ना रतियाह् निच रे लइयां

मंजरीय बोलति लारमवां क बाइ ए बोलऽ
ओहि घरी सूनह्॒ ना सइयांइ॒ सुख रे नमन
सेनूर मनवह्॒ काहनवाह्॒ रे हमाऽर
एकठेनि बानह्॒ देवतवाह्॒ रे गोठनिया
उह भाई बानह्॒ सकतियाह्॒ सेइ रे दाऽरऽ
चलि के ओनके गोडेह्॒ ना हयवाह्॒ सइया हो गीरवऽ
चलि केनि मगवह्॒ ना वरवा तू वर रे दाऽनऽ
ओहि घरी बोलल आहीरवा बीर रे लोरिका
बियही तू देवताह्॒ ना देवता का ए कइलऽ
चलि केनि देतिउ देवतवा हमे देखाई
हम ओनके गोड़ेन्॒ ना हयवा गिरि रे लेईंत
ओनसेइ मागित ना वरवा वर रे दानऽ
एतनाह्॒ सूनई ना धियवा जे महरे कय
आगे आगे रेंगलि ना बानीय ओहि रे दउम
पछवाह्॒ लोरिक रायरिया जे चलि रे गयनऽ
अब चलि गइनीय सेवंसवा के देख रे पास
जहवां पे बानह्॒ देवतवाह्॒ सिव रे संकर
महदेव के गइनीय सिवलया पर लिय रे राय
मंजरीय जाइ यह्॒ ना गोड़वा जे बाइ रे गीरल
ओनसेह्॒ मागति या वरवा जे वर रे दान
थाउ भाई गायेह्॒ भभूतिया जे लेइ लगाइ थऽ
ऊके भाई निकललि दुआरियाह्॒ पर रे बाय
आजु बहेँ सइयाह्॒ ना सुनिलह्॒ सुख रे नमन
सेनूर मनवह्॒ याहनवाह्॒ रे हमाऽर
जाइ केनि धरह्॒ ना गोडवाह्॒ मह देव कऽ
ओनसे मागिलह्॒ ना वरवा वर रे दान
ओहि दिन रेंगल अहीरवा बाइ रे लोरिका
जाइ केनि भयल दुआरिया पर रे ठाढ़
आजु बहेँ सुनयह्॒ ना देवता मह रे देवऽ
जउं तोरे सक्तीय मूरतिया मे नि रे होई
अब तूय बोलतह्॒ ना हंसि क रे ठाई
नाहि भाई अइसन ना अइसन रे पथरवा
हमरेह्॒ बहुत गऽउरवा बाय रे गाँव
महादेव गोसाह्॒ ना जादेह्॒ तू बइई बऽ
दइया से सेइबह्॒ ना हयवा मे फेंकि रे देब

जवने घरी फेंकि देव ना हथवांह्‌ रे ओठई कऽ
जा के हमरे गिरवह्‌ गउरवांह्‌ लेइ रे गांव
एतना जे कहत ना अहीरा बा वीर रे लोरिका
अउ फेर नाहीं ना महदेउ बाड़ें रे बोलत
ओहि घरी सूरूकि ना फेंकले जे बाइ मीयन वा
अउ दह तग्गीय तानत बाह्‌ तर रे वार
जेकर भाई चारिय आंगरूवा जे बाह रे भयनीं
जेकर ताड़क अकसवा में चलि रे जाय
आजु कहैं निचवांह्‌ ना मरलेह्‌ वा दवन्हरा
लवरि गईलि सिवलवा में गुमि रे आय
ओहि घरी हंसलि मूरतिया बा पथरा कय
महदेउ हंसनह्‌ ना ओठियन रे ठठाय
आजु कहैं जाबेह्‌ ना जाबे भइया लोरिका
तोर कई देवई अगोरिया में जय रे जीत
एतना ज कहईं मूरतिया जे महादेउ कऽ
मंजरीय ठोकति बानीय नाह तक रे दीर
आजु कहैं हो हो ना दइवाह्‌ मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह्‌ ना मंझवांह रे लीलार
जब सेनि जनम ना लेहलीं जे हम अगोरी
वड़ दिन कइलीय ना सेउवाह्‌ रे बनाय
खाली एन्हें दूधे ना घिउवा में नह रे ववलीं
कवो नाहीं बोललि मूरतियाह्‌ लेइ रे बा
आजु परि गयल ना जोड़ियाह्‌ सेनि रे काम
पथरा के मूरति ना हसनीय रे खखाय
जवने ना दिनवाह्‌ राम समइयां
अब फेरि रेंगल ओठिनियां से दूनों रे जानः
अगवांह्‌ बानीय भवनियांह्‌ रे बन्सरा
मंजरीय बोललि लारमवा कइ रे बोलऽ
आजु कहैं सइयांह्‌ ना सुनिलह्‌ सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह्‌ ना सिरवा क मउ रे यारऽ
एक ठेनि बानीय भवनियांह रे बन्सरा
ऊथ भाई मांगह्‌ ना ओनहूं से बर रे दानऽ
ओहि घड़ी अगवांह ना अंगवाह्‌ रेंगे मंजरिया
पछवांह्‌ रेंगल लोरिकवा ना चलि रे जातय
जाइकेनि कहत बा बतियाह्‌ समु रे झाई

आजु कहैं सुनवह् भवनिया मोर रे एठियन
जउ तोहरे सकतीय मूरतिया मे देव रे होई
दुइ अच्छर हमसेह् ना उठिया वति रे यावऽ
नाहि हम पोचब ना खंढिया रे दो गाहे
अब दुरि भागेह् देवइ ना ढोलि रे याई
ओहि घड़ी तब्जउ मूरतिया नाहि रे वोनलि
अब खीचि ले लह् बिजुलिया तर रे घारय
जेनकर ताइक अकसवा देइ रे देहलेन
लवरि हलिल सीवलया मेनि रे वाने
ओहि घडी हसनीय ना ओठिन रे भगउती
बोलति बानीय लारमवाह् कइ रे बोल
आजु कहैं जावेह् ना जावेह् भइया अहीरा
तोर कइ देवइ अगोरिया मे जय रे जीत
ओहि घडी हसलि ना धियवा जे महरे कय
जेकर भाई दानव माजरिया जे परल रे नाथ
आजु यायू बहूत ना दिनवा जे भेवा कईलो
आजु एन्हे दूधेह् ना पिउवा मे नह रे पवली
घवो नाही बोललि मूरतिया लेल रे काऽर
आजु परि गयल ना घमवा वा जोडिया से
पपरा क मूरति ना हसनीय रे खखाय
आजु कहैं सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
मजरीय बोललि ना लारमवाह् कइ ए बोल
आजु भाई सइयाह् ना सुनिलह् मुख रे नन्नन
सेनूर मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
आजु कहैं बारह ना मलवाह् राजवा कय
घरहउ बानह् दईययाह् कई रे लाऽलऽ
ओनकर जोड़ीय ना देसवा जे नाहि रे वानऽ
क्स मन धातइं हेयढ़िया पर बान रे अमोचय
सब सेनि जब्बर ना मलवा बा भर रे दम्मऽ
ओनकर जोरेह् क यहवा जे नाहि रे वानऽ
वह भाई नालीय ना रपले जे चाइ अघइवा
दूना हाथें देलह् परोसवा रे उठाई
आहि परी बोलल अहीरवा वोर रे सोरिका
रियहीप नलियाह् ना नलिया वा ए कइसा
पति कनि देतिउ ना नलिया हम देखाई

आजु देवी हमसेह् ना नलिया लेई रे ऊठाई
हमहूँय तानित पोरसवा रे बनाई
आगे आगे रेंगलि ना धियवा ना महरे कय
पिछवांह् रेंगल लोरिकवा बाड़ रे जातऽ
जाइ फनि नलियाह् ना किहयां ठाढ़ रे भईलि
सईयांह् ईहइ ना नलिया देख रे हई
अहिराह् कानीय कनगुरिया टालि रे लिहलेस
नलियाह् बाढ़ई पोरसवा घुम रे रावत

अगोरी के राजा मोलागत का मंजरी की डोली छेंकना—लोरिक की मार से राजा के सहायक भाग खड़े हुए

आजु कहीं सुनवेह् ना धनवा गोरि बीयहिया
एठियन मनवेह् काहनवां रे हमाऽर
कहु हम फेंकीय ना नलिया एठियन से
जाइके हमरे गोरइ गउरवा गुज रे रात
नाहि कहु सोनइ मदरवा में फेंकि रे देई
अब टूटि जातइ ना नलिया कट रे नांवऽ
नाहि कहुं फेंकि देई ना नलियाह् कीलवा पर
एक लगे गोरइ बुरुदिया महरे राई
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
मंजरीय बोलति लारमवा क बाई रे बोल
सइयांह् बारह ना मलवाह् रजवाह् कऽय
बारहउ बानह् दइयवाह् कइ रे लालऽ
जउने घड़ी कसरतिया अखड़वा में कइये लेनऽ
जाइ केनि मारडं अमिलियांह् में नि रे धक्का
जरिया से हीलई अमिलियाह् कइ रे पेड़ऽ
ओहि घड़ी रेंगल मारदवा वा वीर रे लोरिका
एकदम रेंगल अमिलि याह् किह रे गईनऽ
जाई केनि दहिनाह् आंगुरिया के धइये दबलेन
अबहींय सूतल अमिलि याह् देख रे बानीं
एहि जउं नागर अगोरियाह् केनि रे पाऽरऽ
आजु घुमि कइनीय अखढ़वाह् लेइये ओठियन
नीकल गयनह् माहरवा के देख रे घऽर
'ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
गोड़े मूड़े तनलेन चादरिया जे दुनों रे आय

आजु कहँ भइयाह् बहिनियाह् के नतइया
दुनो सूति गयनह् पलंगिया जे लेस रे कार
तब तक सूनह् ना हलिया जे सूबवा कऽ
झटपट हाथीय हउदवा जे कसि रे गयनऽ
गुंनाह छूटनह् ना पुढवा रे पचास
आजु फनि गइलीय ना डंढिया जे मंजरीय कय
आजु भाई छेकलनि माहरवा जे कइ रे घऽर
आजु कहँ बाटेह् मबेरवाह् कइ ए जुनिया
महरीन बानीय ना अंगनाह् रे बटोरत
सूबवाह् बोलत दुअरवाह् सेनि रे बाय
आजु कहँ धनवाह् ना सुनि लेह् तुंई महरा
एठियन मनवेह् भाहुनवाह् रे हमार
जल्दीअ से मंजरीअ के डंढिया मे बइ रे टबतो
लेइ जाय अपनेह् ना कीलया मवं रे नार
ओहि घरी बोललि ना धनवा जे बाइ रे महरो
दरियांह् करई ना बेहयाह् रे जवाब
आजु कहँ सूनबह् ना सुबवाह मोर मोलागत
एठियन मनबह् काहुनवाह् रे हमार
एतनाह् दीनई बीटियवा जे हमारि रहली
आजु भाई बेगानह् बीटियवा जे होइ रे जाय
आजु कहँ जेन्हइं ना दरलेन सिर रे सेनूर
क लेइके सूतल कोहबरे मेनि रे बाय
आजु भाई हमकहं ना जानीय मंजरीय के
तोहई अहीराह् ना देईतह् लेइये जा
आजु कहँ सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
जेह् भाई नागर अगोरियाह् कइ रे हाल्न
दुअरा पर उल्दूय मे गरियाह् देइं ए सुबवा
महरिन से नाहिन ना बुतवा रे सहाला
एकदम हलत कोहबरं मे चलि रे गईसा
दूनोह् सूतई चादरियाह् बान रे तानी
जाइ केनि तनलेह् चदरियाह् बानऽ गोड़वा से
अहीराह् ऊठम बानइ नाह् जक रे साई
जउने घरी देयई दुअरवाह् पर फउजिया
अहिराह् के गोसाह् नजरिया पर चढ़ि रे गइली

आजु जिन्हें खींचि कइ मूमुकवा मारि रे देनऽ
अब झरि जानह् बतिसवांह् देख रे दांतय
केनहूँ के धइ कह् टंगरिया जे फेंकि रे देनऽ
ऊहे भाई लंगड़ ना लुजवा जे होइ रे गयनऽ

जान बचाकर राजा मोलागत का भागना

उहवां से भागल ना रजवाह् बाय मोलागत
गारिय देतई महऽउतेह् केनि रे बाड़ऽय
आजु कहैं सुनवेह् न सरवा तोर मऽहउता
हथिया के सोझइ ना भलवा पेरि रे देते
जिउ लेके भागित ना किलवा भइं रे नार
अहिराह् लेलेसि पारनवां रे हमाऽर
उहवां से भागलि ना हथियाह् लेइ रे लीहले
सोंझइं हलि गईलि ना कीलवाह् भँवंरे नार
सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
अहिराह् भागल ना ओठियन सेनि रे बानऽ
अपनेह् रेंगल बारतिया में जुटि रे गयनऽ
दुई चारि ऊठल ना संघिया जे रहइं समउरी
सवालाख सुतलइ बारतियाह् देखऽ रे बानी
ओहि घरी हंसइ ना संघियाह् लोग रे भइया
अहिरू मानह् काहनवां रे हमाऽर
आजु कहैं साँझेह् ना डललेह् सिरवा सेनूर
आधिय रतियाह् ना कइलह् ससु रे रार
हाथ जोरि के बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
भइयाह् मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
के त हमहीं ना जानीय के ये तुहईं
सवा लाख जानई बारतिया ना पावे हमार
नाहि जउन सुनहईं ना ककवाह् मोर कठईता
धरमीय सुनिहइं ना भइयाह् रे हमार
आजु कहैं सुनहईं ना गुरुवाह् मोर अजइया
आजु हमार लाजेह् में जिउवा जे परि रे जाय
ओहि घरी बिहनह् ना भयनह् रे भुरूहुरा
पुरुवइ देलेह् कउववाह् बायं रे रोर ऽ
ओहि घरी सुवचन ना सुवचन महरी पुकरलेन
सुवचन रेंगल दुअरवांह् भयनऽ रे ठाढ़

आजु कहैं मइयाहू ना सुनिलहू मोर सुवचन
एठियन मनवहू काहनवा तूय हमार
आजु भाई जाइ कहू खबरिया द्या बराती
बहि दउजे गइयाहू भइसिया ध होइ रे भूखल
दइजा चढ़ि जाउं ना परवत रे पहाउर
जेन भाई सोनाहू दरबिया कइ हाई भूखल
मइये मे बान्हउ ना खोलिया रे जेठाई
अब जेन धनइ बीयहिया ध हाइहइ रे भूखल
किलवा म दतहू ना डडिया अम रे राय
ओहि घड़ी गइयाहू भइसिया ध भुखले संवरू
ऊय चढल आलहू ना गेल्वाहू रे पहार
आजु कहैं सानाहू दरबिया क भूखल बरतिहा
बान्हत बानहू मडउवा मे झोरि रे आय
आजु कहैं धनइ बीयहिया क भूखल रे लोरिका
किलवा मे देलेसि ना डटिया रे हवाय

मंजरी की विदायी

ओहि दिन् करत रोदनवाहू बाइ रे माजर
मइयाहू मनबहू काहनवाहू रे हमार
देख भाई बड़ेहू सवेरवाहू रतियो म
महलीय सोहरइ माथनवाहू हमरे राजः
आजु कहैं आठइ ना नेतवाहू नव ए बनिया
दस टैनि पूटलि बाम्हइया जे बाइये राजः
एतना जउ हाइहइ जीमनवा जे गउरा मे
सागूम मरिहइ मेहनवाहू बरि रे बारः
आजु कहैं अइगइ आवरवा के रहतिउ बिटिया
गाने के लेनई ना बनिया छोट सौपवतीउ
सोनवा क ले लेहू बाम्हइया जे भरि रे ताहुय
मइयाहू एतनाहू सामनिया जे हमे देइ दः
सब तार धरब पलंगियाहू मेनि रे सातय
महरिन नाहिय ढुंढरियाहू बाइ रे भरतः
मजरीय करति रादनवा ना बरिरे माउर
ओहि घरी सुनहू ना हमिया सुबचन बः
ऊय भाई रेंगल ना ओठियन बाड र जातय
आजु कहे सुनबेहू बहिनिया जे मारि रे महरिन

एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमार
आजु भाई भयनेह् अस घरवा से निकललि जाति बा
बुजरीय कऽवनि चारूइया क बुनि रे यादि
आजु कहैं छोड़ह् ना नेतवा जे कनि रे देईदऽ
भयनेह् धरउ पलकियाह् मेंनि रे लात
सिरवा के उतरि जातइंना दुख रे भार
आजु भाई ऊहउ दइजवां में सटिए देहलेन
एकदम कइलेह् पालकिया में चलि रे जाय
एकदम रेंगलि ना ओठियन सेनि मंजरिया
अउ फेरि गईलि दुअरवाह् मेंनि रे बाय
उहवांह् बइठल ना बापवा जे बाड़ रे महरा
जाइ के गोड़ धइकह् रोदनवां जे करति रे बाय
आजु कहैं बाबिल ना सुनिला मोर ए मऽहर
एठियन मनवह् काहनवां रे हमाऽर
आजु तूं जाहां बीयहवा जे कइ रे देलऽ
तहं वहं नाहींय कऽहलवा जे बाइ रे जात
आजु कहैं लोहइ ऊठनवह् लोह रे बईठल
अहीरह् क लोहा पारनवा जे हउवऽ अधार
कतहूँ जें खालेह् ना उचवां जे गोड़ रे परिहइं
ऊहे भाइ जइहंइ ना मथवां रे गँवाय
हमकेह परि जाई बीपतिया जे गउरा मे
कइ दिन भोगब रंड़पवा जे हमरे जाय
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कय
के भाई ओहूय समझयाह् कइ रे हाल
मंजरीय धरति ना गोड़वह् लेइ ए मऽहर कऽय
अब नाहि बोलत बाबिलवा जे ओकरे बाय
ओहि घड़ी मम्माह ना जुटि गयल रे सुबच्चन
दरियांह् करत ना बेड़वांह् रे जबाब
आजु बहनोइयाह् ना सुनिलह् तूं ए महरा
एठियन तूं मनबह काहनवांह रे हमार
आजु भाई भयने अस पदारथि निकलल जाति बा
कवनि बाड़इ पगरिया क बुनि रे याद
आजु तूंय साटि दह् पगरिया जे दइंजा में
भयनेह् धरउ पल्कियाह् मेंनि रे लात
उहे भाई धइलेनि ना हउ ओठिन रे पगरिया

मजरी के देलेनि पगरिया जे अपने उठाय
जउने घरी आचर मे पगरिया जे रखिये देहलेन
जे मांह हीराह् ना मोतिया वा बाड रे गोठ
कउनो जो खातिय आपदवा जे परि रे जइहइ
बइठेह् खइहइ पुहुतिया जे दुइ रे चार
एतनाह् लेइ मेइ आगमवा जे धन रे माजर
जाइकनि बइठल पलकियाह् मेनि रे बाय
ओहि दिन उठिन से उठली बाय पलकिया
पाँचि परग नीकलि दुअरवा सेनि रे पाहर
फेर छपि गईल पलकिया मय रे दान य
ओहि घडी ऊठन मारदवा बीर रे लोरिका
मय हलि गयल भीतरियाँ मय रे दाऊनइ
जाके भाई रमइ ना ओठिया बाइ रे डावत
उठि कनि करत पालगिया पर रे नाऊमइ
धामू सानेह ना कोरवा कइ ए धोती
सोनवा के देलेनि करधनियाँ रे लपेटी
ओहि घरी ऊहाँ से आहीरवा चलि रे अयऊनइ
दुअरा मे बइठल सामुरवा धायँ ए माहर
जाइ केनि नीहुरि ना कइले वा पर रे नाऊम
महरा भरिमुख देतइ बाह् असि रे बाद
ओहि घरी पेलइ ना रुपया जे जेबवा मे
ऊहे भाई बारल सामनियाँ जे देग रे बाय
आजु कहँ साठीय मोहरवाह् बट रे हाऊर
दुल्लर के देलेत ना गरवा मे पहिरे राय
उहवाँ से रँगल मारदवा जे लेइये दुअरा
अय जाके भयल पालकिया बिहु के ठाढ़
जउने घरी देगइ ना हुलियाह् अगोरिया कइ
आजु भाई बहुन ना गलियाह् बानी देधाऊन
ओहि दिन बासल आहिरवा जे मनवाँ में
आजु कवने गन्तीप मा चलवा जे ऊँचे धइकइ
केहरउ से नीकलि ना हुगहैं जे जब रे जाव
आजु कहँ मुनीप ना रजवाह् रे मोनागत
सोनवाह् बहुन काउडियाह् रे भुलइहइं
ऊहु भाई मरिहइ मेहनवाह् सेस रे मार
संगवाह् रहन अहीरवा जे चोर परइया

खाले ऊँचे लेई गयल ना डंड़ियाह् रे पराय
आजु कहैं बत्तिसउ काहरवां जे मोर रे सुनऽव्रऽ
सोझइ किल्लाह् दरेरत चलय रे डंड़िया
घुमि कनि छिपीय ना जिरवा रे खेतार

मंजरी की डोली उठी—राजा मोलागत का दुःखी होकर रोना

ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
डंड़ियाह् उठलि मंजरिया ना कइ ए वाड़ऽ
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
रजवा क लागलि कचहरी लेल रे कारी
जवने घड़ी पऽरलि नजरिया मूबवा कऽय
उये भाई रोवत रकतवा कइ रे आंसय
आजु कहै हो हो ना दइया मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवा रे लीलाऽरऽ
आजु हम नन्हवें चीरइया रे जीयवलीं
भेंइ कनि देंहलीय रऽहिलवा कइ रे दाली
सरवा कहां क चढ़ल ना पर रे देसिया
आजु मोर चिड़िया उड़वले वाइ रे जातऽ
आजु भाई अइसन मारदवा जेकनि अगोरी
अहिरा के मरतह् ना खेतवा पर बहि रे याय
आजु कहैं मरतह् अहीरवा के जीरवा पर
डंड़ियाह् लेइ अयतह् किलवांह् अमरे राय
आजु कहैं डंड़ियाह् भीतरवांह् लेइ ये जाईत
मंजरीय संघे भोगित ना रनि रे वास
ओहि घडी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
आजु कहैं लागलि कचहरी बा दर रे बाऽरऽ
ओहि घड़ी मतियाह् मंतिरीय बांय रे बोलत
चुगुलाह् बोलइं ना बेड़वांह् रे सोनाऽरऽ
आजु कहैं राजाह् ना सुनि लह् मह रे राजा
एठियन मनबह् काहनवांह् तुंय हमाऽरऽ
तोहरे पर कवनि मोसीबति एतने परलीं
रोवत बाड़ह् ना जरवाह् रे बे जाऽरऽ
आजु कहैं इनकइ फनिगवा केनि ए करने
एतनाह् सहरि बजरियाह् तोर रे बानी
छेंकि केनि कइ देह् सतूववाह् कइ रे नूनऽ

एतना जब कहत ना बतियाह् बाड़ मतिरी
बोलत बानह् ना सूबवाह् ओहि रे दम्मऽ
आजु कहैं बारह ना मलवा बेनि रे ऊपर
आजु सरगानाह् ना मलवा वा भर रे दम्मऽ
जेकर खोजलेह् जाड़ियवा नाही रे वाऽनऽ
एनमेह् भेजि दह् ना जोरवा रे खेतारयऽ
जाइ बेनि बातइ अहीरवा के मारि रे देइहइ
दिनबाह् दिनकइ टूटीय जाइ कल रे कान
आजु कहैं डाड़ीय ना ओठियन से उठरेवइहय
आनि केनि बिल्लाह् भोगह् तूय रनि रे वास
तोहरे पर कवनि मोसीबत एठिने परनी
सूववा तू रोवसह् जरवा देखऽ बेजार

मोलागत के सिपाहियो का भाट के यहाँ जाना—
आधा राज्य पाने के लोभ मे वीर भाट लोरिक से लडने के लिए उद्यत

कहँ तवने ना दिनवाह् राम समइया
की फिर ओहूय समइयाह् कइ रे हाल
ओही परी छूटनह् सीपहिया जे ओठियन से
एकदम रँगल ना भटवाह् घरे रे जाय
आजु कहँ भटवाह् ना मलवाह् भर रे दम्म
जेकर खोजलेह् जोडीयवा जे नाही रे बाय
ओनकर लहुरीय ना जेठरी जे मेह रे रस्वा
परवाह् घरवा पेवनवा जे रहनी कातत
अपनेह् रँगल ना जानह् दर रे बार
अउ फेरि छूटनह् सीपहिया जे सूबवा कय
अउ फेरि सुनवह् ना मलवा तू भर रे दम्मऽ
सूवा साहरउ घाननिया पर बइलन बलाव
ओहि परी रँगल ना मलवा वा भर रे दम्मा
अउ फेरि रँगल ना गयनऽ ओहि रे ठाढ़
ओहि परो वासल ना रजवा जे बाय मोलागत
अब मल सुनयह् भर दम्मस रे हमाऽर
देब तोह आधीय ना रजियाह् देबऽ अगोरियो
आधा बिल्लाह् देबइ ना भव रे नार
आधाह् दवइ ना गउवाह् रे घटाहिटा
जवन हुई गोहूँ गाजइयाह् कइ रे थान

आधाह् नोकर चाकरवा रे बांटि रे देवऽ
आधे क होई जा ना हमरई पटि रे दार
बाकी भाई जातई अहीरवा के मारि रे डलऽतऽ
काढ़ि कनि कइ दह् सेतूववाह् कइ रे नोन
मंजरीय क जल्दीय ना डोलवा जे उठ रे आवऽ
लेइ आवऽ किल्लाह् भोगीय नाह् रनि रे वास
आजु कहें तवनेह् ना दिनवां राम समइयां
मलवाह् सूनत भरदम्मा लेइ रे वानऽ
एकदम लवटल गोरिहियां बाय रे जातऽ
लउंढ़ीय जेठरीय चारखवा रहई रे कातत
ओही घरी जूटल ना मलवा देख रे वानऽ
उह् मारि देलह् ठोकरवा से देखऽ चरखा
चरखाह् पेवनाह् टूटल ना चिटि रे राई
बुजरीय कवन चरखवा के अब रे कामय
आधेय भइलीय ना हमहूँ पटी रे दारय
अब हम पावल ना रजिया रे अगोरी
आधा पाइ गइलीय ना किलवा भवं रे नारय
आधा हाथीय ना घोड़वा रे बंटालय
आधाह् नोकर चाकरवा हवयं हमाऽरऽ
सरवाह् कवन अहीरवा क बुनि रे यादय
जातई मारव ना खेतवा पर वहि रे आई
एतना ज सूनइ ना लंउड़ीय मेह रे रूवा
दरियांह् बोलति ना बेड़वांह् रे जवाव
आजु कहें सइयांह् ना सुनिलऽ तूं सुख रे नन्नन
आजु मोर सुनिलऽ ना सिरवा के मउ रे राय
आजु कहें मरलेह् अहीरवा जे ना मरइहंय
नात उत जरिहंइ आगिनियाह् केगि रे धार
आजु भाई मुहई ना बोलिया वा मिठ रे बोलिया
लोहवा में बाड़इ ना बांकवाह् रे जूझाऽर
अब जेने अहीरे के पईढ़िया में पार रे जइहंय
ओनकर होइहंई बीयहिया जे घरे रे रांड़ि
आजु ना लहुरी बा मेहरूवा
भंटवा ढूकल भरदम्माह् ओठियन से
अब जाइ लेहलेस ना झोंटवाह् रे पकऽड़ी
उपरां से दुइ चारि ना घुसवाह् बाय लगउले

गुजरो तू मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
अब तोहार गउवांह् ना परवाह् मे नतइयां
अहिराह् लागइ भातरवाह् रे तोहाऽरय
आजु कहे हमरेह् अस जाबिर बीरवा के
तवन तू नीचह् नां बतियाह् बति रे यवलू
एतनाह् कहत ना बतियाह् सेइये हुउवा
अब भट रेंगल ना मलवा वा चलि रे जात
जउने घरी उतरई ना सिढियाह् सेइये ओठियन
अउ फेरि रेंगल ना जिरवाह् जाई खेताऽर
जउने घरी परि गईल नजरिया जे लोरिके कऽय
उय भाई बोलत लारमियां क बाड रे बोल
आजु कहँ धनवां ना सुनि लेह् मोरि बीयहिया
एठियन मनयेह् काहनवांह् रे हमार
एक ठेनि आवत मारदमा वा पीलवा से
देतु भाई दाईय मुदइया जे देखु रे हउ
आजु पहिले हमई सारेखवा मे तोहि लगउबे
अपने ठऽव मे रहबई हम तई रे याऽर
ओहि घरी उलटि ना नेतवाह् मारे मजरिया
पच रंग पँकति ओहरवा जे लेइ ये बाय
ओहि घरी मुडियाह् निमलिया क बाइ रे देखत
दइयांह् कहंति ना बेडयांह् रे जव्वाब
आजु कहँ सइयांह् ना सुनिलऽ सुख र नम्रन
आजु मोर सुनिलह् ना सिरवा मउ रे याऽरऽ
अइसेह् तइसेह् जीनिगिया बचि रे गइली
अब नाहिं बचिहइ जीनिगिया हो तोहाऽर
आजु भाई चऽल ना मलवा वा भर रे दम्मः
जबर घोअर्लेह् जोडीयवा नाहिं रे वानः
ओहि घरी देखह् ना हुलिया जे भटवा कय
छ्य भाई छूटल पलकियाह् बिह् रे बाय
जाइ कहि नोहुरि ना मयवा जे बा नेवरले
लोरिकाह् मार मुंघ देतइ वा अति रे बाद
आजु कहे आयेह् धामरवा जे भर से दम्मा
तुम भाई जीयह् ना सयवाह् रे बरीस
जइसेह् वाढ़ई ना पनिया जे गंगिसे कऽय
ओइसइ बाढ़इ ना अइया जे मइया तोहार

आजु कहै छोड़ि देवह्, ना डंड़िया जे मंजरीय कय
ले जाई किल्लाह्, भोगउवह्, रनि रे वास
आजु मोर बूढ़ई ना रजवा बा तिरिया अस
ओन्हे लाग तारून जोइयवाह्, कइ रे ख्याल
नाहि हम मारब ना एठियन तोहें रे अहीरा
खेतवा पर मारब ना हमहूंय जे बरि रे राय
आजु कहैं खालीय ना सोटवा से खिच रे वइबऽ
तोहार भूसाह्, भरवाइ देवा हम रे खाल
ओहि घरी बोलल अहीरवा बा लरमें से
मलवाह्, सूनह्, भरदम्मा रे हमाऽर
कइसन होलई ना सटियाह्, साहिले कऽय
हमकेह देबह्, न कान्हेलवा जे भरि रे आय
घरवांह्, टुटहीय मड़इया जे लेइ रे वानी
लेइ जाब हमहुंय गउरवा जे अपने घऽर
जाइ कनि समह्, ना सोंटहं कर मड़इया
सहजे में छोड़ि देब बीयहिया क डोला रे हम
लेइ जाह्, किल्लाह्, भोगउ नाह रनि रे वास
एतनाह्, सांचइ ना वतियाह्, पतियायल
भंटवाह्, लवटल ना घरवा बा चलि रे जात
जाके घरे हाथे टंगरिया जे बाइ उठउले
चढ़ि गयल गेरूवाह्, ना परवत रे पहार
अछा अछा काठइ ना सलिया जे आइले कऽय
उहे भाई बान्हत कन्हेलवाह्, बरि रे याऽरऽ
उहे भाई लेइकह्, कन्हेलवाह्, जे ओठियन से
जाइकनि पटकति पालकियाह्, किह रे बाय
आजु कहैं सुनबेह्, अहीरवा जे तुवं रे लोरिक
एठियन मनबेह्, काहनवांह्, रे हमार
देख भइया तोहरई काहनवां जे हम रे कइलीं
अब तुंय करतह्, काहनवांह्, रे हमार
अब छोड़ि देतह्, ना डंड़िया जे मंजरीय कय
लेईं जाईं किल्लाह्, भोगउं नाह रनि रे वास
ओतना जउ सूनत अहिरवा बा बीर रे लोरिका
आजु ओसे नाहींय ना गुसवाह्, रे सम्हार
जउने घरी डांकल अहीरवा बा ओठियन से
खींचि केनि मरलेह्, मुठुकवा बा बऽरी यार

आजु कहैं बाजल मुठुकवा जे मुहवा मे
अब झरि गयल बतिसवा जे उनकर रे दाँत
आजु कहैं खोजई ना संटियाह् अहीरे कऽ
अंगे अंगे देलेसि बदनिया पर बड़ रे ठाय
जेहर जेहर बाजई ना संटियाह् जे अहीरे कऽ
छर छर जानहुं ना खूनवाँह रे पसार
ओहि घरी गयल ना भलवा जे अकुलाई
अब फेरि देतई दोहइया जे पुनि रे बाइ
आजु कहैं मंजरीय ना लघवाह रे दोहइया
आल्हर गऽयल पारनवाँह् रे हमाऽर

लोरिक के प्रहार से भांट का खून से लथपथ होना— मंजरी के हस्तक्षेप से जान बची

ओहि घरी निकलसि ना धनवाँह धाई मंजरिया
जाइ कनि धरति लोरिकवा क करि रे हाँव
आजु कहैं बोलइ ना बतिया बा लऽरमे से
छइयाह् मनबह् काहनवाह रे हमाऽर
देख भाई तीनीय ना जतिया जे जिनि रे मारऽ
एक तह बाभन ना भटवाह् रे कहार
इय मोर नान्हंह् क हुठवंह् रे जियावन
मरले बहुत परीय नाह अप रे राघ
ओहि घरी जीदस अहीरवा बा बीर रे लोरिका
दरियांह् कऽहत ना बतिया बा अर रे पाय
आजु कहैं सुनबेह् ना धनवाह् मोरि बीयहिया
एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमार
धुजरीय छान्हीय पर बछियवा जे चढ़ि रे जइहंऽ
कहाह् हम हॅंरीय कुकुरवा जे मारी बीमार
······तवनेह् ना दिनवाह् राम समइया
अहीराह् बोलत लारमवाह् बड़ रे बोलऽ
आजु कहैं सुनबेह् ना भटवाह् भर रे दम्मा
सरऊप संवेह् धारतिया मे बइठल रे रहबऽ
सूनह् ना हलिया ओठियन कय
अहिराह् छोरई ना बेलवा रे बनाई
अब फेरि ठेपीय छंहिठवा बाद रे छोरऽ
आजु भाई धुइयाह् ना देहले बाड़ गिराई

अहीराह् उतरल ना बेलवाह् पर से बानऽ
जेतनाह् रहलीय ना चुनियां कई रे बाऽरऽ
डेगियाह् बान्हऽ ना डोलवा धुम रे राई
जेतनाह् टूटल ना बेनवा बाई रे बांचल
भंटवा के ले लह् चादरवा लेइ रे खींची
ओन्हें भाई बन्हलेस मोटरवा बरि रे याऽर
अउ फेरि देलेसि कापरवा पर उठाई
सरऊय लेलेह् ना बेलवा घरे रे जायऽ
एकदम जाऽयह् बउखरियां कीलवा में
नाहि एक्कऊ ठहरेह् ना बेलवा जउ रे फेंकवऽय
फिल्लांह् काटब ना गयवा जे बरि रे यार
आजु भाइ रेंगल ना भंटवा जे चलि रे जालाऽ
हुनुकत जाला ना मुँहवा से देख रे खून
एक्कउ दांतई ना मुँहवां में रहि रे गऽयल्
रोवत जालह् गोरिहियांह लेइ रे आज
ओही घरी लहुरीय ना जेठरीय मेह रे रुवा
दुन्नोंह कइलेनि झगरवा जे बरि रे यार
आजु ननदोइयाह् ना हवंह बीर रे लोरिक
आजु भाई कइलेनि बीदइया जे बड़ रे वार
आजु ऊ कहावई कऽमइया जे देखा रे हमरय
आजु भाई हमरइ ना परिया जे देखऽ रे हऽ
ऊहे भाई अपनेह् के झगड़ाह् लेइ रे करऽ
तब सेनि आयल ना भंटवा जे निय रे राय
ऊहे भाई पटकइ आंगनवा में लेइ गठरिया
ठाढ़ई गीरल खटियवा पर भइ रे राय
लहुरी लेइकह बाढ़नियां रे पहुँचनी
दुइ चार देलेसि बाढ़नियां जे ऊपर लगाय
ओहि दिदि सुनह् ना तोहऊंय लेइ ए लउड़ू
कहना तूं मनवह् ना एठियन रे हमाऽर
कहलाऽ जे गउवांह ना घरवांह् के नतइया
अहिरा हवई ना तोहरउ धिग् रे हार
आजु भाई हमरे अस जाबिर मलवा के
अब तुय तरेह् करतिया जे बाड़ू रे आज
आजु कहीं एकई अहीरवा जे दूर देसिया
हमरे से बरियायइ जाबरवा जे देलऽ रे बनाय

आजु भाई दुन्नो क झगड़वा जे फरि रे आयल
ई का भयल ना दमयाहू रे तोहार
आजु कहँ सुनहू ना हलियाहू ओठियन कऽ
बोलत बानहू कचहरीय सब ए लोगऽ
आजु भाई सुनवइ मन्तिरोय रे हमाऽर
भटवाइ गयल ना घेतवाहू लेइये गयनऽ
दुन्नोहू जाइबहू सुनहवाहू खइय लेहलन
पूराहू लेहलेमि बादइयाहू जाइये लेइ
चुप्पेहू आइ बहू ना अपने घर रे बईठल
कुछ नाहिं आईनि खबरियाहू लेइ ए आज
ओहि घरी तुरतीय सीपहिया छूटि रे गयनऽ
दवरल जानहू ना मलवा केनि रे घऽर
जाइ कनि देखइ ना मलवा कइ रे हाऽल
थर थर कापत सिपहिया ओहि रे दम्म
आजु कहँ हो हा ना दइया मोर नारायन
का बरम्हा लिखलहू ना मलवा रे लिलारऽ
आजु छोड़ि देवेहू नोकरिया सूबवा कऽ
कउनो देसेहू मुलुकुवा चलि रे चली
नाहिं अइसे भेजिया रईतिया मेनि रे देइहईं
भइ सइ होइहइ ना दसवा सबहो कऽ
एठनाहू हहरत सीपहिया बान रे जातऽ
ओहि घरी रेंगल ना भटवा मऽर रे दम्मा
दुसरा गयनहू न कहऊ से नीकाऽली
ओहि घरी बोलल ना जेठरी लेइ ए बातऽ
आजु कहँ सुनवे ना जेठरी मेहररूवा
गयवा मे साटिक फीटिमवा जे धयल रे बाय
आजु तोंहें हमरेहू ना हयवा मे देई देबे
सूबवा के देइ देईं ना सपल्न सेइ रे हम
कइसउं बचि जाति जीनिगिया जे एठियन से
एठिन से नीकसि ना भागित कउनो रे राय
थमपुन भीखिय मा मगिया क रे हम खाईत
अब नाही करब मलइयाहू कइ रे काम
ओहि घरी रोवत ना रजवा जे बाड़े मोसागत
पटकत बानहू भानतिया जे पर रे माऽथम
आजु मोर तेजसि ना रजिया जे जासई अगोरी

मंजरीय रानींय तेजलवा वा नाहिं रे जातऽय
आजु भाई नान्हें ना सुगिया जे हम जीयवली
भेंइ कनि देहलींय रऽहिलवा क देखऽ रे दालऽ
आजु कहें काहं क चढ़ल वा दूरन् रे देसी
आजु मोर सुगियाह् उड़वले जे वाड़य जातय
आजु अइसन नाहींय मरदवा जे केहू अगोरी
खेतवा पर मरतंह् अहीरवा के वहि रे आइ कय
डंड़ियाह् देतह् ना किलवा में अम रे राई
ओहि घड़ी मतियाह् ना मतवा जे ठसे रे मंतिरी
चुगुलाह् देलहं ना वतिया अर रे थाय

मोलागत का सभी राजाओं के यहाँ सहायता के लिए पत्र लिखना

आजु भाई राजाह् ना सुनिलह् मह रे राजा
एठियन मानह काहनवांह रे हमार
देख भाई मरलेह् अहीरवा जे नाहीं मरइहंऽय
नात अहि जरीय अगिनियाह् केनि रे झार
आजु कहें सगरिउ ना पल्टनि रे जुटइवा
तव्वइ मारह् अहीरवा के वहि रे आय
आजु कहें चउमुख ना पतियाह् लिखि रे देवऽ
चारू कोने लेवह् ना मुन्नवा जे वल रे वाय
चारिउ कोनेह् ना सूववाह् वई रे ठइवऽ
आजु भाई जेतनाह् पऽरजवा जे वाड़ं अगोरी
अव तोहार पल्टनि अगोरवां जे वाड़ं तिलंगा
सव भाई कई दह् पल्टनियांह् मेनि रे ठाढ़
जेतनाह् अगोरी क करधन वान रे वानय
रन पर कइ दऽ पल्टनियां में सव रे ठाढ़
आजु कहें सातइ फेवरवाह् केइ रे घोड़ना
अहीराह् के बिच्चेह् ना कइलह् लेल रे काऽर
आजु कहें चारिउ ना कोनवां पर सूबा रहिहंय
केहर भागल अहिरवाह् कइ रे पूत
सरवा के छेंकिदह् ना मारि दह् जीरवा पर
कांड़ि कनि कइ दह् सेतूववा क ओन्हें नून
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
मंतियाह् ठठलेह् मंतिरीय लेइ रे वानऽ
सुववाह् कोरह् कागदवाह् लेइये निकालऽ

हथवा मे लेनह् कजलमियाह् मसि रे हाऽनऽ
आजु कई सीखई ना पतियाह् चारि रे कोने
पहिलेह् भेंजत ना पतिया था लेइ रे पछिवा
जाइ कनि नेवतइ ना सुववाह बाइ बघेलाऽ
अब जेन बानह् तुर्पकिया मे वरि रे याऽर
दुसरीय पातीय दाखिनवाह् कइ ए लीखऽ
पतियाह् देनेह् दाखिनवा मे देव रे राई
आजु भाई नेवतइ ना सूववाह् रे कोरइया
अब जेन बानह् ना तोरवा में वरि रे यारऽ
आजु कहै नेवतइ ना सुववाह् रे पुरुवहा
अब जेन बानइ ना लोहवा मे वरि रे याऽरय
आजु कहैं उत्तर ना देसवाह् पाती रे गइली
रजवाह् नेवतइ ना जहियाह् रक रे सेलाऽ
जेनवर यारह ना मनवा मे गीरह र सेलाऽ
अब तइ मरिहइ अहिरवा के वहि रे आई
आजु कहैं लीखई ना पतियाह् रे बनाई
देख भाई छतिरीय ना जतिया जे जवन रे होईहय
पतिया मे लीखत ना हववह् रे तोलऽकय
पतियाह् गइलेह् ना वचियाह् मइ रे देखले
घरवांह् अन्नइ ना छइहइ जाइ हरामऽ
पनिया पीहइ रुधुरिया रे समानऽ
जवन भाई खातइ ठाहरियाह् पर रे होइहऽ
हाथ भाई क धोइहइ अगोरियाह् दई रे पालऽ
आजु मोर कुअरि न रजियाह् जाई अगारिया
आजु परदेसीय अहीरवाह् चढ़ि र अयनऽ
अगारी मे देत बाह् कोइलवाह रे बोवाई
एतनाह् लीखत ना पतियाह् लेइये सूववा
अउ फेरि एहीय अगोरिया जे करइ बलाउ
ओहि पको छुटनह ना सोपहिया जे सूववा कजा
आजु फेरि गयनह् अगोरिया मे छिति रे राई
जेतनाह् रहनह् पारजवा जे अगोरी कऽ
जेतनाह् करधन ना बनवाह् रे जेवानऽ
रन पर कजरत ना सूववा बा तई रे यारऽ
आजु भाई छेंकनेह् ना जोरवा जे अउन घेताऽर
आजु फेरि सुनह् ना हंसिया जे ओठियन कऽ

आजु छेंकले जातीय फउदिया जे बांड़ रे आजऽ
ओहि घरी मारूय डंकवा बा ठोक रे वउले
रन पर बोललि लाकुड़ियाह् रे जूझार
सिहवाह् कइलेसि गोहरियाह् रे गोहाऽरऽ
फाउदि चढ़लि ना जीरवाह् जालय खेताऽर
जउने घरी मारेह् फाउदियाह् केनि रे मरने
कहि भाई साई न सुधिया जे नहि रे बाय
छेंकलेह जालइ ना जिरवा जे खेतवा पर
मंजरीय बोललि लारमवा क बाइ रे बोल
आजु कहँ हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् रे लिलार
आजु भाई देखह् ना हलिया जे एठियम कऽ
आजु कहै एकइ फऽनिगवा जे केनि रे करने
एतनीय फाउदि ना कसकलि आवति रे बाय
आजु कहै चारिय ना कोनवां पर चारि रे सूबा
बिचवांह् बानह् फाउदिया सात रे फेवरा
अहीरे के बीचेह् कइलवा ज बान रे जात
ओहि दिन बोललि ना धियवा जे मऽहरे कय
जेकर दांवन मांजरिया रे परल रे नांव
आजु कहँ सइयांह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
सेनूर मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
जउं भाई आंखीय ओलतवा जे होइ रे जाबऽ
हमहूँय ले लेह् माहूरवा क बानी रे गांठ
जउं भरि आँखिय ना अड़वां जे सइयां भयन ऽ
हमहूँय खाइ कह् जाहरवा जे मरि रे जाब
अउ भाई अहीरवाह् बीर रे लोरीक
आजु बाबू मारेह् फउदियाह् कनि रे मरले
कइसेह् लागीय ठेकनवा रे हमाऽरय
का जानी कवनेह् ना ओरियांह् घुमि रे जावय
बियहीय खाइ क जहरवा जे मरि रे जइहंय
आजु मोर बीथह् लड़इया होई रे जाई
ओही घड़ी बोलल अहीरवा बीर रे लोरिका
बियहीय तूं मनवह् काहनवां रे हमाऽर
आगे कहांह् जाहरवा कइ ए गांठी
आजु तूंय हमई ना जहर रे देखइव्या

दुनों मीला खाई जाहुरवा ज मरि रे जाऽई
दिनवाह् दिलफइ टूटोय जाई कल रे कान
सावई गऽईनि मजरिया जे पति रे थाई
घुटवा में काढति माहुरवा जे पुनि रे वाय
आहि घडी पवलेसि माहुरवा जे बीर रे लारिका
अब झुकि के धइलेसि माहुरवा जे कइ गाठ
रहे माई पल्लेह् से कढने जे वा कऽटईया
अब फेर कटलेह् माहुरवाह् रे सहैन
आजु कहै कूकुर्वे माहुरवा जे छाहिये लीहले
अउ फेरि देलेसि ना खडिया जे मह रे राय
कुछु माहुर देलेसि ना नदियाह् रे पवारी
मगर मछरीय मारत था अउ र जाय
कुछु माई देलेसि माहुरवा जे सऽरगे में
अउ फेरि लालई पीयरवा जे होइ रे जाय
जेतनाह् गीरल धऽरतियाह् मेंनि माहुरवा
होई गयल बाढइ बोचोलवाह् कइ रे पेड
आहि घडी तवनेह् ना दिनवाह् राम समइया
की फेरि थोहुय समइयाह् कइ रे हाऽन
ओहि परी रोवई ना धनवाह् रे मजरिया
पटकति धानीय पलंगियाह् रे कपाऽर
आजु रहैं सइयांह् ना मुनिलह् सुख रे मझन
एहि ठिन मनबह् माहनवाह् तुय हमारऽ
आजु भाई एवइ आगमयी जे माहुर रे रहनऽ
तवन मार देलह् आगमियाह् तुय रे टारी
कवनो ओ नायइ दागरवा जे हाइ रे जइहऽ
पापयाह् लेइ जाई ना कोनवा चढ र वाई
आजु भाई भागीय ना पिलवा मे रनि रे वासय
आजु हमार घीरिग जीनिगिया जे सइया रे हाइहय
गाथइ देत बाऽ ना हुनियाह् रे बताईं
आहि घडी छँरसेह् पाउदिया था धारू आर
सारिवाह् सुमिरल दुरूगवाह् वाई रे माई
दुरगाह् सोहरे ना बसवाह् बउ रे सइया
चइर्मा जे दाम्न ना देगवाह् रे खगारय
मदयाह् ना पिडवाह् ना छोडि के तू जो भगवऽ

मंथवाह् जइहंई अगोरियां मोर गंवाई
भइया तूं ईहई रइनियां जे हमई जीतइवऽ
आजु तोहार करव ना सेवन पूड़ा बनाई
आजु कहैं खंसीय ना भेंड़वा क कवन गन्तीय
भइंसाह् काटव ना पुड़वाह् रे पचासय
आजु सवा लाखइ ना मनवां कइ हूमदिया
दुरूगाह् करव असथनवांह् लेल रे कार
आजु तुयं परगट दुरूगवा जे माई रे होतूऽ
दूइ हाथ चलति अगोरिया में तर रे वार

दुर्गा की सहायता—समस्त सेनाओं की लोरिक के हाथ पराजय

ओहि घड़ी परगटि दुरूगवा जे माई रे भइंली
छमकति वानींय दाहिनवांह् लेइ रे वांय
तव तनी भरत ना पेटवा जे अहीरे कय
फेंकत वाड़इ वीजुलिया जे तर रे वार
जउने घरी विनिकत ना जालइ तर रे वरिया
अउ फेरि जालइ ना सन सन रे कारी
तव तक सूनह् ना हलिया जे दुरूगा कऽय
अव फेरि धइलेह् चिल्होरिया क जाली रे रूप
जाइ कनि धइलेसि चंगुलवा में तर रे वरिया
जाइ कनि देतीय लोरिकवा क वानी रे हाथ
आजु कहैं थमवे बरूववाह् फुल रे झरूवा
तोर कई देवई अगोरिया में जय रे जीत
ओहि घड़ी कट कट ना कट कट तीर रे चलनऽ
सन सन सन सन करति वायं तर रे वार
गोलिया वानीय ना घोइयाह् रे भरावत
गोलवाह् गमकइं भरहिया रे भराय
ओहि घरी धनि धनि ना मइयाह् मोरि दुरूगा
परगट भईलि ना जीरवा जे वाड़ खेताऽर
अहीरे के ऊपर अंचरवा जे वा फइलवले
गीरत वानह् चीपउरा होइ रे जायं
आजु भाई गिरिकह् आंचरवाह् मेंनि रे गोलिया
ऊहे भाई चूवलि धारतियाह् मेंनि रे वाय
दुरूगाह् अइसीय सकतिया जे वाड़ी भीड़ंवले
अउ फेरि गउवल मोहरवाह् देख रे फेल

आजु कहँ निरियाह् बरुदिया मे लगउलेन
तोरियाह् गइलीय ना आठियन मेह र राय
ना त भाई गालोय बारुदिया जे बाई रे चालत
ना त कुछु होतई रईनियाह् पर रे वाय
ओही घडी बोलल अहीरवा बा बीर रे सोरिका
दरियाह् करई ना बेडवाह् रे जब्वाब
आजु कहँ सुनवह् ना भइयाह् त ए सूवा
एठियन मगरह् बाहुनवाह् रे हमार
देख ताहार पकरीय आवारिया जे पम्हि रे लेहली
अब बचलोइयाह् ना पम्हुरह् रे हमाउर
ओहि घरी सूरुकि ना पँवने ज बाट भीयनवा
अउ दहलगीय तानत बाह् तर रे वाउर
जेकर घारिय अगुरया ज घाह रे मडली
जेकर भाई तहक आकसवा बा चलि रे जात
आजु कहँ नीचवाह् ना मरले जे बा दवन्हरा
पोरगन गइलीय नावरिया जे गुथ रे आय
आजु फिरि गईलि मालकिया जे सूवयन मउ
घडियाह् गइलीय गउरदनेह् रे बिसाय
आजु कहँ पूरुब काटतावा जे पछु रे गयना
अउ फेरि पछुवाह् दाखिनवा जे भुमि रे जाय
जइसेह् काटइ कोईरिया जे कोइ रे रहवा
ओइसह काटत अहीरवा क बाई रे पूत
आजु कहँ माग्हे ना सतियाह् फउदे मे
पूनयां के चान्न ना धरवा जे लेत रे बार
आजु कहँ गगरीय ना पेलवा जे नोहुवा पानी
धारा जानह् गा गोनवा जे एहि रे धार
ओहि घरी सूनह् ना हुनिया जे ओठियन कन्य
मायर बागह् कोनियवा जे केनि रे घाटय
जबे घरी लासह पीयरवा जे होइ रे गयन
ऊ भाई बरत सहईना जे पुनि रे वाडः
आजु बीर मारइ ना तडवा मेद रे कोलिया
ऊर तीर भसन ना जामा रे अमोग्यो
दुर गई गदवाह् काटतवा बाह रे गोरन
अउ फेरि गदम पालकिया के नगीचः
ओहि घरी निकसनि ना धनवां बाई मजरिदा

तिरवाह् ओड़िय जातिय बा निय रे राई
अब तीर फूंकत ना संपवा होइये कऽनी
नजरि परल लोरिकवा कई रे बाऽड़य
आंजु कहैं सुनबेह् ना धनवां जे तैं बीयहिया
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
ऊहे तीर भसूर ना हउवंह् लेइ रे तोहरउ
भइयाह् मरलेह् सऽहइता जे बानऽ हमार
ऊहे नाहीं तिरवा ना तूहँउ जे जिनि रे छुवऽ
ईय भाई तीरइ संवरूयाह् कनि रे हउ

युद्ध के लिए मोलागत का इनरावत हाथी भेजना

.......सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
कीह् फिर नऽगर अगोरियाह् कइ ए हालय
ओहि घरी रोवइ ना सूबवाह् रे मोलागत
जेनकर उरदुल कावलवा बा विर रे लाऽतऽ
आजु भाई तेजलि ना रजियाह् जाइ अगोरिया
मंजरीय रानीय तेजलवा बा नाहिं रे जातऽ
आजु हम नान्हेंह् चीरइयाह् रे जीयवलीं
भेंइ कनि देहलीय रहिलवाह् कइ रे दाऽलऽ
आजु भाई कहां क चढ़ल बा दूरनदेसिया
आजु मोर सुगियाह् उड़वलेह् बाई रे जातऽ
अइसन कोईय मारदवा जे नाहिय अगोरिया
अहिरा के मरतह् ना'खेतवा पर बहि राई
डंड़ियाह् देतह् ना कीलवाह् बम रे राई
लेइ कनि हमहूँय भोगित नह रनि रे बाऽसऽ
एतनाह् कहत ना सूबवा जे बाइ मोलागत
अब फेरि बोलल मंतिरी जे ओहि रे दाम
आजु कहैं सुनबह् ना रजवाह् मह रे राजा
एठियन मनबह् काहनवांह रे हमाऽर
आजु तुवं सातउ हथिनियां जे भेजि रे देतऽ
अउ चलि जातींय ना जीरवाह् रे खेताऽर
आगे आगे भेजि दह् ना हथिया जे इन रे रावत
सुंड़वा में लोहे क मूसरवा जे द धराय
ऊहे भाई जाईय ना हथिया जे छेंकि कऽ मरिहंय
अहिरे क कवनि बाड़इ नह वुनि रे याद

·· अहोरा मे मारि रे देइहय
दिनवांह् दिन भई झागरवा जे टुटि रे जाय

सुमिरन

[हे राम राम राम राम राम हो राम
आजु कहँ पहत ना रहबीय हम रामायन (३८८०)
कसन परल जीयरवा मे बाडऽ रे भारऽ
अब जिनि भूलह् ना संगिया मोर समउरी
जिनि भूलि जायह् दुल्मवा जे मोरि रे माई]
ओहि परी मतियाह् ना मतवा जे ठठइ रे सगनऽ
बुगुलाह् देलेनि ना बतियाह् रे उतारी
आजु कहँ सुनवह् ना रजवा जे मोर मोलागत
एठियन मनवह् बाहनवा जे तू ह हमारऽ
देव भाई मरलेह् अहीरवा जे नाही मरदह
ना त ईत जरिहद अगिनिया के देवऽ रे घरऽ
अब तुप सातव हथिनिया जे भेंजि रे देव्यऽ (३८००)
सुइया मे लोहे क मूसरवा जे देवऽ धराय
ऊपे भाई जातइ ना जोरवाह् र घेतरवा
छेंकि लेनि मरिहई अहीरवा के बहि रे आय
आजु मारि देइहइ आहीरवा के जोरवा पर
दिनवांह् दिन भइ झागरवा जे टुटि रे जाय
ओहि दिन पसनीय ना हथिया जे ओठियन से
गूवा के गयल ना मनवा जे बाडे बईठि
आजु कहँ देयह् ना हुलियाह् ओठियन कऽम
साहुपन क देलेनि मूसरवा जे ऊह धाराय
सेह मनि रगनीय ना हथिया रे इनरे रावत (३८१०)
आजु भाईं सागल सरगवा जे ठेनल रे बाम
ओहो परी पटलनि नजरिया या मोरिसे कऽम
अब फेरि बोनत सारमवा मे बाईं रे बोल
के भाई धनवांह् ना सुनि से मोरि बोयहिया
एठियन मनबेह् बाहनवा जे देगु हमारऽ
आजु भइया पायह ना गाइया क बयन जनावर
आवत बाडह् ना जोरवाह् र घेतार
तब फेरि उलटि ना नेतवा जे मारि ए मांजर
अब फेरि पयरग ना पॅरमें जे बाडे ओहार

आजु भाई मूड़ियाह् नीकालिये के बाइ रे देखत
ऊहे भाई बोलति लारमवां क बाड़ऽ रे बोल
आजु कहैं सइयांह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आजु मोर सुनिलह् ना सिरवा क मउरे यार
अइसेंह् तईसेंह् जीनिगिया जे बचलि रहली
अब नाहिं बचिहंई जीनिगियाह् रे तोहाऽर
आजु कहैं सातउ हथिनियांह् रजवा कय
छेंक लेह् आवति ना जीरवाह् जे बानी ए खेतार
आगे आगे बाड़इ ना हथियाह् इन रे रावत
ऊहे भाई लेइहंई जीनिगियाह् लेल रे कार
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
के फेरि थोहूय समइया क देखऽ रे हाल
ओहि दिन भादउं ना बनवा जे बाइ रे खांखर
फगुनीय बाड़इ मेंहुड़िया रत रे नारी
जीउ लेके भागह् मेंहुड़िया में तूं ए सइयां
अलकह तेजत परनवांह् बाड़ऽ रे तूं हऽईं
बलुकन गांठिय रोकड़वा जे कहीं लगाइ कऽ
हमरे से सुन्नरि ना लेबह् रे खरीदी
आजु कहैं हमरेह् जूठहियाह् केनि रे कऽरने
काहें तूंय आल्हर ना तेजलेह बाड़ परान
जेनकर अइसन ना ललवा जे जूझि रे जाब्यऽ
मइयाह् खाइ कह् कनीयवा जे मरि रे जाय
एतना ज कहति ना धनवां जे बाई मंजरिया
अब नाहिं ऊठत अहीरवा जे पुनि रे बाय
आजु कहें पल्थीय ना मारियऽ के बाड़ें रे बइठल
पल्थी पर धइलेह् बीजुलिया बा तर रे वार
आजु कहैं देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
तब तक जूटल हथिनियांह् बायं रे जाती
जाइ कनि ठाड़ीय हथिनिया जे होइ रे गइनीं
डंड़िया से निकलति ना धनवां जे बाइ मंजरिया

मंजरी और इनरावत पूर्व जन्म की बहनें थीं

जाइकनि धरति ना गोड़वा बा ईनरावति कऽ
हथियाह् से कहति जावनियां लेइ रे बानीं
आजु कहैं सुनबह् ना हथिया इन रे रावत

सतजुग मे एकइ बहीनिया दुनो गे रहनीं
सुय भाई जेठह् बहीनिया रे हमारी
अउ फेरि दुरापति बाइनिया लेइ रे जानम
सुय भाई हाथी के जनमवा बहिन रे पयनः
हमहूँ त मानुखि जनमवा पाई रे गईली
ई ताहार हरह् सहुरवा बहु रे नोइया
बइगेह् छूवह् ना तोहउ एहि रे दम्म
छू के बइसे मरवह् सहुरवा बह रे नोइया
बइगे हमार देवह् सेनूरवा रे बिगाड़ी
एतना ज सोचति ना हथिया वा इन रे रावत
बान पानि के गूनति ना सम्चेह् देत्र रे वाय
उहे भाई बतियाह् ना मनवा मे हाथी दहावत
साथइ कहति मांजरिया जे देख रे बाय
आजु भाई सतजुग जालमवा मे दुला रे बोहीन
एकइ पीठिप ना लेहली जे अब रे तार
आजु भाई दुरापति ना दिलयाह् रे बदलनः
अउ फेरि देखह् जानमवा जे गयल बदल
ईहि भाई अदमी के जानमवा जे पठलस मजरिया
हमहूँय हाथी जानमवा जे मीलन गे जाय
अब नाहि लहुराह् बहनोइया के हमरे छूवब
अब नाहि सेनूर बीगड़वई माजर तोहार
उहवा से भगलीय ना हथिया जे ईन रे रावत
पूरि कह गेहई उड़यले जे बानी रे जात
एकदम भागलि ना हथियाह् रे भगावलि
अब छूटि गइलीय ना बिसवा जे मवरे नार
ओहि घरी भागलि ना हथियाह् पनि रे गइनी
अब छूटि गइलीय ना बिसवाह् भव रे नार
आहि बगदम ना गूबवाह् राजा मोभागल
हथिया के गारीय पूहरवाह् देत रे बानः
बुमरीय गुनि लेह् ना हथियाह् इन रे रावत
पहनाह् मनबेह् ना एठिमन रे हमाऽर
आजु तार रहीराह् जबदयाह् मेइ गे हउवः
धरवा पर जीयत मुसदयाह् छोड़ि गे देहुमः
एहि दाइ नाहोय ना मरलह् रे हमाऽरः
आजु भाई धीयव ना हमवाह् रे बनुखिया

छन्ने में लेवइ पारनवांह् लेल रे कार
अब फेरि मतियाह् ना मतवा जे ठठय रे लगलं
चुगुलाह् देलेनि ना बतियाह् थर रे थाई
आजु कहें राजाह् ना सुनिलह् मह रे राजा
एठियन तूं मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
अइसेह् नाहींय ना हथियन के सील रे टुटिहुंय
पिरिथमीं में तिन्निउं भूवनवां जे बीति रे जायं
आजु कहें एकक हथिनियन केनि रे पेटे
सात सात भट्ठीय ना मदियाह् दऽ पियाय
जवने घड़ी बमकल ना नसवा जे नजरे पर
लोहवा क मूसर ना सूंड़वा में देव धराय
ऊहे भाई जातइ अहीरवा के मारि रे देऽहुंय
दिनवांह् दिन कइ झगड़वा जे टुटि रे जाय
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अउ फेरि देहलेन ना भठियाह् तोर रे वाई
खाली भाई झुरियाह् आगड़ियाह् मंग रे वउलेन
अब रखि गईलि हथीनियनि के रे पासऽ
दिलवाह् जरींय ना हथिया वा मंग रे वउले
आजु फेरि देलेसि महउथइ बल रे वाई
आजु भाई देनह् ना भठियाह् रे महउथऽ
बोतल बोतल ना दरूवाह् देइं पिआई
आजु भाई एकक हथिनियन केनि रे पेटवां
सत सत भट्ठीय ना मदियाह् देइं पियाई
ओहि घड़ी घंटाह् पहरवा जे रोकिए देहलेन
नसवाह् चढ़ल नजरियाह् पर रे बानी
जउने घड़ी बमकल ना नसवा जे देहियां पऽर
लोहवा क देलेनि मूसरवाह् रे धराई
उहवां से चलनींय ना हथियाह् बम रे कात
सोझइ जिरवाह् ना बहतरि रे खेताऽर
ओहि घरी परि गइलि ना नाजरिया जे लोरिके कऽय
उठि कनि भयल अहीरवा वा तइ रे यार
आजु कहें जाईय ना हथवा में लेइ बीजुलिया
फरकेह् ठाड़ाह् अहीरवा जे लेइ रे बाय
ओहि घड़ी चारिय न ओरिया से हथिया छेंकि कय
मूसर मारति अहीरवाह् केनि रे बाय

ओहि परी धनि धनि ना मइयाह् मोरि भगउती
दुरूगाह् सगनीय सक्तियाह् रे सहाय
उहे भाई लेइकह् बस्त्रवाह् लेइ रे ओठियन
चम्फाह् हावत आक्सवा मे चलि रे जाय
जवने परी छुटनह ना हथवाह् मेइ रे मूसर
मुड़वा मे देलेनि ना हथियाह् गुम रें राय
उहे भाई पिनिकत मूसरवा जे लेइये गयन ऽ
धरती मे घूइई ना चुड़वा जे होइ रे जाय
बे पेरि परीय पहरियाह् केनि रे बीतय
महीराह् आगेह् ना ठड़वा जे होइ रे जाय

सोरिक की ओर बढ़ते इनरावत हाथी का सूड़ दुर्गा द्वारा पकड़ लिया जाना

ओहि दिन ढूकलि ना हथिया इन रे रावत
उहे भाइ रेंगलि सोरिकवाह् ओर रे जाय
जाइ धनि सूड़ह् सोरिकवा क धइए सीहलेस
अउ पेरि झटकति आकासवाह् मे नि रे जाय
आहु भाई झटकि आक्सवा मे हथिया देहलेस
धनि धनि मइयाह् दुरुगवा जे पुज रे मान
मइयाह् अपरेह् ना सुनि ले ले सुमिरि बज्म
अब पेरि लेहलनि उपरवाह् रे आ लोक
आहु कहँ कुम्हिया धरतिया मे रे गिरवलेन
हथिया गइलीय ना ओठियन गर रे माय
आहु भाई आधीय पारदया जे परि रे गयनऽ
हथियाह् नासा मे धीयकुसइ जे होइ रे जाय
वहवाँ से भागलि ना गोसियाह् हथियन बज्म
सोहाद दूरसीय ना सोनवा बिच रे धार
आहु कहँ आगेह् ना अगवा जे मेइ ए इन्दर
अब पीछे सातउ हाथनिया जे बाती रे जाग
आगे आगे चउलि ना हथिया बा इन रे रावत
अब पेरि देगइ सोरिकवाह् बइ रे हाम
मारिकाह् उहाँ मेतीय ना बाड़ रे ऊहरम
एकदम चलि गयस ना किमवाह् जहि रे जाव
जाहेनि बईठि ना किसवा में बाड़ ए अन्यो
देयउ माइद ना मोकवाह् मेइ रे माज

तब तक चमकल ना मुंड़वा बा इनरावति कऽय
अउ फेरि बोललि दुरूगवा जे बाइ रे माय
आजु कहैं सुनबेह् बरूववा जे फुल रे झरूवा
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमाऽर
देखु भाइ सगरउ ना देहियां में पीटल बा तउवा
थोरा घुकधुइया हथिनियां क बचल रे बाय
आजु कहैं अइसन ना खंड़ियाह् रे गिराऽयऽ
जउने दुइ भागेह् जातइ नां अल रे गाय
ओहि घरी मूनह् ना हलिया जे लोरिके कय
उहे भाई बइठल काररवाह् पर रे बायं
जउने घरी चमकलि ना मुड़वा जे ईनरावति कऽय
अहीरा खींचत बीजुलिया बा तर रे वार
जेनकर चारीय अंगुरवा जे भईनीं बहरे
जेकर भाइ ताड़क आकसवा बा चलि रे जात
के फेरि नीचवांह् ना मरले जे बा दावन्हरा
पोरसन गइनींय लावरिया जे बुमि रे याय
आजु घुमि गईलि मालकिया बा हंथिया कऽय
खंड़ियाह् गईलि गरदनेह् रे बिसाय
आजु कहैं मुड़ियाह् ना अंगवा जे गिरि रे गईनीं
अबहीं ठाड़इ हथिनिया जें रहि जाय
जउने घड़ी ऊठल अहीरवा बा ओठियन से
चम्फाह् डांकल ना बानह् रे काररवां
जाइ के पीठि भयल हथिनियां के तइ ये याऽर
पिठिया पर मांजत बाड़इ ना तर रे वारऽ
ओहि घड़ी देखइ ना रजवा रे मोलागत
उहे भाई उरदुल कावलवा बिहि रे लाऽन
आजु कहैं हो हो ना दइया मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवा रे लीलाऽरऽ
एतनाह् दीनह् आहीरवा जिरवा रहनंऽ
जाइकनि जिरवा ना खेतवा रे अगोरी
एक ठेनि आगम ना हथिया इन रे रावत
आजु मारि देलेसि ना किलवा भंवरेनारय
जाजु कहैं मुड़ियाह् ना धरती में गिरि रे गइलीं
पिठिया पर मांजत बाड़ई ना तर रे वाऽर
······तवनेह् ना दिनवाह् राम समइयां

कि फेरि कोहुव उन्नन्नहू कट रे हल्ला
ओहि घरी रोवइ ना रजवाहू रे मनावइ
पटकइ बानहू चानिनियाहू रे कपार
आजु मोर तेउनि ना रनिया के जाद अगोरिया
मजरोप रानीय तेजलवा का नाहीं रे जानी
आजु हम नन्हवइ चोरनवाहू रे जोवनवाँ
मैंइ बनी देहनीय रहीनवाहू कट रे बानी
सारवाहू फाहा क चढ़न नाहू हूरन देलिया
आजु मार बिरियाहू उन्हवनेहू बाद रे बाउल
आजु कहुँ अइसन मरदवा के केहुइ नानिनी
अहिरा के मरतहू ना धेउवा पर वहि रे जाई
आजु आनि देतहू ना डबिला के कोन्हवा के
सेइ बनि मोगित ना हनहूय रनि रे बाउर

लोरिक से लड़ने के लिए मोलागत का अपने मित्र निरम्मल को आमन्त्रित करना

ओहि घरी मतियाहू ना मउवा के डटि पू बैठ
घुगुलाहू देलेनि ना मउवाहू रे उदार
आजु कहुँ राजाहू ना मुनिलहू मह रे राजा
एडियन मनवहू चाहनवाहू रे हमार
देख भाई अइसेहू ना अहीरा जे माग्न मरवहूम
नाउ कय जाइहइ आगिनियाहू के नि रे बाह
आजु कहुँ पोरहू बागदवा तू ए मगहवा
चिटियाहू लिखतहू ना तूहइ अपने हाथ
आजु कहे देवहू धावनिया केनि रे हाथ
पनि जातम चोटवाहू मल्लोपरि मेद रे गाँव
अउन तोहार अम्मर ना रजवाहू वा नीरम्मल
भमनेहू फाटयाहू ना बानइ रे तोहार
कहे भाई भवतई अहीरवा के मारि रे देवहुंव
दीनवाहू दिन का माण्डवा जे टुटि रे जाय
... बागदवा रे नीगानः
हमवा मे सेनइ कानीमयाहू मनि रे हाजन
पहिनेहू येमइ कुमनियाहू बाह रे सीयत
अस्याहू मद्रुव मांगतवाहू वाय रे आवेगय
आजु भाई ऊपरि ना रनिया जे गईनि अगोरिया

कोइलाह् गयल अगोरियाह् रे बोवाई
आजु कहैं जवन ना मायाह् रे अगोरी कऽय
आजु लूटि लेहलें अहीरवा दर रे बाऽरऽ
तब कहैं बीनाह् मारदवाह् कई रे तीवइँ
गल्लीय गल्लीय अगोरिया में डिढ़रेयाय
एतनाह लीखत कालमिया जे राजा मोलागत
अउ फेर लीखत ना अगवां जे बाइ रे बीरोध
जउ फेर भयनेह् छतिरिया जे होय निरम्मल
अम्मर देखिहंइ ना पतियाह् रे हमाऽर
जउ भाई खातइ ठऽहरिया पर भयनें होइहंय
हाथ आइके धोइहंइ अगोरिया जे दइ रे पाल
आजु कहैं गइयाह् संचिलिया जे अन रे खइहंय
पानीय पीहइं रूधुरियाह् रे सामान
आजु कहै बीनाह् अगोरियाह् केनि रे अइले
ओन्हइं अन्नइ लीखल बा जो हरामय
आजु कहैं अन्नइ ना पनिया ज लीख हरामय
पतियाह् देलेह् धावनिया के दव रे राय
आजु कहै लेइकह् ना पतियाह् रे धवनिहां
अब धइ लेलेसि राहतवा जे पछिवां कय
अउ फेरि रेंगल पछिमवां बा चलि रे जातय
आजु भाई रातीय रेंगत बाह् दिन रे दवरत
कतवइं बादत ना कुरवाह् रे मोकाम
एकदम रेंगल ना ऊहऊय रे रेंगवलस
चढ़ि गयल नागर भदोखरि लेइ रे गांवय
पूछत जालह् नीरम्मल कइ रे घऽरऽ
दुअराह् देलेनि ना घरवाह् रे बताई
एकदम रेंगल बाखरिया में चलि रे जालाऽ
निरमल बिहनइं गावनवाँ लेइ रे अयनऽ
उहे भाई देलेनि बहूरिया बई रे ठाई
अपनेह् गयल अखड़वा में नि रे बानऽ
तब तक धावन दुअरवां चलि रे गयल
जइ केनि दुअरांह ना कइलेह् बा पुकारऽ
दुअरा निरमल ना निरमल नेरि रे आय
ओहि घड़ी भितरीय महलियां जे लेइये बुढ़िया
निरमल क रेंगलि मतरियाह् लेइ रे बाय

हथवा मे ललइ ना सोवरन लेइये छड़िया
बुढ़िया धेयति दुअरवा पर चलि रे जाय
ओहि घरी पूछई ना बतिया जे लरमे कज्य
अउ फेरि पूछति जावनिया जे फुनि रे बाय (४१६०)
आजु मइया बाड़ इ ओतनवा जे हवे रे गोतन
कहवा पर टूटीय गईलिया वा बुनि रे याद
कहवां से चइलइ चढ़इया जे दूरन देसिया
नीरमल नीरमल ना वा रे नरि रे यात
कह वा मे कइलइ, चीन्हुरिया बेटवा ने
नाव धइके बोलत नीरम्मल के नरि रे यात
तब फेरि बोलल धावनिहा रजवा कय
दरियाह, करई ना बेडवाह, रे जत्यात्र
आजु मोर अगोरी ओतनवा जे हवय रे गोतन
अगोरिया मे टूटीय गईलिया वा बुनि रे याद (४१७०)
आजु हम कइलीय चढ़इया जे कोटवा के
चलि अइली कोटवाह, मदोखरी जे लेइये गाय
पूछत आवत बा बखरिया जे नीरमल कय
कवन हवह मूवाह, ना लेइये आज
तब फेरि बोललि ना बुढ़िया जे बा निरम्मल कय
मइयाह, अपनह, ना अवहे रे हमार
अवहूँ ये गवन ना लेइवह बेटवा अईनः
दुलहिय देलेनि कोहवरे मे वई रे ठाय
आजु कहूँ पलगीय असीमवा जे करत बेटवा
एकदम भागल आयइया मे गयल रे वाय (४१८०)
अवने घड़ी सुनवह, ना मइयाह, मोर धवनिहा
अब चलि जावह, अखाड़वाह, रे हमारः
अहवां पर बानह, ना सुववाह, आइ निरम्मल
बेटवाह, भीटल आयड़वा मे बान हमारः
ओहि दिन रेंगल ना मइया वाइ धवनिहा
एकदम रेंगल अयड़वा मे चलि हो जानः
जाइ बनि देयइ आयड़वा कइ रे हाल्नः
जहवाँह, एकक न मइया क बाड़ो हो दूमर
एकक बानह, मूघरवा सर रे दाउरय
जहां भाई ओवइ न तोड़वा जे बान देखात्तय
नींहनीय होवइ नीरम्मल यहि रे बानय (४१९०)

ओहि दिन धावनि ना देखत बाय रे ओठियन
नाहि फेरि लवटल गीरिहिया जे बान हो जातय
जहवां पर बइठलि ना बुढ़िया नीरमल कऽय
मतवाह् सुनवह् नीरम्मल कइ रे माई
ऊहवां पर एकक दईयवा कइ रे लालय
अब नाहिनी होतइ पहिरे चानऽ
कवन हम जानींय नीरम्मल सर रे दारय
······दिन बोललि ना बुढ़िया बा नीरमल कऽय
भइयाह् मनवाह् काहनवांह् रे हम्मार
आजु कहँ अइसन ना तइसन भइया रे नहिनीं
भइया हमार बानह् दइयवाह् कइ रे लाल
ऊत भाई अबहें के गवनवां जे लेइ उतरलेन
मथवा में तीलक लगलवा जे बाड़य दुधार
आजु अइया काजर सुरूमवा जे अंखिया में
भइया के लागल अखड़वा में होइ हमार
जउने घरी मरिहंइ ना तलवा जे ओटवां पर
जइसे भाई भादउं दइयवा जे घहरेराय
ओहि दिन लवटल ना भइया जे वाड़य धवनिह्नां
फेरु भाई रेंगल आखड़वा में चलि रे जाय
ओहि घड़ी ऊठल बा जोड़वा जे नीरमल कऽय
दूनों जोड़ी लड़ल आखड़वा में देख रे बाय
ओहि घड़ी मारइं ना दउवा जे राजा नीरम्मल
जोड़ियाह् गीरल आखड़वा में भहरें राय
उहवां से डांकल ना सूबवाह् बा नीरम्मल
ओटवा में मारत ना तलवा जे देख रे बाय
ओहि धरी बानह् ना ओटवा जे घहरे रायल
धावनि दवरि ना गयनहं् रे पहुँचि
जाइकनि चिट्ठीय ना हथवा में देइ रे दिहलेन
नीहुरि करत बानइ नाह पर रे नाम
आजु भइया आखेह् आमरवा जे होइ रे रहब्या
तुव भाई जिय बह् ना लखवाह् रे बरीस
जइसेह् बाढ़त बा पनिया जे गंगा कय
ओइसइ बाढ़इ ना भइयाह् हो तो हार
आजु कहँ काहंह् ओतनवांह् तोहार रे गोतन
कहवां पर टुटीय गइलि बाह् बुनि रे याद

महवा के कइलन्ह्, [illegible]
आजु तूद खोजह [illegible]
ओहि दिन [illegible]
हरियाह् करइ ना [illegible]
आजु मोर अगोरिय [illegible]
अगोरी में टूटीय [illegible]
आजु हम [illegible]
खोजत बाटीय [illegible]
आजु कहै [illegible]
ईय पाती देवट [illegible]
जवने परी [illegible]
तवे भाई [illegible]
जाके भाई देखइं ना [illegible]
जय पाती में मेह् [illegible]
कहे भाई मांगेह् ना [illegible]
आजु कहै [illegible]
बोहलाह् गयन अगोरियाह् के [illegible]
तब कह बोलह् [illegible]
गम्लीय गम्लीयं अगोरिया में [illegible]
अब नाहि रहवइ अगोरियाह् [illegible]
अउं भयनेह् [illegible] ना [illegible]
पतियाह् देखन ना छोड़ियाह् [illegible]
कहे भाई अइहंइ अगोरिया मोरि [illegible]
नाही जउ [illegible] ना [illegible]
तब कहा अहीर [illegible]
ओहि दिन सुनह् ना [illegible]
पतियाह् देखत [illegible]
अगवाह् मीयन ना [illegible]
पतियाह् देखत ना [illegible]
पनिया पाहइं [illegible]
जवने पुरी नागर [illegible]
ओहइ पानीय [illegible]
एतना के मीतवनि ना [illegible]
एतना के मीतवनि ना [illegible]

अमर वीर निरम्मल का आगमन

सुग्वाह् बांचत गिरिहिया चलि रे अईन ऽ
एकदम हलल ना किलवा में चलि रे जा ऽ न ऽ
किलवा में हलि कई ना आपन बाड़ समान ऽ
झटपट कसइ ना घोड़ियाह् रे पवनियां
कसि कनि ले लेह् नीकलले वा मय रे दानय
घोड़िया के बान्हत लावंगिया के बान हों डारी
आपन हलि गयल कोठरिया मय रे दा ऽ न
ऊह भाई देलेनि ना तलवाह् लेइ रे खोनीन
ओहि घड़ी अंगवाह् में पहिरत वायं अंगरखा
गोड़वा में कसइं तीउरिया रे तमाने
आजु भाई डिल्लीय ना सहिया वाइ रे जूता
अब वीर दावइँ ना एड़वा रे चढ़ाई
जवने घड़ी हलि गय्न ना गंजड़े लोहवा में
जेनकर गाड़लि अखन्हिया वाइ रे संगिया
अम्मर गाड़ल ना संगिया जे देख रे वाय
जउने घड़ी जाइकह् ना हथवा जे बन लगउले
टंगियाह् देलेनि ना धरनीय रे वराय
ओहि घड़ी पिरिथिमी मुंइ डोलवा जे होय रे लगनीं
हहरल बानह् ना कोटवा क सब रे लोग
आजु कहँ अम्मर ना रजवा जे वा निरम्मल
जेकर भाई खोजलेह् मीरितिया जे नाहि रे वाय
अम्मर गाड़ल ना संगियाह् वा बवरले
अब पिरिथी होईय गईंलिया बन भंव रे डोल
आजु कहँ केकर मीरितिया जे निय रे रइलीं
आजु वीर ले लेइ अवरिया जे वाइ उठाय
आजु कहँ नीकलि दुअरवाह् पर रे भइनऽ
अब फेरि बोलत लारमवां क बान रे बोल
सुनिलह् राजह् दइयवाह् कइ रे लड़िकी
विहनह् उतरलि गावनवां से देख रे वाय
जउने घड़ी नीकलि आंगनवां में धन रे गइनीं
पवनी के धइलेह् ना बगिया जे जाइ रे वाय
रोइ रोइ कहति ना रनियां वा जाय रे कुंडल
पटकति बानीय धरतियांह् रे क पाऽर
आजु कहँ सुनवह् मालिक वाह् रे हमा ऽ र य

मूनहू ना हनिया कोठिया [illegible]
मुववाहू गाइनि ना [illegible] [illegible]
जेकर भाई [illegible]
देखिलहू [illegible]
वहे भाई [illegible]
रनियाँहू निकलि [illegible] (३६००)
आइ के नि [illegible]
रोइ रोइ [illegible]
सइयाँ तू मनवहू [illegible]
हमें ध्यान के धुंटाहू [illegible]
अपनेहू बदन [illegible]
हमके त काहेहू [illegible]
कइसे हम रहब ना [illegible]
ओहि दिन [illegible]
बिपही तू मनवहू [illegible]
अब तुम [illegible] [illegible]
हम जात बाटीं [illegible]
ना फेर जाइ [illegible]
तब हम [illegible]
नाहि जब बाटीं [illegible]
मयवाहू [illegible]
ऊ तब [illegible]
आइ [illegible]
मूनहू ना [illegible]
अब नाहि मैं [illegible]
रनियाँहू रोइ रोइ ना [illegible]
घरवो त हमरेहू ना [illegible]
दुइ [illegible] [illegible]
ओहि दिन बीतत ना मुड़वा [illegible]
बिपही तू मुनवेहू ना बतियाहू [illegible]
माइ मोरे मग्माहू मुड़वा [illegible]
पतिया मैं सीयलेनि ना रनवा रे [illegible]
कइसे हम बनम ना बतिया मेटि रे देई
कइसे हम धावइ धोवतियाहू हा [illegible]

ओहि दिन रोवति ना रनिया वा जय रे कुंडल
पटकति बानीय धरतियाह् मेंनि रे माथ
सइयां तं चऽढ़ल रईनियाह् पर रे जालऽ
हमके तू काहेह् मोढ़सवा जे देले जा
ओहि दिन बोलल ना सुववा जे राजा निरम्मल
बियहीय पूड़ाह् आगमवां जे तोहें रे देब
एकदम रेंगल कोंहरवा जे घरे गइनऽ
कच्चाह् लेहलनि घइलवाह् रे उठाय
ओहि दिन कच्चा ना सुतवा जे आनि रे देहलेन
अब देइ देहलेनि जाननियांह् केनि रे हाथ
बियही तूं रोजई ना उठियह् रे सबेरवां
अब तुंव फानह् ईनरवा में खिच रे जाल
जाइ दिन जीयत अगोरियाह् जे हम रे रहबय
खींच कनि पीयह् ना पनियाह् रे बनाय
जउने दिने नगर डगरवा जे होइ रे जइहंय
पतियाह् जइहइं ना हमरउ रे मेटाय
तब जाने सइयांह् अगोरिया में जुझि रे जइहंय
चूड़ाह् चूड़ई ना सूतवा जे होइ-रे जाय
पनियाह् छूवत घईलवा जे गलि रे जइहंय
तब जानय जूझल ना सइयांह रे हमार
आजु भाई अवरोह् आगमवां तोहं रे देबय
अब फेरि लेइयह् ना डबवाह् रे उठाय
डबवा में अकराह् कलोरियाह् कइ रे दूधवा
अब भरि देलेह् ना डबवाह् मेनि रे बाय
उपरां से तुलसीय ना बिरवा जे डालि रे देहलेन
डब्बाह् कइलेनि ना ओठियन देखऽ रे बान
बियही तू रोजइ सबेरवा जे रे नहाऽयऽ
जाइ कनि देखह ना जबवाह् रे उधाऽर
जाइ दिन जीयत अगोरिया में हम रे रहबय
तइ दिन दूधइ ना रहिहइं रे तोहाऽर
तुलसीय गह गह ना ओही में भइल रे रहिहंय
तब जानेह् सइयांह् ना अम्मर वान हमार
जउने दिन नाहीं ना बतिया जे कूलि रे रहिहंय
जउने दिने नागर डांगरवा जे होइ रे जावय
दुधवाह् खूनइ समनवां जे होइ रे जाय

तुलसीय ओही मे जइहंई बुम्हि रे माई
तब जानेय फूहल निरम्मल सर रे दार
जउने परी सेईय ना बगिया सेइये गइनऊ
हूपवा मे ले लेह् हाजरिया बाइ रे सागऊ
हांकि बनि भयल ना घोडियाह् अस रे बारय
आतु भाई लेलेसि ना हूपवाह् मेनि रे सांगऊ
घोडिया के तनिक आसवा जे बाय छुववले
घोडियाह् निषयाह् ना छोडलेस मुइ ए धरती
उपरांह् छोटीय देलेह् बाह् अस रे मान
ऊहे भाई यादर ना रेखवांह् बाय संवरिया
पवनीय स्यह घोयावति बाडे रे जाय
बेह् भाई पजरीय छमिछवा जे बेनि रे भीतर
पोडी जाइ ये गूयलि अगोरियो जे दई रे पाल
जउने परी लागलि कचहरी वा गूयवा बज्य
ओहि ठिन गूयलि ना घोडिया जे भइनी रे ठाड़
ओहि दिन मन्माह् ना उठनह् हो मोलागत
जाइ बनि घइलेहि पवनियांह् बइ रे थाग
जउने भाई उतरल ना मुयवा जे यान निरम्मल
मम्मा के नीहुरि बरत याडें पर रे नाम
ओहि परी मायेह् आमरयाह् रह रे मयनें
तुहे मयने जीयह् ना सयवाह् रे बरीस
मयनेह् देसयाह् ना देसवाह् बइए अइया
तोहरे जे पेरई मा जंमियाह् रे शरीर
कहें तवनेह् मा दिनवाह् राम समइयां
गुबबाह् रेंगल घाननियो पर बाइं ए टहरत
घुमि घुमि देयत अगोरियाह् बाइ रे पासह
तब बहें जवन गा मायाह् रहल अगोरियां
उहे होद गयल बोइमबाह् रे यगारय
तब बहू चिनाह् मारदवाह् बइ ए तीवई
गनियाह् गलियाह् अगोरियाह् हिडि रे यानी
अवने पदी देयई ना गुबबाह् रे निरम्मल
छतिरीय दोतन अंगुरियाह् बाय बचावय
तब पेरि घोसय मा रजवा हो मोसागत
मयनेह् तू मनयेह् बाहूनवो रे हमाऽरय
आतु मयो आरम बा बारवा पनवा बज्य

मुखवा में लेवह् ना विरवा रे उठाई
आजु कहँ खेतवाह् पर वइठल वाइ मूदइया
मूदई के मारह् ना खेतवां वहि रे याई
भयनेह् आनि देत ना डंड़िया मंजरी कऽय
लेइ कनि किल्लाह् भोगित ना रनि रे वासय
एतना जउ कहत ना वतिया राजा मोलागत
निरमल जोरल वा विरवा जे पनवां कय
मुखवा में लेलेनि छऽतिरियाह् रे उठाय
कन्हवां पर धइलेनि ना संगियाह् रे हजरिया
ऊहे भाई उतरत ना सिढ़िया जे देखऽ रे वाव
जवने घरी उतरईं ना सिढ़ियांह् राजा नीरम्मल
वायेंह् वोललि सूइयवाह् देख रे वाय
जउने घड़ी वोलियाह् सूइययाह् जे वोलत रे वानी
निरमल के भयल सुवहवा जे देखऽ रे वाय
आजु कहँ हो हो न दइवाह् मोर नारायन
का वरम्हा लिखलह् ना मंझवांह् रे लीलार
जउने घड़ी रेंगल ना सूबवाह् वाइ निरम्मल
सिढ़ियाह् उतरल न किलवाह् कइ ऐ जानऽ
ऊहे भाई रेंगल ना उत्तर थोड़ा रे गइना
सुइयाह् वोललि ना वायंह् वाइ रे हांथय
सुववा के भयल सुवहवाह् देख रे वानऽ
आजु कहँ हो हो न दइवा मोर नारायन
क्या वरम्हा लिखलह् ना मंझवा रे लीलाऽरय
घरवां में वियही के काहनवां मेटि क अइलीं
कइसन वानह् आगमवा रे देखातय
आजु भाई देखइ आगमवा कय खरावय
सुववा के भयल खऽटकवा देख रे वानऽ
जउने घरी किल्लाह् वाहरवां जे चलि ए गइनऽ
लोरिकाह् वइठल पालकिया जे वाड़ऽ अगोरि
जउने घड़ी परि गईलि नाजरिया वा लोरिके कऽय
वियही ते मनवे काहनवांह् रे हमाऽर
एक ठेनि आवत मारदवा वा कीलवा से
देखु भाई दाहीय मूदइया जे हंवय हमाऽर
पहिले हमइं सरेखवा में धन लगइब्या
अपनेह् रहींय ना छनवांह् हम रे वान

ओहि दिन उनटि ना नेतवा जे मारे रे मजरी
पँचरंग पँचति ओहरवा जे देइ रे बाय
अब धन मूडियाह् निकालिये बे बाढ रे सावित
देखति बाढइ नीरम्मल सर रे दार
आजु पहँ सइयाँह् ना सुनिलह् सुख रे नयन
आजु मोर सुनिलह् ना सिरवा पऽ मउ रे यारऽ
सइयाह् अइवेह् ना तहसे जिउ रे बचनऽ

सोरिक और निरम्मल का युद्ध

अब नाहिं बचिहइ जिनिगियाह् रे तोहाऽर
आजु पहुँ अम्मर ना गुबवाह् आवे नीरम्मल
जनवर घोजलैह् जोडियवाह् नाहिं र थानऽ
आनवर मझीय भिरितियाह् नाहि रे बानी
परम्हा से लेहलेन मीरितियाह् नाहि रे बाई
ओहि घरी रँगम ना ऊहब हो रँगवमऽ
नीचमि आयल सोरिकयाह् बेनि रे पाञ्जऽ
सोरिकाह् उठिरह् मारदवाह् लेइ ए ओढियन
अब फेरि धाह् परल बहु पर रे नाञ्म
अम्मर देवय आगिरवाह् बाय रे बाञ्ज
आजु भाई आयेरह् आगरवाह् होइ ए रहल्या
तू फेरि जीयरह् ना सायवाह् रे परोसऽ
सब बहु दगइ दुरीयवा पइ रे भइया
तोहरेह पेवरउ ना धधियाह् रे सरीरम
आजु भाई देयरह् ना हुलियाह् एठियन बऽम
अउ फेरि यानह् ना ममवाह् अउरे रायल
एरह् लागन ताधा जोइयवाह् भई रे ध्यालऽ
अउ फेरि छाडि दह् ना हटियाह् बीर रे सोरिका
लेइ जाइ भिल्लाह् भागहउ मा रहि रे बाठय
तब फेरि बासन मारदवा मा बीर रे सोरिका
निरमल मनबह् काहनवाह रे हमाऽर
देखऽह् हम पोरीय ना मदमीय रे पपोरिया
मा हम मारन अगारियाह् भेनि रे छेन्हय
अरोह् गाठीय रावदया जे देखऽ मगाई बऽ
सनियाह् बरठ ना जनियाह् बारी गुवामय
एगह बपा मा गुबयाह् ब भव रे सानी

पहिलेह्‌ देलेनि झागड़वाह्‌ रे लगाई
एतनाह्‌ सूनत अहिरवाह्‌ कइ रे बातय
निरमल ना देखइ ना झानस रे ज बातय
सांचइ अहीरे क कसुरवा जे नाहिं रे एठियन
सरबस मम्मइ क हउंवह्‌ रे कसूरऽय
आजु कहैं सूंववाह्‌ अगोरिया के मम्मा हउवंऽय
परजाह्‌ करत ना सदियाह्‌ बाइ बियाहय
कउनो जो घटति रसदिया जे ओनहूय के
किलवाह्‌ पर देतहं ना सूववाह्‌ रे दियाई
ईजति बनलि ना रहति रे हमा ऽ र ऽ
आजु कहैं आवति बरतिया जे बा अहीरे क ऽ
अब होइ अइनींय अगोरियाह्‌ एहि रे पा ऽ ल
मम्माह्‌ हाथीयना घोड़वा जे पर रे गहऽतऽ
अउ फेरि करतह्‌ ना ओठियन रे मिला ऽ न ऽ
अब कइसे खटिय आपदवा जे मम्मां परतं
लिखि कनि देतह्‌ ना पतियाह्‌ दव रे राई
लोरिकाह्‌ खातइं गाउरवा जे रहतंऽ घरवां
हाथ आइ के धोवतंह अगोरियाह्‌ तोर रे पा ऽ ल ऽ
जेहर जेहर जातइ अहीरवा जे बीर रे लोरिका
मम्माह्‌ करत बड़ईयाह्‌ जात तो हा ऽ र ऽ
आजु कहैं एतनाह्‌ ना बतियाह्‌ लेइ ए कहलेन
आजु कहैं एतनेह्‌ ना बतियाह्‌ के उपरवां
अउ फेरि ठाढ़ह्‌ मारदवाजे उहां रे बाय
ओहि घड़ी गूनत ना रजवा जे बायं निरम्मल
दरियांह्‌ करइ न मनवांह्‌ रे गियान
आजु कते एमहं कऽसूरवा जे आहीरे क नाहिनीं
मम्माह्‌ क कवन जीयनवा जे भयल रे बाय
ऊ आपन जातीय कऽविलवा जे बाड़ रे बीयहले
अउ फेरि रूपियाह्‌ लगवले वा ले ल रे का ऽ र
आजु कहैं आपन गावतवां जे लेइ रे जातं ऽ
मम्मा क कवन झागड़वा से बाड़इ रे काम
एहि मंह आहीरे क कऽ सूरवा जे नाहीं हउवंय
सरबस मम्मइं क हउवंह्‌ रे कसूर
……सूववाह्‌ बायं निरम्मल
कन्हवा पर धइलेह्‌ हाजरियाह्‌ बायं रे सांग ऽ

एवदम लवटि धाननियाह्‌ प' रे पढ़न ऽ
जाइ कनि कहत ना ममवा से बाढ रे बात ऽ
मम्माह्‌ धा ए कहींय ना धा ए नाही
कुछ मोरे बूतेह्‌ काहलवा वा नाहि रे जात ऽ
आजु भाई देखह्‌ ना एठियन कइ ए हाल ऽ
अहीरे के बेकउर ना झागड़वाह्‌ तू मचउला
कवन रहन झागड़वाह्‌ सेनि रे धा म ऽ
आजु तुम देहलह्‌ ना रजियाह्‌ उजर रे बाई
तन कह बीनह्‌ मारदवा्‌ कइ रे तीवई
गनियाह्‌ गलियाह्‌ ना बानीय डिडि रे यात ऽ
मम्माह्‌ जनतह्‌ पारजवा जे हृय रे महरा
महराह्‌ परत बीवाहवाह्‌ ले ल रे कारी
तब फेरि देतह्‌ रासधिया जे पउनो रे जाई
महरे के जवनि ना रसधि घटि रे जाती
बिमवा से देतह्‌ पारजवा मे पहुँ रे धाई
ओहि घड़ी धातह ना सोगवाह्‌ गउरा क ऽ
मम्माह्‌ परत यडइया जात तोहार ऽ
मम्माह्‌ जाहाह्‌ पसीनवा जे छोहार गीरत ऽ
छहा ढारि देतई सोरिकवा जे आपन रे खून
सूनह्‌ ना हुलियाह्‌ ओठियन क ऽ
राजाह्‌ सूनत मोलागति लेइ रे बान ऽ
जरि मरि भयन छतिरियाह्‌ रे धगार ऽ
भयोह्‌ नाहक छतिरियाह्‌ घरे जनमत ऽ
घरियाह्‌ छोड़लह्‌ ना घेतवाह्‌ पर हमा ऽ र ऽ
आजु कहँ कइलह्‌ यसवाह्‌ कइ रे हूब ऽ
आज तुह छतरीय ना होइबह्‌ पाछ रे देहल ऽ
तब याह अहीर गाहत धा तर रे धार ऽ
ओहि दिन सुनह्‌ ना हुलियाह्‌ ओठियन क ऽ
मे भाई ओहुप समइयाह्‌ कइ रे हाल ऽ
एतना जो कहत ना बतियाह्‌ बाइ ए ओठियन
फेर भाई बोमत ना छतिरीय सेइये बाप
भयो तूं नाहक छतिरिया जे घरे जनमम ऽ
होइ जात तोहउ ना जतियाह्‌ रे धमा ऽ र
आज तुम खिपमह्‌ न खिमया जे दतवा से
बरउम रहतह्‌ दूरियाह्‌ र अगोर

पहिलेह् देलेनि झागड़वाह् रे लगाई
एतनाह् सूनत अहिरवाह् कइ रे बातय
निरमल ना देखइ ना झानस रे ज बातय
सांचइ अहीरे क कसुरवा जे नांहि रे एठियन
सरवस मम्मइ क हउंवह् रे कसूरऽय
आजु कहें सूववाह् अगोरिया के मम्मा हउवंऽय
परजाह् करत ना सदियाह् वाइ वियाहय
कउनो जो घटति रसदिया जे ओनहूय के
किलवाह् पर देतहं ना सूववाह् रे दियाई
ईजति वनलि ना रहति रे हमा ऽ र ऽ
आजु कहें आवति वरतिया जे वा अहीरे क ऽ
अव होइ अइनीय अगोरियाह् एहि रे पा ऽ ल
मम्माह् हाथीयना घोढ़वा जे पर रे गहऽतऽ
अउ फेरि करतह् ना ओठियन रे मिला ऽ न ऽ
अव कइसे खटिय आपदवा जे मम्मां परतं
लिखि कनि देतह् ना पतियाह् दव रे राई
लोरिकाह् खातइं गाउरवा जे रहतंऽ घरवां
हाथ आइ के धोवतंह अगोरियाह् तोर रे पा ऽ ल ऽ
जेहर जेहर जातइ अहीरवा जे वीर रे लोरिका
मम्माह् करत वड़ईयाह् जात तो हा ऽ र ऽ
आजु कहें एतनाह् ना वतियाह् लेइ ए कहलेन
आजु कहें एतनेह् ना वतियाह् के उपरवां
अउ फेरि ठाढ़ह् मारदवाजे उहां रे वाय
ओहि घड़ी गूनत ना रजवा जे वायं निरम्मल
दरियांह् करइ न मनवांह् रे गियान
आजु कते एमहं कऽसूरवा जे आहीरे क नाहिनीं
मम्माह् क कवन जीयनवा जे भयल रे वाय
ऊ आपन जातीय कऽविलवा जे वाड़ रे वीयहले
अउ फेरि रूपियाह् लगवले वा ले ल रे का ऽ र
आजु कहें आपन गावननवां जे लेइ रे जातं ऽ
मम्मा क कवन झागड़वा से वाड़इ रे काम
एहि मंह आहीरे क कऽ सूरवा जे नाहीं हउवंय
सरवस मम्मइं क हउवंह् रे कसूर
······सूववाह् वायं निरम्मल
कन्हवा पर धइलेह् हाजरियाह् वायं रे सांग ऽ

एकदम लवटि घानियाह् [illegible]
जाइ [illegible] ना ममवा से बांड़ [illegible]
मम्माह् का ए [illegible] ना का ए नाहीं
कुछु मोरे बूतेह् काहनवा बा नाहिं [illegible]
आजु माई देखह् ना [illegible]
अहोरे से [illegible] ना [illegible]
[illegible]
आजु तुव [illegible] ना [illegible]
तन [illegible]
गनियाह् [illegible]
मम्माह् [illegible]
[illegible]
तव फेरि देखह् [illegible]
[illegible] ना [illegible]
[illegible]
ओहि पदी [illegible]
मम्माह् [illegible]
[illegible]

आजु तूय छतरीय ना होइकह भयनेह् पाछ देहल्या
तब तह अहीर गहत बा तर रे वार
आजु कहैं तवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
नींरमल एतनीय जब बतियाह् लेइ ए सुनलेन
छतरी के बहल नयनवां से बाइ रे नीर
मम्माह् अपनेह् ना धरवांइ बल रे वाइ क ऽ
सोझई मारत ना गोलियाह् बांड़ उठाई
घरे हम बियही क काहनवां जे मेटि रे अइलीं
ए माह बानह आ दिनवांह् रे देखातय
एतना जब कहत ना ममवांह् लेइ रे बान ऽ
रोइ कनि लेलेसि हाजरियाह् रे उठाई
संगियाह् धरइ ना निरमल कन्हवा पर
ओहि घड़ी लवटल अगोरियाह् बान रे जात ऽ
चलि गयनह् जीरवाह् ना बहतरि रे खेतारय
जहवां पर बईठल आहीरवा वा बीर रे लोरिका
पलथी पर धइलेह बीजुलिया बा तर रे वा ऽ र ऽ
ओहि घड़ी घूमल ना सुबवा जे चलि रे गइन ऽ
एकदम गयनह् अहीरवाह् केनि रे पास
आजु भइया सुनबह् अहीरवाह् बीर रे लोरिका
एठियन तूं मनतह् काहनवांह् रे हमा ऽ र
आजु मोर बूढ़इ ना ममवां बा छिरि रे आयल
ओन्हें लागल तारून जोइयवाह् कइ रे ख्याल ऽ
अहींरा तैं छोड़ि देह् ना डड़ियाह् मंजरीय क ऽ य
लेइ जाइ किल्लाह् भोगउ ना रनि रे वा ऽ सय
एतना जउ कहत ना सुबवाह् बाइ ये ओठियन
तब फेरि बोलल नीरम्मल सेनि रे बातय
आजु कहैं सुनबह् ना सुबवा मोर निरम्मल
एठियन मनबह् काहनवां रे हमा ऽ र ऽ
देख हम चोरीय ना कइलींय रे पचोरी
ना त आइके मरलीं अगोरिया मेनि रे सेन्ह ऽ
अपनेह् गांठिय रोकड़वा रे लगाइ क ऽ य
आपन जातियाह् बियहलींय रे कबीलाय
एमह कवन ना सुबवा क न क रे सान
नाहक देहलनि झागड़वा रे भिड़ाई
सुबवाह् हमरउ कसूरवा देखऽ हो नाहिंनीं

तोहरइ मम्मइ क हुडवह् रे कद्दु [illegible]
सूनह् ना हनियाह् बोठियन क [illegible]
सुववाह् बोलन लारनवह् कइ रे बोल [illegible]
आजु वहँ सुनवह् वहँरवाह् बोर रे [illegible]
देखि ल ऽ भाई बूडई ना मनवा का [illegible]
आंन्ह लागल ताम्न जोरवाह् कट [illegible]
अब छाडि दवह् ना डडिवाह् [illegible]
लेइ जाई किन्लाह् मोगद ना रनि रे [illegible]
एतना जब सूनत मरदवा बा बोल रे [illegible]
जरि मरि भयल ना दरियाह् [illegible]
अब वहँ सुनवह् ना सुवनाह् [illegible]
एठियन मनवह् काहनवाह् रे हुना [illegible]
जवन भाई देरइ ना ममवा का [illegible]
आपन बहिन विठियवाह् [illegible]
सुनवाह् सेइ जाउ ना किन्नवह् रे [illegible]
कय संग देवउ ना बोठियन रनि रे [illegible]
एतना जब कहत ना बतिया [illegible]
छतिरीय जरि मरि ना भयन्ह् [illegible]
आहि दिन बावेंह ना बतवा [illegible]
वनवा में भागीय झागडवा [illegible]
.... 'ना पयतरा चलइ र [illegible]
आहि जउ जिरवाह् ना बहुतरि रे [illegible]
जइसेह चमइ पयतराह् गेतवा [illegible]
जइसे भाई भावउ भइसवाह् [illegible]
जेउनाह् पेडद ना पनवाह् [illegible]
मयम आनह् गरदवाह् रे [illegible]
चवन पर्रा नेगइ [illegible]
दुआह् [illegible]
आहि दिन [illegible]
आजु भाई [illegible]
आजु [illegible]
जवन [illegible]
आहि दिन [illegible]
निरमम [illegible]
देवः [illegible]

ना त घाउ पीछेह् ना रखवइ रे गवांय
आजु हमरे गुरुह् क कीरियया जे हुउवे ठानल
अगवांह् मारइ के लिखलई बाड़ ऽ तीलाऽक
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन क ऽ य
के फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हा ऽ ल

निरम्मल का लोरिक पर आक्रमण—
दुर्गा द्वारा लोरिक को सहायता पहुँचाया जाना

ओही घड़ी देखह् तमसवाह् छतिरी क ऽ य
उहे भाई खींचत हाजरियाह् बांय रे सांगी
अहीरे के मारत टिकसवाह् लेल रे का री
ओहि घरी धनि धनि ना मइयाह् मोरि भगउती
दुरुगाह् आदीय ना दिनवां क पुज रे मान
उहे भाई चम्फाह् अहीरवा के वानी डंकउले
लेइ केनि थम्हलेह् आकसवाह् मेंनि रे वा ऽ
अब गीर लगाइं हऽजरियाह् लेइ रे सांग
उहे भाई चूड़इ ना चूड़वाह् होइ रे जानीं
फेरि ठाढ़ भयल अहीरवा वा अंगवा में
अब सूवा देखई नाजरियाह् रे ऊठाई
ओहि घड़ी दूसर आवरियाह् वाइ रे मारत
अहीरे के मारत पेटसवाह् वाई लहाई
ओही घरी खेलल अहीरवा वा वीर रे लोरिका
अहिराह् वांवई तिरिछवा जे होइ रे जाय
आजु गिरि गइलि ना संगियाह् फेरि हजरिया
अब चुड़ चूड़ई ना चुड़वा जे होइ रे जाय .
आजु लह् झंखई ना सुववाह् राजा निरम्मल
अम्मर दांतन अंगुरियाह् वान चवात
आजु कहैं हो हो ना दइवाह मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मझवांह् तक रे दीर
आजु कहैं दुदुय आवरिया जे अमरे क ऽय
आजु भाइ वावइं तिरिछवा में डोलि रे जायं
आजु बाबू एक्कइ अवरिया जे वचि रे गइलीं
एमंह दइवाह् लगावइं बेड़ा रे पार
कहवां तूं बाड़िउ ना मइयाह् मनियां भगउती
तनी एक चढ़ी नाजरिया पर हमरे जा

ओहि दिन परगटि ना देवियाह् वाइ भगउती
मुवदा के गईलि नाजरियाह् पर रे ठाढी (४६४०)
जउने घरी ताकह् ना अँखियाह् रे गुरेरी
सोरिके पजरेह् दुरुगवाह् थाइ रे माइ
दुरुगाह् रतनीय घंघरिया जे बाइ पहिरले
नाचति बाड़इ सोरिकवा कइ रे बाहंय

लोरिक का अहंकार—दुर्गा को श्रेय न देने के कारण लोरिक युद्ध में मृत

ओही घड़ी बोलल ना सुबवाह् वाइ निरम्मल
अहिल्य का एह कहींय ना का ए नाहि न
दुइ मोर बूवेह काहलवा ना बा नाहि रे आतय
भमवाह् परगटि ना देविया बा भगउती
नाहि हम देखीत ना घेतया पर मनु रे साय
ओहि दिन सामस में अहीरवा जे आइ रे गयनऽ (४६५०)
ओहि दिन बतियाह् ना कइलेसि रे उतार
आतु भाई जांघेह् ना जोड़वा जे हमरे रहिहंय
के हमरे भूजांह् रहीय नह मऊ रे साय
· ···ना देवियाह् मोर भगउती ·
अब हम देखब ना घेतवा पर मनु रे साय
एतना जउ सुनलेनि ना मइयाह् मोरि दुरुगवा
सिर छोड़ि के फरकेह् ना गइनीय रे बईठि
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे नीरमल कय
धीचत बानह् हाजरियाह् लिइ रे सांग
पउने घड़ी मारइं टिपसवा जे अहीरे कय (४६६०)
अहिरा पाम्हल ओढ़नियाह् पर रे बाय
ओहि घड़ी ओढ़न दोढ़नियां जे होइ रे गइली
रउवाह् हरिय गयल नाह् सइं रे सार
आतु भाई पगुराह् दरदियाह् रे समइनी
थंगिया ।। गइमि हारदिया जे छिति रे राय
ओहि घड़ी ठाढ़प आहीरवा जे गिरि रे गयन ऽ
ओहि जउं जिरयां ना बहतरि रे घेतार
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
अहिराह् ठाड़ई परनवांह् चलि रे गई न ऽ
ऊ भाई पयनह् ना खड़ियाह् तर डंरवाई

ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
रजवाह् चलल निरम्मल बाड़ रे जात
एकदम धइलेनि ना रहियाह् किलवा कऽय
उहे भाई जातय ना किलवाह् भंव रे नार
तब तक सूनह् ना हलिया दूरूगा कऽय
दुरूगाह् ऊठल भवनियां देख रे बानी
अब चलि गइलींय पलकिया किह रे ठाढ़
ओहि घड़ी बोलति ना मइयाह् बा दुरूगवा
जउन भाई आदिय ना दिनवां क पुज रे मान
आजु कहैं सुनिलेह् ना धनवांह् तोयं मंजरिया
एठियन मनबेह् काहनवांह रे हमार
देख भाई लसियाह् ना बीगाड़े ना अहीरे कऽय
एकर करेह् पाहरवाह् लेइ रे जाय
देखेह् दिनवांह् ना कउवा जे कुक्कुर देखे
रतियांह् देखेह् ना बंड़वाह् रे सियार
हम भाई जात बांइना पुस्तक पन्नित के
जाइ केनि देबइ साइतिया जे विच रे लाय
अब नाहीं अइहंई ना सुबवा जे गांव रे आनय
संचेह् भदरा में पालकिया जे रहि रे जाय
देवियाह् ऊड़लि ना ओठियन सेनि रे बानी
पन्नित गइलींय मोहनियांह् लाल रे घऽरे
सोझई गइनींय पातरवा में माइ सकाय
ओहि घरी देखह् ना हलिया जे नीरमल कऽय
नीरमल चढ़ल चाननियांह् पेर रे बाय
आजु कहें जाइ कह ना हथवा जे बाइ मीलउले
मम्माह् से कहत ना बतियाह् अर रे थाय
आजु कहैं मम्माह् ना सुनिल ऽ मोर मोलागत
कहैं तवनेह् ना दिनवां राम समइयां
के भाई ओहूय समइयाह् कइ रे हाल
ओहि घड़ी छूटनह् सीपहियाह् सुबवा कऽय
नोकर चलि जाह् पन्नितवा दर रे बार ऽ
जाइकनि ना मोहनीय ना पन्नित के वलउव ऽ
पोथिय पतराह् ना ले लेह, अहीं रे साथय
कब केनि बाड़इ साइतिया मंजरीय कऽय
हे राम राम राम रा ऽ ऽ म हो राम

कहलेनि रामडं ना राम सुन हो गावन
किह राम भजनींय ना नठवा हो वोहागर
वोहि पेरि नेहून ना नठवा के रामवा कन्न
छन एक मूलीय गईलवा बा दुख रे मार
वोहि दिन ववनेंह ना दिनवाह् राम वनइया
की पेरि वोहुप समद्धन बड़ रे हाल
वोहि घरी पलिन्न मोहनिया जे चलि रे ववन
चलि अयन राजाह् मोनागलि दर रे वार
वोहि दिन आइकह साइलियाह् वाद रे देखन
कठव नारी हेर लेह् साइलियाह् जे बानी देखात
देखियाह् मदगह् वहि ठिया में हानि रे केन्नेन
अगहीय साइनि नाहि हवा जे बानी देखात
आजु भाई वोनिय ना रखियाह् वोन रे दोना
चलया दिनवाह् ना चहिहंद नेह रे काज
मठने घरी दमइ ना बजवाह् दिन रे चढि हंय
तब फेरि भाइनि माइलियाह् मेट रे वात
वोहि घरी वोटिन ना हरियाह् मजगी कन्न
लेह जाह् दिम्याह् मोगह् तुप रनि रे वान्न
वोहि दिन वोलनि ना घनवा बाइ मजगे
दुम्गाह् वोनड़ ना लाग्मवा कड रे बानी
मजरीय देवेह् ना मनिया मोगिके कय
पइवन होवइ ना मढिया के मगाव
आजु कहि दिनवाह् ना हवने कडवाह् हुवहुर
रखिया के देखवेह् ना बरवा रे सिवारम
हमहुप मानइ इन्नरवाह् पुर रे बारी
चाइ चलि पूढि देव ना हन्न इन्द के राज
आजु कहि बन्हा क अटलवा कट रे पानव
तब जनि हर छोडिय दुम्मवा के मोरि रे माघ
वोहि दिन कारन ना मरनाइ् वन्द मगवती
एकदम करनि इन्दर कर् पुर रे जानी
चाइ केनि पुरलेहि ना मुरवा धारि रे जाई
केरवा भाई मानइ ना मेन डर रे रामन
चाद चलि मोरन करन्नाइ् रे बगारद
वोहि दिन बरन्हार् का मन्द मगन मगवति
मब बरन्हानन का मन्नर् रे पटावन

देवियाह् डललेनि हिंडोलवाह् नीविया में
झुलि झुलि गावति मऽउजवा में वानी रे गीतय
ओहि घरी जूटनेंह वरम्हवा क वर रे म्हाईन
ननदि तोहरइ वीरनवां जे देखऽ रे हवंय
आपन तूं त लेनह् लहरियाह् रे बटोरी
ओहि घरी वोललीय ना मइयाह् मोरि भगउती

लोरिक को जीवित करने के लिए दुर्गा द्वारा उपाय रचा जाना

दुरूगाह् वोललींय ना वतियाह् भर रे थाई
आजु कहें सातइं वहीनिया जे माई दुरूगवा
वरम्हा जी देहलेन मिरत लोकवांह् रे उतार
तव का दाधन क ओतनवां जे मिलि रे गयल
हमकेह् खोजलेह् ओतनवां जे नाहिं रे वाय
आजु कहें टूटहा वरूववा जे अहीरे पवंली
तवन वरूवा जूझल ना वानह् रे खेताऽर
ओहि दिन अम्मर वरूववा के कइ रे देव ऽ
तव हम लेईं लहरिया जे आपन वटोर
ओहि दिन वोललीं वरम्हवा क वर रे म्हाईन
नऽनदि मनवह् काहनवांह् रे हमा ऽ र
आजु कहें मीरित घटइवइ नीरमल कय
लिखवई लोरिक वरूववा के तोरे रे हांथ
वाकी भाई आपन लहरिया जे माई पटोर ऽ
एतना जिन करह् जाचनवां जे देख हमार
तवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
देवियाह् गइनींय इन्दरवाह् पुर रे धाम ऽ
देखिल ऽ जे इन्दर ना पुरवाह् कइ कचहरी
वरम्हा जी वइठल कचहरीय पर रे वान ऽ
ओहि घरी देखइं ना मीरित नीरमल कऽय
काइ भाई खोजलेह् मीरितिया जे नाहिं रे वाड़्य
जब उहाँ अम्मर वरम्हवां जे कइ रे दीह लेन
तब राजा लेलेसि पिरिथिमी घरे रे पावय
ऊहे कहें हेरलेह् मीरितिया जे ओकर रे नाहिनीं
एहि जउं नागर अगोरिया अन रे पाल य
ओहि दिन सूनह् ना देबिया माई रे दुरूगा

एठियन तू मनवह् काहूनवा रे हमाऽर
कहि दयाह् लोरिक वरूववा तोर रे उठिहंय
उहे भाई कटिहय ना मथवा वरि रे हाऽर ऽ
छ दाई उडि उड़ि ना मुडवा करी रे तीरथ
लखियाह् घलत पयतरा पर रहि रे आजू
जवने परी सतयें ना मुडवाह् अहीरा कटि हैं
मुडनह आवई इन्दरवाह् पुर रे धाम
ना भाई अइवे जइ टोप खून रे चूइहंय
तइ ठिन होइ हइ नीरम्मल तइ रे यार
तब कहैं एक दू लोरिकवा क बचन रे गनती
लोरिकाह् सग जइहई मुडवाह् रे पचास
उबो नाहि मारल ना निरमल रे मरइहय
पिरिथिमी मे तिनिउ भुवनवा जे चाति रे जा

दुर्गा के प्रयास से लोरिक जीवित

ओहि घडी गूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
दुग्गाह् चलनीय ना उहयाह् सेनि उतारी
एकदम अइनीय ना आतरि मोरत लोके
अब चलि अइनीह् ना जिरवाह् र खेताऽरय
जाके भाई धरइ ना ओठियन देख ऽ रे दान ऽ
तब फेरि बालति ना मइयाह् या दुग्गवा
मकरी जे मनवेह् काहनवाह् रे हम्मार
देवः मेरि हमहीय जानी ना की ए सांही
लोरिकाह् जानइ मारमिया ना पावइ हमाऽर
ओहि दिन बानी बन गुरियाह् माई र चौरि कऽय
लोरिका के छिरकति बदनिया पर माइ रे बाय
ओहि दिन ऊठल आहीरवा ज बागरियाइ क ः
बालत बानह् मारमवा क देख ऽ रे बोम
माउ कहै हा हा ना देवी माई दुग्गवा
एठियन मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर
देवी हम अइगाय नीदरिया जे लागि रे गइली
अब हम सूतल ना जिरवाह् देखु खेताऽर
तब फेरि बोलनि ना मइयाह् माइ दुग्गवा
बचवा तै मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर
माउ सुन बचन मुसइयाह् सूतल रहनः

ओइसन सूतत मूदइया जे देख ऽ तोहाऽर
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन क ऽ य
के फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाली
पतराह् जूटल पन्नितवाह् कइ रे बान ऽ
साइति आइलि ना डोलवा क ऽ निअ रे राई
ओहि घड़ी बइठल ना सुब्रवाह् लेइये बान ऽ
ऊहे भाई देखह् साइतियाह् कइ रे हाल ऽ
पन्नित सुनबह् मोहनियांह् लेइय रे लाऽल
कइ दिन के आइलि साइतिया बा बियहीय कऽय
हमके तूं देबह् सरेखवाह् लेइ रे लाई
आजु भाई तीनिय ना रतिया तीन रे दीन
भद्दराह् परल साइतिया में नि रे बाड़्य
जउने घड़ी चउथाह् ना दिनवा जे चढ़ि रे जइहंय
अब सत घरियाह् ना दिनवा जे होइ रे जाय
ओहि घरी आइलि साइतिया बा मंजरी कथ
मम्माह् लेइ आवऽ ना डोलवा तूं उठ रे वाय
ओहि घड़ी बतीसउ कांहरवाह् लेइ रे च ल न ऽ
सुबवाह् हाथीय हउदवाह् कसि ए लीहलेन
दस पांच ले लेनि मनइयाह् रे लीआईं
रेंगल जानह् ना जिरवाह् रे खेताऽर ऽ
आजु भाई कूछुय ना दुरियाह् रहि रे गयन ऽ
न जरि गइलि ना डोलवाह् किह रे बाड़्य
उहवां पर बइठल लोरिकवाह् बाइ देखाऽतय
ओहि दिन हहरल ना रजवा बा मोलागत
रड़ंवाह् सुनबह् महाउता हथिया कऽय
हथिया के ठाड़इ ना मलवा पेलि रे देबे
जीउ ले के भागींय ना किलवा भंरेनारय
आजु मोर भयनेह् मूदइया जे भयल निरम्मल
आलर लेहलसि परनवांह् रे हमाऽर
कहलेसि मरलींय मूदइया जे खेतवा पर
लेइ आवा मम्माह् ना डंड़िया जे उठ रे वाय
तवन भाई बइठल अहीरवा बा डांड़ी अगोरि कऽय
केकर आइलि मउतिया वा नगि रे चाय
आजु कहँ तवनेह् ना दिनवांह् राम समइयां
हथियाह् कसेह् कसउवांह् किलवा में

एकदम [illegible] हेलफाई
हथिया से [illegible] ना [illegible] नेमपल
एकदम [illegible] रे [illegible]
जहवां पर बइठल [illegible] ना नीरम्मल
रोइ रोइ कहत ना बतियाह् लेइ रे बान ऽ
भयनेह् कहिया कऽ मूदइया तोहार रे रहलीं
आजु मोर देतह् ना जिनिगी भर रे बाई
कहलऽ जे मरली मूदइया खेतवा पर
कहे भाई बइठल बा हंडिया रे अगोरी
एतना जो सुनत ना रजवाह् वा नीरम्मल
कहे भाई हाते मे अंगूरिया जे धइ रे लेह्

सोरिक और निरम्मल का युद्ध—बार बार सिर काटे जाने पर भी निरम्मल का जीवित हो जाना

आजु कहै हो हो ना [illegible] मोर नागमन
का बरम्हा लिखलह् ना [illegible] रे लीलार
धरे हम सिपही क काहनवा जे [illegible] कइली
कइसनि बाहई मउतिआह् [illegible]
आजु भाई मरत मूम्दवा का [illegible]
एमेह आयल [illegible] रे [illegible]
ओहि परी एतनाह् [illegible]
फेर भाई लेहलें हामरिफाह् [illegible]
तहं भाई उतरइ ना [illegible]
सोमइ सिरवाह ना लेहलेन [illegible]
ओहि दिन बोलल मरदवा वा [illegible]
सिपही तें मनवेह् काहनवाह रे [illegible]
देगु भाई जवन नीरम्मल आयल रे [illegible]
फेर निरमन आवत बानइ नह लेद ए [illegible]
ओहि दिन बोलल ना बतियाह् रे [illegible]
सगोह् आवह् ना खेतवा पर लागि रे धाई
तोहार हम सीनिस आवरिया जे बाड़ा रे [illegible]
परराह् घाय धमरवाह् तोहार रे घायल
संगीय हमरउ भार्वारियाह् तू अगेजउ
अब कबनोस्साह् [illegible] नह् तर रे बार

जउने घड़ी रेंगल ना एकदम रे रेंगावल
अब चलि गयनह् ना डंड़ियाह् के नगीच
ओहि दिन ऊठल मरदवा बा वीर रे लोरिका
दरियांह् बोलत ना बेड़वांह् वाइ जवाब
आजु भाई ओसरि ओसरिया जे लेल रे करले
ओसरी पर कुइयांह् भरति वांइ पनि रे हाऽर
आजु भाई पक्काह् ना घउवा जे सूवा रे थम्हलीं
अब कचलोइयाह् ना थम्वह् ना हम्मार
जउने घड़ी सूरुकि ना फेंकले जे वाइ मीयनवां
अउ दहतगीय तानत वाह् तर रे वार
जेकर भाई चारीय अंगुरवा जे भइनीं रे बहरे
जेकर ताड़क आकसवा में चलि रे जाय
ओहि घड़ी निचवांह् ना मरले जे वा दावन्हरा
पोरसन गइलीय लावरिया जे गुमु रे वाय
ओहि घरी घुमि गईलि मलकिया जे नीरमल कय
खड़िया गयनीय गरद मेंह् रे बिसाय
ऊहवां से ऊड़ल ना मुंड़वा बा नीरमल कय
एकदम बद्री ना असरम चलि रे जाय
जाइ कनि मारइ ना गोतवा जे समुंदर में
सब कनि करत देव्रतवन सेनि रे भेंट
आजु भाई उहंह् सेनिय ना मुंड़वा रे चलनऽ
धरियांह् चऽलति अगोरियांह् देख रे वाय
धरियांह् काटत पयंतरा बा नीरमल कऽय
फेर मूंड़ आयल गऽरदने पर गयल बईठि
ओहि दिन डांकीय चम्फवा जे अहीरा मरलेस
ऊहे मुंड़ ऊड़ल ना फेरिया बा चलि रे जात
एकदम गयनह् ना ठाकुर जिय ऐ मुंड़वा
जाइ केनि ले लेनि ना गोतवाह् रे लगाय
घुमि घुमि करइं ना भेंटिया जे देवतन से
फेरि भाई आवत अगोरिया जे बान रे पाऽल
ओहि घरी बइठीय गरदने पर लेइ रे गयनऽ
अहीराह् डांकीय चम्फवा जे फेरि रे लेइ
ओही घरी तीसरह् ना मुंड़वा जे उड़ि रे गयनऽ
एकदम कासीय बिसेसर चलि रे जाय
जाके भाई मरलेनि ना गोतवा जे गंगा में

देवतनि के मड़्मैनि ना भेंटिया जे घूमि रे घूम
उहवाँ से ऊडल ना मुडवा बा नीरमल बय
आइ कैनि गयल गरदनेह् रे बयठार
ओहि घरी देघह् ना हनिया जे अहीरे बऊ
घम्पाह् डाबीय ना गयनेलि रे अवार
जउने घरी घउयाह् भवरिया जे लागि रे गइली
वहे मूड नीचलि ना गायाह् जी रे जाय
जाके भाई मारह ना गोतवा जे गगिले में
चलि भेनि करत देवतवन बनि रे भेंट
उहे भाई भेटइ दीदरिया जे बइये लवटल
घरियाह् चलति पयठरा जे इहो रे याय
रूप लेनि वईठीय गरदने पर दग र गइनी
अहीराह् डाबीय घम्पवा जे मारि रे दे
जउने घरी पपवाह् ना पठवा जे मारि रे देहेनन
ऊहे मूड ऊडल इन्दरयाह पुर रे जाय
जहवाँ पर लागलि कचहरी बा बरम्हा बय
ऊहे मूड गयल कचहरीय मेंनि रे याय
आजु नहीं गुनयह् ना बरम्हाह् मोर नारायन
एठियन तू मनयह् काहलयाह् रे हमाऽ र
हमवेह् बन्हियइ अमरवा जे बइबऽ मेंजलऽ
आजु काह् धइलह् ना दसवाह् रे हमार
आजु बरम्हा एहर ना मुहवा जे बड़ घुमावय
मुडवाह् आगेह् मयलवा जे याद रे आव
का बरम्हा अइसऽ जातनवाह् रे हमाऽरय
मोपजि लिपलह् ना लोहउय रे हम्मार
ओहि दिन बोलनह् बरम्हवा जे मरम बय
दरियाह् करइ ना बेदवाह् रे जबाय
अब मुनि लेयह् ना मुडवाह् जे नीरमल मय
एठियन तू मनवह् काहनवांह् रे हम्मार
अदोह् एइ दाई न सेई घई आइ रे गयलऽ
ए दाई पेरिय ज लोहऊ से आई रे जा
जई टोप घूहइ ना गनवा जे धरती मे
जई टेहि होइहइं नीरम्मल जई रे याऽर
तब कहै एक दू सोरिकवा के का ए नहीं
सोरिकाह् माँग जइहइ घुइयाह् रे पयाय

आजु भाई तब्बों ना नाहींय ऊ मरइब
नीरमल तूं मनबह् काहनवांह् ।रे हम्मार
उहवां से ऊड़ल ना मूंड़वाह् नीरमल कऽय
आइ कनि बइठल गरदनेह् पर रे वाय
अहीराह् डांकीय चम्फवा जे देख रे मरलेस
फेनु उहै ऊड़ल सरगवाह् ओरि रे जाय
ओहि घड़ी धनि धनि ना मइयाह् मोरि दुरूगवा
डांटति वानीय वरूववा के ओहि रे दम्म

निरम्मल धराशायी—पत्नी जयकुंडल को पति की मृत्यु का संकेत प्राप्त

आजु कहैं सुनबेह् बरूववा जे फुल रे झरूवा
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हम्मार
एहि दांई जउ भाई मुंड़वा जइहइं इन रे रासन
अब तोहार लेइहंइ खबरिया जे लेल रे कार
ओहि घड़ी डांकल चम्फवा बा बोर रे लोरिका
आधे लेहलेस सरगवा जे मूंड़ पकड़
आजु कहैं ले लेह् ना मुड़वा जे नीरमल कय
धरती में देलेसि ना मुंड़वाह् रे चुवाय
ऊहे भाई संचेह् ना मुंड़वा जे रहिं ए गयनऽ
लसिया काटति पयंतरा जे देख रे वाय
आजु कहैं धरीय छमिछवा जे के नि ए बीतल
लसियाह् गीरलि धरतिया में भहं रे राय
जउने घरी गीरल ना लसिया जे नीरमल कऽय
बिगहा भरे में जमीनिया जे छेंकि रे लेय
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
जवन भाई आगम ना घरवांह् देइ रे अयनऽ
आजु भाई नीकललि ना रनियाह् जय कुंडल
आजु भाई कच्चाह् घईलवा जे कच्चा रे टूटल
लेइ कनि फानति इनरवा में धन रे वानी
आजु भाई चूड़इ नां चुड़वा जे सुत रे टूटनंऽ
पनियाह् चूवत घड़िलवा जे गलि रे गयल
रनियाह् दवरल गंवखवा में चलि रे गईल
डब्वाह् देखइ ना दुधवाह् कइ ऊघारी
दूधवाह् खूनई समानवा जे होई रे गयल

पुनहीय गमल या चिरवाह् कुम्हिरे साई
ओहि घरी ठाडेह् धरतिया गिरि रे गईलि
ओहि घरी रोवइ ना रनिया जय रे कुंडल
पटकनि थालीय धरतिया रे कपाऽरय
आउ बहै अम्माह् ना मुनिसऽमोर रे सामू
पुठियन सू मनवह् काह्नवा रे हुमाऽरय
अत सुंघ धनइ ना पुजिया आपन रे देवऽ
आपन देवह् ना किलवा मवरेमाऽरय
आउ मोरे जुतिय गमल या सइया एठ्रियां
जाइ बनि नागर अगोरिया दइ रे पाऽल
हमहिय नागर अगोरियाह् बाडो रे जातप
सइया के थोअय ना सगियाह् लेल रे बार
सइयां क लेइवह् ना ससियाह् ओहि अगोरिया
हमहिय लेइयह् सतियवा जे होइ रे जाव
दुनो ना दिन दिन क ऽ दुटि जाई पल रे कनिया
बरम्हा जी एतनई लीखनियां जे देने रे बाप
ओहि घरी गुनह् ना हुलियाह् रनियां मज्य
गुपदम हुलसि तावेलवाह् मेनि रे बानी
जाइ बनि खोलति न पोड़ियाह् बा विसाती
पोडिया क भाइर पाथरवाह् बांधि ए सिहलेन
भिरहोय थवसर ना मुहवांह् देइ सगामी
आउ भाई आपन सामनियाह् लेइ ए लिहलेन
पीजियाह् धरल ना दरवाह् रे बाइप
पुनि बनि सह्लेनि ना पींजियाह् हुंथवा में
डांक देनि भईल ना पोड़िया पर असरे वाऽरऽ
आउ बहै तनिक आसनवां जे या छुवबने
पोड़ियाह् नियवांह् ना छोरमेह् बा धरतिया
उगराह् छोडीय देनेह् बाह् अग रे माऽनऽ
आउ माइ यादर ना रेग्रवांह् चढ़ि रे जाती
धियवा के हाथर् विधवतो या चलि रे जाती
फिर् भाई परीय छमिछाइह् बेनि रे भीतर
आगे पांडो भूवनि ना किरवाह् रे घेराऽर
जह्वां पर वरइन आहीरवा जे बाइ रे मारिवा
ओहि दिन ऊगरनि ना रनियां जे देख रे बाप
आइरनि उतरि ना पोरवाह् बेनि रे गहमी

घोड़वा के बान्हत ना बेड़वा के बाड़ रे जाय

निरम्मल की पत्नी जयकुंडल का सती होना

जाइ कनि रेंगल लोरिकवाह् किह रे गईल
हाथ जोड़ि के बोललि ना बतियाह् अर रे थाइ
आजु कहैं भइयाह् ना सुनि लह् वीर रे लोरिक
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
कहवां पर बाड़इ न लसियाह् सइंया कऽय
हमइं लासि देतह् ना तुहंउय रे बताय
हमहूंय लेइकह् ला लसिया जे सती रे होवय
एही भाई नागर अगोरिया जे दइउ रे पाऽल
ओही घरी बोलल अहीरवा बा वीर रे लोरिका
रनियां ते मनवेह् काहनवांह रे हम्मार
आजु भाई हयकन ना बोलिया जे जिन रे बोल
तुय भाई लगवह् भऊजियाह् रे हमाऽर
तब फेरि बोलल ना रनिया बा जय रे कुंडल
दरियांह् करति ना बेड़वांह् बाइ जवाब
आजु भाई गउवांह् ना घरवा क बहिनि बिटियवा
आजु भइया लागब बहिनियांह् रे तोहाऽर
आज तूंय देतह् ना लसियाह् रे बताई
हमहूंय लेइकह् सतीयवा जे होइ रे जाव
ओही घरी बोलल अहीरवा बा वीर रे लोरिका
अब धन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई मारेह् ना लसिया के देख रे मरने
कहीं नहीं सूझत अगोरिया जे दइउ रे पाऽल
कइसेह् जानब ना लसिया जे तोरे सइयां कऽ
कइसे हम देवइ ना लसिया जे तोहंय बताय
ओंहि घरी बोलालि ना रनियां बा जय रे कुंडल
रोइ रोइ कहति ना बतिया बा अर रे थाई
अहिरूय अइसन ना तइसन सइयां नाहिं रहनऽ
सइयांह् हमार रहनह् दइयवाह् कइ रे लाऽल
आजु भइया सइयांह् ना केनीय रे मरबवां
तोहार जानत जीनिगियां जे देख रे होइहंय
अब नाहिं बिसरीय ना लसियाह् सइयाँ कऽय
तनी एक देबह् ना लसियाह् रे बताई

ओहि घरी रँगल अहीरवा बीर ए सोरिका
रँगल जासट् ना सगियाह् भेनि रे पास य
मुड़ियाह् निरमल कइजाइ कह् बाइ बतावत
सगियाह् चिगहा ना मरवा मे बाइ ए गीरल
रनियाह् मारल काछरिया धोति सबेसो
मुड़वा मनेह् खोउछवा भेनि रे बाटऽ
एक हाथ पेमलि ना गोड़वा बाड़ बटोरी
एक हाथ पेलति पगुरवा तर से बानी
आनबेह् लेनेह् ना सानवां मे हनि रे गईलि
मलि मलि अपनह् बदनियां बाइ नहासी
मीरमन क देतेगि ना बदनीय महू रे बाई

जयकुंडल पति के साथ जल कर मरत

कहे भाई मुड़ियाह् मा ओनघर मह रे बाइ कऽ
एकदम मीकसि ना टहवा मदल रे ठाकुर
आबु भईं गुनबह् ना मइयाह् मार सोरिकवा
एटियन तू गनबह् बाहुनवांह् रे हम्मार
देख ऽ मइया कुण्डल बा खेनवा जे पेटवा मे
गुड़ियाह् हीथट् ना पटिया मैं देखब दी माटर
आबु भाई टुकड ना टुकवा जे घुट रे बड़ दऽ
हमके तू योगिदह् ना चितवाह् एहि रे दम
ओहि घरी घूटइ ना घुरवा जे बइये देहलेन
चितवाह् बोसल ना ओठियार बाटे बताय
आबु भाई लेनेह् ना सतिया जे रानी जयकुण्डल
जाइ बैनि घइठल पसपिया प बाटे रे माटर
आबु पहुँ पम्पीय ना सतिया जे घड़ये सिहने
मुड़ियाह् घइने ना सतियाह् पर रे बाय
ओहि घरी बरम्हाह् पर ध्यान जे धइ लगउलेन
ओपर देलेगि ऊपरवा जे पइ रे साय
आबु भईं गुनबह् ना बरम्हाह् तू नारायन
एटियन मनबह् बाहुनबांह् रे हम्मार
जउ हम एकड ना बपवा क होयब रे बिटिया
के गेरि एकड पुरुषवा क बहू रे मार
बरम्हां तू छोड़ि दूपा अगरवा जे मरवे मे
हमरेव भेदकह् सगिदया जे होइ रे जाय

एतने पर खोल्हइ न सतियाह् लेइ रे बानऽ
खंगराह् गीरल बरम्हवा क देख रे वाय
आंचर खोलिकह् ना चितवा में चलि रे गयनऽ
अगियाह् बमकलि ना सोनवां जे बानी रे तीर
दूनों मीला जरिकह् कोइलवा जे होइ रे गयनऽ
तुरतेंह ले लेह् जानमवां जे ओहि रे दम्म
आजु कहीं सतियाह् बइरियाह् पेड़ रे भयनऽ
दहिनेह बानह् नीरम्मल सर रे दाऽर
बायें बले बाड़इ ना रनियांह् जय रे कुंडल
कव्वों नाहीं फरइ ना फुलवा जे ओमें रे जाय
जवने ना दिनवांह् राम समइयां
किह् फिरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽलय
ओहि घड़ी रोवत ना सुबवाह् बाइ मोलागत
पटकत बानह् धरतियांह् रे कपार य
आजु मोरे तेजलि ना रजियांह् गइल अगोरिया
मजरीय रानीय तेजलवा बा नाहिं रे जातय
आजु भाई नान्हें ना सुगियाह् रे जीयवलीं
भेंइ कनि देहलींय रहिलवाह् कइ रे दालऽ
आजु भइया कांहह् क चढ़ल ना दूरन देसिया
आजु मोरे चिड़ियाह् उड़वले वा चलि रे जातय
एतनाह् कहि कहि ना सूबवाह् रे मोलागत
किलवा पर कइलेस रोदनवा जे बरि रे थाऽर
ओहि घरी मंतिरीय ना मंतवा जे ठठं रे लगनऽ
चुगुलाह् देलेनि ना बतियाह् अर रे थाय
आजु भाई राजाह् ना सुनिलह् महरे राजा
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
अइसे नाहिं मरलेह् आहीरवा जे देखऽ मरइहंऽय
नात अहीर जरिहंइ अगिनियां क देख रे धार
ओनकेह धोखाह् न पटिया से बल रे वइवऽ
अब भाई मरबह् ना किलवा जे भंवरेनार
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
ओहीय नागर अगोरियांह् कइ रे हाऽल
ओही घड़ी सूनह् ना ओठियन कय हवाऽल
आजु भाई देखह् ना हलिया मंतिरी कऽय
मतवाह् ठटइ ना चुगुला हो सोनाऽर ऽ

आजु कहें राजाह् ना सुनितह् मह रे राजा
एठियन मनबह् काहनवाह् तुय हमाऽर
आइयेनि महराह् अहोरवा क बल रे कइम्या
महराह् चलि जाय ना जिरवा रे खेतारय
जाइ कनि कहउ सोरिकवा से समुरे खाई
आजु कहें साधुवाह् ना सुनितह् वीर रे सोरिखा
एठियन मनवह् काहनवाह रे हमाऽर
देखा भाई मजरीय ना पेरि करे अइहई नईहर
ना त सारिख सूहइ करई नह समुरे रार
आजु भाई अइसन ना कइलह् लेइए बतिया
अब तोहार जेठरीय ना जरी कइलि बलाव
चलि भेनि कइलह् मउजवाह् रे आना ऽ रह
सब केनि कइ दयाह् पामगिया जे पर र नाम
ओहि घरी मतियाह् ना मतवा जे ठटय हा भगनऽय
घुगुलाह् देहलेनि ना मतवा रे उतारी
आजु कहें राजाह् ना सुनितह् तू मह रे राजा
एठियन मनबह् काहनवा जे तू ! हमार य
देखऽ अइगे अहिराह् ना मरले से देखऽ मरइहय
नाव उत जरिहइ अगिनियन कनि रे धार ऽ
आजु मइया सोहइ उठनवा जे सोह रे बईठन
सोह ओलकर हयह पारनयन कनि अयारय
ओह भाई धोयवाह् से बिसवा जे बस रे आवा
हुनि केह् मारह् ना बिसवाह् मे नि रे बान्ही
एतना प कहत ना ओठियन रे मतिरी
गूबा के गयनह् ना मनवा जे देखऽ बईठि
ओहि दिन उसटीय हुकूमिया जे छोड़ि ए देहलेन
ओहि दिन छूटनह् सीपहिया जे दखऽ रे जाय
ओहि घरी गयनह् सीपहिया जे महर पग
याइ कनि कहलेन महरवा से समुरे खाय
आजु मइया सुनबह् अहिरवा जे तूं ए माहर
एठियन तूं मनबह् काहनबाह् रे हमाऽर
देखऽ मइया गूबाह् मसउवा जे तोहार ए कइलेन
चमि चमऽ तोहउ ना बिमया जे भयरेनाऽर
आगे आगे रेंगस ना ममवा जे बाइ ए मऽर
पीछे पीछे रेंगस सिपहिया जे बान रे आत

जउने घड़ी चढ़ीय चाननियां पर रहि रे गयनऽ
जाके भाई नीहुरि करतवा वा पर रे नाम
अव मोलागत आसीर न वादवा जे राजा रे देंलय
महराह् कइलीय ना तोहरउ जे देखऽ वलाव
आजु भाई कोइलाह् अगोरिया में वोइए गयनऽ
केहू नाहि वचि गयल करधनवां जे वान ऽ जेवान
तव कहऽ वीनरह् मारदवा जे कइ ए तीवई
गल्लीय गल्लीय अगोरिया में डिढ़ि रे यात
नात भाई मंजरीय ना करइ जे अइहइं नइहर
नात लोरिक कईय आवइ ना ससुरे यार
कहि देवऽ छवउ विटियवा जे जवनरे जेठ सरि
किलवा में तोहरउ ना कइले जे वान वलाव
लहुरा वहनोईय ना हउवा जे तू छहोन कर
चलि कनि कइलह् पलगिया जे पर रे नाम
ओहि घरी ऊठल महरवा जे ओठियन से
किलवा से ऊतरल ना जिरवाह् पर रे जात
जहवां पर वइठल मारदवा वा वीर रे लोरिक
पत्थी पर धइलेह् वीजुलिया वा तर रे वार
ओहि घरी पऽरलि नाजरिया वा ओठियन से
अउ फेरि वोलत लारमियां क वाइ रे वोल
आजु भाई धनवांह् ना सुनिलह् मोर वीयहिया
एठिपन मानह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु तोहार वाविल ना किलवा से आवत रे वानऽय
सोझइ आवत ना डंड़िया वा सोझि रे याय
ओहि घड़ी ऊठल मारदवाह् वीर रे लोरिका
उठि कनि भयल वानह् ना तई रे याऽरय
ददुवाह् भयल वलउवा वा कीलवा पर
चलि कनि कई आवा ना विटियन सेनि रे भेंट
नात आई मंजरीय ना विटिया जे करइ रे नइहर
नात भाई लोरिक ना करवह् ससुरे रारी
चलि केनि छवहुन से भेंटवा जे कइए लेब्या
सव केनि कइ दह् पलगियाह् अस रे वानय
एतना जव कहत ना वतिया जे वायं ए मऽहर
दूनों भाई रेंगनह् ना ओठियन सेनि रे व्राय
सोझइ रेंगल ना किलवा जे ओरि रे गयनऽ

आगे आगे रेंगल माहरवा बा चलि रे जात
जउने घरी हलि गयनऽ पहिलह् रे डेवढ़वा
अब फेर गयनह् मेंवढ़वा जे ओट रे धाय
जउ भाइ दुदुध मूसरवा जे सोहवन धय
अगरीय गईलि केवरिया मे पहिर राय
जउने घड़ी दुगंढ़ह् डेवढ़वा मे जाइ के निकलय
गुम्रवाह् धारिउ बुरुजिया पर तइ रे यार
जउने घरी छुटइ तूपकियाह् कोनवा से
अउ फेरि दुरुगाह् ना परगटि भइल रे बाय
बदवा के ऊपर आधरवा धा ओढ़ववले
देहिया पर गीरल ना गोलवा जे महरे राय
जइसे भाई पानीय चीपठरा जे होइ रे गीरय
ओइसन गीरल ना गोलवा जे महरे राय
ओहि घरी उठि गयल मारदया जे ओठियन से
अउ फेरि गयल ओठिन बाह् अबु रे साय
मनवां मे गुनल अहीरवा बा बीर रे सोरिका
आजु भाई बाटेह् कुमुतिया मे परि र जाय
जब हम अब्सर ना चोठवा जे लेइ मह मगचम
बिहनह् निंदवाह् ना होइहइ रे हमारऽ
आजु भाई सपेह् सगुरवा तूय लियवल्या
आजु फेरि देहलह् ना बिसवा मे मर रे बाय
आजु कहैं दावइ ना सागुर महरे के
कफिमा.तर दामत सोरिकवा जे देयऽ रे बाम
ओहि घरी ऊछरम आगनवा से बीर रे सोरिका
चम्राह् डाँरीय आकसवा मे चलि रे जाय
सेरे भाई गीरम ना मरवाह् एहि रे पारय
जेकर भाई मायद गूदरिया जे परम रे खेत
ऊपरवां से ऊटम मारदवा बा बीर रे सोरिका
मारि हुर प्रधुर सागुरवा के बोह रेंगउसे
अपनेह् रेंगल ना ओरवाह् जाइ खेवा रय
धाइ फेरि गयसें ना टदियाह् बेनि र पाछय
उहवां से सपटल मारदयाह् फेरि रे गयनऽ
एकदम महर अहीरवा के दर रे बारऽ
जहवां पर बठिसउ महरवां बा बइ रे टापन
आनरर कदमेरा ना ओहि दम रे पुरारय

कहंराह् लेलेह् ना आपन रे समानी
आइ कनि भयनंह् पालकियाह् किह रे ठाढ़य
ओहि घड़ी ऊठलि ना डंड़ियाह् बा मंजरीय कऽय
चलि आइलि सोनह भदरवांह् केनि रे तीरय
झिमला कइ लागलि कीसितिया बा लेइ कंररवा
अउ फेरि चऽढ़लि ना डंड़ियांह् ओहि रे दम्मय
ऊय भाई बइठल लोरिकवाह् फुनि रे बानऽ
झिमलाह् खेइ कह लगवले बा ओहि रे पारऽ
उहे डांड़ी ऊतरलि धरतियाह् रे कसिहरां
झिमलाह् आगेह् केवटवा जे घूमत रे बानऽ
तब तक ऊतरल लोरिकवाह् बांय रे जात य
लोरिकाह् पेलई ना जेबवाह् मेंनि रे हाथ य
कढ़लेसि साठइ मोहरवाह् कइ रे हाऽर
आजु कईं सुनिलह् झीमलवा जे मोर रे केवट
तोहें भाई कुछुव ईनमवा जे नाहिनी देब
आजु ईहइ साठिय मोहरवाह् कइ रे हारवा
ईय गुनि लेबह् खेवइया में आपन रे थाम
आरे ऊठलि ना डंड़िया बा मंजरीय कय
अब धइ लेहलेह् उतरवाह् कइ ए राह य
जवने घड़ी आधेह् कवइयाह् चढ़ रे लगन ऽ
थोरह अउर करीबवा जे रहि रे गयन ऽ
तब फेरि बोलति ना धनवां जे बाइ मंजरिया
सइयां तूं मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
देख फेर हमई ना करई के बाइ अब नइहर
ना त सइयां तोहइं करह् बह् ससुरे रारय
अब कुछ कई दह् सनाकत सतजूग कऽय
जउने में देखइ कलउवाह् कइ ए लोगय
एतना जब कहति ना बतियाह् धन मंजरिया
अहीरांह् बोलत लारमवांह् कइ ए बोलऽय
बियहीय कुछूय समनियां जे नहि देखाती
कहवां पर करीयं ना हमहूं आपन रे चीन्हऽय
एठि किन ईहइ ना ठोकवाह् बाय देखातय
कहाँ एहि परेह् ना गिरि जाय तर रे बारय
ओहि भाई बोललि ना धनवां बाय ए मांजर
तब सइयाँ कहाँ खोजबह् बर रे बारय

आजु तुप मारहु ना घड़िया रे दोगाहे
अब दुइ मागँहु गईनि ना ओलि रे थाई
ओहि घड़ी सूनहु ना हनिया जे अहीरे कउप
ठाढ़ा होइ के गुरुजत बानइ नाह तर रे बाउर
जेनकर भाई पारीय अगुरवा जे भइली रे बाहर
जेकर ताडक आवतवा बा चलि रे जाय
आजु पहें रिवबाहु ना मरले जे बा दावन्हरा
पारतन गईल सावरिया वा गुमुरे बाय

मंजरी के साथ लोरिक की घर वापसी

······गोरलि ना घड़ियाहु पपले पर
टुवरहु गपल घालगवा र पेंवाय
ओहि दिन बालल ना घनवा जे बाइ मजरिया
संदवा तू मनयहु काहनवाहु रे हमाउर
भाई दघउ अइसन ना अइसन रे टुवरुवा
गोरल बानहु पाहरवाहु छिति रे राय
एगे गदवा पवन सनारति ओहरे रे बानी
का भाई देखिहइ मउलउवाहु बइ रे लोग
गदपोह दहिनेहु ना रुपवा जे धाडि चलइल्या
बायें हाथ दुनोह ना दलवा जे बान्हि रे बः
दहिने से डालि दहु ओवरिया जे बोधवा मे
चबोह दुआर ना कसवा जे रहि रे जाय
जउने घड़ी छूटई सनितवा जे होइ रे जइहुय
आजु भाई देखिहइ बसउवाहु बद रे लाग
ओहि घड़ी घींचत ना घड़िया जे बाइ दो गाही
घींचि चलि मारत बीचेहु रे तर रे बार
बायें हाथ पाग्रत ना हुयये दुनो जुबवा
दहीने से डालत ओवरिया जे देवउ रे बाय
चलबो से निकलनि ना घियवा बा महुरे कउप
जेकर धिन भयल पलौनवा जे देव रे बाय
उ भाई सेनुर सहिठवा जे काछिह निहलेन
घुमि घुमि छिरकनि पापरवा जे पर रे बाय
ऊपरि ना हदिया बा मजरीय बय
एहि बड मारिह पापरवाहु सेनि रे आगे
उह डाही घइमेहु ऊपरवाहु बे बाद रे रहुय

आजु भाई रातिय रेंगत बांय दिन रे दऊरत
कतवं नांहि वदत ना कूरवाह रे मोकामऽ
एकदम रेंगल ना डंड़ियाह् रे रेंगवलस ऽ
चलि जालय नागर गउरवाह् रे सिवाने
जउने घरी परि गइल नाजरियाह् गउरा कय
देखत वानह् आदिमियांह् सव रे लोग ऽ
जाइ कनि अहीराह् दुवरवांह वोल रे लगन ऽ
खोइलनि सुनवेह् ना मतवाह् रे हमाऽर

तीन महीना और तेरह दिन में मंजरी की डोली गउरा पहुँची

वेटवाह् लेइकह् गावनवां जे देख रे आवत वा
वीति गयल तीनिय महिनवांह् तेर रे रोजय
तेरहेके आइलि ना डंड़ियाह् रे पहुँची
ओहि घड़ी नउवाह् वाभनवां जे वल रे वाइ कय
चउक चन्नन ना ठिकवाह् होइ रे गयनऽ
अहिराह् चलल ना डंड़ियाह् रे वनाई
परछन होतीय दुअरवाह् पर रे वानऽ
गंठियाह् जोरीय लरिकवन कइ रे गइनीं
आगे आगे रेंगल ना मलवाह् रे लोरिकवा
पिछवांह् रेंगलि ना मांजरि वाइ रे जाती
जाइके भाई कोहवर ना घरवांह् चलि रे गयन ऽ
ओठिन भांई होंमइ गरसवाह् वाइ रे होतय
आजु भाई दहीय ना गुरवाह् खाइए लीहलेन
आजु गांठ छूटलि आहीरवाह् कइ रे वानी
ओहि घरी गांठीय छूटतवाह् लोरिके कऽय
उठि कनि करई लगल नाह् पर रे नाम
कोहवर के करत पलगियाह् वीर रे लोरिका
एकदम नीकलि दुअरवांह् भन रे ठाढ़
देहियां के वेलकुल सामनियां रे ऊतरले
अव होइ गयनह् नींगोटवाह् देख रे वंदय
अहीराह् डांकत चम्फवाह् चलि रे दीहलेन
एकदम कूदल आखड़वाह् में नि रे बाय ।

लोरिक का विवाह समाप्त

२. संवरू का विवाह—सुरहुल की लड़ाइयाँ

होली का आगमन—लोरिक का गउरा में होली खेलना

ओहि दिन सूनह्, ना हनिया ओठियन मज्य
अहिराह्, लपटल अघाइया सेनि रे थानज्य
एकदम रेंगल दुअरवा चलि रे गयनय
आजु भाई गगियाह्, थे गाहे नेरि रे यानय
गगियाह्, गंगियाह्, ना कहनेह्, बाइ पुकारय
गगियाह्, आयल हजमिया भयल रे ठाढ़ज्य
आजु कहँ सुनवेह्, मा गगियाह्, मोर हजामय
गगियाह्, तें करेह्, दुअरवा क देगु सामान
हम भाई जात बानी ना गलियाह्, गउरा के
आछा आछा छाटब परछ्याह्, रे जवान
देखः भइया तीनिय महीनियां जे तेरह रोजय
अब हम सेहलीय अगोरिया मे बाई रे सोह्
आजु धरें आयेह्, फगुनवां जे चलि रे अइसी
फगुवा के लागल लालसवा जे हमइ रे बाय
हमहूँव खेलब फागुनवा जे गउरा मे
तब फेर हिच्छाह्, पूरनियां जे होइ रे जाय
आहि घरी सूनह्, ना हमियाह्, मा ओठियन भय
गगिया के तुरतेंह ना बाइइ रे सरेखत
गगियाह्, गुनवेह्, शजमयाह्, रे हमाउरय
बिहनह्, सांगट ना बोहवा से चलि रे जाई
भइया से देहेंह्, घटवरियाह्, भुगु रे ताई
कहि देह्, तीनिय महिनवांह्, तेरह रे रोजय
मारिके के बीतल अगोरियाह्, दइज रे पालय
घरयाह्, आयेइ फगुनवा जे घरे रे अइसी
फगुवा के लागल लालगवा जे हम रे बानज्य
भइयाह्, बीतल समरयाह्, बेर रे बउतय
अब फेरि देउह्, कगुवाह्, मइ रे बाई

जल्दी से देइहंइ ना हथवांह् गांगी रे तोहरे
लेइ कनि आवह् ना घरवांह् मोर रे आजय
उहवां से रेंगल ना गंगियाह् रे हाजमवां
भोरवइं पहुँचल ना पलियाह् में नि रे वाय
सयई पर वइठल ना भइया जे मल रे सांवर
नीहुरि करत वाड़इ नाह् पर रे नाम
गंगिया ते आखेह् अमरवा जे होइये रहवे
तोहे भाई जियवेह् ना लखवाह् रे वरीस
जइसे वाढ़त वा पनियां जे गंगिले कऽय
ओइसे भइया वाढ़इ ना अइयाह रे तोहाऽर
.......ना मलवाह् रे संवरुवा
गंगियाह् सुनवेह् हाजमवांह् रे हमाऽरय
कहियाह् आयल ना भइयाह् रे दुलेरुवा
कहियाह् आयल दुअरवांह् खेलइ रे फगुवा
कइ दिन वीतल ना घरवांह् वाइ रे अइले
गंगियाह् तोकेह् खवरियाह् पठ रे वावल
तव फेरि वोलल ना गंगिया वाइ हजामऽय
मलिकाह् संझवंइ गावनवां लेइ क ऽ अयनऽय
विहनह् कूदल ना वोहवा अइलीं रे हम्मय
तुंह सेह् मंगलेह् डम्फुवाह् वाइ रे लोरिका
फगुवाह् खेलीय गउरवा घुमि रे घूमी
ओहि घड़ी ऊठल ना मलवा जे वाइ रे सांवर
हथवा में ले लेह् धनुहियां जे वान रे वान
अव हलि गयनह् जंगलवा जे छिउली के
घुमि घुमि देखत साउंजवा जे लेइ रे वाय
धरमीय वइठल सामरवा जे वाइ उठवले
मोकाह् देइकह् ना अगवां जे चलि रे जाय
जउने घड़ी आवत साउंजवा जे वाड़इ झांठय
खेंचि केयि मारत ना वनवा जे देख रे वाय
ऊहे भाई संचेह् सामरवा जे ठाड़ रे रहनऽ
ठाढ़े ठाढ़े नीकल गारमियां जे चढ़ि रे जाय
तव तक पहुँचल ना मलवाह् वाइ धरमिया
पेटियाह् नापत खांझड़िया जे भर रे वाय
आजु कहें ओही ले चामड़वा जे काटि ए दीहलेन
अउ फेरि ऊठीय मारदवा जे भयन रे ठाढ़

आतु भाई देहियाह् का बनवा जे आपन का ऽ बरलेन
रिटियाह् ठोंकत गमरथन बइ रे बाय
ऊँहे सम रँगल छोउनिया जे बन रे गयनह्
अहीराह् रँगल धारकवार् पर रे जाय
ओहि घरी सेलंह् ना कपूर्य हृषवा मे
नउवाह् रँगल सवेरवाह् पुनि रे वान ऽ
आतु कहैं छूटल ना नागर रे गउरवा
एकदम लोरिक दूसेरवाह् मैनि रे पासय
आद मैनि देहलेस हम्फुवाह् आहिरे के
लोरिक देयत हंफुवाह् लेइ ए वान ऽ
अहिराह् ऊठल पलंगियाह् ठेनि रे वान ऽ
अब चनि गयल ना गवयाह् रे गउरवा
जेवर धारः ना पलियाह् नगर गउरवा
तिरपन परावनि यानीय नह अहि रे रा ऽ नय
ओहि दिन आइह् घयतुवा याइ रे छाटत
पगुयाह् घिलइ के पगहू रे जेयानय
आतु दस बीघर जेवनवाह् संगे सीयाद का ऽ य
आतु फेरि आयल दुअरवाह् दर रे वार ऽ
सब कनि ग्वानिर ना बतियाः होए रे लगली
इनइं लगलह् मगन्त्रियाह् डोलि रे पा ऽ नय
दर फेरि धोसल अहीरवाह् धीर रे लोरिका
संगी संग मनयह् काढ़नवाह् रे हमा ऽ र
देयः हमइं लोनिय मर्दीनवाह् हेरह् रोअम
मागल दसियन ना अगिया रे अगोरी
आतु हम आयेह् पगुनवा जे घरे रे धइनी
ममगाह् लागलि पागुनवाह् मइ रे बान ऽ
धनी मांग चलतह् ना सिन्नह हाथे अबीरवा
गउवा में धंसीय पगुवया जे मेल रे घार
भूलह् ना हनियाः आंटिशन का ऽ य
दस बीघ उटनः पावडुगाह् रे जेयानय
दुअरा मे गूम्हः पगुवाह् मइये दोहनेन
धुमि-धुमि गावत मउरवाह् थाप रे नास ऽ
आतु कहैं दारह ना धनिया नगर गउरवा
तिरवार भवरा र ना सनिया याइ बाजा ऽ र

ओहि घड़ी सुनह् ना हलिया ओठियन कय
आजु भाई चलल घबड्वा रे जेवानय
अइसे अइसे बावन ना गलिया जे घूमि रे गयनं
तिरपन में गयल ना गलिया जे पर रे बाय
एकदम घूमि गयनह् राजह् कीलवा पर
जाइ कनि दुअराह् फगुववा जे होत रे बाय
आजु कहैं सहदेउ ना महदेव सूबा रे रहनऽ
सव केनि कइलेनि खातिरवा जे बड़ रे वार
आजु भाई गांजाह् ना चीलम रे धई कय
धोरईय मारत चीलमियाँ पर बान रे द ऽ म
आजु भाई नासाह् ना पतियाह् पान सोपारी
सव केनि खातई ना कइलेनि असी रे बाद
आजु कहैं उहवां से रेंगलइं गइ ए गयन ऽ
धइलेह् जानह् खीरकिया के देख रे खोंट
खिरकी में निकललि ना बेसवा जे बा चनइनी
हथवा में ले लेह् पारतिया जे भइनी रे ठाढ़
आजु भाई माटीय गोवरवाह् पानि रे ढारिक ऽ
फेंकति बानी जेवनवन पर रे आय
आजु कहैं खेलल जेवनवां जे गउरा कऽय
चम्फाह् डांकोय आकसवाह् मेंनि रे जाय
पनियांह् गीरल धारतियांह् खोरीया में
ऊहे भाई बहल ना चलि ए जे बान रे जात
फेर ठाढ़ होइ कह् फागुववा में गलिया में गांवइ
अउ फेर देखह् लोरिकवाह् कइ रे हाल
एक ओर ठाढ़ह् लोरिकवा जे गावत बानय
बेसवांह् भरति ना मटियाह् पानी रे बाय
ओहि घरी लेइकह् ना ऊहउय दोह रे रइंया
सोझई फेंकति लोरिकवाह् पर रे बाय
ओहि घड़ी खेलल अहिरवां बा बीर रे लोरिका
ऊहे भाई बांवउं तीरिछवा जे होइ रे जाय
पनियांह् गीरल ना खोरिया में भहरे राइ कऽय
बेसवाह् घुमरति ना ओठिन लेइ रे बाय
आजु भाई गोस्साह् अहीरवा रे होइ रे गइलीं
लोटवा में खींचत अबीरवा जे ओहि रे दम
जउने घड़ी खिचि कइ पीचुकवा जे चन्दा के मरलेस

दहिनी गईन्निना खिनवाह् रे चोवाय
आजु गिरि गईनि ना धियवा वा धरती मे
रनियाह् देखति ना आँकरि माई रे वाय

चंदा की माँ सेल्हिया द्वारा लोरिक को अपमानित किया जाना—लोरिक का अन्नजल त्यागना—भाई संवरू के विवाह के लिए प्रण

ओहि घरी दयरनि ना सेल्हिया आँखर महतरिया
भठ फेरि चिटियाह् के झारिय के लेइ उठाय
ओहि घरी बोलनि ना बतियाह् घर रे बाहुथ
गुरखेह् फहनि जायनियाह् सेनि रे वाय
आजु चहें बाउर लोरिकवा तें बड़ रे रहले
तोर हरि गईलि ना देमश रे गियान
आजु चहें दखिन ना देसवा में चलि रे गहले
अहीराह् गयल ना मनवा आ तोर रे वाय
जाइ घनि अम्बर ना रजवा जे छोड़ रे मरले
दुधराह् मरलेह् अगोरियाह् रे चौहान
आजु तें मरलेह् ना हथिया रे बेजरही
देवयाह् ना खटियाह् रे पुजाय
लोरिकाह् मरद गुलजे लेइए तोहके
जयन माई होवह् कटईता क देश र यश
आजु जयन पालल ना ललवाह् वा भीमलिया
गुरकुल मे खतिमा चरोनिया जे आकर रे वाय
आजु तूंच करतह् ना सदिया जे संवरू कज्य
एकदम लागर गुरावनि ददड़ रे पान
गुरुम देउह् ना बोनियाह् बज रे बाई
तब हम जानित कटइता क हूव रे पूत
सुनत······अहीरवा जे बीर रे लोरिका
देहिया में उठल मसनयाह् बाटा रे ताव
आहि घड़ी देखुर बोलुरवाह् चौंकि रे लिहलेन
माटयाह् भरलें ना झटकइ रे अचोरम
अहिराह् अन्दुर हमुराह् पोरि रे लिहलेन
एकदम देहर ना घरवा वा चलि रे जाय
कहर माई गाएह् ना गुजरा क बाद रे आपन
मारिके रे अटारी चलियाह् उठा रे बाते
लाई दुइ लाठीन पाटरिया गाइ रे धकाइ

ऊहे भाई अन्नह् छोंड़इ नाह जल रे पानी
जउने घड़ी विहनह् ना भयनह् हो भुल्हुरा
पुरवई देहलहं कउववा वांय हो रोरय
ओहि घड़ी सूतल ना वानह् गोड़ रे तानी
आजु भाई मनवांह् न कइलनि रे गुमानय
ईत ह्वयं सातइ ना घरियाह् कइ खवइया
आजु वावू दिनवांह् दुपहरवा जे भयल रे वाय
नात अहीराह् जगलेह् ना खोदले जे वाइ रे जागत
ना त ऊत वोलत जावनियां जे वाड़ उधार
ओहि घड़ी केहीय ना मरले वा गरी रे अवले
का इन्हें केह्वीय ना वोलिया जे वोलि रे देय
आ भाई अन्नइ ना छोड़लेनि जल रे पनियाँ
घरवा के मरत वानईं नह सव रे लोग
··· ···सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
आजु भाई गयल ना ओठियन फेनि रे हउवंय
सूनाह् ना हलियाह् कठईत कऽय
अव वूढ़ गयल वेटउना केहु रे जगावय
मुखवा के तानीय चादरिया वुढ़ रे दीह्लेन
आहिराह् ताकत बानइ नह डिमि रे राई
ओहि घड़ी रेंगल ना काठइता वा ओठियन से
चलि गयन गुरूय आजइयाह् दर रे वाऽरऽ
आजु कहैं सुनवेह् ना गुरूवाह् तोइं अजइया
घरवांह वड़ीय मचलि वाह् अन रे खानी
चेला तोहार अन्नइ ना पनियां जे छोड़ि रे दिह्लेन
ना त ऊत ताकत मलकियाह् वाड़ उघारी
आगे आगे रेंगल ना गुरूवा जे बा अजइया
पछवांह् रेंगल काठइता बा चलि रे जात
एकदम रेंगल अजइयाह् लेइ रेंगावल
अब जहाँ सूतल लोरिकवा जे देखऽ रे बाय
जाके भाई बईठि पालंगिया जे पर रे गयनऽ
अउ फेरि तानत चदरिया जे मुंहे रे बाय
गुरूवा जे देखतइ ना गयनहं डिम रे राय
अव गुरू बोलल ना दरियांह् रे जावाब
आजु चेला एकई जाबरवा जे तूं ए रहलऽ
तोहरे से जबर ना कवन लेइ ए बाय

योगन ना गुरुवा जे बान अजइया
नगरा तूं मनवह् कानवाह् र हमाउर
एक त चेला सुन्दर जबरवा जे रहनउ रे गउरा
सांहरे से जागर जावरवा रे नाहीं रे कोई
सोनउ भइले चयन जागरवा जे मारि रे देहलेन
बाबू माई रोवत ना मनवा जे बाड़े सोहाउर
एतना जब योगन ना गुरुवा जे बाड़े दयालू
ओहि दिन सुनहू ना हनिया जे ओठियन चम्प
गोरियाह् उठिय ना समतूल गयनउ बईठ
तब फेरि योगन ना गुरुवा से लेदये बतिया
बाबु गुरु मनवह् बाहनया जे दवउ हमाउर
देख माई तीनिय महीनवा जे तेरह रोजय
जाके हम सेहुनीय अगोरियाह् मेनि र सोय
बाबु हम लेइपह् चवनवा जे परे रे अइली
आभाह् घड़न फगुनवा जे देख रे बाद
हम भाई मागनि लालसवा जे देख रे रहनी
पगुवाह् गेनर गवरवा मे लेन र बार
देख हम बापन ना गनिया जे घूमि रे गइनी
केहू नाहि बोलन ना रेहुवाह् रे तूबार
जबर परी सहदेय ना तिरपन गनो रे घूमनी
गिरबेय गहनीय ना सहदेय दर रे बार
बाबु भाई बेगयाह् ना घावाह् र गिरनि कउ
गढ़िवन घोरि पहु जेवनवा त पेंवत रे बाद
बाबु मोर धेसन जेवनवा जे बाम घवदुवा
मन्गार दहिम आवागयाह् मेनि रे जाय
धनियाह् गिरिय धरतियाह्, मनि रे गम्पनउ
गुरु से नाही उन्हनवा या देख रे जात
फेरि तेरि हमरेहू पर फेंवरि बाद र माटी
बाबु गुरु गुरुमाह् पारऐ मह नाहि हमार
बाबु बड़े विधि बहू बिगुनया ज भरि अंधीरया
दहिरीय मारन ना गिरवा पर मह रे राद
जेवने गर्भ धावन अवीरया के देख ए घउवा
धनमाह् गोगरि धरतिया म घड़ रे राइ
दुम्हार् तिवरारि ना भटयाह् ओरके मेन्दिरा
सारि दुरि गेलई मा बाचा के देख उजाद

ओहि घड़ी बोललि ना सेल्हिया जे बाइ रे रनियां
दरियांह् बोलति ना रेहवाह् बाई तुकारि
लड़िका के मऽरद गुनवलेह् लेइ ये एठियन
अब होइ गइलीह् गउरवा में कड़ रे हार
एकदम दखिन ना देसवां में चलि रे गऽइलीं
वहियांह् बोलति बाड़ई नह् सर रे दार
जब भाई अवराह् ना राजवाह् महरा ओठियन
दूवराह् हेरिकह् ना अगोरिया के मरलऽ किसान
जाइ केनि हथियाह् ना मरलह् रे डंगरही
देसवा में अइलह् ना वहियांह् रे पूजाइ
लोरिकाह् मऽरद बखनवइ तोह के एठियन
जब भाई होवह् ना कठइत के देखु रे वंस
अरु कहीं पालल ना मलियाह् वा भीमलिया
ओकर भाई सतियाह् बहिनिया जे लेइ रे बाइ
सवंरू के करतेह् विवहवा जे सुरुहुलि में
सुरुहुलि में बाजइ ना ढोलिया जे लेल रे कार
तवन गुरू काये कहींय नाह काये नाहीं
कुछ मोरे बूतेह् काहलवा वा नाहि रे जातय
तनी हम देखलि ना रजिया जे नाहिन सुरावल
नाहि एहि दम्मइ पायंतवाह् कसि रे देती
सुरहुल में देइति ना ढोलियाह् बज रे बाइ
एतना कऽहत ना बानह् वीर रे ओठियन
अजईय बोलल लारमवांह् कइ ये बोलय
अब कहीं सुनवेह् ना चेलवाह् मोर लोरिकवा
एठियन मनवेह् काहनवाह् रे हमाऽर य
कहले ललना गुरुवा वा जे अजइया
चेलवा तूं उठह् करह् ना अस रे नान
चेलवाह् खिचड़ीय ना खइलह् लेइये तूहंऊँ
खोरवा के जात वाह् तियनवा जे मठि रे आइ
आजु मोरे जानम ना हउवंह रे सुरावल
जानम भूंई ना हउवइं मोर सुरावल
आजु भाई सुरउल के राहतवा जे देव बताय
जवन जवन बाड़इ पंडितवा जे सुरहुलि के
ऊ चेला देवई ना तोहउ के हम वताय
आरे भाई उठि कह् भोजनवा जे तूं रे कऽरऽ

सांचइ बाइऽ ना बनियाह् रे हमाऽर

गुरु,अजयी धोबी का अपनी जन्म भूमि सुरबली का वृत्तांत बताना

ओहि दिन बोलल ना बानऽ बीर रे लोरिका
समतूल पजरेह् गुरुवया सेनि रे बानऽ्य
सब भेद पूछत गुरुअवा सेनि रे बाड़ऽ्य
का गुरु जनम ना हुव तोह् गुरावल
कइसे कइसे छोड़लह् गुरबली तू रे पालऽ्य
कइसे गुरु अयलह् ना नगर मोर गउरवा
घेनवाह् हमहूँ के लेहनऽ रे बनाई
ओहि दिन बोलल ना गुरुवाह् या अजइया
सेलवा से मनयेह् बाहनवाह् रे हमाऽर
आजु भाई यहीय ना येलत रहली सुरपूल
घोरह सई लछिमाह् बदअउरे मे गइली रे ठाड़
आजु कई रातनि ना बदिया जे लइये थानऽ
भीमसेन राजा आतरियाह् चलि र जाय
आवे भाई बोलल ना गुरवाह् लऽरम से
लरिमाह् हमहूँ घेलब नाह् एहि रे दाम
तब फेरि बोलनह् ना लरिकया जे गुरहलि के
आजु भाई मनचह् बऽहनवाह् रे हमार
देख तुम राजाह् दइयवा के हुव रे लछिमा
अब छर घेलइ ना बदिया जे देख रे हुऽय
एने भाई मानह बापरवा जे छूटि रे आनऽ्य
तुम भाई आवऽह् जावरवा सेह रे आज
अबने परी कऽहवह् ना गुरवाह् केनि रे बोलवा
बान बच्चा देइ [illegible] बोन्हुइया मे घेर रे बाढ़
एहि गुरह् ना हनियाह् ओऽछिमन कऽ्य
गुरु तुम टोवई ना मतियाह् रे बतइबऽ
कइसे छोटि देनह् गउरवाह् तू ए पालय
ईह भाई पालम ना भुअवाह गुरानि कऽ्य
कऽहेर भगलह् गुरावनि छोटि के पानी
तब फेरि बोलम ना बाऽ: सेइ के ओऽछिमन
घेमवाऽ् गाहिय लरिकवा अब गर रे दाने
हम भाई राजाह् ना परिया होइबे गऽरमी

लड़िकाह् बदीअईनऽ जोड़िया जोड़ि रे आजय
बेल्कुल गोइयांह् बाँचरवा होइ रे गयनऽ
पक्कीय पक्काह् ना बदिया होति रे बाड़य
राजाह् लेइकह् ना गोटिया व्रायं बुझावत
दहीने हाथे अऽजइया लेइ पकऽड़ी
ओ भाई मरतीय अजइया के होइ रे गइनीं
धरतीय राजाह् ना चलनीय लेइ रे बाय
ए घरी बतियाह् ना चलनीह् वाने रे जोरऽत
राखल बाड़य बद गउरह् लेल रे काऽरी
जवने घरी झूकल ना चोलवाह् हमरी गइलीं
थपराह् बाजत ना सूबवा के चलि रे गयनऽ
हम भागि गइलीं बिगहवा एक रे दूरऽ
जवने घरी उलटि ना तकले बा राजा भीमलिया
चम्फाह् डांकल मरदवाह् लेइ रे बानऽ
चेलवाह् घींचियना एड़वा जे मारि रे दीहले
ठाढ़े हम गयलींय धरतियांह् रे गड़ाई
अब कह बारह ना जोड़ियांह् गोंइतवाय
चौदह जोड़िया ना टूटि गयल रे कूदारी
आजु मोर ससुर ना रहनह् रे खदेरूवा
खन तोरि ले लेन जिनिगियाह् रे बचाई
छ महीना पीयल बा गइयाह् हम रे गोरऽस
ओहवां से छोड़लीय ना चोलवाह् नगर सुरवली
तोर हम अइलींय गउरवांह् लेइ रे गाँव
आजु केह तोहइं ना चेलवा जे मुड़ि रे लेहलीं
गउरा में करत बाड़ीय ना कवि रे लासय
आजु बाकी एकइ में जोरवा जे हम बताइलऽ
सांचइ लेहह् ना सूबवा तें रे बनाई
देख भाई बलवाह् में सूबवा जे बाइ भीमलिया
कारवा में बानह् लोरिकवाह् सर रे दार
जेके भाई सनमुख ना मइयाह् बा दुरूगा
देबियाह् आदिय ना दिनवा के पूज रे मान
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
गुरूवाह् भरत ना मनवाह् अहीरे के बानऽय
चेलवाह् कुछ्य हरजियाह् जिनि रे मानऽ
आजु हमार देखलि डहरिया बा सुरुहुलि कऽय

सेई हम चलबि सागरवाह् बेनि रे भींटा
तब फेरि गुनह् ना हलियाह् ओठियन भज्य

सुरथली में बारात के साथ चढ़ाई कर देने की लोरिक की तैयारी

अब फेरि बोलत आहीरवा वा सरभे से
गुल्याह् धरलह् ना तुहउँ बस रे नानज्य
तरे भाई बरत असनानवा वा तजथे पर
चढ़ बेगि होईब गमन बाह् पय रे बाजरज्य
दुनू बेला गुल्भ टहरिया पर चिनि रे गमन
अहीराह बोतल गोलसियाह् धरये देहलेन
गुल्याह् लेनह पीगनवाह् रे उठाई
दुनो मोला भरहै भोजनवा जे टहरे पजर
धागुन मे लियनऽ बतियाह् बति रे धाई
जयने परी पाइब ना पियवाह् सम रे गुलज्य
अब फेरि सोरिक अहीरवा में चढ़ले जात
पूरबऽ दे सेह् कउऊसा बोड रे रोगऽ
ओहि घरी ऊठन गऊरद वा बीर रे सोरिका
रँगन रोड रोड ना बोल्वाह् गयनऽ मझारय
उहवां से बारह बारदवा लेइ रे अयनऽ
गरे उनये बधलेह् पगहवाह् लेइ रे बानऽ
ओरवर टांडह पिटइवा जे धरि ये देहलेन
आरवाह् ढूंढियाह् देलेह् वा सट रे धाई
बयनेह् हलन महुरियाह् बीर रे सोरिका
जाह बेनि पोसल गजटवाह् लेइ रे बानज्य
भाउ भाई धान्हई रोपवबाह् छोरि रे धाई
अब हाँफि देलेह् बजरियां वा दुअरे ले
चलि गयनऽ बरन ना मेलवाह् रे बाजाज्यय
बारे भाई बारह् बजरदया जे बरय सोपारी
बगिरेनि बदसेगि ना ओठियन खड़ रे याजड
आइ मांजि देहलेह बारदवा जे सेदये वा रहाऽ
बारे भाई देवेगि दुअरवाह् छट रे धाई
बरदन के होगिय बान्हनवां जे बईबे देहलेन
टटवाह् से पिन पेटइवाह् रे उतारी
उहवां से अहीर बरदवन टिट रे करसेलि
उहाँ बरदा डुरीर गयल नह् बोहा मझार

लड़िकाह् बदीअईनऽ जोड़िया जोड़ि रे आजय
बेल्कुल गोइयांह् बांचरवा होइ रे गयनऽ
पक्कीय पक्काह् ना बदिया होति रे बांड़य
राजाह् लेइकह् ना गोटिया ग्रायं बुझावत
दहीने हाथे अऽजइया लेइ पकऽड़ी
ओ भाई मरतीय अजइया के होइ रे गइनीं
धरतीय राजाह् ना चलनीय लेइ रे बाय
ए घरी बतियाह् ना चलनीह् बाने रे जोरऽत
राखल बाड़य बद गउरह् लेल रे काऽरी
जवने घरी झूकल ना चोलवाह् हमरी गइलीं
थपराह् बाजत ना सूबवा के चलि रे गयनऽ
हम भागि गइलीं बिगहवा एक रे दूरऽ
जवने घरी उलटि ना तकले बा राजा भीमलिया
चम्फाह् डांकल मरदवाह् लेइ रे बानऽ
चेलवाह् घींचियना एड़वा जे मारि रे दीहले
ठाड़े हम गयलींय धरतियांह् रे गड़ाई
अब कह बारह ना जोड़ियांह् गोंइतवाय
चौदह जोड़िया ना टूटि गयल रे कूदारी
आजु मोर ससुर ना रहनह् रे खदेरूवा
खन तोरि ले लेन जिनिगियाह् रे बचाई
छ महीना पीयल बा गइयाह् हम रे गोरऽस
ओहवां से छोड़लीय ना चोलवाह् नगर सुरवली
तोर हम अइलींय गउरवांह् लेइ रे गांव
आजु केह तोहइं ना चेलवा जे मुड़ि रे लेहलीं
गउरा में करत बाड़ीय ना कवि रे लासय
आजु बाकी एकइ में जोरवा जे हम बताइलऽ
सांचइ लेहह् ना सूबवा तें रे बनाई
देख भाई बलवाह् में सूबवा जे बाइ भीमलिया
कारवा में बानह् लोरिकवाह् सर रे दार
जेके भाई सनमुख ना मइयाह् बा दुरूगा
देबियाह् आदिय ना दिनवा के पूज रे मान
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
गुरूवाह् भरत ना मनवाह् अहीरे के बानऽय
चेलवाह् कुछ्य हरजियाह् जिनि रे मानऽ
आजु हमार देखलि डहरिया बा सुरुहुलि कऽय

ऊऽ न मऽरद नह वीर रे लोरिका
अब हलि गयल ना गउवांह् गउरा में
जउ भाई कसि मसि बऽसलि वा अहीरे रानऽय
ऊहे भाई चउवीस जेवनवाह् छांटिये लेहलेन
आछा आच्छा छंटलेह् घवडुया वा जेवानऽय
ऊहे भाई लेलेह् दुअरवाह् पर रे अय नऽ
सञकेह् देलेसि ना दुवराह् वइ रे ठाई
ओठियन पानीय पतरवा जे होत रे वाऽनऽ
अब रखि गयल चिलमिया वा गोठहुल कऽय
धारहिय मारइं घवडुवाह् लेइ रे दम्मय
तव तक मूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
दम्म के भयनह् ना ओठियन तइ रे याऽर ऽ
.... ..घवडुवा रे जेवानय
आरे फेर होयनह् दुअरवा तइये याऽर ऽ
एकक जोराह् ना लेहलनि कसि रे याई
ऊहे भाई खोललेनि ना मोहड़ा जोड़वाऽन कऽय
चउवीस धइलेनि ना गलिया लेई रे जाई
ओही घरी उल्टीय हुकुमियां वा लोरिके कऽय
भइयाह् सुनवह् नेवतहरू रे हमाऽर
देखऽ भाई जातीय परजतियाह् एक जिन छोड़य
सबकेनि देहह् नेवतवाह् मोर रे बांटि
ओहि भाई दीनइं मोकमवा रे बतावत
सुक केनि रेंगिहइं बऽरतियाह् रे हमाऽर
तब रेंगल आहीरवाह् वीर रे लोरिका
एकदम हऽलल कोठरियांह् चलि रे गयन ऽ
अपने के बान्हत दऽरवित्रा वा झोरि रे याई
एकदम रेंगल ना देसवाह् रे पईठी
जइ रंग के होलाह ना बाजवा जे देसवा में
सतरंग लेहलेसि ना बाजवाह् रे खरीदी
सब केनि दीनइ मोकामवाह् रे बतावय
सुक केनि जइहंय बऽ रतियाह् रे हमाऽरय
ओहि घड़ी लऽवटि अहीरवाह् देख रे अयनय
अब हथ देहलेसि ना बजवाह् रे नेवातो
आरे भाई उहां से आहीरवा जे चलि रे अयनऽय
अपनेह् अइनहं ना घरवाह् रे दरबारय

जवने घरी दिनइ मोवमवा जे नियरे रइन ऽ
अब पेरि धइल बोहनवाह् कइ रे दीनऽय
आजु भाई पचुरु कपड़वाह् लेइ रे काढ़िकय
दसबीस सेहलेखि गुवालिन रे बलाई
सागरे पर धरइ नाहनवाह् रे गुआलिनी
अब पेरि पहिरेह् ना धोतियाह् रँगिये देलीं
एकदम हुलस भीतिवरीह् मेनि रे जानी
एक रते पवरी सवरिया जे होइ रे लगली
एक रते पच्चीय होतीह् बा तइ रे था ऽ रय
आजु भाई यादय सेंरवा कई रे सून ऽ य
आज वूड़ दिनई छूटल ना मुक रे वारय
अब छुटि गयल ना दिनवाह् रे मुखम्म य
दुअरा पर गौरल जाजिमवा बा बठइत ब ऽ
अब तनी गइनीव ना गेसियाह् ले लेइ गाजत
आजु भाई दालइ बादरवा जे भइन रे ठाड़ ऽ य
जयन घरी बईठि अहीरवा जे लट रे गय न ऽ
अब पेरि बइटह मेठरियाह् देख रे मारी
आजु भाई पकल ना पेटवा ? बा बठईत क ऽ य
पीयत बानह् ना गाभियाह् रे गुवाल ऽ य
बीचवा में गाजाह् पिमसिया जे रखले बानी
धोरहीय मारल खिड़ुकिया पर बान रे तान ऽ य
तब तेहि भयल भोजनवा बा तइ रे थारय
पतवाह् गयल आहीरवा जे बाइ रे लेवइ
दूनों मे लेवि मकनारवा जे घूमि रे घूमी
आजु भाई संगेह् रसोइया जे होई रे गइली
ओहीं घरी रँगल अहीरवाह् रे रँगवसय
एकदम हुलस जाजिमवा पर भयल रे ठाड़
अब कहे जतियाह् मा गुनिलह् मोर बिरादर
सभो गुनिलह् मा भइया जे घर रे जात
उठि उठि सगेह् ना गोड़वा जे हथ रे धोव ऽ
आजु पेरि अगने में आवह् रे बटाइ
आजु कहें एकर देवड़वा में धाइनई भतवा
एक रगे पवरीय सामनिया जे देढ़ि रे धाय
आजु कहे उनेह बरतिया जे उठि रे देहलेन
दार पर बरल बानइनह् जेव रे नार

जेवने घरी बेलकुल सामनिया जे गिरि रे गइली
अगिया पर गयल घियनवा वा सुल रे गाय
पंचोह सीताह ना रामवांह् रे बोलइब ऽ
औ फेरि खावह् ना जूठियन कौर उठाइ
सब्र कनि उठलि ना हंथवा में जे बाई रे क ऽ वर
अवर भाई खातइं आंगनवा में बोलि रे चाल
ओहि दम खाई कह् ना पीयह् तइ रे आरय
दुअराह् हांथइ मुहंवा जे धोइ रे लेंय
एकदम सुनलह् गललिया जे करत रेंगन ऽ य
एकदम चढ़ल जाजिमवां पै जान ऽ रे बाय
जवने घड़ी वईठि जाजिमवाह् पर रे गयन ऽ
औ फेरि बीराह् पतरियाह् मेंनि रे बाय
आजु कहैं लेइकह् ना पानवाह् कइ रे बीरवा
सब केनि देनह् न थारवा पर घूम रे राइं
आजु कहैं एकक ना बीरवाह् रे उठाइ क ऽ
ओठवा में कूंचत मगहिया जे बान रे पान
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन क ऽ य

बोहा से गांगी नाऊ के साथ धरमी संवरू का गउरा आना—बारात का प्रस्थान करना

केह् भाई ओहूय समइयाह् कई रे हा ऽ ल ऽ
आजु कहैं बोलल ना बुढ़वाह् बा कठइता
गंगियाह् सुनवेह् ना नउवाह् रे हमारय
आजु भाई भइयाह् के जाइकह रे बलइबे
बिहानऽह् रेंगिय धरमिया क बरि रे यातय
ओहि घरी रेंगल ना गंगियाह् बा हाजमवा
एकदम रेंगल ना बोहवा में चलि रे ग ऽ यन ऽ
संवरूय ढरकल ना कुसवा के साथरोय प ऽ र
गंगियाह् नीहुरि करत बाह् पर रे नाम ऽ
भइयाह् भरि मुख देतई बाह् आसी रे बादय
तव फेरि बोलल ना गंगियाह् बा हाजमवा
एठिन धरमीय काहनवाह् मान हमार ऽ य
आजु तोहार कक्काह् ना कइलनि रे बलावा
बिहनाह् च ऽ लीय बरतियाह् सुरहुलि में

अब सोहार थ ऽ दीप तिलकवाह् एहि रे दम्मच [illegible]
चलि बैनि बइठि [illegible] मे मदवा चनव ऽ
बिहुनइं रेंगइ के [illegible]वाह् देख रे [illegible]
थागे थागे रेंगत ना [illegible]वाह् [illegible]
सोळिन बोलत बा [illegible]
आदु बहे तीन गइ ना [illegible]
तबने मे नान्हून हंबहू [illegible]
नाहू के छोड़ेन्हि [illegible]
ई भाई हड़वध [illegible]
ह राजा महमइ ना [illegible]
धरमीय रेंगन ना [illegible]
एहदम हू ऽ मल [illegible]
जाइ बैनि पानीव [illegible]
जाइ बैनि बइठि [illegible]
आदु भाई पनिव [illegible]
पेनवाह देखत बानर [illegible]
जबने घरी मारर थ ऽ [illegible]
परिछन थ ऽ रई [illegible]
एगनाह् [illegible]
बानम पनिदवाह् [illegible]
गाइनि बातम गईनि बा [illegible]
आदु मदवा बगह् [illegible]
मुरछेनि थ ऽ मलि [illegible]
सोहि घरी मुनह् ना [illegible]
बेवनाह् वारीय म [illegible]
ओह भाई घर घर [illegible]
माटन देहिलाह् थ ऽ [illegible]
मारे भाई [illegible]
अब फेर [illegible]
तब तक [illegible]
एहदम रेंगत ना [illegible]
सोहि घरी [illegible]
पीठेन् [illegible]
बरन घरी [illegible]
तब फेरि [illegible]

आजु भाई अइसीय लकड़िया जे ठोकि रे देहलेन
पिरथमी से भारइ सहलवा वा नाहिं रे जात
केह् फेरि नीचवांह् वा डोलइ लागल ध ऽ रतिया
उपराह् डोलइ लागल नाह् आस रे मान
अब छूटि गइलि ना तड़िया वा रिखिमूनि कय
डोले लागल बावाह् बिसुनवा के सुर रे धाम
आजु भाई डोलत पीरिथिमीहि अस रे मानय
ओहि घरी होलइ परछनिया जे ध ऽ रमीय क ऽ य
मथवा में तिलक ना लगनह् रे जूझारय
दुअरा से रेंगलि पलकिया धरमी क ऽ य
संगे संगे रेंगलि बारतिया बाइ रे जातय
एकदम हललि सिवनवां बांइ रे काढ़ति
अब धाइ भइलि ना टपवा मेंनि रे ठाड़य
तब फेरि बोलल अहीरवा वा बीर रे लोरिका
अजईय सुनबेह् गुरुववा रे हमार ऽ य
आजु भाई धापइ भरइ ना बढ़ि ले अइलीं
आध कोस अइलींय जमीनियां हमरे आई
गुरूवाह् सुधिय भला तनीय रे भइनीं
गुरू हम जातइ घरेह् ना एहि रे दम्म ऽ
मरेए में टांगल बरुइया कइ रे पनिया
ऊहे गुरु टंगलइ मड़इया मेंनि रे बाड़ य
गुरू तोहार देखलि ना रहतवा वा सुरहलि क ऽ य
ले लेह् चलह् व ऽ रतियाह् रे हमा ऽ र
ऊदम आधि बाजति ल ऽ कुड़िया जे चालि रे च ऽ ल ऽ
अब धाइ ले लेह् ऊतरवा के देख रे राह
ओहि दिन लवटल अहीरवा वा बीर रे लोरिका
आइ फेरि गयनह् गाउरवा जे अपने घर

अहीर की सवा लाख बारात ब्रह्मा के भेजे हुए दूत के पेट में

सूनह जे हलिया अगवां क ऽ य
आजु भाई डोलइ बरम्हवा के इन रे रासन
बिस्नू के डोलत वानय नाह् सुर रे धाम ऽ य
अहीरे पर अइसे न चिढ़वा होइ रे ग य ऽ न ऽ
लोरिकाह् भयल पिरिथिमी लेइ ये सूझ ऽ त
सोझे बरम्हा देहलेन कागतवाह् रे देखाई

एक ठे भेजई ना दूतवा सरगे में
ऊ दूत ऊतरल आवइ ना मित रे लोके
एहर भाई जातीय बरतिया वा कहीँरे क ऽ द
ओहि दिन पहुँचत आवत बा दूत मुँह धावे
एक ओठ गाड़ीय घउरतिया में देख रे देहलेन
एक ओठ देलेंसि न धुनवाह, अस रे मान
बोयवा मे सउकि न लवकति मद रे रनवा
सवा साथ बेंहुसति बारतिया बा चलि रे आउ
एतना पेटवा में दूत रे गयनज्य
ओहि घरी बमइ ना मुहवा जे करके नौहलेन
छांसई घड़ल ना धोंढ़वाह, हो पहारव
ओह घरे ऊतरि डोगरवाह, में देख रे बरउड
गनवाह, बइठि ना फेटियाह, बाइ रे मारी
ऊवरति बेहंसति ना मानइ घूमति रे कुंरवा
सब सक मूनह अहीरवाह, के रे हान ब
लोरिकाह, दवरि दुवीय मह, रँगत रे बानल
भाउ भाई अइसन ना बाजनाह, धूमधे मधन्ज
भेउनीय दूरियाह, बारतिया जे चलि रे दरनी
आगवाह मूनई ना सोलबाह आ धुनान्तल
ओही घरी रँगल अहीरवा बाप रे आइन
जहाँ बरे रँगलि बारतिया भुवा रे लाखन्ज
गुपुरी में मवबाह, दवहिया बा देखारी
जहवाँ पर ऊतरल ना दूतवा बा बरम्हा कन्ज
ओकर आगे बराइं दावहिया नाहि रे बान्दन
लोरिकाह, धूमि धूमि न देखइ चारि ओरय
नाहि भाई परम मल्लनवा मैंनि रे धानय
ओहि घरी मध्यल अहीरवा सोच रे बानय
भाउ कहै हो हो न दइवा मोर नारायन
कहा चम्हा मिलनह, ना मंसवा हो संसारय
भाउ कहै हमरेह, ना रीतिया रे महोबा के
एक बइ बानह, दरदवा कइ रे मानय
कउनहु छांबई नयनवा भेद उतारि कउन
बिहनए, रँगल गुरबनी बान रे जाउय
एतना गाइब अर्हमिया हाँड़ रे गमंजय
कइगर बांधन परनवा रे हूमारय

कइसे हम गउरांह् देखइबय देख रे मूंहऽय
जवने घड़ि पूछिहंइं ना लोगवा गउरा कऽय
ओठियन कवन जाबबिया हम रे देबय
बलुकन मइयाह् धारतिया तूं फाटि रे जातिउ
हमहूँ जाइत धरतियांह् रे सटाई

लोरिक का पाताल लोक में नाग के यहाँ पहुँचना

माई धारतियाह् फटि रे गइनी
अब दूइ भागेहं् गऽइलि ना बेरि रे आईं
ओहि मेनि ठाढ़इं आहीरवा जे कूदि रे गऽयनऽ
एकदम रेंगल पातालवाह्/भ (य) न रे ठाढ़य
जहवां पर नागई सूतल बाह् नगिनी बेनिया
बइठि केनि देलइ बेनियवाह् रे डोलाई
दूअरा पर ठाढ़ह् अहीरवा बा बीर रे लोरिका
नागिन बोलसि लारमवाह् कइ रे बोल य
आजु कहैं हाथि जोड़ मन सूखिया जे दुअरा से
नाहिं हम सूतल ना नगवा रे जगइबऽय
आलरि लेइहंइ जीनिगिया हो तोहारय
ओहि दिन बोलल आहीरवा बीर रे लोरिका
दरियांह् करइं ना बेड़वां रे जबाबई
ओहि दिन बोलल अहीरवा जे बान हो लोरीक
नागिन तू नागवाह् नां नागवा जे काई कइल ऽ
हमसेह् बानई ना नागवाह् सेनि रे काम ऽ
तनी एक सूतल ना नागवा जे आपन जगवतीं
दुई अच्छर हमहूंय ना नागवा से बति रे या ब ऽ
ओही घरी सूतल ना नगवा जे खोदि रे देहलेन
उहे नाग ऊठल बानइ नाह फुफु रे कार
जवने घड़ी देहलसि फुहरवा जे लोरिके ओरियां
थर थर कांपल ना जघिया जे बाड़े सरीर
ओहि दिन तड़पलि ना मइयाह् बा दुरूगा
तुरतेह् करति जाबावबा देखु रे बाइ
आजु कहैं सुनबेह् वरूअवा जे फुल रे झरूवा
एठियन ते मनबेह् काहनवांह् रें हमाऽर
देखु भाई उहइ ना नागवा जे देखु रे हवां
जउने के बन्हलेह् नेउरियाह् पुर रे पाल

[illegible] ठोहार घ ऽ कीय दिलकवाह, एहि रे दन्नय
घनि केनि बइठि परिया मे मदवा चनन ऽ
बिहनइ रेंगइ के मोल्वाह, देख रे बानय
आवे आवे रेंगन ना मनवाह, बा बरनिया
ओठिन बोनत बा बनियाह, सनू रे [illegible]
बातु बई वांन सइ ना सखिन्हू, [illegible]
तरने मे नान्हुव हुवइ, नइ रे बचन [illegible]
नाहू के छोरेन्हू, बनदिया ले [illegible]
ई माई हुवत नायना के इन रे [illegible]
ई राया सरसइ ना बेन्दइ, रे [illegible]
धरमीव रेंगन ना पन्हा के चनि रे [illegible]
एहरम हू ऽ नन मोतनिया बा चनि रे [illegible]
जाह केनि घनीव पातरवा के दिन रे [illegible]
जाह केनि बईठि ठाहरियाह, वव रे [illegible]
बातु माई पनित मोहनियाह, चनि रे [illegible]
येतवाह देवत बानइ नइ रे बिन रे गाई
भउने परी सानइ प ऽ रीवा जे दिन रे घ ऽ होहैव
परिछन क ऽ रई सारनियाह बा देवाती
एतनाह, देदकह, हुटुमियाह, मोहनीय लान य
बानम पनितवाह, लेइ रे बानय
घारति आरन गईनि बा निय रे राई
बातु मत्वा कन्ह, परठनिया बहो सबेरवा
मुरठेनि घ ऽ मति बरनिया जे देख र बाय
बोहि परी मुन्ह, ना हुनिनइ, बोठिनन क ऽ य
बेरनाह, बाबंव न रहन्ह, दर रे बाति
मोह माई घर घर बारनिया के चनि रे मनन ऽ
मातन दहिनाह क ऽ मन्ह रे [illegible]
बारे माई पहिरि ना बोठि बड़, मन रे निकनय
बर पेर वरहि तुमरवा पर हेन्ह रे जाय
घर ठक हुन्न ना बावना बा सन रे रंवा
एहरम रेंगन ना हुमरा दर चनि रे बा ऽ प
कहि परी सब दिन बन बनियाह, देख रे हरवंथ
पहिरेन्ह, बायन पुपहरवा के चनि रे जाव
बरने परी घर मनन ना बारन एहि रे बानवा
[illegible] देरि ठोवत नइरिया बा बन रे हाय

दूतवाह् धरतीय ना ओठवाह् रे गड़उलेन
ऊपरांह् देलेनि वादरवाह् हेर रे काई
वीचे वीचे लवकति सऽड़किया वा मय रे दानय
वेहंसति हललि वऽरतिया जे चलि रे गइलीं
सवा लाख गइलि वरतियाह् ओलि रे याई
ऊए दूत वन्नइ ना मुहवांह् कई ए लीहलेन
सोझइ चलि गयल ना परवत रे पहाऽड़ य
जाके भाई ऊतरि ना खलवांह् लेइ ओठिन
ऊहो भाई वइठल ना फेटियाह् घूम रे राई
सवा लाख रेंगति वारतिया वा पेटवां में
ऊहे भाई हमरेह् ना भोर से जिनगी रहवय
तोहके जे देलेह वरह्मवा जे वान रे डंडा
जाइकेनि वइठह् झारियवाहं रे अगोरी
नाइ जउं उतरीय ना दूतवाह् रे पियसलय
खींचि केनि पीहंइ ना जलवाह् रे भऽरी
तोहकइ सावाह् ना लाखवाह् वरि रे यतिया
ओहि घरी मरि जाई ना नागवाह् केनि रे पेटी
अव भाई हमरे ना वतिया में जिनि रे रहवऽय
अउरुह निकलि जावह् ना मिरुत रे लोके
अहीराह् उहवांह् सेनिय नह वाई रे सरकऽय
नीकलि अयनह् ना धरतीय असरे मानऽय
टहरई लगनह् धरतियाह् लेइ रे घूमि कयं
देखत वाड़इ झरीयवाह् कइ रे घाटय
झरिया में दस वीस डहरियाह् रे देखाऽलय
अहीराह् पड़ल गुननियांह् में नि रे वानऽ
आजु हम कवनइं ना घटवाह् रे अगोरीं
वइठल रहींय ना घटवाह् रे अगोरी
का जानी कवनेह् ना घाटवा पर दूत ऊतरीहंय
मट्टिय होइ जाइ वरतियाह् रे हमाऽरय
ओहि घड़ी सुमिरें ना दिनवाह् भाग रे मानय
सब कनि लेतइ ना नउवांह् रे सुमिरी
आजु कहैं सुनिलह् ना मइयाह् मोरि दुरूगा
देवियाह् लागह् साकतियाह् रे साहाई
आरे कऽवन राहतवा जे जाई रे छेंकी
मइया तूं देतीउ ना भखवाह् रे सुनाई

ओहि घरी चऽढलि नजरिया पर माई दुरगवा
जवन हुई आदिय न दिनवा कऽ पूज रे माऽनय
जउने घरी ताकइँ क्षरियवाह् रे गुरेरो
आजु कहँ सुनवेह् बऽरूववाह् फूल रे क्षरूवा
एठियन मनवेह् काहनवाह् रे हमाऽरय
जाइ केनि बोचलाह् ना घटवा जे तू अगोरऽ
अब दूत अबहेह् ना ओठवा जे वोरि रे देसा
ओहि घरी आइकेह् ना बइठल घटवा पर
उहै गगा चलल ना उहवा सेनि रे जोड य
एकदम धरतीय अवासवाह् रे देखालाऽ
थर थर कापलि ना जधिया वा लोरिके कऽय
अहीराह् दात न अगूरियाह् रे चवानय
आजु बाबू चरोअई अगूरवा के मोर रे खाइय
इन्है माई धरतीय लागल बाह् अस रे मानऽय
केह् हम घोदव ना एपरेह् देहिया म
दूतवाह् ऊनटि ना मुहवाह् फेरि रे कऽनी
गायब करिहइ जिनिगियाह् रे हमारऽय
एतनाह् पहत न वानह् लेइ लोरिकवा
सब केनि लेलेसि ना ओठवाह् रिरि र काय
जवने घरी पहिल न घोटवा जे हिचिये दीहलेन
ठेहुन भयल बारतियाह् केनि रे वाइ
तब तक देखत ताक्तवा जे फेरि रे खीचलेनि
दोहराह् देलेसि ना घोटवाह रे चऽढाइ
भाई एतनाह् ना पनिया जे होइ रे गऽयनऽ
सडक भइल बा रतिया रे लय रे गोय
तीसराह् ना घोटवाह् बाइ चढउले
तब तक तडपलि दुरूगवा थाई र माई
आजु कहै सुनवेह् वरूअवा फूल रे क्षरूवा
एठियन मनबेह् काहावाह् रे हमाऽर
चेलवाह् एनह् न घोटवाह् रे चढइहय
माट्टीय होइल बारतियाह् रे तोहार
हमकेह् लागल वा छुधवा रे पेटवा कऽय
खप्पड लेइलेह् दुरूगवा जे वाइ रे माय
बरसँइ खीचवेह् ना खढियाह् रे दोगाहे
हम दे दवइ ना बीचवाह् ढग रे लाइ

ओहि घड़ी खींचइ ना खंडियाह् रे दोगाहें
जेकर भाई तड़क आकसवां जे कइ रे जाऽ
आजु फहँ नीचवांह् ना गरलेह् जे वा दवन्हरा
परोसन गईनींय लउवरिया जे गुमि ये आय
आजु घूमि गऽऽलि गलकिया वा दूतवा कऽय
खंडियाह् गइनींय गऽरदनेहि रे बिसाय
जवने घरी गिरि गइल ना मुंड़वा जे झरिया में
पनियाह् लवटल ना पेटवा के देख रे वाय
जेननाह् अबराह् दूवरवा जे जवन रे रहनंऽ
एकादम गिरंलह् झरियवा में बहि रे जाय
आजु लथ बोयइ बारतिया आहीरे कऽय
बदरीय देलेनि मूरुजवाह् घेरिय जाई
जाड़वाह् कइलेनि बऽरतियाह् के बड़ रे जोरय
खट खट होलइ जेवनवा न कइ रे दांतऽय
ओहि घरी बोलल ना गुरुआ सेनि रे लोरिका
गुरुवाह् तें मनवह् कऽहन वा रे हमार य
देख भाई देखलि ना राहतवा हउ तोहारय
आजु भाई चीन्हल ना गउवां हो गिरावांऽ
कतहूं जो नियरेह् ना गउवां जे गुरु होतऽ
अब लेइ अवतह् ना अगियाह् रे उठाय
आजु भाई पल्ले क सनइया जे भीजि रे गइंली
सवा लाख कांपति बरइतेह रे हमाऽर

ब्रह्मा द्वारा डाइन की रचना किया जाना—
गांगी नाऊ तथा अजयी धोबी डाइन के पेट में

तब तक सूनह् ना हलिया जे बरह्मा कऽय
अब हींय टेढ़इ भयलवा जे देख रे वाय
आजु बरह्मा नावह् ना माया के घर उठाइ कऽ
औ फेरि देहलनि ओसरियाह् रे झुकाइ
ओही में आगिय ना वारि देंय धध रे कालय
एकठेनि देलेनि डाइनिया जे ओही सुताय
बुढ़ियाह् धरइ ना रूपवा जे लेउवातर
धीरे-धीरे कहरंत डाइनिया जे देख रे बाइ
तब फेरि नऽजरि लोरिकवा के परि रे गऽइनी
गुरूवा ते मनवेह् काहनवांह् रे हमाऽर

देखु भाई बडीय वखरिया जे वाइ रे लवकत
ओ भाई पछिवाह् ओसरिया ज आवरे वाइ
उहवा पर बऽरतिया अगियाह् ओहि ओसरियाँ
एक जिन खटियाह् ना लवकति देखु रे वाय
आजु जा के लेवह् ना अगियाह् गुरु उठाई
सवा लाख सापति सऽकलवा जे वरि रे यात
अस रेंगल ना गुरुवाह् वा अजइया
एकदम रेंगल वऽखरियाह् चलि रे जालय
गुरुवाह् बोलत लारमिया के बाई रे बोलऽय
आजु भइया केकरह घरवाह् रे दुवारय
आजु के हवई ना मालिक लेइये आजऽय
तनी एक आगीय ना हमहूँ के देइये देतऽ
आजु भाई पीहइ तमखुवाह् मोर रे लोगय
तब फेरि बोललि ना डाइनिया बा खटिया से
दरियाह् करइ ना बेडवाह् रे जवाब य
भइयाह् तोहरइ ह घरवाह् रे बखरिया
अब लेइ जावह् ना अगियाह् रे उठाई
हमरेह् बारह बरदवा जे जर रे चऽऽऽ स
उठ के सम्पति ? ना देहियाह वाइ देखातय
तब तक देखई ना हलियाह् अजईय कऽय
एत गोड धारत भीतरियाह् रे उठाई
जउने घडी नीहुरि लुअठियाह् धर के कइलेन
मुँह भरि के कूदलि डाइनियाह् ओहि रे दम्मय
आजु कहँ ठाडेह् अजइया के लीति रे गइली
जाइके भाई सूतलि खटियवा पर मचि रे आई
सूनह् ना हलियाह् अहीरे कऽय
लोरिकाह् बडेह् गुननवा मे होइ रे गयल
जाहि भाई जडायल ना गुरुवाह् रहल अजइया
जाडा मे पवलेसि अगिनियाह् पेट रे भरी
गुरुवाह् वातेह् ना चितवाह् बतियातऽय
तब फेरि तापत अगिनियाह् पेट रे भरी
आजु कहे सुनवेह् ना गगिया मोर हजाम्मय
एठियन मनबेह् काहनवा रे हमारऽय
सारवाह् गुरु अजइया बद रे मासय
उहे भाई जाइकह् ना बतिया भर रे माई कऽ

पेट भर तापत अगिनिया गुरू रे वाड़ऽय
गांगी तूंय दवरह् ना ओठियन अगिया से
अब जल्दी लेइ आवऽ ना अगिया रे उठाई
ओहि घरी दवरल ना गंगिया चलि रे गऽयनऽ
एकदम नीकलि ओसरियाह् केह् दुआरे
ओहि घड़ी देखइ तामासवा लेइ रे गंगिया
ओहि नाहि गुरूय आजइया रे देखानऽय
ना त कोई देखई सांझरवां तर रे दारऽय
एक ठेनि बुढ़ियाह् खटियवा पर रे कहंरय
नउवाह् वड़ेह् सुवहवा मेंनि रे बानऽ
नाउ फेरि अहर पाहरवा घूमि रे देखऽर्य
नाहि गांगी मरलेह् खंखरिया बरि रे यारय
भइयाह् केकर ह घरवा रे दुआर य
तनी एक देतीउ ना अगिया रे टेकाई
ओही घड़ी बोलल डाइनिया खटिया से
भइयाह् तोहरइ ह घरवा रे बरवारी
हथवा से लेइ जाह् तूं अगिया रे उठाई
हमके बारह बरदवा रे जर रे चऽढ़ऽल
देख भाई उठइ के संवसत नाहि रे बाय
ओहि घड़ी एकइ ना गोड़वा जे बा बहरवां
एक पर धरत भीतरियाह् केनि रे बाय
जवने घरी नीहुरि लुअठिया धरि के कहलेनि
मुंह भरि के कूदल डाइनिया जे देख रे बाय
गंगिया के ठाड़ेह ना ठड़वा जे लीलि रे गइलीं
फिरि जाके सूतऽल खटियवा पर मचि रे आइ
ओहि घरी सूनह् ना हलिया जे लोरिके कऽय
लोरिकाह् मानेह् आरथवा बा बइ रे ठावऽत
साईंत के गुरूय आजइया के डरि ये नहिनी
जाके ओह ठीलिह् ना अगिया रे तापत रे बानय
आजु मोर हुकूमीय ना नउवा जे गांगी रे हउवां
बड़ी जल्दी करत ना कामवा जे देख हमाऽरऽय
एतनाह् देरीय ना नउवा जे नाह् हो करऽत
अब से आइ गऽयल बारतिया में गांगि रे रहंतऽय
आजु भाई अइसेह् ना बतिया जे हम देखलऽय
जइसेहि होति बाह् ना धोखवा केनि रे मार

नाहिं सुनह वा हलिया ओठियन कऽय
केह् भाई ओहीय समइया कइ रे हालऽय
ठाडे ठाडे रेगल अहीरवा वीर रे लोरिका
एकदम रेगल डाइनिया घर रे जानय
ओहि घरी मारइ खाखरिया दुअरा से
बोलत बानह् लारमवा कइ रे बोलय
ओहि नात गगियाह् ना नउवा रे देखा नऽय
ना कहिं गुरूय अजइया बाइ देखालऽय
अब फेरि मरलेसि खाखरिया बरि रे मार य
आजु भाई केकर ह घरवा रे बखारी
तनी एक देतीउ अगिनिया हम टेवाई
ओहि दिन बोललि डाइनिया बा खटिया से
बोलति बानीय लारमवा क देख रे बोल
भइयाह् तोहरइ घरवाह् रे बखरिया
अब भइया ले जाह तू अगियाह् रे उठाइ
ओहि घडी लोरीक ना दरवाह् बाइ रे रेंगल
एक गोड धरल ओसरिया मे देख रे बाय
जवने घरी नीहुरि लुअठिया जे पकइ गयनऽ
मुह भरि के कूदलि डाइनिया जे देख रे बाय
आजु भाई बीरेह ना देहि केनि रे लीलऽय
आदनइ लीललेह् ना डाडेह् बाइ रे जात
तब देह धरि धरि ना मइयाह् मोरि दुलवा
जेन्हई ना आदिम दिनवा के रे पूज रे मान
आजु कहँ तडपलि ना मइयाह् बा रे दुल्गा
बरूवा ते मनबेह् काहनवाह् रे हमार
तोरे भाई जेववांह् मे छुडिया जे होइ कटरिया
अब् देह् कइ देह् ना वेडवाह् रे ले जाय
ठाडे ठाडे फाटि जाउ ना लदवा जे डइनी कऽय
निकलि निकलि होइ जाह् ना निकलेह् मय रे दान
ओहि घडी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अब ठड भयल लोरिकवाह् केइ रे बाँनय
आजु कहँ बलवाह् से हिचले जे बा कटरिया
अब वेड कइलेह ना पेटवाह् भेनि रे जाई
डइनी के ठाड्इ ना लादवा जे फटि गयनऽय
हसतइ निकलव ना गुरुवाह् रे अजइया

हंसतइ निकलल ना नउवाह् रे हजामय
ओहि घरी देखनह् ना हलियाह् लोरिके कऽय
ओहि घड़ी झूकल अजइयाह् ओर रे जाला
आजु कहें गुरुवाह् ना रहतं मोर अजइया
तोहें दुइ भागेह् देइत ना ढुंरि रे याई
अइसन अइसन ना अड़गड़ काम रे रहनऽ
काहे नाहीं अगहींय ना बतिया देत सुनाई
तब हम छन्नइ ना बान्हवा से अपने रहतइँ
तब मोर होतीय विपतिया के बाइरे ओरऽ
ओहि दिन बोलल ना गुरुवाह् वा अजइया
चेलवा ते मनवेह् काहनवांह् ना हमार
तोहरे पर बरम्हा ना टेढ़वा जे होइ रे गयनां
एतनाह् कऽरत ना हवं रे होंकार
आजु तोहार एतना ना सिहटि कइ रे दीहलेन
कुछ मोरे बूतेह् कहलवा बा नाहिं रे जात
देखह् ना हलियाह् अहीरे कय
अपने हाथेह् लुअठियाह् वाइ बटोरत
जेतनाह् रहनीय लुवठियाह् आज सहीतय
उहे भाई देलेह् बारतिया में चलि रे गयनऽय
सवा लाख कांपति बरतियाह् डंड़िया पऽर
ओहि घड़ी ले लेह् अगियाह् वाइ रे बांटत
दस बीस दरेह ना अगियाह् वाइ रे बोझऽत
आजु भाई घूमि घूमि तापत वाह् सब रे लोगय
जेके भाई ठांवई ना ठिकवा जे होये लगनऽय
आजु भाई तावाह् तमकुआह् चढ़ि रे गयनऽय
कठइत के बोलिल फऽरदियाह् ए लपेटऽय
ओहि घड़ी चढ़ल चिलमियांह् गंजवा कऽय
धोरहीय मारत चिलमियाह् पर रे दम्मय
तब फेरि देखह् ना हलियाह् रे ओठिन कऽय
लोरिकाह् बोलल ना लारमवाह् कइ ये बोलय
दस बीस उठि जाह् जेवनवाह् लिख रे पढ़िहऽ
अब भाई गऽनह् बऽरतियाह् एहि रे दम्मय
अइ भाई जेतनाह् बऽरतियाह् जे सहि रे बाड़इ
जेतनाह् नयकीय बऽरतियाह् रे हमारऽय
ओहि घड़ी गनय ना लगनहं दस रे बीस य

एकदम ठाडाह् ना कऽरियाह् रे केतारय
सब कनि मीसल टोटरवाह् एक एक जगऽ
जूटलि बाडइ कलमियाह् कइ ये जोरय
आजु भाई जेकरेह् ना मथवा जे चल वरतिया
कई भाई बऽरई दूलहवा जे नाहिं रे बानय
ना ॥ भइया बानह् ना ककवाह् रे कठइता
ना त उहे गुरुय अजइयाह् देख रे बानय
ना त उहे कठइत ना बुढवाह् रे देखानऽय
ना फेरि बानह् बतिसवाह् रे कहारय
लोरिकाह् लेइकह् बिजुलियाह् खडि रे रेंगनऽय
फेरि भाई गयल झरियवाह् रे नगीचऽय
जाइ कनि सुरुकि मीयनवा जे फेंकि ये दीहलेन
अब दहतगीय तानल बाह् तर रे बारय
जेके भाई चारीय अगूरवा जे भइनी रे बह् रे
जेकर तऽडक आवसवाह् बाइ रे जातय
आजु यहँ नीचेह् ना मारि देइ रे दवन्हरा
पोरसन गइलि लावरियाह् गुमि रे आई
ओहि घरी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
उहवा से रेंगल अहीरवा कइ रे गोलय
पाछियाह ओरी से नीकललि बाइ पलकिया
वेलकुल ले लेह् आहीरवा चलि रे अयनऽय
आइ कनि देहलेनि बऽरतिया रे मिलाई
ओहि घरी ठोकलनि ना बजवा बज रे गीरऽ
अब जोरि देलेह् लड़किया अन रे हृदऽ
जवने घरी बाजलि लाकुड़िया झरिया पर
पिरिथमी डगमग डगमग व कइ ये देनी
आरे भाई ले लइ ना रहिया जे उतरी कऽय
औ भाई ले लेह् उतरवा भा तडि रे याय
रातिय रेंगत बाह् दिन रे दवरत
कतनेनि वदत ना कुरवा जे देख मोकाम
आजु भाई रेंगल ना एकदम हो रेंगावल
अब चलि गयनह् बरइया जे पुर रे पाऽल
अगवाह् मारीय बगइचा जे बाइ रे लवकत
ओठिय बावठ बारतिया जे रहि रे आइ
आगे आगे रेंगल मारदवा बा बीर रे लोरिका

तेकरेह् पीछेह् सवा लाख बरि रे याति

बारात बरईपुर में—खटिकों के आग्रह पर रानी बरइनि का लोरिक से लड़ाई करना—हार के बाद अहीर से प्रेम-प्रस्ताव

जवने घरी बरईय न पुरवा में चलि रे गयनऽ
एक़दम हलि गयं बगइचा जे मय रे दान
आजु भाई हलिकह् वगइचा में देख रे राइ
डेरवांह डालैं ना ओठियन परि रे जाइ
आजु भाई धीरे धीरे बारतिया जे जूटलि जाति बाय
तब तक बइठल ना बानह् सर रे दार
तब तक जुटि गइल बारतिया जे अहीरे कऽइ
आइकनि छटकि रासदिया जे सब रे जाइ
ओहि घरी निकलल जाजिमवा जे बऽय ले पर
ओह भाई गीरल जामिनिया जे वेनि रे बाइ
जउने घरी तनि गयं जऽमिनियाह् केरि रे उपरनां
औ फेरि दलइ बादरवा जे होइ रे ठाढ़
ओहि घरी डटि कह् बरतिया जे देख रे बइठल
औ फेरि जूटत सभइ नांह् बरि रे यार
ओहि घरी दस पाँच ना पइजह् लइये गयनऽ
सब केनि बांटइ ना सीधवाह देइ रे आइ
आजु भाई सबकेह् रासधिया जे बंटि रे गइनी
जेतनाह् रहनह् ना जतियाह् पर रे जाति
एतने से बंचि गइल रसदियाह् ओठियन बा
खाली बचि गयनह् ना गोपियाह् रे गुवार
ओहि दिन बोलल ना बुढ़वाह् बा कठइता
लड़िकाह् मनबह् कहनवांह् रे हमाऽरय
आजु कहें अपनेह् ना हथवा के हथ रे भूंजबऽ
कतहूंय जातीय बियादर हम अताईं
एतना जे सूनल आहीरवा जे बइ ए लोरिका
जरि मरि भयल ना एठियन बेंड खंगार
एक्काह् गउवांह् ना घरवा के अब ना रहीं हंय
ककदांई कइलह् बदअमलीय कक रे तूं
अपने हाथेह् अहीरवा जे हथ रे भूजिहंऽय
ठोकि केनि खइहंय ना रोटियाह् एहि रे दऽम
······रतिया जे अहीरे कऽ

ओहि भाई कोटवाह् मदोखरि लेइ रे गाँवय
कि जउन नागर बरइयापुर रे पालय
आजु भाई देखहू तामसवाह् ओठियन कज्य
भोजन करत बारतियाह् सब रे लोगय
खाई पीय होइ गयल नाह् सम रे तूलय
जउने घरी बइठइ जाजिमवाह् भेड रे भारी
अब खुलि गयल ना चोरवाह् पनवा कय
अब खे गयल ना बीरवाह् रे बटाई
ऊहे भाई कूचय मगहिया ढाली रे पाञ्न
जवतह् देखह् बारतियाह् ओहि रे दम्मय
आजु भाई कसबीन पातुरियाह् ढुर रे लगली
भडवाह् तोरत चिट्टुकिया पर वान रे तानऽ
ओहि घरी देखह् तामसवा जे ओठियन कज्य
ओहि भाई नागरि बरइयाह् पुर रे पालय
आजु फेर जेठइ माहीनवाह् देख र हउवा
आमवाह् पाक्ल बगइचाह् रे बनाई
जाजिम गीरल ना लगडाह् माल दहि तर
जहवाह् बानह् खटिकवाह् रे अगोरी
ओहि छिन गीर गयल जाजिमवा जे अहीरे कय
अब फेरि टपकत ना आमवाह् ले रे बानय
अब फेरि बइठल ना लोगवाह् गउरा कय
तब सेनि लेनह् ना हथवाह् रे उठाई
उहे भाई लेनह् न मुहवाह् रे लगाई
ओहरेउ बद देह् ना आमवाह् लेइ रे गीरय
ओह् केउ खालह् ना आमवाह् रे उठाई
ओहि घरी देखइ खटिकवाह् लेइ ये ओठियन
ओहि भाई बानह् खटिकवाह् मुरमुरातय
नाहि फेर आहीय ना बतियाह् रे सहयञ्नऽ
खटिक कञ्चीय ना बोलियाह् दे सुनाई
लोरिकाह् सुनई न एहिय देइबे काने
ओहि घरी चऊलि नञ्जरियाह् पर रे बातय
आजु कहेँ सुनबह् बरतिहाह् रे हमारञ्य
गउरा के उठि जाह् घबल्वाह् रे जेवानय
अब भाई देबह् ना अमवाह् छिति रे राई
जेतनाह् पाकल ना आमवाह् पेडवा कज्य

ओहि आम खाबह् न एठियन रे हिलाई
जेतनाह कच्चाह् ना आमवाह् पेड़ में बचिहंय
झोरि कनि देवह् धरतियांह रे गिराई
आ जवन पेड़इ ना पातवाह् लेइये हउवां
दस बीस लेवह् जेवनवाह् कसि रे आई
पेड़वाह् के देवह् ना तनीय रे घुमाई
अब फेरि मारिकह् झऽटकवाह् राखि रे देव्या
फांकह एक दर होइ जाइ नाह मत रे दानऽय
कठउर गांजि दह् वागइचाह् महि रे दूसर
ओहि दिन उठनह् जेवनवांह् छित रे रायनऽय
सब भाई कइलेनि हऽलतिया रे खराबय
अब कहे अम्वाह् ना झोरियाह् क चढ़वलेनि
अब फेरि रोवइं खटिकवाह् ओहि रे दम्मय
एकदम रेंगल बाऽरइयाह् बान रे जातय
जाइ कन देनह् दुहइयाह् चाननी पर
सूबवाह् मनबह् काऽहनवांह् रे हमारय
आजु भाई तूहई जावरवा जे देख रे रहलऽ
तोहरे से जंऽबर डऽहरवाह् नाहि रे कोई
आजु भाई कहां के जावरवा जे बाइ रे चढ़ऽल
आजु भाई एतनाह् ना बतियाह् बायं रे कऽहत
तब तक सुनह् न हलियाह् रे हवालऽय
ऊहे तब खटिकवा जे चलि ए दीहलेनि
एकदम सूबाह् बरइयापुर रे पालऽय
जाइ कनि देलेनि दुहइयाह् चाननीय पऽर
सूबवाह् मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
एकतह् तूंहइ जावरवा पर इहां रे रहलऽ
तोहरे से जाबिड़ ना इहवांह नाहिं रे कोई
का जानी कहां के जाबिड़वाह् बाड़ं रे चऽढ़ऽल
आ सूनह् हलिया ओठियन कऽय
अब कइ दीहलेह् ना बगिया उदि रे यान य
ओहि घड़ी सूनह् न हलिया ओठियन कऽय
कइसे हम बालव ना बाचवा जे अब जियइबऽ
कइसे तोहार देबइ ना रोलिया रे चुकाई
उहां नाहि रचनह् वागइचा कई रे बानय
कठउर गांजल बगइचा एक रे डारी

पेडेह् पातह् ना पतवाह् नाहिं रे बान म
उहवा पर गीरल जाजिमवा बा आहीरे कऽय
जलसाह् होतिय बरतिया जे देखऽ रे वाय
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
केह् भाई ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽलऽ
आजु भाई कऽहृत ना बतियाह् अर रे पाई
ओहि घरी देलेन दुहइयाह् जाइ खऽटिकवा
मूबयाह् सूनव ना वानवा जे वाइ लगाइ
ओहि घरी मुनलेसि ना बेलकुल रे घियनिवा
ऊ सूवा तुरतेंह पायमवा जे कसि ले लेई
ओहि दम अगवाह् न क सई रे आगरखा
गोडवा मे कातत तेउरिया जे वाडे तयार
आजु भाई डिलियाह् ना सहियाह वाइ रे सूता
ऊहे फेरि ले लेह् ना एडवा जे बाडे पढाइ
आजु भाई ले लेसि ना तेगवाह् लेइ मे ओतन
जेकर वानह् न धजवा जे फह रे रात
उहवा से रेंगल ना बानिय रे बरइनी
एकदम रेंगलि ना चढिया या चलि रे जात
जउने घडी पोडेह् बारतियाह् रहि र गइली
बरइय हाटत ना बतियाह् देख रे वाइय
आजु भाई काहृह् में लोगवाह् बारि रे यत्तियार
काहृह् टीकलि बारतियाह् रे तोहाऽर
आजु कहँ केकरेह् ना जंघियाह् बल रे भयनऽ
केकरेह् भूजाह् बयल नाह् बठ रे साय
केकरेह् जामीय तरूनवा मेनि रे धातय
आजु कइ देलसि ना यगियाह् उदि रे पान
तब बोलस मारदवा बा बीर रे लोरीक
दरियाह् करई ना बेंडवा जे देख जवाबय
आजु मोर गउराह् ओतनवा जे हव रे गोतन
गउरा मे टूटीय गइलि वाह् बुनि रे यादय
आजु कइ दीहलीय चऽढइया जे मुरहुल के
अब टिकि गइलीय बरइया जे पुर रे पालज्य
आहि घरी जीदलि ना बरइनि कइये लडिकी
अउ फेरि बोलति ना छूटहि वाइ रे बोल
आजु मइया केकरेह् दिमकवा से टूटि रे गयलऽ

आजु मोरे कइलह् बगनियाह् उदि रे आय
ओहि घड़ी दुन्नोह ना ओरिया से बाति रे लऽड़नी
बातेह बातेह् भयलवा बा भंवरे दाल
जउने घरी तड़कीय ना तड़काह् होइये गयनऽय
दुन्नोंह चालइं पयंतरा जे लेल रे कार
जउने घरी दुन्नोंह पयंतरा जे चले रे लगनऽ
जइसे भाई भादवं भंइसवाह् मक रे नाय
ओहि घड़ी देखह् ना पयंतड़ पर रे जूट नऽ
कले कले अयनहं् आवरिया पर नगि रे चाऽय
ओहि दिन बोलल बरइयाह् लेइये लऽरमें
अउ फेरि कऽहत ना बतिया बा समु रे झाइ
आजु भइया मरबेह् ना मरबेह् भलु रे सूववा
जब फेरि तोरै आवरिया में आइ रे जाइ
ओहि घरी बोलल मारदवा बा वीर रे लोरिका
दरियाहं् करइं ना बेड़वांह् रे जवाव
देखु भाई आगेह् आवरिया जे ना चऽलवई
न त घाव पीछेह् ना रखबइ रे गोआय
हमरेह् गुरू के किरियवा जे बाय अऽथानऽय
आगेह् मारइ के हथवाह् रे तिलाक
……देत बा समुझाई
बरइनि बोललि ना दरियां जबाबऽय
आपन खींचइ ना तेगवाह् ओहि रे दम्मऽय
मारति बाड़इ चिकसवाह् अहीरे कऽय
ओही घड़ी खेलल अहीरवा बीर रे लोरिक
आ फेरि बांवइ तिरिछयाह् घूमि रे गयल
तेगवाह् गीरल धरतियाह् भहरे राई
ओहि घरी दूसराह् आवरियाह् बाय रे खीचत
अहीरे के मारत फेंटेसियाह् रे सम्हारी
ओही घरी खेलल अहीरवाह् बीर रे लोरिका
चम्फाह् डांकल सारगवाह् चलि रे जानऽ
तेगवाह् गिरल धरतियांह् भहरे रे राई
जवने घरी तीसराह् ना घउवाह् छूटि रे गयनऽ
एक दम खालिय आवरिया जे रहि रे जाऽय
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे लोरिके कऽय
अब भाई देलेह् ओसरिया बा लेल रे कार

आजु कहँ सुनबेह, ना सुनबाह, तेइयँ बरइनि
एठियन तुँ मनबेह, काहनवाह रे हमार
देख तोर पककाह, न कहवा जे [illegible]
अब कच-सोदयाह, ना [illegible]
जवने घरी मुरुकि [illegible] (१[illegible])
श्री फेनि [illegible]
जेके भाई चारिब [illegible]
जेकर ताइक [illegible]
आजु कहँ नोचवाह, ना [illegible]
पोरसन गइलीय [illegible]
आहि घरी घूमि गइनि [illegible]
अब खाड गीरति गरदनेह, [illegible]
ओहि घरी धनि धनि ना [illegible]
जेहइ आदिय ना दिनवा क [illegible]
ओहि घडी फारि देइ ना [illegible] [illegible]
अउ फेरि चढि गइल नाउ[illegible]
लारिकाह, दखई वा तनवा [illegible]
बोलल बानह, ना हायवाह, [illegible]
आजु कहँ धनि धनि ना [illegible]
आजु रचि देलह, धारमवाह, [illegible]
जउ भइया तिवई ना [illegible]
आज हूबि जातइ बनवा के [illegible]
तउनेह ना दिनवा राम [illegible]
केह फरि आहुय समइया [illegible]
जवन घरी फाटलि ना [illegible] [illegible]
सीनाह, लवकल बदरियाह, [illegible]
आहि दिन परि गइल नाउ[illegible]
लारिकाह, [illegible] मारदवाह, पुनि [illegible]
आजु कहँ [illegible] हा ना दइवा मार [illegible]
का बरम्हा निम्रहह, ना मझवा [illegible]
ईंप भाई रखनह, घरमवा रे हमारव
दुल्लाह, लागइ साकतियाह, हा [illegible]
अब नाहि [illegible] जाननिया जे लइये [illegible]
आज हूबि जातह न बखवा के मारे [illegible]
आहि दिन तवनेंह ना दिनवाह, राम [illegible]

वरइनि फेंकति ना तेगवा जे अपने वाय
आजु कहँ सुनवह् आहीरवा जे वीर रे लोरीक
अव नाहीं छोड़वइ ना पिंडवा जे तोहार परान
आजु कहँ ईहई पारनवा ले हमरे रहनऽ
जे भाई लोहहं में नीचवा कइ रे देइ
आजु भाई उहयि पुरुसवा जे हमरे नारी
इहइ हम रखलेनि परनवा जे भग रे वान
अव नाहि छोड़व ना पिंडवा जे देख हो लोरीक
हमहूँय चलव मुरावलि दइयु रे पाल
..........मारदवा बीर रे लोरिका
अव धन मुनवह् वरईनीय मोर रे वातय
अव नाहि छोड़वि ना धनवांह रे तोहाऽर
जव सेनि नाहिय सुरहलि से लवट वऽय
तव सुनि नाहिय ना सथवाह् लेव लगाई
आजु भाई सीखयहि ना लोगवा सुरहुलि कय
उहे भाई संगेह् लीयवले वायं रे वहिन
पदवा में लेइहंइ दीलगिया रे हमारऽय
वड़ि हंसी होंइहंय वरइयापुर रे पाली
लोरिका वहिन ना संगवा में वाड़े लीयवले
संगवाह ले लेह वारतिया में आयल रे वाय
ओहि दिन निन्नाह् नां नीचवाह् मुंड़ी रे होइहंय
आजु फेर अजगुति ना उठिहंइ जे धन हमाऽर
ओहि दिन वोलल ना धनवांह् वा वऽरईनि
एहि जुनि छोड़वि ना जानवाह् हो ताहारय
हमहूँय साथेह् सुरावलि चलि रे चऽलव
भसूरे के करव विहवाह् लेल रे कारी
ओहि दिन वोलल मारदवा बीर रे लोरिक
अव धन मनवेह् काहनवां रे हमारय
अव तूंय वइठल वरइयापुर रे रहऽ
आ तूं करह् ना पानवा कइ दूकानी
जवने दिन लऽवटि सुरावलि से हम रे अइवय
भउजी के लेवइ ना डंड़िया जे फन रे वाय
जवने घरी नागरि सुरावलि लवटि रे अइवय
तोहरउ लेवइ ना डंड़ियाह् फन रे वाय
संगे चलह देवरनिया रे जेठनिया

हमरेह् नगर गउरवाह् वे गुज रे रात
एतनेह ना बतियाह् रे कहनवा
आ फेरि बइठलि बारइना मन रे मारी
ओहि दिन सउजलि बारतिया अहीरे क द
आ छोडि देतीय बरइया पुर रे गावय
अब धइ ले लेह ऊउरवा कइ रे राहय
आजु कहँ रातिय रेंगउ आ दिन रे दवरउ
बीच लेनि बउदत ना कुरवा रे मोजामय
आजु भाई बजदति लाकुडिया बाइ रे मघमनि
अब फेरि चउलि सुरवली जे जाल रे पालि
जवने घडी धोडह् जमीनिया जे रहि रे गइलीं
कउवा (गउवा ?) पर चाइलि मुरवली के देव रे बाय
ओहि दिन पूजलि ना नीदिया के जेइसे मामनी
छ महीना चढति ना नीदिया ज ओहि रे दाम
ओहि घडी आइ गइ नीदरिया जे मीमतो के
उहे भाई मुतत ना रहनह् रे बनाइ
ओहि घडी बाजनि लकुडिया बा जेइ ये मुदइलि
उत मधि बाजलि लाकडिया बा अन रे हावि
ओहि दिन रोवइ ना वापवाह् रे बमरिया
उहे भाई पटक्त तकपवा पर बाने रे माय
आजु कहँ हो हो ना दइवा जे मोर नारायन
का वरम्हा लीखलाह् ना मसवाह् रे निलार
याजु मार बेटवाह् ना जनमत रे मुरइया
एन्हे लागल कुम्हइ करनवा के देख रे नीद
का जानी कहवाह् के मूबवा जे बइलव घरइया
लकडीय बाजति सुरवली मनि रे बाय
आजु भाई लूटलेनि ना रजियाह् रे सुरावलि
कुछ मोरें बूतेह् काहलवा बा नाहि रे जात

बारात का सुरवली मे शम्भू सागर पर डेरा डालना—
खाद्य सामग्री की कमी होने पर अजयी का नगर मे जाना

ओहि दिन रेंगलि बारतियाह् रे रेंगावल
बढि गइनीं सेम्हुव सागरवा के देख रे मोति
ओहि ठिन जमि गईल वारतिया जे अहीरे कउ

भींटवा पर गीरत जाजिमवाह् लेइ रे वाय
जउने घरी गिरि गयल जाजिमवा जे अंहीरे कऽय
होइ गऽयल दऽलइ वादरवा जे मुंह रे ठाढ़
आजु कहँ चारिय ना कोनवा जे चढ़ि रे गेसिया
वीचवा में गऽइलि झम्पुआ जे लटि रे काय
ओहि दिन वइठेंइ ना जे लोगवा गऽउरा कऽय
आजु भाई वइठत मेंड़रिया जे वान रे मारि
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
के फेरि नगरि सुरवली के देख रे हाल
जउने घरी मारिय कऽचहरीय वइठि रे गयनऽ
औ फेरि जलसाह् वऽरतिया में होत रे वाइ
ओहि घरी कसविन ना घुरनिय रे पतुरिया
भड़वाह तोरत चिट्ठुकिया पर वान रे तान
घेरि कनि वइठंइ ना लोगवा जे गउरा कऽय
देख भाई कूचत मगहिया जे वाड़ रे पान
इहे ना तवनेह् ना दिनवां राम समइयां
के फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हाऽलय
जऽलसाह् होतिय ना भींटवाह् पर रे वानऽय
मुदई सूतल ना किलवांह वा हमा र य
ओन्हे लागल छवइ महीनवाह् कइ ये नींदऽय
अठयें से तीनिय महीनवां जे वीतल हो जालाऽ
ओहि गाँव सेम्हुव सागरवा कनि रे भींटऽय
तव फेरि देखह् ना हलियाह् लोरीके कऽय
लोरिकाह् वोलत लारमवा क वाइ रे वोल य
आजु कहँ गुरुवाह् ना सुनिलऽ मोर अजइया
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽरय
कहल जे चलतइ विबहवा कर रे वइ वऽय
सतिया के देवइ ना डंड़िया फन रे वाई
तवन गुरू तीनिय महीनवा बीति रे गयऽल
ईहां नाहीं रूअवां ना धुववां रे देखात य
कहियाह् जगिहइं ना मुदई खेतवा पऽर
कहियाह् जइहंइ झागड़वा फरि रे याई
हम गुरू कम्मइ खऽरचवा लेइ रे अइलीं
आजु भाई गऽयल खारचवा गोइ रे आई
इ तोहार नऽगर सुरावल जनम रे भूंई

सगी होइहइ ना गुरुवाह् रे लोहार
आजु तूय जातह् ना पलियाह् रे सुरावल
गुरुवा तू खर्चा जा लेबह् अवरे आय
पल्ले क गऽयल खरचवा बा गोइं डे डाइ
का खइहाइ ना सवाह् लखवा जे बरि रे याति
ओही घरी रेगल ना गुरुवाह् बा अजइया
उतरल हलल सुरवलीय जाइ रे पालऽय
जउने घरी हलि गयल ना गलियाह् सुरहुलि के
सोक्षइ सहुवाह् मऽहीचन के दर रे बारऽय
उहे भाई बइठल दूकनिया पर बान महीचऽन
गुरुवा के देखलेसि सऽकलियाह् ओहि रे दम्मय
उहे भाई कालिय कुरुसियाह् लेइ दव र नऽय
गुरुवा के देलनि बइठकाह् लेई रे धई
ओहि घरी नीहुरि ना मयवाह् बा नेवरले
गुरूवाह् भरिमुख देतई वा असिरे बादय
ओहि घडी बोलल ना सहुवा बा महीचन
एठियन मलबह् कऽहनवा रे हमाऽरय
आजु कालि काहह् ओतनवा बा गुरू हो गोलन
आजु कालि काहंह् टूटति बा बुनि रे या दऽय
तब फेरि बोलल ना गुरुवा बाइ अजइया
चेलवाह् तू मनबह् काहनवाह रे हमाऽरय
जउने दिन ना गरि जे सुरहुल छोडि क भगली
चलि गइलीं नागरि गऽउरवा गुजरे रे रातय
हम जाके मूडल ना चेलवा गोपी गुवालाय
जकर भाई दूल्लर लारिकवा बाइ रे नावय
कहली जे बनवाह् मे रजवा बाइ भीमलिया
करया मे बानह् लोरिकवा सर रे दाऽर
आजु भाई देवीय दुरूगवा बा पूजरे मानय
अहीराह् चलह् दुरूगवा केनि रे ब ले
इह भाई चलतेइ मुदइया मारि रे दइहऽय
सतिया के कऽरब बिबहवा लेल रे कारी
आजु गुरू कम्मय खरचवा चेला ले अइनऽ
वोहार खर्चा गऽयल पयडवा गोइ रे डाई
आजु भइया देइ दह् खारचवा हमहू के
आजु मोरे खइहइ सकलवा बरि रे यात म

जउने दिन नऽगर गऽउरवां चेला रे लवटी
अब हम अइहंइ ना घरवां रे दुआर य
उहवां से जोरि कह् रोकड़वा जे तोहरे देइहंऽय
गाड़ी छकड़ेह् रूपियवा जे भेज रे वाय
ओहि बोलल ना सहुआ बाइ महीचऽन
गुरू हम जइसेह् हूंकरिया नाहिं रे भरवऽय
नाहिं मोर वऽल्लीय ना राजवा बाइ भीमलिया
सुनीहइं जे खरचाह् मुदइया के देइ रे दीह्लेन
बाल बचा देइहंइ कोल्हुइया में पेर रे बाई
हम अइसे नाहींय हूंकरिया गुरू रे भरऽब
जब हम देखब ना रूपवा जे लोरीके कय
ओमे हम थोड़ाह् परीय नाहं इत रे बार
तब हम देवइ खारचवा जे लोरिके के
एहि भाई सेम्मुब सागरवा के देख रे तीर
सूनह् ना ह्लिया ओठियन कऽय
गुरुवाह् बोलल लारमियाह् कइ रे बोलऽय
अब चेला मनवह् काह्नवाह् रे हमाऽरय
हमरे त संघेह् ना एकदम चलि रे चलबय
देखिलह् चेलवाह् ना बइठल बान हमाऽरय
ओहि दिन अगवांह रेंगल बाह् गुरु अजइया
दुइ चारि सहुआह् ना संगवाह् रेंग ए दीह्लेनि
अब जान सेम्हूय सागरवाह् कइ रे भीतर
जवन घरी चाढ़इं ना भींटवाह् लेइ रे ओठियऽन
अब फेरि सहुवा महीचना वा चढ़ि रे जातय
जेवन घड़ी देखई दंगलिया जे गउरा कऽय
थर थर कंपनह् ना जधियाह् रे सरीरय
उहवां पर एकक ना मइया कइ बांड़े रे दुल्लर
एक एक बइठल सुघरवाह् सर रे दार य
कूचत बानह् मऽगहियाह् ढोली रे पान य
मह्ीचन के हिम्मति त नाहिनीय चढ़ि के ओठियऽन
फरकेंह कांपत जाजिमवांह् केनि रे बानऽय
ओहि दिन रेंगल ना गुरुवा रे अजइया
अब चलि गयल लोरिकवा केनि रे पासय
आजु कहें सुनबेह् ना चेलवाह् मोर लोरिकवा
आजु नव लाखह ना सहुवा बाइ ठढ़य

ओनकर चढइ के हीमतिया नाँहि रे बाने
अब तुह लेवहू पाजरवा बइ रे ठाई
ओहि घडी उठल मारदवा वा बीर रे लोरिका
अब फेरि गयल सऽहुववाहू केनि रे पास
ओनकर धइकहू ना हथवा जे रे ली-अवले
एकदम लेइ गयल पजरवा जे बऽइ रे ठाइ

महीचन साहु के आदेश पर महाजनो का शम्भू सागर पर बाजार लगा देना तथा बारात को उधार खाद्य सामग्री देना

बोलल ना चेलवा जे बाइ लोरिकवा
सहुवा तू मनवहू काहनवाहू रे हमाऽर
आजु भाई हऽमइ खरचवा जे घटि रे गऽयल (१३००)
गुरू हम्मे देलेनि ससल्लीय कइ रे बात
बहलेनि जे चलतई बिबहवा जे कर रे वइ वऽय
सतिया के देबइ ना डोलवा हम फन रे बाइ
तवन हम तीनिय महीनवा जे बीति रे गयनऽ
कम्मइ पल्ले मे खारचवा जे रहऽल हमार
आजु खात बइठेंह बारतिया जे सवा रे लाखइ
खरचाहू गयल ना पालवा के गोइ रे आइ
सहुवा तू देइदहू खारचवा जे हमहू के
आजु इहा खइहइ साकलवा जे बरि रे याति
जउने दिन चलब ना हमहू ज सुरहूलि से (१३१०)
चल चलबि नागर गाउरवा जे गुज रे रात
अब तोहार जोरि कहू रोकडवाहू जे हम रे भेंजब
गडिया से देबइ खारचवा जे पहुँ रे चाय
ओहि घडी बोलल ना सहुवा जे बाइ महीचना
दरियाहू करई ना बेडवाहू रे जाबाव
आजु भइया कवन रूपियवा क राइ रे कामऽय
कवन ना दूसर ना पइसा के नाँहि र काम
आजु हम नागर सुरावलि कइ बजरिया
घेरि कनि देबई ना सगरे पर वइ रे ठाइ
आजु जेकरे ना मनवा मे जवन होइ हऽइ (१३२०)
तवन ले ले करहू भोजनवा जे लेल रे कार
आजु हमार चिट्ठाहू पूरजवा ज जोरि ए काने
ओ पर देहहू पइसवा ज रे उतारि

जउन दिन नगर गउरवा जे चलि रे जाया
जोरि कनि भेजि देह् खारचवाह् रे हमार
एतनाह् कहइ ना सहुवा रे महीचना
एकदम हल्लल गुरवली में चलि रे जाय
ओहि घरी रज्हल ना गलिया क मुख रे बीरऽय
ओकरे मायेह् बज्जावल जेहि रे बाय
ओहि घरी जातऽ ना डुगिया वा पीट रे वय ले
आजु भाई गुनवाह् ना सहुवाह् रे हमार
जेतनाह् वाटऽ जे बाजरिया जे गुरहलि कऽय
चढ़ि चल सागर ना भांटवांह् ले ल रे कार
सवा लाख टीकल बज्रतिया वा अहीरे कऽय
खर्चा देवह् ना ओठियन रे जुटाय
आजु भाई एहियं में नफवा जे एकदम अइहंऽय
बइठेहि बालउ ना बचवा जे सब रे खांय
ओहि घड़ी बाजल ना डुगियाह् लेइ बजारऽय
अब सब देलेसि ना डुगियाह् पिट रे बाई
उहे भाई उजरलि बाजरियाह् मुरहलि कऽय
जाइ केनि छेकलरि सागरवाह् कइ रे भींटऽय
ओहि दिन रोवई ना राजवाह् रे बमरिया
पटकत बानह् धरतियाह् लेइ रे माथऽय
आजु मोरि ऊजरि ना पलिया गइलि सुरहूल.
मुरहूल में फेंकरत ना बांड़वाह् रे सियारय
ओहि दिन रोवइ ना बापवाह् रे बमरिया
उहे भाई पटकइ तखतवांह् रे कपा रऽय
आजु मोरे बेटवाह् मुदइयाह् रे जनमऽल
लगनींय कुम्भइ कारनवा कइ रे नींदऽय
आजु भइया काहंहं के सूववा चढ़ि रे टीकनऽ
पलियाह् देलेन मुरवलीय रे उजारी
जवन भाई मारह् ? ना रहनऽ जे सुरुहुलि कऽय
उहे जाके छेंक लेसि सागरवाह् केनि रे बीच
गउंवा में फेंकरइ ना दिनहींय रे सियारऽय
आजु मोरे बूतेह् काहलवाह वा नहि रे जात
·······जलसवा वा भींटवा पऽर
छेंक लेहि बानइ नह् सुरुहुलि कइ रे लोगयऽ
जेतनाह् रहनीय ना जतियाह् रे जनानी

जाइ जाइ छेकलेनि सागरवाह्, कइ र भीटाय
जनकर भरलि गगरियाह्, धरै रऽहऽय
पनियाह् धैनीय धऽरतियाह् रे गिराई
उहे भाई पानी के ओढरवाह्, चलि रे जानी
जाइ कनि छेक लनि सागरवाह् कह रे भीटय
ओहि दिन सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
घूमि घूमि देखइ गउरवा क सर रे दारऽय
तब फेरि सुनह् ना हलियाह् लोरिके कय
गुरूवाह् ते मनवे काहनवाह् रे हमाऽरऽय
कवनेह् ओढरे से झगड़वाह् लगि रे जातय
पट देनि जागत मुदइयाह् रे हमारऽय
दुइ हाथ चऽलति ना खेतवा पर तर रे वारऽय
जेके भाई रामई ना देतह् तीन रे लेतऽय
एतना जब कहत ना चेलवाह् लेइ रे बानऽय
तब फेरि सुनह् ना हलियाह् र हवालऽय
लोरिकाह् बोलल ना बालियाह् रे कुबोलयऽ
आजु कहँ सुनबह् गऽउरवा के सब रे लोगऽय
आजु कहँ एक जननियाह् केनि रे ऊपर
दू दू तीन तीन मारदवाह् होइ जा पारऽय
धुजरीय हल्लाह् ना कऽरती ले भगिहऽय
जाइ केनि किलवाह् लऽगइहँ देख रे आगऽय
उहवा से चऽढीय ना सूबवाह् लेइ रे आजऽय
आजु कनि बइठिय ना किल्लवाह् र अगोरी
एतनाह् कहत ना बतियाह् लेइ ये ओठियन
अउ फेरि बइठल गऽउरवा के बान रे लोग
ओही घरी हुकुमिया अहीरे के हो लागल
आ फेर उठनऽ जेवनवा खर भराई
अब कहँ एक एक जाननिया के ऊपऽर
दू दू तीन तीन मरदवा होइ रे पारऽय
आहि दिन रोवइ जऽननिया सुरवलि कऽय
आजु कहँ हो हो ना दइयाह् मोर नारायन
आजु कहँ काहह् कय दुसमन बाइ रे टीवस
ईज्जति कइ लेसि ना एठियन रे हका बऽय
रोवत चलनीह जननियाह् लेइ रे आगे
धइलेह् जानीय ना किलवाह् कइ रे राहऽय

ओहि दिन वोलइं जननियांह् रे पुरानऽय
जेतनाह् वुढ़ियाह् ना रहनीय रे जेवानऽय
उहे भाई वोलइ ना वतियाह् अर रे थाई
आजु कहैं सुनवह् ना राणीय वेट रे खाइया
एठियन मनवह् काहनवा रे हमारऽय
आजु कहैं जालिउ जवइंया के जगावऽय
आपन ठोकह् कारमवा तक रे दीर य
इ फल कव्वउं जनमवां जे नाहीं रे खइलऽ
तवन फल देहलेनि परदेसिया रे चिखाई
वलकुन लऽवटि चऽलह् ना भींटवा पर
आजु कहैं एकक मऽरदवान केनि रे पीछ्यां
दू दू तीन नीन ना संगवा जे चलऽ नीकलि
ओहि घरी देखनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
उहे भाई साजलि ना गोलियाह् रें जननी कऽय
जाइ केनि छेक लनि सागरवा कइ रे भींटऽय
सगरे पर कसविन कुरति वायं देखऽ पतुरिया
भड़ंवाह् तोरत चीटुकिया पर वानय रे तानऽय
अउ फेरि देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
जलसाह होतइ जाजिमवाह् पर रे वानय
अव नाहि जागल मुदइयाह् रे हमारऽय
दस पनरह रोजइ क दिनवा जे देख रे वीतनऽय
तव फेरि वारह ना वाजवाह् दिन रे भयनऽय
जेतनाह् रहनह् गड़ेरिया जे सुरहुलि कऽय
छेरि भेड़ि ले लेह सागरवा के अन रे भींटय
तव फेरि वोलल मारदवा वा वीर रे लोरिका
आजु भाई सुनवह् गऽउरवा के मोर रे लोगऽय
आजु कहैं उठि जाह् जेवनवा जे एहि रे दम्मय
अव फेरि भींटवाह् जावह् ना छितरे राई
जेतनाह् खासिय ना भेंड़वाह् जे गोलिया में होइ हंऽय
मारि कनि देइ दह वनवनह् भंवरे ना रऽय
जेतनाह् वंचहि ना खेड़ियाह् लेइ रे भेड़िया
मारि कनि देवह् धरतियांह् रे गिराई
इह सारे रोवत ना जइहंइ कीलवा पर
अव फेरि करिहंइ गोहारीयाह् ना रे गोहारी
तव फेरि जगिहंइ मूंदइया जे खेतवा पर

दुइ हाथ चलीय सागरवांह् तर रे बारऽय
जेके भाई रामइ ना देइ हंइ तिन रे पइहंऽइ
छन मेनि जइहंइ झऽगड़वा सब ओराइ
······रोवइं ना सूबवाह् रे बामरिया
पटकत बानह् तऽखतवाह् रे कपारय

सतिया के पिता बमरी का दुख—
पुत्र भीमली छ महीने की घोर निंद्रा में

आजु भाई बेटवाह् ना जनमल मोर मूदइया
सूतनह कुम्भइ करनवाह् कइ रे नीदऽय
बीचहिय ऊजरि ना रजियाह् गईल सुरहून
उय भायऽ गयल सागरवाह् केनि रे भीटऽय
दिन हइ फेंकरइ ना बड़वाह् रे सियारऽय
एतनाह् कहि कहि ना राजवाह् रे बमरिया
रोदन करत तऽखतवाह् रे बईठी
ओहि घरी मतरीय ना मतवा जे ठटरे लगनऽय
चुगुलाह् देलेनि आरयवाह् रे बताई
आजु कहँ राजाह् ना सुनिलह् महरे राजा
एठियन मनवाह् काहनवाह् रे हमाऽरय
आजु भाई अइसेह् बेटवना नाहिं रे जगिहंऽय
जब सेह् दिनइ ना पूजिहइं रे करारऽय
सूबवा तु सातउ हथिनिया नाधि दऽदेंवरी
लेइकनि पेरउ महाऊलि घूम रे राई
जउने दिन ठाढ़िय ना थतिया देहिया कऽय
थिथकलि हल्लुक सरीरवा रे बुझाई
कि झक देनि कबरीय ना निनिया ओठियन भऽय
क उठि जइहंइ भीमलिया [illegible] सर रे दारऽय
एतनाह् कहत ना बानह रें मंतिरी
सूबा के गऽयल ना मनवाह् रे वईठि
ओहि घरी सातउ हथिनियाह् संग रे वउलेन
उहे भाई नधलेह् दंवरियाह् घूम रे राई
हथियाह् पेरइं बादनिया ले भीमलीय कऽय
ओहि भाई बोचेह् जाननिया मय रे दानऽय
जउने घरी थतियाह् न बानय जे रे हलुक
धीरे धीरे जातइ बा दिनवाह् निय रे आई

आगेह् लोखल ना मारेह् कै बान हराम
एतना जे सूनत ना सूववाह् बाई भोमलिया
उहे लेइ मारत ना हथवा बा लेल रे कार
जवने घरी खीचलेसि ना सगियाह् रे हजरिया
अहीरे के मारत वानइ नह सिर रे हान
ओहि घडी धनि धनि या मइयाह् बाइ भगउती
अब फेरि देलेसि अचरवा जे मोरि रे माई
अहीराह कावन तीरथवा जे हटि रे गयनऽ
कह सग गीरलि धरतिया मे भह रे राइ
तब तक समनेह लोरिकवा जे ठाढ रे भयनऽ्य
दूसर खीचत आवरिया जे देख रे बाइ
ओहि घडी दूसरीथ अवरिया जे वाइ समाहत
लोरिक के मारत वा बीचहें फरि रे हाव
लोरिकाह् खेलल मारदवा वा गउरा कऽ्य
देख भाई बावइ तिरिछ्वा जे होइ रे जाऽ्य
फेरि संगी ऊहइ गीरल याह् मह रे राइ कऽ्य
दू दू ठे गयल आवरियाह् रे नीकालि
जवने घरी तीसरी आवरिया जे मूवा चलउलेन
अहीरा थाम्हत ओडनिया के देख रे वाय

भीमली की मृत्यु

ओही घरी तीनि अवरिया जे जोइ गऽइनी
लोरिका देलेह् ओसरिया बा निरि रे याय
आजु कहँ ओसरि ना ओसरि लेले रे करलेसि
देख भाई कुइमाह् मरह्नीथ पनि ने हारि
आज तोहार पक्वाह् घठवाह् मूवा रे थामल
अब कचलाइयाह् ना थामवह् रे हमार
जवने घरी मूरुकि मीयनवा जे फेंकि रे देह्लेन
अब दह तगोय तानले वाह् तर रे वार
जोरि के भाई चारोय अगूरवा जे भइनी रे बहरे
जेकर फेरि चऽल ताडकवा जे देख रे वाय
आजु कहँ नोचवाह् ना मरि देहलेसि दावन्हरा
परासनि गइली लावरिया जे गुमि रे याई
ओहि घरी घूमि गईल जे मातविया भीमली कऽ्य
खड़ियाह् गइनोय गऽरदेनह् रे त्रिसारि

······रोकइं सतियाह् रे मदागिनि
पटकति वानीय चाननियाह् पर रे माथय
आजु कहँ हो हो ना दरवाह् मोर नारायन
क्या बरम्हा लीखलह् ना मंझवाह् रे लीलारऽय
अपनेह् वापह् ना भइयाह्······
आजु भाई भइयाह् वहिनिया के रन रे जूझल
कहवांह क टिकनह् दूसऽमन सगरे पऽर
सागर देतइ ना रजियाह् रे उजारी
आजु फेरि टूटि गइल दाहिनियांह् मोरि रे वांहऽय
आजु कहँ अक्सर जीनिगिया जे वचि रे गइनी
भइया हमार जूझनह् सागरवा के देख रे भीर
ओहि घरी घइलेह् डऽहरिया जे ओठियन से

सतिया का सत से छत्तीस नाग उत्पन्न करना नागों का बारात को डंसना

अब सती सुमिरति ना सतवा जे सुनि रे बाइ
आजु कहँ सतवाह् सुमिरिले वा लेइ रे सतिया
जोगी के छोड़लेह् झांपोलिया जे लेइ रे बाइ
जउने घरी मारइ ना वीरवा जे सतवा कय
छत्तीस नागइ ना उठनह् जकरे लाई
आजु कहँ सुनवह् ना नगवा जे मोर छऽतीसिया
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमार
आजु भाई छोड़ि दह् ना तूंहउ लेइ रे झंपिया
चढ़ि जाह् तोहउं सागरवा जे छिति रे आइ
जाइ केनि घूमिकह् वऽरतिया जे काटि रे घालतऽ
ओहि जा सेम्भुव सागरवाह् केनि रे भींट
जइसे भइयाह् ना हमरी जे कटि रे गयनऽय
ओहि सइ मरि जाउ गउरवा के सब रे लोग
······अहीराह् बीर रे लोरिका
दरियांह् कऽरइ ना वेड़वाह् हो जवावऽय
आजु कहँ धनि धनि ना मइयाह् मोरि दुरूगा
जिन्हइं आदीय ना दिनवाह् पूज रे मानऽय
देवियाह् तोहरेय ना वलवां वउ रे सइयां
करलीह् दारुन ना देसवाह् रे खंगारऽय
आजु भाई देविया ते पाठइना हमहूँ के देख देखइवऽ

सवा लाख गायब बारतियाह् वाइ हमारऽय
ओहि दिन फरकति दुरूगवा जे माई रे भइली
अब धइ लेहलेनि छोहरिया के माई रे भेस
ओहि दिन रतनीय घघरिया जे देबी पहीरि कऽय
छमकति बानीय दहीनवा जे देख रे बाह्
अभी कह सुनबेह् बरूअवा त फूल रे झल्वा
एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
सवा लाख देहीय जावरियाह् रे बटोरऽ
सब कनि मट्टिय ना कऽरत तहि रे कास
देख भाई कुकुराह् काउववाह् दिन रे हाकेय
अब राति बडवाह् ना देवह् रे सियार
हमहूँ जास बाइ ना चाननीय सतिया के
सतिया के देबइ ना मतवाह् घूम रे राय
आजु भइया आधीय ना रतियाह् नीच रे लइया
देवियाह् उडलि भगउतीय वाइ रे जाई
जाइ कनि घूमि घूमि केवरवा बा ढूकि रे देती
अब फेरि देलइ केवरियाह् मटरें गाई
सतियाह् बइठलि कुरुसीया बा भीतरीय मे
बोलति बानीय लारगवाह् फइ रे बोलय
के भाई हवइ ना ठगवाह् लेइ रे चारऽय
के तू हऽवह् सऽहरिया के गुडा रे बाजत
आजु भाई आधीय ना रतियाह् नीच रे लइया
ढोकत बाबह् केवरवाह् र हमारऽय
ओहि दिन बोलल भगउतीय माई दुरूगा
अब जेवन हुई लोरिकवा के पूज रे मान
आजु कहँ सुनबेह् ना सतियाह् तोइ मदागिनि
एठियन ते मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
देखु भाई चोरइ ना हइह् बदरे मासऽय
नात हम हुई साहरिया के गुडा रे बाय
हम त भाई हुई लोरिकवा के माई दुरूगा
जे हुई आदिय ना दिनवा के पूज रे मान
आजु सती तोहरेह् कारनवाह् चढि रे अइलो
सवा लाख बत्तिया बऽरतिया जे भइली रे बाइ
बोललि ना सतियाह् लारमे से
अब तूय सुनवह् भगउतीय हो हमारि

देख भाई साफइ मातरियाह्‌ कइ ये दुइया
अब भाई बहिन ना रहलींय दूनों रे जोड़ऽ
अरे भाई भइयाह्‌ ना भीमली जे जुझि रे गयनऽ
अक्सर होह गइल ना पीठियाह्‌ रे उघारऽ
हम तूंहि नाहिय ना गोसवाह्‌ रे सम्हइनऽ
सच कहि दीहलींय झपोलियाह्‌ बग रे राई
हूकुमि देहलीय ना नागवनि केनि लगाई
ओहि घरी छत्तीसउ ना नगवा जे देवी हो गयनऽ
अउ फेरि घूमनह्‌ सागरवा के देख रे बीर
आजु कहैं सावाह्‌ ना लाखवाह्‌ वरि रे यतिया
कब केनि कइलेनि ना ओहीय खयरे कार
आजु कहें अक्सर ना बचल बीर रे लोरिका
जेकरेह्‌ बदनेह्‌ दुरूगवा जे बाइ रे माई
अब नाग फऽनइ ना कऽरइ लोरिका के ओहिया
अगियाह्‌ तड़पलि ना फनवाह्‌ जे घींचि रे लेइ
······बातहिना बतवाह्‌ माइ भोरवले
सतियाह्‌ देलेसि ना सतवाह्‌ रे गिराई
ओहि घड़ी दुरूगाह्‌ साकतियाह्‌ वा आपन बढ़वले
अब चढ़ि गइलींय ना सतियाह्‌ रे कपारऽ
सतिया के बसई ना मइयाह्‌ कइ ये लीहलेन
बोलति बानीय दुरूगवाह्‌ पूज रे मानऽ

दुर्गा और सतिया की बातचीत—अमर सिंदूर के बिना मेरा विवाह असंभव, सतिया का कथन

आजु भाई सतियाह्‌ ना मुनि ले तोइ मदागीनि
एठियन मनवेह काहवा रे हमारऽ
देखु भाई तोरेह्‌ कारनवा लेइये एठियन
सवा लाख मरि गइल बारतिया रे हमाऽरऽ
जौ भाइ एतनीय बारतिया ना जियाई बऽ
तोहरे पर वऽहुत लीखिय ना अपरे राधऽ
इय हाथे जुगइ ना जुगवा नाहि रे छूटिहंऽ
दिनवाह्‌ दिन के बांधलवा होय रे गयल
ओहि घड़ी सूनह्‌ ना हलिया सतिया कऽ
सतियाह्‌ बोललि लारमवा कइ रे बोलऽ
इ बताव नागइ बटोरिका जे कइ कऽरवय

कइसे कइ करबह्, ना सदिया जे मोर विवाह
आजु कहैं जवन सेन्हुरवा जे बाइ रे अऽम्मर
जवन भाई दीहल बारम्हवा के हमरे बाय
ऊ सुनि सातइ समुन्दर ओहि रे पारय
बीचवांह् टापेह्, ना रखल मोरि रे बाय
जहवां पर अगियाह्, कोइलिया जे बानि रे मउसी
ओनकेह्, हायेह्, सेनुरवा जे मोर रे बाय
आजु भाई बत्तीस ना गउवां के बाड़्ये कुठिला
ओहि मेनि रखल सेनुरवा जे बाड़े हमार
के भाई एतनाह्, ना जुगुतिह्, रे बनइहंऽय
कइसे हम करबह्, दुरूगवा जे सादि विवाह्
ओहि दिन सूनह्, ना हलियाह्, ओठियन कऽय
परगटि भइनीम दुरूगवाह्, मोरि रे माई
एक कुसि बइठलि ना देवियाह्, माइ भगउती
एक कुसि बइठलि ना सतियाह्, देख रे बानी
दुरूगाह्, सतियाह्, कऽ मतवा जे दें घुमाई
बोलति बानीय लारमवांह्, कइये बोलय
आजु भाई सतियाह्, ना सुनि ले तोइं मदागीनि
आपन लेवेह्, ना सतवा रे बटोरी
जवन भाई बानह्, ना नगवा तोर रे छत्तीस
नगवन के देइ देह हुकुमिया एहि रे दम्मय
उ नाग जह्वा ना जंघवा जके होइ कटले
घइ घइ लेइहंइ ना बीखिया रे सुरूकी
आजु कहैं ऊठति बारातियां जे अहीरे कऽय
समतूल बइठइ सागरवा के देख रे भीट
सूनह न हलिया सतिया कऽय
जुग केनि लेह लेहि झपोलियाह्, बाइ उतारी
उहो भाई सुमिरति ना सतवाह्, अपने बाने
नगवाह्, उठनह्, ना झंपिया से फुफु रे कारी
ओहि घरी बोलति ना सतियाह्, बाइ मदागिनि
दरियांह्, करइ ना बेड़ वाह्, रे जावाबऽय
अब नाग सुनबह्, ना बतियाह्, रे हमारऽय
जाके भाई जेकेह्, ना जहां जहा कटले होब्या
ओहि ओहि धरिकह्, ना बिखिया ल सुरूकी

उठि केनि बइठल बारतिया बा अहीरे क़ऽय
आपन भाई देखउ साकलवा जे बरि रे याति
ओहि दिन सियनह् ना लागवा जे छिति राई
अउ फेरि सेम्हुव सागरवा के देख रे भींटि
घूमि घूमि धइ धइ ना बिखियाह् रे सुरुकलेन
उठि उठि बइठंइ गाउरवा के सब रे लोग
ओहि दिन हहरेंइ जेवनवा जे गउरा के
मइया अइसन जे मुदइया सगरे पर लगले
अब फेरि सूतल ना निनियाह् बिसरे भोरि
ओहि दिन बोललि ना मइयाह् बाइ दुरूगवा
जेन माई आदिय न दिनवा के पूज रे मान
आजु कहँ सुनवह बऽरूवा जे फूल रे झऽरूवा
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
तूंय भइया जवन सूतइया जे सूतल रहलऽ
ओइ सइ सूतत मुदइया जे भई तोहाऽर
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
दुरूगाह बोलति लोरिकवाह् सेनि रे बानी
आजु भाई सुनबेह् बरूववाह् फुल रे झरुवा
के भाई सेनुर आननवांह कइ रे जाई
के भाई सवालाख देखिहंइ बरि रे यातऽय
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
दुरूगाह् बोललि लारमवाह् कइ रे बोलऽय
अहीरूय एठे ना तोहार रे सम्भरि हंऽय
सवा लाख जे बइठलि बारतियाह् पहरूदारऽय
बरुकन चलि जाह् ना तूंहउं अमरे पऽर
सकतीय रही ना उपरांह् सेनि हमारऽय

हंस हंसिनी के साथ लोरिक का अमर सिंदूर लाने सात समुद्र पार जाना

ओहि दिन सुनह् अहीरवा कइ रे हालऽ
आजु भाई अंगवाह् ना पहीरत बाइ अंगरखा
गोड़वाह् भूलई बदनियाह् रे तवानऽ
के फेरि तरकुस ना गुजवा बा पनही कऽ
उहो बीर चापइ ना एड़वाह् रे चढ़ाई
के भाई साठिय ना गजवा के बाइ दुपट्टा

अहीराह् वान्हइ ना पेटियाह् रे सम्हारी
ओहि दिन छप्पन ना छुरिया पन कटारी
अहीरे के झुकलि बगल मे तर रे वारी
अब फेरि धरई पगरिया लऽरमे कऽय
जेमा भाई मेघइ डवरूवा घहरे रानऽय
उपरा से पहीनइ जिरहिया जे लोहवा कऽय
जेमे भाई नउ मन ना लोहवा जे देख अमाय
• • वाये अयनह् हथवा जे लेइ ओडनिया
दहीनेह् हाथेह् बीजुलिया बा तर रे वारि
जउनेह् घरी मरगस ना मरगस रेंगिये देहलेन
सोक्षइ रेगल उतरवा या तरि रे यार
एकदम रेगल ना ओठियन ते रेगावल
अब चली गयल समुन्दर केनि रे राह
अब कहँ छाह्इ न हुउवे कऽदमे कऽय
ओही तर छाहे अहीरवा जे बइठि रे जाय
ओहि घरी छाहेह् ना बइठल वीर रे लोरिका
उपराह् हसइ हसिनिया जे वानऽ वोयलऽय
गेंदवाह् बानह् ना खोथवा मे तह रे यारय
तब तक सूनह् ना हलियाह् जानिया कऽ
आजु भाई रऽहल ना नगवाह् पेडहरिया
दिन दिन चढई ना नगवाह् लेइ रे पेडऽय
जवने घरी आधेय कादमवा जे चलि रे गयनऽ
अहीरेह् के पऽरलि नाजरियाह् देख रे यानऽ
ओहि घरी ऊठइ मारदवा वा वीर रे लोरिका
हाथवा मे खीचत वानइ नह तर रे वारि
जवने घरी डाटीय चाम्फवा जे मारि रे दीहलेनि
नगवाह् खोलह् ना होइ यह् गिरि रे जाइ
तब तक सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
आजु भाई हसइह हसिनिया ज दिन भर चरले
सझिया जे खातवाह् ना बचवनि किहे रे जानऽ
जवने घरी भरले मेडरिया सऽरगे मे
जाइ केनि चुवनह् कादमवाह् केनि रे पेडऽ
जहवा पर बानह् ना गेंदवाह् हसे कऽ
ओहि भाई खोयाह् वऽईठल दूनो बानऽ
टोटवाह् मे चाराह् न लेहले वा हस रे हसिन

आजु भाई करई ना मुंहवाह् ओर रे टोंटऽ
गेंदवाह् फेरलेह् ना मुंहवा जे वान रे जातऽ
ओहि दिन वोलइ ना ओठियन लेइ रे हंसऽ
वचवाह् मनवह् काहनवा रे हमाऽरय
आजु हमके समुंदर ना रेतवा लेनि चऽरऽय
आनिकर वारिय ना टोटवा देइ खियाई
तवन कर नाहिय ना खातव तुव रे वच्चा
कइसन मुंइवांह् फेरलवा वाय रे जात
ओहि दिन वोलइ ना गेंदवा जे हंसे कऽ
मइयाह् वाविल ना मुनवह् रे हमाऽर
इ वताव पहिलइ ना अनवा से तहरे हई
के भाई आगे ना वानह् रे तोहाऽर
ओहि दिन वोलत हंसवा जे वान रे हंसिनि
वचवाह् मनवह् काहनवाहं रे हमाऽर
आजु भाई रतियांह् ना अंडा जे वचा रे कई कह्
विहनाह् पेड़े के तरवांह् चलि रे जाय
जउने घरी लऽवटि ना खोथवा पर रोज रे अइनीं
कवउ नाहि देखलींय ना वचयन के निर निमोह्
आजु भाई कवन वारम्हवा से सोझ रे भयनंऽ
आजु वचा देखलीय ना खोंथवान परि रे मोह
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
मइयाह् जरियांह् ताकह् ताकेहु रे वानऽ
ओहि घरी हंसाह् हंसिनिया जे पेड़हरि तकलेनि
वइठल वाड़इ मारदवाह् पलथि रे मारी
आजु भाई पहिलेहु मारदवा के तू खियइवा
तव भाई देखह ना खिलतियाह् कइ रे हालऽय
वड़ दिन खइलेसि ना नगवा जे अंडा रे वच्चा
देख भाई गीरल वानह् नह दुई रे भागऽ
पहिले जे मा मनसूखिया के चरवाह् माई खिआइदऽ
पिछवांह् हमइ ना खावइ ना जल रे पानी
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् चिरयिनि कऽ
एकदम उड़नंह सरगवाह् मेंड़ रे राइ
एकदम सऽहर वाजरिया में घूमय रे लगनह्
पेड़इ मारत भऽवंकियाह् रे वानऽय
ओही घड़ी देखयं दूकनिया पर रखल परतिया

अब भाई भरलि मिठइयाह् रे देखानी
उहो हमसे झूकयि चोरइया जे हस रे हसिनि
चगुले मे लेहलेनि ना थालवाह् रे उठाई
उहे भाई ले लेह् सऽरगवा मे उडि रे गइनी
जाइ कनि चुवलीय कादमवाह् केनि रे डारऽ
एकदम ले लेहह् लोरिकवाह् किह रे गइली
आजु भइया सुनबह् मनसुखियाह् रे हमारऽ
आरे भइया तूहइ भोजनवा जे पहिल रे कइलऽ
तब गेवाह् बच्चाह् ना खइहइ रे हमार ऽ
ओहि दिन बरत भोजनवा वीर रे लोरिका
अवर फेरि खानह् ना बचवाह् ओकरे खोय
तब फेरि बोलइ ना हस रे हसिनी
भइयाह् सुनि लह् मन सुखियाह् मोर रे बातइ
आजु भाई बहुत ना नेकिया तूय ये कइलऽ
बाकी हमसे मागह् मागनिया भरि रे पूरऽय
तब फेरि बोलत मारदवा बीर रे लोरीक
चिड़िया तू मनवह् काहनवाह् रे हमाऽरऽ
आजु तोहारइ ना जतियाह् पछी कऽय
का तूय देवह् मागनिया रे पूजाई
ओहि दिन बोलत हसवा बाइ रे हसिनि
नाहि बचा मनवह् काहनवाह् रे हमारऽय
तू जवन एहि घरी मागनिया जे मागि रे देवऽ
तवन तोहार देबइ मागनिया जे हम पूजाइ
ओहि दिन बोलल मारदवा बा वीर रे लोरिका
दरियाह् मानह् काहनवाह् रे हमाऽर
आजु भाई सुनबह् हसवा ज तूय रे हसिनि
एठियन तू मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
देखऽ भाई सातइ समुदर नइया रे पारय
जहवाह् पर अगियाह् कोइलियाह् जे दूनो रे बाइ
ओतनेह् बत्तीस नागरवा मे बाइ रे सेनूर
अम्मर सेनूर सोहगइली जे घइले बाय
आजु हम उहई सोहगइली जे आने रे जाबऽय
हमकेह् कइ जाह् समुदवा जे लेइ रे पाऽर
ओहि दिन बोलल हसवाह् जे बाइ रे हसिनि
दरियाह् कऽरइ ना बेडवाह् रे जाबावऽ

आजु भइया सुनवह् अहीर ना वीर रे लोरीक
कहनाह् मनवह् ना एठियन रे हमाऽरय
देखऽ भाई सातइ न दोनवा चढ़इ मासु
फेर भाई लवटत ना साथइ हमरे चढ़ि हंऽय
चउदइ् दोनह् का मंसुवा ज़ेकर उपाई
हमहूंय देवई ना टपवाह् रे डंकारी
ओहि दिन ऊठल मारदवा वीर रे लोरिकाऽ
नगवाह् के ढोलह् ना कइका गइ गिराई
वोटइ वोटह् ना दोनवा जे वनाई कऽ
ओकर देलेसि न वोटवा वोटि रे आई
आजु भाई तेरह ना दोनवा होइ रे गऽयल
एक दोना घटि गइल मांसुइया देख रे आजऽ
ओहि दिन सुनह् ना हलिया हंसा हंसिन
उहो भाई गयनीय आहीरवा कइ रे पासऽ
दून्नोह् देहलेनि ना डेंनवा लेइ रे ओठियन
दोनवाह् भरलेनि पातहिया लेइ रे जाई
तव ढिग मारि कह् आहीरवा वीच रे वइठऽल
हथवा में ले लेह् वीजुलइया तर रे वारऽ
जउने घरी उड़नीय चिरइया एक रे दम्मऽ
पइठनि देलेनि ना ओठियन रे डंकाई
जउने दोना खातीय मासुइया लेल रे कारी
जउने घरी दूसराह् ना दोनवाह् वाइये खातिर
दूसरि देहलेसि ना घरवा में डंकाई
अच्छे अच्छे सातउ नां धड़वा जे डंकाइ कऽ
चिलि लेइ केइ वइठलि कादमवा के वाड़े रे डारि
उहवां से उतरल ना वानह वीर रे लोरिका
एकदम रेंगल ना रेतवा में चलि रे जाय
अगवांह् अगियाह् कोइलिया के वाइ रे भरति
उहे भाई दुअराह् हिंडोलना जे डाल रे वाय
दूनों गोड़ी मऽउज में गीतिया जे गावत रे वानी
तव तक जूटल लोरिकवा जे डेंइ रे वाइ
पहिलेहि जूटितेइ ना नीहुरि रे सलामवा
मम्माह कइ कंह करत वाह् पर रे नाम
ओहि घरी हहरई ना रतियाह् रे कुरीलिया
उहो भाई दांतनि आंगुरिया जे वाती चबात

आजु कहँ हो हो ना दइवाह्. मोर नारायन
क्या बरम्हा लिखलह्. ना मथवाह् रे लिलार
आजु भाइ अइसन कोमलवा जे रहल निलय
खाइ केनि पेटइ ना भरिया जे दुनो रे जात
आजु तुय भयनेह्. बाराभन बोलि रे देहलऽ
तोहरे खातिर पापवा जे बहुते बाय
सुतल अहीरवा बा लेइये ओठियन
खूब भाई कइलेसि डाइनियन से मिलापऽय
ओहि घरी मिलि मिलि ना बतियाह्. करे रे सगनऽ
दइवाह्. कऽरत बानइ नह इत रे जामऽय
····· रसोइयाह्. लेइ बनावऽल
दुनोह्. कऽरइ ठहरियाह्. जेव रे नारऽ
अइसे अइसे दस पाच ना दिनवा जे रहि रे गयनऽ
तब फेर अगियाह्. कोइलिया जे बोल रे बोली
आजु कहँ सुनबह्. ना भइया दूरदेसिया
अहिरू तू मनबह्. काहनवाह रे हमाऽरऽ
आजु तूय बहुत ना एठिन चारिउ ओर घूमलऽ
चलि केनि झिरि हिरि ना नइया पर बइठी
तब फेरि बोलल आहीरवा बीर रे लोरिका
मम्माह्. तू मनवह्. काहनवा रे हमारऽय
आजु मोर थाकलि जजिया बा पऽयहे पऽर
अब नाहिं जावह्. कऽरइ ना अस रे नानय
बलुकनि रामइ ना रसोइया मा घरे बनइबय
तू लोग जाइकह करह्. ना अस रे नान
एहि दूनोह्. बहिनियाह्. चलि रे दीहलेनि
डोंगियाह्. लेलेनि समुदवाह्. तीर रे खोली
आजु भाई घरे के निचितइ होइ रे गइनी
भाई मोरे साचइ बनइहंइ जेव रे नारऽय
ओहि दिन जाइके झिरहिरिया जे बानी रे खेलत

हंस हंसिनी के पंख पर बैठकर
लोरिक अमर सिंदूर लेकर सुरवली वापस

तब तक सूनह्. ना हलियाह्. लोरिके कऽय
लोरिकाह्. चऽढल कुठिलवाह्. बसि के काढी
हलि केनि लेलेसि सेनुरवाह्. रे उठाई

सेनुर लेलेह् कादमवाह् पर रे गइंनऽय
हंसाह हंसिनि जोहतवाह् जे रहयं रे वाटऽय
डेनवाह् जोरि लेनि हंसियाह् देख रे हंसा
पल्थिय मारि कह् आहीरवा जे जाइ वइठी
ओहि घड़ी ऊड़इ चिरइयाह् सरगे में
आजु भाई पहिलइ ना धरवाह् फेरि रे चलनी
ओहि दिन खइलेनि मासुइयाह् रे अघाई
ओहि घड़ी दूसराह् ना धरवा जे वाइं रे डांकत
दुइ दोना खइलेन ना उहंउय रे अघाई
देखह् तीसराह् ना धरवाह् जे वांइ डंकावत
तीन दोना खइलेनि मासुइयाह् रे अघाई
के फेरि चउथाह् ना धरवांह् जे वाइं डंकावत
चारि दोना खइलेनि मासुइयाह् जे लेल रे कारी
जवनेह् घरी पांचवांह् ना धरवा वा डंकावत
पान दोना खइलेनि ना मंसुवा रे वनाई
के भाई छठवांह् ना धरवाह् पर चलि रे गयनऽय
छऽ दोना खइलेनि मासुइया रे अघाई
जवने दिन सतयेंह् ना धरवाह् पर हलि रे गयनऽ
अव फेरि छुधाह जारतवा जे चिन्ता वाय
ओहि घरी देखह् ना हलिया जे चीड़ियन कऽय
उहे भाई तऽरेह ले ना मुहवां जे भइल रे जाय
ओही घरी वोलल मारदवा वा वीर रे लोरिका
हंसि हंसि मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
कइसन वीचेह् ना धारवा में ले ले रे जाला
का भाई आला ना लेवह् रे परान
ओही घरी हंसह् हँसिनिया जे वोलि रे देहलेनि
अव फेरि मनवाह् ना काहना जे तूतऽ हमाऽर
अव भाई थोड़ह् में छुधवा के कारने में
तिनि मीला गायव समुंदवा में होइ रे जाय
ओहि घरी पेलत ना जेववा में वाइ रे हंथवा
अव फेरि ले लेह् चाकुइया जे वाड़े रे काठ
ओही घड़ी ओहीय ताउलवा से मासु रे कटलेनि
ऊहे भाई देहलेह् ना दोनवां में देख रे धारय
ऊय फेरि खइलेनि ना हंसाह् रे हंसिनी
अव फेरि देलेनि ना धरवा जे लेह डंकाय

जवने घरी छूटल आहीरवा के बोटी रे धारन
अब फेरि रँगल बारतिया के ओर रे बान
आजु भाई घटह् पाहरवाह् केनि रे बेदन
चलि गयनऽ सँभूय सागरवा के देख रे भोट
उहवाह् देखति रे मइयाह् बा मनदसी
दुरुगाह् आदिय ना दिनवा क पूज रे नान
आजु भाई देखलति ना मइयाह् मोर दुश्मना
कहे भाई ववरलि ना मुहवा के धारि कहारि
चेलवाह् क जाइकह् जाधिनवा के माटि रे देहरेनि
फेर भाई जोडइ ना ढोलवा के हांड रे बाध
ओहि घरी सूनह् ना हनियाह् कोठिन कन्न
बोलत दुल्लर लोरिकवाह् मधुर बा बन्न
आजु भाई सुनवह् ना सँगवाह् दुल्हनि कन्न
हमार लेइकह् हुकुमियाह् चलि रे मान्दर
जाइ कनि कहि दह् ना बतियाह् बनवेद के
जल्दी से करय दुअरवाह् रुउ रे जान्त
ठटि केनि लागीय बारतियाह् रे हनारन
पउवाह पूजइ अहीरवाह् बनाई
ओहि दिन सूनह् ना हनियाह् कोठिन कन्न
धावनि खोदल ना गयनह् ओरि रे सन्न
तखता पर बइठल ना मुवका के बा बनरिया
उह भाई कूचत मागहिया के दार रे पान
ओही घरी पहुँचल ना धावनह् रेहमें कोठिन
बोलव धावनह् सारमिया क देख रे बोल
ओही घरी बोलल ना मुवका के बा बनरिया
मइयाह् सुनवह् धावनिहाह् रे हमार
आजु भाई जातीय न हउवह् अहीरन क
उहे भाई हउवह् आहीरवा के मुरारन
कइसे पूजब ना पउवाह् अहीर कन्न
कइसेह् कारब ना मदियाह् रे बिवाहय
एतना जब कहइ ना बतियाह् रेहमें धावन के
धावन फेरि लावटमइ बारे धावय
जेवनी घरी मँगुवह् सायन्वाह् चढि रे गवनल
हुकुमि देलेनि लोरिकवाय रे सुनाई
उहे भइया कहत ना मुदवाह् देख बानर

आजु मोरे जातीय छऽतरियाह् कइ रे हवीं
ओहि पर जातीय अहींरवा के भाई हंवाय
कइसे हम पूजव ना पउवा जे आहीरे कऽ
एहि दर नगर सुरऊली दइउ रे पालऽ
उहवां से सूनह् ना हलियाह ओठियन कऽ
धावनि लवटलि लोरिकवाह् किह रे जालंऽ
आजु कहैं भइयाह् ना सुनिलह् वीर रे लोरीक
दरियांह् कऽरइ ना वेड़वांह् रे जवावय
ओनकर उलटीय हुकुमिया सुनि रे लेवय
मूववाह् के कड़कल ना मुंहवांह् कइ जवावय
आजु भाई जतियाह् छतरियाह् कइ हमारऽय
कइसे हम पूजव अहीरवा कइ रे पांवऽ
एतना जे कऽहत ना ओठियन वाइ धवनिहां
अहीराह् फेरि वतियाह् ना फेरि रे दुहराइ
आजु भाई दवरल ना एकदम चलि रे जावय
अव उन्हें देहह् ना वतियाह् रे अर रे थाइ
आजु आपन जानइ वाकसवा जे सूवा रे जानिहंय
ठीक सेनि पूजउ ना पउवा जे लेल रे कार
नाहि जव खींचव ना खंड़िगां जे हम दूगाहें
अव दुइ भागेंह् ना देवइ जे ढोलि रे याय
ओही घरी ऊठलि हुकुमिया रे लोरिके कऽय
सवा लाख सुनवह् वारतिया रे हमाऽरऽय
अऽपन भाई कसि कह् समनिया कइये लेवय
ठाठसेनि लेवह् सुरतिया रे वनाई
चलि कनि लागह् दुअरियां वरि रे यातय
ओहि घरी तरइंय मारदवा होइ रे गयनऽ
करगे पर ऊगल सागरवा नाइ रे चानऽय
ओहि घरी सुनह् ना हलिया ओठियन कऽय
के भाई ओहूय समइयाह् कइ रे हालय
······लोरिके सांग
नकियाह् बाजलि दुनियवां बा सवं रे सार
खनवांह् जोरि दह् ना भइयाह् मोरि दुरूगा
दुरुगाह् जानइ साकतिया जे माइ तोहार

मल सांवर और सतिया का विवाह सम्पन्न

सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
अहीरे के लागह बा हुकुमिया जे बड रे बाटऽ
पचह् सुनवह् बारतियाह् सब रे लोगऽ
एकदम चऽल दुअरवाह् चलि रे चलऽ
सत रग सुनवह् ना बजवा बज रे गोरऽ
आजु भइया अइसीय लाकुडिया रे बज उठऽ
सुरहुलि जातीय सऽहरिया रउ रे जाई
ओही घडी मूनह ना हलिया जे बठवा कऽ
छुट्टाह छोड लेह् लाकडिया जे लेह रे बाप
आजु कहें बाजल लाकडिया बा घमरम कऽ
सतरग बाजल ना बजवा जे उहा रे बाप
ओही घडी देखह् ना हलियाह् लेइये ओठिन
अउ फेरि गऽयलि ना देहियाह् जगमगाइ
ओहि घडी पिरीथमीय ना डगमग करइ रे लगली
अउ फेरि एहीय ना मिरतलोकवाह् पर रे दाति
आजु कहें घावह् बिसुनवा के डोल रे धामऽ
अइसन बाजाह् खरीदले बा अउरे जाइ
ओही घडी लागलि दुवरवाह् रे बारतिया
ठाटसेनि होतइ दुअरवा पर ठट रे जात
ओहि घडी खटरम दुअरवा के होइ रे गइनऽ
उहे भाई पउवाह् पूजनवा होइ रे जाय
आजु भाई सेनुर ना मागवा मे परि रे गयल
ओहि भाई नागर सूरवली जे दइउ रे पान
ठाठ कनि भयल बीवहवा वा अहीरे कऽ
ओहि गाँव नागर सूरवली जे देख रे पार
तब फेरि बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरीक
सासुर मनबह् बामरियाह् हो हमाऽर
आजु भाई खिचडीय ना भतवा जे सगे रे होऽइऽ
सगेह रुकसति न होंइहइ रे हमाऽर
आजु भाई आइलि साइतियाह् इहि रे वनी
अब फेरि घइलेह् दखिनवा के देस रे यार
खिचडीय ना भतवा जे होइ रे लागम
पक्कोय वनति सामनिया रे ओही दम्मऽ

ओही घरी होत बाह् भोजनवाह् जे तइ रे यारऽय
बमरीय देलेनि धावनियाह् जे तइ रे राई
जाइ कऽ भइया सेम्हुवा सागरवा पर डेरा रे धरऽतऽ
आजु भाई करीय ना हमहूंय भाई मय रे दानऽ
ओहि घरी टारलि बारतिया दुअरे से
एकदम सोःइ सागरवा तड़ि रे आई
अब चलि गयनहं ना भींटवा सागरे के
जाइ के भाई बइठंइ मेंड़रिया देख रे भारी
ओहि घड़ी जलसाह् जाजिमवा पर हो ये रे लगनऽय
के भाई नागरि सूरवली दइ रे पालऽय
ओहि पर कसबीन पातुरिया बांई रे नाचत
भंड़वाह् तोड़ति चिढ़ुकिया पर रे तानऽ
ओठिन होतइ जलसवा लेइ ये बानऽ
अब जुटि गइलि बारतिा सब रे बानऽ
जाके भाई बइठंइ मेंड़रिया देख रे भारी
मुखवा में कूंचइ मागहिया लेइ रे पानऽ
तब तक भइलि रसोइयां सूववा कऽ
हुकूम देलेनि दुअरवां दब रे राई
जाइ केनि कहिदह् ना भइया रे बराती
जेतनांह होइहंइ ना गोपिया रे गुवालय
उठि कनि खइहंइ खीचड़िया लेइ रे भातऽय
संये नीपटि ना कामवा देख रे जइहंऽय
पिछवांह बीदाह् बीदइया होइ रे लगिहंऽय
मोका जइहंइ ना हो हउ गड़बड़ाई
ओहि घरी देखह् ना हलिया जे ओठियन कऽई
अहीराह् ऊठत बानइ नह खरमराइ
रेंगनह् ना गोपियाह् रे गोवा लऽय
आजु भाई सांवर ना बरवाह् रे सहीतऽय
संगवाह् खिचड़ीय ना भतवा होइ रे जइहंऽय
संघेह् जइहंइ ना कामवाह् रे ओराई
ओहि घड़ी उठनह् जेवनवा जे गउरा कऽ
गोइधुरि हलल अंगनईं में बान रे जातऽय
अब पड़ि गयल पातलवा जे अहीरीन के
सोरहउ गीरति सामनिया बा पतरे पऽर
आजु भाई बइठल मेंड़रिया बायं रे भारी

आजु भाई आगिय ना बीचवा में रखि रे गइली
खोरवा में रक्खल धीयनवाह् देख रे बामऽ
उहे भाई पानीय अंचननवा जे देइये दीहलेन
आहृनि गीरलि घवनियाह् रे बनाई
ओहि घरी बोलइं ना मइयाह् रे चउधुरी
पंचह् कवर उठइवे न सीता रे राम
ओहि घरी कइकह् ना कवर लेइये अहीरा
अब फेरि खानह् अंगनवा मे मुढि रे आइ
सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
भोजन कइलेनि ना गोपिया जे देख गुवालऽय
खीचड़ीय मातइ आहीरवा जे खाइये लेनऽ
तब फेरि सूनह् ना हलिया जे देखऽ हवालऽय
उठि उठि हाथइ ना मुंहवा जे धोइये लेनऽ।
कूंचई लगनह् ना मगहिया जे देख रे पान
करा से ठोकई सूरतिया जे देखऽ सोपारी
जलधाह् होवइ सूरवली जे बान रे पालऽय
जवने घरी खइलेसि अहीरवा बीर र लोरीक
आजु भाई सुनबह् सासुरवा रे हमारऽय
देखिलह् आइल साइतिया बा गवने कऽय
सखियाह् के पऽरह बिदइया एहि रे·दम्मय
सइंतो के पऽहर हऽहरिया रेंगि रे देई
अब धाई लेईय दखिनवा कइ रे राहऽय
ओहि घरी होला बीदइया धरमीय कऽय
साथर गऽयल दुअरवा भाइ हो जाई
आजु भाई राऽहइं ना जेतना जेइ रे आपन
उहे भाई रहनहं ना संघवाह् इतरे दारऽय
ओतना पलगियाह् परलमवा करे रे गइनऽय
सबकेनि करत पालगिया पर रे नामऽय
जवने घडी आनह् धारमिया सररेदारऽव
साथर करइ पालगिया बमरी के
बमरोय भरि मुख देतइ बा असीरे बादऽ
ददुवा तू आखेह् आमरवा होइये रऽहऽ
अब तूय जीमतह् ना लखवा रे बरीसऽ
आजु मइया देसइ दुनियवा कइ रे अइया
तोहरे धेवरउ ना जंघिया रे सरीरऽय

अब कहि जावह् ना हलिया रे हवालऽ
जेभवा से काढ़त मोहरवा कइ रे गांठी
आजु भइया साठिय मोहरवा के लेइये हारऽय
संवरू के देलेह् नागरवा में पहिरे राय
आजु भाई सबकह् पलगिया जे असरे भईनी
डंड़ियाह् उठलि ना सतिया के देख रे बाय
आगे आगे रेंगलि ना डंड़िया बा सतिया कऽ
पीछवांह रेंगलि ना जानीय बरि रे याति
ओहि घड़ी रातीय रेंगत बांह् दिन रे दउरत
कतवों ना वदत ना कुरवाह् रे मोकाम
जवने घरी रेंगल ना ओठियन कइ रेंगावल
अब चलि गयनह् बऽरइया जे पुर रे गांव
उठलि गदिवाह् बाइ ए बरइनि
उहे भाई बेचति मागहियाह् बाइ रे पानऽय
ओहि घरी जुटि गइल बरतिया जे अहीरे कऽय
लोरिका से कहति बऽरइनी लेल रे कारी
अब कहैं सइयांह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह् ना सीरवा के मउरे आर
इहे भाइ रहल ना वतियाह् रे करारऽय
जवने दिन भउजीय के सुरुहुलि वियहि के लवटबय
तोर फेरि अइबइ गाऽउरवाह् लेनि रे जानऽ
वरइपुर में बाऽरतिया जे जब रे अइहंऽय
तोर हम लेबइ ना डंड़ियाह् फन रे बाई
दूनो डांड़ी चलिहंइ-गउरवाह् गुजरे रातऽ
तब फेरि बोलल आहीरवा बीर रे लोरिका
बरइनि मनबेह् काहनवा रे हमारऽ
देखु हमार ईहइ ना धनवा हउ रे कऽवन
आजु हमार लोहाह् उठनवाह् ओह रे बइठन
लोहा हउवंह पारनवा रे आधारऽ
आजु हम चउमुख ना कामवा लागि रे जइहंऽय
चउमुख लेबइ जाननिया रे खरीदी
अब कहां परवइ कमइया मेहरीन के
कवन करवइ खियइबइ रोजि रे गारऽय
आजु तूंय आपन ना कमवा जे बइठऽ बरइनि
अब तूं बेचह् मागहिया जे ढोलि रे पान

आजु भाई दोहरेह्, ना असखत रे खना गिनि
अब अरदानीय गउरवा जे मारे रे गाँव
एतना जब कहत अहीरवाह्, बीर रे लोरिका
लोरिकाह्, देतइ जवाबवाह्, ओहि रे दम्मऽ
बरद्दनि के गयल आसरवाह्, आइजे टूटो
तब तक चतलि बारतिया वा जोड रे तोडय
अब फेरि लेलेह्, दाखिनवा वा तडि रे माइ
आजु भाई रातिय रँगत वा दिन रे दवरत
कतव बादति ना कुरवाह्, देख मोकाम
एकदम उहवाह्, रँगलवा जे वान रँगावऽल
अब चढि गयलह्, ना गउरा के तिर रे हालि
जवने घरी गयलह्, सिवनवा जे गउरा कउय
ओहि फेरि बोलल अहीरवा जे बीर रे बाय
आजु कहँ सुनलह्, चामरवा जे बाजवा कऽय
सवरग सुनवह्, ना बाजवा के बज रे गोति
आजु भाई अइसन लाकडिया जे फेंकि रे देहऽ
अब फेरि हाइ जात गउरवा जे अजर राय
आजु कहँ आपन ना पड़बाह्, रे कउडिया
अउ फेरि लदलह्, मजुरिया जे ठोक र ठाव
आकरेह्, ऊपर बीदइया जे हमरे दवय
एकक देवइ बलियवाह्, सब रे दान

बारात सहित लोरिक का सेना को लेकर गउरा वापस—
सावर का नव विवाहिता के साथ बोहा में प्रस्थान

बाजलि लकुडियाह्, गउरा म
सावदि गइलि आहीरवा के वाद रे घरय
ओहि घरी नीकनलि ना नीकलि रे दुवरवा
दखत वानह्, बरतियाह्, कइले गइल
जवने घडी गइल ना गउवाह्, निरंग गई
ऊजर भयल आवइ नह चउरें आरजा
देख भाई सबाह्, ना लवरनह्, बीत रे धनिया
दमकलि आवति गाउम्बाह्, बाट रे बाँधल
आजु कहँ धपँच ठनुकवा कैलि रे निरिखा
आव फेनि आटलि दुवरवाह्, पर रे आर
आजु कहँ चढि सब दर्लिकाव व कर रे दुवरा

परछनि होतीय दुअरवाह् पर रे वाय
उहे भाई ऊतरल ना दुलहीय दुलहा वानय
अव चलि गयल कहवर मेनि रे वाय
जाइकेनि पूजाह् पातिसवा जे होइ गयनऽ
मुखवा में गुरइ ना घीउवा ना खाइ रे लें
आजु भाई छूटि गइलि ना गंठिया जे कोहवरवां
अव वर उठल ओठिनिया सेनि रे वाय
सवके करत पालगियाह् पर रे नामऽय
एकदम रेंगल वारतिया में चलि रे जाय
ओहि घड़ी खीचड़ीय ना भातवाह् खाइये लिहलेन
दुइ एक रोजइ गिरिहियां में रहि रे गयनं ऽ
तव फेरि वोलत ना मलवा वाइ हो सांवर
कक्काह् मनवह् काहनवां रे हमारऽय
देख भाई छवइ महीनवा आध रे पाखऽय
हंमई वीतलि सुरवली दउ रे पाल
आजु भाई चिन्ताह् लछिमियन पर हमाऽर य
हम भाई जावइ लछिमियनि केइ रे पासऽय
ओही घरी वोलइ ना सतिया सतवा से
आजु मोरे सुनिलह् ना मसिरवा मलि रे कारऽय
आजु भाई अनकह् वछियवा ओलियाइ कऽय
अपने काहंह अलगवा जव रे तोहारि
हमहूँ चलव ना वोहवा रे मंझारऽय
गोवर गोंइठांह् लछिमिया कइ रे होइहंऽय
लछमी के कऽरव दुइ जूनवा सेइ रे भेंटऽय
ओहि घड़ी दून्नोह् ना जोड़िया जे रेंगीये देहलेनि
अउ फेरि सांसड़ ना वोहवांह् रे मंझार
जाके भाई तानीय छोदरिया वा वीर रे देहलेनि
सतियाह् गऽइलि ना तमुवाह् मेनि रे हऽलि
अपनेह् रेंगल धारमिया जे चलि रे गयनऽ
जाइकनि वइठल सांथरियाह् पर रे वाय

संवरू का विवाह समाप्त

३. हल्दी—चनवा का उद्धार

सुमिरन

[त कहे सझवाह् सुमिर लेह् मइया सांझेखरि
आधीय रातिय आरजून जे सुरन हो बानऽय
आगा भिनुसहराह् सुमिरलीय हरिये कारऽ
इहे तीनउ धऽरम कऽरमवा के होइ रे जुवा
आजु भाई रामइ ना तोह्इय भइलऽ रामायन
लछिमन तेजलेह् ना कसिया जे बानऽ पयागऽय
आजु कहँ सीतइ तेजलवा जे भइ रे नइहऽर
जह जाके धनुष तोडले बाड भग रे बान
आजु कहँ तवनेह् ना दिनवाह् राम समइया
के फेरि एहूय सामइयाह् कइ रे हाल]
जउने घरी गऽयल अहीरवा जे सूरहुल मे रहन
ओही घरी भयल बिवाहवा जे गवन रे बाय
आउ फेरि गइल ना चनवा बा लेइ बीजरिया
अउ सादी भइलि सेवरिया के बाडे र साय

दुर्गा से गायन मे सहायता करने की प्रार्थना

[······भाइ कठेसरि
हिरदय मे बइठह् सिरीय नह भग रे बानऽ
जीभिया के तुनबह् ना मतवाह् रे दुरूगा
जेवन भाई भूललि काडियवाह् देलि रे जोडी
देविया जो एक्कइ हरकिया जे छूटि रे जइहऽ
फेरसेनि लेबइ ना नउवाह् हो तोहारऽ
जेतनोय गाइल कीरीतिया बा सतयुग मे
छनुवाह् जोरि दह् दुरूगवाह् मोरि रे माई
देवियाह् जानइ साकतियाह् हो तोहारऽ]

चनवा का गौना सम्पन्न—पति सिवहरि द्वारा उपेक्षा किया जाना

जउने दिन भऽयल गवनवा चानवा कऽ

चलि गइल नागरि बीजरिया देख हो गाँवऽ
ओहि घड़ी लेइकह् गावनवा सेवहरि हो गइनऽ
अब भाई देलेनि दुलहिया रे उतारी
अपनेह् दूधइ दूहनह् पाचुइवा बाइ उठवले
अब चऽलि गयनह् आड़रवा केनि रे पासऽ
तब तक सूनह् ना हलिया बेसवा कऽय
अपने के रामय रसोइयां रे बनावऽय
चनवाह् कइलेसि रसोइया तइ ये यारऽय
ओही घड़ी सूतलि ना बुढ़िया बानि रे सासू
चनवाह् बोलल लारमवा कइ ये बोलऽय
मनवह् काहनवा रे हमाऽरय
आजु भाई रामइं रसोइया अब बनाईं
सइयांह् लवटत आड़रवा पर होइहें हमारऽ
धियवाह् करय नाहनवा तकथे पऽर
जाइ केनि भीतरीय रसोइयां हो बनावंऽ
ओहि दिन सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
दूध लेले आयल सेवहरि बाइ रे मालऽ
अब फेरि भयल दुअरवा पर रे ठाड़ऽ
घरवा से निकलल ना बेसवाह् रे चऽनइनी
एकदम रेंगलि अहीरवा के आगे रे जाय
अब कहें दुन्नोह ना मुसवां जे दूनो कछरिया
उहे भाई ले लेह् भीतरियां बा चलि रे जाय
जाके भाई दूधवा तारीय में बइ रे ठावइ
आपन ठाटइ लागलि नह जेब रे नारि
ओहि घरी रामइ रसोइया जे होइ रे गइनीं
सेउहरि के गयल धिकई कह् जल रे पान
उहे भाई देखइ ना पनिया जे बाइ रे धिकवल
उहे भाई हहरल अहीरवा जे देख रे बायऽ
आजु कहें हो हो ना दइयाह् मोर नारायऽन
क्या बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लिलार
आजु भाई जऽरत ना पनिया जे धइले बाड़ऽय
अब जब परीय बदनिया जे बाबू हमाऽर
आजु मोरे जऽरीय बदनिया जे देख रे जइहंऽ
अब नाहि करब ताखतवाह् पर अस रे नान
बुजरीय भईलि ना बेसवाह् मोर मूदइया

हमरे के मारइ के कइले बाह् राजि रे गारे
ओहि दिन मूनह ना हलियाह् ओठियन कऽ
उहे भाई कऽरईं ठाहरवा अस रे नान
उहे फेरि देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
उहै भाई गोडइ ना हथवाह् धोइये लिहलेन
आहीराह् रेगल ठाहरिया पर बानऽ रे जातऽ
जउने घरी बइठि ठाहरिया पर बीर रे गइनऽ
देखत बाडइ ठाहरिया मे जेव रे नारऽ
आजु भाई बारह ना दोनवा तर रे कारी
छत्तीस रग कह् बनल बा पर रे काऽर
देखह् राजाह् दइयवा के हउ रे लडिकी
ठटि केनि कइलेसि बऽनइया जेव रे नारऽ
ओही घरी बइठल ठऽहरिया पर बाइ रे सिवहरि
ठटियाह् अवतइ ना हो गइल जरि रे काल
आजु कहँ हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मझवा जे तक रे दीर
बुजरीय बेसवाह् मूदइया जे होइल बाडय
इहे चाहि लेइ हइ ना जानवाह् रे हमाऽर
आजु भाई छत्तीस ना दोनवाह् तर रे कारी
का जानी कवने मे माहुरवा जे डल रे बाय
आजु भाई कवनेउ कऽखा जावइ महुरवा
छन मेनि जावइ ना पीढवा पर ढगि रे लाइ
आही घडी बोलल ना मलवाह् धाइये सिवहरि
दरियाह् कऽरइ ना बेडवाह् रे जबाबऽ
आजु बुजरी सुनबेह् ना बेसवाह् तुइ चनइनी
अइसन चाहेह् बनवले ते पर रे कारऽय
देखु भाई बासिम ना भतवा के हइ खवइया
बसियाइ खइलीय मठवाह् हमरे रोजऽय
ए भाई छत्तीस ना डागवाह् माहुरे घइलै
का जानी कवनेह् ना दोनवा के मीठ रे लगनऽ
कवनो हम खइलीय ना दोनवाह् रे उठाइ
सहजे मे आलर जिनिगिया जे चलि रे जइहऽय
मुदई आइलि ना घरवा मे बाडे हमार
धरा म खुसीम तू गोराइ कऽ
दुइ चार कवर भोजन कइ ले लऽ

अहीरा ऊठल ठहरिया से बानऽ
अउ फेरि हाथइ ना मुहवां हो धोई
ओहि दिन देख ना हालि ओठियन कऽ
औ फेरि गयनंऽ सेतहरिया हो आजऽ
आके निकलि आंगनवा में गयनऽ
अंगने में ले लेनि कामरिया जठाई
ओही घरी सूतल आहीरवा बा कमरी पऽर
के फेरि बीचेह् आंगनवा बा मय रे दान
सूनह् ना हलियाह् चनवा कऽ
चनवाह् कऽरति ना ओठियन रे बनाई
जाइ कनि अम्माह् सासुइया के बल रे वाइ कऽ
सास पतोहि कइलनि भोजनवाह् मन रे भऽरी
उहे भाई कइकहि भोजनवाह् बूढ़ि रे सूतल
चनवाह् देलेसि पऽलंगियाह् रे लगाई
तब फेरि देखह् ना हलियाह् आगवां कऽ
······खालइ खियावल लेइरे चनवा
सासु के देलेसि पलंगिया जेरे सुताय
ओही घरी सूनह् ना हलिया जे चनवा कऽ
आपन गादीय गीरदवा जे बाइ लगउले
के फेरि देहलेसि सेजरियाह् रे जठाइ
आजु हिया मारति कांछरिया जे अपने बाड़इ
एकदम रेंगलि आंगनवाह् मेंनि रे जाय
जहवांह् सूतल ना मलवा जे वान रे सिवहरि
औ फेरि पेलति ना हथवा जे लेइ रे बाय
एक हाथ पेलति ना मुंड़वा जे ओह रे बाड़ऽय
चनवाह् सेवहरि के लेहले जे बाई उठाइ
एकदम ले लेह् पालंगियाह् पर रे गइनी
एक बलि देहलनि पलंगिया पर धर रे काय
सूतल ना मलवाह् बाइ रे सिवहरि
चनवाह् खाइय ना पीये तइ रे यारऽ
आपन लेहलेनि ना अभरन रे बनाई
उहे भाई लेइकह् आरतिया चलि ले देले
अब चलि जालइ सेजरिया केनि रे बीचऽय
तब फेरि देखह् ना हलिया ओठियन कऽय
के फेरि ओहूय समइया कइ रे हालय

जेतनीय गाईलि ना बतियाह् सत जूग मे
चनवाह् जोरिदह् दुल्गवा जे पूज रे मान
ए घडी थोडह् ना रतिया जे रहि रे गइली
अब होत बानह् भाभरवाह् रे बिहान
ओहि घडी ऊठल ना मलवा जे बाइ रे सिवहरि
दूहनह् लेइलेह् पाटेउवाह् रे उठाय
उहे भाइ सझिलेइ ना भोरवा जे दूहननि कऽय
अब फेरि रेंगल आडरवा जे घर रे बाय
आजु कहँ रहनऽह् आडरवा पर घर रे बाहय
लरिकाह् बहुत रहइ ना छोट रे छोट
ओहि घरी पाकल बा बरवा जे सिवने मे
लरिकाह् तरसत बा पेडवाह् तर रे बाय
आजु कहँ बोलनह् लरिकवा जे सिवहर से
मालिक मनबह् काहवाह् रे हमार
आजु भाई भूखीय ना लागलि पेटवा कऽय
बरवाह् पाकलि ऊपरवा जे देख रे बाय
मालिक खोदि खोदि ना बरवा जे तू खियऽतऽ
पेटवाह् भरत लऽरिकवा रे जात अघाय
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे सिवहरि कऽय
उहवा से रेंगल मारदवा जे लेइ रे बाय
अब चलि गयल ना पेडवा जे बरवा के
आपन छोरलेह् लापेटवा जे देख रे बाय
उहे भाइ सूतल अतनवा जे बाइ रे सीवहरि
दूनों हाथे धइलेहि आउजरवा जे देख रे बाय
आजु कहे खोदि खोदि ना बरवा जे बाइ गिरावत
लडिकाह् बीनि बीनि ना बरवा जे बात रे खात
ओहि दिन मूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
लरिकाह् गमनह् ना उहवाह् रे आघाय
ओहि घडी उभय लरिकवा जे मनि रे गयनऽ
मालिक अब नहि ना खावइ बर रे यात
ओहि घरि उठल मारदवा बा बीर रे लोरिका
उठि केनि भयल बा नय नाह तइ रे यार
ओहि घडी आपन अउजरवा जे बाइ मुरीरत
तीन फेरा खोसत ना दतवाह् लेइ रे बाय
उहवा से रेंगल ना बानह् मलसवरय

सेहरि रेंगल ना अयनह् रे अड़ार
ओहि घड़ी ले लह् पाटेउवाह् पर रे दूधऽय
अउ धइ लेलह् डऽहरिया जे बिजरी के
एकदम रेंगल ना घरवां वा चलि रे जाऽत
आजु भाई निकललि ना वेसवा जे वा चनइनी
उहे भाई निकलि आंगनवा में भइली रे ठाढ़
आजु कहें दूहनहं ना भरल बानऽ दूधऽय
दूनों हाथे ले लइ ना बुकवाह् मेंनि रे थाम
एकदम ले लेह भीतरिया में धन रे गऽइल
चेरुवा में देलेह् ना दूधवा वा वइ रे ठाइ
आजु कहें आवंय रसोइया जे तप रे लागल
सिवहरि बइठल दुअरवाह् पर रे वाय

चनवा का पति के यहाँ से वापस आने की तैयारी

तव तक सूनह् ना हलिया जे चनवा कऽय
सासु से कहति ना वतिया जे अर रे थांइ
आजु कहें अम्माह् ना सुनिलह् मोरि रे सासुर
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु तक सूतल मऽहलिया में हमरे रहलीं
एक ठेनि देखल सापनवा जे अजरे गूढ़
आजु कहें वापइ ना सहजे जे मोर रे वानय
ओहि भाई भूइयांह् ऊतारल वान हमार
जवन हम भइयाह् ना हंवह् देख रे महदेव
उहे भाइल चलइ खटियवाह् पर रे वाय
अब हम जल्दी से गऽउरवा जे पहुं रे चावऽ
चलि केनि देखव ना बापवाह् भाई क मोह
नाहि फेरि नांवउ दीगरवा जे होइ रे जइंहऽय
दिनवाह् दिन के मेहनवा जे होइ रे जाय
ओहि घड़ी ऊठल मरदवा जे बाड़य रे सिवहरि
जाइके भाई बइठल कुरुसिया जे पर रे बानऽ
घरवां से नीकलिल ना मातरिया बा सिवहरि कऽ
बेटवा के पंजरेह् ना गइनी जे माई बइठी
आजु कहें सुनबह् ना भइयाह् मल रे सीवहरि
एठियन तूं मनबह् काहनवांह् रे हमार
दूलहीय सूतलि भवनवां में तोहरे रहलीं

उहे भाई सपनाह् देखले बाइ अज रे गूढ
जवन उनकर वाविल ना सुगवा जे वान रे सहदेउ
उहे भाइ लटकल खटियवा पर बान रे आज
जवन उनकर भइयाह् ना महदेव हव रे गऽउरा
उहे भाई लीखल ना भूइया जे बानऽ उतारि
जल्दी से दूलही के नइहरेय पहुँ रे चइबऽ
जाइ केनि देखइ ना भइयाह् बापे क मुह
नहिं कवनो नावइ दीगरवा जे होइ रे जइहंऽय
दिनवाह् दिन भेह् मेहनवा जे होइ रे जाय
एतना जे कहति ना धनवा जे बाइ रे बुढिया
सेवहरि क गयल ना मनवाह् रे बईठ
आजु कहे हो हो ना दइयाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मथवाह् रे लीलार
बुजरीय कइसेह मुदइया जो हटि रे जातय
आजु हमरे हटि जाति ना सिरवा के क्षर रे बार
आजु मोरे दा मइयाह् ना पूतवा जे पति रे रहबय
उठकइ खावइ मनहूठवा जे हमरे भात
·······घमवाह् होइ गइनऽय
पानीय पात्तर पियलवाह् बानऽ रे खाई
ओही घडी रेगल ना धनवा जे बाइ रे पन्ना
पीछे पीछे रेगल ना मलवा बा चलि रे जातय
एकदम हूलल जंगलवा मे बान रे जाऽय
दूनो भाई रेंगइ ना गोडवाह् लेइ रे लोरऽय
ओहि दिन आगेह ना फलवाह् बा बढउ ले
अब ओहे माटिय बेवरवाह जे बह् रे बानी
ओहि घडी नादिम बेवरवा पर चलि रे गयनऽ
नदियाह् आइल कररवा बा फुफरे कारि
नात कही डोलइ ना डडिया जे देख देखऽना
आ फेरि दुन्नोह करारवा पर वाना रे ठाढ
ओहि घडी वोललि ना बेसवा जे बा चऽनइनी
सइया तू मनबाह् काहनवाह् रे हमार
देख भाई रतियाह् ना तनवा जे तोहार हउवा
दिनवाह् तऽनइ ना हउवाह् रे हमाऽर
सइया तू उलटि क पछवा जे ताकत रहबऽ
हमहूं कइ लेइ ना नदिया मे अस रे नान

रतियांह् रामइ रसोइया जे हम वनउली
दिनवा में महकत ओढ़नवां जे वाड़ हमाऽर
ओहि घड़ी सोझह् मारदवा जे वा वीर सिवहरि
ऊलटि ताकत ना पहरन परि रे वाय
तव तक सूनेह् ना हलिया जे चनवा कऽय
धीयवाह् मारति काछरिया जे ले ले रे वाय
ओही घरी डूब्विय ना मरले जे हलि काररवा
एकदम आधेह् ना नदिया में उति रे राइ
ओहि घरी आधेह् ना नदिया जे होइ कऽ निकलल
डूब्विय मारीय कररवा पर चढ़ि रे जाइ
ओही दिन वोललि ना वेसवा जे वा चऽनइनी
सइयां तूं मनवह् काहनवाह् रे हमार
आजु तूंय आपन ना गंठियाह् रोक लगाइ कऽ
आपन खेरहा ना मेहरि तूंय खूंय वनाइ
आजु हम सांझिय जावंइया के देख रे लगि हंय
गउरा में हमहूं कऽरव नाह् धिग रे हार
अव फेरि ओहीन कर चन्ना वाड़य
ओही घड़ी हहरल ना मरद रे सिवाहरि
अव कहें हो हो ना दइवा मोर नारायन
का वरम्हा लिखलह ना मंझवा रे लिलारऽय
देख भाई सगरउ ना गुनवा दउ रे दीहलऽ
चारि हाथ पंवरइं के गुनवा नाहिं वानऽ
नहिं हम चारिय ना हथवा जउं पवांरी
ऊतरि होइति वेवरवा ओहि रे पारऽय
चनवाह् उढ़रीय उढ़रवांन कइ जोसइ
अव हम देखिति वेवरवा जे ओही रे पार
एतनाह् कह कह ना मलनाह् वाइ रे लवटल
आपन गयल विजहिया देख रे घर

पति के घर से भागती हुई चनवा का बांठा द्वारा घेरा जाना

ओहि घड़ी भागलि ना चनवाह् ओही रे पारऽय
धियवाह् चुनलि ना धोतियांह हथवां में
पवंरलि भींजलि ना धोतिया जे दूनो रे वानी
उहै भाई गारइ ना पनिया जे धोतिया कऽइ
गार केनि लेह् लेह् ना धोतियाह् झार रे वाई

हाथे गोड़ घइकेह्, ना धनवाँहे् तइ रे यारय
उहवाँ से भागिलि ना बेसवाह् जाइ चनइनी
कै भाई जगल ना झड़िया मे चलि रे जाय
जउने घरी आधेह् जगलवा मे चलि रे गऽइल
बठवाह् खेलत ना बनवा जे बानऽ अहेरऽय
उहवह आठहि कुकुरवाह् नव रे धनुहा
बठवाह खेलइ ना बनवाह् रे अहेरऽय
जवने घड़ी पड़ि गयल नऽजरियाह् चनवा पऽर
बठवाह् हँसतइ गयल बाह ले नियराई
आजु कहँ लेइ कह् धानुहियाह् हथवा मे
कुकुरन मारत मा चमरा बा बहि रे माई
उहे भाई ले लेह् धानुहियाह् ले ले दवरऽल
तब फेरि ले लेसि मा चनवा के पछि रे आइ
आगे आगे भागलि ना बेसवा जे जाइ चऽनइनी
बठवाह् लेलेह् चामरवा बा पछिरे याइ
जउने घरी कुछुय जगलवा मे हलिरे गऽयऽनऽ
चानवाह् थाकलि जगलिया मे बाइ रे जास
ओहि घरी ईज्जति बचावे केनि रे चन्ना
बोलति बाडइ लारमवान कइ रे बोल
आजु कहँ सुनबह् चामरवाह् मोरि रे पती
अब तूय हउवह् मलिकवाह् रे हमाऽर
देख भाई तोहरइ ना छोड़िया के आन कऽ न होबय
बाकी आजु बरत भूखल बाईं अत रे वार
कउनो जे गड़बड़ि ना देहिया जे कइ रे देबऽ
आजु मोर बऽरत खगनवाह् होइ रे आइ
एतना जब कऽहति ना बेसवा जे बाय चऽनइनी
चमराह् धीरजि ना घइले जे लेइ रे बाय
तब फेरि बोलति ना बेसवा जे बा चऽनइनी
अउ फेरि सुनबह् ना बठवाह् रे हमाऽर
आजु भाई हमह् ना दिनवा बा लेइये थोडा
अब हम कऽरब ना एठियन फर रे हार
इहे भाई फरलि तेतरिया लइये वाने
अब लेइ आवह् तेतरियाह् रे ऊठाई
उहवा से रेंगल ना बाठवा जे बा चामरवा
एकदम रेंगल आ पेंड़वाह् तर रे जाय

आजु भाई सुग्गाह् चीरइया के चट दे तरिया
उहै भाई गीरलि धारतिया में वाइ रे जाय
चमराह् गुइयांह् आ ले लेह् बा वाऽटुरिकऽ
अंगउछी में ले लेह् ना चनवाह् किह् रे जाय
जवने घड़ी कूरइ तेतरिया जे चमरा देहलेनि
चनवाह् जरि मुरि भइलिह् रे खंगार
आजु भाई जूठइ ना कटवा जे चीड़ियन कऽय
कइसे हम करीय ना एकर फर रे हार
आजु मोर खंडित ना होइ जइहंइ वरतवा
ए महं भूखलेह् में हम करइ रे जाइ
ओहि घड़ी सूनह् ना सइयांह् सुख रे नन्नन
आजु मोरे मुनिलह् ना सिरवा के मउरे यारऽय
देख सइंया रूठई (जूठई ?) ना टटवा (कटवा ?) जे कालि अइलऽ
आजु हम भूखब विरिथवा जे होइ रे जइहंऽय
आजु तूंह चढ़ि जाह् ना पेड़वा जे तेतरीय के
पेड़वाह् से लेवह् तेतरियाह् रे उतारी
जउने घरी चाढ़ल चामरवा तेतरी पऽर
उहे भाई चढ़ि गयल ना डंड़िया रे अटाटइ

चनवा द्वारा सत का सुमिरन—
चमार बांठा—छेड़खानी करने में असफल

ओहि घरी सुमिरइ ना सतवा लेइ रे चन्ना
आजु कहीं गउराह् क सुमिरऽ जे गउरे रांइ
वोहवा के सुमिरउं कनिकवाह् रे मुरारि
आजु कहीं सुमिरल भावनिया जे लोरिके कऽय
दुरूगाह् देखह् ईज्जतिया जे गइनी हमाऽर
ओही घरी चमराह् के डंड़वा जे कइये देतऽ
डरियाह् फूटी आकसवा में चलि रे जात
डरिया के ऊठत बंवरिया जे पेड़वा में
चमराह् के बन्हतंह बंबरिया के माइ रे डारि
ओहि घरी एतरि तेतरिया जे होइ रे गइनीं
अब फेरि डरियांह् आकसवा में चलि रे जाय
चमरा के बान्हइ बंवरियाह् के घूमाइ कऽ
चमरा बन्हलइ ना ओही में रहि रे जाय
उहवां से भागलि ना बेसवा जे बा चनइनी

सोघरि लेह् लेह् गउरवा बा चलि रे आइ
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
चननवाह कोसइ अन्दरवा जे भागि रे गइनी
अउ फेरि गइनीय पारगवाह् कुछ रे दूरऽ
के फेरि ठाडाह् ना होइह् गई चऽनइनी
अब धनि सोचति ना मनवाह् मेनि रे बाडऽय—
आजु कहँ हो हो ना दइवा मोर नारायन
क्या बरम्हा लिखलह् ना मझवा रे लिलार
आजु भाई आयल ना एठियन बाइ एठियऽन
चमराह् हमरेह् पछेडवा देख रे धाई
जवन भाई बन्हलइ चामरवा मऽरि जइहइ
दिनवाह् दिनकइ होइहइ पूज रे मानऽ
ओहि घरी गउराह् कऽ सुमिरत गउरे राइनि
बोहवा के सुमिरत कानिकवा जे बाइ मुरारि
आजु कहँ सुमिरइ भवनिया जे लोरिके कऽय
दुरूगा तू लगतेउ ना बेडवाह् रे सहाय
चमरा के कटि जा बावरिया जे पेंडवा कऽय
बाठवाह गीरइ धरतिया मे भहरे राय
ओहि घरी परगटि दुरूगवा जे माइ रे गऽइनी
अब फेरि कटलेनि बावरिया जे धूम रे राइ
चमराह् गीरल ना डनिया जे सरगे में
आजु भाई गीरल धरतिया मे भह रे राय
उहो आपन धूरिय माकरवा जे आपन धरलेसि
हथवा में ले लेह् धनुहिया जे उठाय
पछवाह् रेंगल ना दवरस धूदले जाला
आगे आगे भागलि चऽनइनी बा चलि रे जात
जवने घरी गउराह् सिवनवाह् चलि रे गइनी
आगवाह् बानइ नाह् ओठियन मेंहि रे हारऽय
सेहियाह् लेलेह् गदेरियाह् बान रे टाकऽय
तव तक सूनह् ना हनियाह् चामरा कऽय
उहे भाई भारीय चिकरियाह् बाइ रे देनऽय
आजु कहँ सुनवह् ना मइया घर रे बाइऽय
एठियन मनवह् बहिनवाह रे हमार
देसवा में सबवेइ गावनवा से उतरमीं
बियहनाह् भागनि बीयहिया जाइ हमारऽय

आजु भाई सुग्गाह् चीरइया के चट दे तरिया
उहै भाई गीरलि धारतिया में बाइ रे जाय
चमराह् भुइयांह् आ ले लेह् बा बाऽटुरिकऽ
अंगउछी में ले लेह् ना चनवाह् किह् रे जाय
जवने घड़ी कूरइ तेतरिया जे चमरा देहलेनि
चनवाह् जरि मुरि भइलिह् रे खंगार
आजु भाई जूठइ ना कटवा जे चीड़ियन कऽय
कइसे हम करीय ना एकर फर रे हार
आजु मोर खंडित ना होइ जइहंइ बरतवा
ए महं भूखलेह् में हम करइ रे जाइ
ओहि घड़ी सूनह् ना सइयांह् सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह् ना सिरवा के मउरे यारऽय
देख सइंया रूठई (जूठई ?) ना टटवा (कटवा ?) जे कालि अइलऽ
आजु हम भूखब बिरिथवा जे होइ रे जइहंऽय
आजु तूंह चढ़ि जाह् ना पेड़वा जे तेतरीय के
पेड़वाह् से लेबह् तेतरियाह् रे उतारी
जउने घरी चाढ़ल चामरवा तेतरी पऽर
उहे भाई चढ़ि गयल ना डंड़िया रे अटाटइ

चनवा द्वारा सत का सुमिरन—
चमार बांठा—छेड़खानी करने में असफल

ओहि घरी सुमिरइ ना सतवा लेइ रे चन्ना
आजु कहीं गउराह् क सुमिरऽ जे गउरे रांइ
बोहवा के सुमिरउं कनिकवाह् रे मुरारि
आजु कहीं सुमिरल भावनिया जे लोरिके कऽय
दुरूगाह् देखह् ईज्जतिया जे गइनी हमाऽर
ओही घरी चमराह् के डंड़वा जे कइये देतऽ
डरियाह् फूटी आकसवा में चलि रे जात
डरिया के ऊठत बंवरिया जे पेड़वा में
चमराह् के बन्हतंह बंबरिया के माइ रे डारि
ओहि घरी एतरि तेतरिया जे होइ रे गइनीं
अब फेरि डरियांह् आकसवा में चलि रे जाय
चमरा के बान्हइ बंवरियाह् के घूमाइ कऽ
चमरा बन्हलइ ना ओही में रहि रे जाय
उहवां से भागलि ना बेसवा जे बा चनइनी

सीधरि लेह, लेह, [illegible] रे [illegible]
सुनह, ना हलियाह, [illegible]
चमवाह कोलइ [illegible] रे [illegible]
अउ फेरि गइनोव [illegible] रे [illegible]
के फेरि टाहाह, ना [illegible]
अब धनि सोवति ना [illegible] रे [illegible]
आजु कहें हो हो मा [illegible] [illegible]
बथा बरम्हा निखन्ह, ना [illegible] रे [illegible] [illegible]
आजु भाई आरन ना एक्किन बाइ एक्किन
धमराह, हमरेह, पठेहवा देख रे धाई
जवन भाई बन्हनइ चामरवा मारि बरहइ
दिनवाह, दिनकइ होइहइ पूज रे मानउ
ओहि घरी गउराह, कउ सुमिरत गउरे राइनि
बोहवा के सुमिरत कानिकवा जे बाइ मुरारि
आजु कहें सुमिरइ भवनिया जे लोरिके [illegible]
दुरूगा तू लगहेउ ना वेहवाह, रे सहाय
धमरा के कटि जा बावरिया जे पॅडवा [illegible]
बाठवाह गौरह धरतिया में महरे राय [illegible]
ओहि घरी परगटि दुरूगवा जे माइ रे गउइनी
अब फेरि कटलेनि बावरिया जे धूम रे राइ
धमराह, गौरल ना हमिया जे सरगे में
आजु भाई गौरल धरतिया मे मह रे राय
उहो आपन छूरिय माकरवा जे आपन झरनेलि
हथवा मे ले लेह, धनुहिया जे उठाय
पछवाह, रेंगल ना दवरल कूदले जाला
आगे आगे भागलि चउइनी वा चलि रे जात
जबने घरी गउराह, सिवनवाह, चलि रे [illegible]
आगवाह, बानइ नाह, ओठियन भेंडि रे [illegible] [illegible]
खेडियाह, लेलेह, गडेरियाह, बान रे [illegible]
तब तक सूनह, ना हलियाह, चामरा [illegible]
उहे भाई भारीय चिकरियाह, बाड रे [illegible]
आजु कहें सुनबह, ना मइया चर रे [illegible]
एठियन मनबह, काहनवाह रे हमार
देसवा में सझवेइ गावनवा ले [illegible]
बियहनाह, भागलि बौयहिया जाइ हमार[illegible]

तनी एक छेंकतह् आगरवा जे वियही कऽय
हमहूँ आइल करीववा में रे पहुँच
ओहि दिन बोलति ना वेसवा जे बा चनइनी
दरियाँह् करई ना बेड़वांह् रे जाबाव
आजु कहँ सुनवह् ना एठियन तूं ये अऽहीर
अब सुनि सुनि लहना बेलिया के चर रे वाह्
देख भाई हमरेह् ना छेकवेह् रे छेकइवें
अब फेरि दिनवाह् दुपहर जो होइ रे जाइ
अब तोहार हुइंय ना खजिया जे सिगठी कऽय
अब तोहार करिहंइ सिगठवा जे खइरेकार
अब घरे बालउ ना वचवा जे मर रे लागिहंऽय
केतनाह् जइहंइ ना धनवा जे तोर ओराय
आजु भाई संचेह् गड़ेरिया जे रहि रे गयनऽ
फेरि चन्ना भागलि ना अंगवा बा चलि रे जाय
आजु कहें ललह चीकरिया बीर रे वांठवा
आजु भइया सुनिलह् ना हरवा के हररेवाह्
ओहि दिन वोलल ना ओठियन वांठ चामरवा
भइयाह् सुनिलह् हरवाहवा रे हमार
देख हम संझवइ जे गवनवा लेइ गीरवलीं
विहनाहि भागलि वीयहिया जे बाइ रे जात
तनी एक छेंकतह आगरवा जे वीयही कऽय
दम भरी आइल हमहूँय रे पहुँच
ओही घरी बोललि ना बेसवा जे बा चऽनइनी
अब भइया सुनिह लेवह् ना हर रे वाह
अब कहें हमरेह ना छेकवेह रे छेकइबे
दिनवांह् दुपहरि होइवाह तोर रे जा
तोरे भाई खेतवा पर अइहंय रे किसानवा
अब तोहसें पूछिहंइ ना कामवा रे लेलरेकार
आजु भाई नाहिय ना कामवांह् लेइ देखइबऽ
अब तोहार बऽनीय ना सठवां जे कटि रे जाय
घरवांह बालउ ना बचवा जे मरि रे जइहंऽय
ए महं कवन सारथवा जे तोहरी बाय
उहवां से भागलि ना बेसवाह् रे चऽनइनी
अब धनि चढ़ल गउरवाहं गुजरे रात
अगवांह् रहुइं सिवनवा में गइ रे पसरल

बंठवाह्, [illegible]
ओही घड़ी [illegible]
बंठवा ते [illegible]
आजु मोर [illegible]
एठियन [illegible]
देख हम [illegible]
अब फेरि [illegible] रे पारज्य
जउने घरी [illegible] में हति रे गइली
बाठवाह्, आउइ कुकुरवा नव रे घमुहा
खेलत बानहू, जगलवा रे अहेरऽ
जवने घरी परि गयल ना नजरिया चनवा पऽर
कुकुरन के मारल धानुहिया बाइ बिचारो
चनवा क धइलेहू, बाढ़इ ना पछि रे [illegible]
आगे आगे भागलि ना हमहु चलि रे [illegible]
बछवा ते सुनवेहू, पिढइया रे [illegible]
तनी एक छेकेहू, आगरवा त [illegible]
हमहूँ जाबइ ना किलवाह रे [illegible]
ओहि दिन छूटल ना बाठवा के [illegible]
बाठवाह्, रँगल बाडइ माह्, [illegible]
जउने घड़ी घोडाह्, करोवक [illegible]
बछवाह्, झूकल ना कोठिन [illegible]
ओही घड़ी भागल चनवा [illegible]
कुछ दूरि ले लेह बाठवा [illegible]
तब तक घूमत [illegible]
चनवाह गइनि ना [illegible]

गउरा के सागर पर [illegible]
सारे कुँओं में हड्डियाँ [illegible]

मूनहू, ना हलियाह्, [illegible]
केहि फेरि आइन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

बियहीय लेइकह् कोठरिया मे सोवल रे बानऽ
ओहि दिन सुनह् ना हलियाह् बठवा कऽय
जेतनाह् रहनह् ईनरवा गउरा मे
ओमह् हाडइ गोबरवा देत रे डाली
गउरा मे एकइ ईनरवा जे बचि रे गयनऽ
जवन भाई बाडइ ना लोरिका के दर रे बार
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
बठवाह् कइलेसि अनरोधवा जे बडा रे भारी
ओहि घडी रागह् दाऽइयवाह् परजा रे लिखऽय
सब कनि काऽहत जा चनवा बा वरि रे यारऽय
आजु भाई जवनेह् ना दिनवा जे राम साऽमइया
जचनाह् करत चामरवा जे बाड रे वारय
एक ठेनि बचल ईनरवा बा लारिके कऽय
उहे भाई बाडइ ना टोलवा रे अज रे राति
आजु कहँ राजाह् ना सुनिलऽ जे मह रे राजा
मालिक मनलह् ना सिरवा के मलि रे कार
आजु भइया बइसेह् बीटिया जे काढि रे काऽनो
अब देइ देबह् चामरवा के तुय रे हाथ
कहाँ पइबऽ सागर ना भरवा जे राजा रे दूधय
के साठी पोरइ भरि सोनवा जे कहाँ रे बाय
आजु भाई चमराह् हरऽवनी जे डालि रे देहलेनि
गउरा मे मचिय गइलिय अब अन रे खानि
बलुकनि परजाह् ना हवइ तोहार लोरिकवा
दूसरेह् जातीय का बिलवा जे हवे हम्मार
बलुकन मारइ चामरवा के आइ कऽ लारिका
चनवा के लेइ जाउ काढुववा मे देख रे काढि

चनवा की माँ सेल्हिया का लोरिक के पास सहायता के लिए जाना

ओहि घडी तऽवनेह् ना दिनवाह् राम समइया
आजु भाई रानीय ना रजवाह् बऽतियाइकऽ
अपने मे कइलनि ना बतियाह् सम रे तूलऽय
आज कहँ बडेह् सवेरवाह् केनि ये जूनऽय
राजाह् पठवत रानियवाह् केनि रे बानऽ
बियही ते चलि जोह ना घरवाह् लोरिके कऽय

लोरिको से काहेह ना वतियाह् समुरे झाई
लोरिकाह् अवतइ ञामरवाह् मारि रे देतऽइ
दिनवांह् दिनकइ झगड़वाह् टूटि रे जातऽय
लोरिकाह् लेइ जाइ काढुववा में चनवा के
उहे भाई भोगिय ना कीलवाह् रनि रे वासऽय
इतनाह् कऽहति ना वानेह् रानी राजा
अउ फेरि रानीय सऽबेरवां में रेंगि रे देइ
एकदम रेंगलि ना रनियाह् वा रेंगावऽल
अब चलि गईलि लोरिकवा के दर रे बाऽर
जिनकर छोटीय वाखरिया बा पितरी कऽय
भीतराह् बहुत बानइ नह फल रे हार
आजु कहैं सोनेह् ना गुजवाह् केनिये मचवां
लोरिकाह् सूतल पालंगिया पर देख रे वाय
आजु कहैं वड़ेह् सऽबेरवाह् केनि रे जूनवा
मंजरीय उठलि ना धियवाह् देख रे वाय
उहे भाई ढुरि ढुरि आंगनवा जे बाइ बटोरऽय
और फेर वटोरतइ दुवरवा में चलि रे जाय
ओहि घड़ी अइनीय ना देखियह् अम्मा सासुर
वोलति बानीय लारमवा के देख रे बोल
कहैं दुलहीय ना सुनि लह तुंय ये माजर
काहनाह् मनवह् ना एठियन रे हमार
आज कर लोरिक ना भइया जे कहां रे वाड़ऽय
ओकर पताह् ठेकानवा जे नाहिं रे वाय
ओहि घड़ी वोललि ना धियवाह् महरी कऽय
जेके भाई दावन मांजरीया जे बाड़े रे नाम
आजु कहैं सुनवह् ना सासुय मोर गोसाईंन
बेटवाह् सूतल पालंगिया पर वाने रे बाइ
आजु कहैं जाइकह् बेटवना जे आपन जगाइ कऽ
आपन मतलव ना बतिया जे बति रे याय
दिन रेंगलि ना धनवा जे बाइये ओठियन
रानीय रेंगलि सेल्हियवा बा चलि रे जाय
आजु कहै गयलि सेजरिया जे लोरिके के
चदराह् तानति ना मुखवा पर देख रे बाथ
आजु कहै तनिकह् चादरवा जे बा जगावत
तवउं नाहिं ताकत मालकिया जे वाड़े उघार

ओनकेह् एहर ना ओहरइ जे उझिलावऽ
उन्हे भाई तन्नीय सावदिया जे नाहिं रे वाय
लोरिका के चिउटीय बकोटित सेदये रनिया
तव नाहिं जागत अहीरवा के बाइ रे पूत
ओही घरी रानीय ना मरनीय खिसि रे याई
फेरि भाई निकलति मजरियाह् खिहा रे जाइ
आजु कहँ दुलहीय ना मुनिलह् मोरि बहुरिया
कइसेह् जागीय बेटवनाह् रे हमार
आजु पिया कवन चनदवा जे हम बतावऽ
तव फेरि जगिहइ बेटवनाह् रे हमार
ओहि घरी बोलनि ना चनवा उ बानी रे [illegible]
सासुव मनवह् [illegible] रे हमार
आजु कहँ धोतियाह् ना छोड़ि दह् [illegible]
अब तू घइ दह् ना [illegible]
जाइ केनि [illegible]
तब्बइ जगीहइं ना [illegible] रे हमार
रनियाह् [illegible]
[illegible]

बुजरी से भगलेह् ना सेजियाह् रे हमारऽ
जाइ केनि सुतलेह् सेजरियांह् रे हमार
एने बोललि ना सेल्हियाह् लेइये बाने
भइयाह् सुनवह् लोरिकवाह् मोर रे बातऽय
जउन दिन भागल बिटियवाह् बूजरीय से
अब होइ गइनीय बेवरवा एहि रे पारऽय
जउने घरी आथेह जंगलवा में बेटी रे अइनी
चमराह् खेलत ना बांठवाह् रहे अहेरय
उहे भाई परि गइल ना नाजरिया जे बिटिया पऽर
कुकुरन के मारत धानुहियांह् बाइ रे हो कऽय
आजु कहें चमराह् ना लेहले वा पछि रे बाई
एकदम धइलेह् पछेड़वाह् बिटिया कऽय
चलि अयनं नागर गउरवांह् मोर रे गांवऽय
बेटवाह् जेतनाह् ईनरवाह् लेइ रे रहनऽ
हड़वाह् गोबर देलेह् वा ढोसरे वाई
फरचाह् पानीय सगरवा के देख रे बानऽ

लोरिक और बांठा का युद्ध—बांठा की मृत्यु

चमराह् बइठल ना परगट बाइ अगोरी
देख बेटवा तीनिय या दिनवांह तीनि रे रातऽ
अन्न पानी बिनाह् गउरवा के मरे रे लोगऽ
बेटवाह् तोहरइ ईनरवाह् इहे रे बानऽ
तोहरे डऽरन इनारवा जे बाचल रे बाइ
ओही घड़ी बोलल अहीरवा बा देख अंघइया
सेल्हियाह् सुनवेह् ना रनियाह् रे हमारऽय
देखु भाई लावटि गोरिहियां जे तोही रे चल चलवे
आपन देखबेह् ना किलवा में चलि रे कामऽ
जवने दिन सातइं घरियवा दिन रे चढ़िहंऽ
अब होइ जइहंय नाहनवा कइ रे जूनऽ
ओहि घरी कऽरब चऽढ़इया सगरे के
चलि केनि कऽरबि सांगरवा में असरे नानऽ
देख भाई कवन मारदवा रख रे वारऽ
आजु फेरि जातह झागड़वा फरि रे याई
बुढ़िया त तउं ना घरवा जे चलि रे जाबे
दस बजे आइबि पोखरवा पर तई रे याग

लवटि ना सेल्हिया जे घरे रे अइनी
अब फेरि अइनीय ना किलवा जे भव रे नार
ओहि घडी ऊठल मारदवा जे बा बीर रे लोरिका
उहे भाई दीसा मयदनवा जे होइये गयनऽ
कुलवाह् कइलेह् मुखरियाह् लेल रे कार
ओहि घडी कसइ ना पनियाह् रे पीयउवा
कचित भयल ना सूबवा बा तइ रे याऽर
आजु कहँ टऽरइ ना बीरवाह् लेइये ओठियऽन
कूंचई लगनह् मगहिया जे ढोलि रे पान
ओहि घडी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
अहिराह कूचत मागहिया वाइ रे पानऽ
एक ठेंनि लेहलेसि फुरउवा हाथवा मे
जाइकनि बइठि सागरवा केनि रे चऽढी
भुक भुक भुक पिडउवा बाइ रे भरल
बठवा के कानेह् सबदिया चलि रे गइनी
ओहि घरी कानेह सबदिया जे चलि रे गइनी
बठवाह् देलाह् ना बतिया जे लल रे कार
आज कहँ हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मथवाह रे लिलार
के भाई अपनेह् ना जघहिया वरि रे अइयां
के चढ़ि आयल सागरवाह् मेनि रे चाल
के फेरि केकरेह् ना मुखवा मे दात रे जमनऽ
तूय भाई देलह सागरवाह् रे जुटाइ
ओहि घडी बोलत मारदवा बा वीर रे लोरिका
अउ दरकारत ना बेडवाह् रे जावाव
आजु भाई अइसन सीयरवाह् भीटवा पर जयनऽ
सरवाह् हुवाह ना हुववा वा लोरि रे यात
ओहि घरी बतियाइ ना बतियाइ जे होरे लाग सरबर
बतियाह् चालीय चलल बाय मय रे दान
दूनो भाई चलनह् पयतरा जे ओही के भीटे
जइसेह् भादव भइसवा रे मक रे नाय
आजु कहँ खीचि कह आवरइया जे मारऽ रे लोरिका
चमराह् नीकलि आकसवा मे चलि रे जाइ
जवने घडी उहाह् से अदह मारि रे देला
आइकनि होइ जाइँ धारतियाह् मेनि रे ठाढ

चामराह् खींचि केय ना दउवा मारि देला
लोरिकाह नीकलि आकसवा में देख रे जाय
उहे भाई ईठउ ना पीठवा जे मारि देहलेनि
पट सेनी भयलंह् धरतियाह् मेनि रे मार
ना त भाई ऊहई ना चितवा जे होत रे वानऽय
ना त उहो ओहइ ना होतइ देख देखाऽय
ओही घरी जीदल अहीरवा वा वीर रे लोरिका
दरियांह करइ ना वेड़वांह् रे जवाव
आजु कहैं सुनवेह् ना वांठवाह वीर रे भइया
एठियन मनवेह् काहनवांह् रे हमाऽर
तनी एक मारीय घंटवाह् केनि ये पाइ कऽ
भिट भरि आड़े झगड़वा जे माफी रे देइ
तनी एक मोहलति ना देइदे हमहूँ के
हमहूँ पानइ ना खाइलेल लेल कार
ओही घड़ी छुट्टीय लाड़इया क होइ रे गइलीं
अहीराह् रेंगल गाउरवा में चलि रे जाय
सोझइ गुरूवाह ना घरवा अव रेंगलवा जातय
अव फेर वानह् किरोधवा में भरि जाय
ओहो घरी निहुरल न रहनह् लेइये अजई
देखत वानह् लोरिकवा के रेंगल रे आई
आजु मोरे जीदल ना चेलवा जे आवइ लोरिकवा
उहे भाई पहिल आवरिया जे मारि रे देइ
ओहि दिन कुठिल ना हलि गय गुरु अजइया
संचेह वइठल कूठिलियांह मेनि रे वाय
ओहि घड़ी विजवाह् ना ढुरि ढुरि अंग वटोरऽय
दुअरा पर लोरिक दुलेरुवा जे भयन रे ठाढ़
ओही घरी लोरिक दुलेरुवाह् बाइं रे ठाढ़ऽय
अब फेर सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अव फेर कालीय कुरुसियाह् बीच नीकललेंन
अब बइठ वइठह् देववाह् रे हमारऽय
आज तोहार गुरुह ना घरवा जे नाहीं रे बानऽय
ऊ हलि गयल जाजमनिया ? में गुरु तोहारऽय
कवन बाड़इ ना कामवा जे गुरुवा से
हमकेनि तू देवहू डऽहरियाह् रे वताई
आजु कहैं सूनबेह् ना बिजवा रे धोबिना

कहनाह् मनबेह् ना बिजवा रे हमाऽरऽय
तब कहा हमरेह ना धवरीय रे कलानी
तब तोहार भरल लेंहड़वा देख रे वाड़ऽय
तब कहँ लोरिक के जंघिया के बरि रे अइया
गुरुवाह् चऽरत गऽद्हुवा जे बानऽ अनेक
आजु कहँ सुनबेह् ना गुरुवा जय गुरुआइनी
एठियन ते मनबेह् काहनवाह् र हमाऽर
आजु कहँ जउनेह् ना वउवा जे हमरे देला
उहे दाव देलह् ना ओहूय के देख बेतार
आजु कहँ दूनोह का एकइ दाउ रे देहलऽ
लड़त लड़ि गयल झगड़वा जे दिन भऽर
न त हुई उहई न चितवा जे नातऽ हमही
गुरु अइसन काहे झऽगडवा जे देइ रे देह
आजु हम रिसिन आजइया के जउन रे पाई
अब दुइ भागेह देइति लाह् ढोलि रे धाइ
ओहि घडी हाथलि ना बिजवाह् बाइ धोबिनिया
देवर मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
आइ केलि बइठि कुरूसिया पर देवर ह्वा जइबऽ
आज तूह देखह् ना हलियाह् रे हमारऽ
आज कहँ सगरउ ना गुनवा जे गुरु के सिखसऽ
एक गुन सिखलिह् ना एठियन रे हमारऽय
लोरिकाह् बइठि मचियवाह् केनि रे गइनऽ
अब हलि गऽइलि कोठरियाह् भेनि बाड़ऽ
आजु भाई दुइ बीरा ना पनवाह् बा लगउले
एक बीरा अपनेह् ना मुखवा मे लेइ दबाई
एक बीरा दे लेलि लोरिकवाह् केनि रे हाथऽय
उहे भाई ले लेह् ना बीरवाह् मुखवा मे
देखि लह् दावइ ना पेचवाह् केनि रे मरले
अहीराह् धोबिय का बीरवा जे बान चबात
ओही घडी खइले ना बीरवाह् लेइये लोरिका
अब दूनो चढनह ना पयतरा जे ओही दऽम
आजु भाई बिजवाह् ना लोरिका जे चले पयतरा
अउ फेरि अयनह् आवरिया पर नगि रे घाय
अब बिजा फिचकइ पीछुकवा जे मारि रे देहलेन
लोरिके के बहल ना जधवा बरि रे याइ

ओहि दिन बोललि ना विजवाह् वा धोबिनिया
काहनाह् मनबाह् देवरवाह् रे हमाऽर
देख भाई हम तुअ झागड़वा जे कटि पयंतरा
कइसन तोहार वहति रूधिरवा जे देख रे बाय
आजु कहैं ताकइ ना ओठियन लेइये वंठवा ?
·········ताकइ ना ओठिन लेइये लोरिका
अब फेरि मारत आवरियाह् लेइये बाय
आजु भाई गीरलि आवरियाह् देहियां पर
छन मेंनि जइहंइ झागड़वा जे फरि रे याइ
ओहि घड़ी दस पाँच बाढ़निया जे ऊपर लगवलें
विजवाह् कऽहति बा वतिया रे समुझाइ
आजु कहैं देवर ना लंवङ्य सुनि रे लेबऽ
जाइकनि देबह् झागड़वाह् एहि लगाय
अइसेंहि धोखवाह् के हथवा जे मारि रे देहऽ
ऊपरा जे गिरि जाइ बिजुलिया जे तर रे वार
छन में न जइहंइं झागड़वा रे फरि रे याई
अव टूटि जइहंइ झागड़वा के देख रे ओर
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
लोरिकाह् दुइअइना विरवा जे वीर रे पानऽय
अव फेरि ले लऽह ना छोटवा जे गठि रे याई
ओही घरी देलह सागरवा पर जोर से खंखारी
जोड़ियाह् आइ आवरिया पर भइलि रे ठाढ़ऽय
आजु कहैं सुनबेह ना भइयाह् गुर रे भाई
अउ तोर हमार झगड़वा जे फरि रे याय
ओही घरी चलनह पयंतरा जे ओही रे दम्मऽ
अवर भाई ओहीय सागरवाह् केनि रे भींट
आजु कहैं दुन्नोह आवरिया जे चलइ रे लगनी
आ फेरि आयल अवरिया में नगि रे चाइ
लोरिकाह् घींचि कइ पिचुकवा जे मरि रे देहलेन
बंठवा के वहल ना थूकवाह् चलि रे जाय
ओहि घरी बोलल ना मलवा वीर रे लोरिक
वांठ भाई मनबेह् काहनवांह् रे हमार
देखु भाई हम तइ ना चऽलत बाड़ी पयंतरा
कइसन तोरे जांघिय ना फोरि के खुन रे जाइ
ओहि घरी ऊलटि ना जंघिया जे लगल रे ताकय

बीच खीचि देहलेसि बिजुलिया वा तर रे वारी
जउने घरी गिरि गइस ना खडिया जे अहीरे कञ्य
अइसइ खल नहिं इइनवा जे कटले वाय
ओहि घरी कटि गयल ना हथवाह् चमरा कञ्य
चमराह् गीरल घरतियाह् भइ रे राई
तब भाई गीरलि ना लसियाह् ओहि रे वोललि
आज कहैं भइयाह् ना सुनिलह् गुरु रे भइया
लोरिक मनवह् काहनवांह् रे हमारञ्य
आखिर त मारीथ सागरवा पर हम रे देहलऽ
बुद एक देतह् ना पनियाह् रे वइआई
आजु फेरि सोधह् आदिमिया बीर रे लोरिका
अब हलि गयल सागरवा मेनि रे बानञ्य
आजु भाई अजुरी ना पनिया वइ उठावत
तब तक सुनह् चामरवा कइ रे हालञ्य
चमराह् बायेह् न हथवा रे पसारि कञ्य
हडवाह् खीचत ना हथवा मेनि रे बानञ्य
लेइ काह् ले लेह् ना पनिया चढले आवा
जवने घरी खीचिय ना पेगियाह् मरि रे दे ले
अहीर के टूटल दाहीनवा जे बाइ रे गोड
ओही घरी उठि गयल चामरवा जे ओठियन से
अब फेरि काटइ के अहीरा के देख रे मूंड
ओही घरी फरकेह् बा भइयाह् रे दुरुगवा
दुरुगाह् झुकलि ओठिनियाह् सेनि रे बाय
लेइ कनि उडि गई अहीरवाह् लोरिक बञ्य
एकदम बाहर सीवनवा मे लेइ रे आय
अगुरी मे अमरित दुरुगवाह् माई ये [illegible]
ओनकर समलव सरीरवा जे [illegible]
मुनह् ना दिनवाह् राम [illegible]
लोरिकाह् अपनेह ना गमनह् [illegible]
चनवाह् देखति पानिया [illegible]
जवने घडी गीरल ना [illegible]
चनवाह् उतरलि ना [illegible]
ओहि घडी आइलि ना [illegible]
पखुरा पर देखेसि ना [illegible]
आजु कहैं [illegible]

वेसवाह् वान्हति पाखुरंवा वा टिटि रे काइय
वंठवा के घूमल ना हथवा वा लेइये ओठियन
चनवा के अस्तन ना परवां जे घूमि रे जाई
ओही घड़ी पड़ि गयल ना नऽजरिया जे लोरिके कऽय
लोरिकाह् डांटत मारदवा जे पुनि रे वाय
आजु कहैं वेसह् ना जतिया जे तोर चनइनी
वेसह् तोर साखरवा जे पलि रे वार
जव तोर चनवइ जांऽवइया जे हित रे रहनऽ
काहें हमसे दे लेह झागड़वा जे मच रे वाय
आजु काटि देहल ना भइया जं लेइ रे हमहूं
अउ फेरि जूझि गयल ना भइयाह् देखु हमार
ओही घरी उहवांह् सेनिय ना वाइ रे रेंगल
अव चलि आयल दुअरवाह् अपने घऽर

चनवा के अपराध के लिए उसके पिता सहदेव को बिरादरी के चौधरी द्वारा दंडित किया जाना—सहदेव द्वारा भोज का आयोजन

अइसेंह ना दिनवा जे वीत ही लगनऽ
एहि जा नऽगर गऽउरवाह मेंनि रे वानऽय
आजु भाई भरींग्र ना कामवा रे मोकाम्मऽय
एक ठेनि फरल चउधरी केनि रे वानऽ
जउने घरी घूमरत नेवतवा गाउरा में
कसमसि वसलि वाड़इ ना अहीरे रानऽय
आजु घूमि जालह नेवतवा अहीरेनि के
अव फेरि जुटइं आहीरवा पलि रे वारऽय
आजु घिरि गयल जाजिमवा चउधुरी का
महफिल वइठइ मेंड़रिया लेइ रे मारी
जवने घरी जूटनह् ना रजवाजे देख रे सहादेउ
महदेव जूटल ना टाटवा पर दुनो रे वाय
ओहि घरी बोलनह ना मुखियाह् रे चऽउधरी
अव फेरि बोलनह् ना बीयदरह् रख रे वार
आजु कहैं सुनवह आहीरवाह् रे सुनबऽ एठियन
तूत भाई मनवह् काहनवांह् रे हमार
आजु तूंय बइठि ना रहबऽ जे एहि रे हाते
अव फेरि जइहंइ सावलवा जे फरि रे याइ
जवनेह् ना दिनवांह् राम समइयाँ

अहीरिन के गऽयल ना नेवताह् सुख रे चऽली
ओहि दिन जूटल जाजिमवाह् लेइ रे आई
अब गिरि गयल जाजिमवा अऽहीरे कऽय
ओहि नागर गऽउरवा देख रे गाँवऽय
ओही घडी बोलइं ना जतिया रे चउधुरी
बोलत बानह् ना सहदेउ सेनि रे बातऽय
आजु कहे देखिलह् ना रजवा तूय रे सहदेव
एठियन मनवह् काहनवा तूं हमारऽय
देख भइया राजीय करजवा तूय रे हवय
जतियाह् के राजाह् चउधरी हमरे हई
आजु तोहार बिटियाह् चामरवाह् जे सधे रे अइनी
उनकेह् लागत मासवा के बाइ रे पाप
अब तू गगाह् गोरइया जे रज रे करवय
अब सुनि लेबह् ना कथवाह् रे पुरान
आजु कहें करधन ना बलवा जे तू नेवतवऽ
कच्चीय पक्कीय ना देबह् रे खियाइ
सब भाई तानेह् ना अंदर रहय देबऽ
नाही कत जाई नेवतवा जे सूबा तोहार
एतनाह् ना बतियाह् बोलें चउधुरी
राजाह् डांड़इ ना लेहलेनि मन रे बूरऽय
ओहि दम गइनय मोकमवाह् धइ रे दीहलेन
अब दिन परिय गयल ना सुक रे बारऽय
आजु भाई गंगाह् गोरइयाह् कइये लिहलेन
अब राजा सूनइ ना कथवाह् रे पुरानऽय
आजु भाई नेवताह् ना सगरउ बंट रे बाय
जाजिम देहलेसि दुअरवांह् बिछ रे वाई
जेतनांह् जुटनंह ना गोपिया रे गुवालऽय
आजु भाई चारउ चउरवा भीतरी कऽय
मडवाह् बहल ना नदिया बाइ रे जातऽय
चउरं के पसावन न बहलइ बाइ रे जातऽय
जेतनाह् आवइं ना गोपिया रे गुवालय
संवनत जानह ना माड़वा रे गोंथाई
जवने घरी चलनह् आहीरवा बीर रे लोरीक
आगे आगे रेगल ना ककवा वा कठइता
अब बूढ़ मारत हूमनियां बाइ रे जातऽय

तेकरेह पीछेह् ना मलवा वाय संवरूआ
तेकरे पीछे लोरिकवा सर रे दारय
जेवने दिन देखइं अहीरवन कइ रे हालय
जूठे में जानह ना मड़वा में सनातऽय
धरमीय देखतइ आतनवा डोलि रे गयनऽ
आजु बाबू चारीय न खनवा केनि रे कवरी
के एन्हें देईय धरमवा रे गंवाई
वलुकन ना खावऽ ना भतवा सहदेउ कऽ
नात हम डालबि ना मंडवा मेनि रे गोड़ऽ
एतना जब सूनत अऽहीरवा बीर रे लोरिका
वायेंह् कांखेह् ना ककवा के दाबि रे लहलेन
दहीने दावत सांवरूवा अपने भाई
अहिराह् लेइ कह् चम्फवा डांकि रे गयनंऽ
डाकि केनि भयनऽ काररवां ओहि रे ठाढ़ऽ
चननी से देखति ना वेसवा बाइ चनइनी
ऊ भाई दांतन आंगुरिया बा चबातऽय
आजु कहैं हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
लोरिकाह् भयल गाउरवा में कड़ रे हार
सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अहीराह् बइठंइ मेड़रियाह् लेइ रे मारी
आजु भाई बीड़ीय तामुखवाह् रखि रे गयनऽ
फरसीय रखलि जाजिमिया पर रे वानऽ
आजु भाई खींचइ गड़गड़वांह् वेड़ि रे अहीरा
घूमत बांनह लपेटवाह् चारू रे ओरऽ
कुरवल बानह् ना गांजवाह् बुटऊल कऽ
धरमीय मारत चीलमीय पर बान रे दम्म
जलसाह् होतइ दुअरवाह् पर ना बानऽ
जवने घड़ी राम रसोइयांह् तपी रे गइनीं
भीतरी से आइलि खबरियाह् ओहि रे दम्मऽ
पंचह् बीजह भइल वा तइ रे यारऽ
कइकेनि लेवह् ठहरिया पर जेव रे नारऽ
अहीराह् हांथइ ना गोड़वा जे धोइ रे लगनऽ
कुल्ला के लालीय आंगनवा में चलल रे जानऽ
आजु भाई बइठंइ मेड़रियाह् लेइ रे मारी
आजु भाई अइसइ देवलवा वा चननीय कऽय

आदमी ओरेह् काठइताह् बूढ रे बइठल
एहि बेर बइठल धारमियाह् घर रे दारऽय
बीचवा मे बइठल अहीरवा बा बीर रे लोरीक
सोझइ झकनह् ना बाडइ झरना कऽय
झकियाह् आकति ना चनवाह् देख रे ब ड़ऽ
जउने घरी सोरहऽउ परकारवा जे गिरि रे गयनऽ
पतले पर गयल धियनवाह् लइ रे गिरी
आहनि देलेनि अगिनियाह् पर चुवाई
पचह् बोलह् ना सीतवाह् दइउ रे रामऽ
अहीरन के ऊठल कवरवा बा अगने मे
अहीराह् देलेसि कावरवा जे अपने टाली
आजु भाई सानत लोरिकवा जे देख रे बानऽ
झरोखवा से चनवाह् आकरियाह् बाइ रे फेंकत
अहीरा के गीरति पतरिवाह् पर रे वानी
जउने घरी लोटाह ना लेइकह् वीर रे लोरिका
सोझइ पीयत पानियाह् रे निरिखि
चनवाह् खोलि कइ अचरवाह् बाइ देखावत
अहीरे के चऽढल ना चितवाह् बाइ रे जातऽय
उहे भाई कम्मइ रसोइयाह् याइ रे खातऽ
ढेर भाई पीयई ना पनियाह् रे उठाई
ओहि घरी देखइ ना ओठिन रे चऽउधुरी
वालत बानह् आगनवा मेनि रे बोलऽय
कइसन लोरिक ना कम्म जेठान कोदई
ढेर पीयत बानह् ना लोटवाह् मेनि रे पानी
ओहि दिन बोलल ना बुढवाह् वा कठइता
घरियाह् करइ ना बेड़वाह् रे जवाब
हमरेह् कुलह् का वनियाचह् ऊ कूवानी
थोर खाइ कोदईय वहुत नह पियें रे पानि

सेल्हिया का संखिया विष भर कर पान बनाना और लोरिक को देना चनवा का लोरिक से पान छीन लेना

सूनह ना हलिया ओठियन कऽय
आजु भाई खइलेनि ना गोपिया रे गुवालऽय
देखिलऽ जे कुल्लाह् जावनिया कइये लीहलेनि
हाय मुह धोइ कह भयन ना तइ रे यारऽय ,

ओही घरी वऽइठि ना गयनऽ जाजिमें पऽर
वीरवांह् बाँटति ना रनिया अपने हांथे
आजु कहें वांटत ना वीरवा वीरवान के
लेइ लेइ कूंचइ मऽजहिया देख रे पानऽ
आजु कहें लोरिक दुलेरवाह् केनि ऊपरा
सेल्हियाह् जोरति ना वीरवा जे दुसर रे वाय
आजु भाई माहूर ना सिंघिया जे कटि रे काने
उहे भाई देलइ ना वीरवाह् रे वियाई
ओहि दिन कइसेह् मूदइयां के मारि रे घालीं
आजु भाई वाड़ह् ना नंइया तरि रे जाइ
ओहि दिन मूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
अव सेल्हिय लगावति ना वीरवा जे देख रे वाय
उहे भाई सिंधियाह् माहूरवा जे पतवा पर काटि के
मोरति वानीय ना वीरवाह रे लगाय
ओहि घरी देखति ना वेसवा जे वा चानइनी
उहे भाई निकललि ना डंड़वाह देख रे जाय
जवने घरी देलइ ना वीरवा जे लोरिके के
चनवाह् ढूकलि अऽहीरवा जे आगे रे जाई
जाइकनि खींचि कह् ना वीरवा जे छोड़ि रे लिहलेनि
खंसियाह् वांन्हलि ना रजवा के देख रे वाय
आजु कहें फेंकत ना वीरवा जे धऽरतीय में
खसियाह् ले लेसि ना ओहउँह् रे चवाइ
जेहि फेरि घंटउ पऽहरवा जे नाहि रे वीतल
खसियाह् गीरल धऽरतिया में मरि रे जाय

चनवा का लोरिक से पूर्व दिशा में चलने का प्रस्ताव
चनवा का उढ़ार प्रारंभ

घड़ी वोलल ना वेसवा जे वाइ चनइनी
सइयां तूं मानह् कऽहलियाह् जे अई हमाऽर
देख भाई कऽरह् ना बीरवाह् रे क लाजय
अव फेरि रखह् ईजतियाह् रे हमार
आजु कहें कऽरह् ना बीरवा ह कइयें लजिया
अव चल चलब पूरबवा के बलु रे देस
ओहि दिन सुनह् ना हलिया जे लोरिके कऽय
भात खाई के उठनह् बीहनवा जे अहीर गुवालऽ

अपनेह् अपनेह् ना घरवा जे बान हो जातऽ
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽ
चनवाह् बोलति लारमवा के बाडे रे बोलऽय
अहीरू तू करह् ना बीरवा के देख रे लाजऽय
बलुकन चलि चलबइ पूरबवा केइ बलु रे देसऽ
एतना जब कहति ना बेसवा जे बा चऽनइनी
लोरिकाह् हसत ना मनवा मे मुसु रे काय
ओहि धडी घरवाह से रेंगियाह् ओठि रे देहलेन
अपनेह् बासह् गिरिहिया मे चलि रे जाय
आपन आपन कामइ ना घघवा जे देख रे लगनऽ
तब फेरि सूनह् ना लोरिकवा न कइ रे हाल
आजु भाई जानह् ना दूध के बूटववले
अब लेइ गयल ना भुजवा के भर रे साथ
जाके भाई बहुरीय ना देले वा भुज रे वाई
अब चली गयल बनियवन बेनि रे पास
छोटे छोटे वतिय ना गुडवा जे लेइये लिहलेन
धइकह् जोडाह् ना भारलवा जे दुनो रे बाय
ओहि घडी बाबेह् सञ्बेरवाह् फेनि रे फूनिया
बोलत बानह् लरिकवन सेनि रे बोल
आजु कहैं सोरह् ना सइयाह् तू लडिकवा
दइवा के मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर
आजु चलि जालह् ना वनवाइ छिउलीय के
जहवा पर उपजल कासउजाह् लेइये बाय
आजु भाई जाईय ना मूठवा जे हमके देबेय
सई मूठा ढूरइ बहुरिया जे हमरे दय
अइसे अइसे सगरउ लडिकवा जे चीरइ लगनऽ
अहीराह् वइठल पाऽरसवा के जाइ रे पेड
आजु कहैं लेइकह् रासरवा जे बरइ रे लगनऽ
छाहेह बइठल छिउलिया के बान रे डार
ओहि घरी लरिकाह् चामरवा के देख रे रहनऽ
उहे भाई गयल गदेलवाह् रे कोचाइ
ओहि दिन रावत लडिकवा जे जुटि रे गयनऽ
लोरिके से कऽहत ना बतिया जे अर रे थाइ
आजु कहैं सुनवह् लोरिकवाह् मोर रे गउहा
मालिक मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर

देख भाई हमसेंह कासउंजा ना चीरइहंऽय
बलुकन चामेह् बा देबइ तोर बोखार
आज तूंय बरिदह् रासरवा जे लेइये लोरिका
चामवा में देबइ बारहवा जे गोद रे वाई
ओहि घरी एतनाह् जब बतिया जे कहिये देहलेन
लोरिकाह् छुट्टीय ना चमरा के देइ रे देइ
ओहि घरी लइकाह् ना बरहा जे तईयरिया
लेई गयल बांठवाह् चामरवाह के देख रे घऽर
ओकर भाई रहनह् पलिवरवा देख रे गोटिया
जल्दी से देलेनि बारहवाह् रे बोखार
उहे भाई ले लेह बारहवा चलि रे गयऽल
अपनेह् टांगत दुअरवाह् मेंनि रे बाय
·······तानीय बारहवाह् बीर रे दिहलेन
अब फेरि देलेनि बारहवाह् लट रे काई
ओही घरी देखइ ना घनवाह् रे मंजरिया
दरियांह् करइ ना वेड़वांह् रे जबाबऽ
सइयांह् छरकिय पेवनवाह् काये होइहंऽ
कवन बाड़इ रऽसरवाह् कइ रे कामऽ
तब फेरि बोललि मारदवाह् बीर रे लोरिका
बियहिय ते मनबेह् काहनवाह् रे हमारऽ
सांवर भइयाह् ना हूकुमि रे पठउलें
मगलेन्हि रसराह् ना अहउं बरिये यारऽ
लेहलेनि बहुत बाछउवाह् रे पजयना
धइ धइ देइंय बछउवन कूट रे वाइ
आजु मोरे अकड़ाह् कऽलोरिया देख रे गइया
नवकेनि करईं ना गइयनि रे खराबय
एतना जब कहत ना बतिया बा लऽरमें से
के भाई ओहूय समइया के सुररे हाल
थोड़ेह् ना दिनवाह् रहि रे गयनऽ
अहीराह् वेरियाह् ना ले लेह् बा बिसरे वाई
बरहाह् ले लेहना हथवा में लेइये रेंगनऽ
अब चलि गयनह् महीचनाह् तिनके घऽरय
आजु भाई ठहरेंह् पर बइठें वाल रे बच्चा
तेलियाह् करत बाड़इनाह् जेव रे नाऽर
तब तक बोलल आहीरवा बा वीर रे लोरिका

आजु भाई सुनबेह्. माहीचनाह्. मोरि रे एठियन
देख भाई बरहाह्. ना तेलवा मे डालि रे देवे
राति भरि तेलइ ना खइहइ बरहा हमारऽ
ओहि दिन सूनह्. ना हलियाह्. ओठियन कऽ
महीचन बोलल लारमवाह्. कइ रे बोलऽ
मालिक बालेह्. ना बचवा जे ठहरे पर खातऽ
अगने मे घइ दऽ बारहवा तूह मे आजऽ
जब हम खाइ पीयना होवइ तइरे यारऽ
लोहवा के कुठली मे तेलवा जे भरले बानऽ
बरहा तोहार देवइ ना तेलवाह्. मे गिराई
अगने मे धइकह्. आहीरवा जे वीर रे लोरिका
अपनेह्. रॅंगल गीरिहिया मे जाइ रे जाइ
जवने घरी पूरुब ना मरले वा लवरे कनिया
पछुवा से देलेसि ना बउवाह्. रे झिकोरि
आजु कहॅं छूटि गयल ना बुनवा जे आदरे कऽय
तेलियाह्. बानह्. ना धोवत हाथ रे मुह
आजु भाई वालेह्. ना बचवा जे कुलि लपटनऽ
बरहाह तनिकउ जुमुसवा जे नाहि खाइ
तब तक कसरोह ना बुनिया जे बाहर कऽय
अउ फेरि रोवत ना तेलिया जे बाडइ बेजार
आजु भाई बिहानह्. ना होइहउ रे भुरुहुरुय
पूरबह्. देइहाइ काउअवा जे देख रे रोर
जउने घरी अइहइ आहीरवा जे वीर रे लोरिका
आजु भाई बरहाह्. ना डबवा मे देखि रे [illegible]
उहे भाई ठाडइ कोल्हुइया मे पर रे [illegible]
आलर जइहइ पारनवा जे एहि रे [illegible]
... ' ओहि घडी बोलल ना बनियाह्. [illegible]
ओही घडी लरमीय ना बनियाह्. रे [illegible]
आजु कहॅं धनह्. ना मुनिनह्. रे [illegible]
आजु नाहि जीमुख बारहवाह्. [illegible]
जवने घरी भोजि जाईम [illegible]
निहनाह्. वाहुत जाचनवा रे [illegible]
दिनवाह्. दिनकर ना टूटि [illegible]
आही घरी रोवइ नि[illegible]
देखिलह्. [illegible]

पूरुवइ देह लेह बान कउवाह बान रे रोरऽ
ओहि घडी उठल मारदाह बीर रे लोरिका
एकदम रेंगल तेलियवहा घर रे गयनऽ
पूछत बाडइ बारहवाह कइ रे हालऽ
तव फेरि बोलिल ना धनवाह लेइये ओठियन
अब नाहि मानह काहनवा रे मालिक हमरऽ
सोहार जवन धूरइ बारहवाह जव ले रहनऽ
वनरस पेललीय कूठलवा रे उठाई
रात भर खइलसि ना तेलवाह तोहरे ओठियन
अब भाई बारहाह ना तनिकउ जुमुस ना खइहऽय
आपन लेइ अब बारहवा जे तूय निकालऽ
उहे घडी रेंगल ना धनवा जे वानी रे माजरि
अब चलि गइनीय तेलियवा जे घर रे ठाढऽय
तेलियाह काहेह रूदनवा जे तोह रे कइलऽ
कवन तोहार देलेह जावरवा जे वान रे चापी
ओहि दिन बोलल ना तेलिया जे वाडइ महीचन
गवही तू मनबह कऽहनवा जे देखऽ हमारऽ
एक ठे राजा सहदेउ जावरवा जे बान रे गउरा
एहर तोहार लोरिक जावरवा जे हवय रे आज
आजु भाई ओनकेह सावनवाह ले ले रे हउहु
तेलवाह बारहाह जुमुसवा जे नाही रे खइले
अब धन देबेह ना तेलवा मे तुह ऊठाई
तव फेरि बोलिल ना धनवा जे वाइ मजरिया
चेलवाह त मानह काहनवाह रे हमाऽर
वाकी भाई तोहारइ वारहवा जे धइये देवऽय
वाकी देख नउवाह ना सुने कोई हमाऽर
जउ भाई नउवाह ना सुनिहइ सुख ननन
आलर लेइहइ जिनिगियाह रे हमाऽर
ओहि दिन बोलल ना तेलियाह वाइ रे सहुवा
मलिकिन मनवह काहनवाह रे हम्मार
आजु भाई अपनेह ना कामवा से वाइ रे कामवा
कवन कहइ से मतलव लेइ रे वाय
ओहि घरी ऊठलि ना धियवा वा महरे कऽय
पेलति बाडए कनगुरिया जे ओहि र दम्म

पूरबइ देह् लेह् बान कउवाह् बान रे रोरऽ
ओहि घडी उठल मारदाह् वीर रे लोरिका
एकदम रेगल तेलियवहा घर रे गयनऽ
पूछत बाडइ बारहवाह् कइ रे हालऽ
तब फेरि बोलिलि ना धनवाह् लेइये ओठियन
अब नाहि मानह् काहनवा रे मालिक हमरऽ
तोहार जबन छूरइ बारहवाह् जब ले रहलऽ
बनरस पेललीय कूठलवा रे उठाई
रात भर खइलसि ना तेलवाह् तोहरे ओठियन
अब भाई बारहाह् ना तनिकउ जुमुस ना खइंहऽ
आपन लेइ अब बारहवा जे तूय निकालऽ
उहे घडी रेंगल ना धनवा जे बानी रे माजरि
अब चलि गइनीय तेलियवा जे घर रे ठावऽ
तेलियाह् काहेह् रूदनवा जे तोह रे करलऽ
कवन तोहार देलेह् जावरवा जे बान रे [illegible]
ओहि दिन बोलल ना तेलिया जे बाड़इ [illegible]
गवही तू मनवह् कऽहनवा जे देखऽ हमारऽ
एक ठे राजा सहदेउ जावरवा जे बान रे [illegible]
एहर तोहार लोरिक जावरवा जे हर्वद रे [illegible]
आजु भाई ओनकेह् सावनवाह् से बे रे [illegible]
तेलवाह् बारहाह् जुमुसवा जे नाहीं रे [illegible]
अब धन देवेह् ना तेलवा मे तूह [illegible]
तब फेरि बोललि ना धनवा जे [illegible]
चेलवाह् तू मानह् काहनवाह् रे [illegible]
बाकी भाई तोहारइ बारहवा जे [illegible]
बाकी देख नउवाह् ना भुने कोई [illegible]
जउ भाई नउवाह् ना मुनिहें [illegible]
आलर लेइहइ जिनिगियाह् रे [illegible]
ओहि दिन बोलल ना तेलियाह् [illegible]
मलिकिन मनवह् काहनवाह् रे [illegible]
आजु भाई अपनेह् ना [illegible]
कवन कहइ से मतलब [illegible]
ओहि घरी कटलि ना धियवा [illegible]
पेलति बाड़ए मनगुरिया [illegible]

उहे कनगुरिया में रसरवा जेधन उठउले
लोहवाह् के कुठिलह् ना देहले जे वाड़े गिराइ
ओहि दिन वोलति ना धनवा जे वा मांजरिया
तेलिया के मनवेह काहनवांह् रे हमार
विहनाह अइहंइ ना सइयां जे रे सुखनन्नन
तोहसेह् मंगिहई वारहवा जे लेल रे कार
कहि दह सुनवह् मालिकवा जे वीर रे लोरिका
एठियन मानह् काहनवांह् रे हमार
आजु कहंय धुरइ वारहवा जे मालिक रहनऽ
वाल वच्चा देहलींय ना तेलवा में हम गिराई
राति भरि तेलइ वारहवा जे खाइ रे वइठल
अव हमसे तन्नीय जुमुसवा जे नाहि रे खाय
मालिक आपन वारहवाह् तू ये लोरिक
अपनेह् हायेह् वारहवा जे खींचि रे लय
ओहि दिन रेंगल वारहवाह् किहां रे लोरिका
हयवाह् डालत कुठिलवाह् मेंनि रे वाय
तेलवा में वूड़ल ना वारहाह् लोरिके कऽय
ऊ वरहा लेहलेह ना हयवा में लेइ रे वाय
वरहाह् ले लेइ गीरिहियां जे चलि रे गयनऽ
के भाई वड़ेह् सवेरवाह् कइ रे जून
ओहि दिन देखड़ ना धनवांह रे मंजरिया
जरि मरि भईलि ना धियवाह् रे खंगार
आजु कहैं सइयांह ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह् ना सिरवा के मलि रे कार
आजु इहइ छरकीय पेवनवा जे काये होइहंऽय
साचइ देवह्न वतिया जे हम वताय
ओहि दिन वोलल मारदवा वा वीर रे लोरिका
वियही ते मनवेह् काहनवांह रे हम्मार
आजु भाई सांसड़ ना वोहवा से खवरिये अइलीं
तव फेरि देलेनि सांवरुआ जे मोर रे भाय
आजु भाई लेंहड़ेह वछरूवा जे उख मजनऽ
अव फेरि धांगत वछियवनि के वहि रे आय
आजु भाई धइ धइ वंछयवन कुट रे वावऽ
वछवाह् वहुत ओंहड़िया जे कइ रे देंय
तवने दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय

अहीरा के चितवंह्‌ ना चऽलि वाडइ चऽनइनी
उहे चढी वोहाह्‌ रह्ऽइया ना चढि रे आई
ओही दिन वेरियाह्‌ ना होत वा जे विस रे वानऽय
घटाह्‌ रातिय वीतलवा जे वाडइ रे जातऽय
ओहि दिन पूरव वऽहलिया वा पुर रे वइया
पछुवाह्‌ देलेह्‌ ना बउवा जे बाडे झिकोर
आजु भाई उतराह्‌ ना मरले जे वा भवकिया
दक्खिने से वरसत सोढनवा जे देख रे धार
आजु भाई पऽरत ना बुनवा वा आद रे कऽय
ओहि जउ नीसह्‌ निवइया जे देख रे रात
उह्वा से लेइकह्‌ वरहवा जे लोरिका रेंगल
एकदम हलल गाउरवा जे जाल रे गाँउ
अहीराह्‌ एकदम ना रेंगलइ रे रेंगावल
अव चलि गयल चाननियाह्‌ केनि रे हेतु
घरी घटाह्‌ किसोरवा रहि रे गयनऽ
ते फेरि देखह्‌ ना ओठियन कइ रे हाले
एक खुट धइलेसि वारहवाह्‌ गोडवा तऽर
आधाह्‌ लेहलेसि ना हथवाह्‌ रे उठाई

बरहा की सहायता से लोरिक का
चनवा की चांदनी पर चढ़ना

जवने घरी झटकि बारहवाह्‌ धरती से दीहलेनि
चाननी पर गीरल बऽरहवाह्‌ भह रे राई
ओही घडी देखह्‌ ना हलिया जे चानवा कऽय
बेसवाह्‌ उठलि खाटियवाह्‌ सेनि रे वानी
आजु कहँ गीरल वारहवा वा चाननीय पऽर
बिनकनि देलेन धऽरतियाह रे पेवारी
उहे वारहा गीरल धारतियाह्‌ भह रे राई
लोरिकाह्‌ सुमिरि बारहवा वाइ रे उठावत
अव फेरि लेलेसि ना हथवा रे उठाई
तउ भाई तडपल पिछोरवा सेनि रे वानऽ
आजु कहँ बाउर ना वेसवा के बउ रे रइले
तोहरि गऽइलि ना मतियाह्‌ रे गियान
बुजरो तू एइं दाइ बारहवा जे फेंकि रे देवय
अव तोहार बहुत ना निनवा जे होइ रे जाय

आजु कहें गाड़ि देवि ना कंटा जे पिछोरवां
ओहि मेंनि आघाह् वारहवा जे वान्हि रे देवऽय
आघाह् काटि केह् गिरिहिया जे लेइ रे जाव
जवने घरी विहनह् ना भइहंय रे भुरुहुरऽय
पूरवइ देहंइ काउववा जे देइ रे रोर
ओहि दिन देखिहंइ ना लोगवा जे गउरा कऽय
निन्नाह ऊठिय ना चनवाह् रे तोहार
आजु कहें कवनेह् ना दिनवाह् राम समइयां
तव फेरि फेंकत वारहवा वा दोह रे राई
ऊ वारहा गीरल चाननिया पर भहरे राई
चनवाह् लेइकह् वारहवाह् खांभिया में
अव ओढ़ वान्हति ना मंचवा के पेरुवा में
उहे भाई वान्हइ वारहववाह् रे गरेरी
आजु भूलि गयल वारहवा वा अहीरे कय
लोरिकाह् धऽरत वारहवाह् हथवां में
उहे भाई तीनिय झटकवा जे मारि रे दीहलेनि
तनिको जूमूस वारहवा वा नाहिं रे खातऽ
ओहि फेनि चऽढ़त वारहवा पर रे अहीरा
एकदम चढ़ल चाननिया वाइ रे जातऽय
जउने घरी आधिह सरगवा चढ़ि रे गयनऽ
निचवांह् ताकत जमीनिया देख रे वाड़ऽ
ओहि घरी हहरल मारदवा वीर रे लोरिका
उहे भाई दांतन आंगुरिया रे चवानऽ
आजु कहीं धनि धनि ना मइया मोरि दुरूगा
जेन्हइ आदिय ना दिनवा पूज रे मानऽ
देविया जे आधेह पऽ वारहवा जे टूटि रे जइंहऽय
अव हम गीरव चाननिया छिति रे राई
जेकरेह् गांड़ीय काऽउववां गुह ना खइंहऽय
तेनहूं मरिहइ मेहनवा वरि रे यारऽय
सरउय चढ़नह ना चननी रजवा के
हड्डीय गइलि छिछोरवां छिति रे राई
एतनाह् कऽहत लोरिकवाह् वाइ रे चऽढ़ल
एकदम चऽढ़ीय चाननिया पर भन रे ठाढ़
ओहि दिन सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय
लोरिकाह् चढ़हीय चाढ़इ ना करत रे वानऽ

तब फेरि बोललि ना ओठियन रे जउ चन्ना
बेसवाह् करति जावबिया बा ओहि रे दम्मऽय
आजु भाई सुनवह् ना एठियन तू अहीरऽय
काहनाह् मनबह् लोरिकवाह् रे हमाऽर
देख भाइ गउवाह ना घरवाह् के नतइया
भाई बहिन लगबइ ना नातवाह् मे नि रे हम्माऽ
कइसन कऽरहुऽल ना बोलियाह् रे कुबोली
अहीराह् इहउ पइचवा जे छोडि रे देऽलऽ
एकदम चढहीय बदनियाह् निय रे रासऽय
ओहि दिन डाटति ना बेसवाह् बा चानइनी
ओहि घडी बोलत दो गाहवाह् बाइ रे बोलऽय
आजु कहँ सइयाह् ना अहीराह् सुनि रे लेवे
ऐ मह कवन झगडवा देख हो बानऽ
अब छोडि देबह् ना सगवाह् रे हमारऽ
ओहि दिन सूनह् ना हलिया ओठियन कऽ
अहीराह् चढहीय चाढ़इ ना कइ रे देला
बेसवाह् डाटति चनइनी देख रे बानी
अहीरू तू खावह् किरियवा रे अठानाऽ

लोरिक और चनवा का मिलन

तब हमरे चाढह् सेजरिया पर रे आ जाऽय
अब घरे बियहीय के सगवा छोडि रे देबऽ
तब तूय धाऽरह पालकिया पर रे लातऽ
घरवाह् भइयाह् ना मइया के सुधि छोडऽ
तब तूय धरह् पालक्यिा पर रे लातऽ (पुन०)
घरवा छोडि दह् ना गुरुवा के मोहि रे सूहऽ
तब धइ लेबह् पालगिया पर मोर र लात
आजु भाई पलगेह् का रहनह् कवि रे लसवा
सोझइ भागीय पुरुबवा जे चलि रें देस
अहीराह् ऊहोउ किरियवा खाइये लीहलेन
अउ फेरि चाढइ चढ़इना कइये बेला
तव फेरि बोललि ना बेसवाह् र चनइनी
अब सइया मनबह् काहनवाँह रे हमाऽर
अब छोडि देबह् ना सपवा जे सवरु।कऽ
तब हमरे धारेह् पलकिया पर रे लातय

लोरिकाह् ऊहउ कीरियवा जे खाइय लेनऽ
अब धइ लेनह् पलंगियाह् पर रे गोड़ऽ
जवने घरी लेकह् ना पहिले जोम रे बइठल
मचवाह् गयल पेड़वा जे छिति रे राय
ऊहइ ना बेसवाह् रे चनयनी
उहैं भाई पटकई चाननिया पर रे मांथऽ
इ हमरे भइयाह् ना महदेउ के हउ रे माचा
आजु भइ गयल ना पेडुवाह रे चोथाई
आजु कहैं बीहनह् ना भयनहं रे भूरुहूर
पूरबेइ देहलनि काउववाह् देख रे रोरऽ
आजु लगि जइहंइ झगड़वाह् लेइये आजऽ
झगड़ाह् भारी मचीय ना अन रे रोधऽ
एतनाह् इहउ कीरियवा जे कइये काने
लोरिकाह् बोलल ना चनवाह् से सुनि रे बाय
चन्नाह् रुखनाह् बासुलवा जे घरे ना होतऽ
जल्दी से लइयाह् ना तूहुँव रे उठाइ
आजु चूड़ा काढ़ि देइ ना हमहूं जे चूरवा कऽय
जइसेहि चलइं बाऽढ़इयऽन करम रे सालऽ
ऊहे भाई सुनई रुखनिया जे सुन रे बसूला
आन केनि देहलसि ना चनवा जे हथे उठाई
आजु लोरिका काटत खोदमवा जे पटिया कऽय
एकदम देलेह् ना चूरवा बा बइरे ठाय
देखु भाई छालइं बऽढ़इया जे करम रे सालऽय
ओइसंइ बनि गयल ना मचवा जे ओहि रे दाम
अहीराह् डांकीय चाढ़नवा जे कइये देहलेनि
के फेरि बीचेह् चाननियाह् मय रे दान
ओहि घरी रोवई ना बेसवाह् रे चानइनी
पटिकति बानीय धारतियाह् रे नि ये माथ
आजु कहैं सइयांह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलाह् ना सीरवा के मउ रे ओरंऽ
आजु तूंय दांतन मासुइया जे काहे ये काटऽ
काहे मोरे लेतइ जीनिगिया जे ठाड़े रे ठाड़
आजु सइंया कइय ना दउवां जे तू ए कइलऽ
अबहींय कइय ना बतिया जे दइयें रे बांय
ओहि दिन बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका

अब धन मनवेह् काहनवाह् रे हमाऽर
देखु भाई एकसइ ना सठिया जे दाय रे कइली
अबहीय एक सई ना सठिया जे बाकी रे बाय
आजु बियही ओहू लयने मनवा जे नाहिं रे भरिहऽय
चलि जाब सासड ना वोहवाह् रे मझार
जउने घरी बाइठिऽ चिहुलियाह् तर रे जइबऽ
मूठ मारि देवइ ना पनिया मे ले गिराय
आजु कहँ कऽरबि असननवा जे गागिले मे
जाइकनि सूतबि बीयहिया मे धन रे गोड
तब्बई सउतुक पारनवा ज मोर रे होइहऽय
बिहनाह् निरमल सरीरवा जे होइ रे जाय
ए घडी रोवइ ना बेसवाह् रे चनइनी
पटकति बानीय पेड़ुववाह् पर रे मायऽय
अहीरू देहियाह् ना केनिय सुघ रे रइयाँ
काहे मोर काटिय मासुइया बाड़े रे खातऽ
आजु तूय दीनय मौकमवाह् रे बतावा
कहियाह् चलबह् पूरबवाह् केनि रे देसऽ
तब फेरि बोलल आहीरवा बा बीर रे लोरिका
अब धन मनवेह् काहनवाह् रे हमारऽ
आजु भाई चढे जे गाहकिया जे पुरुबे कऽय
मेहरीय अइहइ ना एठियन खरीदेवारऽय
दसबीस बेचब बाछउवा जे बोहवा कऽ
पल्ले मे बान्हब रोकडवाह् झोरि रे याई
तब फेरि छोडबि ना गउवा जे ले गाउरवा
तब कही चलिकह करबि नाह् कबि रे लास
ओही घडी सुनह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
उहे भाई आइल ना करत बा कल्लोलऽय
दुओ सुति कह ना चद्दर तनि रे ओठिन
अब फेरि तननह् चादरियाह् देख रे तानी
ओही घडी सूनह् ना हलियाह् सेल्हिया कऽ
चनवाह् आधीय ना रतियाह् ले चलऽइया
उठि उठि माहइ मठवाह् देख रे रोजऽय
आजु कहँ काहे ना बिटियवाह् मोर रे उठऽय
होय जाला भामर ना भोरवा रे बिहानऽ
लउडिनि देखबह् ना मुगियाह् रे हमाऽरऽ

लउड़िनि चढ़लि चाननियाह् पर रे जालऽ
जाइ केनि देखइ चाननियाह् कइ रे हालऽ
उहे पर भइंसाह् भइंसियाह् वायं रे तानऽ
अब बूड़ बानह् ना खूनवाह् रे आधारऽय
ओहि घरी तानीय चादरियाह् मुखवा कऽ
उहे भाई भागलि लेउंड़ियाह् भीतरी में
लोरिकाह् ऊठल चाननिया पर जक रे वारी
उहे भाई पहीरत पानहिया वा चानवा कऽ
चनवा के बान्हत पिछउरी वा लुड़ि याई
आजु झूलि गयल वरहवा पर ओहि रे दम्मऽ
अब चलि गयनह् घरतियांह् मन रे ठाढ़ऽ
चनवाह् छोड़ि देइ वारहवा जे चाननी पऽर
अहीरा लेइलेसि बारहवाह् सड़ि रे याई
अंगवाह रेंगल ना गउवां में चलि रे गयनऽ
परखल भयल बीहनवाह् वाइ रे जागत
....
रहनह ना आंगवा हर रे वाहऽ
उहे भाई पूछई ना डहरी लेइये वातऽ
मालिक कहवांह बीतल ना सारी रे राती
तब तक बोलल लोरिकवा लऽरमें से
भइयाह् देलेनि सांवरुवा हमरे हालऽ
रसवाह् तगड़ाह् लेहलवा हमरे गइलीं
बछवाह् बहुत रऽहई ना उखरे मांजल
घइ घइ देहल बाछउवा खूंट रे वाइ
आजु भाई लवटलि गिरिहिया वाइ रे जातय
तब तक बोलल ना भइया हर रे वहवा
हंसिकनि बोलल लोरिकवाह् सेनि रे वाई
आजु भइया जानत ना हलिया जे तोहरे बाड़े
चाननी पर जीदलि वछियवा जे देइ रे वाइ
आजु उखमजलि वछियवा जे चाननी परि
छरकीय लागलि पेवनवा जे रहलि तोहाऽर
रेंगल मारदवा जे वीर रे लोरिका
एकदम वखरियाह् मेनि रे जाय
जाके ले ले वइठल ना बानह् लेइ रे हंथवां
अहीराह बइठि कुरुसियाह् पर रे जाई

मंजरीय ढुरि ढुरि आगनवाँ जे बाइ बटोरऽत
धब छुटि गइलि लोरिकवाह् केनि रे आरि
तब फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ मार्जरिया
बेडवाह् करइ ना देखियन रे जवाव
आजु कहँ सइयाह् ना सुनिलऽ तू सुख रे नजन
आजु मोरे सुनिलह् ना सिरवा के मोल रे यार
आजु कहाँ बीतलि ना रतिया जे सारी तोहके
साचइ देबह् ना हमहूँ के तू बताय
ओहि दिन बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
बियही ते मनवेह् काहनवाह् रे हमाऽर
भइयाह् खादर खबरिया जे हमरे भेजलेंन
बरहा बरिहइ ना भइया जे एक रे आज
धछवाह् बहुत लेहड़वा मे उखरे मजनऽ
बछियाह् अकरह् कलोरवा जे नाधि रे देय
आजु भाई घई घई बाछउवा के कुट रे ववले
तब आवत बाडीय ना घरवाह् रे दुवार
तब फेरि बोललि ना बाई धनवाह् रे माजरिया
सइयाह् तू मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर
ई कहाँ पउलेह् पीछउरी जे धानवा कऽय
साचइ देबह् ना हलिया जे हम बताय
ओहि दिन बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
दरियाह् कऽरइ ना बेडवाह् रे जवाब
आजु भाई हमरऽ पीछउरी जे धानवा कऽ
चलि गइनी गुरुय अजइयाह् केनि रे घर
आजु हम रतिमइ ना वोहवा जे जात रे रहली
अब बिजा सेनीय ना मगलीय हम बनाय
बिजवाह् देलेसि ना धनवाह् के हम धादरवा
उहे हम बन्हले पागरिया जे देख रे बाय
सब फेरि बोललि ना धनवा जे बाय मजरिया
सइयाह् तू मनबह् काहनवाह् रे हमार
आजु कइसे टिकुलीय ना गलवा मे बाइ रे चिटिकल
साचइ देबह् ना हलियाह् रे बताय
ओहि दिन बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
बियही ते मनवे कानवाह् रे हमाऽर
आजु भाई गुरुय आजइया जे घरे रे रहली

बिजवाह् भउजीय ना निकललि रे हमाऽर
हमऽइ सेनुर टिकुलिया जे कहां रे डलले
चिटकलि होइय चीट्ठुकियाह् मोरे रे देह
तव फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ मंजरिया
दरियांह् तूं करह् ना बेड़वाह् रे जावाव
तव सइयां एह्र क बतिया जे जाय ओहर
अब तोहेय कइसेह् रुधिरवा लगल रे बाय
तव फेरि बोलल मारदवा वा वीर रे लोरिका
वियही तूं मनवेह् कहनवाह् रे हमाऽर
धइ धइ पटकल बाछउवा जे बोहवा में
अब फेरि अइसन ना धउवा जे अब रे हाथ
केनहूय के सौंहिय टूटल ना केहु के वंसा
उहे रंगे लागल ना पाछवां जे मोरे रे बाय
तव फेरि बोललि ना धनवा जे बाइ मंजरिया
सासुय बइठलि ना मचियाह् पर रे वाय
आजु कहैं अम्माह ना सुनिलह् मोरि रे सासु
एठियन मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर
देखऽ सासु खरहाह् ना लहटल वा रे गुंवा
घर मेंनि चऽरत हरियरीय देख रे दूव
इ दून्नों करीहइं ऊढ़ारवा जे पूरुबे के
चलि जइहं नोनीय हारदिया जे पुर रे पार
हमरे पर परी विपतिया जे गउरा में
कइ दिन भोगवि ना हमहूंय रे जंवऽड़ार
कइ दिन भोगवि रांड़ापवा जे गउरा में
आजु हम लीखत विपतिया के बाइ रे ओर

झगड़् कोइरी के कोड़ार में चनवा और मंजरी का झगड़ा

जिन बिहनाह् ना भयनह् रे भुरुहुरा
पूरबइ देलेह् काउववाह् वायं रे रोरऽ
ओहि दिन ऊठलि ना वेसवाह् वा चनइनी
दस सेर लेहलेसि ना धनवाह् गंठि रे याई
उहवां से रेंगलि बीटियवा सहदेव कऽ
अब चलि गईलि कोइरिया के कोइ रे राड़ऽ
उहो धइ देलेसि ना धनवाह् ओकरे घरे
अपनेह् रेंगलि लोरिकवाह् घर रे जालय

मंजरीय वडेहू सवेरवाहू केनि रे जूनऽ
ढुरि ढुरि आंगन ना आपन वाइ बहारऽल
दुअरा पर ठाडहू ना वेसवाहू वा चनइनी
ओहि विन बोललि ना बेसवाहू वा चनइनी
दरियाहू कारइं ना बेडवाँ हो जवाब
आजु मोरे भउजीय गा सुनि लै तोइ मजरिया
आजकलि लोरिक मा भइया नहि नऽ देखातय
ओहि दिस सूनति विटियवा महरे कऽय
जरि मरि भईल मजरिया रे खगारय
आजु कहँ अगियाहू ना लागइ एही रे गउरा
धुइ धुइ होइ जाइ कोइलवाहू रे खगार
आजु बाबू रतियाहू ना मेहरि उन मनुसवा
दिनवाहू बऽहिन ना भइया के पर रे नाम
एतनाहू कऽहति बिटियवा बा महरे कऽय
चनवाहू भागलि ना ओठियन सेनि रे बाय
ओहि दिन रेंगलि ना बेसवाहू बा चनइनी
चलि गइलि झगडू य कोइडिया के कोइ रे राय
रेंगलि ना धनवाह रे मजरिया
चार पसेरी ऊहउ ना धनवा जे गठि रे याई
उहो भाई रेंगलि कोइरिया जे घरे रे गऽइनी
दुओहू बइठइ जाननिया जे मन रे मारि
ओहि दिन सूनहू मा हलियाहू ओठियन कऽय
अब फेरि बोलति ना चनवा जे देख रे बाय
आजु कहँ सुनबहू ना झगडूय मोर कोइरिया
एठियन मनबहू काहनवाहू रे हमाऽर
आजु भाई जेकर बदनिया मे अइसन होइहँय
तेके तेके तइसन भटवा जे तूथ रे द्या
ओहो घरी गोराहू बदनिया बा चनवा कऽय
संवराहू बदनि मंजरिया के देख रे बाय
ओहि दिन माजरि ना सुनलेसि लेइये बतिया
लरमी से बोलति जवनिया जे फुनि रे बाय
आजु कहँ सुनवहू ना झगरूय मोर कोइरिया
कहना तू मनवहू ना एठियन रे हमार
देख भाई जेकर ना सइया जे होईहइ सूघर
तेकर तू सुघरहू भंटवा जे देइये दऽ

जेकर सइयांह् ना कनवा जे कोचर होइहंऽय
तेके भाई किरहा भंटवा जे देइ र दया
ओहि घरी सुघराह् मारदवा बा बीर रे लोरिका
सूघर छांटत भंटवा जे देख रे बा
ओहीं घरी काना मलवा जे बाइ रे सिवहरि
उहे भाई देलेसि कोचरवा जे भंट बराइ
ओहि दिन बतियवंइ न बतियइ जे होइ गई सरबरि
बतियइ मचल झगड़वा जे बरि रे यार
ओहि दिन दुन्नोह जाननिया जे लड़ि रे गऽइनी
ओहि भई झगरुव कोइरिया के कोइरे राड़
अब टूटि गइल मुरइयाह् रे नेवारऽय
आज टूटि गयल नां पेड़वाह् पोहता कऽय
जेकर भाई रुपियाह् ना सेरवाह् बाइ बेचातऽय
ओहि दिन रोवइ कोइरियाह् लेइये ओठियन
पटकत बानह् कोड़रवाह् रे कपारऽय
आजु बाबू दून्नोह् जान निया जे लड़ि रे गइनी
कवने के का हम बचनियाह् बोलि रे देईं
कइसेह् देईं झगड़वाह् बड़ रे काई
एक ठेनि हवऽइ जबरवाह् कइ रे बिटिया
एक ठेनि हवऽइ जाबरवा के बहु रे यारऽ
आजु नहिं केहुय के बतिया जे बाइ रे बोलत
एकदम भागल आखड़वा में चलि रे जाय
जहवां पर बानह् मारदवा जे बीर रे लोरिका
अब फेरि गुरुव सहितवा जे मुंह रे बाई
ओहि दिन बोलल ना झगरुव रे कोइरिया
अब फेरि मनबह् लोरिकवा जे मोर रे बात
घरवांह् दू दू जाननिया जे लरि रे गइनीं
अब फेरि लागल झागड़वा बा बरि रे याऽर
उहे भाई लड़ि गईं ना हमरे जे कोइड़रवाँ
अब फेरि देलेनि कोड़रवा जे मोर रे जात
आजु कइसे बालउ न बचवा जे आपन जियइबई
कइसेह् देबइ ना रोलियाह् रे चुकाई
एतनाह् कहऽत ना बतिया जे लेइये ओठियऽन
लोरिकाह् बोलल लारमवा के बाइ रे बोल
आजु कहीं सुनबह न गुरुवाह् मोर अजइया

एठियन मनबेहू काहनवा जे गुरु हमार
तनी जाइके देवेहू झागडवा जे वर रे काई
काहनाहू मनबहू गुरुवबाहू रे हमाऽर
ओहि दिन बोलल ना गुरुवाहू बा अजइया
चेलवाहू मनबेहू काहनवाहू रे हमार
देख माई दूनोह जाननिया जे बाइ रे लऽडलि
जाइकनि झगड्य कोहरिया के कोइ रे थार
उहवा दूनोह जाननिया जे नग उघारऽय
कइसे हम देइय ना झगडा जे हम फरि रे याय
आजु माई नाघट उघरवा जे दूनो होइहऽय
कुछु मोरे बूते काहलवा बा नाहि रे जाय
आजु जेके देखय के परछहियाँ जे हमरे नाही
कइसे चलि के देखब भयहुवा के हम लिलार
······सुनहू ना हलियाहू गुरुवा कऽ
अजईय बोलल लारमवाहू कह रे बोलऽय
चेलवाहू सूनई झागडवाहू न हम बिझावऽय
जाइकेनि आपन झागडवा ते बर रे कइबे
काहनाहू मनबेहू ना एठियन रे हमारऽय
ओहि दिन रेंगल भारथवा बीर रे लोरिका
एकदम रेंगल झागड़वा घर रे जानऽय
जउनेहू घरी थोडाहू न दूरिया रहि रे गयनऽ
अहीराहू मारत खखरिया बरि रे यारऽ
दूनो भाई मारि कहू खखरिया बीर रे बोलऽत
मजरीह के कानेहू साबदिया चलि रे गइनी
ओहि घड़ी देखहू ना हलिया मजरी कऽय
मजरीय मारइ ना दउवा लेइ रे पेंचऽय
चनवाहू गीरलि धऽरतिया भहरे राई
उहवा से भागलि ना धियवा महरे कऽय
जाइकनि गयनीय ना किलवा मे अपन समाइ
ओहि घरी देखहू ना हलियाहू मजरी कऽय
किल्ला मे गईलि ना अपनेहू रे घूसुरि
आजु कहँ बेसाहू ना जवियाहू हज चनइनी
उठि कनि झाड़िय ना लेलइ अपन रे धुरि
आजु कहँ बइठि कोयनवा मे ढँढ रे गइनी
अब फेरि छडि छड़ि मूरइया के खल रे पाव

जेकर सइयांह् ना कनवा जे कोचर होइहँऽयं
तेके भाई किरहा भंटवा जे देइ र द्या
ओहि घरी सुघराह् मारदवा वा बीर रे लोरिका
सूघर छांटत भंटवा जे देख रे वा
ओहीं घरी काना मलवा जे वाइ रे सिवहरि
उहे भाई देलेसि कोचरवा जे भंट वराइ
ओहि दिन वतिययंइ न वतियइ जे होइ गई सरवरि
वतियइ मचल झगड़वा जे वरि रे यार
ओहि दिन दुन्नोह जाननिया जे लड़ि रे गऽइनी
ओहि भई झगरुव कोइरिया के कोइरे राड़
अव टूटि गइल मुरइयाह् रे नेवारऽय
आज टूटि गयल नां पेड़वाह् पोहता कऽय
जेकर भाई रुपियाह् ना सेरवाह् वाइ वेचातऽय
ओहि दिन रोवइ कोइरियाह् लेइये ओठियन
पटकत वानह् कोड़रवाह् रे कपारऽय
आजु वावू दुन्नोह् जान निया जे लड़ि रे गइनी
कवने के का हम वचनियाह् वोलि रे देईं
कइसेह् देईं झगड़वाह् वड़ रे काई
एक ठेनि हवऽइ जवरवाह् कइ रे विटिया
एक ठेनि हवऽइ जावरवा के वहु रे यारऽ
आजु नहि केहुय के वतिया जे वाइ रे वोलत
एकदम भागल आखड़वा में चलि रे जाय
जहवां पर वानह् मारदवा जे वीर रे लोरिका
अव फेरि गुरुव सहितवा जे मुंह रे वाई
ओहि दिन वोलल ना झगरुव रे कोइरिया
अव फेरि मनवह् लोरिकवा जें मोर रे वात
घरवांह् दू दू जाननिया जे लरि रे गइनीं
अव फेरि लागल झागड़वा वा वरि रे याऽर
उहे भाई लड़ि गईं ना हमरे जे कोइड़रवां
अव फेरि देलेनि कोड़रवा जे मोर रे जात
आजु कइसे वालउ न वचवा जे आपन जियइवई
कइसेह् देवइ ना रोलियाह् रे चुकाई
एतनाह् कहऽत ना बतिया जे लेइये ओठियऽन
लोरिकाह् बोलल लारमवा के बाइ रे बोल
आजु कहैं सुनवह न गुरुवाह् मोर अजइया

ओहि दिन रोवइ ना धियवाह् लेइये ओठियन
अउ फेरि आपन ता ठोकइ तक रे दीर
ओही घडी उठिकह् ना आहीरा जे रॅंगिये देहलेनि
चलि गइल तालइ सुरवलि जे मन ठाड
उहवा निकललि ना धियवा वा महरे कज्य
खोजति बानीय धावइथाह् लेइ रे आज
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे वेसवा कज्य
चनवाह् उदिय ना गुदियाह् लेइ रे सरुई
दरवा लेइ लेसि ना उहउ रे उठाइ
अगहीय जाइकह् पिपरवा के रहे रे बइठऽल
अहीराह् एहा से चलिये जे बाइ रे जात
.... गयनह रे पहुँची
अब फेरि गइलि ना चनवाह् रे लुकाय
अहीरा एहर ओहरियाँ जे घूमि रे देखय
ना फेरि कच्चीय ना वतिया जे बोलति रे बाय
आजु कहँ बेसाह् ना जतिया जे हउ चनइनी
बेसवा के हवह् सखरवाह् जे पलि रे वार
आजु हम बेसवाह् के मतवा मे लागि र गइली
घरवाह् होइहइ बीयहिया जे मोर रे राइ
आजु हम लऽवटि गिरिहियाँ जे बुजरो जावय
अब नाहिं चऽलब हारदिया जे पुर रे पास
ओहि घरी लवटल आहीरवा वा वीर रे लोरिका
अब फेरि हसलि ना चनवा जे दख रे बाय
क्षरवा के आडेह् ना बेसवा जे बाइ लुकाइलि
हस केनि निकललि पयडवाह् मे नि रे बाय
ओही घडी बोलल ना अहीरा जे बीर रे लोरिका
बियही ते मनयेह् काहनवाँह रे हमाऽर
बियही हमार पूडाह् पाहरवा जे करति वाड्य
मुडवा तर धइलेह् बोजुलिया जे बा तर रे वारि
उहे भाई टूटहीय ना खडिया जे हथवा मे लेहले
अइलीय हमहूँय सुखलीय देख रे ताल
आजु कहँ तालइ मोकमवा पर जुटि रे गइली
कइसेहि नीकलि चऽलीय नाह पर रे देस
डालय खटियवा पदवा के कवनो परिहंऽय

का हम करब जुगुतियाह् उहाँ रे ठाड़
आजु हम टूटहीय ना खंड़िया जे कवनों गन्तीय
का हम कऽरव झागड़वा जे बरि रे यार
एतनाह् कहत ना बतिया बा बीर रे लोरिका
बेसवाह् बोललि चनइनी जे पुनि रे बाऽय
आजु कहँ सइयांह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह् ना मोरे सीरवा के मउरे आर
आजु तूंय सुमिरह् ना मइयाह मोरि भऽगउती
जउन तोहार आदिय ना दिनवा के पूज रे मान
दुरुगाह् जातइ नीदइयाह् रे लगाइ देंय
मंजरीय सूतई ना निनियाह् बिस रे भोर
ओही घड़ी सकतीय दुरुगवा जे तनी बढ़उलेनि
मंजरी के मुंदलेनि ना अंखियाह् ओहि रे दाम
अहीराह् लवटि न ऊहवां से बाइ रे रेंगल
अउ चली गयल कोठरिया में नि रे वाय
मंजरी के मूंड़इं उठइयाह् खंड़िया घींचलेनि
मुंड़वा तर धइलेसि टूटहिया लेइये खाँड़
आजु लेइ लेलेसि ना हथवा में बिजुलिया
आजु रेंगि देलेह् ना दुअराह् सेनि बाय
जउने घरी दून्नोह ना जोड़ियाह् रेंगिये देहलेनि
अब धइ लेलेह पूरबवा के बान रे राह
आजु भाई रातिय रेंगत बाह् दिन रे दवरत
कतनहुँ बादति ना कुरवा जे देख रे मोकाम
ओहि घरी खूललि ना नाजरियाह् मंजरी कऽय
मंजरीय ताकइ ना आंखियाह् रे गुरेरी
आजु भई टूटहीय ना खंड़ियाह् के ये धइले
के लेइ गयल बिजुलियाह् तर रे वारऽय
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
उठि कनि करत रोदनवाह् बड़ि रे यारऽय
घूमि घूमि देखइ जा बहियाह् रे उठाई
हथवा में ले लइ ना गेसियाह् धन रे मांजरि
जाइ केनि देखइ बाहरवांह् देख रे पावऽय
ओही घड़ी झीलई ना दइयाह् बांयं रे बरसत
तुरंते के उपटलि ना मचइयाह् बाइ देखाती
ओहि घरी गइलि गिरिहिया रे ददाई

जहवांह् वइठलि ना खुइलनि बाइं रे सासू
उहे भाई काहति जाबविया बाइ रे खोली
आजु कहेँ अम्माह् ना सुनिलह् मोर रे सासू
एठियन मनबह् काहनवांह रे हमाऽर
आजु कहेँ खरहा ना लहटल देख रे गोहुँवा
घरे नाही चललेसि हरियई देख रे दूब
इहे दूनो कइलेनि ऊढरवा जे पूरबे के
चलि जात ओनीय हरदिया जे पुर रे पार
··· आघेह् जगलवा मे हलि रे गयनऽ
अवराह फरल ना पेडवा जे देख रे बाय
ओही घरी बोलल ना पेडवा वा आवरा कउ्य
दरियाह करत ना बेडवाह् रे जवाब
आजु कहे बेसह ना जतिया जे हउ चानइनी
बेस्सा हव्वह सखरवा जे पलि रे बाऽर
इहे भाई बियहा ना बिजरी मे छोडि रे देहले
उढरा लेइकऽ हारदिया जे बाइ रे जात
एतना जब कहत ना पेडवा बा अवरा कऽइ
आज फेरि बोलल अवरवा जे पुनि रे बाइ
आजु कहेँ सुनबेह् ना बेसवाह् तोइ चानइनी
काहनाह् मनबेह् ना एठियन रे हमाऽर
तेय आपन बियहल ना छोडि देहले बीजरिया
ओढरा लेइकह हरदिया जे जलि रे पाल
ओहि दिन बोललि ना बेसवा जे बा चनइनी
सइयाह् मनबह् काहनवाह् रे हमार
आजु तूय खोचह् ना खडियाह् रे दुगाहे
अवराह् के देबह् ना जडिया तू ढोलि रे आइ
ओहि दिन बोलल आहीरवा वा बीर रे लोरिका
दरियाह करत ना वॅडवा जे बाइ जवाब
आजु कहेँ सुनबेह ना धनवा जे तूय बियहिया
एठियन मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
डह डह तोहय झागडवा रे चलि मचावऽल
कह कह लोरिकाह् गञ्हीय ना तर रे वारि
इहे दुनोह् ना जोढिया जे रेँगिये दीहलेन
सोझइ लेलेनि पूरबवाह् तहि रे यार
जउने घरी सासइ ना बोहवा जे जूटि गइलऽ

थोढ़ाह् बचि गय करीववा रे देख रे वांय
आजु कहँ गइयाह् ना रहनीय रे कलानी
वंझुल में वानीय ना गइयाह् रे पऽजार
ओहि घड़ी पड़ि गइल ना नजरिया जे चानवा के
वेसवाह् वोललि लारमियांह् कइ रे वोल
आजु कहँ सइयांह् ना सुनिलह् सुख रे नन्नन
आजु मोरे सुनिलह् ना सिरवा के मउरे यार
आजु कहँ कवनेह् ना आभागिह् कइये गइया
जंगल झाढ़िय ना वानीय रे वियात
आजु भाई कवनेह् धारमीयाह् कइ रे गइया
अव वानी खरकाह् आड़रवा में देखऽ पजात
ओहि दिन वोललि ना गइयाह् रे कलनिया
दरियांह् करति ना वेड़वांह् जे वाइ जवाव
हम भाई लोरिकाह् आभगिया के हइंये गइया
जंगल झाढ़िय में हम रे वाइ पजात
ओही घरी वोलल ना दरियांह् दोहराई कऽ
फेरि गाइ वोललि लारमवा क वाइ रे वोल
आजु भाई धरमीय सांवरूवाह् कइये गइया
वान्हिय खरकाह् अड़रवांह् देख वियात
एतना जे सुनत आहीरवा वा बीर रे लोरिका
घूमि कनि गयल ना गइया के वाइ रे पाऽर
जाइके भाई कोराह् वाछरुवा जे लेइये लिहलेन
आगे आगे रेंगल आड़रवा पर चलि रे जाय
पिछवांह् चन्नाह के डोलवह् ले जाइ रे गइया
एकदम गयनह् छीउलियाह् केनि रे जाय
ओहि घड़ी भांजलि ना गइया वाजे संवरूय कऽय
अव गाइ गयल लेंहड़वा जे खदवदाय
ओही घड़ी वोलल सांवरुवा जे मल रे वानइ
नन्हुवां ते मनवेह् काहनवाह् रे हमाऽर
आजु चढ़ि जावेह् ना पेड़वा जे छिउली के
अव तूंय देखह् लकड़वाह् दंव रे हाऽय
के फेरि वनवह् लाकड़वा जे गई विचावां
के वन वनहा विलइयाह् देइये गायं
नन्हुवा चढ़ि केह् छीउलिया पर देखऽय
चारु ओर ताकत नाजरिया वा घूम रे राई

लोरिक का संवरू से बोहा में भेंट करना

तब फेरि बोलल ना नन्हुवा जे बा धोरइया
अब बहनोइयाह् धारमिया जे सुन रे भाय
आगे आगे लोरिकाह् बहनोइया जे ले ले रे बछरू
पाछवा से चन्नाह् डोलवले जे आवे रे माइ
एतना जे सुनत ना मलवा जे बा संवरुवा
उहो भाई बोलत ना बेदवा जे बाडे आवाब
आजु कहै सुनबेह् ना नन्हुवा जे मोर धोरइया
सरवाह् मनबेह् काहनवाह् रे हमाऽर
एतनाह् दीनइ जाबानवा जे बीति र गयनऽ
कबो नाहि कइलेह् चिकरिया जे नान्ह रे तोय
आजु भाई कावनि आवरिया जे घूमि रे गऽइनी
हमसेह् करत पगुरिया जे नाहि रे बाय
ओहि घडी एहीय ना बतियाह् होबे जावे
अब जुटि गयल लोरिकवा जे उहे रे बाइ
ओही घडी अबारेह् बछरुवाह् बा उतरलेनि
अब फेरि गयल धरमियाह के नि रे पासऽय
धनवाह् लेइकह् भाउकवाह् लेइये छोडि दऽ
उहे चलि गयल छोलदरियाह् के पिछो रे
जाइकेनि बइठलि ना धियवाह् सहदेव कऽय
जेनकर चंदाह् मयनवाह् बाइ रे नावऽय
ओहि घरी सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
लोरिकाह् गयल धारमिमा केनि रे पासऽय
उहे भाई नीहुरि ना माथवा बाइ नेवरले
भरिमुख देतीय याऽइ ना आसी रे वादऽय
भइयाह् आठेहु आमरवा रहु रे लोरिका
अब तुंय जीयह् ना लखवाह् रे बरीसऽय
जइसेह् बाढइ ना पनिया गगिया कऽय
ओइसइ बाढ़इ ना अइया हो तोहारऽय
आजु भाई दून्नोह् ना भइया जुटि रे गइली
तेजो से सासड ना बोहवाह् रे मझारऽइ
आजु कहैं बईठि आवरवा मे भइया रहवऽ
दूनो भाई बोहंह करबि ना कबि रे सास
अब बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका

दरियांह् करइ ना बेड़वांह् रे जाबाब
आजु कहैं सुनिलह् ना भइयाह् मोर सांवरुवा
एठियन मानह् काहनवाह् रे हमाऽर
देख हम चोरीय ना कइलीं जे रे पचोरीं
अब भांजि देहलींय गाउरवा में देख रे सेन
आजु मुसि लिहल बिटिइवा जे साहदेव का
अब लेइ भागल पूरुबवा जे गइली रे देस
आजु हम दसइ ना दिनवा के लेइये हरदी
अब भइया जाबइ ना उवियाह् लेवऽ गंवाइ
एतना जेउं सुनइ ना मलवा रे संवरूवा
उहे भाई बोलल ना लारमवा कइ रे बोलऽय
आजु कहैं नन्हुवां ना सुनलेह् मोर धोरइया
एठियन मनवेह् काहनवाह् रे हमाऽरऽय
आजु भाई रहंसह् बाहुँसवा के दूनो रे लोच
छोड़ि देह दूनोह् भइंसिया लागि रे जाने
दूनों मीला पीयइं ना दूधवा रे अघाई
तब भाई जइहंइ हाऽरदियाह् रे बजारऽय
एतनाह् सुनऽत आहीरवा बा बीर रे लोरिका
दरियांह् बोलिलि ना बेड़वां जे बाइ जाबाब
आजु कहैं सुनबह् ना भइया जे मोर संवरूवा
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई अजुवइ ना दूधवा जे भइया देबऽ
के कहि देईय पयंड़वा में हमरे दूध
का जाने खड़ियांह् डहरवा में गढ़वइहंऽय
के चारि परग ना देइहं जे पहुँ रे चाइ
एतना जब कहत अहीरवा बा बीर रे लोरिका
धरमीथ जरि मरि ना भयनंह् रे खंगार
आजु कहैं सुनबेह् ना भइया जे तेंय लोरिकवा
एठियन मनबेह् काहनवांह् रे हमार
देखु भाई आजुअइ ना दूधवाह् हम देत रे बांड़ी
साइति के खंड़ियाह् ना ओठियन गढ़ि रे हइहंय
दूनो मेंह लेह मानुसवा जे कन्हि रे आइ
सुनिलह एतनाह् ना बतियाह् होइये गइंली
अब फेरि उठनह् ना बोहवा से तड़तड़ाय
आगे आगे रेंगलि ना बेसवाह् वा चनइनी

पिजवाह् लोरिक रावदिया आ चलि रे जात
आजु कहँ रहियाह् बा पूरुबवा के रे तडियवले
जगल झाडिय हललवा जे बान रे जात
जउने घरी जगल झाडियवा जे डाकिये गयनऽ
अगवाह् नदीय खेवरवा जे आइलि रे बाय
ना त कही माइय न डोगवा जे वाइ लवकल
नदियाह् दूनो फररवा जे फुफुरे कारि
बोलल आहीरवा बीर रे लोरीक
दरियाह् करइ ना भेडवा हो जाबाबय
अब धन बइठल काररवा पर रे रहऽनय
हम भाई पेडइ ना झुरवा झुर जुटाई
सयलीय बीतिय ना पनिया मे बनाई
जवने दिन दुनोह् ना जोडिया चढि रे रहनी
खेइ केनि निकलि चलीय ना ओहि रे पारय
ओहि घडी बइठलि ना वेसवा जे आ घनइनी
आ फेरि अहीराह् हललवा जे जगले बाइ
जगल झाडो से वोगरवा ज बाइ रे पटकत
आ फेरि बाधरि घाटलवा जे बीर रे बाय
उहे भाई बीतिय साइलिया आ नदिया मे
बीच केनि कइलेह् सइलिया बा बरि रे धार
आजु भाई लगीय ना बनवा जे छोलिये लिहलेनि
आ फेरि ले लेसि ना घनवा के बइ रे ठाई
अपनेह् ले लेसि ना चनवा के बइ रे ठाई
अपनेह् ले लेसि ना हपवाह् मेनि रे लगिया
खेवत जालह् ना बीचवाह् गड रे धार
तब तक सूनह ना हलिया जे नदिया मे
गजवाह् बहल आवत बाह् बड रे तेज
ओहि मे रहल ना धुहवा जे एक रे मूसऽई
उहे मूस बदल ना गजवा मे चलि रे जाई
अब जुटि गयल सऽइलिया बा केनि रे बीचवा
चनवाह देखति ना चुहवाह् केनि रे बाय
उहे भाई ले लेसि ना चुहवाह के पढाई
अब रखि देलेसि ना सइलिया केनि रे बेत
जवने घरी मूसवाह् ना घमवा मे टठायल
आ फेरि होइ गयल ना ओकर सरगे सरीर

ओहि घड़ी घूमि गयल वान्हनवा जे भीतरीय में
जाइ कनि काटत वान्हनवा जे देख रे वाय
जाइ जाइ तिनूंउ वान्हनवा जे काटि रे देहलेनि
अव दुइ भागेह् गऽयल गोलि रे याय
एक देस वहलि ना वेसवा जे वाइ चनइनी
एक ओरि खेलत लोरिकवाह् जाइ रे जाय
ओहि दिन बोलल आहीरवा जे वीर रे लोरिका
अव वेसा मनवेह् काहनवांह् रे हमाऽर
आज हम तोरेह् ना मतवा में लगि रे गइलीं
आपन छोड़ल वीयहियाह् देखु रे घऽर
तोर भाई अइसइ ना कामवा जे चलसि रे करवे
कई घरी लोरीक गहीय नाह् तल रे वार
एतना जव कहत वानह् ना वीर रे लोरिका
हाली हाली खेवत सइलियाह् देख रे वाय
ओही घरी सइलीय आहीरवा जे वा जुटवले
लगियाह् देलेसि ना दुरियांह् से वनाऽय
ओही घरी घइलेस ना लगियाह् वेसा चनइनी
सइलीय दुनोह् चोकड़वा जे जोडि रे जाय
अहीरा खेवत ना ओठियन परि रे कइले
वेवराह् उतरि गऽयल वा ओही रे पाऽर
आजु भाई सेमरि का पेड़वा वा कररवा
ओहीय के ठाड़े डेरवा घइये लेंय
आजु भाई रामइ रसोइयाह् ओहि वनावेइ के
गोंइठाह् पाथि लाहनवा जे होत रे वाइ
तब तक सूनह् ना हलिया जे सिवहरि कऽ
जाती छोड़ि देहलेह बेजरिया जे आपन रे गांवऽय
सिवहरि चाललि ना गउंवा बीजरी से
चलि गयल सहदेउ ना रजवां दर रे बारऽय
जाइकनि मारत लोटनिया उहां रे वानऽ
सहदेउ राजाह् बूझई ना अनि रे यावऽ
आजु भाई देखह् ना हलिया एने दहुवा
चली जाह् तूहंउ ना उढ़रन पछि रे याई
कहीं जउ होइ जाइ ना भेंटिया पंयड़े में

बेवरा नदी के तट पर चनवा के पति सेवहरि द्वारा लोरिक पर आक्रमण किया जाना

सारवा के फारिय लऽहइया तुय रे गालऽय
ओहि घरी तीन सइ ना सठिया जे तीर रे लेइवऽ
उहवा से रेंगल सेवहरिया जे बाइ रे माल
अब हलि गयनहू ना बोहवा जे ससहे मे
जहवाहू बइठल अउरमिया जे बाड रे माल
ओहि ठिन जुटि गयल ना मलवा जे देख रे सिवहरि
सेवहरि बोलत लारमिया के लेइ रे बोल
आजु कहँ धरमीय ना सुनिलहू मल रे सावर
एठियन मनवहू काहनवाह रे हमाउर
एहर भाई ऊरीय ऊरवा जे तुय रे देखलऽ
हम येति देतहू सारेखवाहू मे देख रे लाय
आजु कहँ बोलल धारमिया जे मन रे सावर
उहे कहँ बोलइ ना बोलिया जे उह रे जोत
आजु कहँ मुनवहू ना सघिया जे मोर र सेवहरि
एठियन मनवहू काहनवाहू रे हमाउर
देख हम ओठरीय ऊरवा जे तोहार देखलीं
अब जुटि गऽयल बेवरवा के होट रे पाल
सुनहू ना मलवा जे बाटय सिवहरि
सावर मनवहू काहनवाहू रे हमाउर
आज हम कवनेहू उपटयाहू जुटि रे गइली
जउनेहू ऊरीय ऊरवा जे मिलि रे जाड
तब फेरि बोमन ना मनवा बाड मंवध्वा
सिवहरि मुनवहू ना मनियाहू रे हमारऽय
आजु माई झुरियाहू अगरिया बाट रे टागम
दुइ बोतन लेवहू ना मुठवा रे हटाई
याजु कहँ पनहीय चोपटरा गोम्वा कऽय
तब जाय देहलिदई ना टूरड रे पटूँवा
सिवहरि सावड ना वनिया बनि रे आवऽ
अब लोरी देहलेसि ना ओठियन मेनि मानऽय
जाइके धइ पीयड मऊदिलवा बोनये कऽय
टटवाहू छाटत मारदवाहू ओरि रे दम्मऽय
याजु माई उनटाहू ना मठिया करिये गिरलेनि

अहीरे के झुकि गइल बादनिया में तर रे वारि
आजु कहँ मरगस न मरगस रेंगिये देहलेनि
जइसेह्‌ डोलति हथिनिया जे बानि रे जात

हल्दी बाजार में लोरिक की जमुनी कलवारिन से भेंट

ओहि घड़ी सूनह्‌ ना हलियाह्‌ ओठियन कऽइ
अहीराह्‌ रेंगल हऽरदीयाह्‌ रे बाजारऽइ
पूछत जालाह्‌ कालरवाह्‌ कइ रे घऽरऽइ
जवने घरी आधेह्‌ हारदिया में चलि रे गयनऽ
पूछति बाड़इ ना बीचवाह्‌ रे बाजारऽय
ओहि घरी बीलनह्‌ बजरिया हरदी कऽय
कुछ दूरि अवरोह्‌ न भइयाह्‌ तूं हो जाबय
आज घूमि जायह्‌ बगलियाह्‌ पछुंवा के
अगवाह्‌ बाड़इ ना भठिया रे दूकानय
अहीराह्‌ रेंगल ना एकदम हो रेंगावल
अब चढ़ि गयल ना हउलीय पर हो बानऽ
दस पांच बइठि पियकवा जे बां हो पीयत
लोरिकाह्‌ ठाड़ाह दूअरवाह पर हो बाड़ऽ
जमुनीय बइठलि ना गदियाह्‌ पर हो बानी
अब पड़ि गयल नीगहवा बा जमुनी कऽ
उहो भाई दांतेह्‌ अंगुरियाह्‌ दाबि रे ले लऽ
आजु कहें हो हो ना दइवाह मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह्‌ मंझवाह्‌ हो लिलारऽ
इ बाबू कवनेह्‌ ना जांतवा के खइलनि हो पीसऽ
कवने पियलेनि सागरवाह्‌ कइ हो नीरऽ
मलयन के कवनेह्‌ खटिवांह्‌ रे सुतावंऽ
एनि एनि गड़ल खटियवा कइ रे बाधऽ
ओहि दिन बोलति ना जमुनीय बाइ कलारिन
दरियांह्‌ करइ ना बेड़वांह्‌ हो जवाबऽ
आजु भइया कहाँ ओतनवा तोहार हो गोतऽन
कहाँ पर टूटति बा अइना बुनि रे यादऽ
कहवांह्‌ कइलह्‌ चढ़इया दूरनदेसी
अब फेरि अइलह्‌ हाउलिया बाइ रे ठाड़ऽइ
अब फेरि बोलल मारद बा ओहि रे लोरीक
दरियांह्‌ करइ न वेड़वां रे जबावय

आजु मोरे गउराह् ओउनवाह् गउराह् हो दोउन
गउरा में टूटिय गईलि ना बुनि रे बाउन
आजु हम कइलींय चढ़इया हरदी के
खोजत पवलीय ना भठिया कइ दूकानो
एतना जउ सुनति ना धनवा जे बाइ रे जमुनो
गदिया से उठलि ना ओठियन पर रे बाइ
आ के भाई कालीय कुरुसिया जे बाद्द निकलले
अहीरे के देलेसि कुरुसिया जे ओही रे धाई
ओही घरी बइठल आहीरवा वा बीर रे लोरिका
जमुनीय भउरति बोतलवा जे देख रे बाइ
ओहि घरी बोतल ना भरियाह् धइ रे हाँथे
अउ फेरि ले लेहु गीलसिया जे बाइ रे जात
जाइ केनि धइ देइ लोरिकवा के देख रे पाजरि
लोरिकाह ले लाऽह बोतलवाह् रे उठाइ
आजु कहँ ढारत गीलसिया में बाइ रे दरवा
उहे भाई पीयत अहीरवा था एक रे घोट
जवने घरी मुहेंह मे घोटवा ज डालि रे लेहलेंन
आ फेरि उगिलति ना मुहवाह् सेनि रे बाइ
ओहि घरी बोतल गीलसिया जे फेंकिये देहलेनि
अब फेरि गयल जमुनियाह् पर बीगडि
आजु कहँ बाउरि ना तोहउ रे कलारिनि
अब सुनि लेवेह् ना भठिया के भठि रे दार
आजु हम अइसन पियकवाह तइसनि रे नाहिनी
तब कह पियत हऽ हमहूँय हइ रे आज
हम भाई लवगेह् मारीचिया के जल्दी रे भठिया
अब फेरि देवेह चम्फुवाह् रे उतारि
उहे हम पियबि दारुइया जे जमुनी वोरऽय
अब फेर जावइ सागरवा के हमरे भींट
बोयहिय रामइ रसोइया जे कइके जोहले
हमइ होइहऽइ हरदियन केनि रे मीट
अरि बोलनि ना जमुनीय रे कलारीन
गहँकी तू मनबह् काहनवाह् रे हमाऽरय
आजु भाई बइठह् कुरुसिया पर हाथे पेलत
अब हम भठियाह् ना तुरतेंह बाय लगावत
जब टूटि तवइ दारुइयाह् तोहे रे देवऽय

तव तक सूनह ना हलियाह्‌ ओटियन कऽय
अव राति होवइ ना लगनींय रे दूकनिया
चनवाह्‌ रामइ रसोइया जे जाइ वनाइ कऽ
डहरि जोहत पीयकवाह्‌ कइ रे वानी
तव उतरलि ना भठिया वा जमुनी कऽय
उहे भाई वोतल गीलसिया में लेइ रे भरि
एकदम ले लेह लोरिकवा कि हाँ रे गइनी
आउ फेरि देहलेनि ना हथवांह रे टेकाइ
जउने घरी देखइ दारुइया जे जमुनीय कऽय
अहीराह्‌ लेतइ ना मुखवाह्‌ मेनि रे वाइ
जवने घरी मूखइ में ले लेह वाइ दारुइया
चम्फुय गयल सरीरवाह्‌ गमगमाइ
ओहि घरी पीकइ ना घोंटवाह्‌ लेइ रे दारुवा
ताकत जमुनियाह्‌ केनि रे वाइ
आजु कहँ जमुनीय गांगदिया पर से ताकइ
दुन्नो कइ लेंनि नजरियाह्‌ एक रे जोड़
जवने घरी दुनहुन के नाजरिया जे लड़ि गऽइनी
अव हंसि देलेह्‌ ना धनवाह्‌ देख रे वाइ
जउने घरी चमकल वतीसिया वा जमुनीय कऽइ
लोरिका के मरलसि मुरुछवा ओहि रे दम्म
उहे भाई ठाढ़इ कुरुसिया से गिरि रे गयनऽ
अव फेरि दवरलि कलारिन देख रे वाय
जेतनाह रहनह्‌ पीयकवा जे हऽरदीय कऽय
उठि उठि कऽरत गोहरिया जे देख रे वाय
आजु कहँ सूनह ना सारवाह रे पियकवा
चल चलीं राजाह्‌ महुवरा के दर रे वार
जमुनीय अइसीय टोनहिया जे होइ रे गयनीं
अव फेरि आयल दूरं देसियाह्‌ रे दुआर
ओनकेह्‌ मरले जदुइया जे अपने घरवां
आउ फेरि गयल कुरुसिया से भह रे राय
चलि कनि हल्लाह ना कइदह्‌ सूबवा के
ठाड़ा उन्हें दइदइं गड़हवा में भसरेवाइ
अब सूनति ना धनवा वाइ रे चान्ना
अब सूनति ना धनवा बाइ जामुनिया
उहे भाई गइलि कलारिन हो डेराई

साचइ कहि हइ पारजवा राजवा से
बडा भारी निम्नाह ना उठना रे हमाऽरय
लोटवा मे ले लऽइ ना पनिया धन जमुनिया
बेनाह् ले लेसि ना हथवा रे उठाई
जाके भाई हाथइ ना मुहवा बाइ धोवत
बेनाह् देहलसि पागुठवा रे डोलाई
जवने घरी ठडाह मीजजिया होइ रे गइनी
लो फेरि बइठल लोरिकवा समरे होई
आजु कहँ हायव मरदवा बा वीर रे लोरिका
अब धन मनबह् कल रे निज मोर रे वात
आजु हम खइलोय ना पनवा जे देख सोपरिया
तोफाह् होइ गइल जारदवा जे देख हम रे तेज
आजु भाई मारि देलेसि गरमिया जे तूय रे कुरुसी
हमहूय गिरलीय धरतिया मे भहरे राइ
ओही घरी सूनहु ना हलियाह् लोरिके कऽइ
धीरे धीरे करइ बोतलवाह् रे अम झूरऽई
भरि भरि देहलेह् जामुनियाह् वाइ रे आती
लोरिकाह् पीयत दारुइयाह् जाइ रे आनऽ
जवने घरी दस पाच ना बोतल देइ ढकेरऽ
धीरे धीरे बमकति ना नसवा बा नजरी पऽर
अहीराह् पीयत ना छोडतइ नाहि वानऽय
आजु भाई गीरल कुरुसिया से नि रे वानऽ
अहीराह् गयल बा भूंइया ठग रे लाई
तब तक बारहु ना बजवा राति रे भइनी
जमुनीह् कइलेह् दूकनिया वाइ रे बन्नऽ
आपन ओयठिन सकेलले वाड रे भठिया
बन कइ देलेह् केवरवा ओहि रे दम्म
जाइकेनि लोलति केवडवा घरवा कऽ
आपन देलेस ना अदहन रे चढाई
घरवाह् रामइ रसोइया लागल बनावत
एक दम ले लेह् अहीरवा किहाँ रे जाला
आहीराह् के देखइ सारुपवा आठियन भऽय
गीरल बानह् पीयकवा रे अनेरइ
जमुनीय लेलेसि ना घरवा सेइये चमिया
ततवाह् खोल्हत कोठरिया कइ रे बानी

जाइ के आपन गादीय गिरिदवा बाह जठउले
तकियाह् देलेसि ना मुंड़वा पर रे धऽई
ओही घड़ी मारत कांछड़िया बाधन रे जमुनी
अब फेरि निकललि ना दुअरा पर चलि रे जाइ
जहवां पर गीरल मारदवा बा बीर रे लोरिका
अब धन हालीय आंगनवाह् लेइये जाइ
एक हाथ पेलति ना दुनोह गोड़ बटोरि कऽ
एक हाथ पेलति ना मुंड़वा जे ओहि रे बाइ
आजु कहैं संचेह ना टंगलेह् लेइ रे लोरिका
जाइ कनि देहलेनि पलंगिया पर देखऽ सुताई
ओही घड़ी आधीय ना रतियाह् निच रे लहयां
धियवाह् जोहति डाहरियाह् लेइ रे बानी
आजु करि काहांह् पीयकवाह् गिरि रे गइनऽ
अब नाहिं अयनह् पीयकवाह रे हमारऽ
तब तक सूनह ना हलिया जमुनी कऽ
आपन भाई सोरहह सिंगारवा रे बनावऽत
बत्तीस अभरभ ना मुखवां लेइ चढ़ाई
जाइ कनि लेटलि पालंगिया देख रे बानी
अहीरेह् के आगेह् बोतलवा बाइ गिलासऽय
लोरिकाह् तनिकउ नाजरिया जब उघारऽय
पटसेनि धारत गिलसिया में नि रे दारूय
उहे भाई पीयति गिलसिया बांइ उठाई
ओही घरी देखह् ना हलिया ओठियन कऽ
ओहि घरी बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिका
दरियांह् करइ ना बेड़वांह रे जबाब
के भाई सुनबह् ना धनवां जे तूंय कलारिनि
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई आधीय ना रतिया जे निच रे लइया
बियहीय अकसर सागरवा पर वाड़े हमार
बियहीय रामइ रसोइया जे कइ क ताकत
सोझइ ताकति डाहरिया जे रहि रे आई
आजु हम कवनेह् ना चलवा से पहुँचि जाइ
अब फेरि जाइत सागरवाह् पर रे जूटि
तब फेरि बोलति ना धनवा जे बाइ जामुनिया
भइयाह् सुनवह् आहीरवा जे मोरे रे बात

अब तुय सवेह् पलगिया पर सूतल रे रहबय
हम तोहार जातइ बीयहिया जे आनि रे देब
ओहीं घडी एतनाह् ना बतिया जे बाइ रे कहत
चम्फुय देलेह गीलसिया मे फेरि रे बाइ
अहीराह् ऊहव गिलसिया ठटि रे दीहलेन
जाइके चुप सूतल पलगिया पर मटि रे याय
ओहीं घडी सूनह ना हलिया जमुनी कऽय
ओठियन से रेंगलि जामुनिया धइ रे खोरी
देखऽ भाई आधीय ना रतिया निच रे लइया
रेंगल चलि जालऽ सागरवा कइ रे भीटऽय
चनवा लेसि कइ दीपकवा बाइ रे बइठलि
ताकत बाडइ हरदिया कइ रे राहऽ
ओहि घडी जुटलि न धनवा जे बाइ जमुनी
उहे भाई मारति खखरिया ज धन रे बाइ
ओहि घरी बोललि ना जमुनीय रे कलारिन
अब फेरि भूलि गइलि ना लारमवा कइ उहाँ रे बोल
आजु भाई केहइ् ना पोखरवा पर दूर देसिया
के भाई घुइयाह् रऽमउले इहाँ रे बाइ
आजु तोहार काहइ ओतनवा जे हव रे गातऽन
कहवा पर टूटीय गइलिया बा रे बुनियादि
ओहीं घरी बोललि ना बेसवाह् ज बा धऽनइनी
अब धन मनवह् काहनवाह रे हमाऽर
आजु मोरे गउराह् ओतनवा जे हव रे गोतऽन
अब गउरा टूटिय गइलिया बा बुनि रे यादि
आजु कइ दिहलीय चढइया जे हरदीय के
टिकलीय हरदीय सागरवा के हम रे भीट
आजु हम रामइ रसोइया जे तप रे लगलीं
आजु सइया गयल पियक्वा ज बान हमार
का जानी कहाह् ना पिय खाइ के गीरनऽ
आवत बाडीय ना भींटवा पर हम तवाई
ओहीं घरी बोलल ना बानीय रे कलारिन
अब धन मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर
जेतनाह् रामइ रसोइया जे बाटीं बनउले
अपनेह् खायेह ना भरवा जे खाइ र लऽ

जेतनाह् फल तूय जे रसोइया जे वाचि रे जानी
अव एही देवह् मा भीटवांह् रे कुराइ
आजु भाई मजि धोइ वरतनवा जे धन रे लेवऽ
चलऽ तोहार देइय पियकवा जे हम वताइ
.........रामइं रसोइयां धन रे चन्ना
अव भाई पीयई मंदिलवा लेइ रे पानी
आजु जेतना वचि गइल फालतुवा रे रसोई
पोखरा पर कूरइ सागरवां देइ रे भीटऽ
अव धिया माजति वरतनवा ओही रे दम्मऽ
सव रखि ले लेह् भाउकवा रे चढ़ाई
अव धन तोरति छोलदरिया कइ रे डोरी
उहे भाई ले लेसि ना तमुवा रे वटोरी
जमुनीय ले लेह तामुइया वा कंखि रे आई
चनवाह् ले लेह् भावुकवा वाइ रे जाती
एकदम रेंगल ना ओठियन रे रेंगावल
अव दूनों गइनीय जमुनिया केनि रे घरऽ
जमुनीय धइलेसि छोलदरिया आंगने में
उहवां से रेंगलि ना घियवाह् वाइ रे जमुनी
जाके भाई दूसरि कोठरिया जे खोलि रे देइ
ओहि मेनि डेराह् वसहिया वा घर रे ववले
रसदि देलेसि ना सोरहउ रे सामाइ
चन्नाह रुचि रुचि ना भोजन रे वनावऽ
तोहार भाई अइहंइ पियकवा तव रे थाइ
ओहि घरी वोललि ना धियवा जे लेइ ये चन्ना
अउ फेरि वोलति लारमवा क वाइ रे वोल
कहंवाह् गीरल ना सइयां वा सुख रे नन्नन
कइसे अइहंइ ना घरवांह् रे हमाऽर
ओहि घरी वोललि जामुनिया जे वा कलारिन
अब धन मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
अव तोहसे रामइ रसोइया के वाइ रे मतलव
केहरउ होइहंइ पीयकवाह् रे तोहार
उहो भाई जइहंइ ना घरवांह् तोहरे एठियऽन
ज़ाइकेनि करिहंइ ठहरिया पर जेव रे नार
अव सुनह् ना हलियाह् जमुनीय कऽय
अहीरा के लेइकह् सेजरियाह् पल रे सूतनीं

अब उहाँ होतइ बानह् ना खेल रे वाह
जवने घरी उतरलि बा नसवा जे अहीरे कऽ
छुट्टाह होतीय पतोरियाह् देख रे बानी
ओहि घरी जूटलि ना घनवाह् बाइ जमुनिया
अब फेरि ले लेह सोरिकवा के पाछे रे पाछवा
जाइकनि देहलेनि कोठरियाह् रे बताई
सोरिकाह् रेगल दुअरियाह् पर रे गयनऽ
जाइकेनि झाकत ना चनवाह् केनि रे बानऽ
ओही घरी बोललि ना बैसवा वा चनइनी
दरियाह् करइ ना बेडवाह् हो जवाबऽ
आजु कहँ हो हो ना दइवा मोर नारायज्न
का बरम्हा लिखलह् ना मथवा रे लीलारऽ्य
एक ठेनि छोडइ सावतिया गउरा मे
अब चलि अइलीय हरदियापुर रे पालऽ्य
आजु बावू रतियाइ ना घरवा केनि रहलें
हल्दी मे भइलि सवतिया तइ ये यारऽ्य
एतनाह् सुनति ना धनवा जे वाइ ये जमुनी
अब फेरि जालइ ना अपनेह् मुखि रे काति

लोरिक हल्दी मे चरवाहा नियुक्त

अब भयनऽह ना रे भुरूहर
पूरवइ देलेइ काउवग्राह् बाय रे रोरऽ
ओहि घरी बोलस आहीरवाह् बीर हो लोरीक
अब तूय सुनबह् ना धनवाह् मोरि कलारीन
आपन गादीय गिरिदवाह् घर रे देखऽ
अब हम नाहीय ना एठियन चलि रे जाऽ
अब हम आवइ ना अपने के खोजऽव रे कामऽ
ओहि दिन बोललि ना घनवा बाइ कलारीन
जमुनीय बोलनि ना वेडवाह् हो जवाबऽ
मइयाह् कवन ना जतिया हव तोहारऽ
तव फेरि बोलत आहीरवा बीर रे लोरिका
अब धन मनबह् काहनवा रे हमारऽ
आजु मोरे हवइ ना जतिया रे गुवालऽ
गइयाह् भईसिय ठनिय ना चर रे वाहऽ
अपने के खोजव ना धनवा रिन रे काम

जीयइ खाये के उपइया जव रे करवऽइ
तव भाई रहवइ हरदियापुर रे पालऽ
नाहि भाइ आगेह् ना पउवा रे बढ़इ वडं क
कवनऽउ देखवि मुलुकवा तहि रे याई
एतनाह् कहति ना वतियाह् वाइ रे लोरीका
जमुनीय वोललि लारमवा के वाड़ रे वोल
ओही घरी वोलि ना जमुनीय वा कलारीन
आहीर मनवह् काहनवाह् रे हमारऽ
सांझि सेह् वइठल दुअरवांह हमरे रऽहऽ
हम जात वाड़ी महुअर दर रे वारऽय
जाइकनि देवइ दरखसियाह् एहि रे दम्मऽ
अहीरूय तोहइ खोजीय देव रोजि रे गारऽ
ओही घड़ी रेंगल ना धनवा वाइ कलारीन
अब चढ़ि गइलि चाननिया पर रे वानऽय
सूववा के लागल कचहरी हरदी में
महुअर वइठलि कचहरी में नि रे वानऽ
ओहि घरी वोललि जामुनिया वाइ कलारीन
राजाह् मनवह् काहनवां रे हमारइ
एक ठे आयल आहीरवा दूरं देसी
अपने के धन्हा रुदमवा खोजति रे वानऽ
टिक तोरे रहिहंयि हरदिया रे वाजारऽ
तव फेरि वोलइ ना सूववाह् रे महूअरि
दरियांह् कऽरइ ना वेड़वां हो जवावऽय
अव धन लेइयाह् आहीरवा के वलाई
ओहि केह् देवइ ना धनवा रोजि रे गारऽइ
एतनाह् कहत ना सूववा जे वाइ रे महुअरि
अव फेरि रेंगलि ना ओठियन से जमुनि रे वाइ
ओहि फेनि गइलि ना घरवाह् रे वखारी
अहीराह् वइठल कुरुसियाह् पर हो मारी
ओही घरी वोलल जमुनियाह् वा कलारी
अव भइया सुनवह् ना भइयाह् दूरं देसी
तोहार कइलेनि ना सूववाह् रे वलावऽ
एकदम आगेह् ना अगवांह् जाइ जमुनिया
पिछवांह् रेंगल लोरिकवाह् वाइ रे जातऽय
वेलकुल लोहे के सामानियाह् वाइ उतरले

सादाह् पहीरह् कापडवाह् बाइ हो जातऽय
जउने घरी परि गइल चाननिया ओठियन के
दमकत्ति बइठल बाडइ नाह् ना दर रे बारऽइ
जवने घडी परि गइल नाजरियाह् आहीर पऽर
थर थर दगइ कचहरीय होइ रे जालऽय
आजु कहँ हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलेह् ना मझवाह् रे लीलारऽ
इ बीर कवनेह् ना जतवा के खइले पीसानऽ
कवनेह् पियलेनि सागरवा के इहे रे नीरऽ
माइय के कइसेह् खटियवा जे रहे सुतावऽ
नवनी गडलेनि आयरियाह् लेइये बाटऽय
ओहि घडी जाइ कह अहीरवा जे ठाड रे भयनऽ
बोलत बानह् लारमिया में उह रे बोल
अरे बोलनह् ना राजवाह् रे महुअरि
दरियाह् करत ना बेडवाह् जे बाड जबाब
आजु अहिरू बाहहँ ओतन ह तोहार हो गोतन
कहवा पर टूटिय गइलिया बा बुनि रे यादि
कहवा पर कइलह् चाडइया दूर देसिया
अब टिकि गइलह् हारदिया जे मोरे रे पाल
आजु मू कहाह् ना धधवा जे कर रे करवऽ
हमके देब्यह् ना धधवा जे आपन बताय
ओही घरी बोलल ना अहीरा बा बीर रे लोरिका
बोलत बानह् लारमवा के देख रे बोल
आजु भाइ सुनबह् ना तुहूँय रे एठिन कऽ
बोलल ना राजवा जे बानऽ महुअरि
बोलत बानह लारमिया के देख रे बोलऽ
आजु कहँ मुनवह् आहीरवा जे तुय दूरदेसी
का तुय करवह् रोजिगरवा जे एठिन मनाई
तब फेरि बोलल मारदवा बा बीर रे लोरिक
आजु राजा सुनवह् काहनवा जे देख हमारऽ
जेतनाह् हरदीय सहरिया जे तोहार हो बसल
एतने में परजाह् ना राजवा के सब लछिमी
हमकेह् देबह् साबेरवा जे गन रे बाइ
एतने मे चलिहइ खरचिया जे देख हमारऽ
ओहि दिन दौनइ मोकमवा जे सूवा रे धइलेनि

कल्हियांह दीनइ होई ना सत रे वार
आजु भाई अइकह् गन्तियाह् रे लगाइ कऽ
सब कनि चीन्हिय ना गोरुवाह् गाइ रे ल्या
······सवेरवाह् केनि रे जूनऽ
आहीराह् गयल ना घरवांह् वा दुआरऽइ
उठि केनि गयनंह् ना कुलवाह् कइ गलाली
अब फेरि कूचइ मागहियाह् ढोली रे पानऽ
ओहि घरी सूनह् ना हलियाह् अहीरे कऽ
आगे आगे रेंगलि जामुनियाह् बाइ कलारीन
पिछवांह रेंगल लोरिकवाह् बाइ रे जातऽ
ओही घरी सातइ घरीयवाह् दिन रे चढ़ऽल
तव लछमी छूटलि ना गोड़वाह् गोड़ रे बानी
अहीराह् टप्पाह वइठल वाह् मय रे दानऽ
जेतनाह् हांकलि हरदिया से लछमी आवइं
अहीरे के देनह् ना लाछमियांह् रे गनाइ
आपन आपन गनिकह् ना घरवांह् जे लवटि गयनऽ
अहीराह् लेहलेसि गोरुवाह् जे रे बटोरि
जेतनाह् गइयाह् भइंसिया जे हरदी में रऽहनी
एकदम ले लेह् सीवनवा वा चलि रे जाऽय
जेवन भाई पाकत ना गोहुँवाह् वा गोजइया
तोहरइ लेवइ ना गोरुवा जे डह रे राइ
आजु कहें सातइ ना घरियां जे घर चऽरउले
दिनवांह् दुपहर चऽढ़लवा वा लेइ रे जाय
आजु भाई मुंड़ियाह् उठाइ कह् गउवा ताकयं
हरियंर लवकत सीवनवा जे देख रे बाइ
ओही घरी आइ गयल वारतिया जे लोरिके के
लछिमीय मांगति खोरकवा जे बानी हमाऽर
ओहि दिन छोड़ि देइ आगरवा जे ओठियन कय
हरदीय में चढ़नीय लछिमिया जे देख रे आइ
ओही घरी हरदीय गरदिया जे मिल रे बवलेनि
अब कइ देहलेनि गऽरदवाह् रे निसान
आजु भाई पाकति ना गोहुँवा जे रहे गोजइया
उहे भाई देखत किसनवा जे लेइ रे बाय
उहो भाई देखतइ किसानवा जे गिरि रे गयनऽ
रोवत बानह् रकतवाह् कनि रे आंसु

ओही सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
एकमत मयनह् कौसनवा हऽरदी कऽय
उहे भाई रेंगनह् ना गरवाह् रे मिलाईं
एकदम चाढ़ल थाननिया पर रे जानऽ
अब फेरि चऽढ़लि थाननिया बाइ कचहरी
बोलत बानह् ना आठियन रे दोहाई
अब कहँ राजाह् ना सुनिलह् मारि महुअरि
एठियन मनबह् काहनवा रे हमारऽय
आजु भाई बिहनइ लगवले चर रे बाहऽय
इय का दुपहर गरदवा देला उड़ाई
अब कहँ पावति ना गोहुँवा कइ गोजइया
उहे भाई हाईय गइल ना खय रे कारऽय
कइसे हम वालउ ना बचवा रे जियइबऽ
कइसे तोहार देबइ ना रोलिया रे चुकाई
एतनाह् कहत ना बतवाह् बाइ रे ओठियन
आ फेरि राजाह् गयल ओहि दुख रे राइ
आज कहँ सुनबह् कौसनवाह् हऽरदीय कऽय
आजु भाई लउरि ना लठिया ज हाथे रे ल्या
जाइ केनि मारह आहीरवा जे खेतवा पर
कहिये से कइलेसि हुरदिया ज उदि रे याई
अपनेह् अपने के किसनवा जे जाइ रे बमकल
चलतइ मारब आहीरवा के वरि रे थाइ
जउन घरी चलि गयन सिवनवा जे हऽरदीय के
अहीराह् बइठल ना डाड़वाह् पर रे बाइ
जउने घरी बिगहहा फसिलवा जे परि रे गयनऽ
अगवाह् पढे के हीम्मतिया जे नाहि रे बाइ
ओही घरी अहराह् पाहरवा जे जोरि ये सिहलेनि
ना फेरि दुइसइ दुहइया जे ओहरे बाइ
आजु कहँ सुनवह् ना भइयाह् दूरदेसिया
हऽरदी के सुनि लह् ना लोगवाह् रे बनाइ
आजु हम गइयाह् भइसियाह् ना कबो परवले
ना त कतव मागिय बियरिया जे देख रे खाब
आजु मोरे लोहइ उठनवा बा लोहरे बइठन
लोहाह् हम परलिना हउवह रे अधारि
कतहूँ के खातिर आपदवा जे सूवा रे होइहऽ

उहाँ परि कइ देहू रइनियांहू पर रे ठाड़
जउने घरी जोड़ीय सामनवा जे होइ रे जइहंइ
दुइ हाथ चालति ना खेतवा पर तर रे वारि (२४३०)

लोरिक द्वारा भयंकर घोड़ा मंगर को वश में किया जाना—हल्दी से नेउरी की चढ़ाई

ओहि घड़ी अहीरेहू पर छुटना जे देख सिपाही
अब चलि गयनहं जामुनिया ना केनि रे घऽरऽय
आजु भाई बोलनह सीपहिया जे सुववा कऽय
अहीरूय तोहरइ बलउवा वा चाननी पऽर
तोहे भाई राजाहू महुअरा के वानहू बलावऽय
एतनाहू सुनत मारदवा वीर रे लोरीक
उहे फेरि वइठल आंगनवा वाइ रे वाड़ऽ
तब तक बोलनहू सीपहिया रजवा कऽय
किलवांहू तोहरइ अहिरावा वाइ बलावऽइ
ओहि घरी उठि देइं मारदवा वीर रे लोरीक (२४४०)
रेंगल जानह ना किलवा के हो पासइ
तबसे ऊहाँ डाटलि कचहरी वा चाननी पऽर
उहाँ मंत्री बोलत ना बतिया वाइ लहाई
आजु कहें राजाहू ना सुनिलहू मह रे राजा
एठियन मनबहू काहनवांहू रे हमाऽर
देख भाई जबरहू ना परजाहू भयल तोहार नेउरी
अब फेरि अड़लेसि ना जमवाहू रे हमाऽर
आज तुंय भेजि दहू आहीरे जे नेउरी में
जाइकनि ऊगहि ली आवउ सब लगान
ओहि फेरि जातइ ना उहवां जे जुझि रे जइहंऽइ (२४५०)
दिनवांहू दिनकइ झागड़वा जे जाइ ओहाइ
आजु कहे सुघरि ना अहीरी बाइ रे एठिन
जइसे उगलि दुइजिया के बाइ रे चांद
अहीराहू जूझिय नेउरियाहू मेंनि रे जइहंऽ
ओके आनि के भोगहू तुय रनि रे वास
ओहि घड़ी बोलल ना रजवा जे बाड़इ महुअरि
बोलति भाई बानह लारमवा के देख रे बोलऽय
अहीरू तूं जाबहू नेउरियाहू पुर रे पालऽ
तोहइं मीलति बाड़इ नेउरियाहू पुर रे पालऽ

उहवा पर परजाह् जावरवा जे होइ रे गपनऽ
आजु मोरे देलेनि लागनवा जे देख रे तोरी
आजु तुय जाइकह् लागनवा जे सुन रे कइकऽय
वइठइ खावह् हारदिया जे देख बाजारऽय
तोहकेह आधोय हारदिया जे देइ रे देवऽइ
आधा देइ देवइ ना किलवाह् भव रे नार
आधाह् देइ देब ना रजिया जे इहे हरदिया
आधे के होइ जाह् आहोरवा तू पटि रे जात
वाकी भाई जाइकह् लागनवा जे लेइ रे आवऽ
सब हम जानीय आहीरवा के हुव रे बन्स
ओही घरी बोलल ना बानह बीर रे लोरीक
राजाह् सुनबह् सुवाह् एठिन हो हमारऽय
आजु भाई सुनिलह् ना सुव्वाह् मोर महुअरि
देख भाई नगेह ना पयेरहि नाहि रे जावऽइ
आजु भाई रहिहइ ना हमके सर रे दारऽय
ओइसइ रहिहइ ना हामइ लेइ हो पारऽय
आइसइ रहइ पाहरवा पर होसि रे यारय
एतनाह् बोलत ना बतियाह् बाइ रे ओठीन
तब तक सूनह हारदियाह् कइ रे हालऽ
अब फेरि बोलइ कचहरी के सब रे लोगऽय
अपने मे कऽरत मन सउदाह् देख रे बानऽय
आजु कहँ राजाह ना सुनिलह् महरे राजा
एठियन मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
केहू के खोजे के मिरितिया जे देख रे आमय
एकर भाइ सहजे म मिरितिया जे आइ रे जाइ
आजु कहे देइदह् ना घोड़वा ज उहे कटनहा
घोड़वा के जाबह् ना देवह मगर बताइ
आजुय जातइ ना खोलिहइ जवने घरी ढकना
घोड़याह् आलर परनिया जे लेइ रे लेइ
आजु कहँ सहजे मे आगड़वा जे टूटि रे जइहे
धनवा के लेइवह् भोगह् नाह् रनि रे वास
आरे सूनह ना हलियाह् आठियन कऽय
राजाह बोलह महुअरि देख रे बानऽ
आजु भाई सुनबह आहीरवा तूंय ए लोरीक
आजु भाई एक दुइ ना घोड़वा के तू ए क्षयेह्

घोड़वाह् बान्हल तवेलवां में बानं पचासऽइ
जाइकेनि लेइलह् तूं घोड़वा रे वराई
ओही घड़ी हूलि गयल आहीरवा तावले में
एक ओर से लागल ना हंथवा अन रे दाजय
केवनो हाथ धरतेंय धरतिया में गिरि रे जानऽ
के केंह धऽरत ना जइहंइ करि रे हंवऽ
आजु पीठि देलेंह् ना निचवाह् रे ओनाई
अइसेह् अइसेह् ना घोड़वन अंदे दाजइ
निकलि गयल पूरुववा केनि रे ओरऽइ
ओड़वा पर बान्हलि ना घोड़िया बाइ मिलासी
उहे भाई ओरेंह बान्हलवा बाइ रे जाई
ओहि घड़ी धइलेसि ना पीठिया पर रे हांथइ
घोड़ियाह् बोललि लारमवा कइ रे बोलऽइ
आजु कहैं सुनवह् ना भइया वीर रे लोरकि
एठियन मनवह् काहनवांह् हमारऽ
तूं भइया हमरेह ना पीठिया पर हांथऽ
अब ठाढ़ भइलह् ना हथवां रे तोहारऽ
आजु कहें जवने ना दिनवा बेटवा जनमल
अब धइ देलेह् पिरिथिमी बाइ रे लातऽ
ओनके लीखल असवरवा पहिले कऽ
भइया चढ़िहंइ अहीरवा वीर रे लोरिक
आउ नाहीं ओकर त चढ़िहंइ सब बारऽ
दूसरेह् के घोड़वाह् कटनहा होइ रें गयनऽ
अहीरे के होइय जाईय ना पूज रे मानऽ
ओही घड़ी सूनह ना आहीरवा कइ रे हालऽ
अब भाई देखह् ना घोड़िया के सुन रे बातऽ
घोड़ियाह् बोललि ना बानइ लारमें से
आजु कहैं भइयाह् ना सुनिलह् वीर रे लोरिक
एठियन मनवह् काहनवां रे हमाऽर
देख भाई छतरीय बरगवा जे मंगरू हवंऽ
अब फेरि तेलीय ना हउवं मलि रे कार
आजु भाई बहुत ना घोड़वा जे जब रे सउखल
ओनकर कइलेन ना कसि कह् रे संवार
ओहि घड़ी सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
अहीराह् रेंगल चाननिया पर बान रे जातऽय

जहंवा पर वइठल ना राजवा जे बानऽ महूअरि
आगा फेरि वोलत आहीरवा जे वानऽ रे जाइकऽ
आजु कहैं सुनबह् जे मोरे महूअरि
आजु हम देवह् ना घोड़वा जे एहि रे दम्मऽ
नव हम जाइय नेउरिया जे पुर रे पालऽ
अब फेरि वोलल ना रजवा जे वाडे महुअरि
अब अहीर मनवेह् काहनवा जे देख हमारऽ
जेतनाह् बान्हल ना घोड़वा जे थान तऽवेली
अब भाई देखलह् ना घोड़वन के अदे दाजी
एकदम यान्हल ना घोड़वा जे हउवे पचासऽ
एक ठेनि लेइलह् तू अपने के देख बराई
तब फेरि वोलल अहीर वा बीर लोरीक
दरियाँ कारईं ना बेडवा जवाबऽ
आत सुनतह ना राजा मोर महराजा
एठियन मान काहनवा हमाऽरय
कहवा बाडइ ना घोडा हो कटनहा
उहे देवह ना हमहू के तूहऽ
तब्बइ जावइ नेउरियापुर पालऽ
एतना बताइ मन्त्री थपले रहँनऽ
हसल बानऽ कचहरी के सब रे लोगऽ
आजु भाई केहु के मउतिया खोजे के परऽय
अहीरे के आइलि वा मउति नगि रे चाई
आजु कहैं जाइकह ना कोठिया धधकावा
ताला देव्या तबीले खोलवाई
जाइकनि देखउ ना घोड़वाह् लेइ होइ ये पइलें
घोड़वा के टारी ढकनऽ ओहि दम्मऽ
उहे भाई देखतइ ना मगरा जे खाइ रे जइहे
दिनवा के दिनकई टूटी जाई कल रे कान
आजु भाई वोलल ना राजवा जे वाडे हो महुअरि
तब अहीर नाहिय तऽ काहना जे नाहि रे मनब्यऽ
वोहइ देईं देईंय कऽटनहा जे हमरे घोडा
साइति के काटि कह जिनिगिया जे लेइ रे सोहंऽ
ओकर नाहि होवई ना हमहू जे मलि रे कारऽ
एतनाह् बोलत ना सुबवा जे बाइ महूअरा
सुववाह लेलेसि आहीरवा जे वाटि रे ओर

आजु भाई हमरेह् जीनिगियाह् केनि ये कऽरने
अइसन होइ जाउ ना घोड़वाह् रे तोहाऽर
आजु हम देखव ना घोड़वाह् रे काटनहा
कइसे काटिकहि जिनिगिया जे लेइ रे लेइ
जउने घरी रेंगल आहीरवा जे देख रेंगावल
अव हलि गयल कोठरियाह् केनि रे बीचऽ
जाइकेनि खोलइ ना ताला कोठिया कऽ
आ फेरि देलेसि कोठरिया हो खोली
अउ जहाँ बान्हल ना घोड़ा वा तवेले
अउ फेरि सूनह ना डांकि के हो गयनऽ
जाइकनि पान पटरा उघिरावऽय
जवने घड़ी दूनो वगल में वगलियाइ कऽ
झांकत वाड़इ ना ओठियन हो गाड़ा
आजु कहँ मारह ना लिदियाह केनि रे मऽरने
वलहा गयल ना रहनह् रे झंकाइ
अंखिया पर वऽसल ना किचर जेके रे वऽहई
दोमउर लागल किचरवा जे उहं रे वाइ
ओहि घरी जूटल आहीरवा वा वीर रे लोरिका
एकदम करि गयल गड़वड़वांह वीच रे जाइ
जाइ कनि करत ना लिदियाह् दूनो वगल में
अव फेरि कयलइ ना पेटियाह् तर रे वेरि
ओही घड़ी पेलत ना पेटवा पर वाड़ें हांथवा
घोड़वा के लेलेसि ऊपरवांह् रे उघारि
लिदिया के ऊपर वा घोड़वाह् ठाड़ रे भइनऽ
अहीराह् ठाड़ाह ना अहह पज रे वाइ
जेतनाह् रहनह् ना पीठियाह् पर रे कुसवा
उहे भाई चटलेसि चाकुइयाह रे वनाइ
आजु भाई अंखियाह् ना किचर दुनो ओर भयन
उहो भाई चक्कू से काटतवा जे लेइ रे वाइ
आजु भाई लेइकह ना घोड़वाह् रे निकलि कऽ
अव फेरि निकलल ना डांड़ेह् देख रे बाइ
आजु कहँ धइलेह् चुल्लुलवा जे घोड़वा कइ
ले ले जाला सेनुर सागरवा के देख रे भींट
आजु भाई देखइं ना लोगवा जे हरदीय कऽय
घर घर गयल टांटरवाह् रे दियाई

आजु बाबू छूटल ना घोडवाह् जे बाइ काटनहा
केकरि आइलि माउतिया बा नगि रे चाइ
ओही ना दिनवाह् राम समइयाँ
के फेरि ओहूय सामइयाह् कइ रे हाल
उहवाँ से गयल आहीरवा बा बीर रे लोरिका
घोडवाह् ले लेह् जामुनिया जे घरे रे जाइ
आजु कहँ लेइ बह् खडहरा जे हथवा मे
अब सोझे लेइ गयल सागरवा मे कर रे ठाड
आजु भाई देइ दे खारहवा लेइ रे ओठियन
उहे भाई सानह् मानह् रे बनाइ
देहियाह मलि मलि ना घोडवा के लगनह् धोवइ
किवर धोवन अखियाह् कइ रे बाइ
आजु कहँ धोइ कह ना लेइ ये जमुनी के घरवाँ
पहिलेह् देलेसि ना दूधवाह् मरि रे अगवा
घोडवाह् पीयत मरीचियाह् बाइ रे दूध
ओकरेह् पीछेह् ना झुरियाह् देइ आगरिया
आ फेरि चढलि बदनियाह् पर रे बाइ
ओही घरी धीकल रहिलवाह् कइ ये दलिया
अब फेरि देलेसि ना अगवा जे ओन्ह रे धउइ
आजु कहँ खालह् ना खइयाह् रे बलहवा
दस रोज भयल ना सेउवा जे लेइ रे बाड
जवने घरी दम्मइ ना घोडवा के होइ रे गयनउ्य
ठनकल बानह हरदिया जे पुर रे पाल
जवने घरी बाजलि सबदिया जे मागरे बउइ
घर घर गयल दाटरवाह रे दियाई
अरे देखई ना लोगवाह् हरदी कउ्य
आ फेरि दातलि अगुरिया बाय चबातऽ
आजु बाबू सबकेह् ना घोडवाह हुउ काटनहा
अहीराह् के होइय गयल बा पूज रे मानउ्य
ओही घरी देखह् ना हलियाह् ओठियन कय
अहीराह् कइलेसि ना सेउवाह् मंग रे कउ्य
दुनहूं से सवटलि ना देहियाह् रे बनाई
ओहि जउ नागर हरदियाह् पुर रे पालउ्य
ओहि घरी देखह् ना हलिया ओठियन कउ्य
घोड़वा के घउइलि रहिलवा जे मेंह रे दाली

एक नादे चभकई ना दूधवा रे मरीचऽय
घोड़वाह् सउखल हरदियापुर रे पालऽय
तव फेरि वोलल ना घोड़वा जे बाइ वलहवा
लोरिका ते मनवेह कहनवाह् रे हम्मार
आजु चढ़ि जावेह चाननिया जे रजवा के
अव मांगि लेवेह ना हमरा जे देखु सामान
अरु भाइ लेइ कह सामनिया जे तुय रे अवतऽय
तनि एक लेइति ना वलवाह् अन रे दा (ज ?) इ
ओहि घरी सूनह ना हलिया जे ओठियन कइ
अव फेरि ओहूय सऽमइया कइ रे हाल
अहीराह् रेंगल जमुनिया जे घर से गयनऽ
एकदम चाढ़ीय चाननीया जे लेइ ये जाइ
जहवां पर लागलि काचहरी वा महुअरि कऽय
दमकलि वइठलि चाननीया पर दर रे बार
ओही घड़ी बोलल अहीरवा बा वीर रे लोरिका
सुववा तूं मनबह् काहनवांह रे हमाऽर
घोड़वाह् मांगत बा आपन रे सामनिया
का भाई बानीय ना बेलकुल रे सामान
ओही घरी बोलल ना रजवा जे बाइ महुअरा
दरियांह् करइ ना बेड़वांह् रे जवाव
आजु भइया एक दुइ चरजमवा के कवने रे गनती
जाइ कनि देखलह् ना टंगले जे बान पचास
जवन तोहरे मनेह् ना हो जाई कच पेटाड़य
तवने एइजा सउखीय समनिया जे कटि रे जाइ
ओहि घरी बढ़ियांह् बरवले जे बीर रे लोरिका
एकदम देलेह् चाननिया बा चलि रे जाइ
जवने घरी पटकत ना घोड़वाह् केनि रे अगवां
उहे घोड़ा जरि मरि भयनह ना खंगार
आजु कहैं बाउर ना चेलवा त बउ रे रइले
अहीराह् हऽरि गइल ना मतियाह् रे गियान
तनी एक ढिलइ बन्हनवा जे हमरे कइ दे
हम देख लेईंय ना सुबवा के मनु रे साय
इयका देलाह् टुटहिया जे फंस लगिया
इयका देलाह सरजमवाह् रे हमाऽर
आजु मोर सोनइ अखरवा जे हउ रे पाखर

सोनवाह् के जिरहिय ना वकसलि रे लगाय
आजु कहैं बारह ना बरवा के हमरे मोतिया
गोडवा के देइ हइ नेउरवा जे एहि रे दाम
जेवने घरी बान्हि जाई नेउरवा रे गोडवा मे
जेकर भाई साठिय ना कोसवा मे जाइ आवाज
अब कहैं दहउ सामानिया जे भागि ये देलेनि
घोडवाह् करत बानइ नह इत रे राज
ओहि घडी सुनहू ना हलियाह् ओठियन कऽ
अहीराह् सुनऽति जबबिया जे बानऽ
एकदम रँगल महुअरि किहा गयनऽ
अहीराह् चऽढत चाननिया पर बानऽ
आजु कहे राजाह् ना सुनिलऽ मह रे राजा
एठियन मनबह् काहनवा रे हमाऽरऽ
आ छोडि देवह् ना हमरव रे पडादा
हम भाई आलर जिनिगिया लेइ रे लेबऽय
नाहिं त बुलह् सामनिया सुवा रे देइ दऽ
हमहूँय जाइ नेउरियापुर रे पालऽय
ओहि घरी देलह सामनिया राजा महुअरि
एकदम लेलेह् लोरिकवा वाइ रे जातऽय
जाइ कनि देलेसि सामनिया घोडा के आगे
घोडवाह् हऽसल मगरवा ओहि रे दम्मऽ
ओहि घडी कइलस सिंगारवा ओहि रे दम्मऽ
अहीराह् कसई ना ओहि दिन रे सामाना
जिनकर सोलह आखरवा कसि रे पाटऽ
मुहँवा मे देलेसि ना अवसर रे लगाऽये
मथवा पर देइ देइ चिटुकवा घोडवा के
जे मह गोलीय टहकवा खाइ रे जातऽय
आजु भाई बारेह ना बरवा देख रे मोती
मोतियाह् गोरल कोतलिया कइ रे बानऽ
अब बान्हि गऽयल ना गोडवा में देख नेऊर
जेकर बान्हत नेउरवा जे घह रे राय
ओहि घडी देखह् ना हलिया जे घोडवा कऽ
देख भाई ऊगनि दुइजिया के बाइ रे चान
आजु कहैं सूरज ना ओरिया जे तकि रे बाला
मगराह् घोडाह् ताकलवाह् ना बानहिं रे जाव

सूनह् ना हलियाह ओठियन कऽय
अहीराह् कऽरइ ताखतवाह् अस रे नानऽ
जाइकनि कऽरत ठाहरियांह् जेव रे नारऽय
ओही घरी वोलत जावनिया वा वीर रे लोरिका
अव घन दुन्नोह् ना सुनवह् रे हमारऽय
गरजति रहह् न पलियांह् रे हरदियां
हम भाई जात बांइ नेउरियाह पुर रे पालऽ
आजु जहं जातइ नेउरिया में जुझि रे जावऽ
दिनवाह् दिनकह् टूटीय जाइ कल रे कानी
नाहि हम लऽवटि ना अइवे जे नेउरीय से
एहि जउ नगर हऽरदियाह् रे वाजारऽय
आजु हम आधाह् ना लेइ लेवि रे हऽरदिया
आधाह् लेइलेव ना किलवाह् रे वंटाई
आधे के होइ जाव हमहूँ ना पटि रे दारऽइ
एतनाह् कहत ना घरवांह् वाइ रे लोरिका
चनवाह् जमुनीय सूनई न कन रे पारी
ओहि घरी खाईय भयल वा सम रे तूलऽय
अहीराह् गावइ ना वीरवा मुखवा में
खोलत वाड़इ गांजड़वा कइ रे वानऽय
आजु वाकस खोलीय गांजड़वा वाइ पहीरत
ओहि दिन अंगवाह् ना पहिरत वाइ अंगरखा
गोड़वा में गुलइ वदनिया रे तवांनऽय
आजु भाई तरकुस ना गुजवा पनही कऽय
उहे वीर चांपइ ना एड़वा रे चढ़ाई
के फेरि साठिय ना गजवा कइ दुपट्टा
अहीराह् वान्हइ ना पेटिया रे संम्हारी
जाजु कहें छप्पन ना छुड़ियाह् पन कटारी
अहीरे के झुकि गइलि वगलिया में तर रे वारि
आजु कहें धइले पगरिया जे लरमें कऽय
जवने भाई ले गई डवरूंवा बा घह रं राई
आजु कहें बायेंह ना हथवा में थामि रे लेवइ
दहिनेह् थाम्हत खिचुलिया तर रे वार
ओही घरी डांकिय मांगरवाह् पर रे गइनऽ
अब फेरि छोड़त लऽगमिया जे आपन रे बाइ
जउने घरी तन्निक आसनवा जे बाइ छुववले

घोड़वाह् छोड़त घऽरतिया जे बान रे दाम
आजु कहे घूमत ना घऽरतिया लेइ रे बेवडल
आ फेरि घूमत बा हरदिया जे पुर रे पाल
ओहि घरी हहरइ ना लोगवाह् हऽरदी कऽ
ओही भाई दातन अगुरियाह् रे चवानऽ
आजु कहें हो हो ना दइबा मोर नारायन
क्या बरम्हा लिखलेह ना मझवा रे लिलारऽ
आजु भाई अइसन अदिनवा निय रे रऽइनऽ
घोड़ाह् छूटल काटनहा लेइ ये बानऽ
आजु केकर आइलि माउतिया नगरिचाई
एह जाउ हरदीय ना बीचवा रे बाजारऽ
घोड़वाह् मारिकेह् भंवकिया धरती ले
अब घोड़ा उड़ीय आकसवा चलि रे जालऽ
नीचेह् छोड़लेह् घऽरतिया उह रे ऊडल
एकदम छोड़लेह् ऊपर वा अस रे मानऽ
आजु भाई बादर ना रेखवा रे छोड़ावऽ
नीचलि गयनह् नेउरियापुर रे पालऽ
एकदम गयनह् जगलवा छिउला के
जाइ केनि ओहीय ना गयनह रे उतारी
ओही भाई उतरलि मारदवा बीर र लोरिका
घोड़वाह् बन्हलेह छिउलिया कइ रे पेड़ऽ
पीठिया पर धऽरई दुपटवा अहिया पर
छन सेह् रहलह् ठरववा लेइये छाहऽ्य
ओही घड़ी मूनह ना हलिया जे ओठियन कऽ्य
के फेरि पालाय नेउरियाह् कइ रे हाल
आजु बह राजाह् न रहनह् हरेवा रे परेवा
खेलइ गयल जगलवा मे रहें अहीर
आहि घड़ी पड़ि गयल ना नजरिया जे घोड़वा पर
घाड़वाह् बान्हल छिउलियाह् केनि रे डाल
आजु बहें सुनबेह ना तुहउ रे पहरुवा
पहरू ते मनबेह काहनवाह रे हमार
अब चलि जाबेह् छेउलियाह् केनि रे बऽनवा
ओवर लेइयाह् ना पतवाह् रे ठेकान
के फेर हवइ ना रहिया के रह रे चऽनू

ओके होइ गऽयल पयंड़वा में बाइ रे भूल
एक ठे हवय ना घोड़वा के सव रे दागर
उहे भाई घोड़ा बेचनवा बा चलि रे जात
रेंगल पहरुवाह् बाई रे भींटवा
एकदम हलल छिउलियाह् पेड़ रे जाई
एकदम रेंगल ना उहऊय रे रेंगावऽल
अब चलि गयनह् छिउलवा के देख रे डाढ़
आजु भाई ढरकल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
घोड़वाह् बन्हले छिउलिया के बाइ रे डार
ओही घरी जुटि गयल ना मीतवाह् रे पहरुवा
अब फेरि बोलत लारमवा के बान रे बोल
आजु भइया कहां ओतनवा जे हउ रे गोतन
कहवां पर टूटीय गाइलि अब बुनि रे याद
कहवां के कइलह् चढ़इया तु दूरंदेसिया
अब भाई घामें में चढ़लवा बाड़ रे जात
ओही घरी बोलल अहीरवा बा बीर रे लोरिका
संगियाह् मनबह् काहनवाह् रे हमार
देखऽ भाई गउराह् ओतन ह गउरा हो गोतन
गउरा में टूटिय गइलि बाह् बुनि रे यादि
आजु कइ देहलीय चढ़इया जे नेउरीय के
उतरल बाड़ीय छिउलियाह् केनि हो डाढ़ि
तब फेरि बोलल ना बानह रे पहरुवा
भइयाह् मनबह् ना कहना तूं हमारय
जब भाई नगर गउरवां घर रे हवं
कोइ तोहार हीतइ ना मीतवा लेइ ये रहनऽ
ऊ भाई देबह् ना हमहूं ए बताई
तब फेरि बोलल अहीर बीर लोरिक
दरियां करइं ना बेड़वां जबाबऽ
जवन मितर हमार ले हो रहनऽ
हमरे नगर गउरा गुजरातऽ
देखिल दुन्नो ना मिलऽ गुली डंडा
खेलत रहलीं ना ओही हो राजऽय
ओहि दिन सुन ना हलिया ना ओठियन कऽ
हमहूं भइलीं न चोरवाह् हो आजऽ
मीतवा भयल ना सहुवा हमारऽ

जउने घरी देखइ ना गुलिया मारय टेडाय
उ टेड गईन भकतलवा के बानऽ
हमहूँ गइली ना उहा हो जुडाई
तव तक दउरल ना मीतवा हो गयल
उ भाई गयल ना मीतवा रे ठाढइ
उ भाई लेलेसि ना गुलिया हथवा मे
उ हथ मारत ना चपवा जे बानऽ
आइकनि हमरे न मथवा गडि रे आला
थोडा बही घुरिया रे जाई
आजु कहे हमरेह् नजर मीत पहरुवा
अब कालि कवनेह् मुलूकवा मे भागि रे जाई
ओनकर पतउ ठेकानवा जे देख रे नाहि नी
हमहूँ आयल ना बाडी रे नेउरी मे
पतउ तो नाहि पाताले हरवा जे देख रे बाई
अब फेर बोलल ना मीतवा जे बाइ पहरुवा
उहे भाई होलइ ना बतियाह् रे बेजार
हमही हईंय ना मीतवाह् रे पहरूवा
लोरिक मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
आजु हम तोहरे डहरवा उहवा से
अब भागि अइलीय ना गउरा जे तोहरे छोड
आइ केनि नेउरी न पुरवा मे टिकि रे गइली
अब नाही गइलीय गउरवा जे हमरे गाँव
··· ···सुनह् ना भइया उ ठिकाने
उहे भाइ रोवे लागनऽ गरजोरी
आजु कहे लोरिका पहरूवा के रोइ दे
झरल जाति बा तरुनिया के पातऽ
अब फेरि बोलल मऽरद बीर लोरीक
अब मीत मनबूय काहनवा हमारऽ
देख जवन टूटल लागनवाह् नेउरी मे
जवराह् भयल बा सूववा हो तोहारऽ
उ रोल नाहिय बा देलेसि हुऽरदी मे
अब हम तीनि बरिसवा बीति रे गयनऽ
अब हम ऊगहउ ना अइलीय रे लगानऽ
एतनाह् कहत ना बतिया जे लइ ये ओठियन
ए फेरि ओहू समइया के सुन रे हाल

आजु कहें सुनबह् ना मीतवा पहरुवा
अब मीत मनबह् काहनवा हमारऽ
कइसन बाड़य ना लोहवा सुबवा कऽय
कवन कवन ना हवं हंथियारऽय
तब फेरि बोलल ना मीतवा पहरुवा
अब फेरि बोललि आरथवा बनाई
आजु कहैं सुनबह् अहीर ना बीर रे लोरीक
मीतवा तूं मनबह काहनवांह रे हमार
अब फेर पहिलेह ना छोड़िहंइ रे पिलइया
सरगे में रहोय ना घोड़वाह् रे तोहार
उहे भाई सकुलीय पिलइया जे छोड़ि रे देइहंय
पोतवा धइले ना देहइंय रे गिराई
आजु कहैं गिरवह् धरतिया में मीत रे तोहउं
मथवा देइहइं ना ओठियन बिल रे गाइ
एक डेरा इहय ना सुबवा के देख रे हवंय
एकरे से आगे ना लोहवा जे वड़ रे तेज
आजु कहैं ओकरेह् न माथवांह् लेइ ये पीछे
उठि जइहं हाथे बरमवा न कइ रे फांस
उहे भाई बरम्हां का फसिया जे अन्नर हंव
ओमें नाही बचिहंऽइ जोनिगियाह् तोहाऽर
आजु कहें बोलल अहीरवा बा जे बीर रे लोरिका
तब मीत एमा उपइयाह् कइये बा
आजु मीत जवनि डाहरिया जे देख रे होइहंऽय
तवन हमइ ना देबइ रे बताय
ओही घरी बोलल ना मीतवाह् रे पहरुवा
तूंह मीत मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
जउने घरी जलियाह् अंदरवा जे फंसि जायऽ
अब जुटि जाया ना सरवाह केनि रे बेलि
जाइकनि एक्कउ ना सरवा जे काटि रे परबऽ
बरम्हा के फंसियाह् गीरिह ना मह रे राय
तब तक ओसरि ना आ जाई देख रे तोहरऽउ
अव फेरि देवह् ओसरिया जे लेल रे कार
एतना मीतवा बाइ पहरुवा
लोरिकाह् सूनइ ना कानवा रे लगाई
ओहि ठिन रेंगल ना मीतवा बाइ पहरुवा

लोरिकाह् बोलल लारमवा कइ रे वालऽ
देखऽ मीत पोलवाह् खुलइया ना देख रे पावइ
अब तूह देहह् डहरिया हो वताई (२८८०)
ओहि दिन रेंगल ना मीतवाह् बाइ पहुरुवा
एकदम रेंगल डेवढ़िया पर वान रे जात
उहवाह् बनत समरवा बा देवढी पर
सब केनि देलेह ना सूववाह् बा बट रे वाइ
ओही घरी पहुँचल पाहुरुवा जे वाडे रे मीतइ
अब फेरि पूछत ना सूववा जे पुनि रे वाई
आजु कहँ सुनवेह् ना मीतवाह् तोइ पहरूवा
कहनाह् मनवेह् ना ओठियन रे हमार
के फेरि रहल ना डहरे के डहर रे धालू
ओके होइ भयल पमडवा मे रहल रे घाम (२८९०)
उहे भाई छुलह् ना छुलवाह् घन रे छाहे
घोडवन के घडकल छाहेलवा मे देखु रे वाइ
ओहि दिन एतनाह् ना बतियाह् लेइ रे कहले
घोडवाह् बान्हि कह ना सुतल ओहि रे बानऽग्र
उहो भाई जुटलीय जब हमहूँ छिउली बन मे
जाइकनि पूछलीय ना बतियाह् अर रे थाई
आजु फेरि पूछलीय ना बेल्कुल रे जेहालऽ
ना त फेद हवह ना घोडवाह् के सउरे दागर
ओहु मेनि कततउ ना घोडवा वेच रे जातऽग्र
ना त केहू होतइ दोसतवा हउ तोहारऽग्र (२९००)
आइल बानऽ भेंटइ दिगरिया भुल रे कातऽ
उहे सूबा तोहरइ ना दुसमन देख रे हउवा
जवन भाई सुबाह् हरदिया के देख रे हऽउ
ओनकर तू जबरीय ना मउडीय जे आडि रे लेहलह्
आपन लेहल चाहतवा जे देख रे वाय
आइ गऽग्रल हरदीय ना सेनिय मलि रे कारऽग्र
नेउरी मे लेइय ना रोलिया जे आपन चुकाई, ओही दिनवाह् रे समइया
आजु दुओह् ना भइयाह् बाँनऽ रे वईठल
इ बात सुनलेनि ना कानवाह् रे लगाई
आजु कहँ सुनवह् ना भइयाह् मोर परेवा (२९१०)
आज मुदई आयल ना बानह् लेइ हो गोइडें
झगडाह् मचीय नेउरिया मे बड रे वारऽग्र

तब तक सूनह ना हलियाह् लोरिके कऽय
घोड़वाह् के करत सिगारवाह् ओहि रे दम्मऽ
जिन्हकर सोनइ अखरवा वा सोन रे पाखरि
जिरही के वकसइ ना लगनीय रे लगावां
जेनकर माथे के चिट्ठुकवाह् वान्हि रे गऽयल
जाइकेह् गोलीय ठाहकवाह् वाइ रे खातऽ
आजु कहँ डांकिय भयल वाह अस रे वारऽय
आजु भाई तनिक असनवा जे वा छुवावत
घोड़वाह् छोड़लेह वाड़इ ना देख रे धरती
मंगर छोड़िय देलेह् वा असरे वानऽय
आजु कहँ वादर ना मेनि चलि रे गयनऽ
मंगराह् नाचत करगहीय वाइ रे नाचय
ओही घरी सूनह ना हलियाह् सुववन कऽय
हथवाह् में लेनह् दुरुविनियाह रे उठाई
उहे भाई लक्खइं दुरविनवां सरगे में
घोड़वाह् नाचत करगहीय वाइ रे नाचऽय
उहे भाई लेइकह् पिलइयाह् किहां रे गयनऽ
सकुलि के देलेनि ना अंखियाह् रे देखाई
सकुलिय देखलेह् दुरविनवा से संऽरगे में
घोड़ाह् नाचत कारगहीय वाइ रे नाचऽय
उहवां से सकुलिय पिलइया जे छुटि रे गइलीं
उहे भाई निकलि आकसवा में चलि रे जाई
जाइ क ऊहे घोड़ाह् के पोतवा जे धइये लेहलेन
एकदम खिचलेह् ना निचवांह् जाति रे वाय
ओहि घड़ी घोड़ाह् ना ले ले खलु अम्मर
अव फेरि थोड़ाह् करीववा जे रहि रे जाय
ओहि दिन वोलल मारदवा जे वीर रे लोरिका
मंगराह् ते मनवेह काहनवांह रे हमाऽर
कइकन पूड़ह सारगवाह् कइ रे घोड़वा
कहे भाई नीचेह ना ले लेइ जाल रे हमार
ओहि घरी सूनह ना हलिया जे मंगरे कऽय
मंगराह् वोलल लारमवा के देख रे बोल
आजु मालिक हमरेह् ना दंतवाह् मेनि रे झुलिकइ
पोतवाह् धइ लेह कुकुरवाह् देखु रे वाय
ओही घड़ी झूलल अऽहीरवा वा लेइये ओठियन

देखत पिलऽईय ना लटवलि ना लेइ रे वाइ
उहे भाई पोलनाह से बढले जे वाइ काटरिया
अब ठनके देलेसि ना मथवा जे अलरे गाइ
पिलई के धरियाह् ना गिरनी नेउरी मे
मुड़ियाह् अटकलि सारगवा मे उढति रे वाई
ओहि घडी सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय
केह फेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हालऽ
घोडवाह् ऊडत सारगवा मे देख रे वानऽ
नाचत बानह् कऽरगही लेइ रे नाचऽय
जउने घरी अम्मर पिलइया जे कटि रे गऽइनी
आजु भाई एहीय नेउरियापुर रे पालऽ
आजु भाई चऽललि आवरियाह् फेरि रे वानी
सुववाह् होतइ वानह नाह तइ रे यारऽय
दूनो भाई वइठह ना बइठक एव रे दम्मऽय
फेंकत बानह् वारमवा कइ रे फासऽय
उहे भाई भारीय ना फसिया रे वढ़ाइ कऽ
छोडत बानह ना घोडवाह् रे सहीतऽय
ओहि दिन धनि धनि ना मइयाह् मोर दुल्गा
जे हइ आदिय ना दिनवा के पूज रे भान
उहे भाई छेकलनि पहरवा लेइ ये ओठियन
माछिय होइवह ना घोडवाह् गयल रे पार
आजु बहें गीरलि ना छलिया जे बरम्हा कऽय
मगर नाचत सरगवा मे देख रे वाय
ओहि घडी दूसर ना फसियाह् लेइ ये हथवा
छोटा कइकह् ना घरवा जे देइ पेवार
ओहि दिन धनि धनि ना मइयाह् मोरि दुल्गा
आपन देलह ना रूपवाह् रे देखाई
देवियाह् भारीय पहरवा जे होइ रे गयनऽ
छोट होइ गईल बरम्हवा के देख रे फास
ओही घरी तिसरेह् ना फेरी जे वाइ उठावत
आजु भाई कोपल ना सुववा जे देख रे वाय
बुजरो जे मुनबह् ना फसिया जे बरम्हा कऽय
जब भाई तोहरेह सकतिया जे देख होय
आजु हम फेंकत ना वाडीय एठियन से
मुदई वाझलि सारगवाह् रे हमाऽर

नाहि हम मूतबह् ना फंसियाह् रे पेवरवई
बरम्हा के होई हिनइया जे लेल रे कार
मूनह् ना हलियाह् दुल्गा फञ्य
दुल्गाह आनीय सकतियाह् रे सहाई
परदे में नाचति करगहीय बाद रे नाचञ्य
नाहि मन सोचति दुरुगवाह् बाइ रे माई
ई भाई हमरेह् ले बड़का हंव रे भइया
बरम्हा जी हंवह् ना पितवाह् रे हमारञ्य
आजु जाउं ओनकर जावनियांह चलि रे जइहंञ्य
हमहूंय रहइ के रहतव कहाँ रे बाड़य
दुल्गाह होइय ना गइनिय लेइ मामूलञ्य
फंसियाह् फेंकइ ना रजवाह् लेइ बनाई
अब जाइके बाझलि ना घोड़वाह् रे सहितऽइ
अब फेरि खींचत ना फंसियाह् जे दूनो रे बाई
ओहि घड़ी खींचि खींचि ना फंसियाह् रे घिचावंऽ
अब फेरि गयनह् करीववा में नगि रे चाय
निचवांह् खड़ाह ना मीतवाह् जे बाइ पहरुवा
उहो मीत दांतन अंगुरियाह् रे चञ्चाइ
आजु बाबू सहजेह् में मीतवा जे कटि रे जाला
दिनकह् आयल झागड़वा जे फरि रे हाइ
ओतने पर बोलल साहरवा जे धरती से
मीतवाह् मनवह् काहनवाह् रे हमाऽर
हाली हाली खींचउ ना सुववाह् जे दुनों रे भाई
नाहि सुववाह् केनिय जउ होइहंय हति रे यार
जउन कुछ टेंटे में अहीरवा के देख रे होइहंऽय
उहे भाई काटिय ना सलवाह् वरि रे यार
इ सुधि गऽइल अहीरवा के रहल भुलाइल
अब खेढ़ा भयल ना ओठिया से ओकर रे बाय
पल्ले से काढ़त कऽटरिया जे देख रे बानऽ
काटत बानह् बरम्हवाह् कइ रे साल
जउने घरी एक्कइ ना सलिया जे गिरि रे गइनी
कुल भाई गिरि गईल धारतिया में भह रे राइ
घोड़वाह् डांकिय फरकवांह् जे होय रे गयनऽ
नाचत बानह कऽरगही जे देख रे नाच
······अहीरवाह वीर रे लोरीक

दरियाह् कऽरइ ना बेंडवाह् हो जयावऽ्य
ओहीं घडी ओसरि ओसरिया लेल रे कारऽ
ओसरी पर कुइयाह् भरति बाइ रे पनिहारिन
सुनवाह् से पक्काह् आवरिया थाम्हि रे लिहली
अब कचलुइया नाह् थम्हवे रे हमारऽ्य
ओहि घरी सुरुकि मा फेंकलेह बाइ मियानऽ्य
अउ फेरि तग्गोय तानल वा तर रे वारऽ
जेवे भाई चारिय अगुरवा भइली रे बाहर
जेकर ताडक आकसवा जाइ रे आतऽ्य
आजु भाइ निचयाह् ना मरले बाइ दवन्हरा
पोरसन गइनीय लावरिया गुमि रे याई
अब घूमि गइल मऽलमिया सूबवा क
खडियाह् गइनी गरद मे रे बिसाई
ओहि घरी पूरुब काटलवा पछु रे गऽ्यल
पछिव से काटत दखिखनवा घूमि रे जानऽ
जइसे भाई काटइ कोहरिया कोह रे राहऽ
ओइसइ पावइ ना पुतवा कठइत कऽ्य
जेकर भाई दुल्लर लोरिकवा बाइ र नामऽ

लोरिक द्वारा नेउरी मे स्त्रियो का बध

आजु भाई अइसीय कटइया घूमि रे कटले
नेउरी पूरय बचइ ना कटि रे गइनऽ
अब बधि गइनीय जऽननिया रे अनेरऽ
जेतना सापति जाननिया रहि रे गइनी
महीराह् काटइ जाननिया हेरि रे हेरी
घा जानी मुदईय ना पेटवन मेरे होइहय
अब भाई लेइहइ बयरवाइ रे हमारऽ
एतनाह् कहि महि आहीरवा वीर रे लोरीक
अब मोड लेलेसि मा गउवा लेले रे कारी
आजु नाहीं रहीय गयनऽ कघले वाम्रा
तब कह विनाह् मरदवा घइ रे वेवई
गलियाह गल्लोह रे नेउरिया दुरि रे आनी
आंजु भाई जऽवन ना मायवा नेउरी में
उहो माया दुमलेह् नेउरियापुर रे पालऽ
उ माया फूटल ना डउवा लेइ ले उरिकऽरि

इ माया छाई हरदियापुर रे पालऽय
अहीराह् होइय हरदिया के मलि रे कारऽय
ऐकर वनि गयल ना छत्तर तक रे दीरऽय
एतनाह कहत ना बानह लेइ ये ओठियन
अउ फेरि ओहूय समइ्या के देख रे हाल
ओहि दिन सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽ
अउ फेरि सूनह् ना हलियाह् आहीरे कऽ
अउ फेरि हलल नेउरियापुर हो पालऽ
जेतनाह् रहल जे. हलवाह् नेउरी कऽ
सुववाह् कइले रहइं ना करधन दान्ना (वान्ना ?) (३०६०)
उहे भाई वन्नइ ना कइलेह रहें हो जेहऽलि
अऽव चलि गयल अहीरवाह् ओठिन वानऽह्
जाइकेनि तोरि देइ जेहलवाह् कइ रे मुंहऽ
पान सइ रहनहं कइ दियाह् जेहले में
ओहि घरी जंगल भेंकुसिया कइये वानऽ
भरि भरि निकलें ना ओठिह सव कऽय दिया
छेकलेंह जानहं आहीरा के ओहि रे दम्मऽ
आजु कहें सुनवह् मलिकवाह् मोर रे लोरीक
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमारऽ
हमकनि करम अधीनवाह् होइ रे बीतऽल (३०७०)
आजु भेंटि भइलि ना तोहंसेह् देख रे वाड़ऽ
आइ के तोड़ि देह लह् जेहलवाह् लेइ ये आजऽ
कयदीय से दीहलह नाहि तुंहउ रे छोड़ाई
एतनाह् झंखय ना लोगवाह् ओठियन कऽय
ए फेरि ओहीय नेउरियाह् कइ रे हाल
ओही घरी सूनह ना हलिया जे लोरिके कऽ
ए मनवह काहनवांह् रे हमार
सय कयदीय ना हमरउ जइ तुंय ना छोड़वऽ
अब सब कुछुय ना कामवा जे करत चलवय
चले के परी नगर हाऽरदिया जे पुर रे पाल (३०८०)
ओही घड़ी हलि गयनंऽ ना गउंवाह् मेनि रे कुल्ही
अव फेरि गऽयनह ना कुलऊ रे वनाय
आजु कहैं वारह बरदवा जे कन रे फूलऽ
तेरह बरनयं ना वानह् कन रे फूल
आजु कहैं झुलनिय नाऽथियवाह् कुल रे लेइकऽ

अब फेरि बारह वऽरदवा के बाडऽ सामान
आजु कहंय देलेसि अहीरवा जे लद रे वाई
बेलकुल मायाह् ना लेहले जे बाइ बटोरि
उहवा से रेंगल आहीरवा जे बा रेगावल
अब धइ लेलाह् ना रहियाह् रे बनाइ
जेतनाह् रहलि सामनिया जे सूबवा कऽय
उटवा पर देलेसि आहीरवा जे लद रे बाय
उहे भाई लेइकह सामनियाह् रेंगि ये देहलेनि
उदियाह ओहलेह निगहियाह् आइ र पार
पान सय कयदी आहीरवा के सगे बानऽय
तब फेरि सूनह लोरिकवाह् कइ रे हाल
आजु कहँ सुनबह् कयदिया जे नेउरी कऽ
एठियन मनबह् काहनवाह् रे हमाऽर
देख भाई तोहन के बाम्हनवा जे छोडि रे देहली
अपनेह् घरेह ना चलियह् तोहन जा
जाके आपन बालउ ना बचवा जे घरे रे देखऽ
अब फेरि खावह् ना देसवाह् रे कमाऽय
ओहि घडी बोलनह कऽयदिया जे लेइ ये ओठियन
लोरीक मनबह् काहनवाह् रे हमार
आजु भाई जियतेह् ना पिढवा जे तोहार छोडबय
सगयाह ना छोडब आहीरवाह् रे तोहाऽर
आज जहां तोहरइ पसीनवा जे लोरिक रे गिरिहऽ
तहं धरि देइहइ फऽयदिया जे सब रे खून
जउने घरी लादलि बरदियाह् अहीरे कऽय
धइलेह आवइ हारदियाह् कइ रे राहऽ
आजु भाई धारइ ना उटियाह् लेइ रे ओठियऽन
हाथिय घोडाह् नीगहिया सब रे पातर
नेउरी के बेलकुल सामनियाह् लेइ ये आयऽल
अब धइलेह् ना बाडय हऽरदीय मे
एकदम आयल ना रजवाह् वा महुअरि
अहीरे के अवतइ ना हपवाह् बा मिलउले
बोलत बानह् लारमवाह् कइ रे बोलऽ
आजु कहय सुनवह् आहीरवा जे धीर रे लोरिक
एठियन मनबह काहनवाह रे हमार
आजु भाई राजाह् हऽरदिया के तू रे होइ जा

ऽ माया छाई हरदियापुर रे पालऽय
अहीराह, होऽय हरदिया के मलि रे कारऽय
ऐकर वनि गयल ना छत्तर तक रे दोरऽय
एतनाह कहत ना वानह लेइ ये ओठियन
अउ फेरि ओहूय समइया कें देख रे हाल
ओहि दिन सूनह ना हलियाह, ओठियन कऽ
अउ फेरि सूनह, ना हलियाह, आहीरे कऽ
अउ फेरि हलल नेउरियापुर हो पालऽ
जेतनाह, रहल जे हलवाह, नेउरी कऽ
सुववाह, कइले रहइं ना करधन दान्ना (वान्ना ?)
उहे भाई वन्नइ ना कइलेह रहें हो जेहऽलि
अऽव चलि गयल अहीरवाह, ओठिन वानऽह,
जाइकेनि तोरि देइ जेहलवाह, कइ रे मुंहऽ
पान सइ रहनहं कइ दियाह, जेहले में
ओहि घरी जगल भेंकुसिया कइये वानऽ
भरि भरि निकलें ना ओठिह सव कऽय दिया
छेकलेंह जानहं आहीरा के ओहि रे दम्मऽ
आजु कहें सुनवह, मलिकवाह, मोर रे लोरीक
एठियन मनवह, काहनवांह, रे हमारऽ
हमकनि करम अधीनवाह, होइ रे बीतऽल
आजु भेंटि भइलि ना तोहंसेह, देख रे वाड़ऽ
आइ के तोड़ि देह लह, जेहलवाह, लेइ ये आजऽ
कयदीय से दीहलह नाहि तुंहउ रे छोड़ाई
एतनाह, झंखय ना लोगवाह, ओठियन कऽय
ए फेरि ओहीय नेउरियाह, कइ रे हाल
ओही घरी सूनह ना हलिया जे लोरिके कऽ
पंचह, मनवह काहनवांह, रे हमार
पान सय कयदीय ना हमरउ जइ तुंय ना छोड़बऽ
अव सब कुछुय ना कामवा जे करत चलवय
चले के परी नगर हाऽरदिया जे पुर रे पाल
ओही घड़ी हलि गयनंऽ ना गउंवाह, मेनि रे कुल्ही
अव फेरि गऽयनह ना कुलऊ रे वनाय
आजु कहें वारह वरदवा जे कन रे फूलऽ
तेरह वरनयं ना वानह, कन रे फूल
आजु कहें झुलनिय नाऽथियवाह, कुल रे लेइकऽ

अब फेरि बारहू बउरदवा के बाड़ऽ सामान
आजु कहय देलेसि अहीरवा जे लद रे बाई
बेलकुल मायाहू्‌ ना लेहले जे बाइ बटोरि
उहवा से रँगल आहीरवा जे बा रँगावल
अब धइ लेलाहू्‌ ना रहियाहू्‌ रे बनाइ
जेतनाहू्‌ रहलि सामनिया जे सूबवा कऽय
उटवा पर देलेसि आहीरवा जे लद रे बाय
उहे भाई लेइकहू सामनियाहू्‌ रँगि ये देहलेनि
उटियाहू जोहलेहू निगहियाहू्‌ जाइ रे पार
पान सय कयदो आहीरवा के सगे वानऽय
तब फेरि सूनहू लोरिकवाहू्‌ कइ रे हाल
आजु कहँ सुनबहू्‌ कयदिया जे नेउरी कऽ
एठियन मनवहू्‌ काहनवाहू्‌ रे हमाऽर
देख भाई तोहन के वान्हनवा जे छोड़ि रे देहनीं
अपनेहू्‌ घरेहू ना चलियहू्‌ तोहन जा
जाके आपन बालउ ना बचवा जे घरे रे [illegible]
अब फेरि खावहू्‌ ना देसवाहू्‌ रे कमाऽय
ओहि घडी बोलनहू कऽयदिया जे लेट ये [illegible]
लोरीक मनवहू्‌ काहनवाहू्‌ रे हमार
आजु भाई जियतेहू्‌ ना पिढवा जे [illegible]
सगवाहू ना छोड़व आहीरवाहू्‌ रे [illegible]
आज जहा तोहरइ पसीनवा जे [illegible]
तहँ धरि देइहइ कऽयदिया जे [illegible]
जउने घरी लादनि बरदिवाहू्‌ [illegible]
धइलेहू आमइ हारदियाहू्‌ [illegible]
आजु भाई धारइ ना [illegible]
हाथिय घोडाहू्‌ [illegible]
नेउरी के बेलकुल [illegible]
अब धइलेहू्‌ ना दादन [illegible]
एकदम आपन ना [illegible]
अहीरे के दवउइ ना [illegible]
बोलत बानहू्‌ [illegible]
आजु कहय [illegible]
एठियन मनवहू [illegible]
आजु भाई [illegible]

वलकुन होवइ परजवा जे हम तोहार
दुइ जून करह कचहरी जे लेइ चनइनी
जाइ जाइ पीयह मदिलवाह लेल रे कार
एतना जउ कहत ना सूववा जे बाइ महुअरा
अहीरा मनबइ ना मनवांह् में मुसु रे काइ
आजु भाई डुग्गी साहरिया में बजि रे गइनी
आजु भाई होतिय ना रजिया वा रद्द रे बाऽदल
महुअरि परजाह् ना सुववा जे होत रे बाय
आजु कहँ राजाह् ना सुनबह् आरे अहीरा
लोरिका होइ गयल ना हरदी के मलि रे कार
ओहि दिन सूनह् ना हलिया ओठियन कऽय
जउने घरी लागल झाऽगड़वा बा नेउरी में
ओहि घरी लागल ना बोहवाह् मेनि रे बानऽ
जउने घरी बोलि देइ भगउती बाइ रे दुरुगा
आजु भाई कवन ना दलवा थाम्हि रे देंई
कवन दल देइंय दंगलिया बीचि रे लागी
ओहि दिन रोवइ ना ओठियन निर् रे बानय
कइ कइ बोलल लारमवा कइ रे बोलऽय
मतवाह् कवनि दंगलियां कइसन रे बोललीं
केकर केकर हऽइयु ना पूज रे मानऽय
देबिऽ खइलह हमरे ना हथवा के गुर रे घीवऽय
पूजवाह् खइलह ना हथवा रे हमाऽरय
आजु कहँ देलह ना हथवां लेइ दुबाई
दूनो ओर के मोहियाह् देति बा माई बढ़ाई
आजु भाई हमरइ ना डंड़वा तुइ रे थाम्ह
दूसरे कें थाम्हइ से मतलवा काइ ये बाय
ओहि घरी सुरुकि ना देहले बा मियानवा
अउ फेरि देलेसि धनुहियाह् रे बनाइ
जवने घरी आयले ना सुबवा जे बायं ओठियन

बोहा में युद्ध और मलसांवर की मृत्यु

लोहवाह् लागल ना बोहवा में देख रे बाय
ओहि घड़ी सूनह ना हलिया जे ओठियन कऽय
कोलवाह् छेंकलेह् आगवइं लेल रे कार
ओहि दिन बोलल हं मलवाह् रे संवरूवा

भइया तूं मनवह् काहनवांह् रे हमार
नन्हुवा ते लेइलेह् छेकनवा जे हंथवा मे
तरकति फेंकवेह् ना तोहूंय रे अगाड
तनी एक थम्हतेह् आगडवा जे कोलवन कऽ
हेमहूं आपन ना होइ जात रे होसियार
आजु भाई चलति ना वोरिया जे खेतवा पर
कोलवाह् लेहई ना लोहवा वा नेर रे यात (३२६०
······सुनह ना हनियाह् ओठियन कऽ
के फेरि ओहूय समझयाह् कइ रे हालऽ
वोहवाह् मे छूटलि ना गोलियाह् कोलवन कऽ
देखि लह जूटई ना लोगवाह् रें बनाई
आजु भाई मीलल ना गडवाह रे नरानापुर
आउ मिलि गयल ना गडवा मा उम रे राव
मिलनह् गढ़इ गाजनवाह कइ रे तुरूका
अब गढ पीपरीय ना कोनवा जे मीलऽ चढ़ारि
उहे भाई चाव्ह ना दलवा जे एक रे होइकऽ
अब फेर वाटिय पलथिया पर खन रे मात
आजु काटि देलेनि ना धरिया जे वोहवा के
मारि गय मावर मुभगवा जे सर रे दाग
आजु भाई लाहई ना लोहवा जे कोन [illegible]
नन्हुवा ठेवलेह् आगडवा जे लेइ रे वाय
जवने घरी लेइ कह ना सठियाह् वीर रे [illegible]
तरवत जानह् बयालिसइ देव रे हाय
आजु यहे भाजलि ना गोनिमाह् कोलवन [illegible]
एकदम से लेह आहीरवा वा यहि रे आद
एकदम हुकलेह ना कोलवन रे [illegible]
जाइकेनि देलेसि पीपरटया मे ओरि रे [illegible]
ओही उठल ना नन्हुवांह वा धारटया
सठियाह् लेइ बह् ना [illegible]
जाइकेनि देहलेनि पीपरटया मे [illegible]
नन्हुवाह आइ गइ ना [illegible]
तावत वानह् पीसरिया [illegible]
तव तक मूलह ना हनिया [illegible]
संवस्य दोसह [illegible]
आजु बड़े दो हा [illegible]

का वरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लीलारय
आजु भाई आवत ना कोलवन कइ रे गोलऽय
अव हम आपन सऽपनीय कइ ये लिहले
धरमीय संतीय सोपरिया जे ले इये लीहलैन
वीरवाह लेइ लेइ मगहियाह् ढोलि रे पानऽय
सांवर धनुहाह् ना तिरवा जे हाथ उठवलें
एकदम गयल राऽयनिया जे होल ठाढ़ऽइ
तव फेरि वोलल ना वतिया वा अर रे थाहऽय
नन्हुवा छोड़ि देह आगरवा जे कोलवन कऽय
आइकनि खगल ना लोह्वाह् लेइये आजऽय
दुइ हाथ चलई ना उहवां से हथि रे यारय
ओहि घड़ी वोलल ना नन्हुवा जे वाड़े धोरइया
धरमीय मनवह काहनवांह रे हमाऽर
जवसे वहनोईय हऽरदिया लेइ ना अइहंऽय
तव सेनि ना छोड़व वेवखा कइ रे घाटऽय
एतना जे सूनत धऽरमियां वाइ रे सांवर
वोलत वाड़इ तड़पिया कइ रे वोलऽ
आजु कहें सुनवेह् ना नन्हुआ सरि धोरइया
पच्छेह वहुत लोरिकवा भाई रे वनिहंऽय
कवनेह अइहंइ रइनियाँ पर रे कामऽ
अव तोहि छोड़ि देह आगरवा जे कोलवन कऽय
अव दुइ हांथइ चलति नाह तर रे वार
जेके भाई एमइ ना रामइ देइ ये देतऽ
ते फेरि होइ जात ना एठियन रे अवान
चऽढ़लि ना गोलियाह् कोलवनि कऽय
एकदम लोहाइन लोहवा वा नेरि रे यातऽय
ओहि घरी देखह् ना हलियाह् एहरउं कऽय
जिन्नकर तीन सय ना सठिया चर रे वाहऽय
ओकर भाई वानह घबडुवाह रे जेवानऽय
उहौ भाई तरई ना वोहवांह होइ ये गयनऽ
कोलवन से होतीय लड़इया वा लेल रे कारी
जव सेनि छूटई ना हथवा वा संवरू कऽ
सय दुसइयाह गिरइं रे भह रे राई
जेनकर तीन सई ना सठिया चर रे वाहा
टंगियाह् धई धई वेवरवा में पेवारऽ

नदिया मे बहलि ना लसिया बाइ रे जातऽय
ओहि घडी धनि धनि भवनिया कोलवन कऽय
बिन बिन बाडइ पहथवा आगि लगउले
अपनेह ठाडिय पहॅथवा किह रे बाडऽ
ओहि घडी आनइ के मुडियाह आन क धरिया
ओकरे अमरित आगुरियाह् मेनि रे बाय
तनि तनि अगुरी के ना मुखवाह मे चटावऽ
कोरवाह् लोहइ ना लोहवा जे करत रे जाय
मारत मारत ना बहिया जे भइली रे थेयर
पानी बिना गयल हऽलकवा जे बाडे झुराइ
तब फेरि बोलल ना मलवा जे बाइ सवरुवा
कोलवाह् सूनह् पहरवा जे मोर रे भाइ
आजु कहे अवरे ना मरले जे तोह मराला
नात हम जनबइ ना एठियन देख रे धाइ
जब्बइ अइहइ ना भइयाह् मोर सूवच्चन
अब फेरि अइहइ एहिय लेइ ये आइ
भइयाह् अवतई ना छुटिहइ बाहवा मे
ओनके हाथे मिरितिया जे मोर रे बाइ
सूनति ना सतियाह् बा मदागीनि
लेइकेनि रेगलि कालसवाह भरि रे पानी
एक दम ले लेह सावरूवा ओर रे जाला
फूटत फूटई ना ओठियन लेइ ये सतिया
तब तक जुटलि भवनियाह् कोलवन कऽय
रूह रूह धइलेह ना सतियाह् कइ रे रूपऽ
आजु कहें सइयाह् ना सुनिलह् सुख रे नन्दन
सेन्हुर मनयह काहनवाह रे हमाऽर
कहवाह् कहवाह् ना कोलवन के तीर रे लागल
अब तनी देवह् हरदियाह् रे बताई
ओहि दिन बालल ना मलवाह् वाइ सवरुवा
जियही ते मनवेह् पाहुनवाह् रे हमारऽय
देखु वियही सगरेउ ना तिरवा बदने मे लगली
अब तिर एक्कउ ना नहि नी रे दुखातय
एक तीर बाजल करेजवा पर रे बानऽय
थोडा थोडा उहइ ना हउवह् रे दुखातऽ
ओह घरी देखलसि ना भवनिया कोलवा कऽय

एहि पड़े गइल ना भितरांह् रे सकाय
अब हलि गइलि ना मस्तक पर संवरू के
अब फेरु अन्हा संवरूवा जे होइ रे जाई
कोलवाह् भरि भरि ना घउवाह मारे ओठियन
आसन देलेह् ना बिनियाह् क पेवार
जउने घड़ी फेंकइ ना तिरवा जे हंथवा कऽय
सउ दुसइ गीरइ ना कोलवाह् रे रहराइ
तब फेरि बोलल ना ओठियन बांय रे सांवर
दरियांह् करई ना बेंड़वाह् रे जबाब
आजु कहैं सुनवह् ना कोलवा जे सर चडंरवा
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमाऽर
देखु भाई तोहार न मरले अब मराब्यऽ
पिरिथमी में तीनिउ भुवनवा जे बीति रे जाय
जब्बे अइहुंई ना भइयाह् मोर सुबच्चन
जवन तोहें बानह् पीपरियाह् देखु रे पाल
ओन्ह के आवतइ मिरितिया जे हंव रे मिलिहंय
उनके मरलेइ ना हमहूँ जे मरि रे जाब
उहवां से रेंगल ना कोलवाह् दस रे पांचय
अब फेरि लेहलेनि पीपरिया जे तड़ि रे याइ
कोलवांह् रतियांह् रेंगत बा दिन रे दवरत
कतव नाहि बीचवांह् ना बदनह् रे मोकाम
एकदम रेंगल रेंगावल रे पिपरियाँ
जाइकेनि पहुँचल सुबच्चन कइ रे पास
ओही घड़ी बोलल ना मलवाह् सेनि ये कोलवा
दरियांह् क़ऽरई ना बेड़वांह रे जबाव
आजु कहैं भइयाह् ना सुनिलह मोर सुवचन
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हमार
तोहार भइया सांवर ना भइया जे तोहार बलउलेनि
बड़ा वाड़ई ना कामवांह् रे जरूर
एतना जे सुनत वा मामलवाह् रे सुबच्चन
दरियांह् कहत ना वेड़वांह रे जावाव
आजु हमें दूसरे गोहरिया में हमइं भेजऽ
अव हम जावई गोहरियन में तइ रे यार
आजु भाई भइयाह् मारनवा जे हम न जावय
पिरिथमी में तिनिउ जानमवा जे होइ रे जाय

ओही घरी सूनत ना सूनत कुल रे त्रिगहंज्य
लेइ कोल कुल्हइ ना गयलह लप रे टाय
एहि सुनह् ना हलियाह् ओठियन कज्य
कोलवाह् गयल पिपरियाह् मेनि वानज्य
जहंवाह् वइठल ना मलवाह् वाड सुवच्चन
उनसे कंऽहइ ना वतियाह् समु रे झाई
सुवचन मनवह् काहनवाह् तू हमारऽ
जवन तोहार भइयाह् धारमिया वाय रे सावर
बोहवा मे लागल झागडवाह् वरि रे यारऽ
भइयाह् तोहार कइलेनि घरमियाह् रे वनावत
ओहि दिन बोलल ना मलवाह् वाऽ सुवच्चन
दरियाह् करइ ना वेहवाह हो जवावऽ
आजु हम भइयाह् ना मरनवाह् नाहि जइवऽ
हम भाई रहनइ पिपरियाह् तोरि रे पासऽ
एतना जउ सुनलइं ना कोलवाह् दस रे वीसय
ओनकेह् लेह लेह ना डेढियाह् पर सपावी
ओन्हि भाई टेटिय ना टेटवाह् जे उठवलेन
ले लेह् अयनह् ना वोहवाह् रे मझारय
ओहि दिन छोड देइ ना मलवाह् सुवचन के
अब भाई दवरल सुवचनाह् जाइ रे मालऽ
घरमी के रोवत नागरवाह् वाइ रे ओरऽ
दुनो भाइ रोवइ ना जारवा रे विजारऽ
तव फेरि बोलन ना मनवाह् वाय रे सावर
दरियाह् करऽ ना देववाह् रे जवावऽ
देव सुत मेहनि के मरले जे नाहि मरावज्य
निरोधर्मी के त्रिनिठ सुवनवाह् रे जावज्य
अब केर छोड़ंऊ् ना हाथवा वा हाथ मिरिठिया
छोड़ंऊ् मरलेह् ना वोहवा मे भरि रे वावध
एतना जउ कहत ना मनवाह् वाय सवस्वा
चालत वानह् सुवचना लेहि रे वाजऽ
आजु कहीं सुनदह् ना भइयाह् मोर रे सावर
ओठियन मनवह् काहनवाह् रे हनाऽर
कह दुनो भाईय ना एक आरि होइ रे जाई
कालवन के मारीन ना वोहवा मे वहि रे माई

तव फेरि बोलल ना मलवा जे बाइ रे ओठियन
सांवर बोलल धारमवा कइ बाइ रे वोल
आजु कहँ सुनवह् ना भइयाह् मोर सुवचन
एठियन मनवह् काहनवांह् रे हमार
देख हम खइलींय निमकवा जे अहीरे कऽय
हमहूं अहीर वरदवा जे लड़ि रे जाइ
तूं भाई खइलह् नीमकवा जे कोलवन कइ
तूं देख कोलइ वरदवा जे लड़ि रे जा
तवे फेरि रोवत ना मलवा जे वा सुवच्चन
भइया ते सन्मुख ना वइठल अइसे रहवऽ
कइसे छूटीय ना वनवाह् रे हमार
ओहि दिन मतियाह् मंतिरी जे ठाटि रे देहलेनि
मतवाह् देलेनि ना वोहवा में देख उतारि
आजु भाई अइसेह् ना सुवचन ना रे मरिहंऽई
एनके देवह् गाड़ह् वाह जे खन रे वाइ
एनकेह अंखियाह् में पटिया जे वान्हि रे देवऽ
हथवां में देवह् ना तिरवा जे धनु धराय
इहै भाई मारइं सोझइया उपरे संका
अव फेरि लागई मिरितया के होइ रे ओर
घूमि फिरि लागिय ना तिरवा जे सुवचन कय
उहे भाई ओहीय मा वोहवां जे देख मंझार
आजु भाई सवकेह् मनसउदा में वइठि रे गऽयल
अव फेरि देलेनि धारतिया जे खन रे वाई
हाथवांइ एतनाह् गाहीरवा जे खनि रे देहलेन
सुवचन के अंखियाह् में पटिया जे वान्हि रे देवऽ
हथवां में तिरइ धनुहियाह् रे धराइ कऽ
गड़हा में कइलेनि मारदवाह् केनि रे ठाड़
जवने घरी छुटिकइ ना तिरवा जे सिववचन मरलेन
एकदम ऊड़ल आकसवा में चलि रे जाई
आजु भाई पछूवांह आकसवा में वाइ रे लागल
ऊ सोझे लेलह् पूरववा में वान रे जात
आजु भाई निचेह् ना तिरवा जे देख रे लवटल
अउ फेरि देलेसि पूरववाह रे झिकोड़ि
जवने घरी झोंकलेसि वइहरवा जे पूर रे वइया
पूरुव मोहे वइठल संवरुवा जे देख रे माल

उहवां से उडल ना तिरवा जे देख रे अइनऽ
जाइ के भाई लागल करेजवा मे देख रे वाय
ओही घडी बोलल धरमिया वा लरमे से
पचाह्‌ मनवह्‌ काहनवाह्‌ रे हमार
आजु मोरे आइलि मिरितिया वा लेइ ये अवहूँ
तव फेरि बोलह्‌ ना मुखवा से सीता रे राम
सूनह्‌ ना हलियाह्‌ ओठियन कऽ
अव फेरि लागलि ना तिरवाह्‌ जवने परी
लछमी के फूटल ओदरवाह्‌ ओहि रे दम्मऽ
आजु कहँ मारेंह ना दुधवाह्‌ केनि रे मारऽ
वहिलाह्‌ बाझिन क मनवाह्‌ सुखि रे गयनऽ
ससियाह्‌ पवरति ना बोहवाह्‌ वाइ मझारऽ
कोलवाह्‌ हाकइ ना गोरूवाह लेइ रे पऽछोम
अव नाहि छोडइ ना बोहवाह्‌ सव रे जाई
उहे भाई मारि मारि वछल्याह्‌ वन रे खातऽ
पऽउडाह वन्हेनि ना बोहवाह्‌ रे मझारऽ
सर देनि गयल परनवा वा सवरू कऽ
उहे भाई देखत तमासवाह्‌ लेइ रे बानऽ
आजु मोरे जोगलि सामनियाह्‌ लेइ ये ओठियन
लछिमिय सेवल ना वानीय रे हमारय
आजु भाई बडवड जाचनवा जे कौल रे कइलेन
भुजि भुजि खानह लेवइयाह्‌-लेइ ये आजऽ
उहवा से लवटल पारनवा वा धरमी कऽय
अउ चलि गयल पिंजडवाह्‌ मे सकाई
उठिकनि वईठि ना मटियाह्‌ धरमी कऽय
बोलत बानह्‌ लारमवाह्‌ कइ रे बोलः
आजु कहँ सुनवह्‌ न मलवाह्‌ मोर रे कोलऽ
सहूवाह्‌ मनवह्‌ काहनवा रे हमाऽरऽ
अइसेह्‌ नाहिय लछिमिया मोर रे जइहंऽ
पिरिथिमी में तिन्निउ भुवनवा उलटि रे जाऽय
सहूवाह ॥ काटिलह्‌ ना मयवा रे हमाऽर
धनुहीं के गोसइ लेवह्‌ ना सट रे काई
आगे आगे भागह्‌ ना बोनवा पीपरी मे
पटवाह्‌ जइहईं लछिमिया आलि रे याई
एतनाह्‌ कहि कहि परनवा सवरू कऽय

नीकलि गयल इन्दरवापुर रे धामऽ
ओही घरी कटि गइल ना मथवा संवरू कऽ
मुड़वांह् लेलेनि धनुहिया में लट रे काई
आगे आगे रेंगनह् ना कोलवाह् रे चंड़ारऽ
पिछवांह दवरलि लछिमियां वानी रे जाती
एकदम उहवांह् ना कानिय रे डहरलऽ
जाइकनि तांनह् पिपरिया में जाइं रे जाई
आजु कहँ तानह पिपरिया जे हलि रे गइनी
लछिमीय करइं ना कोलवन किह बीहार
ओहि दिन सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
ओहि जउं नगर हरदियाह् कइ रे पालऽ
दुइ जून करइ कचहरीय वीर रे लोरिका
अब फेरि करई तखतवांह् अस रे नान
जाइ कनि पीयइ ना मदवाह् जमुनी घऽर
जाइ जाइ सूतइ जामुनियाह् केनि रे गोदऽय
ओहि घरी सूनह ना हलिवाह् उहवां कऽय
अहिराह् मऽउज कऽरतवाह् देख रे बाड़ऽ
आजु कहँ सूनह् ना हलिया गउरा कऽय
अउ जउ नगर गऽउरवा गुज रे रातऽ

मंजरी पर विपत्ति

अब पड़ि गइलि वीपतिया मंजरी के
ओहि जउ नगर गउरवा लेइ रे गाँवऽ
अब कहँ जवनि मजरिया चल रे खेते
घंटाह् घंटाह् कापड़वा रे बदऽली
धियवा के अइसीय वीपतिया पड़ि रे गइलीं
उहवां भयल ना दसिया रे हरामऽ
तब कहँ घूरह न घुरवा क देख रे लत्ता
जोरि जोरि पहिरति पेवनवांह् धन रे वाय
आजु कहँ बारह ना मनवा क देख रे मूसर
मंजरी के गयल ना लोहवा क वान खियाय
एन्हें जउ कुटवनीय पिसवनी जे नाहिनी मीलत
धियवा के परलि वीपतिया के वाड़े रे ओर
आजु कहँ कवनेह ना दिनवांह् राम समइयां
मंजरी रोवंति रकतवाह् कइ रे आंसूऽऽ

आजु कहँ हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह ना मझवाह् रे लिलारऽ
कइ दिन भागव बीपतियाह् गउरा मे
बीपति कहियाह् ना जइहइ रे ओराई
झखति बाडइ ना घियवाह् रे मजरिया
पेटवा मे बाडइ असापति रे देखाती
ओहि दिन मूनह ना हलियाह् ओठियन कज्य
के फेरि नागरि गउरवा कइ रे हालऽ
एक राति दानाह् ना पनिया नाहिं रे मीलज्ल
सब केहु अइलेनि कज्नतिया रे उपासलि
के भाई बडेह् सबेरवा कइ रे सूनज्य
मजरीय रेंगलि ना घरवा सेनि रे बाडय
एकदम रेंगलि हाजमवा घर रे गऽईल
बईठि गईलि दुवरवा मन रे मारी
ओहि दिन बोलल ना धनवा धाइ मजरिया
गगियाह् सुनवह् ना नउवा रे हमाऽरऽ
बड दिन कइलह् ना सघवा लेई हमारऽ
सइयाह क रहलह् दुलेरूवा तुय रे नाऊ
आजु कहँ अपनेह् दुलेरूवा केनि रे कारने
गाइ भइस तोहरउ लेहडवा होइ रे गज्यल
आजु भाई बाडह् ना गउवाह रे हमारज्य
हमरे पर परि गयल बीपतिया गउरा मे
एहि जउ बीचेह् गाउरवा रे मझारऽ
सब कोइ राघियाह् तोहव के देखऽ रे रहलऽ
पाताह लागत ना सइया बनि रे बाडऽ
तउनो हम बानह् हज्रदिया पुर रे पालऽ
भइयाह् लेइवह ना तोहउ रे रोचनवा
जउन भइया देतह् हरदिया पहुँ रे चाई
बीपति पहइ आहिरवा से सभु रे झाईं
सत छन करिहइ आहीरवा जे पूरुबे से
अब जइहइ नगरह गउरवा जे गुज रे रात
आजु कहँ फेरिय ना दिनवा जे नउवा सवटी
अब दू दिन करव ना मनियाह् रे तोहार
तब बोललि ना बाडइ धन रे मार्जारि
गांगिय मानह् बाहनवांह भइयाह् हमारऽ

आजु कहें देखत वीपतिया गउरा में वाड़ऽ
जाइ केनि कऽहेय वीपतियाह् समु रे छाई
कहि दया नऽवह् ना लखवाह् जउन रे हारऽ
सोहत रहल मांजरियाह् कनि रे गऽर
तवन पहुँचल गिरीहियाह् रे कोलीना
छतियाह् एड़ाह ना हमरेह् रे लगाइ कऽ
हरवाह लेइ लेति ना डंडवा रे तऊलय
आजु कहें अइसन ना आ दिनह् निय रे रइनऽ
ऊ हार चमकत कोलिनिया के वाइ रे गऽर
सूनह ना हलियाह् ओठियन कऽय
अब भाई रेंगल गांगियाह् वा रे घरे से
अब चलि गयल मांजरियाह् किय रे ठाढ़ऽ
मंजरीय कोराह कागदवाह् रे निकालऽ
हथवांह् में लेलेह कलमियांह् मसि रे हानऽ
आपन लीखति वीपतियाह् कइ रे ओरऽ
लिखकनि देलेसि ना पतियाह् रे चउपती
गंगियाह् लेलेह् ना हंथवा में वाइ उठाई
जउने घड़ी खरचाह् ना आपन धरि रे लेइ कऽ
नउवाह् रेंगल पुरुववाह् तढ़ि रे आई
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् गंगियाह् कऽ
कतउं नाहि वदत ना कुरवाह् रे मोकामऽय
उहवां से एकदम ना रेंगलइ रे रेंगावल
अब चलि गयनह् ना नगर रे हऽरदिया
पूछत जालाह् लोरिकवाह् कइ रे घरऽय
गउवां के लोगइ ना घरवाह् रे वतउलें
सोझइ गयल जमुनिया के दर रे वारऽ
अहिराह् गयल कचहरीय रे दर रे वाऽरऽ
जउने घड़ी दुअराह् ना नउवाह् रे देखनऽ
चनवाह् दवरि दुअरवांह भयनी रे ठाढ़ऽ
टेहुवांह् धइलेह् नऊववा के चलि रे दीहलें
अब मिलि गयनींय ना लेहलेनि वइ रे ठाई
ओहि घड़ी पूछति ना चनवाह् हालि रे चालऽ
कइसन वानह् ना वाविल मोर रे सहदेउ
कइसन वानह् ना भइयाह् रे हमाऽर
कइसेह वानीय ना मइयाह् मोरि रे सेल्हिया

कइसेह् थानह् सासुरवा रे हमारऽ
कइसेह् थानीय ना समुवाह् मोरि रे खोइलनि
कइसेह् बानह ससुरवाह् रे हमारऽ
तब फेरि बोलह् ना नउवाह् रे हजाम्मऽ
सइजह कूसल ना गउवाह् बा गउरा
कूसलि बानह गउरवाह् सब रे लोगऽ
उहे भाई कुसलि आहीरवा के नाहि् रे बानी
अउ ओहि गयल ना घरवाह् उधि रे थानऽ
सउ भाई लिखिवह् ना पतिया ज जवन रहल दिहली
नउवाह् सबेह ना पलवाह् मे ले से रे वाडऽ
सब हाल बेतइ ना आठिन रे भुगु रे साई
घनवाह् पूछति कूसलिया बा अहीरे कऽ
कइसन बानह् ना घरवाह सब रे लोगऽ
ओहि दिन बोलल ना नगियाह् थाइ रे नउवा
गवहिन मनवह काहनवाह रे हमार
गउवा घर का कूसलियाह सबका आछा
अहिरे के घरेह् कूसलियाह नाहि् रे बाय
आजु भाई मारीय गयलवा था मल रे सांवर
अब बेढि गइलीय बायनवाह सब रे गाइ
अब वहैं मिलि गयल ना गउवाह् रे नरानापुर
अब मिलि गयल ना गउवा था उम रे राव
मिलि गयनऽ गाडइ गाजनवाह् कइ रे तूरूक
अब गड पिपरीय ना कोलवाह् रे चढार
ई भाई चारिउ ना दलवा जे बातुर होइ कऽ
ई धाइ धइलेनि पालपियाह् मारि रे भात
अब साजि देलेनि ना घडिया जे घोड्वा के
मारि देलेनि सावर सुभगवा जे सर रे दाऽर
घरवाह् छोडियाह् ना लुटि लइलें सेवडता
धुर धुर पन्निस पूछिलवाह् कइ रे पूरान
आजु परि गईलि चौपतिया वा घरवा मे
कतहूँय खोजले कूटवनि जे नाहि् रे बाय
अब मूनई ना वेसवा रे घनइनी
नउवा सूं मनवह् काहनवा र हमारऽ
ई बाति हमसेह ना जव्वन वति रे अवलऽ
ई बाति सइयाह् जानह् ना पावें रे हमारऽ

बहुत तोहें मछरी ना भतवा हम खियबऽ
पूराह् करब बीदइया हो तोहाऽर
तब फेरि बोलल ना गंगिया वा नाऊ
मलकिन मानऽ काहनवां हमारऽ
तब हम कवन ना बतिया ओनसे कहब
हमहूँ देबेय ना बतिया बताई
तब फेरि बोललि ना बाड़इ बेसवा ज
चनवा बोलल लारमिया क बोलऽ
अउ फेर छत्तीस ना बुधिया नउवा के
ओठिन बाड़इ गंगियवा हो तोहरे
एक बुधि लीह ना तोहुँउ उपराजी
तब फेरि बोलल ना गंगिया हजाम
मलिकिन मनवह काहनवा हमारऽ
ए घरी छत्तीस ना बुधिया रे हमारऽ
हमरे पाछे ना गइनीं रे घुसूरी
मोरे एक्कउ ना बुद्धि नाहि बानी
एमा गयल ना बतवा बन्हाई
तब फेरि बोललि ना धनवाह् बा चनइनी
नउवा ते मनबे काहनवांह रे हमार
जउने घड़ी पूछिहइं ना सइयांह् तोहरे गयल
ओन्हइ पूड़ा ना देहा रे हिसाब
ओहि घड़ी भइयाह् कूसलिया जे पूछइ लगिहइं
ओइसे देहऽ ना ओनहूँ के समु रे झाइ
कहि दऽ कूसल ना भइया जे बा संवरुवा
कूसल बानीय बयनवाह् सब रे गाइ
कहि द्या भइयाह् के जनमल बान बेटवना
अब हम बाजति बधइया लेइ रे बाइ
लोरिकाह एक्कउ ना बोहवाह् जे छोड़ि के अयनऽ
दूसर बानह तोरवले जे बन रे जात
रतनीय लछिमीय ना बोहवाह् में पजइनी
कतहूँय लोटियवा नउवा जे नाहि रे बाय
के······मछरीय ना भतवाह् रे खीयइबऽ
पुड़नउ करबह ना बीदइया रे तोहार
एतनाह कहति ना बेसवा जे वा चनइनी
नउवाह् भरलेसि हुँकरियाह् ओहि रे दाम

तब ओन्हें मीठाह् ना पनिया आनि के दीह्लीं
अब हटि गइलीय बाजरियाह् मेनि के हाथ
जाइकनि मठरीय ना ओनहूँ वा जे खरीदलें
घनवाह् से लेह् गीरिहियाह् बाद के जाउ
बाजु माई दानिय ना मजवा जे ठर ... करिया
ठरप से बननि मठन्यिा ज जोनि के बाट
थोहि घरों सुनह् ना हनिया ज ... ...
सेठ घरों ओह् ... के दस के हाथ
... बाप्ह ना बबवा ... के ...
[illegible]

आजु भाई कूसलि ना गउवां जे वा गउरवा
कूसलि वानह गउरवा के सब रे लोग
आजु कहैं कूसलि ना भइया जे वायं रे सांवर
कूसलि वानीय ना लछिमियाह रे तोहार
आजु कहैं जनमल वेटवना वा धरमीय कऽय
वोहवा में अनवन्ह वधइया जे होति रे वाय
आजु कहैं थोड़ाह् लछिमिया लेह् छोड़ि अयनऽ
लछमीय बहुतइ ना गइलीय रे पजारि
आजु कहैं बोहवाहं लाछिमिया जे नाहि अऽमइलीं
धरमीय दूसर ना वोहवा जे तोड़ केले वाय
अहिरूय एकइ ना नहिनीय तोहार कूसलिया
मंजरीय कइलेसि दूसरि नाह रंग रे वार
आजु भाई सूनह अहीरवा जे बीर लोरिका
अवरू मनवाह में अपने वा मुसु रे कात
आजु सित भइयाह् ना वानह कुसल धरमिया
कूसलि मइयाह् ना वछवाह रे हमार
आजु कहैं कूसलि ना लछिमी जे वोहवा कऽय
सब भाई आनन्दइ गउरवा के वानऽ रे लोग
वुजरीय एक ठे मेंहरिया जे चलि रे गइनी
दुदुय नाघलि मेहरिया जे वानी हमार
जउने घरी लावटि चालव नाह गउरा में
हमहुँय देखबि बीयहिया के रंग रे वार
सूनह ना हलियाह् गंगिया कऽय
गंगिया के कांपत ना पेटवाह् रे परानऽ
आजु हम बतियाहं ना सटकिय देली पटाई
आजु वावू केहरउ से के हुके जिनि ये आवा
नाहि कत देई ना बतियाह् रे सूनाई
जउने घड़ी सुनिहंइ आहिरवा जे बीर रे लोरिका
एठिन दूईय ना भगवा जे अल रे गाई
अब लेइके डरत ना नउवा जे बाइ हजमवा
बोलत वाड़इ लारमियाह कइ रे बोल
आजु कहैं सुनवह् मालिकवा जे मोर लोरीक
एठियन मनबह् काहनवांह् रे हम्मार
आजु भाई हमरेह ना देसवा में बड़ रे सूखा
आजु भाई हेरलेह् ना चरवा जे नहि रे बाइ

आजु मोर देखत ना बलवा जे अपने बच्चा
बेटवन के ओहन के चरवा जे देव जुटाइ
आजु भाई काल्हिय ना दिनवा जे रे ठहरव
हम भाई जावई गउरवा लेइ रे जाउ
तब फेरि बोलल अहीरवा जे बीर रे लोरिका
दरियाह् धरइ ना बेडवाह् रे जवाब
आजु बहें सुनवेह् ना गगियाह् मोर हजमवा
एठियन ते मनवेह् बाहनवाह् रे हमाऽर
देखु भाई अजुवइ ना घरवा जे हमरे अइली
काल्हि तूम रहि जा हारदिया जे पुर रे पाल
काल तोह लेलेह बाजरवा जे चलि रे चलबइ
तोहे कुछ देवइ सामनिया जे बन रे बाइ
परसउ उठतइ सबेरवा जे चलि रे देहुऽ
अउ फेरि लेहुऽ पमुववा तहि रे बाय
एतना जउ कहत ना बानह बीर रे लोरिका
धइसेह् मानल हाजमवा जें पुनि रे बाइ
ओहि घरी खालाह् खियवलेह् बा बनउता
अब ओके कइलेसि आदरवा जे बरि रे यार
जउने घरी बिहनह् ना होत बाइ रे मुरहुर
ले ले गयल सहरियाह् मेनि रे बा
ओनकेह् देलाह् ना देहिया पर कम्मल बानी
अउ फेरि कुस्ताह ना देहले बा बन रे बाय
आजु कहें जाहाह् ना धोतिया जे देइ ये देहलें
अउ फेरि देइ देंय बकुलियाह् रे जउ धोर
आजु भाई आखरि ना जोरवल कस रे ओकर
एक मेनि बसइ ना सोनवाह् दरब बनाइ
आजु कहें सदि गई ना घोडवा जे नउवा कऽय
अउ फेरि देलेसि टहरियाह् रे बताइ
नउवाह बईठि ना घोडवाह् पर रे गयनऽ
अब घोडा देलेह् पछिमवा के बाइ रे आह
जउने घडी लागल हरदियाह् बइ सीवनवा
डाबत जातइ ना सगरेह पर रे बाइ
तब तक ठसवलि बारतिया बा मुबवा कऽय
नोकर जेकर बानह नह तिन रे घरि
उहे भाई लेइलेह् बखियवा जे ओराऽ रे बोलाऽ

आपन सावढ़ि ना जंतवा जे लेइये वाय
सुववाह् बइठल कुरूसियाह् पर रे वानऽ
देखत वानह् नीगहवाह् रे उठाई
जइसेह् रहइ ना गंगियाह् रे हजामवा
उहे भाई आयल हरदियाह् मेनि रे आज
जाइकनि कवन ना वतिया जे ओनके वतउले
अहीरू के भयल खुसियलिया जे देख रे वाय
नउवा के एतनीय ना विदवा जे कइले बाड़ऽय
जइसेह् भाई देंसवाह् बीयहुल वाइ रे जात
ओहि घड़ी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कय
सुववाह् देलेसि नोकरवाह रे रेंगाई
घोड़वाह् धइलेह ना वगियाह् लेई रे अयनऽ
अव वान्हि देलेनि सावढ़ियाह् पर रे वानऽ
तव फेरि सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
गंगियाह से पूछत ना सोनवाह् बाइ रे नाइन
गंगियाह् तूं काये तिलकियाह रे वतउले
लोरिकाह् तोरेह पर खुसियाह् होइ रे गऽयल
एतनाह कइलेसि वीदइयाह् रे तोहारऽय
वहूत तरह से नउवा से वाइ रे पूछय
नउवाह् सधलेह् गुंगउरी देख रे बाड़ऽ
मुंहवा से ऐकउ जावनियाह् नाहि रे बोलऽ
उहे भाई वाड़इ ना एकवाह् वकवकातऽ
तव तक सूनह् ना हलियाह् सोभवा कऽय
सोभवाह उलटीय हुकुमियाह् बाइ रे देतय
आजु कहें सुनबेह ना जदुवा कर रे वारी
एठियन मनबह् काहनवां तुयं हमारऽय
आजु मोर सोरहउ ना सइया रे बरदिया
जेकर तीनसइ ना सठिया लद रे वाह्य
आजु बाकी देवह् हारदिया पिट रे कोरी
ओहि घरी फागुन ना मसवा बाइ महीना
गोजईय गोहुँय काटतवा देख रे वानऽ
जउने घड़ी हटि गऽयल लेंहड़वा सोभवा कऽय
अव फेरि गइनीय हरदिया पिछि रे वाई
बरदीय हरदीय ऊड़वलेनि गरदी में
रोवत बानह कीसंनवा जार बेजारऽय

ओहि घडी पटकइ घरतिया मेनि रे मायऽ
आजु कहँ हो हो ना दइवा मोर नारायन
अब फेरि सुनबह् मालिकवा रे हमारऽय
लोरिक एकतह् जाबरवाह तूहइ रहलऽ
अब फेर नहिनीय एहर घोइ रे जोर
का जानी काहां से जावरवा जे आइ कऽ टीकल
तोहरे सेम्हू सागरवाह् केनि रे देस
आजु भाई सोरहना सईयाह् रे बरदिया
अब हांकि देलेह् सीवनवा केनि भडार
आजु मोर पाकलि ना गोहुवाह् रे गोजइया
बरदीय देहलेनि गारदियाह् रे उडाई
कइसे हम बालउ ना बचवा जे आपन जीयउवऽ
कइसे तोहार देबइ ना रोलियाह् रे चुकाइ
एतना जउ कहत ना ओठियन बऽइ रे ठारय
लोरिकाह् सुनइ ना कनवाह् रे लगाइ
परजाह् दलेसि दाहइयाह् रे आठिनिया
ओठिन एक सइ अहीरवा के बनत रे वाइ
जेवने घरी दहलेनि दोहइया जे कुलि रे परजा
अहीराह् ऊतरल घानिया से थान रे जातऽ
ओहि दिन माटि माटनिया जे रेगिये देलेनि
परजन के देतई ना बतिया बा अर रे थाई
आजु कहँ सुनयह् हारदिया का परऽजा
बरदी हकले सागरवा पर चऽलऽ
हमहू चलत ना सपवा मे बाडी
कइसन हवइ जवरवा हो देखी
ओहि दिन एतना ना बतिया हो कहऽत
अउ फेरि रेंगल बा लारिका हो जातऽ
एकदम रेंगल सगरे ओहि जाला
बरदीन लीय आवतवा हकवाई
तब तक आये नऽजरिया दव रे रावत
कवनि लबकलि ना घोडवा कइ रे बाडय
बान्हलि बाडइ बागुलिया सेहले घोडा
ओहि दिन हारल आहिरवा जे बीर लोरिका
दरियांह गयल ना आठियन बनसवाय

आजु कहैं दांतेह् आंगुरिया जे धइये चांपलेनि
अब फेरि भयल गीयनवा जे ओकर सरीर
आजु भाई कहां के जाबरवा जे सरवा हऽवइ
आजु मोर नाऊय हाजमवा जे गउरा से अयनऽ
ओहि भाई कइलीय बीदइयाह् ओहि रे दम्म
तउन घोड़ा बान्हल सावढ़ियाह् मेंनि रे बानऽ
चाहिय मारिय क देले वा फेंक रे वाय
······तवने ना दिनवा राम समइयां
की फेरि ओहूय समइया क हालऽ
जउने घड़ी जूटल ना बानह हो करीबऽय
लोरिकाह् बोलल लारमवा का बोलऽ
अब कहैं सुनवेह् ना भइयाह् दूरन्देसी
अब तोहंय केकरेह् ना जंघवा क वरिअइयां
हरदीह् दिहलेह ना गरदी में मिलाई
तब फेरि बोलल ना सोभवा बाई रे नाई
संघिय मनबह् काहनवाह् रे हमारऽय
आजु कहैं अपनेह् ना जंघियाह् केइ रे जोरे
हरदीय देहलींय ना गरदीय रे मिलाई
दुनहुन से बातेंह ना बाते होला रे सरवरि
बतियाह जातइ मरदवाह् नगि रे चाई
जउने घड़ी बीति गयल ना उहां सामने पऽर
अउ फेरि नायक गयल ना मुमु रे काई
जउने घरी हंसल ना सोभवाह् कुल रे नाई
जेकर भाई चमकलि बऽतिसिया जे देख रे वाई
ओही घरी छोड़िकह् लोरिकवा वर रे जोरिका
उहे भाई दुत्रोह मारदवा जे ऊंझि रे राइ
आजु कहैं अइसीय मीलनवा जे कइ ये कानी
रोवत बानह ना जरवा जे देख वेजार
ओहि दिन सूनह् ना हलिया जे ओठियन कऽय
सोभवाह् बोलल नायकवा जे पुनि रे वाय
आजु कहैं सुनबह ना भइयाह् मोर लोरिकवा
एठियन तूं मनवह् काहनवांह रे हमाऽर
गंगियाह् आंयल गाउरवाह् तोहरे में
अब हरदी टीकल ना घरवाह् रे तोहार
का घरे कनीय कूसलियाह् ऊ बतउलेसि

एतना खुसियाली सारीरवा जे होइ तोहार
एतनाह् देहलऽ बोदइया जे नउवा के
एहीय दवरेंह ना हमहूँय फिनि रे लीहली
घोडवाह् बान्हल बाकुलिया बा अहि तोहार
ओहि दिन बोलत आहीरवा वा वीर रे लोरिका
दरियाह् करइ ना बेडवाह् रे जबाब
सधीय मनवह् ना काहना रे हमाऽर
नउवाह सारेह् हरामिया जे बोल रे बोल
कहू भाई कूसलि ना गउवा जे बाइ गउरवा
कूसलि बानह् गाउरवा क सब रे लोग
आजु कहँ कुसलि ना मइया जे बाइ रे खोइलनि
कूसलि बानह् ना कक्वाह् रे हमाऽर
आजु भाई कूसलि ना भइया जे वा सवरूवा
कूसलि बानीय लछिमियाह् मोरि रे बाय
आजु कहँ सवरूप ना जनमल बाइ बेटवना
बोहवा मे बाजलि बाघइयाह् लेइ रे बाह
आजु हम एकरुइ ना बोहवा ज गाइ छोडि अइली
गइया बहुत ना गइलीय रे पजाय
आजु कहँ धरमीय ना घुमि फिरि बनि रे ओठियन
अब ओह दूसर ना बाहवा बाजे दिन सुवराय
आजु कहँ दुइयइ ना बोहवा मे जूटलि बाइ गइया
परवाह् बाजति बाघइया जे देख रे बाय
आजु भाई एकरुइ बाघइया जे अहिए नहिनी
मजरीय दूसरि ना कइले बा ढिग रे हार
तब फेरि बोलल आहीरवा वा वीर रे लोरिका
सघी हम पहल ना बतिया ज लेल रे बार
आजु हम सगरउ ना धनवाह् साथी या कूसलि
घुजरीय गईलि बीयहिया जे चलि रे आई
ओकर असि दुदुई बीयहिया जे कइले हुंई
अब हम देखब बीयहिया के ढिग रे हार
··· ···सूनह न हलिया हवाली
सोभा कहत बाडइ नह समुझाई
आजु कहँ सपाय ना सुनिलह् वीर रे लारीक
अब तोहार हाइ गइलि घरवा उदि रे पानऽय
आजु कहँ मोसल ना गउवाह् बा नरानापुर

अव मिलि गयल ना गउवांह् उम रे रावंऽ
मिलि गयल गाढ़इ गाजनवांह् कइ रे तूरूक
अव गढ़ पिपरीय ना कोलवाह रे चंड़ारऽय
देख भाई चारिउ न दलवाह् वांइ चिहुइकऽय
अउ फेरि खड़लनि परतियांह् एक रे भातऽय
अव साजि देहलनि ना धरिया जे वोह्वा के
मारि देलेनि सांवर सूभगवाह् सर रे दार
आजु कहँ दाह्नि ना होइ गइल रे गउरवा
लछमीय होइय गइलिया वा उदि रे यान
..... सुन के भइयाह् लेइ ये लोरीक
एठियन मनवेह् काह्नवाह् रे हमाऽर
तव का जवनि माजरिया जे चल रे खेंतवा
घंटाह घंटाह पर कापड़ाह रे पुरान
ओहि घड़ी ऊहउ कापड़वा जे नाहिनीं मीलत
धियवाह् वाड़इ ना नांघटवाह रे उघारि
तव कह घूरेह ना घुरवाह कइ रे लतवा
जोरि जोरि पहिरति पेवनवा जे धन रे वाय
आजु कहँ वारह ना मनवांह् लोह कऽ मूसर
मंजरी के गयल ना हथवा में वाड़े खियाय
गउरा में कतहूँय कुटवनी पीसवनी नऽ रे मीलइ
दाना विनु मरत वायहिया जे वाइ तोहाऽर
एतना जउ सूनत अहीरवा वीर रे लोरीक
ओहो घरी रोवत सारीखा वा अहीरे कऽय
गोताह् भयल हारदिया वांय रे जातय
एकदम चढ़ीय चार्नानिया पर रे गइनऽ
जह्वां पर वइठल कचहरी के वान हो लोगऽ
जाइ के भाई वोलल अहिरवा वाइ रे वोलऽ
पंचह देखह वोलह् ना राम रे रामइ
घरे हमरे भारीय वीपतिया परि रे गइनीं
अव लुटि गयल गउरवा मोर रे गांवऽ
घरवा का धनइ न पूंजिया लुटि रे गयनऽ
बांटि कनि खइलेनि ना कोलवा रे चंडारऽ
तव काऽह नऽवइ ना लंखवा क देख रे हारऽ
जउन हमार पहिरति बीयहिया बा हर रे दम्मऽय
तवन बुजरी पहुँचलि पीपरिया कइ रे कोली

छतियाह् पर देहलेसि ना एडवा रे दबाई
गलवा के छूटति ना हरवा लेइ ये जाऽना
आजु यहँ अइसन अरु दिनवा जे निय रे अइना
उये हार सोहर कोलिनिया के बाडइ रे गऽर
ओही घडी सूनह् ना हलियाह् ओठियन कऽय
अहिराह् बोलल कचहरी मे धाइ रे बोलऽ
आजु भाई जूटल हऽरदिया के बाडऽ रे लोगऽ
देखिलय हिन्नुय ना धम्वेह रम रे रम्मी
येहू भाई तुरूक ना झुकवह मोर सलामऽ
परवाह मारि गयल बा मल रे साबर
येढ़ि मोरि गइनोय बयनवाह लेइ रे गाई
हम भाई भइयाह् बयऽरवाह जव र सायब
नय भाई रहिहइ बसवा प मोर रे ओरऽ
येत पेरि जातइ ना अति सरीय र घनाई
हमहूँय देवइ ना ढँडवाह् र घडाई
अब यहँ बीति जाई ना झागडवाह् बोलवन से
जे येह रामइ ना देहहइ तेन रे लेइहइ
जउन भाई जातइ पीपरिया म जूझि रे जावय
दिनवाह् दिनभह् झागडवाह् जाइ ओराई
नाहिं हम लऽवटि पीपरिया मे देख रे अइवऽ
आपन फेर लेह आडरवाह् पर रे गाइ
जउने घडो देवह न दरवाह रे बइठाई
हम पेरि अइवइ हऽरदिया जे देख रे पान
······घडा तवेह ना दिनवाह राम समइया
ये पेरि ओहूय समइयाह् कइ रे हालः
हरदीय मेनिय बऽरदियाह् छेति रे यानी
नउयाह् ये देलह ना ओठियन ढगि रे लाई
सोरिवाह् गयन ना ओहवाह देख रे बाडः
रोइ रोइ यहत पऽरजवन से बाह रे बातः
उहना से रूठल मरदवाह् बीर र सोरीय
अपनेह रँगल गोरिहियाह् अन रे बसय
ओहि दिन मूनह् ना हलियाह् ओठियन यः
एकदम यालत यऽनतवा ना बार रे बाडः
अब हनि गयल छावेलवा मे आहि रे दम्म

जह्वां पर बान्हल ना घोड़वा जे बाइ रे मांगर
ओन्हकर आंखर पांखरवाह बांइ रे कांसत
मुखवा में देलाह् गीरिहियाह् रे लगामऽय
आजु भाई बारेह ना बरवाह कइ रे मोती
अउ फेरि देनह् ना बरवा में गुंथ रे बाई
आजु कहँ बान्हइ नेउरवाह् गोड़वां में
जेकर भाई साठिय ना कोसवा में जाइ आवाजऽ
आजु कहँ बान्हइ ना मथवाह् मेंनि रे कोड़ाऽ
जे महं गोलिय ठाहकवाह खाइ रे जालऽ
उहो भाई उहवांह् सेनिय नाह रेंगिये देनऽ
अब चलि गयनह ना घोड़वाह केनि रे पासऽ
आजु भाई छोड़िनइ ना बगियाह घोड़वा कऽ
लोरिकाह् पूछत बीयहियन से नहिं हो बातऽ
आजु कहँ डांकिय मांगरवा जे पर रे गइनऽ
अब फेरि आसन ना देहलेह् रे धराय
घोड़वाह् नीचेह् ना छोड़ले जे बा धरतिया
उपरांह् हावाह खीयवतइ अस रे मान
दिनवांह भरइ ना घोड़वा खूब रे चऽलत
संझियाह् होतइ ना देखिलह् इह रे हालऽ
आजु कहँ घोड़वाह् खींचइ नाइ रे खिचायल
आइ कनि चूवल हरदिया जे ओहि रे पालऽ
ओहि दिन बोलल अऽहिरवा जे बीर रे लोरिका
मंगरा तूं मनवह् काहनवांह् रे हमाऽर
आजु भाई दिनवांह् ना भरवा जे सकल रे चललऽ
फेर लेइ अइलइ हरदिया जे तुंय रे पाल
ओहि दिन बोलल ना घोड़वा जे बाइ ये मांगर
दरियांह् कऽरइ ना बेड़वाह् रे जबाब
लोरिका तें बड़ दिन ना जियलेह लेइ रे मदिया
जाइ जाइ सुतलेह जऽमुनिया के तोइं रे गोड़
जमुनी से बातउ ना चितवा जे नाहि रे पूछले
अउ रेंगि देलेह् गाउरवाह् ओहि रे तोर
आजु कहँ खींचति जादुइया बा जमुनी केऽ
तोहइं के पटकीय ना हरदिया रे बऽजार
आजु तुयं कवनो सऽहरिया जे दिन भर उड़ब
संझिया के अइबह जामुनिया के देख रे घर

ओहि घड़ी सूनहू ना हलियाहू ओठियन कज्य
अउ फेरि रेंगल आहिरवऊहू घोडवा बान्हि कऽय
अब चलि गयल जामुनियाहू केनि रे पासऽ
जमुनीय डाहर ना गदिया पर रहलि रे बइठलि
बेचति रहलि दूकनियाहू पर रे मालऽ
ओहि दिन गयल अहीरवाहू छिम रे राइ कऽ
अउ फेरि धरत चरनवा पर वाइ रे हाथऽ
आजु कहँ धनवाहू ना सुनिलहू मोर बोयहिया
जमुना तू मनबह काहनवा रे हमाऽर
आजु हम जातइ ना बाडीय हरदी में
हरदी ते छोडत ना बाडीय गाउ तोहाऽर
सुनली जे मारिय गयल ना मल रे सावर
येढि मोर गईल बायनवा सब रे गाई
अब कहँ चिडियाहू लुटि खइलेनि रे चिरइ कऽ
जे गुर कमीय के कुठिलवा कइ के बान
आजु कुलि धाऽनहू ना पूजियाह लुटि रे खइलें
घरवाह नाहिय ठेकनवा बाद रे आजज्य
हमहूँय जाइत घरेह ना कइ ये रहलीं
तवन मूनह ना हरदियाहू रे बनाई
मूनह ना हलिया जे ओठियन कज्य
बोलति बाडइ ना जमुनीय रे कमारि
आजु कहँ सइयाँहू ना मुनिनऽ तू मुख रे नमन
सेनुर मनबहू काहनवाहू ना रे हमार
देख भइया हमरेहू ना घरवा तू टोकन रहलः
घुमि घुमि देलहू ना रंडियाह रे मचाय
आजु भाई मुदईय ना जोहत हववें रे बटिया
अब तोहार देखत डहरिया जे मेह रे आई
कउनो जो घटीय आसदवा जे परि रे जइहंऽ
हम्मन कें होइहंइ आतनवा जे बरि रे मार
बुमरो तू अहीरा जबंइया रहनऽ टिकवने
एहर तू कइलह ना देखवा तू घदरें मार
एनहे के बड बड आचनवा जे करिहें मगिहें
कुछ मोरे कुनेहू कहनवा ना नाहि रे आउ
तब फेरि बालन मरदवा बा बीर रे लोरिका
बिसहीय मनवें कहनवाहू रे हमार

आजु हम जातई ना पिपरी में जुझ रे जाब्यऽ
दिनवाह् दिनकइ झगड़वा जे टूटि रे जाइ
ना हम जाइकेह पिपरियांह् मरबे कोलवा
आ वेढ़ि लेइ जाइबि बयनवाह् लेइ रे गाय
जवन भाई कुलवाह् मे रइहें कुल रे नन्नन
तोहरे पर खतिय आपदवा जे परि रे जाय
वियही जे कीरति के लोचनवा जे दवरे राय
चलि जाई नगर गंउरवां जे गुजरे रात
लोरिकाह् खातइ् ठहरियाह् पर रे रहिहंय
अब हाथ धोइहंय हरदियापुर रे पाल
आजु कहें कवनेह ना दिनवाह् राम समइया
के फेरि ओहुव समइयाह् कइ रे हाल
छुट्टि देहले ना बाड़य रे जमुनिया
घोड़वा पर डांकि भयलवा बा अस रे वार
तब फेरि सुनति ना रहनीं वेसा चनइनी
वेसवाह् निकललि महलियाह् सेनि रे बाइ
आजु कहं हलि गइलि तबेलवाह् राजवा के
जाइकेनि घोड़ियाह् बेलसिया जे छोड़ि रे दे
उनकर आखर पाखर बा जे कसि रे लिहलें
मुंहवा में देलेसि लागमियांह रे धराय
उहे भाई ले लेह ना धरवां जे चलि अइनीं
आ फेरि देलेनि दगलियाह् रे खियाइ
आ फेरि देलेनि दगलियाह् रे खियाइ
आ फेरि आपन सामनियाह् छोड़िये ओठियन
आ फेरि धऽरत मरदवा के बाइ रे ओर
ओहि घरी अंगवाह् न पहिरत बा अंगरखा
गोड़वा में कसति चिउलियाह् रे तबान
अब कहें दिल्लिय ना सहिया लेइ रे जूता
चनवाह् लेलेइ ना एड़वाह् रे चढ़ाइ
आजु भाई लेलेह ना तेगवा जे हम हथवा में
दवकनि भइलि ना घोड़िया पर अस रे वार
आजु कहैं सम्मुख आसनवा जे उहे छुववलेन
घोड़ियाह् रेंगलि ना उपराह् चलि रे जाइ
घोड़वाह् मारत भंवलियाह् किहां रे जाला
आ घोड़ि लेलेसि ना सोझऽ जे परि रे हार

अब कहे जातइ ना जातइ कुछ रे दूरिया
कइ दिन भयल सावनवा जे ओहि रे दाव
ओहि घरी देखइ अहीरवा जे बीर रे लोरिका
आ फेरि बोलत ना मनवाह् मति रे वाय
इ भाई कहा क सूखा जे वीर हवऽ
इ सगे जातइ रहनियाह् पर रे बाइ
चाहे भाई छतरीय ना ले ले रूपवा हवऽ
उहे भाई निहुरि करत बा पर रे नाम
जवने घरी निहुरि पालगिया जे कइये देहलेन
धनवाह् गइलि ना रूपवा जे मुसु रे काइ
ओहि घडी छूटलि ना खडियाह् रे दुगाहें
अहीरा दाबन अगुरिया जे बाइ चवात
आजु कहँ हो हो ना दइवा जे मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मझवाह् रे लिलार
आजु हम बेसवाह् के मतवा मे लागि रे गइली
आजु मोरे गायब ना पूजिया जे होइ ये जाय
एतनाह् सोचत अहीरवा जे बीर रे लोरिका
आ फेरि बइठल ना दरियाह् लेइ रे बाय
आ फेरि बे साह् ना जतिया जह चनइनी
बेसा तोर हवह सखरवा ज परि रे वार
हम बेसा सारे ना मतवा मे लागि रे गइनी
आजु मोरे हो गइल गउरवा मे खय रे कार
उहवां से सूनत ना बतियाह् परदे मे
फेरि भाई दूनोह उडवले जे बानऽ रे घोड
के फेरि पडीय समीतवा मेनि रे बीतल
उहे भाई धुवल ना ओहवाह जे वान मझार

हल्दी-चनवा का उद्धार समाप्त

४. हल्दी से लोरिक की बोहा में वापसी पिपरी का युद्ध—लोरिक की मृत्यु

जवने घरी सुनह् ना हलिया ओठियन कऽ
आजु लदि गइलि समनिया हरदी से
हाथीय घोड़ाह् ना ओठियां रे बहिरत
आजु भाई तमुवाह् काननिया लगि रे गईल
अहीरू के जोर लेनि निगहिया लेइ रे पांतरि
जवने पिरिकल तमकिया देख रे रहनी
महुअरि देलेसि सामनिया लद रे वाई
सोरह सइ रेंगल सब दियाह् देख रे जानइ
अब फेरि जालइ समनिया जे सांथ रे सांथ
ओहि घड़ी देख ना हलिया ओठियन कय
आजु भाई घड़ीय समीतवा के बीतल
आ फेरि पहुँचलि हरदिया से बोहा
बोहवा में गयल ना उदिया सब रे पाई
जवने घरी जूझनह कयदियाह् सोरह सई
उहो भाई गयनह ना तमुवाह् पर छिति रे राई
आ फेरि उतरइ ना तमुंवाह् रे कनात
ठाढ़ाह् करत ना बानऽ ओहि रे दम्म
आजु कहें मारिह तमुइयाह् केनि रे मारइ
अब होइ गयल ना वोहवाह् रे पड़ावऽ
आजु भाई देखह् ना हलियाह् ओठियन कऽ
महुअरि उर्दू बजरियाह् हरदी कऽ
तम्मुह देहल बाड़इ ना रे रेंगाई
तब तक थकिले वजरियाह् अहीरे के
रंग रंग बीतत सउदवाह् रे घुमाई
एतनाह् कहत ना बतिया जे देख ओठियन
तमुवा में बानइ अहीरवा लेइ रे बाइ
आजु भाई बड़की तमुइया जे छोल ले दरिया
उहइ हवइ ना मलिकवा के लेइ रे आई

ओहि मेनि डासलि पलगिया बा अहीरे म ऽ
बेसवाह् आपनि ना दुओहि बइठल रे वान ऽ
घोडवाह् बान्हल बा बोहवा मे मझारि
जवने घरी उठल अहीरवा बीर रे लोरिक
घुमि घुमि देखत ना वान ओहि रे बोहा
अब मोर फूटि गयल ना तव रे दीरइ
उ लछमी कवनेह मुलुकवा मे चलि र जाई
हमे लिखल यानह् बिपतिया कइ रे ओर
एतनाह् सोचि सोचि अहीरवा जे बा दिन रे रातय
अरे भाई सुनह् ना हलिया जे देख उ बार
आरे सुनह सिपहियाह् देख रे नोकर
कहनाह् मनबह् ना एठियन रे हमाऽर
आजु भाई चलि जाह् ना नगर देख गउरवा
गउरा मे देखह ना दुगिया जे पिट रे वाइ
जेतनाह् गउरा मक्खनवा जे दूध रे होई
ओतनाह् लेइ चलह् ना बोहवा जे देख मझार
अब कहे टीकल ना राजवा जे बाडे रे पूरुबी
पूरुबीह् आवल बागलवा जे बान कटाइ
आजु भाई बइठल फरदिया जे गोडवा जे टूटल
उहे भाई मठाह् भा दूधवा के होति रे खोजि

गायक द्वारा दुर्गा का स्मरण

हे राम, राम, राम, हो राम
आजु बहे तवनेह् ना दिनवा जे राम समइया
केहि फेरु ओहूव समइया के देख रे हालऽ
अब जिनि भूलह् ना सगिया जे मोर समउरी
जिनि भूलि जायह दुरुगवा जे सुनि रे मइया
दुरुगाह् हम तोहरेह ना बलवा जे बउ रे सइया
नउवाह् लेतइ *ना हरदम बाड़ी तोहाऽर*
मातवा तू तिन्नइ परनवा जे जिनि रे छोड
अब फेरि देहह् इहरिया जे दव रे राई
आजु भाई बारहना पतियाह् बा गऊरा
तिरपनि बसवलि ना बानी ह् अही रे रान
घर घर घुमलि ना दुगियाह् लेइ रे बानी
महि पेरि मठाह् सबेरवा जे लेइ रे चलऽ
तब पेरि बोलति ना धनवाह् बाइ मजरिया

अब मां सुनिलह् ना ससुवा रे हमरइ
कतहूँय तोहइ मंठवा हेरि रे लेतीं
अधिया पर लेइ आवऽ मंठवा रे उठाई
जवने घरी वेसिय ना वोहवा के लेइ रे अइवय
आधा लेहंइ ना वेचवा जे आपनि वांटि
आधाह् वाचिय ना वेंचवाह् रे हमरइ
वाल वचा खावइ दुअरवांह रे वनाइ

मंजरी का लोरिक के बाजार में मट्ठा वेचने जाना

एहि भाई वड़े सवेरवा क जूनऽ
अहीरिन घर घर मंठवा वाइं रे महत
मंजरीय रेंगलि सवेरवाह् केनि रे जान
जाइकेनि एकइ चरुइयाह् लेइ उठाई
लेइकेनि अपनेह् ना घरवांह् घइ रे लेनीं
तब तक कुल्लाह मुखरियाह् होइ रे लागलि
पानीय पत्तर ना मुंहवा में डारि रे लेनी
जवने घरी सोरह ना सइयाह् रे गुवालिनि
चलि देलेनि ना वोहवाह् रे मंझार
आजु भाई दूघइ ना मंठवा जे दहि रे मक्खन
सब रंग ले लेह ना वोहवा में वानी रे जात
आजु कहें विचेह् ना घनवा जे लेइ रे ओठियन
अब फेरि गयल ना नदियाह् रे पहूँचि
अब कहें देखह् ना हलिया जे लोरिके कय
उ भाई वइठल कुरुसि याह् पर रे वाइ
आजु कहें देखइ ना हलिया जे गोपियन कऽ
मंठाह् लेइलेह ना भइलीं सव रे जाइ
ओहि घरी छुल्हल पिहिकिया वा नाहिं खेवा
केवटाह् कइलेसि ना नइया जे ओहि रे पार
आजु कहें चड़नीय ना गोपियाह् रे गुवालिनी
अब फेरि भई ना गइलीं ओहि रे पार
आगे आगे सगरी गुवलिनी जे चढ़ि रे गइलीं
अब मांजरि चढ़लि सरगवाह् पर रे वाइ
ओहि दिन वोलल मरदवा वा वीर रे लोरिका
उह भाई वोलल लरमवा के वाइ रे वोल
आजु कहें सुनवह् सिपहिया जे लेइ ये हमरो

कहनाह् मनवाह् ना एठियन रे हमार
देख भाई दसइ ना आगवा छोडि रे देवय
आ पाचि छोडवाह् ना पछवाह् लेइ ये आज
ओकरेह बिचेह् ना बाडे जे चिय रे रइया
ओहि केनि लेइ आवऽ मठवा जे उठ रे वाइ
आरे सुनह् ना हलिया ओठियन कय
औ फेरि ले लेनि मठवाह् सव रे लोगइ
आजु भाई सबकह् मठवाह् बाइ बेचाई
ओहि घरी आइकह् मजरियाह् बाइ उतरले
धियवाह् धरइ भउकवा धुरही पर
दुअरि पर धइवह् पिपोरवाह् जुमि रे जाई
आजु बाबू चडि चडि ना अगुरवा कइ रे पेवना
लवकत पहिनेह् धियवा बाइ रे घूमत
तब फेरि सगरो ना धिरे धिरे रँगेय लगली
तब फेरि बेसवाह् ना बोललि बा चनइनी
आजु कहँ सइयाह् ना सुनिलऽ सुख रे नन्नन
आजु सुनिलह् ना पोडवा मउ रे यार
जवन भाई लेलिय मठवा गोपिया कय
ए घरी मामे रे ना दामवा देइ र देइ
तब फेरि बोलल मारदवा बीर रे लोरिका
दरियाह् वरई ना बेडवा रे जवाबइ
हरवाह् सोनाह् ना दरवि धइ रे देवे
उपराह् भरि देह् रोवडवा रे पुरान
ओकरेह् उपराह पउरवा भरि रे देवे
बरतन धइ दे चरुइया बाहर निकालि
आजु भाई आइ ना गोपिया रे गुवासीनि
आपन लेइय भउवा रे उठाई
चनवाह् भर देइ ना चउरी बरदे कऽ
सोलह दरब चरुइया भरि रे जाई
ओकरेह उपराह् ना दस सेर पाच सेर चाउर
जवनेह जाइ दरजिया रे लोपाई
ओहि भाई लेइवह् चरुइयापुर रे उतरलि
ओ हो गइलीय बेवरवा ओहि रे पारइ
बिनवाह् देलेसि ना नइया रे उतारी
आजु भाई आगेह् ना कतवा पर पासि रे गइली

मंजरी का अपने सत की परीक्षा देना

अपने में कइलीं गुवालिनि सब रे राजी
देखु भाई एही छितन कोइय उतार
केकर देखइं मंगवाह् के ओजिनी बेचल
ओही घरी सगरेउ चेरुइया उतरि गइनी
अब होति बानी चेरुइया तहि रे कातइ
जवने घरी मंजरी क चरुइया दिठि रे गइनीं
हथवाह् देलेनि चउवरवा में धंसाई
मूठिया से सोनइ ना रुपया जे कढ़ि रे गयनऽ
अहिरिन के बाजलि टोकरिया जे देख रे बाइ
अब कहें हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लीलार
एतना दिनह् ना मंजरी जे सत रखलेसि
आ सत देहलसि ना बोहवा में आपन गंवाइ
अस रेंगलि ना गोपियाह् रे गुवालिनि
आचलि जानीय गउरवाह् केनि रे गाँव
मंजरी देखइ ना पंसवाह् पास रे जालइ
घरवाह जनमल भोरिकवाह् लेइ रे बान
उहे भाई कोराह् गिदरवा जे ओकरे बानऽ
छोड़ि छोड़ि करइ ना धनवाह् देख रे कार
बुढ़ियाह् टंगले ना नतियाह् केनि रे बानी
तब तक जुटलीं गुवालिनि बोहवा कंइ
बुढ़ियाह् किनबेह् ना खोइलनि रे हमार
एतनाह् दिनह् मजरिया सत इ राखलि
आजु भाई बोहाह् में सतवा देइ गंवाई
एतना जे सुनति ना बुढ़िया बाइ रे खोइलनि
अब माई कोरोह् ना बंसिया हिंचि रे हाथे
मंजरी के लेलेसि डहरिया रे तड़ि रे याई
रोइ रोइ बोललि बिटियवा महरे कय
जेकर दावन मंजरिया बाइ रे नांव
सासुइ अइसे ना जीव नाहि मानल
अब तुंय देबह् कड़हिया रे चढ़ाई
अब छोड़ि देबह बियनवा लोहिया में
ओमन छोड़ि दह रोकड़वा बरि रे यारइ
जवन दागल ना होवइ बेड़ियां कय

जवन भाई जाइय ना हथवा रे खंगार
नाहि अपने सत मुपुरुष के सति रे होव
हम लेइ आइबि रोकड़वा जे हाय रे घई
ओही घरी देखह ना हलियाह् खोइलनि कऽ
उहे भाई देलेसि ना खमियाह् चढ़ रे वाई
लोहियाह् छोडल्ने त्रियनवाह् देख रे वानऽ
अगियाह् ताजाह् ना भइलि पेनिया चढ़
वड वढ़ तुरत ना धियनाह् कइ रे घऽरय
ओहि घरी फेंकि गईल रुपयवा एक रे दुइया
णजरी लुकलि सोहिइवाह किहा रे जाल
आजु कहें हो हों ना दइवा मोर नारायन
का वरम्हा लिखलह् ना मक्षवाह् रे लिलार
जो हम एकइ ना वपवा के होब रे विटिया
के फेर एकइ पुरुसवा बाइ रे धारइ
जब ओकरे सतइ धरमवा पर र होवइ
फेर चढ़ि लेवइ रुपिया हो निकाली
ओहि घरी डालइ ना हथवा धन मजरिया
करति बानी रुपियवा एक रे टोही
ओनकेह् तनिह् ना दगिया नाहि रे लागल
सबकनि गयल ना मनवा रे बइठि
घोइलनि फेरिय मठवा आनि रे देहले
आजु मोरे देलेन मजरिया के रेगाइ
मजरी सगरो अहीरिनिया चलि रे देहलेनि
हेकरेह् पीछेह् मजरिया बाइ रे जाठइ
जवने दिन दूसरि ना बेवरा गइली पाल
आधा तिहा भइलि आनी ओहि रे पार
बिनवा से कहत अहीर ना अर रे भाई
आजु कहें सुनवह् ना केवटा भोर भोमल
एठियन मनवह् कहनवाह रे हमार
देख भाई सगरो गुवालिनि तू उतारऽ
उहे पिछवड़िया जे पाछवा से आवति रे बाइ
उनकर जिनिय तूहउ रे उतारऽ
जवन भाई जबरी भठवया जे नइया पर धरिहय
ओकर दीहऽ जमीनिया पर तू उतारि
जिन उहे चढ़े ना दीहऽ नइया पर

जिन ओकर भउका समनिया जे लेइ ये आइ
एतना जे कहि के अहीरवा जे वाइ रे ओठियन
भीमलाह् खेवत करत वाइ एहि रे पार
जवने घरी वइठलि ना नइयाह् पर मजरिया
तोताह् गयल ना जोड़वाह् केहि रे तोड़
जाइकेनि ओनइ ना हथवाह् रे पकरि
ओनकर हेथवाह ना मनवाह् रे पकड़ि कय
अव फेरि देलेनि ना नइयवाह् केनि उतारि
अव नाहिं करवि ना तोहंइं लेइ ये पारइ
सुववाह् के वाड़इ हुकुमिया जे ओहि रे दम्म

मंजरी द्वारा सत का सुमिरन—नदी की धारा का रुक जाना

ओहि घरी देखह् मजरिया के हाल रे चालइ
मंजरी रोवति रकतवा के वाइ रे आंसुऽ
आजु कहें वहुत ना दिनवा पर देख रे लवटल
आजु भाई के के अगमवा जे होत रे रहनऽ
तवन भाई अइसी ना दुखवा जे वड़ पछेड़ले
अवहींय गरह सरीरवा पर देख रे वानऽ
ओही घरी रोवे ना धनवाह् रे मंजरी
सतवाह् सुमिरति ना आपन ओहि दम्मइ
आजु कहें गउराह् के सुमिरउं गउराइनि
वोहवा के सुमिरल कनिकवा लेइ रे वार
आपन सुमिरल भवनियांह माइ दुरूगा
जेवन भाई लांगिय ना दिनवा के पूज रे मान
जवन भाई सत्तय धरमवा जे बांचल होइहंइ
आ फुनि होइ जाह ना नदिया एहि रे पारऽ
ओहि दिन परगट दुरूगवा जे होइये गइलीं
वीचेह देलेनि ना दलवाह् दुइ कंकारि
आजु बान्हि गयल ना धरवा जे दुनों बल्ली
वीचेह् तड़कि कांकलि ना मय रे दान
आजु भाई लेलेसि भउकबा जे धनि मजरिया
अव चलि गइलि ना वोहवाह् मेनि रे बाय
आजु कहें जइसेह ना मंठाह् रे घुमवले
आ फेरि छूटनह् सिपहिया जे ओहि रे दम्म
आजु कहें चलह भउकवा जे ले ले रे तूहंइ
आजु मालिक तोह्रइ मंठवा जे रोज रे खाइ

तब फेरि बोललि ना धनवा जे बाड़ मंजरिया
आजु भइया सुनवह् सिपहिया जे मोर रे बाड़
आजु भाई छोटइ लरिकवा जे हमरे बान
हथवा मे रोटिय ना लेहले लेइ रे बाड़
आजु इहे देलेसि चरुइयाह् मे गिराई
हमन हथवाह् ना गलिया के ले स रे कार
इहे भाई राजाह् ना जोगवा जे मंठा नहिनो
दूसरे के लेहि जा ना ओठिन रे लियाइ
ओहि दिन केतनह् ना कहना जे बाइ ना मानस
अब भाई लेहले बलउवा पर चलि रे जाइ
आगे आगे रेंगनह सिपहिया ज सुयवा कऽ
पंछवाह रेंगलि नजरिया से दख रे बाड़
उहो भाई मठाह ना धइयाह् रे दुअरिया
फेरि घुमि गइलि पिछडवाह् मेनि रे बाऽ
ओहि दिन मुनह् ना हलिया जे लोरिके कऽ
तलुवा मे धइल विजुलिया बा तर रे यार
उहे भाई लेइयेह बिजुलिया तर रे बरिया
जइसन देलेनि दुवरवा पर लट रे बाद

लोरिक को मृत जानकर मंजरी का सती होने की तैयारी करना

तवने ना दिनवा राम समइया के फेरि ओहू समइयाह् पड़ रे हालऽ
आज कहें देखह् ना हलिगाह् ओठियन कऽ
आ फेरि बोलन ना बानह् बीर र लोरिक
बियहिय पूछि ले ना बतिया गुबवन से
बाहुय लेइह ना मठवाह् कइ रे बेंचइ
तब फेरि बोललि ना गोपिया बाड़ गुयालीनि
मजरीय बोललि ना लरमवा कइ र बोलऽ
बलकुन हमके ना बेसया कुछ ना मीलत
इहे मिलि जातइ बिजुलिया तर रे बारइ
मजरीय सघइ ना भीतरे मनवा मे
जइसे रहल बिजुलिया रे हमार
पइलिय गूवा से सइयां रे भइल सड़इया
सूयवाह् मरलेसि ना सइयां के बढि रे यार्इ
आनवर हुइयाह् हसियवा जे सेइये सिहमेन
इ भाई हवइ बिजुलिया रे हमार
ओहि तवने ना दिनवा समइया

के फेरि ओहू समइया कऽ हाल
अब फेरि देखहू् ना हलिया ओठियन कऽ
लोरिकाहू् बोलल लरमवा कऽ बोल
आजु भाई गोपिया ना सुनबे तूं गुवालिनि
एठियन मनबे कहनवा हमारऽ
जब भाई मिलि तरवरिया दमवा में
अब लेइ जाबेह ना तोहउं रे उतारी
उहवां से उठलि ना धनवाहू् रे मंजरी
ओहि दम गइलि बिजुलिया किहां रे ठाड़इ
हथवा में लेइकहू् बिजुलिया जे तर रे वरिया
उहै भाई बोलति फरकवांहू् जाइ रे ठाढ़
आजु कहैं सूबाहू् ना सुनिलहू् मोर पूरूबहा
एठियन मनवहू् कहनवांहू् रे हमार
बोहवाहू् में हमइं लऽकड़िया जे जुट रे वइबऽ
एहि घरी लागिय बेवरवाहू् केनि रे तीर
हमहूँ करीं असननवा बेवरा में
अइसन लेंइय ना जलवा में नह रे वाइ
जब हम एकइ ना बापवा के होवइ बिटिया
के फेरि एकइ पुरुसवा के बहु रे यारि
बरम्हा जी छोड़ि दहू् जे खंगरवा जे सरजू से
हमहूँ जे लेइ सतियवा जे होइ रे जाब
ओहि घरी सुनहू् ना हलिया जे ओठियन कऽ
लोरिकाहू् सुमिरत दुरूगवाहू् बाइ रे माइ
आजु कहें सुनबेहू् भगवती जे माई दुरूगवा
बियही चढ़ति ना चितवा पर लेइ रे बाइ
देबी माई अयसिय ताकतिया जे देबि बढ़ाई
बियही जे जरल ना तनिकौ पर हमार
एतनाहू् कहि कऽ अहीरवा जे बीर रे लोरिका
चित्ताहू् देहलेसि ना नदिया पर गड़ रे वाइ
ओहि घरी लेइकहू् तंरवरिया जे धन मंजरिया
हर घरी गोताहू् बेवरवा में मारि रे देई
ओहि दिन रोवत भीमलियाहू् बाइ रे केंवटा
रोइ रोइ धरइ मंजरियांहू् कनि रे गोड़
आजु बाबू हमरौ जियकवा जे छोड़ि रे देबऽ
मांजरि हमसे गलतिया जे होइ ये जाइ

केहू के कहलेहू बा हमहूँ जे तोहें बतावऽ
आजु भाई हम नाहिं ना वीपति करी तोहार
सुबवा के हुकुम ना बोहवा म लागि रे गइनी
अब तब कइलीय ना नइया मे तोहू रे पार
ओहि दिन सुनहू ना हलिया जे ओठियन कऽ
येतनाहू पापइ ना तोहउ के पडि रे जाइ
कवनो दिन बाल ना बचवा जे मोर रे सगिहइ
कइसे देवइ ना जे रोलिया ज हम चुकाइ
सुलगलि ना अगिया बाइ चितवा कइ
आ फेरि गइलि मर्जारयाहू रे ढकाइ
जबने घरी देखति ना वेसवाहू जे बाइ चनइनी
ओहि घरी दातनि अगुरिया जे बानी चबात
अब कहें हो हो ना दइवाहू मोर नारायन
का बरम्हा लिखलहू ना मथवाहू रे लिलार
आ जेकरि बियहिया ज जघवा के जरलि
आ जेके तनिकव दरदिया ज नाहि रे बाय
आजु भाई ओढरी ओढरिया के भवन र गनती
हमन मेलिय पूछतवा जे दइव रे बाइ
उहवा से डांकल अहीरया जे बीर रे सोरिका
जाइवेनि चेचुर घइलवा जे देख रे वाइ
मजरी मे घइवहू चेचुनवा ज खीचि रे लेहलन
ठावरे से मरलेनि ना अगिया जे गइ छितराइ
ओहि घरी लेइवह तमुइया म घुसुरि गयनऽ
ग्वालिनि बरल ना हाऽलवा जे चलि र जाइ
आजु कहें हा हो ना दइवाहू मार नारायन
का बरम्हा लिखलहू ना मथवाहू रे लिलार
आजु भाई कल्हिया ना धाइननि नाहिं पति रे अइनी
जे आजु गइलिनि ना बोहवा म पस रे वाऽइ
देख भाई कल्हियउ जे सहटन सुबवा रहल
आजु ओरे लेइ गइल तमुइया जे ओलि रे याइ
अब त गुवालिनि बोहवा मे
धरवाहू योइलनि से बतियाहू देहि जनाई
दगु बुढ़िया कल्हियो क रास्ता रहन रे ऊहइ
गुडा लेइ गयल ना मजरी मे तन खरीदइ
अब भाई तम्मुव मे नाहीं ज पेरि देखइनी

कवनेह् गइयांह् मुलुकवा में चलि रे गइनीं
एतना जे कहत ना वतियाह् जे खोइलनि से
खोइलनि वोललि लरमवाह् कइ रे वोलऽ
आजु नांउ देलेसि ना गिदड़वा जे हम धराई
गीदड़ हम भयल वा कल रे कान
लरिकाह् लेलेहना वुढ़ियाह् रे खोइलनी
रेंगल जालइ अजइया केनि रे घरे
अजईय जाइकह् ना देखत वाइ रे घरऽय
ओहि दिन वोलल ना वानी धनि खोइलनि
वेटवाह् सुनवह् अजइयाह् रे हमार
वहुअरि हरि गइलि लोरिकवा क वोहवा में
ओकर नाहि पाताह् ठेकनवा रे देखातऽ
जवन दिन भइयाह् ना रहलंह् मोर रे लोरिका
अजइय हमरेह ना घवरीय रे फलनियां
लोहाह् करत ना वानह् रे लोहारइ
आजु कहें ना लोरिके के वरिअइयां
गदहाह् करत अजइया जे तोर अनेरइ
तेकर वियहिय ना हरि गईल वोहंवा में
लेइ आव पाताह् ना तोहंइ रे ठेकानइ
साइत के कवहीं के अहीरवा जे फेरि रे लवटी
तोहके पूछिय ना हलिया जे दुइ रे चार
ओहि दिन काहेह् झगड़वा जे दुइ रे चार
कइसे हरि गइलि वियहिया जे चेला तोहार
एतना जे कहत ना वतिया जे वाइ रे ओठियन
आजु फेरि अजयी वोललवा बा थुथु रे कार
आजु हम नाहींय ना वोहवा में वुढ़िया जइवऽ
ना कुछु करव ना कमवाह् तइ रे ख्याल
अइसे हम धौरि के सगरवा में चलि रे गइलीं
एकदम साकल ना बोहवांह् रे उजारि
आजु बऽनि गयल ना तिरवा जे कोलवन कऽ
उहवां से भगलीं गउरवा में अपने रेंगाई
आजु भाई तिरियाइ ना घरवां जे कढ़ रे अवलीं
छ महीना पियलीं गइया के हमरे दूध
एतना जे कहत ना बतिया जे लेइ ये बाड़इ
आजु धोवी निरनह ना वतिया रे गुनति बाइ

आजु कहँ हो हो ना दइवाह् मोर नारायन
का तुम भयलह् मरदवाह् कइ रे ओर
साइत के चेलवाह् लवटि रे एहि रे गउरा
चेलवा से कवन ना मुहंवा जे देव देखाइ
का जानी का देवह् जववा जे चेलवा के
जेकर हरलि बियहियाह् जे देख रे बाइ
तब फेरि बोलल अजइया जे लरमे से
बियही से मनवेह् कहनवाह् रे हमार
आजु कहँ कवनेह् ना दिनवाह् राम समइया
के फेरि ओहू समइया कइ रे हाल
आजु कहँ सुनलेसि ना बिजवा रे धोबिनिया
बोलत बाडइ लरमया कइ रे बोल
सइयाह् नाहक मरदवाह् रे तू भइलऽ
अब होइ जातइ जननिया कइ रे रूपइ
बलुकन पहिर पहिरनाह् तू हमाऽर
आपन लेइ जाह् पहिरनाह् हमहूँ के
हम जाब सासड ना कोहबाह् रे मंझार
जाइ हम पता लगइबइ देवरानी कऽ
तब हम आइबि गउरया देख रे गाँव
अजई आपन पहिरन जे छोडि रे देनऽ
धोबिन के पहिरत ना लुगवा जे फुनि रे बाय
आजु भाई बइठि ना लुगवाह् रे पहिरि कऽ
निजवा आपन समनिया जे कस रे बाइ
ओहि घरी अंगवाह ना कसले जे बा समनिया
आ फेरि गोरेह् बदनियाह् रे तमाइ
एक हाथ सकतिय ना कड़वाह् रे उठवले
आ तडकलि बयालिस आइ रे हाथ
जवने घरी बहरा ना गउवा बाहर भइली
एक ठेइ बाडइ सेमरिया कइ रे पेड
आजु कहँ डाकति घफवा जाइ रे बिजवा
ओहि जाके मारति अवरिया जे देख रे बाइ
अब कहँ गिरलि सेमरिया जे अरराइ कऽ
आ फेरि धोबी के कानवा जे सबद रे जाइ
ओहि घरी निकलल ना धोबियाह् खरबराइ कऽ

लुगा फाटिय छोड़तवा जे वान रे जाइ
जाइकेनि हथवाह्‌ हा जोड़िय के वाइ ना वोलति
वियही ते मनवेह्‌ कहनवांह्‌ रे हमाऽर
आजु तुंय दे द ना पहिर ना देख हमके
हम तोहार लेवइ ना पतवाह्‌ रे ठेकान
आजु भाई तिवइ ना जतिया जे जानि जाव्यऽ
अव चढ़ल जातीय रइनिया जे दलि रे तोर
जवने घरी तिवइ ना होइ के रन जिति अइवऽ
आजु से डूबि जाइ वंसवा के मोर रे नांव
रेंगल ना धोविया ओठियन से
अव चलि गयल झरियवा के पासइं
झरियाइ सुने झा हथिया लेइ ये घोड़ा
उहे भाई वनह ना चरत रे अ भेड़ा
घुमि घुमि पियंइ झरियवा मेनि जलइ
ओहि घरी रेंगल ना वीरवा रे रेंगावल
अव चलि गइनह्‌ गइयवा केनि रे दारइ
आ फेरि खोखरि ना पेड़वा वाइ रे पेड़हनि
ओही घरी गयल अजइया बा घुसुरि
जवने घरी भयनह ना विहना रे भुरूहुर
पुनि भाई देलेह कउववा वाइँ रोर
आजु भाई छुटलंह ना हथिया देख रे घोड़ा
घुमि घुमि ओहिय ना वोहवांह्‌ रे मंझारइ
अव भाई लेलह्‌ अजइया अपने सालि
आजु कहें घोड़वाह्‌ पोंछिया काटि रे देला
उटवनि के काटइ ना दुनो जाइ रे कान
हथियन के काटइ ना कोखवा लेइ रे कान
हांथिय ऊंचीय चढ़इया पर रे जाती
अव त होतइ घरियवा में उदि रे यान
उहे भाई गइलि सिकाइति लोरिके के
लोरिकाह्‌ मानह्‌ मालिकवा रे हमाऽर
एक ठे तूंही जवरवा वोहवा में
तोहरे जे जावर ना बोहवा नाहिं रे कोई
का जानि काहां से जावरवा आइ क टीऽकनऽ
हांथीय घोड़ा भयल बा उदि रे यान
तव कह विनाह्‌ न सूंड़वा कानवा कऽ

हाथिन घोड़वा भगइनह् धय रे कार
ओही घरी रेंगल ना ओठियन से बीर रे लोरिका
हथवा मे ले लेह् बानइ ना तर रे वार
एकदम टहरइ ना थोहवाह् रे मझारी
घुमि घुमि देखत घरियवा के बाइ रे गाइ
ओहि दिन बोलल अहीरवा जे बीर रे लोरिका
दरियाह् करइ ना बेढवाह् रे जवाब
आजु कहँ सुनि लेइ सुघरवा के सरइता
अब तोंइ निकलि ना अइले मय रे दान
एतना जब सुनत ना बानह् गुरु अजइया
अब फेरि निकलल घोडरवा से खरबराइ
ओही घरी दुनोह् पमतरा जे करे रे लगऽनऽ
आ फेरि गयनऽ अवरिया पर नगि रे चाइ
ओही घरी बोलल ना गुरुवाह् बाइ अजइया
आजु भाई मरबेह ना मरबेह् तूइ रे मुववा
जवन होरें अवरिया मे आइ रे जाइ
तब फेरि बोलल अहीरवा जे दोह रे राइ कऽ
सुवबाह् ते मनबेह् कहनवाह् रे हमाऽर
देखु भाई आगेह् ना घउवा जे मारि मारऽ
ना त घाव पीछेह ना रखबह् रे जोगाइ
हमरेह् गोरू के किरियवा जे बाइ अखवना
मारबि जे गइयाह् अवरिया जे आगि रे बाइ
एतनाह् सुनति ना ओठिन था अजइया
धजई फूकति चाकतिया जे बाइ रे जाय
जवने घरी बचि गय ना मारय लोरिके के
अब फेरि गमल ना ओठियन सिर रे हाइ
आजु धहें रोवत ओढनिया के बाइ रे लोरिका
जेवनह् पछिलाह् दरदिया जे हलि रे जाइ
ओहि दिन हहरल मरदवा वा बीर रे लोरिका
अब फेरि मनवह् कहनियाह रे हमार
अब भाई चारिय ना कोनवाह् घुमि रे गइली
कतो नाहि देखल अवरिया के हमरे घाइ
इ घाव मारव ना गुरुवा जे ओने अजइया
दूसर मारय दुनियवा मे नाहि रे कोय
एने सुनत बा गुरुवा रे अजइया

डंडा खींचि के गयनह् ना उधि रे राइ
दुन्नोह् गरवा ना जोरिये के रोवे लगनऽ
लोरिकाह् पूछत लरमवा के बाढ़े रे बोल
आजु कहें गुरुवाह् ना सुनिलह् मोर अजइया
एठियन मनवह् कहनवांह् रे हमार
जवन गुरु अइसइ अवरिया जे तोहार चलल
कहें मोर जूझत संवरूवाह् जे सर रे दार
अब फेरि तड़केह् ना देत वा रे जवाब
चेलवाह् आयल गोहरिया जे संवरू के रहले
अब फेरि भइलींय रयनियांह् पर रे ठाढ़
जवने घरी वाजल ना तीरवा जे कोलवन कऽ
सोझइ गयल करेजवाह् रे दुधारि
कइसंउ कइसंउ ना घरवा जे जुटि रे गयनऽ
घरे जाके दिहलीं ना तिरवाह् रे निकालि
खनइ ना बगइ ना गुरवा जे पीरे लिहलेन
तब फेरि बचलि जिनिगिया जे चेला हमार
सुनवह् ना गुरुवा जे मोर अजइया
एठियन मनवह् कहनवा जे देख हमारऽ
कवनउ हमरेह् ना आगवा के वल रे वालइ
कहां कहां वानह् ना करवा जे देख हमारइ
तब फेरि बोलत ना गुरुवाह् वा अजइया
अब भाई मनवह् कहनवा जे चेला हमार
आजु तोहार नन्हुवां ना गांवे में रहल घोरइया
तोहरे रहल लछिमिया के अग रे हार
उहे भाई बाड़इ गउरवा के गलिया में
उहे बाड़े झोंकत ना भुंजवा के भर रे साइ
उहे भाई झोंकत भरसइया जे वानऽ
ओहि घरी सुनह ना हलिया लोरिके कइ
लोरिका वड़े सबेरवा के जून
आ फेरि देलेनि हुकुमिया लगाई
आजु मोर सुनह् नोकरवा सिपाही
अब चलि जावह् गउरवा हो गांवे
जवन बाड़े ना भुजवा हो किहां
नोकर बाड़े झोंकत ना भरसाईं
कहि द पूरबी ना राजा बोहवा में

टीक्त बान पूरुबवा हो पाटइ
ओही घरी कइलन बलउवा नन्हुवा कऽ
का जानी काहे ना मतलब लेइ जे बानऽ
ओहि घरी छूटल सिपहिया ओठियन से
रेंगल जानह् ना भुजवा के दर रे बार
ओहि घरी देखह् ना भुजवाह् वइ रे हलिया
भुजवा कहत ना ओठियन बर रे भाई
आजु भाई हमहू ना बहुत रे जियवली
बतवच लागत परेजवा जे बान हमार
इनवे नाही हम ना जाये देव रे बोहवा
चाहे केहु बलावे मलि रे बार
एतना जब कहत ना दनिया सिपहिन से
अब कहि गयनह् ओठियन विधि रे राई
आजु भाई जयरीव ना नन्हुवा के लेइ रे धइलेनि
घिचले तन ले ना बोहवा मे बान रे जात
ओही घरी मुनह न हलिया आठियन वइ
बोहवा से चलल ना नन्हुवा बा ढोरइया
ओहि दम रेंगल समुइया पर रे जाल
जहवां बाडे अहीरवा बीर रे लोरिक
ओहि ठिन देखत समनवां परि रे गयन
नन्हुवा देखतइ सइलवा पहि रे चानइ
ओहि घरी सुनह् ढोरइया वइ रे हालइ
ओहि घरी गइल ना अखिया बाइ रे मिलत
ओहि घरी उठल ना राजवा आ बीर रे लोरिक
दरियाह् करत ता बेकथाह जे बाइ पवाव
आजु कहें सुनवह् ना नन्हुवा तूं ढोरइया
एठियन मनबह् कहनवांह रे हमार
आजु भाई भाई दह् जे कुछनिया धन्दा कऽ
कइसन बानह् ना परवा के [illegible]
ओहि दिन सुनह् ना नन्हुवा के [illegible]
घोसत बाडइ ना बतिया खिसि [illegible]
आजु बहनाइयाह् ना सुनि[illegible]
एठियन मनबह् क[illegible]
जाहि दिन हमरेप ना [illegible]
घड घड मयत [illegible]

कवन भाई दूधइ मंठवा के रहलीं खातइ
हम भाई बाड़इ धोवनवा रे हमारइ
आजु कवनो कामइ जब देसवा में न मिललं
जाइकेनि भुजा के झोंकति बाइ रे भरसोइ
ओहि ठिन बोलल मरदवा जे बाइ रे लोरिका
तुरतेह करइ ना वेड़वांह रे जबाब
आजु नाहिं कामह् पीपरिया में चलि रे जात
अब तुंय ले आवह् ना पतवाह् रे लगाइ
कइसन बानीह् लछिमिया पिपरिय में
केतना बचलि लछिमिया जे मोरे रे बाइ
तब फेरि बोलल ना नन्हुवाह् जे वाइ ढोरइया
अब वहनोइया नां सुनिलह् रे हमार
अब हम जावइ पिपरिया जे दुईयं जने
जाइकेनि कोलवन के घरवां रे चलि जाय
ओहि घरी चिन्हले ना कोलवा जे बांय चड़ंरवा
मारि केनि देइहंइ पीपरिया में हमके बाइ
तब फेरि बोलल अहीरवाह् बाइ रे लोरिका
दरियांह् करत ना बेड़वाह् रे जवाब
तुंय नाहि पहिलेह ना अपने जे घरे रे जाव्या
जवन तोहार वाड़इ बियहियाह् आजु रे एक
जाइकेनि उनसे ना घरवां के भेंट रे करऽ
सामी के उ ना करिहंइ पहि रे चान
तब जान कोल चंड़रवा जे नाहिं रे चिन्हिहइं
तूं भइया जाबइ् पिपरिया जे दइ रे पार
जेह रेंगल ना नन्हुवा बाइ ढोरइया
एकदम पिपरिया बाइ रे पाल
अब धइ लेलेह् डहरिया जे पिपरी के
अब फेरि लेहले रहतवा बा तड़ि रे याइ
एकदम रेंगल ना अहीराह् रे रेंगावल
चलि गयल कामह्-पिपरिया जे दइब रे पार
एकदम खरकाह् अड़रवा पर चति ले गयनऽ
जहवांह् रहना् ना कोलवाह् रे चंड़ार
आजु भाई बइठि खरकहवा पर रे गयनऽ
आ फेरि देखइ ना नन्हुवा के रूप सरूप
ओहि घरी सुनह् ना हलिया देवसी कऽ

उन्ह् माई थोड थोड करतवा वा रे पहि रे चान
जइसे भाई रहइब रगवा जे अहीरे कय
अब जवन गवराह् ना अइनह् रे बनाइ
उहे भाई हउवै अहीरवा कइ ये पीठइ
इनसे पूछ ना बतिया जे अर रे थाइ
ओहो घरी सुनह् ना हलिया नन्हुवा कइ
ओहि दिन रेंगल ना नन्हुवाह् बा ढोरइया
एकदम पहुँचल निपरिया बाइ रे पास
अब थइ लेनह् डहरिया जे निपरी के
अब फेरि लेहले रहतवा वा तहि रे आइ
एकदम रेंगल ना अहीराह रे रेंगावल
चलि गयल धामह् निपरिया जे दरब रे पान
एकदम धरकाह् अडरवा पर चलि रे गयनऊ
जहवाह् रहलह् ना कोनवाह् रे बजार
थाउ भाई बइठि धरनवाह् पर रे गयनऊ
आ फेरि देखई ना नन्हुवा के रूप सरूप .
ओहि घरी सुनह् ना हलिया जे देवतो कइ
उहे भाई थोडा थोडा करत अब पहि रे चान
जइसे भाई रहइ बारागवा जे अहीरे कऽ
जवन गवराह् ना अइनइ रे बनाई
उहे भाई हवई अहीरवा कइ रे पीठन
इनसे पूछ ना बतिया जे मर रे भाई
ओही घरी सुनह् ना हलिया नन्हुआ कय
नन्हुवाह् बोलन सरमवा कइ रे बोन
थाउ भाई बहुत ना आनन्द हमरे परसें
बोलनह् नगर गउरवा पुज रे राउऽ
दिनवाह् काटत ना देखवा देश रे रहनीं
थाउ भाई सब दिन ना पउवा हम घरावउ
दुयवाह् हम यहलोंच ना टेमवा दुइ ये तून
हमरे मंठाह् मननवा होइ रे मदन
सठिनी पीहइ बंटइया चलि रे गइलों
धुनरी के रक्तर झिनगिया बाइ हमारऽ
चलि चन हमूं पीनरिया देश पान
पीसरी में करब ना सनवा कोनवन कय
अब फेरि थाबन मठिनिया कइ रे दूध

एतनाह् कहत ना नन्हुवा जे वा ढोरइया
आ फेरि सुन देवसियन कइ रे हाल
अब कहें सुनह् ना नन्हुवा जे मोर ढोरइया
एठियन तूं मनवह् कहनवांह् रे हमार
वलुकन एकइ ना जतिया तूं पतिया रहत······
तव तूंय रेहतह् पिपरिया जे गढ़ रे पाल
तोहार भाई हवइ वारऽगवा जे अहीरे कइ
आजु हमार हवे वारागवा जे दल रे कोल
आजु कहें कवनेह् ना दिनवां राम समइयां
नन्हुवांह बोलल लरमवाह् कइ रे वोलय
देवसीय मनवह् कहनवांह् रे हमाऽर
अब भाई नाहि ना हमहुंय रे जइवऽ
हम भाई रहवि ना एठियन कोलवन में
हमहूं कोलइ वारागवा रहि रे जावइ
तव कहें सुनह् ना हजिया ओठियन कय
नन्हुवांह् बोलनऽ ना वतिया रे लहाई
वलुकइ कोलइ चंडारवा होइ के रहवि
दुधवा खाव लछिमि क दुनो रे जूनइ
एतनाह् कहत ना नन्हुवांह् जे वा ढोरइया
अब कोल देनइ मोकमवा जे विद रे देई
आजु भाई लेइ आवऽ ना भठियाह् रे तोराइ कऽ
नन्हुवां के जातीय ना पंतिया में कइ रे ल्या
ओहि दिन मोकमवाह् बऽदि रे गइनं
दिनवाह् धइलें वा कोलवाह् रे चंड़ार इ
आजु भाई भट्ठिय ना देहलेन तोर रे वाई
भठियाह् टूटलि ना वानीय ओहि रे दम्मइ
कोलवाह् लेलेह् भठियवाह् चलि रे गयन
संझियाह् के वइठल कउड़वाह् लेइ रे भेदी
ओहि घरी सुनह् ना हलिया ओठियन कऽ
सबकेनि बंटल ना दोनवा लेइ रे बानइ
दोनाह् भरि भरि दरूइया बांड़े रे पीयत
नन्हुवाह बइठल लवठवाह् किहाँ रे बानइ
अगवाह् लेले ना दोनवा देख रे बानऽ
उहे भाई धइरुह् दरूइया पीपरी में
नन्हुवांह् धरइ ना दंतवा कइ रे दोना

उहो भाई मुर्हहि ना झुठही बा लगवले
दारू पीयस नरकवा मेनि रे जाला
आजु भाई ओह् ना पनियाह् घुमि रे गयन
तब फेरि बोलन ना नन्हुवां जे देख रे बाय
आजु भाई सुनह् ना बतियाह् मोर चउधुरी
कहनाह् मानह् ना एठियन रे हमार
देख भाई सहनो ना लोगवा ज अब परोसत्र
अब फेरि चली रसोइयाह् रे हमार
ओहि दिन नन्हैवा बोतलवा जे लेइ रे लेला
उझिलत धानह ना कोलवन रे धनाइ
जबन घरी पीयइ ना बालवाह् रे अगडिया
सिसका भरल कउडवा बिहा रे जाय
कवनो कवनो एहर ना गइनह ढमि र राई
कवनो कवनो ओहर गिरलवा जे देख रे बाइ
ओहि दिन सुनहना हुलिया जे ओठियन कय
नन्हुवाह् ऊठल मरदवा जे देख रे याइ
अगियाह् खोरिकउ कउडवा जे तेज रे कइलेन
अब फेरि देखह् कउडवा के हालि रे चाल
कोलवन पे पइ घइ मुहवा जे हिंचि रे दला
अब भाई देलेसि कउडवा पर जाइ रेंगाइ
बहुत कोल जरियाह् ना मरियाह् सब रे गयन
ओहि घरी लागल टिकरिया ज पुर रे पाल
सुनह् ना हुलियाह् ओठियन कय
नन्हुवाह् उठल खोरइयाह् लेइ रे धानउ
एकदम हुलल अडरेयाह मेनि रे गइन
जहवा पर बाडइ ना गइया रे कसानी
गइया से पालत ना नन्हुवां पुनि रे बाडई
अब कहे सुनबह् लछिमिया मोर कलानी
लछमीय आयल सेयकवा हो तोहाउर
गउवा में आयल मउवरवा रे तोहारइ
टीवन धानह् ना धोहवाह् रे मसारइ
हमवेह भेंजसनि ना पीपरीय र पाल
केतनिउ बाडे लछिमिया रे हमार
ओहि दिन बोलस ना गइया बाइ कसानी
अब फेरि मनवाह् ना कहना नान्हु हमारउ

आजु भाई जेतने ना नातइया कोलवन कइ
नाथि नाथि देहलनि ना गइया हंक रे वाई
आजु भाई तीनि सइतिया वाइ रे घरी
कोलवन के विटियाह् गवनवां देख रे होइहं
आजु भाई आजुय ना सातवां दिन रे साइति
अव पड़ि गइलि लड़िकियन कइ रे वाड़इ
एहि दांइ होइहंइ गवनवां जे लेइ रे वटुरल
वटुरइ देइ दह् ना लछिमिया जे चलि रे जाइ
आजु भाई तितिर ना वितिर होइ रे जइहंऽ
पाछेह् का करिहंइ सर रे दार
पंछवाह् वइसि के मोअरवा जे देख रे अइहंय
का करिहें एही पीपरिया जे पुर रे रवाइ
आजु कहें देखह् ना हलियाह् नन्हुवां कऽ
नान्हुवाह् चलल ना वानह् ओहि रे दम्मऽ
अव भाई लेहलें डहरियाह् वोहवां के
वोहवांह् आयल रे आन्हुवाह रे मझार

लोरिक द्वारा पीपरी पर चढ़ाई—कोलों से युद्ध

तव तक सुनह् ना हलियाह् लोरिके कऽ
उहो भाई वइठल कुरुसियाह् पंर रे वानऽ
अव जुटि गयल ना नन्हुवांह वा ढोरइया
अव फेरि वइठव पजरवांह् लेइ रे वानऽ
अ वहनोइया नाह् सुनिलह मोर लोरिका
कहनाह् मानह् ना एठियन रे हमारऽ
देख भाई लछिमीय ना कहले वानी रे वातऽ
आजु कुछ गइयाह् करत रे मत रे मती
अवहींय वहुत ना गइया कुछ रे रहनीं
तवने वांयह् ना कोलवा साइति रे धइले
उहे देहइं दइजवा लल रे कारी
आजु के सतयें ना दिनवा जे कोल रे करिहंइ
छितिर वितिर लछिमिनिया जे होइ रे जाइ
एतना जे कहत ना नन्हुवां जे वाइ ढोरइया
लोरिका के गयल ना मनवा रे वइठि
ओहि घरी बोलल अहीरवा जे बीर रे लोरिका
आजु भाई दुदु हजमवा जे उठि रे जा

ओहि घरी दुदुवाह् हजमवा जे उठि रे गयनऽ
नन्हुवा के करत बलइया जे लेइ रे बाइ
केनहुय दाढ़िय ना नहवा जे बाय रे काटत
केनहुय काटत बगलवा जे बान रे बाय
आजु कहुँ सगरे समनिया जे बनीये जे कानी
नन्हुवांह् के ओडा बा धोतिया मिलि रे जाइ
देहिया के कुरता कमिजिया जे मिलि गयनऽ
नन्हुवा के गयनऽ सिगारवाह् रे बनाइ
ओहि दिन बोलत मरदवा बा बीर रे लोरिका
नन्हुवा ते मनबे कहनवाह् रे हमार
देखु भाई बइठि बोहवाह् मे ना देखु रे रहवे
एठिन देखिहऽ ना बोहवाह् के कइ रे हाल
अब हम आपन लछिमियञ्ज केनि ओर
जाइ केनि आपन लछिमिया जे लव रे टइवऽ
तब बढ अइहइ बसवा के मोर रे ओर
जवने घरी कसइ ना घोड़वाह् रे भगरवा
भगरा के कइसे भयल बा समरे थूलइ
जिनकर सोने अखरवा रे सोने पाखर
सोनवा के गिरइ ना बकसलि रे लगाम
घोड़वाह् के बान्हें चिटुकवा मथवाह् पर
आजु कहे ले लहू पगरिया अरमे कय
जेमें मेधइ हवरूवा धरे रहल
गोड़वा के बिल्कुल सिंगारवा करे रे लगन
औ फेरि बारह ना बरवा मोती रे गुहलऽ
और फेरि देले नेउरवा गोड़ रे बान्हि
आजु कहुँ देखऽ सिंगारवा जे घोड़वा कऽ
आजु भाई सूरज ना ओरिया ताकि रे जालऽ
मउवाह् घोड़ा ताकलवा बा नहि जात
जवने घरी आधी ना रतियाह् निच रे सइया
घोड़वाह् चलल पछिमवाह् तडि रे याई
आजु फेरि आया सरगवा से ले भगरुवा
अहीरा के हवऽ खियवते बाइ रे जात
ओही घरी सुनह् ना हलियाह् पिपरीकऽ
कोसवाह् सूतल ककरउवा जे देख रहवऽ
औ फेरि सूतल बिरिन्हिया ओहि रे दम्मइ

ओहि दिन बोललि ना धनवाह् जे बाइ बिरिन्हिया
सइयांह् मनबह् कहनवांह् रे हमारऽ
देख भाई सूतल महलिया में बाड़ी हम्मइ
सपनाह् देखत बाढ़ीय नाह अज रे गुतई
जइसे लवटल अहीरवा जे बा पूरूबे से
सरगेह नाचत ना घोड़वाह् बाइ रे नाचत
ओहि दिन देखइ बिरिन्हिया रे उठाई कऽ
कोलवाह् देखत ककरउंवाहं लेइ रे बानऽ
घोड़वाह् नाचत सरगवां मेनि रे नाचत
कोलवाह् धनुही ना तीरवा रे उठवले
अब फेरि देलेसि सउंजियाह् रे चढ़ाई
जवने घरी मारइ एकठवा घोड़वा कय
आ फेरि बमकल अकसवांह बाईं रे जात
जवने घरी बाजल ना तिरवाह् घोड़वा के
दुनो ओकर गइनह् पगहवा बा रे नंधाइ
एकदम लेहलेह ना देइलेह लेइये घोड़वा
लोरिका गीरल पिपरिया जे बाड़े रे पाल
उतरल ना घोड़वा से बीर रे लोरिका
बिरन्हिय मनबेह् ना मइया कहल हमाऽरऽ
आजु हम अइले पुरुबवा रे हरदियां
बीपति परलि गउरवाह् मोर रे गांव
अब कहें बीपति संपतिया भोगि रे लिहलीं
मातवाह् अक्सर जिनिगिया बाटे हमाऽरऽ
आजु हम दूधह ना दहिया कइ खवइया
हमकेह् मंठाह सपनवा बाइ रे होतइ
आजु हम ओह कामह पिपरी में जइबइ
बलुकन कोलेह में मिलिये जुलि रे रहबइ
अब हम खाबइ ना दूधवा रे अमोखऽ
तवन भाई कइलीं चढ़इया जे पिपरी केय
अब जुटि गइलीं पिपरिया जे गढ़ रे पाल
भइयाह् अइसीय सपनवा जे हमरे देखलेन
अब हम देलेंनि ना माकानवाह् छोड़ रे वाइ
जवने घरी बाजि गयल ना बनवा जे करवंका
अब फेरि गिरल ना घोड़वाह् नयना ठाढ़
उहो घोड़ा ले लेह पिपरिया में गिरि रे गयनऽ

अब हम जइसे अंगवना में बाडि रे ठाढ
ओहि दिन बोललि ना बिरन्हिय बाइ कोलिनिया
भइयाह् मनबह् कहनवाह् रे हमाऽरद
तोहार हवइ ना जतिया अहीरे कऽ
तूं भाई अपने पहितवा पर होइ रे जावऽ
आजु हमार हवइ ना जतिया कोलवा कइ
अब हम बोलइ बरगवा हउवऽ रे बुडबक
तब फेरि बोललि नगरवा रे जबावइ
लोरिकाह् कहत ना बतियाह् रे लहाई
आजु भाई सुनबह् ना कोलवा भाई चढाऽर
आजु हम जातिय ना पतिया लेइ रे लेवऽ
अब सार बचलि बा जिनिगिया बाइ हमारऽ
अब फेरि बिरन्हिय गइलि बा पति रे थाई
साचइ अवसर अहीरवा जे बचि रे गयनऽ
अइलह धामह् पिपरिया के बाइ रे गाँव
आजु भाई हमरेह् नसीबवा मे पति बरइह
दुइ जून करिहइ लछिमियन बेनि तयनात
आहि दिन सुनह् ना हलिया जे आठियन कऽ
लोरिकाह् बोलल लरमवा क बाडऽ रे बोल
आजु कहें भइयाह् ना सुनि ले तू बिरिनिया
एठियन मनबेह् कहनवाह् र हमाऽर
आजु भाई अयसिम ना हयवा मे आइ रे गयल
घोडवाह् के मरलह् जिनिगिया तू मर रे बाइ
आजु कह घोडवाह् मगग्वा जे तू जामवतू
अब बान्हि देवह् पिपरिया जे दइवे पाल
कतहुँ मैं गाढ़ इ संकेतवा जे परि रे जइह
चलि बेनि लेबह् धामवा जे आपन बनाइ
एतना जे कहत अहीरवा वा बीर रे लोरिका
ओ फेरि देवेति बिरिन्हिया जे उहा रे बोल
आजु कहें बानिय बरजोरिया मे बाइ रे अमरित
छिरकन छिरयत मा घोडवाह् पर रे बाइ
जयन परी पडन नकुलवा जे घाडवा पर
मगराह ओठिन भयल बा तइ रे यार
आहि परी टनमल ना घोडवा जे पीपरी मे
अहीराह् बानह् अगनवा में देय रे ठाढ़

आजु कहें भइयाह् ना सुनि ले तुइ बिरिनिया
एठियन मनवेह् तूं कहनवा जे देखु हमार
आजु भाई अइसीय पियसियां जे हमरे लगलें
आजु फेरि गयल करेजवा जे बाइ दुखाइ
तनी मइया ठंढाह् ना पनिया जे घूंट पियवतु
आजु मोरे तरइ सरीरवा में होइ रे जाइ
ओहि घरी गगराह् लेजुरियाह् जे गिरनी लेइके
देख भाई चऽढ़लि जगतिया पर रे बाड़इ
अब ढिलि देलेह् गगरवा बा धरती से
उहे भाई जानह् ना गगराह् रे निपऽटि
जवने घरी बोलति बिरन्हिया जे बाई गगरवा
अहीरा चढ़ल जगतियाह् पर रे जाई
ओही घरी बोलत बा वोलियाह् रे लहाई
मइयाह् केतना ना तरवां बाइ रे पानी
केतना दूरवांह् गहिरवा लेइ रे बानऽ
तब तक बिरनिय रे ना बानी रे बुड़वते
तब तक घींचलेह् बिजुलिया जे बाइ रे खांड़
ओहि घरी गिरि गयल ना खंड़िया जे बिरनी पर
मुड़ियाह् गइलि इनरवाह् मेंनि रे बाइ
धड़िया गिरलि जगतिया पर बिरन्ही कय
अहीराह् उठल मरदवा जे पुनि रे बाइ
जाइकेनि खोललेसि ना गोड़वा जे लछिमिनि कय
लछिमिनि लेलेह पिपरिया के बहरे राइ
आजु कहें कामह् पिपरिया जे कोलवन कऽ
सोनवा के रहलि पिपरिया जे पुर रे पाल
उहे भाई मटियाह् ना कोलबाह् बाइ गिराइ कऽ
ऊपराह् से देलेह समनिया जे बाड़ें लगाइ
आजु कहें चुइ चुइ खंगरवा जे ओहि रे होला
जवन भाई कामह् पिपरिया जे पुर रे पाल
अहीराह् खोलल ना गोड़वाह् लछिमिनि कय
गइयाह् डहरलि पिपरियाह् लेइ रे बानी
अब चढ़ि जानी एठियन रे सीवानइ
आजु भाई मचलि धुंवाकर पिपरी में
पिपरी में मचलि धुवांकह् बाइ रे जातइ
ओहि दिन सुनह् ना हलिया जे पिपरीय कय

घोलवा जउवन देवसिया देख रे रहनऽ
चलि गयल रहनह् ना जंगल खेले अहेरइ
घोलवाह् बारह् ना मनवाह् कइ रे मूअर
मारि छन लेलेह् देवसिया बा चन्हि रे थाई
देखत बानह् ना घुवबा पिपरी कऽ
उहे घोल झखत मरदवा बाइ रे जातइ
बे फेरि मह्याह् बिरिन्हिया जे मरि रे गइनी
चलि भाई देहेलेनि ना अगियाह् ओन्ह लगाई
मइयाह् जरति ना पीपरी केनि रे पलिया
सब फेरि दहलनि अगिया ना लगाइ
जाइ फेरि लवटलि अहीरवा बा पूरुबे से
चलि आइल थानह् पिपरिया दइब रे पाल
अहीराह् भिडि बह् ना अगिया जे बाडे लगवले
जउरत थाडइ पिपरिया जे मार र पास
ओहि घरी पटकइ मुअरवाह् जे हहर मे
घोलवाह् रँगल ना अगवाह् चलि रे जानऽ
जाडवेनि छेवलि अगरवाह् गायन कऽ
आहि ठेन लारियाह् ना गइयाह् धा दरेरत
गइयाह् हुँवह् ना पनियाह् होइ रे गइनी
अब ओहि बीचे भरियवाह् मय रे दान
घोलवाह् धरियाह् ना बानइ देख रे छटकल
उहे सोझे छटकल घरियवाह् बाड रे जाई
सवचत चटकत लारिकवा च देखत रे थानऽ
सोहियाह् पोडाह् ना थानह् र रँगायत
गइयाह् लेनह् लारिकवाह् बहरे राइ
अब भाई लारियाह् ना गइयाह् रे डहरले
घोलवाह् मारत ना बलिमा रे सहाई
जवने घरी मरलेसि ना भलवाह् बा देवसिया
अहीरा मे गयल ना गोडवाह् जे घयले होय
जवने घरी पयलग ना गाडयाह् होइ रे गयनऽ
पिठिया से लटकत सोरिकवा जे लेइ रे बाइ
आजु चहें चुचवाह् ना टगवा जे सेइ मे दवरइ
काटइ बदेह् ना मुडयाह् जे जइ मे हाइ
आहो घरी दखत ना पोडवाह् जे बाइ मगरवा
उलटि धइलस ना दतवा रे बनाई

उहवां से उड़ल ना घोड़वा जे लेइये जालहं
जाइके घोड़ा गिरल गउरवा जे ओकरे घर
अब सुनह्‌ ना हलिया ओठियन कइ
घोड़वाह्‌ आयल गउरवांह्‌ गुजरे रात
ओहि दिन सुनह्‌ ना हलिया ओठियन कऽ
अव फेरि ओहू समइया कइ रे हाऽलऽ
आजु भाई गिरह लोरिकवा अंगने में
देखत वाटं वेटवना लोरिके कइ
उहे भाई देखइ सरूपवा अहीरे कऽ
दुनोह्‌ वाड़इ ना गोड़वा रे नथाई
ओहि दिन वोलल ना गिदड़ाह्‌ रे अहीरे कइ
दरियांह्‌ करइ ना वेड़वांह्‌ रे जवाव
आजु मोरे वाभिल ना सुनिबह्‌ बीर रे लोरिका
एठियन मनबह्‌ कहनवांह्‌ रे हमार
हमकेह कागर बिजुलिया के दे द धनुही
हमें देइ देब संवरूवाह्‌ दादाह्‌ तेग
हमहुँय मारब ना कोलवाह्‌ के बढ़ियाइ क
अब तोहार देबइ वयरवाह्‌ सध रे वाइ
ओही घरी सुनह्‌ ना हलिया जे ओठियन कऽ
गिदड़ाह्‌ ले लेह्‌ ना धनुहा वान रे जात
ओही घरी जाइकह ना लछिमी के आगे भयनऽ
ओहि सेनि देहलसि लछिमिया रे संगेरि
कोलवाह के कतरत ना खइलेसि गाइ रे कलनी
अब फेरि चललि गउरवा केनि रे गांव
जवने घड़ी गउरा ना अंगवाह्‌ बाह रे पड़ऽलऽ
कोलवाह्‌ टिटिकल सलरवाह्‌ मेनि रे वाइ
तब सेनि पड़ि ना नजरिया जे गिदरे कय
लड़िकाह्‌ देखत ना कोलवाह्‌ केनि रे वाइ
ओहि घरी खिचकह्‌ ना बान ना मारि दिहले
देवसी तनलेह्‌ ना तिरवा जे रहि रे जाइ
उहे भाई दागलि ना तिरवा जे अभोरिके कइ
कोलवाह्‌ गऽयल ना खयरे में देखऽ संकाइ
कोलवाह्‌ ठड़े ना ठाड़वाह्‌ गिरि रे गयनऽ
ओहि बीचेह्‌ झरिहवा मय रे दान
सुनह्‌ ना हलिया लोरिके कय

लोरिका के कहत आभोरिका लेइ रे बानऽ
ओही घरी बोलल गिदरवाह् अहीरे कइ
अहीराह् देखह् ना हलियाह् रे हवाली
आजु मोर देलेसि ना तिरया कोलवन के
लोरिका के बोलत आरामवा क वाइ रे बोल
आजु कहें बानिल ना सुनि लऽ बीर रे लोरिक
एठियन मनबह् कहनवाह् रे हमार
आजु भाई देखह् ना हलिया ओठियन कऽ
चलि केनि आपन बयरवा स हों साथी
तोहार भाई मरली मुदइया खेतवा पर
चलि केनि लेब बयरवा आपन रे काढी
ओहि घरी सुनह् ना हलिया जे आठियन कऽ
के फेरि ओहुय समइयाह् कइ रे हाल
अब कहें रेंगल मरदवा वा बीर र लारिका
अब फेरि लेलेह् पलकिया आ फन रे बाह
जवने घरी बइठि पलकिया मे वीर र गयनऽ
कहराह् लेइलेह् पलकिया रे उठाइ
जुवना घरी गयल ना उहयाह् र सिवनवा
जहवा पर मारल दवठिया जे बाडे रे कोल
ओहि घरी देखलसि ना अहीराह् बीर रे लोरिका
कोलवाह् लेइ लेद धनुहिया जे बाइ र तेज
उहे भाई सन मे परनवा जे ओनरे बाडई
अब भाई भइल लोरिकया के बट रे धार
अब कहें मुनबेह बेटयना जे मोर रे अमारिक
एठियन मनबेह कहनवाह रे हमार
हमरे ■ बिरहिया कडवा जे नाहि रे पवली
का कहि मरवेह जे देवगिया जे देख रे कोल
आजु भाई बोनल बेटयना जे सरमे कऽ -
बाबिल मनयह् कहनवाह् रे हमार
तुप भाई तनिरे धरतिया मे ठाड रे रहऽ
हम जात बाडिय ना कोनवन कइ रे पास
जवो घरी आगन देवसियाह् केनि रे पासद
धमवे मे हिलत ना तिरवा जे आपन रे चाइ
जयो घरी आपन ना तिरवा जे खीचि ये लेहलेन

अब देखु गिरल ना कोलवा बा भहरे राइ
ओही घरी उठल मरदवा वा वीर रे लोरिका
अब फेरि कटलेसि ना मथवा जे जड़ि रे हाय
आजु भाई मुदई बयरवा जे काढ़ि रे लीहले
आ फेरि होतइ जउतनवा जे देख रे बाइ
आजु भाई खालह् ना मऽलइया जे वीर रे लोरिका
ओ फेरि बानह् सरीरवा रे बलाइ
ओहि घरी देखह् ना हलिया जे लोरिके कइ
अब घोड़ होतइ बानइ ना तइ रे यार
आजु कहें दे भाई ना मेंटवा जे दुनो हथवां
आ फेरि जातइ पीपरवा जे बाइ रे पेड़
आ फेरि जातइ पीपरवा जे बाइ रे पेड़
ओहि घरी दुनोह् ना घूंचवा में दूध रे लेइ कऽ
चम्फाह डांकल अहीरवा जे पुनि रे बाइ
आजु भाई तन्निय सा दूधवा जे हिलि रे गयनऽ
लोरिके के छोटइ परनवा जे होइ रे जाइ
आजु कहें हो हो ना दइवा मोर नारायन
का बरम्हा लिखलह् ना मंझवाह् रे लिलार
आजु हमार हलुक सरीरवा जे होइ रे गइनऽ
कवहुं खालेह् ना उचवांह् गोड़ रे परिहंइ
आजु कहीं जाबइ ना मथवाह् रे डंडवाइ
आजु भाई निन्नाह् ना देसवा में उठि रे जइहंइ
का भाई गइहंइ कलउवाह् कइ रे लोऽगऽ
एतना जे कहत ना मरदवा जे बाइ रे लोरिक
ओहि जा बानेह् ना गउराह् केनि रे बीच

गउरा में लोरिक का अग्नि प्रवेश और मृत्यु

सुनह् ना हलिया लोरिके कइ
मनवा में उठल अहीरवाह् के सवेरा
उहो भाई लेहले मजुरवा रे बलाइ
दुअरा पर रालाह् ना देलेह् रे मराई
ना त केनि घुमिकेह् गड़बड़वा रे बतवले
आजु खनि देलेंह् जे गड़बड़वा अहीरे के
ओहि जा गउरांह् ना बिचवांह् रे दुआर
आजु भाई होइ गयल न गड़बड़वाह तइ रे यार

ओमह् करसिय गोइंठवाह् झोंकि रे गयनऽ
आ फेरि अम्माह् ना चेरियाह् ले बनाई
आ फेरि सकलाह् ना लेइयह् रे गिरावऽ
आ फेरि देनह् सबन्नवाह् सुलि रे थाइ
थाहनि ना चलति पिठवा कइ रे बानी
अहीरा के होतई समऽधिया के नहाऽन
आजु बहे होलाह् सकलवा दुअरा पर
जलसाह् होत या दुल्गवा के बस रे थान
दुल्गाह् धइली ना पिढवा दुलरे कऽ
सोकति थानी अभोरिवा थेनि रे थाहइ
ओहि घरी पिढवाह् खाली ना अहीरे कइ
उहे भाई देलेनि गजडया ल बनाई
जयने घरी पलकाह् ना भयल बाइ धवलवा
ओ फेरि पलका अगिनिया जे होइ रे जाइ
ओहि घरी घीवह् अहनिया जे बा ओपवले
अब घीव बनरल ना आरिया जे थाने र दंत
ओहि घरी झूदल ना अहीरयाह् लेइ रे ओठियन
अब फेरि बइठि पलकिया ज गयल रे बाइ
जयने रहल परनथा जे अहीरे कऽ
अऽ फेरि बोलत बानइ ना सीतऽ रे राम
जयने घडी घडलि ना अगियाह् लेइ ये बम्हल
अब धरमन्नह् जरतवा जे देग्र रे बाइ
ओही घरी बोलइ ना पचह् गाय रे घर
सत थोई बासह् गा मुखवा से सीता रे राम
अहीरा जलि के ना रखवा होइ ये गयनऽ
अपने दंह् गडरया जे गुज रे रात

— समाप्त —

भावार्थ

सुमिरन

भावार्थ—(१—३० पंक्तियो तक)

गायक कहते हैं—राम का गुण गान करो। तुमने राम का नाम लिया है। जब तक तुम्हारी मिट्टी मे प्राण रहे तुम ऐ भाई, राम को विस्मृत मत करो, गायक कहते हैं—नीचे तुम धरती माता को स्मरण कर लो। ऊपर भगवान का स्मरण करो। यहाँ डीह ठाकुर को स्मरण कर लो फिर स्मशान की मरी को याद करो। ऐ भाई, बाबा गोरैया को स्मरण कर लो जो पूजा मे चढाये हुए सूअर को खाते हैं। फिर तुम बाबा मघोता का स्मरण कर लो जो टोनहिन स्त्रियो के सहायक हैं। ऐ बाबा, तुम टोना करने वाली स्त्रिया का टोना रोको। ओझा की भौंह और ललाट को बाँध दो। डाइनो के दामादा को मार दो। ससार मे भिनभिनाने वाले सुग्गो की मृत्यु हो जाय। गायक कहते हैं—राम के द्वारा रामायण की रचना की गयी। लक्ष्मण ने काठ और पयाल का सृजन किया। सीताजी ने अपने नइहर (मायका) का सृजन किया जहाँ भगवान ने जाकर धनुष तोडा। गायक कहते हैं—ऐ कठेश्वरी, तुम मेरे कठ मे बैठो। ऐ गौरी और गणेश तुम लोग मेरे हृदय मे बैठो। माँ दुर्गा, मेरी जीभ के लिए तुम गहना हो। तुम मेरे भूले हुए शब्दो को जोड देना। हे देवी अगर एक भी हर्फ दब जायगा, तो तुम्हारा नाम नही लूंगा। सतयुग मे जितनी कीर्ति गायी गयी है उसे अब कलियुग मे लोग जोडकर गा रहे हैं। भगवती डीह के देवस्थान को जोड दो ताकि ऐ तुम्हारी शक्ति जान सकूँ।

मूल पाठ

भावार्थ—(१—१००) ## १. अगोरी—लोरिक का विवाह

अगोरी बारह पल्लियो की है। यहाँ तिरपन गलियाँ और बाजार हैं। अब वहाँ का हाल सुनिये। वहाँ के सूबे के मालिक मोलागत थे। उनकी सजी हुई थी और दरबार लगा हुआ था। उस समय विचार-विमर्श चल रहा था चुगुली करने वालो ने उन्हे समझाकर यह बात कही। हे राजा, हे महाराजा बात मानिये। आपकी जो एक-एक प्रजा है उसके बारे मे थाह लीजिए। अगोरी मे कोई आपके जोड-तोड का दिखाई तो नही पडता पर आप सबका अन्दाज ले लीजिए कि आपकी कौन सी प्रजा कैसी है? अब उस समय की ओर वहाँ की बात सुनिये।

भावार्थ

सुमिरन

भावार्थ—(१—३० पंक्तियों तक)

गायक कहते हैं—राम का गुण गान करो। तुमने राम का नाम लिया है। जब तक तुम्हारी मिट्टी मे प्राण रहे तुम ऐ भाई, राम को विस्मृत मत करो, गायक कहते हैं—नीचे तुम धरती माता को स्मरण कर लो। ऊपर भगवान का स्मरण करो। यहाँ डीह ठाकुर को स्मरण कर लो फिर स्मशान की मरी को याद करो। ऐ भाई, बाबा गोरैया को स्मरण कर लो जो पूजा मे चढ़ाये हुए सूअर को खाते हैं। फिर तुम बाबा अघोरा का स्मरण कर लो जो टोनहिन स्त्रियों के सहायक हैं। ऐ बाबा, तुम टोना करने वाली स्त्रियों का टोना रोको। ओझा की भौंह और ललाट को बांध दो। डाइनों के दामादों को मार दो। संसार में भिनभिनाने वाले सुग्गों की मृत्यु हो जाय। गायक कहते हैं—राम के द्वारा रामायण की रचना की गयी। लक्ष्मण ने काठ और पयाल का सृजन किया। सीताजी ने अपने नइहर (मायका) का सृजन किया जहाँ भगवान ने जाकर धनुष तोड़ा। गायक कहते हैं—ऐ कंठेश्वरी, तुम मेरे कंठ में बैठो। ऐ गौरी और गणेश तुम लोग मेरे हृदय मे बैठो। माँ दुर्गा, मेरी जीभ के लिए तुम गहना हो। तुम मेरे भूले हुए शब्दों को जोड़ देना। हे देवी अगर एक भी हर्फ़ दब जायगा, तो तुम्हारा नाम नहीं लूंगा। सतयुग मे जितनी कीर्ति गायी गयी है उसे अब कलियुग मे लोग जोड़कर गा रहे हैं। भगवती डीह के देवस्थान को जोड़ दो ताकि ऐ दुर्गा तुम्हारी शक्ति जान सकूँ।

मूल पाठ

भावार्थ—(१—१००) **१. अगोरी—लोरिक का विवाह**

अगोरी बारह पन्तियों की है। यहाँ तिरपन गलियां और बाजार सुशोभित हैं। अब वहाँ का हाल सुनिये। वहाँ के सूबे के मालिक मोलागत थे। उनकी चाँदनी सजी हुई थी और दरबार लगा हुआ था। उस समय विचार-विमर्श चल रहा था कि चुगुली करने वालों ने उन्हें समझाकर यह बात कही। हे राजा, हे महाराजा हमारी बात मानिये। आपकी जो एक-एक प्रजा है उसके बारे में थाह लीजिए। अगोरी में कोई आपके जोड़-तोड़ का दिखाई तो नहीं पड़ता पर आप उसका अन्दाज से लीजिए कि आपकी कौन सी प्रजा कैसी है? अब उस समय की

मन्त्री ने राजा के मन में यह बात बैठा दी। प्रातःकाल हुआ। पौ फटने लगी। पूर्व दिशा में कौवों ने शोर मचाया। मोलागत उठ खड़े हुए। शौच के लिए गये। हाथ मुँह धोकर मुँह में मगही पान के पत्ते दबाये। पान कूचते हुए सोने की छड़ी उठायी और पैर में सोने का खड़ाऊँ डाला, किले की सीढ़ियों से उतरकर शहर में गये। महाजन साहु ने उन्हें देखा तो वह काली कुर्सी लेकर दौड़े और झुककर प्रणाम किया। राजा ने आशीर्वाद दिया—"ऐ मेरी प्रजा, तुम अक्षय रहो, अमर रहो। लाख साल जीयो। जैसे गंगा का पानी बढ़ता है उसी प्रकार तुम्हारी आयु बढ़े।" साहु ने राजा का स्वागत किया। घर के अन्दर जाकर दूध और चीनी ली और शर्वत बना लिया फिर लोटे में पानी और गिलास लेकर राजा (सूबा) के सामने आ गये। राजा ने उठ कर पानी पीया फिर साहु का द्वार छोड़कर अगोरी की गलियों में घूमने लगे। उन्होंने बावन गलियों की परिक्रमा की। कोई प्रजा पहचान में नहीं आयी। जिस समय राजा तिरपनवें गली में प्रविष्ट हुए वह अहीर के दरबार में गये। महर आँगन में कुर्सी पर बैठे हुए थे उन्होंने राजा की ओर नहीं देखा न राजा ने ही जबान खोली। वह एक पहर तक खड़े रहे। उन्होंने अपने मन को गुलामहीन नहीं बनाया। क्या मैं कुत्ता हूँ जो दरवाजे पर आ गया हूँ! मेरी प्रजा बैठी रह गयी। शायद शर्म के मारे वह नहीं उठ रहा है (ऐसा सोचकर) वे चार पग पीछे हट गये। अलग होकर खंखारा तब महर कुर्सी से उठे। कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा! तुमने मेरे ललाट में क्या लिखा है? राजा प्रजा का चूल्हा देखें! मैं इसको किस मुल्क में खदेड़ूँ—(महर ने कहा)। राजा मोलागत ने यह बात सुनी। फिर वहाँ से चल पड़े। चुपचाप चाँदनी पर चले गये। पैर और सिर तक चद्दर तान कर सो गये। राजा सात घड़ी के अन्दर भोजन किया करते थे आज दोपहर दिन चढ़ गया है। वह मान नहीं रहे हैं और न तो पलक उठा कर देख रहे हैं। उस समय कुहराम मच गया। राजा मोलागत उठे और कचहरी में जाकर बैठ गये। तब मंत्री ने उनसे कहा—राजा, आप मेरी बात मानिये। आप ~ सोये हैं? (क्यों निश्चिन्त हैं?) आप आज जल्दी महर को बुलवाइये और ~र्न पर बैठा दीजिए। उसे कुश का आसन दीजिए। स्वयं कुर्सी पर बैठिए तथा उससे कौड़ी (जुवा) खेलिये। उसमें उसके बल का अन्दाज लीजिए। मन्त्री ने ऐसा मत उनके मन में स्थिर कर दिया। यह बात उनके मन में बैठ गयी। उसी समय तुर्की और सिपाही भेजे गये।

भावार्थ—(१०१—२००)

वे महर के घर दौड़ कर गये। तुर्की और सिपाही धीरे-धीरे चलकर महर के द्वार पर उपस्थित हुए। महर अपने आँगन में खड़े थे। उनसे सिपाहियों ने कहा—ऐ वीर अहीर, सुनिये, राजा ने आपको बुलाया है। अहीर ने (जबान से) कहा—मैं चाँदनी पर नहीं जाऊँगा। जो मेरे मन में है सो है। तब सिपाहियों ने उनका हाथ-पैर पकड़ लिया और धीरे-धीरे उन्हें राजा की चाँदनी की ओर ले चले। अगोरी के लोग इसे देख रहे थे। महाजन के कहने पर लोग भी राजा के यहाँ गये। अहीर ने हाथ जोड़ कर पूछा

महराज मैंने क्या कसूर किया है कि आपने ऐसी आज्ञा दी है ? तब राजा मोलागत ने कहा—तुम मेरी बात सुनो। तुमने अपने दरवाजे पर बोलन में गर्मी क्यों दिखायी ? वह गर्मी जरा अब दिखाओ, अपने धन और पूजी (साठ) की गर्मी से तुमने अपशब्द कहे। अपने सोने और द्रव्य की गर्मी से तुमने बातें बनाकर कही। तुमने देहाभिमान के जोर में चुनौती दी। तुम मेरे द्वार पर बैठो और हम पासा खेलें। राम जिसको देगा उसको देगा और झगड़ा क्षण में तय हो जायगा। अहीर कुश के आसन (साथरी) पर बैठा, राजा कुर्सी पर बैठा। महर (अहीर) ने हाथ में कौड़ियाँ ली और छः दाने फेंके। उसने राजा के सारे अन्न, गेहूँ-गोजई आदि जीत लिये। दूसरी बार अगोरी का आधा हिस्सा जीत लिया। तीसरी कौड़ी में जिला जीत लिया। पाँचवी कौड़ी में हाथी, घोड़े, घुड़साल सब कुछ जीत लिये। छठी कौड़ी म नौकर चाकर पर विजय पाकर अपना हुक्म जारी कर दिया तथा राजा को कान पकड़ कर उसने कुर्सी से उतार दिया। राजा मोलागत अब रोने लगे। उनकी फौजें विकल हो उठी। राजा को दुख हुआ। कहा—गलती मेरी है। मैंने जबर्दस्ती प्रजा को बुलवाया। उसने मेरा धन जीत लिया तब कान पकड़ कर मुझे कुर्सी से उतार दिया। फिर उसने अपना हुक्म चलाया—'धोती पहना कर राजा को अगोरी के पूर्व भेज दो'। सिपाहियों ने एक क्षण में राजा को (नई) धोती पहना दी। वह रोते हुए राजदरबार की चाँदनी पर से उतर गया। आगे जिजुली नदी थी। राजा उसको पार करते ही डगमगाने लगा। इधर ब्रह्मा का आसन भी डगमगाने लगा। उन्होंने राजा को वरदान दिया था। वे ब्राह्मण का रूप धारण कर रास्ते पर खड़े हो गये। नम्रतापूर्वक बोले—राजा तुम कहाँ चले जा रहे हो ? तुम्हारे ऊपर कौन सी मुसीबत आ पड़ी है कि रोते हुए अगोरी के उस पार जा रहे हो। सुवा ने कहा—तुम्हारी जाति ब्राह्मण की है। तुम जाकर दरवाजे पर भीख मांगो। तुम मेरे रोने का मतलब क्या जानोगे ? तुम अपना रास्ता लो। पर ब्रह्मा ने हठ किया। राजा का हाथ पकड़ कर कहा—तुम मेरी बात मानो। अपना अभिप्राय बतलाओ।

भावार्थ—(२०१—३००)

> गायक कहता है—मैं रामायण कह रहा था। मेरे हृदय में भूल पड़ गई (मुझसे भूल हो गयी)। ऐ मेरे मित्रो और समवयस्क लोगो मुझे भूलिये नहीं। ऐ माँ दुर्गा, आप मुझे विस्मृत मत कीजिए।

मैं तुम्हें उपाय बतलाऊँगा। अब वहाँ की कथा सुनिये। ब्रह्मा ने राजा ने कहा—ऐ मेरे ब्राह्मण देवता, इसमें अहीर का तनिक भी अपराध नहीं है। (ब्रह्मा ने राजा को सुझाव दिया) तुम अगोरी लौट जाओ और राजा की चाँदनी के बीच चढ़ जाओ। जाकर हाथ जोड़ कर बोलो—ऐ सुवा ! मेरी बात मानो, अब तो अगोरी मेरी आँख से दूर हो रही है। एक हाथ जमकर पासा और खेल लें। राजा ने वैसा ही किया। महर अहीर अहंकार में था। उसने गर्व से कहा—'ऐ राजा मोलागत, एक दो बार की क्या गिनती है

तुम पचास हाथ खेल लो। मोलागत कुश की चटाई पर बैठ गये और अहीर कुर्सी पर। मोलागत ने गांव और घाट जीत लिये। गेहूँ और गोजई का भण्डार जीत लिया। दूसरी पाली में अगोरी की बस्ती जीत ली। फिर किला जीत लिया। चौथी कौड़ी में हाथी और घोड़े जीत लिये। पाँचवीं कौड़ी में नौकर-चाकर और अगोरी का राज्य जीत लिया; कान पकड़ कर महर (अहीर) को कुर्सी से उतार दिया। मोलागत ने कहा—ऐ महर अहीर! दांव पर धन और पूँजी मत रखो। मैं तुम्हारी पत्नी की कोख दांव पर रखवाऊँगा। जितनी कन्याएं पैदा होंगी उनको लेकर मैं किले में रनिवास-भोग करूँगा, जितने बेटे पैदा होंगे वे मेरे घोड़ों के सईस होंगे। अहीर चाँदनी पर रो रहे हैं। वह कहते हैं—ऐ सूबा मोलागत मेरी बात सुन लीजिए—यदि सोना या द्रव्य के लिए आपको भूख हो तो मैं उसे किले में भरवा दूँ। यदि आप गाय और भैंसों के भूखे हों तो मेरी लक्ष्मी को दांव पर रखवा लीजिए। मेरी विवाहिता की कोख को छोड़ दीजिए। यदि कोख वंधक हो जायगी तो मेरा जीवन व्यर्थ हो जायगा। सूबा मोलागत ने उस वक्त ताली बजा दी। कचहरी के लोग हँस पड़े। महर दरबार से घर चल दिये। प्रातःकाल था। उन्होंने आँगन में प्रवेश किया। महरिन धीरे-धीरे आंगन साफ कर रही थीं। महर कुर्सी पर बैठ गये। महरिन ने उनसे पूछा—सिपाही आपको पकड़ कर ले गये। किले में कौन सी याचना तुमसे की गयी। महर ने कहा—राजा ने न तो मुझे मारा और न गाली दी और न 'रे' और 'तुम, कहकर अपमानित किया। उन्होंने कायदे से मेरे साथ पासा और जुआ खेला। मैंने उनका सारा सामान जीत लिया, अपना हुक्म चला दिया। वह पूर्व दिशा में चल पड़े। बाद में उन्होंने मुझे ग्रह में डाल दिया। तुम्हारी कोख वंधक हो गयी है। महरिन महर की ओर झाड़ू लेकर दौड़ीं। कुर्सी से उठ कर महर भागे और पहाड़ पर चढ़ गये। अब उस समय का हाल सुनिये। बारह वर्ष व्यतीत हो गये।

भावार्थ—(३०१—५००)

तेरहवां वर्ष और कुछ महीने पूरे हुए। इस समय की अवधि में महरिन को छै बेटियाँ पैदा हुई। बारी-बारी से राजा सबको किले में ले गये। इधर का हाल सुनिये। भादों का महीना चढ़ गया था। आधी रात निकल गयी थी जिस समय कृष्ण-कन्हैया (लोरिक) का जन्म हो रहा है उस समय पहर भर तक कड़क की आवाज हो रही है। बुढ़िया खोइलनि को गर्भ था। बोहा में गोशाले में अग्नि और काठ का ढेर लगा कर उस पर उपले गाँज दिये गये थे। वहाँ बिजली कड़क रही थी। आँचल फैला कर बुढ़िया ने ब्रह्मा का ध्यान किया। लोरिक उसी समय धरती पर गिरे। बाद में सुबच्चन गिरे जिसको बिरमी कोलिन वहाँ से पीपरी ले भागी।

अब महर का हाल सुनिये। उसकी पत्नी महरिन को अगोरी में सातवां गर्भ था। आठवें माह के बाद नौवां माह चढ़ गया था। इधर बरसात का मौसम और भादौं शुरू हो गया था। जिस समय कृष्ण कन्हैया (लोरिक) का जन्म हो रहा है

उसी समय मजरी का अगोरी मे जन्म हो रहा है। पूर्व मे पूर्वा हवा चल रही है पश्चिम मे तेज पछुवा झकझोर रही है। उत्तर मे उत्तरी वायु मनक रही है। दक्षिण मे मूसलाधार पानी बरस रहा है। सारे अगोरी मे उस समय पानी बरस रहा है। महर के घर मे सोना बरस रहा है। ऐसी घडी मे मजरी का जन्म हुआ। पुत्री धरती पर गिरी। भीतर से महरिन ने सुवचन को आवाज लगायी। सुवचन भाई आँगन मे आकर खडे हो गये। महरिन ने कहा—ऐ सुवचन, तुम मेरी बात मानो। तुम चमारिनो के दरबार मे जाओ और नोनवा को बुला लाओ। तुम्हें भांजी पैदा हुई है। मल्ल सुवच्चन चमार के घर चले। द्वार पर जाकर नोना चमाइन को पुकारा। चमारिन घर के अन्दर से ही आवाज लगा रही है। वह अभिमानी है। कहती है—कौन द्वार पर आया है जो मन्द आवाज मे बोल रहा है। सुवच्चन ने कहा—नोना, मेरी बात सुनो। मेरे घर भैने पैदा हुई है। तुम्हारी पुकार हुई है चलकर 'नार बेवार' ठीक कर दो और अपनी मनोकामना पूर्ण कर लो। नोनवा कुछ बोल नही रही है वह चार पग अलग हट जाती है। कहती है—भइया सुवच्चन, तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारी बहन की कोख मे छै बेटियाँ पैदा हुई। सभी भाग्य की हीन थी। इस बार भाग्यशालिनी पैदा हुई है। बिना दीपक और बत्ती के आज प्रसूति गृह (सौरी) मे प्रकाश हो रहा है। सारे अगोरी मे पानी बरस रहा है तथा महर के घर मे सोना बरस रहा है। यह अन्तिम पुत्री है। इसका नक्षत्र जल रहा है। आज बिना डोली पर चढे मैं नाल काटने नही जाऊँगी। सुवच्चन ने यह बात सुनी और महर के घर वापस आ गये। आँगन में आकर कहा—बहिन, मेरी बात सुनिये। नोना ने बड़ा हठ किया है, गर्व-युक्त बात कही है कि बिना डांडी और डोली के मैं नाल छीनने नही जाऊँगी। भीतर से महरिन ने कहा—डांडी की कौन सी बात है? जल्दी नया बाँस कटवाओ। डोली बनवाकर उस पर पर्दा डलवा दो ताकि चमारिन नाल छीनने आ जाय। कहार बुलवाये गये डोली पर पर्दा डाल दिया गया। जाकर डोली नोनवा चमारिन के द्वार पर रुकी। अब उस समय का हाल सुनिये। नानवा चमारिन ने सुवच्चन से कहा—इस डोली, खटोली और मञ्जूषा को जल्दी मेरे दरवाजे से हटाओ। मैं 'नार बेवार' नही काटूँगी। ऐ सुवच्चन तुम मेरी बात मानो। जो महरिन की पीतल की पालकी है और जिसमें बैठने का आसन (मोढ़ा) बनाया गया है और जिसमे बत्तीस कहार लगते हैं उस पर पचरगा पर्दा डालकर ले आओ। तब चलकर मैं नार बेवार छीनूँगी। सुवच्चन वापस आ गये और आँगन मे खडे हो गये। कहा—बहिन, चमारिन बडी हठी है। वह तुम्हारी पीतल की वह डोली चाहती है जिसमे बैठने के दो आसन बने हैं और जिसमें बत्तीस कहार लगते हैं। महरिन ने डोली ले जाने की आज्ञा दे दी। उस पर पचरगा पर्दा डाल दिया गया। बत्तीस कहार लग गये। पालकी चमार के घर की ओर चली। भोर हो चुका था। पौ फट रही थी। प्रात काल मोलागत उठकर अपनी चांदनी पर गये। वह हाथ मुँह धो रहे थे तब तक जाती हुई पालकी की चमक दिखाई पडी। राजा मोलागत ने मुशी और दीवान को बुलाया। कहा—

जाने महर के घर क्या पैदा हुआ है। आज नोना का बड़ा आदर हो रहा है। छै लड़कियाँ पैदा हुई कभी इस प्रकार पालकी नहीं गयी। कदाचित् इस बार लड़का पैदा हुआ है। नोना के घर पालकी जा रही है। सिपाहियों से मोलागत ने कहा—पूरी-पूरी पहरेदारी करो। बारह दिनों में जब बरही हो जाय और जब नोनवा डांड़ी सहित इधर से लौटे तो उसे हमारी चांदनी पर लाओ। उससे पूरा प्रमाण ले लूंगा तब आगे का उपाय करूँगा। जब डाँड़ी महर के दरवाजे से आँगन में पहुँची तब नोनवा ने कहा—महरिन यह तुम्हारी अन्तिम लड़की पैदा हुई है। मेरा नेग बहुत बढ़ गया है। सूप भर कर सोना दो। मैं उस पर पैर रखूंगी, तब प्रसूति-गृह में आऊँगी और नार-बेवार काटूँगी। सोना भर कर सूप दिया गया। नोनवा ने उसमें दहिना पैर रखा। सूप भर सोना लेकर उसने पालकी में रख दिया फिर वह सौरी में गयी। मंजरी का रूप देखा।

भावार्थ—(५०१—७००)

बिना दीपक और बत्ती के वहाँ प्रकाश हो रहा था। बिना दीपक और बाती के सौरी (प्रसूतिगृह) में प्रकाश हो रहा था। नोनवा जा कर मंजरी का रूप देख रही है। उसने अपने मुख से यह बात कही—"ऐ भाई, जब आप सोने का हंसुवा बनवायेंगे तभी, मैं 'नार-बेवार' छीनूंगी। तब महर ने सोने का हंसुवा पिटवाया और उसे लाकर नोना के हाथों में दे दिया। नोना उसे लेकर नार-बेवार काटने चली। जिस समय उसने मंजरी का चेहरा देखा और देखा कि उससे सारा महल प्रकाशित हो रहा है तो उसे चिन्ता हुई। बारह दिन व्यतीत हुए। छठी और बरही के उत्सव सम्पन्न हुए। नोनवा को विदाई दी गयी। सोने की किनारी वाली धोती तथा सोने की करधनी बनवा कर उसे दिया गया। महरी ने नोनवा का श्रृंगार किया। महरिन की डोली तैयार हुई और उसमें उन्होंने नोनवा को बैठाया। फिर पालकी उठाकर नोनवा के घर के रास्ते चली। अगोरी के रास्ते जब पालकी चल रही थी तब तक सूबा मोलागत के सिपाही छूटे और उन्होंने जाकर पालकी रोक ली। उन्होंने कहा—नोना राजा का उल्टा हुक्म हुआ है। वह तुमसे पूछताछ करेंगे। पालकी वहाँ से चली और (राज दरबार की) चांदनी पर पहुँची। नोनवा ने पंचरंग पर्दा हटा दिया तथा पालकी के दरवाजे से झांकने लगी। सूबा मोलागत कुर्सी पर बैठे हुए थे। उन्होंने नोनवा को देखा—वह दूज के चांद की भाँति उदित हो रही थी। उसने राजा की ओर गुरेर कर देखा। राजा की आँख उससे लड़ गयी। चमारिन के मुख पर मुस्कान छा गयी। राजा के दांतों की बतीसी चमक उठी। वे मूर्छित हो उठे तथा कुर्सी से भहरा कर गिर पड़े। नम्रता-पूर्वक बोले—मैंने सूर्ती और सोपारी खाली फिर ऊपर से जर्दा और तुलाव खा लिया मुझे नशा हो गया, मैं कुर्सी से गिर पड़ा। इतना कहते हुए सूबा मोलागत ने अपना शरीर संतुलित कर लिया। नोनवा चमारिन से वह नम्रतापूर्वक बोले। "महर की छै बेटियाँ मेरे किले में रनिवास का भोग कर रही हैं। आज महर के घर में क्या

पैदा हुआ है कि तुम्हारा इतना बड़ा आदर हुआ है ?" नोनवा चमारिन ने तत्काल उत्तर दिया—ऐ राजा जो छै बेटियाँ उत्पन्न हुई थी वे भाग्य की हीन थी। इस बार यह अन्तिम लड़की पैदा हुई है। उसका नाम दावन मजरी है। राजा ने हुक्म दिया। पालकी फिर महर के यहाँ पहुँची। वहाँ मजरी हर घड़ी जौ के भाप से बढ़ रही थी। उसको देखते ही बनता है जैसे दूज का चाँद ऊगता आ रहा हो। मजरी तीन महीने की हो गयी। वह 'पट हेरिया' तथा मूंज की बनी हुई छोटी और बड़ी टोकरियों (मुरई, मौनी) से खेलने लगी। एक ब्राह्मण की बेटी थी, एक बनिया की बेटी थी, एक कायस्थ की बेटी थी। चार पाँच लड़कियाँ गले से गला मिला कर खेलती थी। इस प्रकार खेलते हुए कुछ दिन बीत गये कि उनमें आपस में झगड़ा हो गया। कायस्थ की लड़की उससे झगड़ पड़ी, उसे 'रे' 'तू' कह कर अपमानित करने लगी। मजरी से यह बर्दाश्त नही हुआ। उनमे खूब जम कर लड़ाई हुई। महर की बेटी तेज तर्रार थी। उसका नाम दावन मजरी था। उसने ऐसा दाव मारा कि कायस्थ की बेटी भहरा कर गिर पड़ी जब वह उठी और सतुलन समाला तब अपशब्द निकालने लगी—महर का गड़ा हुआ द्रव्य मिट्टी मे मिल जाय, गाय-भैंस 'तिसहा' और 'मनार' की बीमारी से ग्रस्त हो जायें। बेटी इतनी बड़ी हो गयी इस बन्ध्या (बहिला) का किसी ने विवाह नही किया। 'ऐ मजरी, मैं अपनी माँग का सिन्दूर तुम्हारे ललाट पर रगड़ूँगी।' अगोरी बारह पल्लियों की है उसमें तिरपन बाजार और गलियाँ सुसज्जित हैं। कायस्थ की लड़की ने मजरी से कहा—तुम इस अगोरी में मेरी सौत लगोगी। महर के घर से हटा कर वह मजरी को राजा के चाँदनी पर लेकर चली गयी। घर का कोई व्यक्ति इसको जान नही पाया। अब इधर का हाल सुनिये। सात घड़ी दिन चढ़ते ही मजरी खाती थी आज दोपहर का समय हो गया है। महरिन दौड़ दौड़ कर मजरी को खोज रही हैं तथा फूट फूट कर रो रही हैं। मेरी बेटी को क्या हो गया ? राजा ने मेरी आँख जीत ली थी। शायद रास्ते पर या घाट पर कहीं मेरी लड़की उनको मिल गयी और उसे लेकर वह रनिवास भोग कर रहे हैं। महर की पत्नी के साथ साथ कुल और पड़ोस भी रो रहा है। महरिन कह रही है कि मैंने अपनी बेटी को बचा कर रखा था वह आज अगोरी में गायब हो गयी। उन्होंने सुवच्चन से कहा—भैया मेरी बात सुनो। मैंने नदी-नाले में खोज की। कहीं मजरी का पता ठिकाना नही है। सूबा ने आँख जीत ली थी। लगता है—कहीं रास्ते या मैदान में वह मेरी बेटी को पा गये और जबर्दस्ती उसका अपने किले में ले जा कर रनिवास भोग रहे हैं। तब मन्त सुवच्चन ने कहा—ऐ बहिन सुनो। अगोरी बारह पल्लियों की है। सभी घरों में खोजो। फिर केवल नहीं सोन है। कहीं लड़की उसमें डूब या धंस तो नही गयी। मेरी भाँजी कहाँ गयी ? तीन रात तीन दिन महर के घर में अशान्ति मची रही। बिना अन्न और पानी के घर के लोग मर रहे हैं। मामा सुवच्चन भी रो रहे हैं। हाथ में रुमाल लेकर वह आँख पोंछ रहे हैं। वह महर की चाँदनी पर चढ़ गये। देखा भीतर

भावार्थ – (८०१ –१२००)

अब वहाँ का हाल सुनिये। गउरा के अहीर राजा सहदेव थे। उनके बेटे महदेव थे। जिस समय अगोरी से तिलक गउरा सहदेव महदेव के द्वार पर पहुँचा वहाँ चनैनी स्त्री वर्तमान थी। राजा सहदेव की सोरह सौ पनिहारिनें थीं। आगे-आगे ये पनिहारिनें जा रहीं थीं, उनके बीच में (चन्ना) चंदा चली जा रही थी। उसने जब तिलक ले जाने वालों को देखा तो वह नम्रता पूर्वक बोल उठी। ऐ दूर देश से आने वाले भाइयों, मेरी बात सुनिये। आप लोगों का वतन (वास स्थान) कहाँ है ? गोत्र क्या है ? आपका उद्देश्य क्या है ? आपने कहाँ के लिये चढ़ाई की है ? आप लोग लोरिक का घर पूछ रहे हैं। वे मेरे (पीठ के) भाई हैं। चलिए मैं उनका घर दिखा दूँ। वेश्या चनैना आगे-आगे जा रही थी। पीछे ये तीन मूर्तियाँ थीं। जिस वक्त वे द्वार की ओर जा रहे थे चनवा घूमकर खिड़की से घर के अन्दर चली गयी। भइया महदेव भीतर बैठे हुए थे। अब वहाँ का हाल देखिये। चनवा ने तेल और फूलेल से उनके शरीर का मर्दन किया। सोने के गहनों से उन्हें अलंकृत कर दिया फिर अद्धी और तंजेब के कपड़े उन्हें पहना दिये। कंधे पर रेशमी रुमाल रख कर उन्हें दरवाजे पर भेज दिया। जब नाऊ और ब्राह्मण को उन्होंने देखा तो झुक कर सिर नवाया। नाऊ ने मुँह खोल कर उन्हें आशीर्वाद दिया—'भइया तुम अक्षय रहो, अमर रहो। लाख वर्ष तक जीया। फिर पंडित मोहनिया ने उन्हें देखा। वह वहीं क्रोध की आग में जल उठे। अगोरी में जो बांस गाड़ा गया है क्या उसके लिए यही वीर है ? क्या यही बांस को छाती से लगायेगा, चुनौती स्वीकार करेगा। महर की लड़की से विवाह करेगा ! तुम हाथ मे डंडा उठाओ और जाकर सूवरों की रखवाली करो। पंडित मोहनिया न उसे अपमानित किया। फिर नाऊ और ब्राह्मण वहाँ से चले। इस गाँव गउरा पर धब्बा लगा हुआ है। यहाँ कोयला और अंगार चू रहा है। यहाँ बहुत से चोर और ठग हैं। हमारे तिलक में वे ठगी कर रहे हैं। आगे आदमी खड़े थे। पंडित ने उनसे लोरिक का घर पूछा—उन्होंने बताया—सामने लोरिक का घर दिखाई पड़ रहा है। पीपल में वहाँ झण्डा फहरा रहा है। उनका पीतल का छोटा-सा चोगा है। बायीं ओर खड्‌ग (खरसार) है। दाहिनी ओर दुर्गा का स्थान है। इतनी सारी बातें लोग बता रहे हैं। तीनों मूर्तियाँ आगे बढ़ती जा रही हैं। वे लोरिक के घर पहुँच गये। द्वार पर वे 'लोरिक' 'लोरिक' पुकारने लगे। वहाँ एक वृद्ध इधर-उधर घूम रहे थे। तब उस वृद्ध ने कहा—'हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया है ? उन्होंने पूछा, अरे भाई लोगों का वतन कहाँ है ? आपकी बुनियाद क्या है ? ऐ दूर देश के निवासी, आप लोगों ने कहाँ चढ़ाई की है। आप लोग 'लोरिक' लोरिक' क्यों पुकार रहे हैं ? उस समय मोहनियाँ पंडित बोले। हम लोग अगोरी के निवासी है। हम लोगों ने गउरा की चढ़ाई की है। तुम्हारे प्रिय पुत्र के लिए हम तिलक लाये हैं। अब वहाँ का हाल सुनिये। कठईत बोले—आप लोग मेरे द्वार पर बैठिये। जलपान कीजिए। मैं आप लोगों को लोरिक को

दिया दूँगा। उस वक्त नाऊ और
पीयेंगे। गउरा में बहुत से ठग और चोर हैं।
हमारा मन नहीं मानता। बूढ़े
वह दरवाजे पर आकर खड़ा हो
अखाड़े में भरा वेग गया है।
मेरे बेटे के शरीर में तेल मर्दन
प्याली उठा ली उसमें तेल भरकर
उस पर पड़ी। वह दोनों तेल
तुमने मेरे मस्तक में क्या
नहीं दिखाई पड़ा। घर घर
आ रहा है? लोरिक
बात बतायी। काका
पर तिलक आया है। नाऊ
कर दिया। अहीर का
हो गया है। उसका
की पिटाई कर दूँगा।
उस पर तुमने तेल चुपड़ा
पर दूर देश के रहने
फिर विवाह का
जिसका गरज होगा
बात होकर पूछा
के आँगन में आकर
बाहर निकला
दे दिया। जैसा
पंडित के आगे
लोरिक तुम
पाता करता है
ने उत्तर दिया—
हैं। मेरे ज्येष्ठ
तब पाटे
दोहाया।

के पास
मारिक
मेरे

। ह
तुम
क्या
गया।
उनको
दिया।
साथ
। सबको
प्रकार का
उसकी पगड़ी
लगता था कि
। उसी क्षण
दिशा की ओर

यहाँ से निकली
। बंधु पूछ जायेंगे।
लौट और हमारे घर
। सहिया ने राजा
में चले जाइए। जो
दे दीजिए फिर हाथ जोड़
बारात को सीधे निकल
गयी तथा दरवाजे पर
हो गयी। फिर गउरा से
दौड़ते रहे। यहीं उन्होंने
पहुँच गयी। वहाँ खुला
बाहर निकलकर खड़े
ने उनसे कहा कि
सो गयी।
। अद्भुत
। उस
वह

टिके हुए हैं। वृद्ध कठईत ने संवरू से कहा—बेटा संवरुवा, तुम लोग मेरे दो बेटे हो। क्या तुम दोनों का हम एक साथ विवाह कर दें। एक ही खर्चे में दोनों शादियाँ निपट जायेंगी। तब धर्मी मल्ल संवरू ने समझा कर कहा—ऐ पिता, अभी मैं अपनी शादी नहीं करूँगा। जब तक लक्ष्मी मुझे हुक्म नहीं देंगी, तब तक विवाह का कार्य नहीं होगा। संवरू का यही प्रण है। उन्होंने बात दुहराकर कहा—अगोरी से जो तिलक आया है वह मेरे प्रिय लोरिक को चढ़वा दिया जाय। चनवा का तिलक लौटवा दिया जाय। वह तिलक सहदेव के दरबार में वापस चला जाय। यदि हम गाँव में विवाह करेंगे तो रात दिन झगड़ा बना रहेगा। किसी समय कुछ ऊँचा-नीचा हो जाय तो सेल्हिया हमारा द्वार रौंदना शुरू कर देगी। उस वक्त मौत हो जायगी। ऐ पिता, आप मेरी इतनी बात मानिए।

सेल्हिया का तिलक लौटा दिया गया। अगोरी का तिलक स्वीकार कर लिया गया। मल्ल सांवर ने कहा—काका अभी भइया लोरिक की शादी अगोरी में कर दो। दिन और स्थान देखा जाने लगा। पंडित पत्रा के लेख अलग अलग करके देखने लगे। शुक्रवार का दिन अच्छा था। यात्रा के लिए उस दिन शुभ मुहूर्त था। दक्षिण दिशा में मुल्क से प्रस्थान होगा। मंगल को शादी होगी। देश धन्य-धन्य हो जायगा। मुहूर्त पंडित ने सुना दिया। लोरिक ने बारह बैलों पर बाजार से सोपारी लदवा ली, फिर घर वापस आया। बैल खोल दिये गये। वे बोहा में चले गये। फिर लोरिक ने छक कर भोजन किया। चौबीस प्रकार के व्यंजन थे। उसने सुपारी से सारे अगोरी में निमन्त्रण बांटना शुरू किया। गउरा बारह पल्लियों का है। बाजार कस कर लगा हुआ है। लोरिक वहाँ सबको निमन्त्रण बांट रहे हैं। शुक्रवार को लोरिक का तिलक होगा, मंगलवार को बारात चलेगी।

अब उस दिन, उस समय का हाल सुनिये। प्रातः काल पौ फटने लगी। पूर्व दिशा में कौवे शोर मचाने लगे। उसी समय बूढ़े कठईत जाग गये। उन्होंने द्वार पर जाजिम गिरवा दिया। झंपू गैस तैयार कर लिया गया। धीरे-धीरे आमंत्रित लोग आने लगे। अहीर के द्वार पर जलसा शुरू हो गया। नाच होने लगा। नाचने वाले भौंह चलाने लगे, चुटकियों पर ताल देने लगे। लोरिक का तिलक सम्पन्न हो गया। थान, पगड़ी, सोना, करधनी, पिटारा, नारियल तिलक में चढ़ाया गया। (मंजरी के) पत्र में लिखा था तिलक के साथ ही बारात अगोरी आ जाय। गउरा में बारात सज कर दरवाजे पर खड़ी थी कि राजा सहदेव अपने घर से उठे। डांटते हुए तथा 'रे' और 'तू' की अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करते हुए दौड़े। कहा—गउरा की मेरी प्रजा सुने। लोरिक की बारात में आप लोग न जाइये। जो बारात में जायगा उसके बाल-बच्चों को मैं कोल्हू में पेरवा दूँगा। इतना सुनते ही गउरा की प्रजा कांप गयी। कोई पानी के बहाने घर से भगा। कोई ओढ़ना के बहाने बाहर चला गया। कोई दिशा-मैदान होने के बहाने वहाँ से चला। बाजा बजाने वाले बच रहे। गुरु अजई बच रहे तथा धर्मी भाई सांवर बच रहे। बूढ़े कठईत भी वहाँ थे।

भावार्थ –(१२०१—१५००)

अब वहाँ का हाल सुनिये। प्रिय लोरिक वहाँ रोने लगे। कहने लगे हे देव ! हे नारायण ! हे ब्रह्मा ! तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया। शादी विवाह का तुमने संयोग जुटाया (छप्पर फाड़ा)। यह रास्ते में अब क्या हो रहा है ! यह पहले ही क्यों विघ्न हो रहा है ? अभी तो दूर देश जाना है। यह पहले ही क्यों गड़बड़ शुरू हो गया। मैं बताने में असमर्थ हूँ। उस दिन बूढ़े कठईत ने कहा —बेटा लोरिक सुनो। तुम पालकी में शान्तिपूर्वक बैठे रहो और बूढ़े का पुरुषत्व देखो। उन्होंने हाथ में डंडा ले लिया। फिर गायों के रहने की जगह पहुँच गये। वहाँ जाकर तीन सौ साठ चरवाहों को साथ में ले लिया। सबको बाजार ले गये और उनके लिए सामान खरीदने लगे। सबको एक ही प्रकार की वर्दी (पोशाक) तथा कुल्हाड़ी खरीदी गयी। एक ही प्रकार का उनका पतलाके (पतलून) था। एक ही प्रकार के जूते उनके पैर में थे। उनकी पगड़ी भी एक ही प्रकार की थी। जब सभी पहन ओढ़कर तैयार हुए तो ऐसा लगता था कि तैलंगाना के सिपाहियों का गोल जा रहा है। लोरिक की पालकी उठी। उसी क्षण प्रस्थान हुआ। लोरिक जोर-शोर से बाजा बजवा रहा है। दक्षिण दिशा की ओर सभी लोग चले जा रहे हैं।

तब रानी मेन्हिया ने राजा सहदेव से कहा —तुम्हारी प्रजा यहाँ से निकली जा रही है। यह दूर देश में चली जा रही है। जाते ही सभी भाई बन्धु जुड़ जायेंगे। कहीं ऐसा न हो कि लोरिक शादी करके फिर गउरा गुजरात वापस लौटे और हमारे घर की नीव खुदवाना शुरू करे और उसमें सरसों तथा राई डलवा दे। मेन्हिया ने राजा सहदेव से कहा—आप हाथ में पाँच रुपया लेकर गउरा गाँव में चले जाइए। जो आपकी जाति के चौधरी हैं उनके हाथ में पाँच रुपये का दंड दे दीजिए फिर हाथ जोड़ कर उनसे यह विनती कीजिए कि वे जाति के चौधरी हैं, वे बारात को सीधे निकल जाने दें। अब उन्होंने ऐसा कहा तो अहीर की पूरी बारात सज गयी तथा दरवाजे पर बैठ गयी। खाना-पीना होने लगा। परिछन की भी तैयारी हो गयी। फिर गउरा से सारी बारात चल पड़ी। सभी लोग रात में चलते रहे, दिन में दौड़ते रहे। कहीं उन्होंने पड़ाव नहीं डाला, विश्राम नहीं लिया। बारात सीमा पर पहुँच गयी। वहाँ खुला विस्तृत मैदान था। बारात वहाँ रुक गयी। लोरिक पालकी से बाहर निकलकर खड़े हो गये। दस-बीस आदमी और बाहर निकल आये थे। लोरिक ने उनसे कहा कि गिनती कर लो कि हमारी बारात कितनी है ? बारात की संख्या गिन ली गयी। अहीर की बारात सवा लाख थी। सोनभद्र के उस पार अगोरी बारात चली। अद्भुत स्वर में बाजे बज रहे थे। दक्षिण की ओर बढ़ते हुए लोग भदोया कोट पहुँचे। उस दिन लोरिक ने काका कठईत से कहा—बोहा के जितने चरवाह हैं वे सुबह सुबह दूध और लिट्टी खाते हैं। आज दो दो दिन बीत गये उन्हें अन्न तथा पीने के लिए

पानी तक नहीं मिला। सवा लाख बारातियों को पराठा बनाकर इस कोट में दे दो। वे खा-पीकर संतुलित हो जायेंगे। अब वहाँ का हाल सुनिये। बारात कोली घाट उतर गयी तथा भदोखरि घाट तक फैल गयी। बैलों पर लादकर खाने पीने की सामग्री आ गयी। सारी रसद एकत्र हो गयी। बायीं ओर दस बीस लोग बैठ गये तथा सबको तौलकर रसद देने लगे। जाति और पर जाति सबको रसद बँट गयी। केवल ग्वाल अहीर बच गये। बूढ़े (कठईत) व्यग्र होकर इधर उधर घूमने लगे। इतने लोगों की रसोई कौन बनायेगा ? इतने युवक कैसे खायेंगे ? मैं कोट गाँव में चला जाता हूँ तथा अपने जात-पाँत के लोगों को खोजता हूँ। उनके घर रसद भेज देता हूँ फिर डटकर मैं ज्यौनार करा देता हूँ। बारात डटकर भोजन कर लेगी और अगोरी के लिए चल देगी। अब वहाँ का हाल सुनिये। भोजन करके अहीर की बारात वहाँ से चली। सभी ढोली का मगही पान कूँच रहे थे। अहीर ग्वाल बच गये थे। वे जाजिम पर भूख के मारे पटपटा रहे थे। बूढ़े कूबे कंकोट गाँव के अहीराने में पहुँचे। वहाँ दस बीस गोप-ग्वाल थे। लोग भोजन बनाने के लिए वहाँ लादकर रसद ले गये। अहीरों की मण्डली बैठ गयी। कसबी और पतुरियों का नाच शुरू हो गया। भांड़ चुटुकियों पर ताल देने लगे। भोजन तैयार हो गया। तब गाँव से लड़के दौड़े। वहाँ जाकर हाथ जोड़कर वे खड़े हो गये पंचों सुनो। हमारी जाति के जितने लोग हैं जितने गोप और ग्वाल हैं, उनके लिए भोजन तैयार हो गया है। उस समय मण्डली में खलबली मच गयी। कुछ लोग अंगरखा और धोती संभालने लगे। तब टिकईत ने कहा—तुम लोगों में क्यों खलबली मच गयी। अभी तो अगोरी बहुत् दूर है। अभी हम परदेश में हैं। हमारा घर गउरा है। उन्होंने कहा—जाऊँ जरा देख लूँ भोजन में कैसा नमक है ? कैसा पानी है। रास्ते में प्यास लगेगी तो तुम्हारी कच्ची जान वैसे ही चली जायेगी। जरा हमें सब्जी चख लेने दो। तब जाकर वहाँ भोजन करो। बूढ़े कठईत वहाँ से चले। भोजन के पास पहुँचे। अपने दोनों हाथ धोकर, भोजन करने के स्थान पर चले गए, पीढ़े पर बैठ गए। अहीर सिन्दूर और काजल पहनकर बूढ़े को थाली परोसने लगे। जब वे झुककर थाली परोस रहे थे तो बूढ़े ने उन्हें अपनी नजर से देखा। उन्होंने बायें लात से थाली पर ठोकर मारी, फिर सब लोगों से जूझ पड़े। सबको चित्त गिराकर वहाँ से भागे। ग्वालिनों ने शोर मचाना शुरू किया। कठईत जाजिम पर आ गये। डंके पर युद्ध में बजने वाली मारू ध्वनि होने लगी। उस कोट का राजा बामदेव था। वह अपनी चाँदनी पर बैठा हुआ था। ग्वालों ने जाकर उन्हें बताया कि ऐ सूबा तुम बहुत शक्तिशाली थे। तुमसे बलशाली कोई और इस देश में नहीं था। न जाने कहाँ से आकर तुमसे भी शक्तिशाली लोग गोप और ग्वाल बनकर टिके हुए हैं। उन्होंने रसद भिजवा कर यहाँ भोजन बनवाया पर भोजन नहीं किया। उन्होंने हमारी इज्जत नहीं की। राजा अपनी प्रतिष्ठा चली गयी। जब राजा बामदेव ने यह बात सुनी तो उन्होंने युद्ध की लकड़ी बजवा दी। वहाँ फौज सज गयी। इधर जाजिम पर एक ओर सांवर बैठे हुए थे। दूसरी ओर लोरिक बैठे हुए थे, बीच में बूढ़े कठईत बैठे हुए थे। लोरिक ने वीर सांवर से कहा—'जहाँ जहाँ काका कठईत जायेंगे,

गड़ा लगवा आयेंगे। जिसकी जांघ में बल नहीं रहेगा, जिसकी भुजा में पौरुष नहीं हेगा, वह कैसे झगड़ा निपटाएगा।' जब लोरिक ने यह बात कही तो बूढ़े कठईत ाध में जलकर अगार हो गये। कहने लगे – बेटा। तुम पागल हो गए हो। म्हारी बुद्धि हर ली गयी है। तुम जाजिम पर बैठे रहो और बूढ़े का पुरुषत्व देखो। ढ़े कठईत डंडा लेकर कूद पड़े'। वह ब्यालिस हाथ उछल पड़े। तब मल सावर ले—भाई वीर लोरिक सुनो। मेरी बात मानो। जिसके दो दो लाख बैठे हों उसके ला खेत मे दौड़ रहे हैं। यदि कहीं ऊँची-नीची जमीन पर उनका पैर पड़ गया तो अपना सिर गवाँ देंगे। उस वक्त तुम्हारी जिन्दगी को धिक्कार होगा। तुम्हारे कुल ी मर्यादा डूब जाएगी नम्रतापूर्वक अहीर ने ऐसी बात कही। बात लोरिक के मन में ठ गयी। सचमुच यदि काका गिर जायेंगे तो बारात में मेरी हँसी होगी। ऐसा कहते ए वह सन्दूक के पास गये। उसमे से अपना पोशाक निकाल कर शरीर पर धारण र लिया। दुलाई निकालकर पहन ली फिर अगरखा धारण कर लिया। पैर मे ामा पहना, जूता पहना, धनुष लिया। साठ गज का दुपट्टा लिया पेटी बाँधी, पगड़ी जायी। डमरू लिया, छपन पचो वाली छुरी-कटारी तथा बगल में तलवार ले ली। ायें हाथ में ओड़न तथा दाहिने हाथ मे बिजली की तलवार ले ली। वह धीरे धीरे लने लगा जैसे झूमती हुई हथिनी जा रही हो। अब वहाँ का हाल सुनिये—जाकर ोरिक ने फौज को रोक दिया। रास्ते मे खड़े हो गए। सारी बारात को छोड़ ाया। राजा ने सेना को आज्ञा दी कि लोरिक को कुचलकर सत्तू के नमक जैसा कर ा। लोरिक ने अपनी आराध्या (पूजमान) देवी का स्मरण किया, कहने लगे—'हे माँ र्गा, तुम अपनी शक्ति का सहारा दो। तुम्हारी शक्ति के भरोसे मैं इस दारुण देश ो संभालने आया हूँ। आप साथ छोड़कर भाग गयी? मेरा जीवन आपत्तियों से रा हुआ है।' इधर लोरिक दुर्गा को स्मरण कर रहे हैं उधर राजा निशाना लगा र बाण मार रहा है। वह खेत पर पैंतरेबाजी करने लगा।

ावार्य—(१५०१—१८००)

जिस प्रकार भादों में भैंसा चिल्ला कर दौड़ता है। वीर दाँव पर आ गया। ब वामदेव बोला—सुवा मेरी बात मानो। ऐ राजा, तुम मारो। यदि तुम्हारे ाक्रमण में शक्ति है। तब मर्द वीर लोरिक ने कहा—ऐ सुवा तुम मेरी बात मानो। ं पहले चोट नहीं करूँगा न छिपा कर मैं पीछे चोट करूँगा। गुरु अजई की शपथ कि मैं पहले न मारूँ। किन्तु जब हमला पहले होगा तो मैं छोड़ूँगा भी नहीं। मैं ीछे छिप कर भी नहीं रहूँगा। उसी समय सुवा ने अपना म्यान फेंका तथा अहीर र हमला किया। लोरिक कूद कर आकाश मे चला गया। वामदेव का तेग (खड्ग) ारती पर आ गिरा तथा चूर चूर हो गया। वामदेव ने दो ▪ वार किये पर वे खाली ये। फिर सुवा ने सोच विचार कर दोहरा तेहरा वार किया। अहीर के सिर की ार चोट हुई। अहीर घोड़ा बायें तिरछे हो गया। खड्ग धरती पर गिर पड़ा। हीर थोड़ा सा दब कर मैदान मे आ गया। उसने कहा—ऐ मेरे ओड़ के राजा

तुम मेरा कहना मानो। मैंने तुम्हारा पूर्ण आक्रमण (पक्का वार) सँभाल लिया। अब तुम मेरा अपूर्ण सा (कच्चा) आक्रमण सँभालो। लोरिक ने तब अपना म्यान फेंक दिया। फिर दस्तगी तलवार सँभाल ली। तलवार अभी चार ही अँगुल बाहर हुई कि उसकी आवाज आकाश में गूंज गयी। नीचे दावाग्नि फैल गयी एवं आदमी के कद से ऊपर तक लहर लपलपाने लगी। वामदेव की पलकें घुम गयीं उसका खड्ग धूल में मिल गया। लोरिक का खड्ग पूर्व से काटते हुए पश्चिम पहुँच गया। पश्चिम से दक्षिण पहुँच गया। जैसे किसान अपना खेत काटता है वैसे ही अहीर का पुत्र लोरिक शत्रुओं को काट रहा है।

अब यहाँ का हाल सुनिये। लोरिक ने बिजली का खड्ग खींच कर उसे म्यान में रख लिया। उसकी बारात वहाँ से चलने के लिए सजने लगी। कोट का झगड़ा निपट गया। अहीर बिना अन्न और जल के दक्षिण की ओर चल दिया। वह रात को चल रहा था, दिन में दौड़ रहा था। वह कहीं डेरा नहीं डाल रहा था और न विश्राम ही कर रहा था। बारात को उसने चलवा दिया। बारात कोली के घाट आ गयी। कोलिया घाट पर नगाड़े बज उठे, अगोरी में आवाज पहुँचने लगी। इधर (अगोरी के) मूबा का हाल सुनिये। उसके कानों में आवाज पहुँची। उसने कहा— लगता है महर मेरा शत्रु हो गया है। उसने मेरे ऊपर जबर्दस्त हमला किया है। न जाने किस शहर से बारात आयी है। यहाँ बड़े जोर से डंके बाज रहे हैं। उसने अपने नौकरों और सिपाहियों से कहा—तुम लोग सोन नदी के तट पर तैनात हो जाओ, फैल जाओ। इधर बारात काशी घाट पर उतरी और छिप गयी। नदी के दोनों किनारे उफान ले रहे थे। वहाँ उतरने का कोई साधन नहीं था। उस पार झिमला केवट घूम रहा था। लोरिक ने उससे कहा—"आप घाट के ठेकेदार हैं, मल्लाह हैं। अपनी नाव इधर लाइये और हम लोगों को उस पार उतार दीजिए। तब झीमल मल्लाह बोला—ऐ भाई, मेरी बात मानिये, मूबा की आज्ञा इसके विपरीत है। जिस दिन अहीर की बारात उस पार उतर जायगी उस दिन वह मेरे बाल बच्चों को कोल्हू में पेरवा देगा। अपनी जान देकर उस पार कौन जायेगा? वीर लोरिक बोल उठा—झीमल, मेरी बात मानो। देखो, हम लोग गउरा में थे। मैंने सुना कि अगोरी का राजा बलवान है। उसका जोड़ खोजने पर भी नहीं मिलता। तब हम यहाँ मंजरी से विवाह करने आ गये। मैं तो सर्व प्रथम उसका पौरुष देखने आया। तुम खे कर हमें उस पार लगा दो। झीमल, जहाँ तुम्हारा पसीना गिरेगा, वहाँ लोरिक अपना खून बहा देगा। पहले अगोरी का राजा इस लोरिक को कोल्हू में पेरवायेगा तब फिर तुम्हारे बाल-बच्चों की बारी आयेगी। इतनी बात सुन कर झीमल घर दौड़ कर गया। उसने अपने सभी बर्तन उठाये, बाल बच्चों को लिया और नदी के किनारे आ गया। नाव पानी में चला दी। वह पानी में उतराने लगी। वह पचास-सौ खेप चली। नाव भारी थी। झीमल उसे खे कर लोगों को अगोरी के पार करने लगा।

अब यहाँ का हाल सुनिये। नाव इस पार लौटी। फिर बूढ़े बढ़ईत उठे। वह लकड़ी टेकते हुए नाव के पास पहुँचे, डाँड पकड़ लिया। नाव नीचे दब गयी। डोमल अत्यन्त दुखी होकर गिर पड़ा। अपनी छाती पीटने लगा। हे देव, हे नारायण, तुमने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया? मैंने अहीर की सवा लाख बारात अगोरी में पार उतारी। एक बूढ़ा बचा रह गया था। इसके लिए नाव इस पार लाया। डाँड़ में पकड़ते ही नाव डूब गयी। अभी तो बूढ़ा नाव पर चढ़ भी नहीं पाया था। अब यहाँ का हाल सुनिये। *बूढ़ा उछलने लगा। उसने नाव का डाँड हाथ में उठा कर उसे* चला दिया। स्वयं नाव पर बैठ गया। उसे ले कर अगोरी के उस पार चला आया। बूढ़ बढ़ईत नदी के उस पार उतर गये, तट पर खड़े हो गये। उन्होंने सुवच्चन से कहा—समधी के घर में जा कर पूछ आओ। बारात खड़ी है, जनवासा कहाँ रहेगा? हमें एक स्थान पर बैठा दो। मल्ल सुवच्चन दौड़ कर घर गये, बहन को पुकारा। महरिन अन्दर से बाहर निकल कर आँगन में खड़ी हो गयी। सुवच्चन ने उनसे कहा—समधी ने आज्ञा माँगी है कि जाजिम कहाँ गिराया जाय। अहीर की बारात कहाँ रहेगी। तब महरिन ने नम्रतापूर्वक कहा—भइया, यहाँ तो मैंने कुछ भी तैयारी नहीं की है। तू ने बीच में यहाँ बारात लिवा लाये। जरा मुझे भी तैयारी कर लेने दो। अभी हमने न तो अपने गोत्र वालों को निमन्त्रित किया है और न तो भाइयों, कुटुम्बियों, और परिवार को आमन्त्रित किया है। न तो अभी अजयगढ़ में बढ़ई को न्योता दिया है जो दालान में तोता अर्पित कर दे। अभी समधी हमें दस दिन का मौका दें। फिर ठाट से द्वार पर बारात लगेगी। सुवच्चन वहाँ से रवाना हुए। समधी बढ़ईत को समझा कर कहा—मेरी बात सुनिये। अभी मेरी बहन ने कुछ इंतजाम नहीं किया है। वह नाराज हो रही है दस दिन का समय गुजर जाता तो आकर ठाट से आप विवाह करते। *तब बढ़ईत ने कहा—समधी तुम मेरी बात* मानो। महरी ने दस पाँच दिन की बात कही है। मैं दो चार घड़ी ठहर जाऊँगा। हमारे रहने की जगह तो बता देती। फिर हम डट कर विवाह करेंगे।

अब उस दिन, उस समय का हाल सुनिये। सुवच्चन दौड़ कर जा रहे हैं। फिर बहन से कह रहे हैं—मैं समधी का उल्टा हुक्म लाया हूँ। ऐ बहन, तुम उन्हें जगह बता दो। तू ने उन्हें दस पाँच दिन क्या सुनाया है, वे दो चार घड़ी टिक कर रह जायेंगे। तब महरिन ने उत्तर दिया—भइया, मेरी बात सुनो—बारात को उस खेत पर ले जाओ जहाँ नौ सौ बन-गोमी के जगमों पड़ है तथा बबूल की कटीली झाड़ियाँ हैं। वहाँ चार चार अंगुल के काँटे हैं। यदि काँटे बारातियों के शरीर में चुभेंगे तो उनके शरीर से खून बह निकलेगा। वही स्थान बारातियों को बता दो। सुवच्चन वहाँ से चले। सान नदी के तट पर आये। टिकईत से बोले—चलो मैं डगर बताता हूँ, जहाँ बारात टिक जायेगी। आगे-आगे मल्ल सुवच्चन चले पीछे सवा लाख बाराती चल पड़े जहाँ नौ सौ जगमों कटीली झाड़ी [illegible] ।
बारात ■ एक ने एक सुन्दर ध्वनि दे, हुंकार दे, मार

मुरव्वत में एक से एक देव के लाल आ गये थे। उनकी धमनियों में रक्त का संचार हो रहा था। वे आज इन कांटों का कष्ट कैसे सहेंगे ! अहीर लोरिक इस प्रकार सोच रहा था। वह जाजिम पर बैठा हुआ था। कठईत उछलते हुए पालकी के पास पहुँचे। लोरिक बूढ़े टिकईत का पैंतरा देख कर गिर पड़ा। टिकईत ने उसे डांटा—बेटा तुम कनउज में अपने को मर्द समझते थे। तुम इस संकटापन्न देश में चढ़ आये हो। अपनी चांदनी से यहाँ का राजा तुम्हारी जाँघ देख रहा है जो थर-थर कांप रही है। ऐसा कहते हुए टिकईत क्रोध में जल रहे थे। बायें हाथ में चक्र तथा दाहिने हाथ में डंडा उठा कर बूढ़े ने वहाँ से पैंतरा बदला। वह बयालिस हाथ कूदे। पूर्व से उछलते कूदते वह पश्चिम गये। गोभी और कंटीले घमोय के पेड़ वे काट काट कर सोन नदी में बहाने लगे तथा पूर्व दिशा में जाने लगे। वहाँ मैदान साफ हो गया। अब उसी जगह जाजिम गिरा दिया गया। दल बल के साथ अहीर वहाँ खड़ा था। प्रकाश के लिए गैसें वहाँ टाँग दीं गयीं। जलसा होने लगा। बारात मौज करने लगी। नर्तकियां और कस्बिनें वहाँ नाचने लगी। भाँड़ चुटकी पर ताल देने लगे। अहीर खेत पर बैठा हुआ था।

अब यहाँ का हाल सुनिये। महरिन ने सुबच्चन से पूछा—अहीरों की कितनी बारात है ? हमें ठीक-ठीक बताओ। सुबच्चन ने तत्काल जवाब दिया। अहीर की सवा लाख बारात है। उसमें जाति और परजाति सभी प्रकार के लोग हैं। सवा लाख बाराती खेत में टिके हुए हैं। सभी मण्डली बना कर बैठे हुए हैं। अब वहाँ का हाल सुनिये। महरिन नम्रतापूर्वक कह रही हैं—भइया सुबच्चन, तुम अगोरी चले जाओ। वहाँ के महाजन साहु महिचन बहुत बड़े हैं। बैल गाड़ी हाँक कर ले जाओ तथा बोरे उठवा लाओ। सवा लाख मन चावल बारातियों के स्थान पर गिरवा दो। हल्दी, मसाला आदि के अतिरिक्त सवा लाख चारपाइयाँ वहाँ पहुँचा दो। फिर खाद्य सामग्री बँटवा दो।

भावार्थ—(१८०१—२१००)

उन्हें कह दो कि एक बार का भोजन है। इसमें से एक भी चावल बचना नहीं चाहिए। इसमें थोड़ी भी रसद बच जायेगी तो वे (बाराती) गउरा का रास्ता नापेंगे। महरिन ने कहा—बाराती रास्ता पकड़ कर नगर गउरा गुजरात चले जायेंगे। उस समय मल्ल सुबच्चन वहाँ से चल पड़े। अगोरी की गलियों को पार करते हुए साहु के दरबार में पहुँच गये। हुक्म दिया—बोरों को भरकर बैलगाड़ी दे दो। साहु ने सामान तौल कर बोरों में बन्द कर दिया। चावल की गाड़ी लद गयी, और भी सारी सामग्री लद गयी। किले से गाड़ियाँ खेत पर पहुँची जहाँ बारात रुकी हुई थी। गाड़ीवान ने जाजिम से थोड़ी दूर पर ही चावल गिरा दिया। सवा लाख मन और रसद भी रख दी गयी। सवा लाख घी के पात्र रख दिये गये। सवा लाख बकरे तथा अन्य सींगवाले जानवर भी उतरवा लिये गये। खाद्य सामग्री का वहाँ पर्वत सा खड़ा हो गया। देख कर गउरा के लोग आश्चर्य चकित हो उठे। वहाँ माँ के एक से एक लाड़ले थे। एक से एक सुन्दर सरदार थे। वे पाव भर के खाने वाले

थे। वे एक मन कैसे खा पायंगे ! वे पाँच सेर (पसेरी) घी कैसे खायगे। ये बकरा ओ सींग वाले पशु कैसे खा जायगे ? यहाँ तो अब ऐसा लगता है कि सारी बारात वापस लौट जायगी। विवाह का कार्य सम्पन्न नहीं होगा? गउरा के सब लोग चिन्तित हो उ हैं। अहीर लोरिक भी चिन्ता में पड गया है। वह अपने दांतो तले अंगुली दबा रह है। यह खाद्य-सामग्री खायी नहीं जा सकेगी ! मुझसे कुछ कहा नहीं जाता। बू कठईत इधर-उधर घूम रहे थे। वह अहीर के आगे गये। कहने लगे—बेटा, मी लोरिक सुनो, क्या तुम जाजिम पर बैठे ही रहोगे ? तुम जरा इस बुढापे में मेरा पुरुषत्व देखो ! इधर रसद रखकर लोग अगोरी घर लौट गये। वहाँ केवल बाराती ही र गये थे तब बूढे ने मतव्य प्रकट किया। ऐ सवा लाख बाराती, अपनी-अपनी खुराक के अनुकूल तुम लोग तौल कर रसद ले जाओ। जितनी फालतू रसद बच जाय उसे सोनभद्र नदी में बहा दो। खाने भर का घी रख लो, शेष घी फेंक दो ताकि वह पू दिशा में बह जाय। बकरे और सींग वाले पशुओं में से जितना खाना है उतना बा करो, शेष को सोनभद्र नदी में बहा दो। बठईत की इतनी बातें सुन कर सबक आँखें खुल गयी। सभी लोग भोजन बना कर खाने लगे।

अब कठईत का हाल सुनिये। उन्होंने हजाम से कहा कि सारी रसद बन गयी है। यहाँ पर अब एक अक्षत भी बचा नहीं है। तुम बारात से एक लड़का ले एव महर के घर चले जाओ। उन्हे यह बात बता दो कि शाम को रसद कम हो गयी लड़के के लिए बासी तरकारी भी नहीं है। यदि महर के घर कुछ जूठा आदि पड़ा हो तो मेरा लड़का खा ले। यह कह कर कठईत जाजिम पर जाकर सो रहे। अहीर की सवा लाख बारात गाँव से दूर जीर पर सो रही थी। आधी रात ढलने के बाद बहुत ही सवेरे नाऊ उठा। एक सोये हुए लड़के को उसने पकड लिया और गर्दन पकड़े हुए उसको महर के घर ले गया। प्रातः काल बहुत सवेरे सवेरे महरिन द्वार पर झाडू लगा रही थी। नाऊ वहाँ पहुँच गया। कहा—मलकिन मेरी बात सुनिये। जैसे मैं लोरिक का नाऊ लगता हूँ वैसे ही आपका भी। शाम को रसद कम हो गयी। इस लड़के के लिए बासी सब्जी भी नहीं है यदि घर के अन्दर कुछ जूठन आदि पड़ा हो तो दे दीजिए ताकि यह लड़का खा ले। जब महरिन ने यह बात सुनी तो दांतो तले अंगुली दबाने लगी।

अब वहाँ का हाल सुनिये। महरिन कहने लगी। ऐ नाऊ गागी, सुनो। तुम हाथ मुँह धोओ। तुम्हें बासी क्या दूं ? मैं खिचड़ी उतरवा देती हूँ। तुम दोनों यहाँ से भोजन करके जाओ।

> देवी का स्मरण—गायक राम का नाम स्मरण करता है और कहता है मैं रामायण कह रहा था। मेरे हृदय में न जाने कैसे चूक हो गयी। तुम अपने दोस्तों और समान उम्र वालों को न भूलो। दुर्गा को भी मत भूलो।

अब वहाँ का हाल सुनिए। महरिन चौके में ...

रहीं हैं कि तुम कूटे हुए अन्न की भूसी से भरा हुआ एक पुरवा ले लो। उसे गांव से दूर जहाँ वारात टिकी हुई है ले जाओ और उसे समधी के आगे रख दो। इससे समधी रस्सी वना दें ताकि उस रस्सी को मैं मंडप में वाँध दूँ। सुबच्चन पुरवा लेकर कठईत के पास आए। नम्रतापूर्वक कहा—समधी सुनिए, जौ के कूटने के वाद यह भूसी निकली है। इससे रस्सी वना दो। इससे मंडप वाँधा जाएगा। तव शादी विवाह होगा। नहीं तो तुम्हारा यहां ठिकाना नहीं लगेगा। जिस रास्ते से तुम आए हो उसी रास्ते वापस चले जाओगे। अव कठईत का हाल सुनिए। वह इधर उधर उछल रहे थे। वह मन में मुस्कराये। कहा सुबच्चन तुम सुनो। मेरी वात मानो जाकर शादी विवाह करो। रस्सी कौन सी वड़ी चीज है। तुम उल्टी चलनी में पानी भर कर लाओ ताकि हम रस्सी भिगो सकें। मल्ल सुवच्चन वहाँ से महर के घर आए। वहन-वहन पुकारने लगे। जव महरिन अन्दर से वोलीं तव सुबच्चन ने उन्हें वताया कि समधी रस्सी वनाने के लिए तैयार हैं किन्तु उन्होंने पानी माँगा है। कहा है कि उल्टी चलनी में पानी भिजवा दो मैं उससे भिगोकर रस्सी वनाऊँगा।

अव वहाँ उस समय का हाल सुनिए महरिन कह रहीं हैं कि उस पवित्र तीर्थ स्थान का जल धन्य है जहाँ के मर्द बुद्धिमान होते हैं। हमने वड़ी-वड़ी समस्याएँ उत्पन्न कीं पर समधी ने सवका काट कर दिया। इधर मल्ल सुवच्चन कठईत के पास पहुँचे। कठईत ने सुवच्चन से कहा—समधिन ने वड़ी वड़ी गूढ़ वातें कीं। अव मेरी भी एक गूढ़ वात सुन लो। समधिन को जाकर समझा दो सोलह थन वाली एक भैंस यहाँ भिजवा दें जिसमें एक ही थन पेन्हा सके, और सवा लाख वाराती दूध पी सकें। नहीं तो असमय में हम कूच की लकड़ी वजा देंगे और लोरिक की शादी कर लौट जाएंगे। महर की लडकी मंजरी जिसको हल्दी लग चुकी है यहीं रह जायगी। महरिन ने जब यह वात सुनी तो कहा कि वड़ा विघ्न उपस्थित हो गया।

समधी ने वड़ी गूढ़ वात कह दी। मेरी अक़्ल काम नहीं कर रही है। यह सुनते ही विषादयुक्त होकर महरिन घर के अन्दर चली गयीं। उनकी बुद्धि काम नहीं कर रही है। हृदय में क्लेश भर गया है।

तव पुत्री मंजरी ने माँ से कहा—मेरे ससुर ने वड़ा विघ्न डाल दिया है। अत: तुम्हारी अक्ल काम नहीं कर रही है। तुम सेर भर सोना ले लो। सुनार की दुकान पर चली जाओ। उससे पत्र पिटवा लो, गिलास बनवा लो उसकी पेंदी में सोलह टोंटियाँ लगवा दो एक टोंटी में छेद कराकर भेज दो। इसमें सभी अहीर मद पीयेंगे। सुबच्चन एक सेर सोना लेकर सोनार की दुकान पर गए, सोलह पत्र पिटवाये, गिलास गढ़वाया, टोंटियाँ लगवायीं। पन्द्रह टोंटियाँ किनारे किनारे तथा एक बीच में। इस टोंटी में छेद था। वारात के टिकने के स्थान पर गिलास भेज दिया गया। सवा लाख वारातियों की मण्डली बैठी हुई थी। बूढ़े कठईत के हाथ में जब गिलास आया तो उन्होंने उसमें पानी की धार बहायी। फिर हँसने लगे और धन्य

धन्य कहने लगे। किसी गुणवाली ने यह युक्ति सुझायी है। अगोरी मे भट्ठी खोलवा दी गयी। बारात मदपान करने लगी।

अब वहाँ का हाल देखिए। महरिन सज धज कर तैयार हुई। समधी सुरते नहीं। महरिन ने सुबच्चन से कहा—बेवरा नदी के तट पर चले जाओ जहाँ सवा लाख बारात बैठी हुई है। समधी को जाकर हुक्म दे दो कि वे ठाट से द्वार पर बारात लावें और डट कर शादी करें। धावन का यह संदेश मिला तो धर्मी सवरू ने चमारों को बाजा बजाने के लिए कहा। कहा—तुम लोग ठाट से बाजा बजाओ। अगोरी में अपना हाथ दिखाओ। जब तुम लोग अगोरी से गउरा गुजरात चलोगे तो मजदूरी क्या, तुम्हें ईनाम मे गाये दूँगा। सवा लाख बारात तैयार हुई, डंके पर तुमुल ध्वनि होने लगी। अगोरी की गली तंग थी। उसमे कसकर बाजार लगा हुआ है। अहीर लोरिक पालकी मे बैठे-बैठे सोच रहा है यदि कोई विषम परिस्थिति पड़ी, विपत्ति आ पड़ी तो यहाँ बिजली की तलवार कैसे चलेगी।

अहीर की बारात गली कूचों से गुजर रही है। अब आगे का हाल सुनिये। महरिन ने एक उपाय सोचा।

भावार्थ—(२१०१—२४००)

उन्होंने कहा- गुणी सरदार सवरू को ढाल दे दो। वे 'करगही' नाच नाचें। जब मल सवरू ने यह बात सुनी तब उनका मन कुम्हला मुर्झा गया। उन्होंने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया? जब से पृथ्वी पर पैदा हुआ तब से मैंने केवल गायों का अडार देखा है ढाल लेकर मैं करगही नाच कैसे नाचूँगा? जब बूढ़े बठईत ने यह बात सुनी तो वह वहीं जल कर खाक हो गये। उन्होंने कहा 'तुम पालकी मे ही रहो। तुम बूढ़े का पौरुष देखो।' बूढ़ा हाथ मे ढाल लेकर बयालिस हाथ कूद पड़ा और करगही नाच नाचने लगा। उसके पीछे बारात चलने लगी। अहीर की सवा लाख बारात द्वार पर लग गयी। तब दस बीस गुंडों ने बूढ़े पर हमला कर दिया। बूढ़े के हाथ मे ढाली थी। वह अभी करगही नाच नाच रहे थे। गुंडे बूढ़े से लिपट गये उन्होने गुण्डों का हाथ पकड़ लिया और उन्हें उलटा कर दिया। जिस वक्त उन्होंने अपना शरीर हिलाया गुण्डे धरती पर भहरा कर गिर पड़े। किसी का पाँव टूटा, किसी का हाथ टूटा। किसी के बत्तीस दाँत टूट गये। अब उस समय का हाल सुनिये। जब सुबच्चन ने यह देखा तो वह समधी के आगे चले गये। उनसे हाथ की ढाली कोई अगोरी मे छीन नहीं सकता! मैं उनसे ढाली ले लूँगा तब दोनों दल का शृंगार रह जायगा, शोभा रह जायगी। बूढ़े बठईत ने सचमुच उनको ढाली दे दी। सिवबचन (सुबच्चन) उनको लेकर मण्डप मे चले गये। दरवाजे पर बारात लग गयी वहाँ नाऊ और ब्राह्मण बैठे हुए थे। द्वार की मान-मर्यादा हो रही थी। तिलक हुआ, द्वार-पूजा हुई। बाजे की तुमुल ध्वनि होने लगी। अहीर की सवा लाख बारात महर का द्वार छेंक कर खड़ी है। द्वार की ी

रहीं हैं कि तुम कूटे हुए अन्न की भूसी से भरा हुआ एक पुरवा ले लो। उसे गांव से दूर जहां वारात टिकी हुई है ले जाओ और उसे समधी के आगे रख दो। इससे समधी रस्सी बना दें ताकि उस रस्सी को मैं मंडप में बांध दूं। सुबच्चन पुरवा लेकर कठईत के पास आए। नम्रतापूर्वक कहा—समधी सुनिए, जो के कूटने के वाद यह भूसी निकली है। इससे रस्सी बना दो। इससे मंडप बांधा जाएगा। तव शादी विवाह होगा। नहीं तो तुम्हारा यहां ठिकाना नहीं लगेगा। जिस रास्ते से तुम आए हो उसी रास्ते वापस चले जाओगे। अव कठईत का हाल सुनिए। वह इधर उधर उछल रहे थे। वह मन में मुस्कराये। कहा सुबच्चन तुम सुनो। मेरी वात मानो जाकर शादी विवाह करो। रस्सी कौन सी वड़ी चीज है। तुम उल्टी चलनी में पानी भर कर लाओ ताकि हम रस्सी भिगो सकें। मल्ल सुबच्चन वहां से महर के घर आए। बहन-बहन पुकारने लगे। जब महरिन अन्दर से बोलीं तव सुबच्चन ने उन्हें बताया कि समधी रस्सी वनाने के लिए तैयार हैं किन्तु उन्होंने पानी मांगा है। कहा है कि उल्टी चलनी में पानी भिजवा दो मैं उससे भिगोकर रस्सी बनाऊँगा।

अब वहां उस समय का हाल सुनिए महरिन कह रहीं हैं कि उस पवित्र तीर्थ स्थान का जल धन्य है जहां के मर्द बुद्धिमान होते हैं। हमने बड़ी-बड़ी समस्याएँ उत्पन्न कीं पर समधी ने सवका काट कर दिया। इधर मल्ल सुबच्चन कठईत के पास पहुँचे। कठईत ने सुबच्चन से कहा—समधिन ने वड़ी वड़ी गूढ़ वातें कीं। अव मेरी भी एक गूढ़ वात सुन लो। समधिन को जाकर समझा दो सोलह थन वाली एक भैंस यहां भिजवा दें जिसमें एक ही थन पेन्हा सके, और सवा लाख वाराती दूध पी सकें। नहीं तो असमय में हम कूच की लकड़ी वजा देंगे और लोरिक की शादी कर लौट जाएंगे। महर की लडकी मंजरी जिसको हल्दी लग चुकी है यहीं रह जायगी। महरिन ने जब यह वात सुनी तो कहा कि वड़ा विघ्न उपस्थित हो गया।

समधी ने वड़ी गूढ़ वात कह दी। मेरी अक़्ल काम नहीं कर रही है। यह सुनते ही विषादयुक्त होकर महरिन घर के अन्दर चली गयीं। उनकी बुद्धि काम नहीं कर रही है। हृदय में क्लेश भर गया है।

तव पुत्री मंजरी ने मां से कहा—मेरे ससुर ने बड़ा विघ्न डाल दिया है। अतः तुम्हारी अक्ल काम नहीं कर रही है। तुम सेर भर सोना ले लो। सुनार की दुकान पर चली जाओ। उससे पत्र पिटवा लो, गिलास बनवा लो उसकी पेंदी में सोलह टोटियां लगवा दो एक टोंटी में छेद कराकर भेज दो। इसमें सभी अहीर मद पीयेंगे। सुवच्चन एक सेर सोना लेकर सोनार की दुकान पर गए, सोलह पत्र पिटवाये, गिलास गढ़वाया, टोटियां लगवायीं। पन्द्रह टोटियां किनारे किनारे तथा एक वीच में। इस टोटी में छेद था। बारात के टिकने के स्थान पर गिलास भेज दिया गया। सवा लाख बारातियों की मण्डली बैठी हुई थी। बूढ़े कठईत के हाथ में जब गिलास आया तो उन्होंने उसमें पानी की धार बहायी। फिर हँसने लगे और धन्य

धन्य कहने लगे। [illegible]
गयो। बारात [illegible]

[illegible]
नहीं। [illegible]
लाख [illegible]
सावें और [illegible]
को [illegible]
अपना [illegible]
क्या, [illegible]
होने लगी। [illegible]
सोरिक [illegible]
पड़ी [illegible]

[illegible]
महुलिन [illegible]

भावार्थ—[illegible]

[illegible]

सम्पन्न हो गयीं। नाऊ ब्राह्मण आँगन मंडप में चले गये वर को 'भाजी' खिलाने के लिए 'भाजी' लेकर वे द्वार पर आगये जहाँ सारी बारात टिकी हुई थी।

पाँच लड़के उठाये गये। लोरिक दही गुड़ खाकर हाथ मुँह धोकर पालकी में बैठ गये। अब मंडप का हाल सुनिये। पंडित ने मंडप में अपना पत्रा पटक दिया। उन्होंने देखा कि शादी का मुहूर्त कब है ? सिंदूर दान की सायत कब है ? सब दिन का झगड़ा मिट जाता तो हम सब लोग गउरा अपने घर चले चलते—ऐसा टिकईत ने कहा। अहीरों की बारात मण्डली बनाकर द्वार पर बैठी हुई है। उसी समय अन्दर से हुक्म आया। अब जल-पान हो जाय। नाऊ वहाँ आकर बैठ गया। कहने लगा—'लड़की के लिए जो सामान आया है उसकी मांग हुई है। साठ मुहरों का हार मंजरी की देह के शृंगार के लिए आया है। रेशम की साड़ियाँ आयी हैं जिनमें चार-चार अंगुल पर तार लगे हुए हैं। मंडप में सब लोग आकर बैठ गये। कथा-पुराण होने लगा। लड़की और लड़के की पुकार हुई। अगोरी में विवाह सम्पन्न होने लगा। माँग में सिंदूर पड़ गया। तब अहीर की बारात वहाँ से उठ गयी। कोलाहल मच गया। कोहबर से छुट्टी पाकर जब लोरिक बाहर जाने लगा तब उसने सबको प्रणाम किया। उसने सब का आशीर्वाद लिया फिर पालकी में बैठ गया। शादी विवाह खत्म हुआ। पालकी वहाँ से चली तथा बेवरा नदी के तट पर पहुँची। वहाँ सवा लाख बारातियों की मण्डली बैठी हुई थी। कस्बिनें एवं वेश्याएं नाच रही थीं। भांड़ चुटकियों पर ताल दे रहे थे। गउरा के लोग बैठे हुए थे। वे मगही पान खा रहे थे। बुटऊल का मांजा बन रहा था। चरवाहे चिलम पर दम लगा रहे थे। जनवासे में जलसा हो रहा था। अब वहाँ का हाल सुनिये—अहीर लोरिक गिलास लेकर जाजिम पर छक कर मद पी रहा था। उसका गुरु अजई भी नशे में मतवाला हो रहा था। रात बड़ी थी। बारात नशे में नाच रही थी। बूढ़े कठईत ने कहा—ऐ बेटा वीर लोरिक सुनो। तुम मेरी बात मानो। हमारी सवा लाख बारात सो रही है। तुम्हारा चिराग जल रहा है। अगर किसी को कोई चीज़ या वस्तु यहाँ नहीं होगी तो प्रातः काल क्या जवाब दोगे ? जिसका टूटा हुआ जूता यहाँ से चला जायगा वह प्रात: काल चढ़ने के लिए घोड़ा मांगेगा। जिसका टूटा हुआ एक छोटा सा डंडा चला जायगा वह प्रातः काल ढाल और तलवार की माँग करेगा। जिसका फटा हुआ कम्बल चला जायगा वह हमसे पूर्वी खूबसूरत कम्बल मांगेगा। बेटा, तुम पूरा पहरा दो तुम्हारी सारी बारात सो रही है।

सारी बारात सो रही है। आधी रात ढल चुकी है। मंजरी मंडप में बैठी हुई है। वह लोरिक का स्वरूप देख चुकी थी। वह आधी चद्दर ओढ़कर, लोरिक का शरीर मिला कर देख चुकी थी। (बराबरी कर चुकी थी।) उस दिन वह रो रही थी कि मुझ जैसी परित्यक्ता के कारण जिसका ऐसा लाल जूझ कर समाप्त हो जायगा, वह तो विष खाकर मर जायगा। मुझे बहुत पाप लगेगा। महर की लड़की जिसका

नाम दावन मंजरी है, इस प्रकार सोच रही थी। वह ऐसे रो रही थी कि उसको सहन करना कठिन था। उसके रुदन से पेड़ के पत्ते झर रहे थे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक ने, जो बारातियों की देख-रेख कर रहा था, यह बात सुनी। उस क्षण रुदन की आवाज सुन कर वह भयभीत हो गया। क्या ब्राह्मण की कोई बेटी रो रही है जो चौके पर ही विधवा हो गयी है ! या बनिया की कोई लड़की रो रही है जिसका पति सामान लाद कर (वाणिज्य के लिए) जा रहा है। या कायस्थ की लड़की रो रही है जिसका प्रिय कहीं लिखने-पढ़ने के काम से बाहर जा रहा है। या महर के परिवार की कोई स्त्री रो रही है जिसके रसोई घर में भात घट गया है। लोरिक ने मन में सोचा फिर जाकर गंगिया हजाम की गर्दन पकड़ कर उठाया। समझा कर कहा—गागी मेरी बात मानो—एक स्त्री किले में रो रही है—उसके रुदन पर मुझे दया आ रही है। मैं सहन नहीं कर सकता। लगता है ब्राह्मण की बेटी रो रही है जो चौके पर ही विधवा हो गयी है। ऐ नाऊ, तुम जाकर उसका पता ठिकाना लो। वह स्त्री आधी रात में रो रही है। तब गंगिया हजाम ने कहा—मालिक मेरा कहना सुनिये। आधी रात ढल चुकी है। मैं अगोरी की बस्ती में कैसे जाऊँगा। गली में लोग 'चोर' 'चोर' चिल्लायेंगे। मुझे अच्छी तरह पीटेंगे और मेरी जिन्दगी खराब कर देंगे। तब लोरिक ने कहा—गंगिया, तुम्हारी जाति नाई की है। तुम चट अपनी बुद्धि और वाणी से कुछ न कुछ तरकीब निकाल लेते हो। हजाम ने कहा—मालिक मेरी बात मानिये। आज मेरी छत्तीस प्रकार की बुद्धि ठिकाने लग गयी है। एक भी अक्ल काम नहीं कर रही है। इस क्षण आपको जवाब क्या दूँ ?

> सुमिरन—गायक राम का नाम स्मरण करता है और कहता है कि राम ने रामायण का सृजन किया। लक्ष्मण ने काशी और प्रयाग का सृजन किया। सीता ने अपने नैहर का सृजन किया जहाँ भगवान ने जाकर धनुष तोड़ा।

उस दिन अहीर ने वीर लोरिक से कहा—ऐ मेरे गागी हजाम सुनो। आधी रात ढल चुकी है। तुम महर के घर जाओ और उन्हें समझा कर कह दो कि हम सांभर नमक के खाने वाले हैं। उन्होंने भोजन में बसहा (सुवासित ?) नमक डलवा दिया और पानी नहीं पिलवाया। उनसे जाकर कह दो कि तुम्हारे दुलारे दामाद लोरिक को प्यास लगी है। तब मेरी सास कहेंगी कि नदी के तट पर बारात है वहाँ से लाकर मेरे लाड़ले को पानी पिला दो। और नहीं तो अगोरी में दस बीस कुएं हैं। वहाँ से जल खींच कर पानी पिला दो। उनसे कह देना कि नदी का पानी खराब है। कुओं का पानी भी गंदला है। कुंवे का कुवा गहरा है। वहाँ रेशमी डोर नहीं पहुँचती। कलश के ठंडे पानी के लिए तुम्हारे दुलारे दामाद प्यासे हैं—ऐसा कह देना। गंगिया हजाम वहाँ से अगोरी चला तथा लुक-छिपकर महर के दरबार में पहुँचा। महर के घर में कुल परिवार की स्त्रियाँ नंगे बदन सो रही थीं। मंजरी

मंडप के तोते के पास बैठ कर रो रहीं थी। 'मुझ जैसी परित्यक्ता के लिए किसी का ऐसा लाल जूझ कर मर जायगा ! मुझको तो बड़ा अपराध लगेगा। मैं तो विष खाकर मर जाऊँगी।' नाऊ जाकर दरवाज़े पर खड़ा हो गया। वह कुछ बोल नहीं रहा है। वह चार पग पीछे हटकर खंखारने लगा। मंजरी के कानों में आवाज़ पहुँची। मंजरी वहाँ से भागी और जाकर महरिन के पेट पर गिर गयी। महरिन अचानक उठ गयीं। कहने लगीं—मेरी बिटिया सुनो। शाम को ही सिर में सिंदूर पड़ा तथा आधी रात में तुम मस्ती में पागल होने लगी। महर की बेटी दावन मंजरी बोली—मइया, तुमने ऐसा ताना मारा कि मैं सह नहीं सकती। न तो मेरे सिर में सिंदूर पड़ा है और न आधी रात में मैं पागल हुई हूँ। दरवाजे पर एक आदमी खड़ा है। ज़रा पूछ लो कि वह घराती है या बाराती। महरिन और मंजरी बाहर निकलीं तथा दरवाजे के निकट से साफ़-साफ़ पूछने लगीं—'भाई तुम्हारा वतन कहाँ है, तुम्हारा गोत क्या है ? तुम्हारा उद्देश्य क्या है ? तुमने कहाँ चढ़ाई की है। आधी रात को तुम कहाँ आये हो ?'

गांगी नाऊ ने कहा—मलकिन मेरी बात मानिये, जैसे मैं लोरिक का नाई हूँ वैसे ही तुम्हारा भी नाई लगूंगा। तुम्हारे लाड़ले लोरिक को प्यास लगी है। उन्होंने कलश का ठण्डा जल मांगा है। महरिन ने कहा—'नाई मेरी बात सुनो। नदी के तट पर बाराल है। मेरे दुलारे दामाद को नदी का पानी पिला दो। और नहीं तो अगोरी में दस बीस कुएं हैं उनमें से जल भर कर उन्हें पिला दो। तब गांगी हजाम ने कहा—'मलकिन, मेरी बात सुनिये। नदी का पानी खराब है। कुएं का पानी गंदला है। राजा की कुइयां संकरी है उसमें रेशम की डोर नहीं पहुँच सकती। लोरिक ने कलश का ठण्डा जल मांगा है। तुम्हारे दामाद को प्यास लगी है।'

महरिन घर से बाहर निकल कर दरवाजे पर खड़ी हो गयीं। पूछा—'तुम घराती हो, या बाराती। तुम मुझे ठीक-ठीक बतलाओ।' नाऊ ने कहा—'जैसे मैं लोरिक का नाई लगता हूँ वैसे ही आपका लगता हूँ ?' जब नाई यह बात कह रहा था। उसी समय महरिन ने अनुपी को पुकारा।

अर्थ—(२४०१—२७००)

तब, महरिन ने 'अनुपी' 'अनुपी' चिल्लाना शुरू किया। अनुपी आ कर आँगन में खड़ी हो गयी। महरिन ने कहा—ऐ मेरी भतीजी अनुपी, तुम नाई को सिन्दूर तथा काजल लगा दो। इसको घाँघरा पहनाओ तथा ललाट पर टिकुली चिपका दो। महरिन कह रही हैं कि चुपचाप तुम नाई के मस्तक पर टिकुली चिपका दो। वह नाई करगही नाच नाचेगा। इसने मण्डप में बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ ढाई हैं। सवा लाख कुटुम्ब-परिवार की स्त्रियाँ नंगे बदन सो रही हैं। यह जा कर बड़ी निंदा करेगा। गउरा के सब लोग हँसेंगे। अनुपी तब बाहर निकली। दक्षिण देश की बनी हुई झांपी (सन्दूक) उतारी। नाई के सिर पर सिन्दूर और काजल लगा दिया फिर उसको रत्नजड़ित घांघरा पहना दिया। अनुपी उसको 'गंड़थइया' नाच नचाने

लगी। गगिया ने एक हाथ सिर पर रक्खा एक अपनी कटि पर। वह रक्त के आँसू गिराने लगा। वह नाचते नाचते थक गया, तब धरती पर गिर पड़ा। कहने लगा, महरिन मैं आपकी कोटिश: दुहाई देता हूँ। मेरा अल्हड़ प्राण चला गया। महरिन ने कहा—ऐ अनुपी, इसका नाच बन्द करवा दो इसके माथे की टिकुली तथा रत्नजटित घांघरा उतरवा दो। ठण्डा कलश भर लेने दो' वह पानी 'जिरवा' और 'घेतार' पर (जहाँ बारात टिकी हुई है) ले जाय। मेरे दामाद को प्यास लगी है। नाई अपनी दुर्दशा का वर्णन करेगा। अनुपी वहाँ से कमरे मे चली गयी। नाई ने एक लोटा जल भर लिया तब तक मजरी ने अनुपी को देखा। मजरी भयभीत हो गयी। माघ पूस की कर्वीली ठंड थी—ऐसी ठण्ड कि शरीर खड़े-खड़े गिर जाय। ऐसे मे मेरे प्रिय (मुखमन्दन) जल पीयेंगे तो उनका कलेजा जल जायेगा। प्रातःकाल होगा, पौ फटेगी। पूर्व म कौवे शोर मचायेंगे। फिर बड़ा सघर्ष शुरू होगा। मेरे स्वामी लोहा कैसे संभालेंगे? इतना कहते हुए मजरी दूसरे छोर पर गयी। माघ के पाले को फेंक दिया। कलश मे फाल्गुनी का रख कर जल भर कर गगिया को दे दिया। जब गगिया जल लेकर चलने लगा तब महरिन नम्रतापूर्वक कहा—

मेरे नाई सुनो—मेरे लाडले से जा कर यह संदेश समझा कर कह दो—एईल (एला) की लता तथा वनबेलियाँ फूल उठी हैं। चमेली और कचनार के फूल भी पुष्पित हो चुके हैं। वह इस रात मे अहीर उन्हे चुन लें। अन्यथा सूर्य उगते ही ये सभी मुरझा जायेंगे। हजाम गगिया वहाँ आया जहाँ बारात टिकी हुई थी। लोरिक वहाँ पहरा दे रहा था। सवा लाख बाराती सो रहे थे। नाऊ वहाँ पहुँचा। लोरिक ने उससे हाल चाल पूछा। कौन सी स्त्री आधी रात ढलने के बाद रो रही थी? उस पर कौन सी मुसीबत पड़ी हुई थी। तब मल्ल गगिया ने कहा—मालिक मेरी बात सुनिये। आपकी विवाहिता मण्डप के बीच बैठ कर रो रही थी। क्या जाने कौन सी मुसीबत पड़ गयी है। वह फूट फूट कर (जार जार) रो रही थी। मैं उससे कलसे का ठंडा जल माँग रहा था। वह सो नहीं रही थी। तुम्हारी सास ने तुम्हें बुलवा भेजा है। उन्होंने कहा है—एला की लता फूल चुकी है, बेइलि फूल चुकी है। चमेली और कचनार फूल चुके है। रात मे अहीर उन्हें चुन ले जाय नहीं तो प्रात:काल सूर्य के उगते ही ये सारे फूल मुरझा जायेंगे।

अहीर लोरिक ने तत्काल जवाब दिया। मेरी सवा लाख बारात इस घेतार पर, जोर पर सोई हुई है। मैं अकेले पहरा दे रहा हूँ। मैं ससुराल करने कैसे जाऊँ? गगिया ने कहा—मालिक आप जाकर ससुराल कीजिए। मैं घूम घूम कर पहरा दूँगा। लोरिक अपने शरीर पर अंगरखा डालने लगा। पैर म उसने तम्वान (पाय-जामा) डाल लिया। तरकस लिया। फिर अपनी एड़िया म जूता डाल लिये। उसका दुपट्टा साठ गज का है। वह सँभाल कर फेंटा बाँध रहा है। उसकी कटारी छप्पन छुरिया वाली थी। उसकी बगल मे तलवार लटक रही थी। उसके बायें हाथ मे आल्हन तथा दाहिने हाथ म बिजली की तलवार थी। उसने सिर पर नर्मा की

बांध ली जिसमें एक प्रकार का छत्र 'मेघडम्बर' लहरा रहा था। लोरिक बारात से चला जैसे झूमता हुआ हाथी जा रहा हो। द्वार पर चिराग जल रहा था, गैस जल रही थी। अहीर वहाँ आया पर सारे दरवाजे बन्द थे। एक-एक किवाड़ के पीछे लोहे के मूसल लगे हुए थे। दरवाजे पर द्वारपाल ने आवाज लगायी। खिड़की से कोतवाल ने कहा—तुम्हारे लिए भीतर का बुलावा है। यदि तुम्हारे अन्दर शक्ति हो तो तुम अंदर जाओ। द्वारपाल ने ऐसा कहा। खिड़की से कोतवाल ने भी ऐसी ही बात की। अहीर चार पग पीछे हटा फिर उसने एड़ी से जबर्दस्त चोट की। लोहे का मूसल टूट गया। खंड खंड होकर कपाट गिर पड़ा। लोरिक पहली ड्योढ़ी पर प्रवेश कर गया। दूसरे पर उसने धक्का मारा तो दीवार गिर पड़ी। अहीर वहाँ से आगे बढ़ा। मंडप में कुर्सी रखी हुई थी। वह बायीं कुर्सी पर बैठ गया। उसकी निगाह सुग्गे पर पड़ी। आजमगढ़ के बढ़ई ने दालान पर सुग्गे की रचना की थी। लोरिक की जितनी दौलत और पूँजी थी, वह सभी बरामदे में अंकित की गयी थी। पीतल का छोटा-सा घर था। भीतर बहुत से फल आदि थे। द्वार पर पीपल का पेड़ था तथा झंडा फहरा रहा था। वहाँ बायें और दाहिने दुर्गा का स्थान था। वहाँ सोने का मन्दिर बनवाया गया था। लोरिक वहाँ दोनों समय पूजा करता था।

अब वहाँ का हाल सुनिये। अहीर उसे देख कर क्रोध में खाक हो गया। उसने पलक उठा कर नहीं देखा और उसने गूंगी साध ली। उधर से महरिन गुजरीं लाड़ले लोरिक ने ज़रा भी नज़र नहीं फेरी। तब महरिन ने कहा—ऐ भइया, सुवच्चन आपने कैसा गूंगा वर ढूँढ़ दिया है। मंजरी भाग्य से हीन है। यदि मजरी इतनी भारी थी तो इसे काट कर सोन नदी में फेंक देते। मेरी बिटिया कितने दिन जीवित रहेगी? यह कितने दिनों तक अगुली के इशारे से बात करेगी। जब महरिन ने इतना कहा तो सुबच्चन बोल उठे—मेरी बहन सुनो। मेरी बात मानो। जिस समय हम लोग गउरा नगर में गये थे उस समय वर को हमने ठीक से चुना था। जैसे पिंजड़े में वहाँ तोता बोल रहा था वैसे ही वर भी 'सीताराम' बोल रहा था। अब न जाने इस अगोरी में क्या हो गया? मंजरी का भाग्य फूट गया।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक की सास महरिन अनुपी से बोलीं—तुम सिन्दूर और काजल कर लो। रत्न जटित घाघरा भी पहन लो और करगही नाच नाचो। नाचते हुए लोरिक के पास जाओ। उनके आगे ताल दो। उनके गले में गुदगुदी होगी और तब हमारे दामाद बोल उठेंगे। पुत्री अनुपी ने सिन्दूर-काजल किया तथा बत्तीस आभूषणों से अपने को अलंकृत कर लिया। फिर करगही नाच नाचने लगी। वह नाचते नाचते थक गयी पर अहीर ने पलक नहीं खोली, न नज़र उठाकर देखा। तब सास महरिन ज़िद में आ गयीं। अपशब्द उच्चारण करने लगीं। यदि रोटी की कमी थी तो ऐ वर, तुम गउरा में ही रहकर बूढ़े क्यों नहीं हो गये? अहीर बोल उठा। सास मेरी बात सुनो—ऐसी ही रोटी की कमी थी तभी तो तुम्हारी लड़की ने मुझे निमन्त्रण भेजा। तुम्हारी सातवीं लड़की ने जो अन्तिम लड़की है, मुझे

सूचना भेजी है तब हम यहाँ तुम्हारे दरवाजे पर चढ़ाई करके आये हैं। तुम हमें ताने दे रही हो। अब अगोरी का हाल सुनिए। अनुपी ने यह बात सुनी। महरिन ताली बजाकर हँसने लगी। अहीर बीर सोरिक कहने लगा—ऐ सास, ऐ अम्मा, मेरी बात सुनिए। यदि मैं बढ़ई को जीवित पा जाता तो मैं उसकी ठुड्डी पकड़ कर दो हिस्सों में तोड़ देता। जितना मेरा धन और पूँजी है उसने सोने में अंकित कर दी है। मेरे माता पिता को उसने एक साथ चारपाई पर सुलाया है। मैंने उसका चरित्र देखा है। मेरे शरीर में गुस्सा बढ़ गया है। यदि मैंने बढ़ई को जीवित देख लिया तो मैं उसको दो टुकड़ों में ढेर कर दूँगा। महरिन ने कहा अनुपी मेरी भतीजी सुनो। गद्दी आदि लगा दो। सोने की खाट सजा दो और मेरे लाड़ले का पलंग पर ले जाओ। मेरे प्रिय दामाद यहाँ सायेंगे। आगे आगे अनुपी चली पीछे पीछे सोरिक चला। वह कोहबर में चला गया जहाँ सेज लगी हुई थी। सोरिक को सेज पर बैठाकर अनुपी वहाँ से चली गयी। अब मजरी का हाल सुनिए वह सोलह शृंगार करने लगी। बत्तीस आभूषणों से सजकर वह दर्पण में अपना मुँह देखने लगी—। ऐसा लग रहा था जैसे दूज का चाँद उदित हो गया हो। हाथ में आरती का थाल लेकर मजरी ठुमकती हुई धीरे धीरे चली आ रही है। वह आकर पलंग के पास खड़ी हो गयी। उसने सोरिक के दीर्घ जीवन के लिए थर उतारा उसके हाथ में पंच मेवा था। उसे खाकर उसने जल पिया। तब दोनों वहाँ बैठ गए। मजरी की बाँह पकड़ कर सोरिक ने बैठाया और उसे सुला दिया। एक ओर स्वयं सो गया। मजरी को उसने अपने हाथ से स्पर्श किया तब उसने कहा तुम्हें छोड़कर मैं दूसरे की नहीं होऊँगी तुम मेरी देह को क्यों छू रहे हो बस पूर्व में कोए शोर मचायेंगे फिर बस सूर्य के डूबते ही लोहा लग जायगा। यदि तुम्हारा शरीर अपवित्र हो जाएगा तो दुर्गा तुम्हारा साथ छोड़ देंगी। तुम मेरे और अपने बीच में तलवार रख दो, एक ओर तुम आनन्द करो तथा दूसरी ओर मैं आनन्द करूँ। हम लोग पलंग पर इस प्रकार सोयें जैसे भाई-बहन सोते हैं। तब दोनों सो गये। अहीर को नींद आ गयी। मजरी उठ कर सोरिक का स्वरूप देखने लगी। वह दाँतों तले अंगुली दबाने लगी। हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा! तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया?' मेरे जैसे—उच्छिष्टा के कारण जिसका ऐसा सुन्दर लाल जूझ कर मर जायगा? वह माँ हीरे का कण खाकर आत्मघात कर लेगी और मुझे बड़ा अपराध लगेगा। वह अहीर का स्वरूप देख रही है तथा भयभीत होकर अपनी तकदीर को कोस रही है। मन में कह रही है—बाबू तुमने किस जात का पीसा खाया है? किस तालाब का पानी पीया है? मजरी का किस चारपाई पर सुलाया है। सुबह बाध (मूज की रस्सी) गढ रहा होगा। मेरी जैसे उच्छिष्टा के कारण तुमने प्राण तज दिया। मजरी इस प्रकार सोच रही है। सोचते-सोचते वह जोर-जोर से रोने लगी। उसके रोने से अहीर सोरिक भीग गया। उसकी नींद उचट गयी। उसके शरीर में कुछ गीला-गीला सा लगने लगा। तब उसने नम्रतापूर्वक कहा—"जिस दिन से मैंने अपनी

गाँठ में बाँध लिया था, मैंने कोई पाप नहीं किये। बीच में न जाने कौन से अपराध मुझसे हुए कि महल टूट गया है, और पानी चू रहा है।'

भावार्थ—(२७०१—३०००)

ससुर का महल दुश्मन हो गया है, लगता है उसने टूटी झोपड़ी छवा दी है। मंजरी ने कहा—सइयां मेरी बात मानो, जिस दिन से तुमने गउरा छोड़ा है तुमने पापों का संग्रह नहीं किया। तुमसे कोई चूक नहीं हुई है और न मेरे पिता ने टूटी झोपड़ी छवाई है और न छत ही टूट कर चू रही है। मेरे रोने के कारण तुम्हारी दुलाई भीग गयी है। जब लोरिक ने यह बात सुनी तो उसने हाथ में बिजली वाली तलवार पकड़ ली। कहने लगा - दुष्टा, क्या तुमने मुझे लंगड़ा या पंगु समझ लिया है या मुझमें कोई कमी या नुक्स देख लिया। मेरे घर में धन या पूँजी की कमी है? क्या तुमने कुछ ऐसी खबर सुनी है? क्या सास और ननद की बातें सुनी हैं? किस गुण या अवगुण को देखकर तुमने सारी रात रुदन किया है। मंजरी ने उत्तर दिया, ऐ स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे पति, सुनिये। जब प्रात: काल होगा, पूर्व में कौवे शोर मचाना शुरू करेंगे, उस समय घाट पर युद्ध छिड़ जायगा। अगोरी में तलवारें चलेंगी। तब लोरिक ने कहा—मेरी विवाहिता, मेरा कहना सुनो। मैं गउरा में शांति पूर्वक रह रहा था। सुना कि अगोरी में एक राजा बड़ा बली है। उसके जोड़ का कोई दूसरा नहीं है। मैं विशेष रूप से उसी का पौरुष देखने आया हूँ। तुमसे विवाह करने वाली बात तो साधारण थी। मैं सोचता हूँ जल्दी भोर होता तथा दो हाथ जम कर तलवारें चलतीं। राम जिसको शक्ति देगा वही विजय प्राप्त करेगा! क्षण मे ही झगड़ा तय हो जायगा। लोरिक वहाँ से चल पड़ा और अपने जाजिम पर आ गया फिर पहरे पर तैनात हो गया। सोने का जो गिलाल बनाया गया था और जिसकी पेंद में सोलह टोटियाँ बनायी गयी थीं। उसमें गउरा के लोग दारू पी रहे थे। उसे पीते-पीते सवा लाख बारात जाजिम पर लेट गयी। तब कठईत ने कहा—बेटा तुम इस स्थान पर पहरा पूरा करो। किसी का बिस्तरा कहीं गायब न हो जाय? जिसकी टूटी लकड़ी चली जाएगी वह प्रातः काल चढ़ने के लिए घोड़ा मांगेगा। जिसका टूटा हुआ डण्डा चला जायगा वह ढाल और तलवार की मांग करेगा। जिसका फटा हुआ कम्बल चला जायगा वह पूर्वी 'राल' नामक कम्बल की मांग करेगा। तुम दण्ड पा जाओगे। अतः घूम-घूम कर तुम बारात का पहरा दो। अब उस समय का हाल सुनिये। लोरिक की सास महरिन उठीं और चोर खरफरिया के यहाँ गयीं। उसको बुलाया और कहा कि भइया खरफरिया, तुम मेरी बात सुनो। तुमने बहुत चोरियाँ की हैं एक चोरी तुम मेरे लिए कर लाते तो मैं तुम्हें रुपये-पैसे से अगोरी में आजाद कर देती। इतना धन देती कि तुम दो चार पुश्त बैठ कर खाते। आगे-आगे महरिन चलीं। पीछे-पीछे चोर चला। वह महर के आँगन में बैठ गया। महरिन ने उन्हें समझाकर कहा—देखो भाई सोने का गिलास गहरा है। उससे सवा लाख बाराती दारू पीते हैं। वह गिलास कहीं रखा होगा। भइया, वह गिलास

लाकर मेरे हाथ मे दे दो। मैं तुम्हारा जीवन एकदम चिन्ता मुक्त कर दूँगा। जब महरिन ने इतनी बात कही तो चोर जीर पर चला गया जहाँ अहीर की सवा लाख बारात टिकी हुई थी। गिलास सोरिक की जाँघ पर थी। सोरिक उसे उठाकर दारू पीता था और फिर उसे जांघ पर रख देता था। उसे देख कर चोर घर वापस लौट गया। उसने घर से सेंध काटना शुरू किया और अन्दर-अन्दर खादते हुए उसे बाहर निकाल ले गया। जब वह जाजिम पर आ गया तब धरती के अन्दर से कहने लगा। ऐ मेरी आराध्या भगवती, तुम मेरी नजर पर चढ़ जाओ। सोने का गिलास कहाँ है? तुम उसको पहचान करवा दो। उसकी नजर पर भगवती सवार हो गयीं। चोर आँख फाड़-फाड़ कर देखने लगा। सोरिक की पल्थी पर गिलास दिखाई पड़ने लगा। वह द्वार तक चला गया, जाजिम काटा। अहीर अपनी पल्थी पर रख कर सो रहा था। धरफरिया चोर गिलास उठा कर सेंध में चला गया और सुरंग के रास्ते अन्दर-अन्दर घर पहुँच गया। गिलास महरिन के हाथ म दिया। वह नदी की ओर गयी तथा गिलास को सोन भद्र के घाट पर फेंक दिया। गिलास बहकर हल्दी चला गया। वहाँ महीचन की सत्यवादी लड़की आधी रात मे स्नान कर रही थी। गिलास उसके शरीर से छू गया। उसने गिलास को उठा लिया और उसे घर लायी। कच्चा पीतल निकाल कर वह सोनार के घर गयी। वहाँ गिलास बनवाया। दोनो गिलासों को लेकर उसने अपने भण्डार-गृह मे रख दिया।

इधर सोरिक की नींद खुली तो (चिंतित होकर) उसने सोते हुए धर्मी संवरू को जगाया। कहा—भइया संवरू, सुनिये मेरे पहरे में चोरी हो गयी है। गिलास गायब हो गया है। प्रात काल, पौ फटते ही उसकी माग होगी। मैं गिलास कहाँ पाऊँगा? लोग कहेंगे—गउरा के लोग लालची थे। उन्होंने गिलास गायब कर दिया। उसी समय दोनो ने भगिया नाऊ को जगाया। ऐ नाऊ, तुम सब साथ बारातियों को देखो। हम लोग गिलास की खोज मे जा रहे हैं। उन्होंने दुर्गा का स्मरण किया। दुर्गा चील पक्षी का रूप धारण कर प्रकट हुईं। उनके बायें पंख पर सोरिक बैठ गया। दाहिनी ओर मल्ल संवरू बैठ गये। मा दुर्गा वहाँ से उड़ी तथा उन्हें स्वर्ग लोक इन्द्रपुरी मे ले गयीं। अब वहाँ का हाल सुनिये। वहाँ चन्द्रमा प्रकाशमान होकर उदित थे। दोनों भाइयों ने उन पर हमला कर दिया और उनकी मुस्कान बन्द कर दी। देवता चन्द्रमा रोने लगे। वह स्वर्ग मे सिर पटकने लगे। कहने लगे—ऐ अहीर, मेरे पहरे में चोरी नहीं हुई है। मैं कुछ यत्न नही कर सकूँगा। गुरु देवता यहाँ जगने वाले हैं। वह तुम्हें चोरी के बारे में बता देंगे। दोनो ने चन्द्रमा का बन्धन ढीला कर दिया। गुरु देवता को उन्होंने बाँध लिया। उन्होंने रोकर कहा—मेरे पहरे में चोरी नहीं हुई है नही तो मैं चोरी का रहस्य बता देता। शायद गर्नेसी मामा जग रहे हैं। वह तुम्हें चोरी के बारे मे बता सकेंगे। तब दोनों भाइयों ने गुरु देवता का बन्धन ढीला कर दिया और वे 'गोबर गर्नेसी' मामा के पास गये। उन्होंने [illegible]

गये और उनको बांध लिया। इन्द्रासन में तारा गोवर सइंती ने चोरी के बारे में बताया। नम्रता पूर्वक कहा—ऐ वीर लोरिक, ऐ सांवर सुनो। तुम इतना कष्ट मत सहो। मेरा बंधन ढीला कर दो। तुम्हारी सास खरफरिया चोर को बुला लायी थीं। उसने गिलास के लिए मौके की तलाश की, सेंध खोली और महरिन के आंगन से जीर तक जहाँ बारात टिकी हुई है, सुरंग बनायी। ऐ लोरिक जहाँ तुम बैठे हुए थे वहीं तुम्हारी जांघ पर गिलास था। चोर तुम्हारे आगे सेंध काट कर गिलास ले गया। गिलास ले जाकर शीघ्र ही उसने तुम्हारी सास को दे दिया। सास ने गिलास को सोनभद्र नदी में फेंक दिया। वह बहता हुआ हल्दी चला गया। महीचन्द की भाग्यशालिनी बेटी वहाँ थी। वह आधी रात में स्नान कर रही थी। उसके शरीर से गिलास छू गया। उसने गिलास को हाथ में ले लिया। फिर घर से कच्चा पीतल लेकर सोनार की दुकान पर गयी और सोने के गिलास के आकार का हूबहू एक पीतल का गिलास बनवा लिया। दोनों गिलास तैयार कर के उसने अपने भंडार गृह में सुरक्षित कर लिया है। तुम लोग कष्ट मत सहो। हल्दी चले जाओ। उन्होंने 'गोवर सइंती' तारा का बंधन ढीला कर दिया। फिर पश्चिम की ओर चले। उन्होंने दुर्गा का स्मरण किया। कहा—ऐ दुर्गा, तुम्हारे बल और शक्ति के भरोसे हमने इस भयंकर देश में प्रस्थान कर दिया। हे माता, आपने ऐसा सब उल्टा-पल्टा कर दिया है कि उससे हम लोगों की हानि होगी। आप चील का रूप धारण कीजिए। हमें जीर का ठिकाना बता दीजिए। वह जीर के नीचे उड़ कर आ गयीं। अब वहाँ का हाल सुनिये। दोनों भाई वहाँ आकर टहलने लगे और वहाँ का हाल चाल देखने लगे। वहाँ सवा लाख बारात सो रही थी। उन्होंने गंगिया से कहा कि तुम बारात की देखभाल करो हम लोग हल्दी जा रहे हैं। वहीं गिलास गया है। मलसांवर अपना सन्दूक खोलने लगे जिसमें दुशाला रखा हुआ था। उन्होंने दुशाला निकाला जिसमें हीरा और मोती के किनारे लगे हुए थे। उन्होंने दुशाले को बीच से फाड़ दिया। आधा लोरिक को दिया। फिर आधे को टुकड़ा-टुकड़ा कर कंथा बना डाला। सभी लोग तम्बू में सो रहे थे। सांवर ने हाथ में सारंगी उठायी। लोरिक ने हाथ में खंजड़ी ली। आधी रात ढलने पर वे हल्दी के घाट पर पहुँचे। उन्होने योगी का रूप बनाया और मौज में गीत गाने लगे। महीचन्द की बेटी हल्दी के घाट पर पहुँची। वहाँ बांस पर धोती टंगी हुई थी। योगी मस्ती में गा रहे थे। महीचन्द की लड़की ने कहा—गोसाईं बाबा, मेरी बात सुनिये। दिन भर में तुम्हें कितनी भिक्षा मिली है। तुम लोग मुझे बताओ। मैं तुम्हें उससे अधिक दूँगी। तुम मेरे दरवाजे पर चल कर मौज़ के साथ गीत गाओ। योगी मौज में गीत गाने लगे। पूरा हल्दी शहर मुग्ध हो गया। महीचन्द की बेटी भी मुग्ध हो गयी। कहने लगी—बाबा आप लोग कौन नशा खाते हैं? मैं उसे मंगा दूँगी। तब योगी मलसांवर ने कहा। बच्चा, हमने गाँजा तम्बाकू छोड़ दिया है। जब से हमने सातों तीर्थों का पर्यटन किया है तबसे हमने सिर्फ एक ही नशा बचा कर रखा है। हम सिर्फ भट्ठी का दारू पीते हैं। अन्यथा हमने बहुत

तीर्थ किया है। हम लोगों के पास जो कुछ था उसको हमने संकल्प करके दान में दे दिया है। हम लोगों ने कोई बर्तन भी नहीं रखा है। बच्चा जब सोने का गिलास आ जायगा। तब हम तुम्हारे हाथ का दारू पीयेंगे। जब महीचंद की लड़की ने यह सुना तो वह अपने महल में चली गयी।

भावार्थ—(३००१—३३००)

भंडार-गृह से पीतल का गिलास निकाला। लाकर उसे योगिया के हाथ में दे दिया। दोनों भाई गिलास देखने लगे। पीतल का यह गिलास हूबहू सोने के गिलास की भाँति था। दोनों भाइयों ने गिलास को देखा। लोरिक को थोड़ा सन्देह हुआ। कहा—ऐ मेरी दुर्गा, तुम धन्य हो। तुम आदि के दिनों से ही मेरी आराध्या हो। तुम मेरी नजर पर चढ़ जाओ। सोने और पीतल की पहचान करा दो। तब दुर्गा नजर पर सवार हो गयी। लोरिक आँखें फाड़ कर देखने लगा। पीतल का बर्तन पहचान में आ गया। अहीर ने उसे फेंक दिया और लड़की से कहा—तुम्हें कौन-सा अभिशाप दूँ ? यह जल कर खाक हो गया। कहा—मैंने तुमसे सोने का बर्तन माँगा तो तुमने मुझे पीतल का दे दिया। मैंने सोने का संकल्प किया था। तुमने पीतल मेरे हाथ से स्पर्श करा दिया। मैं सोने के बर्तन में छक कर दारू पीता। लड़की दूसरी बार भंडार गृह में गयी तथा उसने गिलास लाकर दे दिया। योगी गिलास उलट कर देखा। कहा—यही हमारा गिलास है। अब दोनों भाई गिलास में ढाल ढाल कर मद पी रहे हैं। उनकी आँखों में सुर्खी चढ़ गयी। फिर योगियों का हाल सुनिये। उन्होंने सारंगी पटक दी, खजड़ी फेंक दिया। धूल झाड़ते हुए वीर वहाँ से चल पड़े। दोनों भाई गरजते हुए चले जा रहे थे। वे बत्तीस हाथ उछल रहे थे। एक घड़ी के अन्दर वे जीर के सिवार पर पहुँच गए जहाँ बारात टिकी हुई थी। प्रात काल हो गया। पौ फटने लगी। पूर्व में कौवे शोर मचाने लगे। महरिन ने सुवच्चन को पुकारा। सुवच्चन दौड़कर पास आ गये। कहा—भैया, सुवच्चन सुनो। मेरी बात मानो। जो गिलास बारात में गया था उससे सारे बारातियों ने मद पीया है। उस गिलास को जरा माँग लाओ। मेरे (घराती) मेहमान उससे दारू पीयेंगे। मल्ल सुवच्चन वहाँ से चले तथा जीर पर पहुँच गए जहाँ अहीर की बारात सोयी हुई थी। मल्ल सुवच्चन ने कहा—ऐ वृद्ध कठईत, आप मेरी बात मानिए। ऐ समधी जो शाम को गिलास यहाँ आया था और जिससे तुम्हारी मवासाय बारात ने दारू पीया था उसकी माँग मेरी बहन ने की है। मेरी बहन ने हुक्म दिया है कि उससे इस समय पर आने अतिथि (घराती) दारू पीयेंगे। उसे तुम मेरे हाथ में दे दो। समधी ने गिलास हाथ में दे दिया सुवच्चन गिलास लेकर चले गये। महरिन के हाथ में उसे दे दिया। महरिन ने जब उसे उलट कर देखा तो छाती पीटने लगी। बातें बना बनाकर कहने लगीं—मैंने ऐसे अहीरों को नहीं देखा है। मैंने सारे संसार का भ्रमण किया है। जो पानी में गिलास डूब गया, बचा नहीं, उसको इन्होंने कैसे प्रकट कर लि

आधी रात ढल चुकी थी। इधर मजरी ने ...

स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ पति, मेरी बात सुनिए। यहाँ गोठानी में बड़े शक्तिशाली देवता हैं। तुम वहाँ चलकर हाथ जोड़कर पाँव पर गिरो। उनसे वरदान माँगो। तब अहीर वीर लोरिक ने कहा—ऐ मेरी विवाहिता, तुमने देवता देवता क्या किया है। चलो, हमें देवता को दिखला दो। मैं उनके पाँव पड़ता हूँ और वरदान माँगता हूँ। महर की पुत्री मंजरी ने जब यह बात सुनी तो वह आगे आगे चली उसके पीछे-पीछे लोरिक चले। वे सेमल के पास गये जहाँ शिवशंकर का मन्दिर था। मंजरी जाकर शिव के पाँव पर गिर पड़ी तथा वरदान माँगने लगी। उसने मस्तक पर विभूति लगा ली तथा दरवाजे से बाहर निकली। लोरिक से कहने लगी—ऐ स्वामी, ऐ मेरे सुखनन्दन, ऐ मेरे पति, मेरी बात मानिये। आप महादेव शिव का पाँव पकड़िये तथा उनसे वरदान माँगिये। अहीर जाकर मंदिर के द्वार पर खड़ा हो गया। कहा—ऐ महादेव, सुनिये। यदि तुम्हारी मूर्ति में शक्ति है तो हँसकर, ठहाका मारकर बोलिए। नहीं तो ऐसे ऐसे पत्थर तो मेरे गउरा गाँव में बहुत हैं। यदि तुम मेरा गुस्सा बहुत बढ़ाओगे तो हाथ में तुम्हें लेकर यहाँ से फेंक दूँगा और जब मैं उठाकर फेंकूँगा तो तुम गउरा गाँव में जाकर गिरोगे।

अहीर लोरिक ने इतनी बात कही पर महादेव ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब उसने म्यान फेंक दी तथा दस्तगी तलवार तान ली जिससे चारों तरफ अंगारे फैल गये तथा अंगारों की लपट आकाश तक पहुँचने लगी। नीचे दावाग्नि फैल गयी तथा शिव मन्दिर उसमें छिप गया। तब पत्थर की मूर्ति हँस पड़ी। महादेव ठहाका मारकर हँस पड़े। कहने लगे—भइया लोरिक जाओ। मैं अगोरी में तुम्हारी जीत करा दूँगा। महादेव ने जब यह बात कही तो मंजरी ने अपनी तकदीर ठोक ली। कहने लगी—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया। जब से मैंने अगोरी में जन्म लिया है तब से मैंने शिव की बड़ी सेवा की है। मैंने उन्हें दूध और घी में स्नान कराया है पर मूर्ति कभी नहीं बोली। अब जब बराबरी का मुकाबला हुआ तब पत्थर की मूर्ति ठहाका मार कर हँस पड़ी। अब वहाँ का हाल सुनिये। दोनों वहाँ से चले। मंजरी नम्रतापूर्वक बोली। ऐ स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट, सुनिये। एक यह बंसरा भवानी हैं। आप उनसे वरदान माँगिए। मंजरी आगे आगे चली। पीछे पीछे लोरिक चला। उसने बंसरा भवानी से कहा—यदि तुम्हारी मूर्ति में शक्ति है तो तुम उठ कर मुझसे दो शब्द बातचीत कर लो। अन्यथा मैं खड्ग खींच लूँगा तथा तुम्हें तो भागों में खंडित कर दूँगा। मूर्ति तब भी नहीं बोली। लोरिक ने तलवार खींच ली। उसकी आवाज़ आकाश में गूंज गयी। लपट मन्दिर में प्रवेश कर गयी। तब भगवती हँस पड़ीं। नम्रतापूर्वक बोलीं। ऐ भाई अहीर, तुम जाओ। मैं अगोरी में तुम्हारी विजय करा दूँगी। तब महर की पुत्री मंजरी हँस पड़ी। मैंने बहुत दिनों तक भवानी की सेवा की। इनको दूध और घी में नहलाया पर मूर्ति खुलकर कभी नहीं बोली। अब जोड़ से काम पड़ा तब पत्थर की मूर्ति ठहाका मारकर हँस पड़ी। मंजरी नम्रतापूर्वक बोली—ऐ मेरे स्वामी, ऐ मेरे सुखनन्दन, ऐ मेरे सिंदूर के

मालिक, अगोरी के राजा के पास बारह मल्ल हैं। उनके जोड़ का संसार में कोई नहीं है। वे राजा की ड्योढ़ी पर निश्चिंत होकर खा रहे हैं। जो सबसे बड़ा मल्ल है उसके जोर का थाह नहीं। अखाड़े में जो नाल रखी हुई है तुम उसको पोरसे भर उठा लो तब मुझे तुम्हारी शक्ति का विश्वास होगा। और लोरिक ने कहा—ऐ विवाहिता, तुम 'नाल नाल' क्या कह रही हो, तुम चलकर नाल दिखला दो। जरा देखूं कि नाल मुझसे उठता है या नहीं। मैं उसे पोरसे भर उठाता। आगे आगे महर की पुत्री मजरी चली। पीछे पीछे लोरिक चला। मजरी नाल के पास खड़ी हो गयी। सइया, देखिए यही नाल है। अहीर ने अपनी कनिष्ठा अंगुली उसमें डाल दी और नाल को पोरसे भर उठा कर घुमाने लगा। कहने लगा—ऐ मेरी विवाहिता, तुम मेरी बात सुनो। तुम कहो तो मैं नाल को यहां से ऐसा फेंक दूं कि वह जाकर गउरा गुजरात में गिरे। यदि नहीं तो तुम कहो तो मैं इसे सोन भद्र में फेंक दूं कि नाल का घेरा टूट जाय। यदि नहीं तो तुम कहो, मैं इस नाल को किले पर फेंक दूं ताकि किले का गुंबज टूट कर गिर पड़े। तब मजरी ने नम्रतापूर्वक कहा—सइया, राजा के बारह मल्ल हैं। वे बारहों दैव के साले हैं। जब वे अखाड़े में कसरत कर लेते हैं और जाकर इमली के पेड़ में धक्का मारते हैं तो इमली का पेड़ जड़ से हिलने लगता है। और लोरिक इमली के पेड़ के पास गया। दाहिनी अंगुली से उसे दबाया। पर इमली का पेड़ अभी सो रहा था। लोरिक घूमते हुए अखाड़े से होते हुए महर के घर गए।

अब यहां का हाल सुनिए। लोरिक ने सिर से पैर तक चद्दर तान ली। मजरी के साथ वह वैसे ही सो गया जैसे नाते में भाई बहन हों। पलंग पर दोनों जमकर सो गए। अब राजा का हाल सुनिए हाथी का हौदा उन्होंने कसवा लिया। पचास गुंडे शहर में छोड़े गए। गुंडों ने महर का घर छेंक लिया। प्रात काल बहुत तड़के महरिन आंगन बटोर रही थी। अगोरी के राजा मोलागत दरवाजे से ही बोल उठे। ऐ भाग्यशालिनी महरिन, आप सुनिये। मेरी बात मानिए। शीघ्र मजरी की पालकी सजवाइए मैं उसे अपने किले के भवन में ले जाऊंगा। महरिन ने कहा—मोलागत आप सुनिए। मेरी बेटी दीन थी। जिसने उसके सिर में सिन्दूर डाला है वह उसके साथ कोहबर में सो रहा है। गूंगा दरवाजे पर गाली देने लगा। महरिन से रहा नहीं जा रहा था। वह कोहबर में गयी जहां दोनों सो रहे थे। दोनों चद्दर तान कर वहां सो रहे थे। वह अचानक जग उठा। उसने दरवाजे पर फौज देखी तो उसे गुस्सा चढ़ गया। वह जिसका मुख पकड़कर खींचता उसके बत्तीसो दांत टूट कर गिर जाते। जिसका पैर पकड़कर वह खींचता तो वह लगड़ा और लूंज पूंज हो जाता था। राजा मोलागत वहां से भागा। उसने महावत को गाली दी। कहा—हाथी को सीधे भाला घोंप दो तो अपना प्राण बचाकर मैं किले के भवन की ओर नहीं भागता। हाथी भाग कर अगोरी के किले में आ गया। अब यहां का हाल सुनिए। अहीर वहां से भाग कर बारात में आ गया। उसके दो चार दोस्त और समवयस्क जग रहे थे। सवालाख बारात सो रही थी। लोरिक के दोस्त हंस पड़े। ऐ अहीर बात हमारी सुनो। शाम को तुम मंजरी के सिर में सिन्दूर डाला। आधी रात को ही ससुराल

कर ली ! लोरिक ने हाथ जोड़कर कहा—भइया, तुम लोग मेरी बात सुनो—यह बात या तो मैं जानता हूँ या तुम लोग जानते हो। सवालाख बाराती यंह बात न जानने पावें। नहीं तो अगर कहीं मेरे काका कठईत इस बात को सुन लेंगे, धर्मी भइया संवरू सुन लेंगे, गुरु अजयी सुन लेंगे तो मेरा हृदय लज्जित हो जायगा।

प्रात:काल हुआ। पौ फटने लगी। पूर्व में कौवे शोर मचाने लगे। महरिन ने सुवच्चन की पुकार लगायी। सुबच्चन आकर द्वार पर खड़े हो गये। महरिन ने कहा—जाकर बारातियों को यह सूचना दे दो कि यदि वे गाय भैंस के इच्छुक हों तो मैं दहेज का अम्बार लगा दूँगी। पर्वत और पहाड़ खड़ी कर दूँगी। यदि उन्हें सोना और द्रव्य की भूख हो तो मैं मंडप में खोल में बांधकर उन्हें सोना और द्रव्य दूँगी। जो विवाहिता मंजरी के लिए इच्छुक हैं वह किले से पालकी उठा ले जाय। संवरू गाय और भैंस के लिए भूखे थे। उन्होंने ढोरों का पहाड़ एकत्र कर लिया। बाराती द्रव्य के भूखे थे। उन्होंने मंडप में द्रव्य एकत्र कर लिया। लोरिक विवाहिता के लिए भूखा था। उसने किले से डोली फंदवा दी। मंजरी रुदन कर रही थी। कह—रही थी—माँ मेरी बात सुनिए। हर रोज़ बहुत तड़के अँधेरे में ही मैं तुम्हारे लिए मक्खन मथती थी। आठ 'नेत (मथानी की रस्सी) दस कनिया' तथा दस मिट्टी के बर्तन (चरूई) यहाँ रोज़ फूटते थे। यदि इतनी क्षति गउरा में होगी तो सास ताना मारेंगी। कहेंगी—यदि ऐसे जबर्दस्त की बेटी होती तो तुम सोने की हांड़ी, तथा सोने का बर्तन अपने साथ लाती। मइया तुम मुझे इतना सामान दे दो।

भावार्थ—(३३०१—३६००)

तब पालकी में पैर रखूँगी। महरिन ने स्वीकृति नहीं दी। मंजरी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। अब सुबच्चन का हाल सुनिये। वह वहाँ गये। सुबच्चन ने कहा—बहन सुनो। भांजी घर से चली जा रही है। बर्तन की क्या कीमत है? तुम मथानी की रस्सी (नेत) भी उसे दे दो ताकि वह उसे पालकी में रख ले और उसकी चिन्ता दूर हो जाय। माँ ने दहेज में सोने के बर्तन आदि दे दिये। मंजरी पालकी में चली गयी। फिर दरवाज़े पर गयी जहाँ पिता बैठे हुए थे। उनका पैर पकड़ कर मंजरी रुदन करने लगी। पिता, मेरी बात सुनिये। जहाँ आपने मेरी शादी की है वहाँ युद्ध का ही उठना बैठना होता है। युद्ध ही अहीर के प्राण का आधार है। यदि उसका पैर ऊंचा नीचा पड़ गया तो वह अपना मस्तक गँवा देगा। गउरा में मेरे ऊपर भारी विपत्ति आ जायगी। मैं वैधव्य कितने दिन भोगूंगी। (अब वहाँ का हाल सुनिये।) मंजरी ने महर के पैर पकड़ लिये। पिता बोल नहीं सके। उस समय मामा सुबच्चन उपस्थित हो गये। कहने लगे—ऐ बहनोई, ऐ महर सुनिये, भाँजी जैसी चीज़ घर से निकली जा रही है। पगड़ी की क्या कीमत है? तुम दहेज में उसे पगड़ी दे दो ताकि भैने पालकी में पैर रखे। मंजरी ने पगड़ी उठा कर रख ली उसमें हीरे और मोती के गोट लगे थे। यदि मंजरी पर कोई विपत्ति आ जायगी तो वह बैठ कर दो चार पुश्त खायेगी। इतना अतुल धन लेकर मंजरी पालकी में बैठ गयी। वहाँ से

पालकी उठी तथा पाँच पग चली फिर मैदान में आ गयी। लोरिक भी अब आकर सबका अभिवादन करने लगा। सास ने उसे सोने की किनारी वाली धोती दी, उसमें सोने की करधनी लपेट दी। वहाँ से अहीर बाहर आया। द्वार पर ससुर महर बैठे हुए थे। लोरिक ने झुक कर उन्हें प्रणाम किया। महर ने उन्हें जी भर कर आशीर्वाद दिया। जेब में हाथ डाली उसमें से साठ मुहरों का हार निकाला और अपने लाड़ले दामाद के गले में पहना दिया। वहाँ से मर्द आगे बढ़ा और पालकी के पास खड़ा हो गया। उसने अगोरी की बहुत सी गलियाँ देखी। उसने अपने मन में कहा—मैं ऊँचा नीचा देख कर किसी गली या रास्ते से निकल जाऊँगा तो मोलागत सुनेगा और ताना मारेगा। यह कहेगा—अहीर चोर था। ऊँचा नीचा देख कर डोली लेकर वह भाग गया। उसने बत्तीस कहारों से कहा—डोली को किले के समीप से पार करते हुए ले चलो।

अब वहाँ का हाल सुनिये। मंजरी की डोली चली। इधर राजा मोलागत की कचहरी लगी हुई थी। उसकी नजर डोली पर पड़ी तो वह रक्त के आँसू बहाने लगा। हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया। हमने बचपन से इस पक्षी को जिलाया। भिगा कर चने की दाल खिलायी यह साला, कहीं का परदेसी चढ़ आया और मेरे पक्षी को उड़ा कर लिये जा रहा है। यदि अगोरी में कोई मर्द होता तो अहीर के बाहर निकलते ही खेत पर उसे मार डालता। डोली को उठवा कर किले में लाता। मैं मंजरी के साथ रनिवास में भोग करता।

अब वहाँ का हाल सुनिये। दरबार लगा हुआ है। मन्त्री तथा अन्य लोगों ने राजा से कहा—हमारी बात सुनो। तुम्हारे ऊपर कौन सी मुसीबत आ गयी है कि तुम फूट फूट कर रो रहे हो। इस मुनगे से लड़ने के लिए तुम्हारा सारा शहर और बाजार वहाँ पड़ा हुआ है। वे उसे सत्तू में नमक की भाँति चूर-चूर कर देंगे। जब मन्त्री ने इतनी बात कही तब राजा ने कहा। बारह मन्त्रों के सरगना को जिसके जोड़ का कोई दूसरा नहीं है जोर और घेतार पर भेज दो। वह जाकर अहीर को मार डालेगा। तब हर रोज की मुसीबत टल जायगी। अगोरी से सिपाही छूटे और भाँट के घर गये। उसके जोड़ का दूसरा मन्त्र नहीं था। भाँट की छोटी और बड़ी दोनों औरतें घर पर पूनी से चर्चा कात रही थी। सिपाहियों ने भाँट से कहा—'सूबा ने तुम्हें बुलावा भेजा है।' भाँट चाँदनी पर जा कर खड़ा हो गया। सूबा मोलागत ने उससे कहा—"मैं तुम्हें आधा राज्य दूँगा। आधा किला और महल दूँगा आधा गाँव और हाट दूँगा। गेहूँ जो आदि के भण्डार से आधा दूँगा। आधे नौकरों को तुम्हें दे दूँगा। तुम मेरे आधे के पट्टीदार हो जाओगे।" पर भाई तुम इस अहीर को मार डालो। उसे रौंद कर सत्तू का नमक बना डालो। मंजरी की डोली जल्दी से उठा कर किले में लाओ। मैं उसके साथ रनिवास में भोग विलास करूँगा। भाँट ने यह बात सुनी ही थी (पत्नी वहाँ चर्खा कात रही थी।) मस्त ने चरखे पर ठोकर मारी। चरखा पूनी समेत चटख कर टूट गया। बुजर मैं आधे [illegible]टी-दार हो गया हूँ। मैं अगोरी का राज्य पा गया हूँ।

मुझे प्राप्त हो गया है। हाथी घोड़ों में आधा तथा नौकरों में आधा हमारा हो गया है। इस साले अहीर की क्या हस्ती है? जाते ही उसको खेत पर पटक कर मार डालूँगा। लौंडी (पत्नी) ने जब यह बात सुनी तब उसे जवाब दिया। ऐ मेरे स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट, सुनिये। मारने से अहीर नहीं मरेगा और न तो अग्नि में वह जल सकेगा। उसकी वाणी मधुर है। वह युद्ध में बाँका और जुझारू है। जो अहीर के दाव में पड़ जायगा उसकी विवाहिता राँड़ हो जायगी। भांट ने अपनी छोटी पत्नी का झोंटा पकड़ लिया। ऊपर से दो चार घूंसे भी लगा दिये। बुजरो, तुम मेरी बात मानो। गांव घर के नाते अहीर तुम्हारा भतार है। तुम मेरे जैसे वीर के लिए अपमानजनक बात कर रही हो। ऐसा कहते हुए भांट वहाँ से रवाना हुआ। सीढ़ियों से नीचे उतर गया, जीर और खेतार पर गया। लोरिक की नजर उस पर पड़ी। मंजरी से मधुर वाणी में उसने कहा—मेरी विवाहिता सुनो। मेरी बात मानो। किले से एक मर्द आ रहा है। दायीं ओर शत्रु है। पहले मैं तुम्हें सहेजूंगा फिर थोड़े समय में मैं तैयार हो जाऊँगा। मंजरी ने पाँच रंगों का पर्दा फेंक दिया, गर्दन निकाल कर देखा। लोरिक से कहा—मेरे स्वामी, मेरे सुखनन्दन, मेरे सिर के मुकुट, अभी तक किसी तरह जिन्दगी बच गयी पर अब तुम्हारी जिन्दगी नहीं बचेगी। यह मल्ल बेजोड़ है।

अब भांट का हाल सुनिये। वह पालकी के पास पहुँच गया। झुककर माथा नवाया। लोरिक ने पूर्ण आशीर्वाद दिया। तुम अक्षय रहो, अमर रहो तथा लाख साल तक जीवित रहो। जैसे गंगा का जल बढ़ता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े। भांट ने कहा—तुम मंजरी की डोली छोड़ दो। मैं उसे किले में रनिवास का भोग कराऊँगा। मेरे बूढ़े राजा को स्त्री का ख्याल आया है। उनकी तरुणाई जागी है। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो मैं जबर्दस्ती तुम्हें इस खेत पर मार डालूंगा। मैं डण्डे से तुम्हारी खाल खिचवा लूंगा और उसमें भूसा भरवा दूंगा। तब अहीर ने नम्रतापूर्वक कहा—ऐ वीर सुनो। शालि धान का डंठल कैसा होता है? तुम उसका बोझा बना कर लाओ और मुझे दो। मेरे घर की झोपड़ी टूटी हुई है मैं उसे अपने घर ले जाऊँगा। मैं जाकर अपनी झोपड़ी ठीक करूंगा तथा अपनी विवाहिता की डोली सहज ही में छोड़ दूंगा। तुम इसे किले में ले जाओ और रनिवास भोग कराओ। भांट ने इस बात पर विश्वास कर लिया। वह घर लौट गया। हाथ में टांगी उठायी तथा गेरू पर्वत पर चढ़ गया। अच्छा-अच्छा (चुन कर) शालि धान काटा तथा उसका बोझा बनाया। बोझ लाकर उसने डोली के पास पटक दिया। कहा—ऐ लोरिक मैंने तुम्हारी बात मान ली। अब तुम मेरी बात मान लो। तुम मंजरी की डोली छोड़ दो। मैं रनिवास भोग के लिए उसे ले जाऊँ। 'लोरिक ने जब यह बात सुनी तो वह अपना गुस्सा संभाल नहीं सका। उसने उसके मुँह पर जबर्दस्त घूसा मारा। भांट के बत्तीस दांत टूट कर गिर गये। फिर अहीर ने अपनी गोजी उसके शरीर पर चलाना शुरू कर दिया। जहाँ-जहाँ गोजी लगती थी। भांट के शरीर से खून निकलने लगता

था। वह व्याकुल हो उठा। लोरिक की दुहाई देने लगा। मंजरी की भी वह लाग-लाग दुहाई देने लगा कहने लगा—हाय मेरा प्राण चला गया। तब बाहर निकल कर मंजरी ने लोरिक की कटि पकड़ ली। नम्रता पूर्वक बोली—स्वामी मेरी बात सुनिये। तीन जातियों को नहीं मारना चाहिए—एक तो ब्राह्मण, दूसरा भाट तथा तीसरा कहार। इस भाट को मारने से बड़ा पाप लगेगा। इसको बचपन से ही पाला गया है। लोरिक बहुत ही हठी था उसने समझाकर कहा—मेरी विवाहिता सुनो। मेरी बात मानो। झोपड़ी की छत पर बछिया चढ़ जाय तो मैं कुत्ते और बिल्ली की खोज करूँगा।

अहीर ने धीरे से कहा—ऐ भाट सुनो। शांत चित्त जमीन पर बैठे रहो। उसने स्वयं बेल तोड़े और उनको डोंगी से परछ कर बड़ा सा गट्ठर बनाया तथा भाट के सिर पर उठा दिया। साले, तुम इसे लेकर किले में जाओ। रास्ते में कहीं एक भी बेल को फेंका तो किले में तुम्हारा मस्तक काट लूँगा। भाट वहाँ से चला। उसके मुँह से खून निकल रहा था। उसके मुँह में एक भी दांत नहीं रह गया था। वह रोते हुए घर जा रहा था। उस वक्त उसकी छोटी और बड़ी पत्नी ने आपस में झगड़ा किया। बड़ी ने कहा—लोरिक मेरे ननदोई हैं। उन्होंने बड़ी विदाई दी है।

भावार्थ—(३६०१—३८००)

इसी बीच भाट आ गया। आगन में गठरी पटक दी तथा खाट पर भहरा कर गिर पड़ा। छोटी पत्नी झाड़ू लेकर पहुँची तथा उसे दो चार झाड़ू लगाये। उसने कहा—'ऐ दुष्ट, सुनो। तुमने कहा था कि गाँव घर के नाते से अहीर मेरे साथ बदमाशी करने वाला (मर्दाह) है और मैं तुम्हारे जैसे जबर्दस्त पहलवान को सौंपा दिया रही हूँ। इस परदेशी अहीर को तुमसे अधिक सशक्त ठहरा दिया।' आज तुम दोनों का झगड़ा तय हो गया। यह तुम्हारी क्या दशा हो गयी? अब वहाँ का हाल सुनिये। कचहरी के लोग कह रहे हैं। ऐ मंत्री, सुनो। भाट गेन पर गया और दोनों ने समझौता कर लिया। भाट स्वयं आकर अपने घर में बैठ गया। उसने कुछ खबर तक नहीं दी। तब तुर्की और सिपाही वहाँ से छूटे। वे मन्त्र के घर गये। उसका हाल देखा। सिपाही घर-घर कापने लगे। उन्होंने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया? हम सूबे की नौकरी छोड़ देंगे और किसी मुल्क में चले जायगे। नहीं तो वह ऐसे ही रण में भेज देगा और हमारी भाट जैसी दशा होगी। सिपाही भयभीत हो गये। भाट वहाँ से द्वार पर आया। भाट ने अपनी बड़ी पत्नी से कहा ऐ मेरी पत्नी सुनो, खिड़की पर प्रमाण पत्र रखा हुआ है। मैं उसे सूबा को सुपुर्द कर देना चाहता हूँ। किसी प्रकार मेरी जिन्दगी बच जाती। मैं किसी प्रकार यहाँ से भाग जाता। शीघ्र भाग कर जाता। भलाई की कोई आवश्यकता नहीं है। इधर राजा सोनापत रो पड़ा। चादनी पर वह अपना सिर पटक रहा है। मंजरी मेरा राज्य छोड़ कर चली जा रही है। इस लौंडे को हमने बचपन से ही जिमाया है। किसी कर को भी दान दी है। यहाँ कहाँ का परदेशी चढ़ आया

है तथा मेरी सुग्गी को उड़ाये लिये जा रहा है। अगोरी में आज ऐसा कोई मर्द नहीं है जो खेत पर पटक कर अहीर को मार डाले। तथा डोली को किले में फंदवा दे। तब मन्त्री ने अपना मंतव्य प्रकट किया। चुगुली करने वालों ने समझा कर कहा— 'ऐ राजा सुनिये। हमारी बात मानिये। अहीर मारने से नहीं मरेगा, न तो वह अग्नि की ज्वाला में जल सकेगा। सारी पल्टन को एकत्र करो। तब अहीर को मारो। चारों तरफ पत्र लिख कर राजाओं को बुलाओ। अगोरी की सारी प्रजा और अपनी जितनी सेना है, सब को खड़ा करो। अगोरी के जितने कर्णधार हैं सबको पलटन में खड़ा कर दो। बांके घोड़ों को अहीर के बीच ललकार दो। चारों कोनों पर सूबे रहेंगे अहीर का पूत कहाँ भागेगा? साले को रोककर जीर पर मार दो। रौंदकर सत्तू के नमक की भांति उसे चूर-चूर कर डालो। अब वहाँ का हाल सुनिये। मंत्री ने सूबा को इस प्रकार की राय दी। सूबा ने कोरा कागज निकाला। हाथ में कलम और दावात ली। चारों कोने में पत्र लिखा। पहले पश्चिम दिशा में पत्र लिख कर बघेलों के राजा को निमन्त्रण भेजा जो तोप चलाने में सशक्त था। दूसरा पत्र उसने दक्षिण में लिखा तथा कोलों के राजा को निमंत्रित किया जो तीर चलाने में तेज था। फिर पूर्व के राजा को निमन्त्रित किया जो युद्ध में शक्तिशाली था। उत्तर देश के राजा को भी उसने पत्र भेजा। वहाँ के रकसेल राजा का बरछा बारह मन का था। वह अहीर को पटक कर मार डालेगा। अगोरी के राजा ने रच-रच कर पत्र लिखा। ऐसा कि यदि क्षत्रिय होगा तो अन्न ग्रहण करना बन्द कर देगा। वह जाकर रक्तपान करेगा जो भोजन कर रहा होगा वह भोजन छोड़ कर अगोरी में आकर हाथ धोयेगा। उसने लिखा—मेरा अगोरी का राज्य उजड़ रहा है।

परदेशी अहीर चढ़ आया है। उसने अगोरी में झगड़ा पैदा कर दिया है। राजा ने पत्र लिख कर सबको निमन्त्रण भेज दिया है। राजा के सिपाही छूटे। वे सम्पूर्ण अगोरी में बिखर गये। अगोरी की जितनी प्रजा थी और उसमें जितने जवान और बलवान थे उनको सूबा के लिए रण तैयार करा रहा है। उन्होंने जाकर जीर और खेतार पर मोर्चा बन्दी कर दी। फौज ने जाकर वहाँ घेरा डाल दिया। युद्ध का डंका बजने लगा। जुझारू लकड़ी बजने लगी। सिंहनाद होने लगा। फौज चढ़ चली, सबकी सुध-बुध जाती रही। अगोरी का जीर और खेतार फौज से घिर गया। तब मंजरी ने नम्रता पूर्वक कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने भाग्य में क्या लिख दिया! एक फतिंगे के लिए इतनी फौज चढ़ कर चली आ रही है। चार कोने पर चार सूबे हैं। बीच में फौजों की सात कतार है। महर की पुत्री मंजरी ने लोरिक से कहा—हे स्वामी, हे सुखनन्दन, हे पति तुम आँखों से ओझल हो जाओ। मेरे पास विष है। तुम्हारे हटते ही मैं उसे खा लूंगी। मैं जहर खाकर मर जाऊँगी। अहीर आज फौज द्वारा मार डाला जायगा तब मेरा ठिकाना कैसे लगेगा। तब अहीर लोरिक ने कहा—मेरी विवाहिता, तुम मेरा कहना मानो। जहर की पुड़िया कहाँ है? ज़रा मुझे दिखाओ। हम दोनों मिलकर ज़हर खा लेंगे। हर दिन का झगड़ा मिट जायेगा।

मंजरी को इस बात पर विश्वास हो गया। उसने अपने आंचल से विष निकाला। लोरिक ने झुक कर विष की पुड़िया ले ली। अपनी तलवार से उसे काटा तथा तलवार को विषैला बना दिया। विष का कुछ भाग उसने नदी में फेंक दिया। मगर मछली मार रहा था उस ओर विष प्रवाहित हो गया। कुछ विष लोरिक ने आकाश में फेंक दिया। आकाश लाल पीला हो गया। धरती पर जितना विष गिरा उससे विषैला 'कुचिला' का पेड़ तैयार हो गया। अब उस समय का हाल सुनिये। वहाँ मंजरी रो रही है। डोली पर अपना मस्तक पटक रही है। मेरे साथी, मेरे बुधनन्दन सुनिये, यहाँ मेरी बात मानिये। एक ही सहारा विष का था। तुमने उस विकल्प को भी समाप्त कर दिया। यदि कुछ गड़बड़ हो जायगा तो पापी मुझे किले में ले जायगा तथा रनिवास भोग करेगा। मैं तुमसे सच कहती हूँ। तब मेरी जिन्दगी को धिक्कार होगा। उस समय फौज ने चारों ओर से घेरा डाल दिया। लोरिक ने दुर्गा का स्मरण किया—'मां दुर्गा तुम्हारे बल और पौरुष के भरोसे मैं इस दारुण देश में चढ़ आया। मैया, यदि आपने मेरा साथ छोड़ दिया तो अगोरी में मेरा मस्तक चला जायगा। यदि इस रण में आपने विजय करा दी तो मैं आपकी पूरी-पूरी सेवा करूँगा। बकरा और भेड़ की क्या गिनती है ? मैं पचास भैंसों को काटूंगा। सवा लाख मन का हवन तुम्हारे स्थान पर करूँगा। दुर्गा, आप प्रकट हो जातीं तो अगोरी में दो हाथ तलवारें चलतीं। उस समय दुर्गा प्रकट हो गयी। वह लोरिक के दाहिने, बायें नाचने लगी। अहीर को संतोष हुआ। उसने बिजली की तलवार फेंकनी शुरू की। सन सन कर तलवार चलने लगी। अब दुर्गा का हाल सुनिये। उन्होंने चील का रूप धारण किया। पंजुल में तलवार पकड़ी फिर लोरिक को दिया। कहा—ऐ मेरे उपासक प्रिय लोरिक, इसको रखो। मैं अगोरी में तुम्हारी जीत करा दूँगी। उस समय कट कट कर चलने लगे। सन सन करती हुई तलवारें चलने लगीं। गोलियों की बौछार होने लगी। गोले बरसने लगे। दुर्गा जोर-शोर पर प्रकट हो गयी। अहीर के ऊपर अपना आंचल फैला दिया। गोलियां आंचल से गिर-गिर कर धरती पर आने लगीं। दुर्गा ने ऐसी शक्ति लगा दी कि शत्रु के मोर्चे फेल हो गये। तीर और बारूद लगी हुई तोपें ठण्डी पड़ गयीं। अब न तो गोली और बारूद ही चल रहे हैं और न रण में ही कुछ हो रहा है। तब अहीर लोरिक ने कहा—ऐ सूआ, सुनो, मेरी बात मानो। मैंने तुम्हारा पक्षा बार संभाल लिया तुम जरा मेरा कच्चा हमला संभालो। (म्यान फेंका-फेंकी) लोरिक ने अपना म्यान फेंका तथा दस्तगी तलवार तान ली। वह पार अगुन बाहर हुई तो उसकी आवाज आकाश में गूंजने लगी नीचे दावानल फैल गया। ऊपर एक पोरसा तक लहरें फैलने लगीं। सूआ की पलकें ऊपर उठीं। लोरिक की तलवार उसकी गर्दन से हो कर निकल गयी। वह पूर्व को काटती हुई पश्चिम चली गयी। फिर पश्चिम से दक्षिण चली गयी। जैसे कोईरी का कोहार पटता है वैसे अहीर का पुत्र सबको काट रहा है। उसने फौजों को लात से मारी। वहाँ खून की धारा बह चली। धारा सहू और पानी सोन नदी की धारा के साथ

बहा जा रहा है। अब वहाँ का हाल सुनिये। साँवर कोली के घाट पर थे। उन्होंने वहाँ से तीर चलाना शुरू किया। तीर अगोरी चला जा रहा था। दो दो सौ सिर काटते हुए तीर मंजरी की पालकी के पास गिरा। मंजरी बाहर निकली और तीर रोकने लगी। तीर साँप हो कर फुंफकारने लगा। उस पर लोरिक की नजर पड़ी। उसने कहा, ऐ मेरी विवाहिता सुनो। मेरी बात मानो। वह तीर तुम्हारे भसुर का है। मेरी सहायता के लिए भइया ने वह बाण मारा है। तुम उस तीर को मत छुओ। वह संवरू का तीर है। अब नगर अगोरी का सुनिये। सूवा मोलागत रोने लगा। उसकी सारी सेना रोने लगी। राजा ने कहा—मुझसे न तो अगोरी का राज्य छोड़ा जा रहा है और न मंजरी छोड़ी जा रही है। मैंने बचपन से ही इस पक्षी को जिलाया है। उसको भिगो कर चने की दाल दी है। भाई न जाने यह कहाँ का परदेशी चढ़ आया है तथा मेरी सुग्गी को उड़ाये लिये जा रहा है। अगोरी में ऐसा कोई मर्द नहीं है जो खेत पर उसे मारता तथा डोली को किले में पहुँचा देता। मैं मंजरी के साथ रनिवास भोग करता। मोलागत ने ऐसा कहा तो मन्त्री ने उत्तर दिया। हे राजा, हे महाराजा। मेरी बात सुनिये। मेरी बात मानिये। आप सात हथिनियों को भेज दीजिए उनके आगे आगे 'इनरावत' (ऐरावत) हाथी को भेजिये। उसके सूंड़ में लोहे का मूसल रख दीजिए। वह जाकर अहीर को घेर कर मार डालेगा। उसकी हस्ती ही क्या है? हाथी अहीर को मार डालेगा और हर दिन का झगड़ा मिट जायगा।

[सुमिरन—गायक कहता है कि हे राम मैं रामायण कह रहा था मेरे हृदय में कैसे भूल पड़ गयी। तुम संगी और समवयस्कों को मत भूलो। माँ दुर्गा को भी मत भूलो।]

अगोरी का राजा विचार करने लगा। चुगुली करने वालों ने उसे समझाया अहीर मारने से नहीं मरेगा और न तो अग्नि की धार पर वह जल ही सकेगा। तुम सातों हथिनियों को भेज दो।

भावार्थ—(३६०१—४२००)

उनके सूंड़ में लोहे का मूसल डाल दो वे जीर और खेतार पर जायँगी तथा अहीर को घेर कर मार डालेंगी। रोज का झगड़ा मिट जायगा। उस दिन वहाँ से हथिनियाँ चलीं। सूवा का मन उदास हो गया। हथिनियों के सूंड़ में मूसल रखवा दिया गया। ऐरावत (इनरावत) हाथी भी वहाँ से चला और वह आकाश छूने लगा लोरिक की नज़र उस पर पड़ी। वह नम्रतापूर्वक बोला। ऐ मेरी विवाहिता सुनो। यहाँ मेरा कहना मानो। इस जीर के खेतार पर पाँच पैरों वाला कौन सा जानवर आ रहा है? मंजरी ने पर्दा उठा कर आँख उलट कर देखा। फिर नम्रतापूर्वक कहने लगी—ऐ स्वामी, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट सुनो। अभी तक तो किसी प्रकार तुम्हारा जीवन बचा रहा, पर अब तुम्हारी जिन्दगी नहीं बचेगी। राजा की

सात हथिनियाँ थी। वे वीर बेतार पर घेरा डालने आ रही हैं। आगे आगे ऐरावत (इनरावन) हाथी आ रहा है। वह हमारी जान ले लेगा।

अब वहाँ का हाल सुनिये। उस समय भादो का वन निर्जन हो रहा था, शून्य हो रहा था। फागुनी वृक्ष (गिहुड) लाल हो रहा था। मजरी ने कहा—'ऐ स्वामी तुम यहाँ भाग जाओ। तुम व्यर्थ अपना प्राण त्याग रहे हो। गाँठ की पूँजी लगा कर तुम मुझसे भी सुन्दर स्त्री खरीद सकते हो। मेरी जैसी अधम के लिए तुम अपना अलहड प्राण क्यों त्याग रहे हो ? जिस माँ का तुम्हारे जैसा लाल युद्ध में मारा जायगा वह हीरे का कण खा कर आत्मघात कर लेगी।" मजरी इस प्रकार कह रही है। अहीर वहाँ पन्थी मारकर बैठ गया। पन्थी पर उसने तलवार रख ली। तब तक हथिनियाँ वहाँ पहुँच गयी। मजरी डोन्गी से बाहर आयी। ऐरावत हाथी का पैर पकड लिया और उससे कहने लगी—ऐ इनरावत हाथी, सुनो—सतयुग में हम तुम बहनें थी। तुम मेरी ज्येष्ठ बहन थी। हम लोगों का जीवन बदल गया। ऐ बहन, तुमको हाथी का जन्म मिला। मुझे मनुष्य का जन्म मिल गया। ये तुम्हारे बहनोई हैं। तुम उसको कैसे छू सकोगे। तुम अपने छोटे बहनोई को कैसे मारोगे। मेरा सिन्दूर कैसे बिगाड़ोगे ? इनरावत हाथी शांतचित्त से मंजरी की बातें कान खोल कर सुनने लगा, तथा सोचने लगा।

मजरी ठीक कह रही है। सतयुग मे हम दोनों बहनें थी। एक ही पीठ से हमारा जन्म हुआ था। कठिन समय आया। हम लोगों का जीवन बदल गया। मजरी को आदमी का जन्म मिला मुझे हाथी का जन्म मिला। मैं अपने छोटे बहनोई को नही स्पर्श करूँगा। ऐ मजरी, तुम्हारा सिन्दूर नही बिगड़ेगा। हाथी इनरावत वहाँ से धूल उडाते हुए भागा। भाग कर किले और महल में पहुँच गया। अन्य हथिनियाँ भी भाग कर वहाँ पहुँच गयी। उस समय राजा मानागत बहुत क्रुद्ध हुआ। हाथी को क्रुद्ध गालियाँ देने लगा। दुष्ट, इनरावत सुनो। क्या अहीर तुम्हारा दामाद है कि तुमने उस मेरे शत्रु को खेत पर जीवित छोड दिया। उसको मारा नही। मैं हाथ मे बन्दूक लेकर क्षण में तुम्हारा प्राण ले लूगा। मुगली करो थाना ने समझा कर कहा —राजा सुनिये। मेरी बात मानिये। हाथी और हथिनियों का शौक ऐसे नहीं नष्ट होगा। तीनों भुवन और पृथ्वी भी लग जाय तो भी उनका शौक नहीं टूटेगा। एक एक हथिनी को सात सात भट्ठी का मद पिलाइये। जब वे गर्मी नशे मे इतराने लगें तो उनके सूँड म मूसल रखवा दीजिए। तब वे जा कर अहीर को मार देंगी। सारे दिनों का झगडा समाप्त हो जायगा।

अब यहाँ का हाल सुनिये। राजा ने भट्टी जलवा दी। मूसल और जंजीर मँगवा कर हथिनियों के पास रखवा दिया। 'दिसजरी' हथिनी को राजा ने बुलवाया। फिर महावत को बुलवाया। हाथियों को बाहर पर बोतल दारू पिलाया जाने लगे। एक एक हथिनी के पेट में सात सात भट्ठी का दारू चला गया। हथिनियाँ नशे म चूर हो गयीं। जब व मदमस्त हो उठीं, सूँड म रख

दिये गये। हथिनियाँ उन्मत्त हो कर जीर खेतार पर चलीं। लोरिक की नजर उन पर पड़ी। वह उठ कर तैयार हुआ। हाथ में विजली की तलवार ली तथा अलग जाकर खड़ा हो गया। हथिनियों ने उसे घेर कर मूसल से मारना शुरू किया। भगवती धन्य है ! दुर्गा धन्य हैं। उन्होंने लोरिक को सहायता दी। श्रेष्ठ लोरिक को लेकर यह आकाश में उड़ गयीं। इधर हथिनियों के मूसल छूटने लगे। वे धरती में गिर गिर कर चूर होने लगे। घड़ी और पहर बीतते ही अहीर आगे आकर खड़ा हो गया। इनरावत हाथी अहीर की ओर बढ़ने लगा। जाकर लोरिक के ऊपर उसने अपना सूंड़ रख दिया और उसे आकाश की ओर झटक दिया। मां दुर्गा धन्य हैं, उन्होंने लोरिक को आँचल में लोक लिया। हथिनियों को ज़मीन पर गिरा दिया। उनका ताप बढ़ गया। उनकी आँखों पर पर्दा पड़ गया। वे नशे में चूर थीं। हथिनियों का दल वहाँ से भागा तथा सोन नदी की धारा में कूद गया। आगे आगे इनरावत हाथी तथा पीछे सात हथिनियाँ थीं। अब लोरिक का हाल देखिये। वह वहाँ से उछलते हुए किले के पास जाकर बैठ गया। वह मौके की तलाश करने लगा। इसी बीच इनरावत हाथी की गर्दन चमक उठी।

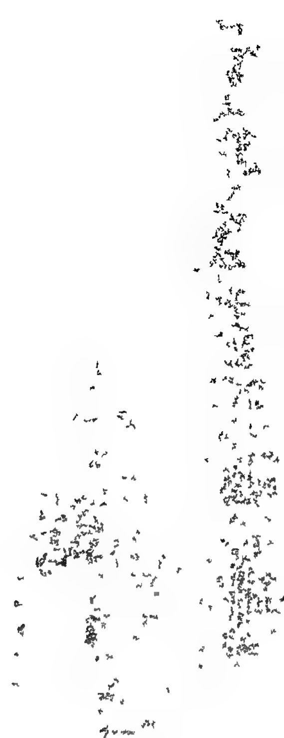
तब दुर्गा ने कहा—ऐ प्रिय लोरिक, ऐ वटुक (उपासक) तुम मेरी बात मानो हाथी प्राणों का थोड़ा ही स्पंदन शेष है। तुम तलवार चलाओ और हाथी को दो खंडों में विभाजित कर दो। लोरिक नदी के तट पर बैठा हुआ था तब तक इनरावत हाथी का सिर चमका। अहीर लोरिक ने विजलो की तलवार खींची। उसके चार अंगुल वाहर होते ही आकाश में आवाज गूंजने लगी। नीचे दावानल फैल गया। पोरसे भर से ऊपर लहर चमक उठी। हाथी की पलकें घूम गयीं। खड्ग उसकी गर्दन पर जा लगी। गर्दन आगे जाकर गिर पड़ी हाथी अभी खड़ा रह गया। तब अहीर वहाँ से उठ कर नदी के किनारे कूद गया तथा हाथी की पीठ पर सवार हो गया। उसकी पीठ पर तलवार चलाने लगा। उसी समय राजा मोलागत ने उसे देखा। वहाँ सेना विलख रही थी। मोलागत ने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया है। अहीर इतने दिनों तक जीर पर रहा। एक इनरावत हाथी से आशा थी उसको भी किले और महल में अहीर ने मार डाला उसकी गर्दन धरती पर गिर पड़ी। उसके शरीर पर वह तलवार भांज रहा है।

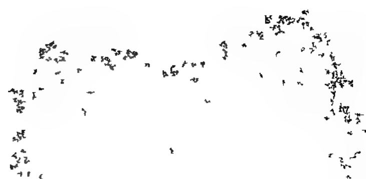
अब वहाँ का हाल सुनिये। राजा मोलागत चांदनी पर अपना सिर पटक रहे थे। कह रहे थे मुझसे अगोरी का राज्य छोड़ा नहीं जा रहा है और न मंजरी ही मुझसे छूट रही है। हमने छोटी सी चिड़िया को जिलाया था। उसे भिगोकर चने की दाल दी थी। यह साला कहाँ का परदेशी चढ़ आया। यह मेरी चिड़िया को उड़ाये लिये जा रहा है। ऐसा कोई वीर नहीं है जो अहीर को खेत पर पटक कर मारता। किले में डोली को लाता तथा मैं मंजरी के साथ रनिवास भोग करता। विचार-विमर्श होने लगा। चुगली करने वालों ने उसके दिमाग में यह बात बैठा दी। ऐ राजा, ऐ महाराजा सुनिये। यहाँ हमारी बात मानिये। अहीर इस

प्रकार मारने से नहीं मरेगा न तो वह अग्नि में जल सकेगा। आप कोरा कागज मंगाइये, पत्र लिखिये तथा संदेश वाहकों से कोट-मदोखरी गाँव भेजिये। आपका भांजा निरम्मल वहाँ का राजा है। यदि वह आता तो अहीर को मार देता और सारे दिनों का झगड़ा समाप्त हो जाता। राजा ने हाथ में कलम और दावात ली। पहले कुशल-मंगल लिखा फिर दुख का समाचार लिखा। अगोरी का राज्य उजड़ गया है, वहाँ संघर्ष छिड़ गया है। अगोरी का सारा धन अहीर (लोरिक) ने लूट लिया है। अगोरी की स्त्रियाँ बिना पुरुष के गली-गली में मारी-मारी फिर रही हैं। इतना लिखने के बाद मोलागत ने लिखा कि ऐ भैने, यदि तुम क्षत्रिय हो तो हमारे, तुम टहर पर का भोजन छोड़ देना और अगोरी में आकर हाथ धोना। अन्न खाना गऊ के बराबर है तथा पानी पीना रुधिर पीने के बराबर है। अगोरी में आये बिना अन्न खाना तुम्हारे लिए हराम है। ऐसा लिखकर मोलागत ने धावन को पत्र देकर दौड़ा दिया। धावन ने पश्चिम का रास्ता लिया। वह रात दिन दौड़ता रहा। उसने कहीं पड़ाव नहीं डाला। मदोखरी गाँव पहुँच कर उसने निरम्मल का घर पूछा। लोगों ने धावन को निरम्मल का घर बताया। धावन वहाँ पहुँच गया। निरम्मल प्रातः काल ही गौना कराकर आया था तथा स्वयं अखाड़े में गया था। धावन ने दरवाजे से निरम्मल को पुकारा। महल से एक बुढ़िया निकली। वह निरम्मल की माँ थी। हाथ में सोने की छड़ी लेकर टेकती हुई वह बाहर निकली। उसने धावन से नम्रता-पूर्वक पूछा—भैया, तुम्हारा वतन कहाँ है? तुम्हारा मूल-स्थान कहाँ है। ऐ परदेसी तुमने यहाँ से चढ़ाई की है। तुम निरम्मल, निरम्मल क्यों चिल्ला रहे हो। तुम्हारा मेरे बेटे से कैसे परिचय हुआ? तब धावन ने कहा—मेरा वतन अगोरी में है। वही हमारा मूल स्थान है। मैंने कोट की चढ़ाई की है। यहाँ कोट मदोखरी में निरम्मल का पूछते हुए आया हूँ। वे राजा कौन हैं? तब बुढ़िया ने कहा—भइया अभी गौना कराकर आये हैं। दुलहिन को कोहबर में बैठा दिया है तथा मुझे अभिवादन कर स्वयं अखाड़ा भाग गये हैं। भइया धावा, तुम अखाड़े में चले जाओ। वहीं मेरा बेटा अखाड़े में लड़ रहा है। धावन वहाँ से चला—अखाड़े में पहुँचा। वहाँ माँ के एक-एक लाड़ले थे। एक से एक सुन्दर सरदार थे। वे जोर-तोर के थे। निरम्मल की पहचान नहीं हो सकी। धावा घर लौट आया जहाँ निरम्मल की माँ बैठी हुई थी। कहा—माता अखाड़े पर एक से एक लाल हैं। उनमें निरम्मल की पहचान कठिन है। मैं कैसे जानूँ कि सरदार निरम्मल कौन है? बुढ़िया ने कहा—

भावार्थ—(४२०१—४५००)

मेरा बेटा ऐसा वैसा नहीं है। वह देव का लाल (दैवी पुरुष) है। अभी उसका गौना कराया है। उसके मस्तक पर प्रखर तिलक है। अखाड़े में उसकी आँखों में काजल और सुरमा लगा हुआ होगा। निरम्मल की माँ ने धावन से कहा—कि उसकी आँख में काजल तथा सुरमा लगा होगा। जब वह ओट में ताल ठोंकेगा तो ऐसा प्रतीत होगा जैसे भादों में देव गहरा रहा हो। धावन लौटकर





अब वहाँ का हाल सुनिये । रानी जयकुंडल ने घोड़े का लगाम नहीं छोड़ा । वह रो-रोकर कहने लगी । सैंया, तुम मेरे हाथ की दो कौर खिचड़ी खा लो । निरम्मल ने कहा—'विवाहिता, मेरी बात सुनो । मामा मेरे शत्रु हो गये हैं । अपने पत्र में उन्होंने शपथ दिलायी है कि मैं अन्न नहीं ग्रहण करूँ ।' मेरे लिए अन्न हराम' है । पत्र में लिखी बात को मैं कैसे टाल सकता हूँ ? मैं तुम्हारी खिचड़ी कैसे खा सकता हूँ ? जयकुंडल रो रही थी और कह रही थी कि तुमने मुझे कष्ट में क्यों डाला ? राजा निरम्मल ने कहा मैं तुम्हें भविष्य की सारी सूचनाएँ दूँगा । वह कुम्हार के घर गये । वहाँ से एक कच्चा घड़ा उठा लिया । कच्चा सूत लाये तथा उसे पत्नी के हाथ में बाँध दिया । कहा– ऐ मेरी विवाहिता,—तुम रोज प्रातः काल उठना तथा कूद फाँद कर कुंए पर जाना । जब तक मैं जीवित रहूँगा तुम कुएँ का जल खींच कर पानी पीओगी । जिस दिन मैं अगोरी में जूझ जाऊँगा उस दिन तुम्हारे हाथ का सूत टूट जायगा । पानी छूने ही घड़ा गल जायगा । तब तुम समझ लेना कि मेरा पति युद्ध में मारा गया । निरम्मल ने कहा मैं तुम्हें एक और संकेत देता हूँ । उसने एक बर्तन में 'कपीर' गाय का दूध भर दिया । उसमें ऊपर से तुलसी के पत्ते छोड़ दिये । कहा—ऐ विवाहिता, रोज स्नान कर तुम बर्तन खोल कर देखना । जिस दिन तक मैं अगोरी में जीवित रहूँगा उस दिन तक यह तुम्हारा दूध रहेगा, उसमें तुलसी की पत्तियाँ लहलहाती रहेंगी । जिस दिन पत्तियाँ कुम्हलाने लगें समझना कि कुछ गड़बड़ हो गया है । तब दूध खून के समान हो जायगा तथा तुलसी की पत्तियाँ कुम्हला जायेंगी । फिर तुम समझ लेना कि सरदार निरम्मल युद्ध में जूझ गया है, मारा गया है । निरम्मल ने लगाम पकड़ी तथा हाथ में हजारी साँग ले ली । घोड़ी का आगमन हुआ । वह उड़ी और आकाश छूने लगी । हवा से बातें करने लगी । घड़ी भर में घोड़ी अगोरी पहुँच गयी । वहाँ सूबा मोलागत की कचहरी लगी हुई थी । घोड़ी वहाँ जाकर रुक गयी । मामा मोलागत उठे तथा पचनी घोड़ी का कन्गा (लगाम) पकड़ लिया । निरम्मल ने झुक कर प्रणाम किया । उन्होंने आशीर्वाद दिया—तुम पूर्ण रूप से अमर रहो । भांजे, लाख साल तक जीयो । तुम्हें सारे संसार की आयु प्राप्त हो । उन्होंने निरम्मल से कहा—अगोरी में संघर्ष छिड़ गया है । स्त्रियाँ बिना पुरुष के हो गयी हैं तथा गली-गली में अनाथ घूम रही हैं । जब निरम्मल ने सब कुछ देखा तो उसने दाँतों तले अँगुली दबायी । राजा मोलागत ने उनसे कहा—भैने, तुम मेरी बात सुनो । पान का बीड़ा लगा हुआ है । मुख में बीड़ा रख लो । गेठ पर शत्रु बैठा हुआ है । उसे पटक कर मार डालो । भैने तुम मजरी की डोमी लाओ ताकि मैं उसके साथ रनिवास भोग करूँ । जब मोलागत ने इतनी बात कही तो निरम्मल ने पान का लगा हुआ बीड़ा मुँह में रख लिया । कन्धे पर उन्होंने हजारी साँग रख ली तथा घोड़ी से नीचे उतरने लगे । बायीं ओर सुदमा चिड़िया बोलने लगी । निरम्मल को तब शंका होने लगी । तब उसने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा आपने मसाट

[illegible] बोले देखा किले के उत्तर गये, [illegible] हुई कि मैंने घर में विवाहिता है [illegible] रहता है। मुना को खटा [illegible] की रखवाली कर रहा [illegible] कहा—विवाहिता तुम मेरी बात सुनो। [illegible] है। मंजरी ने रेशमी पर्दा उठा [illegible] कर सरदार निरम्मल को देखो [illegible] ऐ मेरे सिर के मुकुट, [illegible] नहीं। अब तुम्हारी जान नहीं बचेगी। [illegible] पर भी नहीं मिलेगा। [illegible] दूर करा लिया है। इसी [illegible] लोरिक ने उसे प्रणाम किया। अमर [illegible] अमर रहो। लाख साल तक [illegible] शरीर में रहे।

[illegible] निरम्मल ने कहा—मामा पगला गये हैं। इन्हें [illegible] लोरिक ने कहा—तुम डोली छोड़ दो। [illegible] लोरिक ने कहा—निरम्मल मेरी बात [illegible] मेरी नारी है। अपनी गांठ की [illegible] इसमें राजा की क्या क्षति हुई है? [illegible] अहीर की बात सुन कर निरम्मल ने समझा [illegible] अहीर का कोई कसूर नहीं है। सभी [illegible] यदि शादी करती है तो उनकी [illegible] बैठे रहते। उनकी प्रतिष्ठा बची रहती। अहीर [illegible] कर मिलान कर लेते। मामा, तुम [illegible] लिख कर भेज देते। लोरिक अपने घर [illegible] अहीर जहां-जहां जाता मामा की बड़ाई [illegible] वहां खड़ा था। वह रहा था कि अहीर का कोई [illegible] नुकसान हुआ है। लोरिक ने अपनी जाति में शादी [illegible] किया है। वह अपना गौना ले जा रहा है। मामा को [illegible] सब कसूर मामा का है।

[illegible]—(९२०१—९२००)

निरम्मल [illegible] किये हुए खड़ा था। वह चांदनी पर लौट [illegible] बातचीत करने लगा। मामा, क्या कहूं और क्या नहीं कहूं। मुझसे कहा नहीं जाता।

अब वहां का हाल सुनिये। निरम्मल ने कहा—ऐ मामा, तुमने अहीर से

बेकार झगड़ा मोल ले लिया। झगड़े का क्या प्रयोजन था। तुमने अपना राज्य उजड़वा दिया। स्त्रियाँ बिना पुरुष के अगोरी में मारे-मारे फिर रही हैं। मामा यदि आप समझते कि महर तुम्हारी प्रजा है तो वह शान-शौकत से विवाह करता। यदि उसको रसद कम हो जाती तो तुम रसद उसको किले में पहुँचवा देते। गउरा के लोग गाते और तुम्हारी बड़ाई करते। ऐ मामा, तुम पसीना गिराते तो सोरिक अपना खून तुम्हारे लिये बहाता। राजा मोलागत ने यह बात सुनी तो जल कर राख हो गया। ऐ भाजे, तुम क्षत्रिय के घर व्यर्थ उत्पन्न हुए। तुमने खेत पर मेरे दुश्मन को छोड़ दिया। तुमने दगा दुआ दिया। आज तुमने क्षत्रिय होकर अहीर का पक्ष लिया। वह अपने हाथ में तलवार पकड़े हुए है।

मोलागत ने कहा—तुम व्यर्थ क्षत्रिय के घर उत्पन्न हुए। तुम्हें चमार होना चाहिये था। तुम दाँत से कीलों को निकालते। दुकान की रखवाली करते बैठे रहते। तुमने क्षत्रिय होकर मेरा पक्ष नहीं लिया, इसीलिए अहीर तलवार ग्रहण किये हुए है। निरम्मल ने जब यह बात सुनी तो उसकी आँखों से आंसुओं की धारा बह निकली। मामा, अपने घर बुला कर तुम मुझे गोली मार रहे हो। मैंने घर पर अपनी विवाहिता का कहना टाल दिया। रोकर निरम्मल ने हजारी सांग उठा ली। उसे कंधे पर रख कर वह अगोरी कोट चला जहाँ पर अहीर बैठा हुआ था। वह अपनी पत्नी पर तलवार रखे हुए था। राजा निरम्मल सीधे अहीर के पास पहुँचा। और कहा—ऐ सोरिक, तुम मेरा कहना मानो। मेरा बूढ़ा मामा—विचलित हो गया है। उसको तरुण स्त्री की चिन्ता सवार है। तुम मजरी की डोली छोड़ दो। मैं उसे किले में रनिवास भोगने के लिए ले जाऊँगा। तब सोरिक ने निरम्मल से कहा—देखो, मैंने चोरी नहीं की है और न तो मैंने यहाँ सेंध ही मारी है। अपनी गांठ से धन लगा कर मैं अपनी जाति और कबीले में विवाह किया है। इसमें बूढ़ा मोलागत का कोई नुकसान नहीं हुआ है। उन्होंने झगड़ा व्यर्थ में लगा दिया है। मेरा कोई अपराध नहीं है। सारा कसूर तुम्हारे मामा का है। निरम्मल ने कहा कि मजरी को छोड़ दो। यह किले में जा कर रनिवास भोग करेगी। इस पर वीर सोरिक क्रुद्ध हुआ। वह जल कर खाक हो गया। कहा—यदि तुम्हें मामा का बहुत मोह है तो अपनी बहन और बिटिया निकाल लाओ तथा किले में उसे पहुँचा ले जाओ वे सब रनिवास का भोग करेंगी। सोरिक की बात सुन कर क्षत्रिय क्रोध में जल उठा। बातों बातों में झगड़ा शुरू हो गया। दोनों खेतार पर पैंतरेबाजी करने लगे। भादों में जैसे भैंसे आवाज करते हैं वैसे ही वहाँ कोलाहल शुरू हो गया। दोनों एक दूसरे पर आक्रमण करने के लिए उतारू हो गये। वीर सोरिक ने कहा—ऐ निरम्मल तुम मेरी बात मानो। मैं पहले चोट नहीं करूँगा मेरे गुरु की शपथ है। पहले वार करना मेरे लिए अपराध है। अब क्षत्रिय का तमाशा देखिये। उसने हजारी सांग खींची तथा अहीर सोरिक पर लक्ष्य साध कर मारा।

भगवती धन्य हैं, दुर्गा जो आदि काल से ही पूज्य हैं, अहीर को भेजकर आराम

में कूद गयीं। हजारी साँग गिर कर निरस्त हो गयी। अहीर आकर आगे खड़ा हो गया। सूवा नज़र उठाकर उसे देखने लगा। उसने दूसरी बार हमला किया। अहीर के पेट में लक्ष्य कर प्रहार किया पर वीर लोरिक दाव खेल गया। वह वायें से तिरछा हो गया। हजारी साँग फिर गिर गयी। सूवा निरम्मल झंखने लगा, वह दाँतों तले अंगुली काटने लगा। कहने लगा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने तकदीर में क्या लिख दिया? मेरे दो आक्रमण निष्फल हो गए। अब तो दैव ही मेरा बेड़ा पार करेंगे। हे मनियाँ भगवती, आप मेरी नज़र पर सवार होइये। भगवती वहाँ प्रकट हुईं। सूवा की नज़र पर बैठ गयीं। जब उसने क्रोधपूर्वक देखा तो सामने माँ दुर्गा खड़ी थीं। वह दुर्गा रत्नजटित घाघरा पहने हुए थीं तथा लोरिक की बाँह पर नाच रही थीं। तब वीर निरम्मल ने कहा—'ऐ अहीर, मैं क्या कहूँ और क्या न कहूँ? मुझसे कुछ कहा नहीं जाता। भाई देवी दुर्गा प्रकट हो गई हैं नहीं तो मैं तेरा पुरुषत्व देखता।' अब अहीर के मन में विकार उत्पन्न हो गया। उसने ओछी बातें शुरू कर दीं। यदि मेरी जाँघ में शक्ति होगी। यदि मेरी भुजाओं में पौरुष होगा तो बिना भगवती की सहायता के मैं खेत पर तुम्हारा पौरुष देखूँगा।

दुर्गा ने जब यह बात सुनी तो उन्होंने उसका साथ छोड़ दिया। इधर निरम्मल ने हजारी साँग खींची तथा अहीर को लक्ष्य साध कर मारा। अहीर ने उसे अपने ओड़न से संभाला। ओड़न गिर पड़ा। अहीर के कंधे में दर्द प्रवेश कर गया, आँख के सामने पीलापन छा गया। अहीर खड़े-खड़े गिर पड़ा। उसके प्राण निकल गये। वह खड्ग पर लुढ़क गया। राजा निरम्मल वहाँ से चलने लगा। किले का रास्ता पकड़ा।

अब दुर्गा का हाल सुनिये। भवानी वहाँ से उठीं। पालकी के पास जाकर खड़ी हो गयीं। कहने लगीं—मंजरी सुनो। मेरी बात मानो। अहीर की लाश बिगड़ने न पावे। इसकी रखवाली करो। दिन में इसको कौवे या कुत्ते नहीं देखने पावें। रात में दुम कटे हुए सियार इसको देखने न पावें। मैं पंडित के पास ठीक समय विचरवाने के लिए जा रही हूँ। अगोरी का सूवा इसे ले जाने के लिए आएगा। पालकी यहीं रह जाएगी क्योंकि यहाँ भद्रा होगा। देवी वहाँ से उड़ीं तथा मोहनी पंडित के घर गयीं।

अब इधर का हाल सुनिये। निरम्मल अगोरी की चाँदनी पर चढ़ता चला जा रहा है। जाकर उसने मामा से हाथ मिलाया तथा सारी बातें समझाकर कहीं। अगोरी के सूवा मोलागत के सिपाही छूटे। नौकर-चाकर पंडित के दरबार में पहुँचे। राजा ने आज्ञा दी थी—जाकर पंडित को पुकारो और कहो कि मोहनी पंडित पोथी पत्रा साथ लेकर आवें और बतावें की मंजरी के लिए कब की सायत है।

सुमिरन—[गायक यहाँ राम का नाम स्मरण कर रहा है और कह रहा है—तुम राम का गुण गान करो। जिन्होंने राम का नाम

स्मरण किया तथा तुम्हारा नाम भजा उसका क्षण में दुख का भार हल्का हो जायगा।]

अब यहाँ का हाल सुनिए। मोहनी पंडित राजा मालागत के दरबार में चले आए। मुहूर्त देखा। शुभ घड़ी नहीं मिली। देवी ने भद्रा डाल दिया है। तीन दिन तीन रात तक कोई सायत नहीं है। चौथे दिन दस बजे दिन चढ़ते शुभ घड़ी होगी। उसी समय मंजरी की डोली उठेगी। इधर मंजरी लोरिक की लाश की देख-भाल कर रही है। दिन में वह कौवे तथा सियार हांक रही है तथा रात में पूँछ कटे सियारों को देख रही है। दुर्गा स्वयं इन्द्रासन चली गयी। सोने चाँदी का इन्द्रासन बना हुआ था। उसको दुर्गा ने फूंक दिया। कोयला और राख होकर इन्द्रासन गिरने लगा। ब्रह्मा का भगवा जलने लगा। ब्रह्माइन के रेशमी वस्त्र जलने लगे। देवी दुर्गा ने नीम के पेड़ पर हिंडोला डाल दिया तथा झूल झूलकर मौज में गीत गाने लगी। वहाँ ब्रह्मा और ब्रह्मानी पधारी। ब्रह्मानी (ब्रह्माइन) ने कहा—ननद देखो, यह तुम्हारे भाई हैं। तुम अपनी लपटों को बटोर लो। तब भगवती बोल उठी। हम सात सात बहिने थीं। ब्रह्मा ने हम सबको मृत्यु लोक में उतार दिया। मुझे एक अहीर बटुक (उपासक) के रूप में मिला। वह उपासक खेत पर लड़कर मर गया है। उस मरे उपासक को तुम अमर कर दो। तब मैं अपनी लहर बटोरूँगी।

ब्रह्माइन ने कहा—ननद मेरी बात मानो। मैं निरम्मल की आयु घटवाऊँगी। तुम्हारे उपासक लोरिक के हाथ में आयु मैं बढ़वा दूँगी पर तुम अपनी लहर बटोरो। देवी भगवती, फिर ब्रह्मा की कचहरी में गयी। ब्रह्मा ने मृत्यु का लेखा जोखा लिया तो निरम्मल की मृत्यु नहीं लिखी थी। सर्वत्र ढूँढ़ा पर उसकी मृत्यु का लेख कहीं दिखाई नहीं पड़ा। उन्होंने दुर्गा से कहा—तुम्हारा लोरिक उठेगा। उसका मस्तक छै बार कटेगा। छै बार उसका सिर तीर्थयात्रा करेगा तथा साथ पैंतरा बदलेगी। सातवीं बार जब लोरिक की गर्दन कटेगी तब इन्द्रपुरी में आयेगी। उसकी गर्दन से जितनी खून की बूँदें गिरेंगी उतने निरम्मल तैयार हो जाएँगे। तब एक दो लोरिक क्या पचास लोरिक भी लग जाएँगे तो निरम्मल मारा नहीं जा सकेगा। अब दुर्गा वहाँ से जीर-खेतार पर आ गयीं। मंजरी से दुर्गा ने कहा—तुम मेरी बात सुनो। इस बात को या तो तुम जानोगी या मैं जानूगी। लोरिक इस रहस्य को जानने न पाये। उन्होंने कानी अगुंली काटकर लोरिक के शरीर पर छिड़का। अहीर तब अंगड़ाई लेकर उठा। नम्रतापूर्वक बोला– ऐ देवी दुर्गा सुनिए।

भावार्थ—(४८०१—५१००)

मुझे ऐसी नींद आ गयी थी कि इस जीर-खेतार पर मैं गाढ़ी निन्द्रा में सो गया। तब माँ दुर्गा ने कहा—ऐ बटुक (उपासक) तुम ऐसी नींद में सोये थे कि तुम्हारा शत्रु ही ऐसी नींद सोवे। अब यहाँ का हाल सुनिए। पण्डित का पत्रा आया, तथा डोले का मुहूर्त निकट आया। मूसा वहाँ बैठकर मुहूर्त की स्थिति देख रहे थे। उन्होंने मोहनियाँ पण्डित से पूछा कि विवाहिता को लादकर कितने [illegible] में

तुम मुझे इसके बारे में बताओ। पंडित ने कहा तीन दिन और तीन रात तक भद्रा है जब चौथे दिन में सात घड़ी चढ़ जाय तब मंजरी के लिए शुभ मुहूर्त निकलेगा। शुभ घड़ी आ गयी। बत्तीस कहार डोला लेकर चले। सूवा मोलागत ने हाथी का हौदा कसवा लिया तथा दस पाँच आदमियों को साथ लेकर जीर तथा खेतार पर चले। डोली कुछ दूरी पर थी। वहाँ लोरिक को बैठे हुए देखकर राजा मोलागत भयभीत हो गया। महावत से कहा—हाथी को भाला पेल दो। मैं किले और अपने भवन में भागूंगा। मेरा भैने मेरा शत्रु हो गया है। उसने मेरा प्राण ले लिया। मुझसे उसने कहा कि मैंने शत्रु को खेत पर मार दिया है, मैं जाकर मंजरी की डांड़ी उठवा लाऊँ। यहाँ तो अहीर बैठकर डोली की रखवाली कर रहा है! किसी की मौत निकट आ गयी है। हाथी किले के आँगन में चला आया। मोलागत हाथी से उतरा तथा चांदनी पर गया। वहाँ उसका भैने निरम्मल बैठा हुआ था। मोलागत रो रो कर कहने लगा—भैने मैं तुम्हारा कब का दुश्मन हूँ। आज तो तुम मेरी जान ही मरवा देते। तुमने मुझसे कहा कि मैंने दुश्मन को खेत पर मार डाला है। वह तो बैठकर डोली की रखवाली कर रहा है। राजा निरम्मल ने जब यह बात सुनी तो वह दाँतों तले अंगुली दबाने लगा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया? मैंने घर पर विवाहिता का कहना टाल दिया। यह कैसी मृत्यु दिखाई पड़ रही है? मरा हुआ मुर्दा उठकर बैठ गया है। बुरा दिन निकट आ गया है। पुनः वीर ने हजारी सांग ली और वह किले की सीढ़ी से नीचे उतर गया, सीधे खेत की ओर भागा।

इधर वीर लोरिक ने मंजरी से कहा—मेरी विवाहिता, तुम मेरी बात सुनो। यह निरम्मल जो पहले आया था, वह फिर यहाँ आ रहा है। लोरिक ने उससे कहा—संगी, तुम खेत पर आ जाओ। मैंने तुम्हारे तीन आक्रमण संभाले हैं। मैंने तुम्हारी चोटें सह ली हैं। संगी, अब तुम मेरा आक्रमण संभालो। अब कचाकच तलवारें चलेंगी। वीर लोरिक उठा और निरम्मल को ललकारने लगा संगी, 'अवसर आया, अवसर आया' तुम इस प्रकार ललकार रहे थे। मैंने तुम्हारा आक्रमण बर्दाश्त कर लिया अब तुम मेरा आक्रमण बर्दाश्त करो। उसने म्यान को फेंक दिया और दस्तगी तलवार निकाली। चार अंगुल बाहर होते ही उसकी आवाज़ आसमान में जाने लगी। धरती पर दावानल फैल गया। पोरसे भर ऊपर लहर फैल गयी। निरम्मल की पलकें घूम गयीं। लोरिक की तलवार उसकी गर्दन में घुस गयी। निरम्मल की गर्दन उड़ कर बदरी आश्रम चली गयी फिर समुद्र में जाकर गोते लगाने लगी। सभी देवताओं से भेंट कर गर्दन उड़ी और अगोरी में आकर निरम्मल के धड़ पर बैठ गयी। लोरिक ने फिर उसकी गर्दन काटी। गर्दन ठाकुर द्वारा गयी, देवताओं से भेंटकर उसने फिर समुद्र में गोता लगाया और अगोरी आ गयी। अहीर जमकर कूदा। तीसरी बार कटी हुई गर्दन फिर उड़ी। वह काशी विश्वेश्वर में गयी। गंगा में गोता लगाया देवताओं से भेंट कर गर्दन फिर निरम्मल के धड़ पर बैठ गयी।

अहीर ने कूदकर फिर हमला किया। इस बार गर्दन निकल कर गया में चली गयी फिर गगा मे गोता मारा, देवताओ से भेंट की, और वापस आ गयी। इधर निरम्मल का धड पैंतरा करने लगा और गर्दन से जुड गया। लोरिक ने पाँचवी बार चोट की। इस बार गर्दन उड कर इन्द्रपुरी मे आ गयी जहाँ ब्रह्मा का दरबार लगा हुआ है। गर्दन ने ब्रह्मा से कहा – तुमने कल ही मुझे अमर बनाकर भेजा। आज तुमने यह मरी क्या दशा कर दी ? ब्रह्मा ने अपना मुँह फेर लिया। गर्दन भी उधर चली गयी। पूछा—तुमने मेरे भाग्य मे विपत्ति क्यो लिख दी ? ब्रह्मा ने नम्रता पूर्वक कहा—ऐ निरम्मल की गर्दन, तुम सुनो। एक बार फिर जाओ। इस बार खून की जितनी बूँदें धरती पर गिरेंगी। उतने ही निरम्मल तैयार हो जायेंगे। तब एक दो क्या। पूरे पचास लोरिक भी लग जाय तब भी तुम मारे नही जा सकोगे। निरम्मल की गर्दन उडकर वापस आ गयी तथा गर्दन पर बैठ गयी। अहीर छलाग मार कर कूदा और गर्दन पर चोट की। गर्दन स्वर्ग मे उड गयी। दुर्गा धन्य हैं। उसी समय उन्होंने लोरिक को डाटा। कहा - सुनो मेरे उपासक, प्रिय लोरिक। इस बार निरम्मल की गर्दन इन्द्रासन मे चली जायगी तो तुम्हारी खबर ले लेगी। तब लोरिक ने उछल कर निरम्मल की गर्दन पकड ली और उसे धरती पर गिरा दिया। इधर लाश कुछ ही घडी मे धरती पर भहरा कर गिर पडी। निरम्मल की लाश ने एक बीघा जमीन घेर लिया।

निरम्मल द्वारा दिये गये सकेत

इधर उसकी पत्नी जयकुण्डल को अशुभ के संकेत मिलने लगे। कच्चा घडा टूट गया था। उसको लेकर वह कुए मे पाट गयी। उसका सूत टूक-टूक हो गया था। पानी चूते-चूते घडा गल गया। तब वह गवाक्ष की ओर दौडकर गयी। दूध का डिब्बा खोल कर देखा तो वह खून के समान हो गया था। तुलसी का वृक्ष कुम्हला चुका था। जयकुण्डल खडी-खडी धरती पर गिर पडी। धरती पर वह सिर पटकने लगी। हे सास, हे अम्मा, मेरी बात सुनिये। आप अपना धन और पूँजी संभालिये। अपना किला और भवन देखिये। मेरे स्वामी अगोरी मे युद्ध मे काम चुके हैं (मर चुके है)। मैं भी अगोरी जा रही हूँ। मैं स्वामी की माला लाऊँगी और उसे लेकर सती हो आऊँगी। हर दिन की मुसीबत समाप्त हो जायगी।

अब रानी का हाल सुनिये। वह अस्तबल मे गयी। विलायती घोडे को खोल दिया तथा उसका जीन कस कर मुह मे लगाम लगा दिया। अपना सामान लिया। चुन-चुन कर पोतियाँ ली और पाट कर घोडी पर सवार हो गयी। जैसे ही वह घोडी पर बैठी, घोडी धरती से उडी तथा आसमान छूकर फिर बादल की रेखाओं मे उडने लगी। जयकुण्डल को हवा जिलाउ हुए घडी भर के भीतर घोडी कोर के पेडार दर पहुँच गयी।

लोरिक वहाँ बैठा हुआ था। रानी ने घोडी को पास बाँध दिया तथा स्वय लोरिक के पास पहुँची। हाथ जोड कर कहा—भइया, मेरे [illegible] की [illegible] गये है ?

मुझे बताओ। मैं लाश लेकर इस अगोरी नगर में सती हो जाऊँगी। तब वीर लोरिक ने कहा—रानी तुम मेरी बात सुनो—इस प्रकार की बात मत कहो। तुम मेरी भावज लगोगी। जयकुण्डल ने कहा—गाँव घर के नाते मैं तुम्हारी बहन या बेटी हूँ। मैं तुम्हारी बहन हूँ। मुझे लाश दे दो। उसे लेकर मैं सती हो जाऊँगी। वीर लोरिक ने कहा—तुम्हारे पति की लाश कैसी है? रानी जयकुण्डल ने रोते हुए कहा मेरे स्वामी ऐसे वैसे नहीं थे। ऐ वीर अहीर मेरे स्वामी दैवी पुरुष थे। मेरे स्वामी की मार को तुम अच्छी तरह पहचानते होगे। तुम्हें उनकी लाश भूलेगी नहीं। मुझे लाश के बारे में बता दो। तब अहीर वीर लोरिक लाश के पास गया तथा उसकी गर्दन दिखा दी। लाश एक बीघे में गिरी हुई थी। रानी ने धोती की काछ संभाली तथा अपने आंचल में पति का सिर रख लिया। एक हाथ में उसका पैर बटोर दिया एक हाथ उसके पखुरे के नीचे रख दिया। लाश लेकर वह सोन नदी में प्रवेश कर गयी। स्वयं शरीर मल-मल कर उसने स्नान किया फिर निरम्मल के शरीर को नहलाया। उनकी गर्दन को स्नान कराया। फिर खेत के डंडार पर आकर खड़ी हो गयी। लोरिक से कहा—ऐ भइया सुनो। यह जो पेड़ में बेलें लगीं हैं अपने खड्ग से टुकड़े-टुकड़े कर दो। इसी समय तुम हमारे लिए चिता सजा दो। लोरिक ने पेड़ के बेलों को काट कर चूर-चूर कर दिया तथा चिता सजा दी। रानी जयकुण्डल ने पल्थी पर लाश रख ली फिर गर्दन पर लाश रखी। ब्रह्मा का ध्यान किया तथा ऊपर आंचल फैला दिया। कहा—ऐ ब्रह्मा, ऐ नारायण आप लोग मेरी बात सुनिये 'यदि मैं एक बाप की बेटी हूँ, यदि एक पुरुष की स्त्री हूँ तो आप लोग आकाश से अग्नि बरसाइये। मैं उनको लेकर यहाँ सती हो जाऊँगी।' जयकुण्डल ने अपने सत को खोला। ब्रह्मा ने अग्नि की वर्षा की। जयकुंडल आंचल खोलकर चिता में प्रवेश कर गयी। सोन नदी के तट पर अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी। दोनों जल कर भस्म हो गये। दोनों ने नया जीवन धारण किया। बायें सती बेर का पेड़ हुई उसके दाहिने निरम्मल हुआ। इस बेर में न कभी फूल लगा न फल।

अब इधर का हाल सुनिये। मोलागत अब रो रहा है। धरती पर सिर पटक रहा है मुझसे अगोरी का राज्य त्यागा नहीं जाता। मंजरी रानी भी मुझसे त्यागी नहीं जाती। सुग्गी को मैंने नन्हें पन से ही जिलाया। भिगोकर उसे चने की दाल दी। आज न जाने कहाँ का परदेसी चढ़ आया। वह मेरे पक्षी को उड़ाये लिये जा रहा है। यह कह-कह कर मोलागत किले में फूट-फूट कर रो रहा है। मन्त्री ने उन्हें सलाह दी। चुगुली करने वालों ने उन्हें समझाया—हे राजा, हे महाराजा, हमारी बात सुनिये।

भावार्थ—(५१०१—५३१२)

अहीर इस प्रकार मारने से नहीं मरेगा न तो अग्नि की लपट में वह जलेगा। उसको धोखे से बुलवाइये तथा किले के भवन में मरवा डालिये। अब वहाँ का हाल सुनिये। अब अगोरी नगर का हाल देखिये। राजा के मन्त्री का हाल

देखिये। चुगुलखोर (चुगुला) सोनार ने कहा—ऐ राजा, ऐ महाराजा, सुनिये। आप अहीर महर को बुलवाइये वह जीर के खेत पर जाये और लोरिक को समझा कर कहे—'ऐ साधु वीर लोरिक, मंजरी फिर नैहर करने नही आयेगी न तो तुम्ही ससुराल करने आओगे। तुम चल कर सबको प्रणाम कर लो और पाव छू लो।' मन्त्री और चुगुला ने राजा को समझाया कि यह अहीर मारने से नही मरेगा न तो वह अग्नि मे जलेगा। तलवार ही उसका 'उठना' है और तलवार ही उसका 'बैठना' है। तलवार ही उसके प्राण का आधार है। उसको आप धोखे से किले मे बुलवाइये और यही बाध कर पिटवाइये। मन्त्री की यह बात राजा के हृदय मे बैठ गयी। राजा ने फौरन हुक्म दिया। सिपाही छूटे और महर के घर गये। कहा—सूबा ने तुम्हे बुलाया है। तुम किले के भवन मे चलो। आगे महर चले। उनके पीछे-पीछे सिपाही चले। महर ने राज दरबार की चादनी पर पहुँचते ही राजा को झुक कर प्रणाम किया। मोलागत ने महर को आशीर्वाद दिया। फिर कहा—ऐ महर, मैंने तुम्हे इस लिए बुलाया है कि इस अगोरी मे कोयला बो दिया गया है। कोई वीर जवान अब बचा नही है। पुरुष से हीन होकर स्त्रिया अगोरी मे गली-गली मारी-मारी फिर रही हैं। अब तो मंजरी नैहर करने नही आयेगी और न तो लोरिक ससुराल करने आयेगा। जाकर उससे कह दो कि तुम्हारी छे ज्येष्ठ बेटिया उसे किले मे बुला रही हैं। वह छवों का छोटा बहनोई है। आकर वह सबका पाव छू जाय, प्रणाम कर जाय। महर वहां से उठा तथा किले से उतर कर जीर पर जाने लगा जहा मर्द वीर लोरिक बैठा हुआ था। उसकी पल्थी पर तलवार रखी हुई थी। उसकी नजर महर पर पड़ी। उसने नम्रता पूर्वक कहा—ऐ मेरी विवाहिता, ऐ सौभाग्यशालिनी मेरी बात सुनो। आज तुम्हारे पिता किले से सीधे तुम्हारी डोली की ओर आ रहे हैं। मर्द वीर लोरिक खडा हो गया। महर ने कहा—भाई, किले पर तुम्हारा बुलावा है। चल कर तुम मेरी बेटियों से भेंट कर लो। अब तो मजरी यहां नैहर करने नही आयेगी और न तो तुम ससुराल करने आओगे। सबका चलकर पैर छू लो। महर के यह कहने पर दोनो वहा से किले मे चले। आगे महर चल रहे थे। पीछे-पीछे लोरिक चल रहा था। जब वे पहली ड्योढी पार कर गये तब दरवाजा बन्द हो गया। दरवाजे मे लोहे के दो मूसल और अर्गला लगी हुई थी। जब वे दूसरी ड्योढी से निकले तो वहा बुर्ज पर चार गुण्डे तैयार खडे थे। जब कोने से छोटी तोपें छूटने लगी तो दुर्गा प्रकट हो गयी। उपासक के ऊपर अपना आचल ओढा दिया। लोरिक के शरीर से गोले महरा कर गिरने लगे जैसे पानी धाराओ मे खंडित होकर गिर रहा हो। वीर लोरिक वहा आकुल हो उठा। वह संघर्ष में उलझ गया। मन मे वह सोचने लगा—यदि मैं अकेले अपना प्राण बचाकर भाग जाऊँगा तो कल प्रातः यहा बड़ी निन्दा होगी। मैं ससुर को किले मे लेकर गया तथा किले मे उन्हें मरवा दिया। उसने अपने ससुर को कांख मे दबाया और आगन मे कूद पडा। आगन से कूद कर वह आकाश मे उड़ गया फिर नाले के उस पार खेत पर गिरा जिसका

नाम 'गूदरिया' है। फिर लोरिक ने उठ कर ससुर की धूल झाड़ी और उन्हें वहां से प्रस्थान कराया। स्वयं जीर के खेतार पर डोली के पास गया फिर वहां से अहीर के दरवार में उपस्थित हो गया। वहां पर वत्तीस कहांर वेठाये गये थे। लोरिक ने उनको पुकारा। वे अपना सामान लेकर-पालकी के पास उपस्थित हुए। मंजरी की डोली उठी तथा सोनभद्र के तट पर चली आयी। कगार पर झिमला मल्लाह की किश्ती लगी हुई थी। डोली नाव में चढ़ गयी फिर लोरिक उस पर चढ़ गया। झिमला ने खेकर उन्हें पार लगाया। डोली उतर गयी। केवट वहां घूमने लगा। तब तक लोरिक नाव से उतरा अपनी जेव में हाथ लगाया तथा उसमें से साठ मुहरों का हार निकाल कर झिमला को दिया। कहा—भाई मैं तुम्हें कुछ ईनाम न दूंगा। यह साठ मुहरों का हार ले लो। यह तुम्हारी खेवाई है। इसको ठीक से देख लो, अव मंजरी की डोली उठी। उत्तर दिशा में उसका प्रस्थान हुआ। कुछ दूर चलने के वाद मंजरी ने लोरिक से कहा—ऐ स्वामी मेरी वात सुनिए। अब हमें यहाँ नैहर नहीं करना है और न तुम्हें यहाँ ससुराल करनी है। अव तुम कुछ सतयुग का चिन्ह छोड़ दो ताकि कलियुग के लोग उसे देखें। मंजरी के यह कहने पर अहीर ने नम्रतापूर्वक कहा—ऐ मेरी विवाहिता, यहाँ कुछ सामान तो दिखाई नहीं पड़ रहा है। मैं अपना चिह्न कहां छोड़ूं! यह पत्थर दिखाई पड़ रहा है। इसी पर तलवार गिर जाय तो अच्छा है। तव सौभाग्यशालिनी मंजरी ने कहा—स्वामी तुम बड़ी चीज़ कहाँ खोजोगे। खड्ग से इसको ही दो टुकड़े कर दो। लोरिक ने तलवार निकाली। उसके चार अंगुल बाहर होते ही आवाज आकाश में गूंजने लगी। नीचे दावानल छा गया। पोरसे भर से ऊपर लहर फैल गयी। पत्थर पर तलवार गिरी। उसके टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़े। मंजरी ने कहा—स्वामी मेरी वात सुनिये। पत्थर के टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गये हैं। इसमें कौन सा निशान रह जायगा? कलियुग के लोग क्या देखेंगे? स्वामी तुम दाहिने हाथ से खड्ग चलाओ तथा बायें हाथ से पत्थर के दोनों हिस्सों को रोक दो। जब दोनों पत्थर जुड़ जायेंगे तव कलियुग के लोग उसे देखेंगे। लोरिक ने अपनी दूधारी तलवार निकाली तथा पत्थर के वीच में आघात किया, बायें हाथ से दोनों टुकड़ों को पकड़ लिया तथा दाहिने हाथ से उनमें एक छोटा पत्थर डाल दिया। फिर पालकी से महर की विटिया मंजरी निकली। उसको पसीना हो रहा था। उसने सिंदूर पोंछा तथा घूम-घूमकर उसे पत्थर पर छिड़क दिया। जब मंजरी की डांड़ी उठी। उत्तर के रास्ते चली। रात दिन चलकर डोली गउरा की सीमा पर पहुँच गयी: गउरा के लोगों की नजर उस पर पड़ी। सब लोग उसे देखने लगे। अहीर के द्वार पर जाकर खोइलनि से कहा—माता खोइलनि सुनो, तुम्हारा बेटा गौना लेकर आ रहा है। तीन महीने तेरह दिन बीत चुके हैं। तेरहवें दिन डोली गउरा पहुँची। नाऊ और ब्राह्मण को बुलवा कर चौका चन्दन ठीक कराया गया। द्वार पर परिछन होने लगी। लोरिक और मंजरी का गठबन्धन हुआ। आगे-आगे मल्ल लोरिक चला, पीछे मंजरी चली। वे कोहवर में प्रविष्ट हुए। फिर हवन आदि सम्पन्न हुए। दोनों ने दही-गुड़ खाये। अहीर का गठबन्धन खुला। वह उठकर सबको प्रणाम करने लगा। कोहवर को लोरिक ने प्रणाम किया फिर बाहर द्वार पर आकर खड़ा हो गया। देह का सारा सामान उतारा। उसका निगोट वन्द हो गया। लोरिक आनन्द पूर्वक डांकते-फांदते वहाँ से चला फिर कूद कर अखाड़े में पहुँच गया।

□ □

२. संवरू का विवाह—सुराहुल की लड़ाइयाँ

होली का आगमन—लोरिक का गउरा मे होली खेलना

भावार्थ—(१—३००)

अब उस दिन का और वहा का हाल सुनिए। अहीर अखाडे से लौट आया। वह धीरे-धीरे दरवाज़े पर गया। गगिया की पुकार लगायी। गागी हजाम आ कर खडा हो गया। लोरिक ने उससे कहा—मैं गउरा की गलियो मे जा रहा हूँ। अच्छे-अच्छे वीर जवानो को मैं भूनूगा मैंने तीन महीने और तेरह दिन तक अगोरी मे लोहा लिया। आधे फागुन मे घर आया। मेरे मन मे फागुन की लालसा है। मैं गउरा मे फगुवा खेलूँगा। तब मेरी इच्छा पूर्ण होगी। उसने गगिया को सहेजा—गागी, मेरे हजाम सुनो। तुम सीधे बोहा चले जाओ। भइया मलसावर को इस बात की खबर कर दो। वे मेरे लिए एक डफली मढवा दे और तुम्हारे हाथ भेजवा दें। आज ही तुम उसे घर लेकर आओ। हजाम गागी वहा से चला। भोर मे ही वह पल्ली पर पहुँच गया। वहा मल सावर कुश की चटाई पर बैठे हुए थे। गागी ने झुककर प्रणाम किया। सावर ने आशीर्वाद दिया—'तुम अक्षय रहो, अमर रहो। लाख वर्ष तक जीयो। जैसे गगा का पानी बढता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढे।' फिर उन्होने गांगी से पूछा—मेरा प्रिय भाई कब वापस लौटा। फगुवा खेलने के लिए द्वार पर कब निकला। कितने दिन उसके घर मे आए हो गये। तुमसे कब समाचार भेजा। गागी हजाम बोला—'मालिक कल साझ को ही वह गौना लेकर आए हैं। प्रात काल ही मैं बोहा मे कूद कर आ पहुँचा। लोरिक ने तुमसे डफ्ली मागी है। वह गउरा मे घूम-घूमकर फगुवा खेलेंगे। तब मल सावर उठे। हाथ मे धनुष वाण लिया और छिउली (पलाश वन) मे चले गए। घूम घूमकर वह जगली जानवरो को देखने लगे। मौका देखकर वह उनके आगे चले जाते थे। जब उन्होने एक हिरण को झाडी से आते देखा तो खीचकर वाण मारा। जानवर के पास गए। खजडी की नाप के बराबर उसका पेट नापा और चमडा काट लिया। बाण सभाला फिर छिउली के वन से खरका पर आ गये जहा उनके पशु रहते थे। हाथ मे डफ लेकर नाऊ प्रात काल वहा से चला गउरा मे प्रिय लोरिक के पास पहुँच गया। लोरिक ने खजडी देखी और अपने पलग से उठ गया। गउरा गाव मे गया। गउरा बारह पल्लियो का नगर था। तिरपनवे गली में अहीरो की वस्ती थी। लोरिक ने अच्छे-अच्छे जवानो को फगुवा खेलने के लिए छाँट लिया। दस बीस पट्ठो को लेकर द्वार पर आया सबकी खातिरदारी की। सबने ढोली का मगही पान खाया। तब वीर लोरिक बोला—साथिया मेरी बात

सुनो। तीन महीने तेरह दिन दक्षिण में अगोरी में आग लगी रही आधे फागुन में मैं घर आया। मेरे मन में फाग खेलने की लालसा है। साथियों हाथ में अबीर लो हम चलकर गाँव में ललकार कर फगुवा खेलें।

अब वहाँ का हाल सुनिए। दस बीस पट्ठे जवान उठे। दरवाजे से फाग खेलना शुरू किया। वे घूम घूम कर गउरा में (फाग) गाने लगे। गउरा बारह पल्लियों का नगर है इसकी तिरपन गलियों में बाजार हैं।

वहाँ का हाल सुनिए। वीर जवान बावन गलियों में घूमे फिर तिरपनवें गली में पहुँचे। वे राजा के किले पर पहुँच गये। वहाँ द्वार पर फगुवा हो रहा था। राजा सहदेव-महदेव सबकी बड़ी खातिरदारी कर रहे थे। गाँजा और चिलम लेकर चरवाह दम लगा रहे थे। नशा,पान पत्ती, सोपारी खाकर सब लोग राजा को आशीर्वाद दे रहे थे। सभी जवान वहाँ से चले तथा घर की खिड़की से होकर गुजरे। वेश्या चनइनी हाथ में काठ का वर्तन परात लिए खिड़की पर निकल कर खड़ी थी। उसने मिट्टी और गोबर में पानी मिलाकर जवानों पर फेंका। पानी गली में जमीन पर गिर कर बह गया। जवान खड़े खड़े गली में फगुवा गा रहे थे। अब लोरिक का हाल देखिए एक ओर खड़ा होकर लोरिक फाग गा रहा था। वेश्या (चनइनी) मिट्टी और पानी भर रही थी। उसने दुबारा सीधे लोरिक पर मिट्टी और पानी फेंका। अहीर लोरिक पक्का खिलाड़ी था वह बायें तिरछे हो गया। पानी गली में गिर पड़ा। वेश्या वहाँ से लौट गयी। अहीर क्रुद्ध हो गया। लोटा से उसने अबीर खींचा और चन्दा पर पिचकारी मारी। उसके दाहिने वक्ष में चोट आ गयी। वह धरती पर गिर पड़ी। उसकी माँ सेल्हिया ने उसे देखा और वह दौड़ी। बेटी को झाड़-पोंछकर उठाया। फिर गम्भीरतापूर्वक बोली ऐ विक्षिप्त लोरिक, तुम इस प्रकार क्यों पागल हो गये हो ? तुम्हारी बुद्धि हर ली गयी है। तुम दक्षिण देश में गये तब से तुम अपनी शान में हो। एक कमज़ोर राजा को तुमने मारा। अगोरी के किसानों को मारा, निर्बल हाथी को मारा और संसार में अपने खड्ग की पूजा कराने लगे ! मैं तुमको मर्द तब समझूंगी जब तुम संवरू की शादी करवा लोगे। अगर तुम कठईत के पुत्र हो तो सुरहुल के मल्ल भिमलिया की बहन है सतिया। तुम सुरहुल में ढोल बजवा दो तब समझूँगी कि तुम कठईत के पुत्र हो। यह सुनकर लोरिक के मन में मलाल उठा, ठेस लगी। उसने अपनी इचकारी-पिचकारी फेंक दी, लोटे का अबीर झटक दिया, अम्फ-डंफ (खंजड़ी आदि) तोड़ दिया और सीधे घर के लिए रवाना हुआ। उसका पलंग सोने का था। बिछे हुए पलंग पर सिर से पैर तक चद्दर तानकर वह सो गया। फिर अन्न जल सब कुछ छोड़ दिया। प्रातःकाल हुआ, पूर्व में कौवे शोर मचाने लगे। पर लोरिक मन में गुमान किए हुए पैर फैलाये अभी भी सो रहा था, सात घड़ी के अन्दर-अन्दर खा लेने वाले लोरिक को दोपहर हो गयी। लोरिक अभी तक नहीं जागा, खोदने पर भी नहीं जागा। वह मौन था, जबान खोलकर कुछ कह नहीं रहा था। घर के सब लोग व्यथित हो उठे—क्या लोरिक को किसी ने मारा है ? क्या किसी ने गाली दी है क्या किसी

ने ताने दिये हैं कि लोरिक ने अन्न जल छोड दिया है ? अब कठईत का हाल सुनिये। वह बेटे को जगाने गये उसके मुँह की चादर हटा दी। अहीर लोरिक अवाक् सा देख रहा था। कठईत वहाँ से चले और अजयी के पास गये। कहा—गुरु अजयी, घर मे बडी हलचल मच गयी है। तुम्हारे चेले लोरिक ने अन्न पानी सब कुछ छोड दिया है। वह पलक खोलकर नही देख रहा है। तब गुरु अजयी आगे चला, पीछे-पीछे अजयी चले। वह जाकर उस पलग पर बैठ गये जहा लोरिक सो रहा था। अजयी ने उसके मुँख से चादर हटायी तो वह अवाक् सा रह गया। गुरु ने कहा—चेला तुम गउरा मे इतने बलवान थे कि तुमसे जबर्दस्त कोई नहीं था। चेला, तुम मेरी बात सुनो। तुमको किस शक्तिशाली व्यक्ति ने मारा है कि तुम हृदय से रो रहे हो। जब गुरु अजयी ने ऐसा करुणापूर्वक कहा तब लोरिक सतुलित होकर उठकर बैठ गया और गुरु से कहने लगा – गुरु मेरी बात सुनो, मैंने तीन महीने तेरह दिन तक अगोरी मे लोहा लिया फिर गौना लेकर घर आया। देखो यहा फागुन उद्भासित हो रहा है। मेरे मन मे गउरा मे जाकर फाग खेलन की लालसा थी। मैं बावन गलियो मे घूमा किसी ने 'रे' और 'तू' कहकर नही पुकारा। जिस समय मैं सहदेव की तिरपनवीं गली। मे गया, वेश्या चनवा खिडकी से निकली और मिट्टी घोलकर जवानो पर फेकने लगी। वीर जवान पक्का खेलाडी थे वे कूद कर आकाश मे चले गये। पानी धरती मे गिर गया। फिर उसने मुझ पर कीचड फेका। गुरु, मेरा गुस्सा नही रुका। मैंने खीचकर पिचकारी मारी। अबीर का रग उसके दाहिने वक्ष पर जा गिरा। जब अबीर से चनवा को चोट आयी तो वह धरती पर भहरा कर गिर पडी। गुरु तब उसकी मा सेल्हिया निकली। झाड-पोछकर चनवा को उठाया। फिर उसने मुझे 'तू' और 'रे' कहकर अपमानित किया। कहा मैं दक्षिण देश मे गया। वहा के दुर्बल राजा और किसानों को मारा। कमजोर हाथो को मारा और मैं देश मे अपनी बाहु की पूजा कराने लगा। सेल्हिया ने कहा—'ऐ लोरिक, मैं तुम्हे तब मर्द बखानूँगी और तब कठईत का बच्चा समझूँगी जब झिमली की बहन सतिया से सुरहुलि मे सवरू की शादी सपन्न करा लेने और वहा ललकार कर ढोल बजा दोगे।' गुरु मैं क्या कहूँ और क्या न कहूँ ? मुझसे कहा नही जाता। सुरावल का राज्य मेरा देखा हुआ नही है अन्यथा मैं इसी क्षण प्रस्थान कर देता। सुरहुल मे जाकर ढोल बजवा देता। तब अजयी ने नम्रतापूर्वक कहा—चेला लोरिक सुनो! तुम स्नान करो, खिचडी खा लो कटोरे की तरकारी खराब हो रही है। मेरा जन्म सुरावल का है। मेरी जन्मभूमि सुरावल है मैं तुम्हे सुरहुलि का रास्ता बता दूँगा। सुरहुलि के जो जो पडित हैं, ऐ चेला मे उनका भी नाम बता दूँगा। तुम उठकर भोजन करो। मेरी बात सच है। गुरु के पास सतुलित होकर लोरिक ने सुरावल का भेद पूछा। गुरु, तुम्हारा जन्म सुरावल का है तुमने सुरावल के स्थान को कैसे छोडा ? तुम मेरे गउरा नगर मे कैसे आये ? तुमने तो मुझे यहा चेला बनाया। तब गुरु अजयी ने कहा—चेला सुना। मैं सुरहुल मे बडी खेलत । सोलह सौ लडके बदी मे खडे हुए। झीमली अतराल मे खडे —मैं

भी इस समय खेलूंगा । तब सुरहुलि के लड़कों ने कहा कि तुम राजा के लड़के हो। यदि तुम्हारा कान या सिर फूट जायगा तब राजा सारे बाल बच्चों को कोल्हू में पेरवा देंगे । लोरिक के आग्रह करने पर अजयी ने बताया- कि मैं कैसे सुरहुलि से भागा । जब बदी हुई तो राजा के लड़के भिमलिया की गर्दन पर चढ़ गए । मेरे और राजा के बीच झगड़ा हो गया ।

भावार्थ—(३०१—६००)

लड़के बदी के लिए अपनी जोड़ी बनाकर आ गए तथा पक्की बदी होने लगी । राजा भीमली गोटी हाथ में छिपाकर उसे खोजवाने लगा, उसके बारे में बुझवाने लगा । अजयी ने दाहिना हाथ पकड़ लिया । वह 'मरती' दाव में हो गया राजा ने 'चलनी' दाव बदी में रख ली । गउरा में ललकार कर बदी होने लगी । अजयी ने लोरिक को बताया कि जब मेरी देह झुकी तो सूवा ने थप्पड़ मारना शुरू किया । मैं एक बीघा दूर भाग खड़ा हुआ जब राजा भीमली ने उलट कर देखा तब वह वीर जमकर कूदा । खींच कर उसने जोर से मुझे पैर के पंजे से, एड़ी से मारा । मैं धरती में गड़ गया । मेरे बारह जोड़ी साथी थे किन्तु राजा के चौदह जोड़ी साथी कूद पड़े । मेरे ससुर खदेरू ने मेरी जान बचा ली । मैंने छः महीने तक गाय का दूध पीया । फिर नगर सुरवली से अपना चोला उठाया और तुम्हारे गांव गउरा में आ गया । मैंने यहां तुम्हें चेला बनाया और मैं अब गउरा में आनन्द कर रहा हूँ । मैं सच बात कह रहा हूँ । तुम अपनी शक्ति बढ़ा लो । भीमलिया बलशाली है । पर कर्तव्य में ऐ लोरिक तुम सरदार हो । तुम्हारे सम्मुख मां दुर्गा हैं, देवी हैं जो आदि काल से ही पूजमान हैं । गुरु अजयी अहीर लोरिक को उत्साहित कर रहा है । वह कह रहा है—चेला, कोई हर्ज की बात नहीं है । सुरहुलि का रास्ता मेरा देखा हुआ है । मैं तुम्हें सागर के भींटे पर ले चलूंगा ।

अब वहाँ का हाल सुनिये । अहीर लोरिक ने नम्रतापूर्वक कहा—गुरु तुम स्नान कर लो । गुरु ने तख्त पर बैठ कर स्नान कर लिया । फिर दोनों भोजन के स्थान पर बैठ गये । अहीर ने गिलास और बोतल सामने रख दिया । गुरु ने 'चिखना' उठाया । दोनों व्यक्तियों ने मिल कर भोजन किया तथा आपस में बात चीत की । जब खा पीकर वे संतुलित हुए तब अहीर के मन का बोझ बढ़ता चला गया । प्रातः-काल पूर्व में कौवों ने शोर मचाना शुरू किया । तब वीर लोरिक उठा । वह तेजी से दोहा में गया । वहां से बारह बैल लाया, तथा उनके गले में रस्सी डाल दी, टाट और पिटारा कस दिया, नथ के जोड़े पहना दिये । फिर स्वयं महल में चला गया, जाकर भंडार खोला तथा बटोर कर धन, पूंजी (रोकड़) बाँध ली । दरवाजे से बैल हांका तथा मेला और बाजार करने चला गया । बारह बैलों पर उसने सोपारी लदवाई तथा दरवाजे पर ला कर उन्हें गिरा दिया । बैलों का बन्धन ढीला किया तथा टाट-पिटारी उतरवा दी । फिर अहीर ने बैलों को टिटकारा ये सभी दोहा में चले गये । वीर लोरिक गाँव गउरा में चला गया जहाँ अहीरों की बस्ती जम कर बसी

हुई थी। उन्होने चौबीस जवानो को चुन लिया। वे अच्छे अच्छे पट्ठा थे। उनको लेकर लोरिक द्वार पर आ गया। फिर जलपान होने लगा। गोठहुल की चिलम पर जवान दम लगाने लगे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। दम लगा कर जवान तैयार हुए। उन्होने बैलो की जोडियों को कस कर तैयार कर लिया। उनके मुँह के जाब खोल दिये तथा चौबीसवी गली का रास्ता नापा। लोरिक ने उन्हें हुक्म दिया और कहा—"ऐ न्यौता करने वाले मेरे भाइयो, कोई अपनी जाति का हो, या पर जाति का हो, आप लोग किसी को न छोडिये। सब को मेरा न्यौता बाटिये। उसने बताया कि शुक्रवार को बारात चलेगी। लोरिक ने कोठरी मे जा कर द्रव्य बाँधे तथा एक दम सीधे बस्ती मे चला गया। सात प्रकार के बाजे तय किये तथा सब को दिन और मुकाम बता दिया। शुक्रवार को बारात चलेगी यह कह कर अहीर घर लौट आया। जिस दिन निश्चित समय आया और सुबह हुई, उस दिन लोरिक ने दस बीस ग्वालिनो को बुलाया। उन्होने जा कर तालाब पर स्नान किया फिर रसोईघर मे गयी। एक ओर पक्की रसोई बनने लगी। एक ओर कच्ची रसोई तैयार होने लगी। प्रात.काल का समय है। शुक्रवार का दिन। शुभ समय आ गया। कठईत के द्वार पर जाजिम गिर गया। गैस जुटाये गये। वहाँ बडी सेना आ कर खडी हो गयी। अहीर मडलो बना कर वहाँ बैठ गये। कठईत मद्य-पान करने लगे। गोपी और ग्वाल सभी पीने लगे। बीच मे गाजा और चिलम रखी हुई है। चरवाह चुटकियो पर ताल दे रहे हैं। भोजन भी तैयार हो गया, तब अहीर लोरिक आ कर जाजिम पर खडा हो गया। उसने कहा – ऐ मेरी जाति के लोगो, ऐ मेरे सजातीय बधु बाधवो, 'ऐ मेरे अन्य जाति के भाइयो, आप लोग उठ कर एक साथ हाथ-पाँव धोइये। आगन मे जा कर अलग अलग विभक्त हो कर बैठ जाइये। सामान परोस दिये। आग पर घी भी गरम किया जा चुका था। सीताराम बोल दिया गया। सब लोगो ने कौर उठाये। खा पीकर लोगो ने द्वार पर हाथ मुँह धोये। कुल्ला आदि करके लोग जाजिम पर चले गये। वीर लोरिक ने पान के बीडा का थाल सब का घुमवा दिया। लोग एक एक बीडा उठा कर ओंठ मे मगही पान कूँच रहे हैं। अब फिर यहा का, उस समय का हाल सुनिये। बूढे कठईत बोले—ऐ गागी नाऊ, मेरी बात सुनो। भइया सवरू को जाकर बुलाओ। प्रात.काल धरमी की बारात चलेगी। गागी नाऊ दौडा गया। सवरू कुश की चटाई पर लेटे हुए थे। गागी ने झुक कर उन्हे प्रणाम किया। भइया ने उन्हें हृदय से आशीर्वाद दिया। गागी हजाम ने कहा—धरमी मेरी बात सुनिये। तुम्हारे काका ने तुम्हें बुलाया है कल प्रात.काल सुरहलि मे बारात चलेगी। तुम्हारा इस समय तिलक चढेगा। भइया, तुम पालकी मे बैठ कर चलो, सुबह तक ही चलने का अवसर है। मल्ल धरमी आगे आगे चले। उन्होंने समझा कर नाऊ से कहा—तीन सौ साठ चरवाह है उनमे नान्हूँ अगुआ हैं। नान्हूँ को छोड कर मैं बारात में चल रहा हूँ। धरमी घर आये और एक दम घर के भीतर चले गये, जलपान किया

तथा भोजन के लिए ठहर कर बैठ गये। पंडित मोहनियाँ भी आ गये। उन्होंने रणभूमि का सारा लगन देखा। जिस वक्त रात घड़ी दिन चढ़ जायगा, तब परिछन का मुहूर्त है, ऐसा सगुन निकला।

अब वहाँ का हाल सुनिये—सभी जाति पर जाति के लोग देह का वस्त्र लेने के लिए घर चले गये। पहन ओढ़ कर सब लोग अहीर के द्वार पर आ गये। सतरंगा बाजा भी आ गया। सबसे पहले दुरहथ हुआ फिर नगाड़ा रख दिया गया। बाजा बजाने वालों ने डाल ठोका, ऐसी लकड़ी बजायी कि पृथ्वी से भार सहा नहीं गया। नीचे धरती डोलने लगी। ऊपर आसमान हिलने लगा। ऋषि मुनियों का ध्यान टूट गया। बाबा विष्णु का सुदर्शन डोलने लगा। धरती का परिछन हो रहा है। साथ ही साथ बारात प्रस्थान कर रही है। गाँव की सीमा पार कर बारात दक्षिण में, मैदान में खड़ी हो गयी। तब अहीर लोरिक बोला—ऐ गुरु अजयी सुनो। हम लोग अभी थाप भर गये, आधा कोस जमीन पार की। अच्छा हुआ कि हमें अभी याद आ गया। मैं अभी घर जा रहा हूँ। गढ़ई में वर के लिए पानी रखा हुआ है। ऐ गुरु, दुरहुलि का रास्ता तुम्हारा देखा हुआ है। तुम मेरी बारात को ले चलो। बाजे-गाजे की ध्वनि के साथ बारात दक्षिण दिशा में चलने लगी। लोरिक लौट कर घर गया।

अब वहाँ का हाल सुनिये। ब्रह्मा का इन्द्रासन डोलने लगा, विष्णु का सुदर्शन हिलने लगा। अहीर लोरिक से सबको चिढ़ हो गयी। ब्रह्मा ने स्वर्ग से कुछ भेजा, वह कुछ मृत्युलोक में उतर कर आ गया। अहीर की बारात जा रही थी। कुछ ने अपना एक ओठ धरती में रख दिया। एक ओठ आसमान में। बीच में सड़क दिखाई पड़ने लगी। हिहिंयाती हुई अहीर की बारात कुछ के पेट में चली गयी। कुछ ने मुँह बन्द कर लिया पहाड़ के रास्ते पर ऊपर चढ़ गया तथा पैर मार कर बैठ गया। अब अहीर लोरिक का हाल सुनिये। वह दौड़ते हुए आया। सोचने लगा—बाजे की ध्वनि खामोश है। बारात कहाँ चली गयी है? आगे शून्य निर्जन दिखाई पड़ रहा है। लोरिक चारों ओर देख रहा है। बारात दृष्टिगत नहीं हो रही है। अहीर शोकाकुल हो गया। कहने लगा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, आपने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया? देव को एक से एक लाल बारात में है। हमारी गोतिया तो महोबा बैठी बहादुरी की है। इतने व्यक्ति कहाँ गायब हो गये। मेरा अकेला प्राण बच रहा है। मैं गउरा में अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा। जब गउरा के लोग पूछेंगे तब मैं क्या जवाब दूँगा? वह कहने लगा—ओ धरती तुम फट जाती तो अच्छा होता। मैं धरती में समा जाता। धरती दो भागों में फट गयी। अहीर खड़ा खड़ा धसते हुए गया तथा पाताल में चला गया। वहाँ नाग और बेनिया नागिन सोई हुई थी। अहीर वीर लोरिक ने कहा—ऐ नाग, ऐ नागिन, तुमने यह क्या कर दिया? मुझे नाग से काम है। जरा सोते हुए नाग को जगा दो मैं उससे दो शब्द बातें करना चाहता हूँ। नागिन ने नाग को खोद दिया और वह हुंकार कर उठ बैठा। तब लोरिक ने

और उसने फुफकार मारा, उसकी जांघ और शरीर कांपने लगा। तब दुर्गा गरज उठी।

भावार्थ—(६०१—८००)

दुर्गा ने तुरन्त कहा—ऐ मेरे प्रिय उपासक लोरिक सुनो। तुम मेरी बात मानो। वह नाग है जिसने नेउरियापुर को बाध रखा है तथा बिठई की तरह फेटा मारे पड़ा हुआ था तथा लड़को ने उसके गुप्त द्वार को खोदा था। जब माता दुर्गा ने ऐसा कहा तब अहीर लोरिक गरज उठा—ऐ दुष्ट नाग, तुम पागल हो गये हो। तुम्हारी मति हर-सी गयी है, तुम्हारा ज्ञान चला गया है। मैं अहीर लोरिक हूँ जिसने तुम्हे नेउरियापुर मे बाध रखा था। जिस वक्त मैंने तुम्हारा फेंटा उलट दिया था लड़कों ने तुम्हारे साथ खेल किया। अब ऐ माई, तुम्हारे पहरे मे मेरी सवा लाख बारात गायब हो गयी है। तब नाग नेउरापुर की बात सोचने लगा। तुरन्त उसने अपना फॅंड जमीन पर रख दिया और रो-रो कर कहने लगा—भइया, अहीर लोरिक मेरी बात सुनो। ब्रह्मा सबसे शक्तिशाली हैं। उनसे अधिक शक्तिशाली कोई नही था। तुम उनसे भी अधिक शक्तिशाली हो गये। इस मृत्युलोक मे नीचे उतर कर उसने ऐसे बाजे जुटाये कि उसका भार पृथ्वी से नही सहा जा रहा है। जिस समय तुम्हारे डंके बजते हैं पृथ्वी डगमगा जाती है। ऋषि मुनियो का ध्यान डिग जाता है। बाबा विष्णु का सुरधाम डोलने लगता है। ऐ अहीर, तुमसे ब्रह्मा क्रुद्ध हैं। उन्होने रास्ते मे एक दूत भेज दिया। उस दूत ने होठ धरती मे गड़ाया तथा ऊपर बादल तक उसे सटा दिया। बीच मे सड़क सी दिखाई पड़ने लगी। बारात उसके अन्दर प्रवेश कर गयी तब दूत ने अपना मुँह बन्द कर दिया तथा सीधे पहाड़ पर चढ़ गया फिर नीचे जाकर ढलान पर फेंटा मार कर बैठ गया। उसके पेट में सवा लाख बारात है। ब्रह्मा ने तुम्हे डण्डा दिया है उसे लेकर तुम झरिया घाट पर प्रतीक्षा करो। प्यास लगने पर वह दूत नीचे उतरेगा और खीच कर पानी पीयेगा। तब सवा लाख बारात मर जायेगी। अतः तुम जल्दी मृत्युलोक मे चले जाओ। लोरिक वहाँ से खिसका फिर धरती पर आसमान के नीचे आ गया। वह इधर-उधर टहलने लगा तथा झरियवा घाट पर निगरानी करने लगा। घाट पर दस-बीस रास्ते दिखाई पड रहे थे। अहीर चिन्ता मे पड गया। किस घाट को मैं अगोरू ? क्या जाने किस घाट पर दूत उतरेगा। मेरी बारात नष्ट हो जायगी। दिन मे वह भाग्यमान देवताओ को स्मरण कर रहा है, सबका नाम सुमिरन कर रहा है। कह रहा है—हे माँ दुर्गा, हे देवी, सहायता करो। मैं जाकर कौन-सा रास्ता रोकूँ। माँ अपनी वाणी सुनाओ। तब दुर्गा उसकी नजर पर चढ गयी। दुर्गा जो आदिकाल से ही पूजमान हैं क्रोध भरी दृष्टि से देखने लगी। कहने लगी—मेरे उपासक, मेरे लाडले, तुम मेरी बात सुनो। जाकर बीच वाले घाट को अगोरो। दूत अभी जाकर अपना ओठ पानी मे डुबायेगा। लोरिक तब घाट पर जाकर बैठ गया। ब्रह्मा का दूत वहाँ से चला। धरती मे लेकर आकाश

तक एकदम वही दिखाई पड़ता था। लोरिक की जांघ थर-थर कांपने लगी। वह दांतों तले अंगुली दवाने लगा। मेरा खड्ग तो चार अंगुल का है, वहुत छोटा है और यह दूत तो धरती और आसमान से लगा हुआ है। यदि मैं इसकी देह छोड़ दूं तो यह उलट कर मुंह खोलेगा तथा मेरी ज़िन्दगी समाप्त कर देगा। लोरिक ऐसा कह ही रहा था कि दूत ने पानी में ओठ डाला और पहला घूंट खींचा। फिर उसने दूसरा घूंट पीया। वारात सांसत में थी। दूत ने इतना पानी खींचा कि सड़क भीग गयी। जव उसने तीसरा घूंट पीया तो दुर्गा ज़ोर से गरज उठीं—'ऐ मेरे उपासक, ऐ मेरे प्रिय लोरिक, मेरी वात सुनो। इस वार वह दूत इतना पानी पीयेगा कि सारी वारात मिट्टी में मिल जायगी, नष्ट हो जायगी।' मुझे भूख लगी है। दुर्गा के हाथ में खप्पर था। दुर्गा के ही संकेत पर लोरिक ने खड्ग खींचा जिसकी आवाज़ आकाश में गूंज गयी। नीचे दावानल फैल गया। पोरसे भर लहर उठ गयी। दूत की पलकें घूमीं और लोरिक का खड्ग उसकी गर्दन में प्रवेश कर गया। झरिया घाट पर गर्दन के गिरते ही दूत के पेट से सारा पानी निकल आया। जितने दुर्वल कमज़ोर लोग थे वे सव वाहर आकर झरिया घाट पर गिर पड़े। अहीर की वारात पानी से भीगी हुई थी। इधर सूर्य ने वादल घिरवा दिये। वारात जाड़े में ठिठुरने लगी, जवानों के दांत कट-कटाने लगे, हिलने लगे। लोरिक ने तव गुरु अजयी से कहा—भाई, तुम्हारा रास्ता देखा हुआ है, इधर के गांव और वस्तियां तुम्हारी पहचानी हुई हैं। यदि पास में कोई गांव हो तो जाकर तुम वहां से आग ले आओ। पास में जो सनई थी वह भीग चुकी है। सवालाख वारात कांप रही थी।

अव इधर व्राह्मण का हाल सुनिये। वह अभी भी टेढ़े हैं, प्रसन्न नहीं हुए हैं। उन्होंने माया का ओसारा खड़ा कर दिया। उसमें धधकती हुई आग जला दी। उसमें एक डाइन को सुला दिया जिसने वुढ़िया का रूप धारण किया था। वह डाइन धीरे-धीरे कराह रही थी। लोरिक की नज़र उस पर पड़ी। उसने अजयी से कहा—एक वड़ी वखरी दिखाई पड़ रही है। उसके पीछे एक ओसारा है। वहां एक चारपाई भी नज़र आ रही है। गुरु तुम वहां से आग उठा लाओ ताकि सारी वारात ताप सके। गुरु अजई वहां से वखरी में गया। नम्रता पूर्वक वोला—यह किसका घर-द्वार है? इसका मालिक कौन है? ज़रा हमें आग दे दीजिए। मेरे लोग तम्वाकू पीयेंगे। तव डाइन ने चारपाई से कहा—भइया, यह घर तुम्हारा ही है? तुम आग ले जाओ। मुझे वारह वैल का ज्वर चढ़ा हुआ है। मुझे कोई चीज़ दिखाई नहीं पड़ रही है।

अव अजई का हाल देखिये। वह अपना एक पैर भीतर रख रहा है। जव वह झुक कर लुकाठी पकड़ने चला तव डाइन वहां से मुंह खोल कर कूदी और अजयी को खड़े-खड़े निगल गयी। फिर खाट पर जाकर सो गयी।

अव अहीर का हाल सुनिये। लोरिक वड़ी चिन्ता में पड़ गया। गुरु अजई ठण्ड महसूस कर रहा था। जाड़े में उसे पेट भर अग्नि मिली। वातचीत करते हुए वह भर पेट आग तापने लगा। लोरिक ने गंगिया हजाम से कहा—यह साला गुरु

अजयी, बदमाश है। वह बातो के भ्रम मे आ गया है और तृप्त होकर आग ताप रहा है। गागी तुम दौड कर जाओ और आग उठा लाओ। गागी दौड कर ओसारे के दरवाजे पर पहुँचा। वहा गुरू अजयी नही दिखाई पड़ा और न तो कोई साझीदार ही दिखाई पड रहा था। एक बुढिया खाट पर कराह रही थी। नाऊ बडी शका मे पड गया उसने खखारा फिर कहा—जरा हमें आग दे दीजिए। डाइन ने खाट से कहा—यह घर तुम्हारा है। तुम अपने हाथ से आग उठा ले जाओ। हमे बारह बैल का ज्वर है। उठने का मौका नही है। नाऊ ने एक पैर बाहर रखा तथा एक पैर भीतर और ज्यो ही झुक कर वह अग्नि की लुकाठी लेने को उद्यत हुआ, डाइन मुँह खोल कर कूदी तथा गागी को खडे-खडे निगल गयी, फिर खाट पर जाकर आराम से सो गयी।

अब सोरिक का हाल सुनिये। वह इसका अर्थ और माने बैठाने लगा। शायद गुरू अजयी को मेरा डर नही है और वह जाकर आग तापने लगे। पर नाऊ गागी तो मेरा आज्ञाकारी है। वह हमारा कार्य जल्दी ही कर देता है। नाऊ इतनी देर नही करता। वह बारात मे आ गया होता। ऐसा लग रहा है कि कुछ धोखा हो गया है।

अब वहा का हाल सुनिये। अहीर वहा से खडे-खडे चल दिया तथा डाइन के घर पहुँच गया। द्वार से खखारा तथा नम्रतापूर्वक बोला। वहा न तो गागी नाऊ दिखाई पड रहा था और न तो गुरु अजयी। उसने जोर से खखारा और पूछा यह घर और बखरी किसकी है? मुझे जरा आग दे दो। तब खाट से डाइन नम्रतापूर्वक बोली। यह तुम्हारा ही घर है और तुम्हारी ही बखरी है। भइया तुम आग उठाकर ले जाओ। सोरिक वहा गया। एक पैर उसने ओसारा मे रखा। जिस समय झुक कर उसने लुकाठी पकडी मुँह खोल कर डाइन कूद गयी तथा वीर सोरिक को निगलने लगी। इसी बीच दुर्गा गरज उठी। कहने लगी मेरे उपासक, तुम मेरा कहना सुनो। तुम्हारी जेब मे छुरी और कटारी है। उसे भोंक दो ताकि डाइन का पेट खडे-खडे फट जाय। डाइन का पट फट गया। उसमे से गुरू अजयी हँसते हुए निकला, नाऊ भी हँसत हुए बाहर आया। सोरिक अजयी की ओर झुका। कहने लगा, अगर तुम मेरे गुरू न होते तो तुम्हे दो भागो मे खडित कर देता। इस तरह की गूढ कठिनाइया थी तो पहले क्या नही बतलाया। मैं अपने स्थान पर रहता। तब गुरू अजयी ने कहा—चेला, तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारे ऊपर ब्रह्मा टेढे हो गये हैं, क्रुद्ध हो गये हैं। वे ही यह सब उपद्रव कर रहे हैं। उन्होने तुम्हें कष्ट मे डाला है। मुझसे तो कुछ कहा नहीं जाता।

अब अहीर का हाल सुनिये। वह अपने हाथ से लुकाठी बटोर रहा है। जितनी भी लुकाठी थी उसको बटोर कर वह बारात मे चला आया। सवालाख बारात वहाँ काँप रही थी। सोरिक सबको आग बाँट रहा है। दस बीस स्थानो पर उसने आग जलवा दी। सब लोग घूम-घूम कर आग ताप रहे हैं। अब ठाव-ठिकाना

होने लगा, विश्राम होने लगा। तम्बाकू आदि चढ़ाया जाने लगा। गांजा चिलम पर चढ़ गया। चरवाहे दम लगाने लगे।

अब वहां का हाल सुनिये। लोरिक ने नम्रतापूर्वक कहा—दस बीस जवानों उठ जाओ तथा इसी क्षण बारात को गिन लो। कतार में खड़ा कर बारात गिनी जाने लगी। कुल संख्या ठीक उतरी। जिसके सिर पर बारात चल रही थी वह वर संवरू नहीं थे और न तो काका कठईत ही वहां थे। गुरू अजयी भी दिखाई नहीं पड़ रहे थे। बत्तीस कहांर भी वहां नहीं थे। लोरिक ने तब अपनी बिजली वाली तलवार ली झरियवा घाट के निकट पहुँच गया तथा म्यान खिसका कर फेंक दिया। लोरिक ने अपनी दस्तगी तलवार तान ली। वह चार अंगुल बाहर हुई तो उसकी आवाज आकाश में चली गयी। नीचे दावानल फैल गया। पोरसे भर तक लहर उठने लगी। अब वहां का हाल सुनिये। अहीर का दल वहां से चला। पीछे पीछे डोली निकली।

भावार्थ—(८०१—१३००)

बाजा बजाने वाले बाजे पर अद्भुत ध्वनि निकालने लगे जिससे पृथ्वी डगमगाने लगी। उत्तर में बारात रात दिन चलने लगी। रास्ते में कहीं पड़ाव नहीं पड़ा, कहीं विश्राम नहीं हुआ। सभी बरईपुर पहुँचे। सामने बड़ा भारी बागीचा दिखाई पड़ रहा था। आगे-आगे वीर लोरिक चल रहा था। पीछे सवालाख बारात थी। बरईपुर के बगीचे में बारात प्रवेश कर गयी। वहां डेरा डाल दिया गया। खाद्य सामग्री खोली गयी, जाजिम बिछा दिया गया। दल बादल, सेना का समूह खड़ा हो गया। सबको सीधा (आटा, चावल आदि) बाटा जाने लगा। गोप और ग्वालों को छोड़ कर सभी रसद पा गये। तब बूढ़े कठईत ने कहा—लड़कों अपने हाथ से बना कर खाओगे या मैं कहीं जा कर अपनी जाति बिरादर खोजूं। जब अहीर लोरिक ने यह बात सुनी तो वह जल कर खाक हो गया। काका, गांव-घर का कोई नहीं बच पायेगा। एक बार तूने गड़बड़ किया था। अहीर स्वयं ही भोजन बनायें। खुद रोटी ठोक कर खायेंगे। कोट भदोखरि गांव था, नगर बरईपुर। वहां का तमाशा देखिये। सभी बाराती भोजन कर रहे थे। खा पी कर संतुलित हो कर जिस समय वे जाजिम पर बैठ गये उस समय पान के बीड़े खुले। सभी वीर मगही पान खाने लगे। कस्बियां और पतुरियां वहां नाचने लगीं। भांड़ चुटुकियों पर ताल देने लगे। जेठ का महीना था, आम पके हुए थे। जाजिम पर मालदह तथा लंगड़ा आम गिरे हुए थे। खटिक उनको अगोर रहे थे। गउरा के लोगों ने आम उठा कर मुँह में लगा लिये। खटिक क्रुद्ध हुए और कच्ची पक्की बातें करने लगे, गाली देने लगे। लोरिक ने उन्हें अपने कान से सुना। उसको ये बातें बुरी लगीं। उसने कहा—गउरा के तरुण जवानों, तुम लोग आम को बिखेर दो। पेड़ पर जितने आम पके हुए हैं उन्हें हिला कर तोड़ो और खाओ। जितने कच्चे आम बच रहें उन्हें झकझोर कर धरती पर गिरा दो। दस बीस जवान तैयार हो जाओ तथा पेड़ों को जरा घुमा दो, झटका

लगा दो तथा बगीचे में काठ का ढेर लगा दो। जवान उठे तथा वहा हालत खराब कर दी। खटिक रोने लगे। रोते हुए बरईपुर के राजा की चादनी पर पहुँचे और कहा—राजा तुम बडे जबर्दस्त थे। तुमसे अधिक बल वाला कोई नहीं था। आज न जाने कहा से और अधिक शक्तिशाली लोगो ने चढाई कर दी है। उन्होंने बगीचे को तहस-नहस कर दिया है। हम लोग अपने बाल बच्चों का भरण पोषण कैसे करेंगे ? तुम्हारा कर कैसे चुकायेंगे। बगीचा रह नहीं गया है। वहा डालियां और काठ का ढेर लगा हुआ है। पेड पर पत्ते नही रह गये हैं। वहा अहीर का जाजिम गिरा हुआ है। बारात वहा जलसा कर रही है।

अब वहा का हाल सुनिये। कठईत ने खटिको को आ कर समझाया। उन्हें दुहाई दी। राजा ने यह बात कान लगा कर सुनी। वह अगरखा, विशेष पाजामा, पैर मे त्योरी, तथा एडी मे दिल्लीशाही जूता पहन कर तेग लिये हुए तथा झंडा फहराते हुए वहा से चला। जब बारात थोडी दूर रह गयी तब उसने डाटना शुरू किया। ऐ बारात वालो तुम कहा के हो ? तुम्हारी बारात कहा टिकी हुई है। किसकी आध से तुममें बल आ गया है। किसकी भुजा से तुममें ताकत आ गयी है ? किसके तालू में दात जम आये हैं ? तुम लोगो ने बगीचे को तहस-नहस कर दिया है। तब मर्द वीर लोरिक बोला, तुरन्त जवाब देने लगा। 'गउरा मेरा वतन है। वही मेरा स्थान है गउरा ही मेरी बुनियाद है। मैंने सुरहुल की चढाई की है। यहा बरईपुर मे हमने पडाव डाला है। बरई राजा की लडकी हठ मे आ गयी। उसने निर्द्वंद्व होकर कहा—किसके दिमाग से तुमने यहाँ पडाव डाला और मेरा बगीचा उजाड डाला। दोनो तरफ से कहासुनी होने लगी। बात बात में झगडा बढ गया। शोरगुल होने लगा, पैंतरेबाजी शुरू हो गयी वैसे ही जैसे भादो मे भैंसा चिल्लाता है। पैंतरे मे मुठभेड हो गयी तथा धीरे-धीरे हमले की नौबत आ गयी तब मर्द लोरिक ने मूवा बरइनि से कहा—मैं पहले वार नही करूँगा पर पीछे चोट करने में चूकूँगा भी नहीं। मेरे गुरु ने शपथ दिलायी है। पहले मारने के लिए हाथ उठाना मेरे लिए कसम है। मूवा बरइनि ने तलवार निकाल कर कहा—मैं अभी अहीर का भर्ता बनाती हूँ। अहीर पक्का खिलाडी था वह बायें से तिरछे घूम गया। बरइनि की तेग धरती पर गिर गयी। तलवार की मूठ सभालकर उसने अहीर को मारा। अहीर उमककर आसमान मे उठल गया। तेग धरती पर गिर गयी। रानी बरइनि का तीसरा हमला भी खाली गया।

अब वहाँ का हाल सुनिए। लोरिक ने कहा ऐ मूवा बरइनि, तुम मेरी बात सुनो। मैंने तुम्हारी पक्की चोट बर्दाश्त कर ली है, तुम मेरी कच्ची चोट बरदाश्त करो। यह कहते हुए उसने म्यान खिसका कर फेंक दिया। उसने अपनी तलवार सभाली। जब वह चार अगुल बाहर हुई तो उसकी आवाज आकाश में गूँज गयी। नीचे दावानल फैल गया और पोरसे भर तक लपट महराने ... अपनी पलक फेरी। लोरिक का खड्ग बरइनि के सिर पर गिर

होने लगा, विश्राम होने लगा। तम्बाकू आदि चढ़ाया जाने लगा। गांजा चिलम पर चढ़ गया। चरवाहे दम लगाने लगे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक ने नम्रतापूर्वक कहा—दस बीस जवानों उठ जाओ तथा इसी क्षण बारात को गिन लो। कतार में खड़ा कर बारात गिनी जाने लगी। कुल संख्या ठीक उतरी। जिसके सिर पर बारात चल रही थी वह वर संवरू नहीं थे और न तो काका कठईत ही वहाँ थे। गुरू अजयी भी दिखाई नहीं पड़ रहे थे। बत्तीस कहांर भी वहाँ नहीं थे। लोरिक ने तब अपनी बिजली वाली तलवार ली झरियवा घाट के निकट पहुँच गया तथा म्यान खिसका कर फेंक दिया। लोरिक ने अपनी दस्तगी तलवार तान ली। वह चार अंगुल बाहर हुई तो उसकी आवाज आकाश में चली गयी। नीचे दावानल फैल गया। पोरसे भर तक लहर उठने लगी। अब वहाँ का हाल सुनिये। अहीर का दल वहाँ से चला। पीछे पीछे डोली निकली।

भावार्थ—(९०१—१२००)

बाजा बजाने वाले बाजे पर अद्भुत ध्वनि निकालने लगे जिससे पृथ्वी डग-मगाने लगी। उत्तर में बारात रात दिन चलने लगी। रास्ते में कहीं पड़ाव नहीं पड़ा, कहीं विश्राम नहीं हुआ। सभी बरईपुर पहुँचे। सामने बड़ा भारी बागीचा दिखाई पड़ रहा था। आगे-आगे वीर लोरिक चल रहा था। पीछे सवालाख बारात थी। बरईपुर के बगीचे में बारात प्रवेश कर गयी। वहां डेरा डाल दिया गया। खाद्य सामग्री खोली गयी, जाजिम बिछा दिया गया। दल बादल, सेना का समूह खड़ा हो गया। सबको सीधा (आटा, चावल आदि) बांटा जाने लगा। गोप और ग्वालों को छोड़ कर सभी रसद पा गये। तब बूढ़े कठईत ने कहा—लड़कों अपने हाथ से बना कर खाओगे या मैं कहीं जा कर अपनी जाति बिरादर खोजूं। जब अहीर लोरिक ने यह बात सुनी तो वह जल कर खाक हो गया। काका, गांव-घर का कोई नहीं बच पायेगा। एक बार तूने गड़बड़ किया था। अहीर स्वयं ही भोजन बनायें। खुद रोटी ठोक कर खायेंगे। कोट भदोखरि गांव था, नगर बरईपुर। वहां का तमाशा देखिये। सभी बाराती भोजन कर रहे थे। खा पी कर संतुलित हो कर जिस समय वे जाजिम पर बैठ गये उस समय पान के बीड़े खुले। सभी वीर मगही पान खाने लगे। कस्बियां और पतुरियां वहां नाचने लगीं। भांड़ चुटुकियों पर ताल देने लगे। जेठ का महीना था, आम पके हुए थे। जाजिम पर मालदह तथा लंगड़ा आम गिरे हुए थे। खटिक उनको अगोर रहे थे। गउरा के लोगों ने आम उठा कर मुँह में लगा लिये। खटिक क्रुद्ध हुए और कच्ची पक्की बातें करने लगे, गाली देने लगे। लोरिक ने उन्हें अपने कान से सुना। उसको ये बातें बुरी लगीं। उसने कहा—गउरा के तरुण जवानों, तुम लोग आम को बिखेर दो। पेड़ पर जितने आम पके हुए हैं उन्हें हिला कर तोड़ो और खाओ। जितने कच्चे आम बच रहें उन्हें झकझोर कर धरती पर गिरा दो। दस बीस जवान तैयार हो जाओ तथा पेड़ों को जरा घुमा दो, झटका

आदिकाल से ही तुम पूजमान हो। भगवती ने वरइनि की चोली फाड़ दी तथा लोरिक की नज़र पर वह चढ़ गयीं। उसने स्त्री का तन देखा। हाथ जोड़कर उसने भगवती से कहा—माता, तुमने मेरा धर्म वचा दिया। यदि स्त्री जाति मुझसे जूझती तो मेरे वंश का नाम डूव जाता। राजा वरइनि पुरुष वेश में थी अतः उसको पहचानना कठिन था।

अव उस समय और उस घड़ी का हाल सुनिए। जिस समय वरइनि की चोली फटी और उसका सीना दिखाई पड़ा तो लोरिक व्याकुल हो उठा। उसने कहा—हे देव, हे नारायण, हे व्रह्मा तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया ? यहाँ आप लोग मेरे धर्म की रक्षा कीजिए। हे दुर्गा। आपकी शक्ति मेरी सहायता करे। स्त्री यहाँ खड्ग लेकर लड़ रही है। मेरा वंश डूव जाएगा। वरइनि ने खड्ग का प्रहार किया उसने लोरिक से कहा—मैं तुम्हारा पिंड नहीं छोड़ूँगी। तुम्हारा प्राण नहीं छोड़ूँगी। मेरा यही प्रण है कि जो मुझे युद्ध में नीचा दिखा देगा वही मेरा पुरुष होगा। मैं उसकी स्त्री हो जाऊँगी। भगवान ने मेरे प्रण की रक्षा कर ली। मैं तुम्हारा पिंड नहीं छोड़ूँगी ! तुम्हारे साथ सुरावली नगर चलूंगी। तव लोरिक ने कहा—वरइनि मेरी वात सुनो। मैं तुझे छोड़ूँगा नहीं। जव मैं सुरहुलि से लौटूंगा। तव मैं तुझे अपने साथ ले लूंगा। सुरहुलि के लोग समझेंगे कि साथ में मैं अपनी वहन को लाया हूँ तव पद समझ कर वे दिल्लगी करेंगे। वरईपुर नगर में भी मेरी वड़ी हँसी होगी। सुरावलि में अयुक्त, असंगत वातें होंगी। लोग कहेंगे लोरिक अपनी वहन को संग लेकर वारात में आया है। ऐसा कह कर लोग मेरी निंदा करेंगे। तव वरइनि वोली—मैं इस समय तुम्हारी जान नहीं छोड़ूँगी। मैं भी साथ में सुरावलि चलूंगी। अपने भसुर का विवाह ललकार कर करूँगी। वीर मर्द ने कहाँ—तुम वरईपुर में ही रहो और पान की दुकान करो। जव सुरावलि से लौट आऊँगा और भउजी की डाँड़ी फनवा लूंगा तव तुम्हारी भी डोली निकलवाऊँगा। जेठानी और देवरानी दोनों साथ गउरा गुजरात चलेंगी। लोरिक के इतना कहने पर वरइनि मन मार कर वैठ गयी। अहीर की वारात सज कर वरईपुर गाँव से उत्तर की ओर चल पड़ी। वारात रात में धीरे-धीरे चलती, दिन में दौड़ लगाती। रास्ते में कहीं पड़ाव या डेरा नहीं डालती। वाजे गाजे की ध्वनि के साथ वारात सुरवलि नगर चली जा रही थी। जव थोड़ी दूर जमीन रह गयी तथा वारात सुरवलि गाँव पहुँच गयी तव भीमली की नींद शुरू हुई। ६ महीने की उसकी नींद होती थी। अभी भीमली गाढ़ी नींद में सो रहा था तव तक वाजे की तुमुल ध्वनि होने लगी। भीमली का पिता वमरी उस दिन रोने लगा। तख्ते पर मस्तक पटकने लगा। कहने लगा—'हे दैव, हे नाराण हे व्रह्मा तुमने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया ? मेरा बेटा मेरा शत्रु पैदा हुआ है इसे कुंभकर्ण को नींद लगी हुई है। न जाने कहाँ से सूवा ने चढ़ाई कर दी है। सुरवलि में वाजे वज रहे हैं। सुरवलि का राज्य उन्होंने लूट लिया। मुझसे कुछ कहा नहीं जाता।' वारात चली और शम्भू सागर की भित्ति पर पहुँच गयी। भींटे पर जाजिम गिरा तथा सेना का दल वहाँ खड़ा हो गया। चारों कोने पर गैस

चढ़ने की नहीं हो रही है, तुम उसको अपने पास बैठा लो—अजयी ने लोरिक से इस प्रकार कहा। मर्द वीर लोरिक उस वक्त उठा, साहु के पास गया और उसका हाथ पकड़ कर उसे ले आया और अपने पास बैठा लिया। चेला लोरिक बोला—ऐ साहु सुनो। हमारा खर्चा घट गया है।

भावार्थ—(१२०१—१६००)

गुरू अजयी ने हमें तसल्ली दी। उन्होंने कहा कि सुरवलि में पहुँचते ही सतिया से मलसांवर का विवाह करवाऊँगा तथा उसकी डोली निकलवाऊँगा। पर यहाँ तीन महीने बीत गये। मेरे पास खर्चा कम था सवा लाख बारात यहाँ बैठ कर खा रही है। पास में जो खर्चा था वह घट चला है। साहु तुम मुझे खर्चा दे दो। यहाँ सारी बारात खायेगी। जिस दिन मैं सुरहुलि से गउरा-गुजरात पहुँच जाऊँगा, सब जोड़ कर तुम्हें रकम भेजूंगा। तब साहु महीचन ने कहा—भइया रुपये पैसे की क्या ज़रूरत है। मैं सुरावलि के बाजार को वहाँ घेर कर बैठवा दूंगा। जिसकी जैसी इच्छा होगी वैसा भोजन कर लेगा। जब तुम गउरा पहुँच जाना तब चिट्ठा-पुर्जा जोड़ कर मेरा कर्ज उतार देना। गउरा पहुँच कर जोड़ कर मेरा सारा खर्च भेज देना। ऐसा कह कर महीचन साहु सुरवली में चला आया। गली में जो मुखिया था, मुखबीर था, उसके नाम से डुग्गी पीटवा दी गयी। सुरवलि के बाज़ार में जितने महाजन हैं सभी सागर के भींटे पर चलें। अहीर की सवा लाख बारात वहाँ टिकी हुई है वहाँ तुम लोग खर्चा पानी जुटा दो, इसमें बहुत लाभ है। इतना द्रव्य मिलेगा कि तुम्हारे बाल बच्चे बैठ कर खायेंगे। डुग्गी पिटवा दी गयी। सुरहुलि का बाज़ार उजड़ गया। सबने जाकर सागर के भींटे को छेंक लिया। राजा बमरी उस दिन रोने लगा। धरती पर सिर पटकने लगा। हाय, सुरहुल की मेरी बस्ती उजड़ गयी। यहाँ बंड़वा सियार रो रहे हैं। तखत पर सिर पटकते हुए बमरी ने कहा—मेरा बेटा मुद्दई होकर पैदा हुआ है। उसे कुम्भकर्ण की नींद लगी हुई है। यह कहाँ का सूबा आकर टिका हुआ है। इसने सुरवली की बस्ती उजाड़ दी है। सुरहुलि के जो श्रेष्ठ लोग थे उन्होंने सागर के बीच जाकर डेरा डाल दिया है। गाँव में दिन में ही सियार रो रहे हैं। मुझसे कुछ कहा नहीं जाता। स्त्रियों ने भी जाकर वहाँ डेरा डाला है। अपने भरे हुए घड़ों का पानी उन्होंने गिरा दिया है जिससे पानी की धारा बह चली है।

अब यहाँ का हाल सुनिये। गउरा के सरदार घूम-घूम कर सब कुछ देख रहे हैं। लोरिक ने गुरू अजयी से कहा—किसी (ओढ़रा) अपहृत की हुई से झगड़ा लग जाता तो मेरा शत्रु जग जाता तथा खेत पर दो हाथ तलवारें चल जातीं। राम जिसकी सहायता करता उसकी विजय होती। फिर लोरिक ने अभद्र बोली बोलते हुए कहा—ऐ गउरा के लोगों, एक-एक स्त्री पर तीन-तीन आदमी लग जाओ पार कर जाओ। ये हल्ला मचाते हुए भाग जायेंगी तथा किले में आग लगायेंगे। सूबा वहाँ से चढ़ाई करेगा। लोरिक का हुक्म पाते ही जवानों में खलबली मची। कहने लगे—एक-एक स्त्री पर दो-दो तीन-तीन मर्द चढ़ जाओ। सुरवलि की स्त्रियाँ रोने

तो उसकी आवाज आकाश मे गूंज गयी। नीचे दावानल फैल गया तथा पोरसे तक लपट भभकने लगी। उस समय भीमली की पलक घूमी और उसकी गर्दन पर गिर गयी।''' सती चाँदनी पर सिर पटकने लगी। हे देव, हे नारायण, हे आपने मेरे ललाट मे क्या लिख दिया ?

(१६०१—१८००)

इस सागर पर कहाँ से दुश्मन आ गये ? ये सारे राज्य को उजाड रहे हैं। दाहिनी बाँह टूट गयी। मेरी अकेली जिन्दगी बच गयी। मेरे भाई सागर पर जूझ गये। सतिया ने वहाँ से प्रस्थान किया तथा अपने सत का स्मरण करने लगी। माया की उसने पिटारी (झपोली) खोली। जिस समय उसने सत का बीडा उठाया वहाँ छत्तीस नाग उठ कर खडे हो गये। सतिया ने उनसे कहा—तुम लोग इस पिटारी को छोडो तथा सागर के तट पर आकर फैल जाओ। घूम-घूम कर बारात का डस लो। जैसे मेरे भाई कट गये वैसे ही गउरा के सभी लोग मर जाय। दुर्गा तुम धन्य हो। आदिकाल से ही तुम पूजमान हो। लोरिक ने कहा—हे देवी ! तुम्हारे ही बल और पौरुष के सहारे मैंने इस दारुण देश मे आया। देवी, तुम मुझे पाठ दो, शिक्षा दो। मेरी सवा लाख बारात गायब हो गयी। दुर्गा ने एक लडकी का रूप धारण किया तथा रत्नजटित घाघरा पहन कर उसकी दाहिनी बाहू पर छमकने लगी। कहा—ऐ मेरे उपासक, ऐ मेरे प्रिय लोरिक, तुम मेरी बात सुनो। सवा लाख बारातियो के शरीर को अपनी शक्ति से बटोरो और मिट्टी की निगरानी करो। दिन मे कुत्तो और कौवो को हाको तथा रात मे पूछ कटे सियारो को। मैं सतिया की चादनी पर जा रही हूँ। मैं उसकी मति फेर दूँगी। आधी रात ढल जाने के बाद देवी भगवती उठी और इधर-उधर घूम कर दरवाजे के अन्दर प्रवेश कर गयी और दरवाजे को बन्द कर दिया। अन्दर सतिया कुर्सी पर बैठी हुई थी। वह नम्रतापूर्वक बोली—क्या तुम ठग हो ? चोर हो ? शहर के गुण्डे हो जो आधी रात ढलने के बाद यहाँ लड रहे हो, शोर कर रहे हो तथा मेरा दरवाजा पीट रहे हो। तब भगवती जो लोरिक की पूजमान थी, बोली—ऐ सती, तुम मेरी बात सुनो। मैं न तो चोर हूँ और नो बदमाश हूँ, न तो शहर का गुण्डा हूँ। मैं तो लोरिक की माँ दुर्गा हूँ मैं आदि उसकी पूजमान हूँ। तुम्हारे ही कारण मैं यहाँ चढ आयी हूँ। सवा लाख बारात है। सतिया नम्रता पूर्वक बोली। ऐ भगवती सुनो—यह बात साफ है, थी। भाई बहन का दोनो का जोडा था। भइया भीमली जूझ गयी। मुझसे गुस्सा सभाला नही गया। मैंने सत को पुकारा। नागो को मेने हुक्म दे दिया। ऐ देवी, तब नाग उस समय वे सागर के तट पर घूमने लगे तथा सवा लाख बारात लोरिक अकेला बचा है और उसके वदन पर माँ दुर्गा फण ताना, आग कडकी। नाग ने अपना फण खीच दुर्गा को भ्रम मे डाल दिया तथा उसने अपना सत

प्रकट किया। दुर्गा ने अपनी शक्ति बढ़ाई। सतिया के सिर पर चढ़ गयीं और उसे वश में कर लिया। पूज्य दुर्गा कहने लगीं—ऐ मंदाकिनी की भाँति पवित्र सती, तुम सुनो। यहाँ मेरी बात मानो। तुम्हारे कारण यहाँ मेरी सवा लाख बारात मर गयी है। यदि तुम इतनी बारात को नहीं जीवित करोगी तो तुमको बहुत अपराध लगेगा। और यह अपराध युग-युग तक तुम्हारे हाथ से नहीं छूटेगा। हमेशा-हमेशा के लिए तुम्हारे लिए बन्धन हो गया है। अब सती का हाल सुनिये। उसने नम्रतापूर्वक कहा—जो अमर सिंदूर है और जिसे ब्रह्मा ने मुझे दिया है, वह सात समुद्र के पार, जहाँ वह रखा हुआ है। वहाँ अगिया-कोइलिया मौसी हैं। उनके हाथ में मेरा सिंदूर है। वहाँ बत्तीस गाँव का भण्डार है जिसमें मेरा सिंदूर रखा हुआ है। कौन इतनी युक्ति करेगा! ऐ दुर्गा, मेरा विवाह कैसे सम्पन्न होगा?

अब वहाँ का हाल सुनिये। माँ दुर्गा प्रकट हुईं। एक ओर देवी भगवती बैठ गयीं दूसरी ओर सती बैठ गयी। उन्होंने सती की मति फेर दी। उन्होंने नम्रतापूर्वक कहा—ऐ मंदाकिनी की भाँति पवित्र सती, अपना सत तुम बटोर लो। जो तुम्हारे छत्तीस नाग हैं उनको तुम हुक्म दे दो। उन्होंने बारातियों की जाँघों में जहाँ-जहाँ दंश किया है वहाँ से वे विष निकाल लें। अहीर की बारात जीवित हो उठे। सागर के भीटे पर वह संतुलित हो जाय। सती ने अपना पिटारा उतारा, सत का स्मरण किया। नाग फुफकार कर उठे। सती ने उनसे कहा—तुम लोगों ने जहाँ-जहाँ दंश किया है, वहाँ से खींच कर बारातियों का विष निकाल लो। नाग इधर-उधर फैल गये। बारातियों का विष निकाल लिया। गउरा के सब लोग उठ कर बैठ गये। जवान लोरिक आश्चर्यचकित होकर कहने लगा—माँ! शत्रु इस प्रकार सागर पर लग गये कि मैं नींद में विभोर होकर सो गया। तब माँ दुर्गा जो आदिकाल से ही पूजमान हैं बोल उठीं—ऐ मेरे उपासक, ऐ मेरें प्रिय लोरिक, तुम मेरी बात सुनो। जैसी नींद में तुम सोये थे वैसी नींद में तुम्हारा शत्रु सोये। अब सिंदूर लाने कौन जायेगा? बारात की देखभाल कौन करेगा? दुर्गा ने कहा—यहाँ तुम्हारी सवा लाख बारात को पहरेदार संभालेंगे। तुम अमरपुरी में सिंदूर लेने चले जाओ। तुम्हारे साथ मेरी शक्ति है। तब अहीर अपना अंगरखा पहनने लगा पैर में तंवान (पाजामा) बदन में तरकश तथा डोरी संभाली। पैर में जूता डाला, साठ गज का दुपट्टा लिया। अपनी पेटी संभाली। छप्पन पेंचों वाली छूरी और कटार ली। बगल में तलवार लटकायी तथा मुलायम नरमा की पगड़ी धारण की जिसमें मेघडम्बर छत्र लगा हुआ था। सबसे ऊपर कवच था जो नौ मन लोहे का बना हुआ था। बायें हाथ में ओड़न तथा उसके दाहिने हाथ में तलवार थी। वह चलते-चलते समुद्र के पास पहुँचा। वहाँ कदम के पेड़ की छाया में बैठ गया। ऊपर हंस-हंसिनी का घोंसला था। वहाँ पेड़हरियां नामक नाग भी था। वह हर दिन पेड़ पर चढ़ता था। जिस समय वह कदम के पेड़ पर चढ़ रहा था लोरिक की नजर उस पर पड़ी। मर्द वीर उठा। हाथ में तलवार खींची। फिर डांट कर उसे मार दिया। नाग वहाँ से खिसक कर गिर पड़ा।

अब वहाँ का हाल सुनिये हंस और हंसिनी दिन भर चुग कर सन्ध्या को अपने घोसले में बच्चों के यहाँ आने लगे। हस हसिनी ने घोसले मे आकर अपने बच्चो से पूछा—बच्चो आज तुम क्या खा नही रहे हो ? बच्चों ने हस हसिनी से पूछा—पहले यह बताओ कि तुम्हारे आगे कौन है ? हस हसिनी ने कहा—बच्चो, हमारी बात सुनो। रात को अण्डे बच्चो की सेवा करके हम लोग चले गये आज जब लौट कर हम लोग आये तो तुम लोगो को ममता से हीन निर्मोह देख रहे हैं। आज क्या बात हो गयी है कि घोसलो मे जरा भी मोह-ममता नही है। बच्चो ने कहा—माँ ज़रा नीचे देखो। हस और हसिनी ने नीचे देखा। वहाँ नीचे पल्थी मार कर एक मर्द बैठा हुआ है। जो नाग अण्डे और बच्चो को खा जाता था वह दो टुकड़ो मे होकर गिरा हुआ है। हस हंसिनी उड कर बाजार गये। एक दूकान से मिठाई का थाल अपने चगुल मे भर लाये। फिर लोरिक के पास जाकर कहा—भइया, तुम पहले भोजन कर लो तब हमारे अण्डे बच्चे खायेंगे। वीर लोरिक भोजन करने लगा उसके बाद बच्चो ने खाया। हस हसिनी ने लोरिक से कहा—भइया, सुनो। तुमने हमारे साथ बड़ी नेकी की है। तुम हमसे कुछ वर माँग लो। वीर लोरिक ने कहा—पक्षियो मेरी बात सुनो। तुम्हारी जाति पक्षी की है। तुम लोग कौन सा वर दोगे। हस हसिनी ने कहा—जो कुछ तुम्हारी माँग होगी हम पूरा करेंगे। लोरिक ने कहा—सात समुद्र पार जहाँ अगिया और कोयलिया हैं वहाँ बत्तीस नगर हैं उसमे सोहाग का सिंदूर है, मुझे उसे लेने जाना है। तुम लोग हमे उस पार कर दो। हस हसिनी ने कहा—भइया अहीर लोरिक सुनो। पत्तो के सात दोनो मे माँस रखा जायगा और हमारे साथ चलेगा। लौटते समय भी सात दोनो मे मास चढेगा। चौदह दोने मास का प्रबन्ध करो तब हम तुम्हे पार डका देगे। वीर मर्द उठा। उसने नाग की बोटी गोटी काटी। तेरह दोने तैयार हो गये। पर एक दोना मास घट गया। हस-हसिनी दोनों अहीर के पास गये उन्होने वहाँ अपना डैना फैला दिया। उस पर मास रख दिया गया। अहीर बीच मे बैठ गया। उसने हाथ मे बिजली की तलवार रखी थी। पक्षियो ने वहाँ से उड़ान भरी तथा उसे पार डँका दिया। सात हिस्सो को पार करा कर लोरिक को पक्षी कदम के वृक्ष पर लाये। वीर लोरिक वहाँ से उतरा तथा रेती मे चला गया। वहाँ अगिया और कोइलिया बहिनें थी। वहाँ झूला पड़ा हुआ था दोना मौज मे गीत गा रही थी। लोरिक ने जाकर उन्हे झुककर सलाम किया। वहाँ रात मे कुररी पक्षी आश्चर्य प्रकट करने लगी, दातो तले अगुली दबाने लगी।

भावार्थ—(१९०१—२२३३)*

अहीर ने वहाँ डाइनियो से मेल कर लिया। दोनो अहीर के साथ ठहर पर भोजन करती थी। इस प्रकार दस पाँच दिन ही रह गये तब उन्होने लोरिक से

*त्रुटि सुधार—पृष्ठ २२० पर लाइन न० २१०० के स्थान पर ३००० मुद्रित है यहाँ से पृष्ठ २२४ तक लाइनो का क्रम सुधार कर पढ़ें।

कहा—ऐ भइया, परदेसी सुनो। तुम यहाँ चारो ओर बहुत घूमे। चलो, अब नाव पर आनन्द से बैठें स्नान करें। लोरिक ने उनसे कहा—मैं रास्ते में बहुत थक गया हूँ। नाव पर स्नान करने नहीं जाऊँगा। मैं यहाँ रामरसोई बनाऊँगा। तुम लोग स्नान कर आओ। दोनों बहनें डोंगी लेकर स्नान करने चली गयीं। वे समुद्र में नौका-विहार करने लगीं। इधर लोरिक भंडार में प्रवेश कर गया। उसने सिंदूर उठा लिया तथा उसे लेकर कदम्ब के वृक्ष पर चला गया। हंस-हंसिनी उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं। उन्होंने एक धारा पार किया, फिर दोने का मांस खाया। दूसरी धार को डांका, फिर मांस खाया। इसी प्रकार तीसरे दोने का मांस छक कर खाया चौथे, पांचवे तथा छठे दोनों का मांस खाकर वे आगे बढ़ती रहीं। जब सातवीं धारा में आयीं तब उन्हें बड़ी भूख लगी। उनका मुँह सूखने लगा। लोरिक ने पूछा—इस बीच समुद्र की धारा में क्या तुम लोग मेरा प्राण ले लोगे। हंस हंसिनी ने कहा—हमें थोड़ी भूख लगी है। इस कारण हम तीनों समुद्र में गायब हो जायेंगे। तब लोरिक ने जेब में हाथ डाला, चाकू निकाला तथा उसी वजन का मांस (अपने शरीर से) काटा। हंस हंसिनी ने उसे खाया और लोरिक को धारा के पार करा दिया। लोरिक समुद्र पार होकर बारात की ओर चला। घण्टा-पहर भर में वह शम्भू सागर के तट पर पहुँच गया। माँ भगवती उसको देख रही थीं। वह मुँह फाड़कर, खंखार कर उसके पास दौड़ीं। उन्होंने चेले की जांघ चाट दी वह यथा पूर्व हो गयी। लोरिक ने कहा—ऐ सुरहुलि के लोगों, मेरा हुक्म लेकर जाओ और बमरी से कह दो कि वे जल्दी अपने दरवाज़े पर विवाह का इन्तज़ाम करें। मेरी बारात दरवाज़े पर लगेगी। वे अहीर के पांव की पूजा ठीक से करें। सूबा बमरी तख्त पर बैठे हुए मगही पान खा रहे थे। धावन उसी समय वहाँ पहुँचा। बमरी ने कहा—धावन मेरी बात सुनो। मेरी जाति क्षत्रिय की है। वह अहीर ग्वाल है। मैं अहीर के पाँव की कैसे पूजा करूँगा? मैं (सतिया की) शादी कैसे करूँगा? यह बात सुनकर धावन शम्भू सागर पर लौट आया तथा लोरिक को बमरी का हुक्म सुना दिया। अहीर लोरिक ने धावन से कहा कि जाकर उन्हें समझा दो। यदि वह ठीक से पाँव पूजा करेंगे तो उनको प्राण दान मिलेगा। नहीं तो मैं अपनी दोगाही तलवार खींचूंगा तो उससे बमरी को दो भागों में काट कर ढेर कर दूँगा। लोरिक ने हुक्म दिया—ऐ मेरे सवा लाख बारातियों, तुम लोग अपना सामान कस लो। शक्ल-सूरत, ठाट-बाट बना लो। चलकर बमरी के यहाँ द्वारचार करो। सारे मर्द तारों की भाँति चमक उठे। लोरिक सागर पर चाँद की भाँति उगा हुआ था। अहीर ने हुक्म दिया। बारातियों, बमरी के द्वार पर चढ़ चलो। ऐ बाजा बजाने वालों, सुनो। तुम लोग ऐसी लकड़ी बजाओ, ऐसी ध्वनि निकालो कि सुरहुलि नगर में कोलाहल फैल जाय।

अब बांठा का हाल सुनिये। उसने आज़ाद होकर लकड़ी बजानी शुरू की। चमारों ने लकड़ी बजाना, बाजों पर ध्वनि निकालना शुरू कर दिया। सात रंगों का बाजा बजना शुरू हुआ। उस समय पृथ्वी डगमगाने लगी; विष्णु लोक कांपने

लगे। बारात द्वार पर लगी। ठाट से द्वारचार होने लगा। पाँव पूजा होने लगी। सतिया की माँग मे सिंदूर पड़ गया। अहीर का विवाह ठाट से सम्पन्न हुआ। तब फिर अहीर वीर लोरिक बोला—ऐ ससुर बमरी, हम खिचड़ी और भात की रस्म एक साथ सम्पन्न करेंगे। तब रुखसदी होगी। मुहूर्त आ गया है। बारात शम्भू सागर पर जाकर मण्डली बनाकर बैठ गयी। सुरहुलि में जलसा होने लगा। कहिबन और पतुरिया नाचने लगी। भांड़ चुटकी पर ताल देने लगे। सूबा बमरी के यहाँ रसोई तैयार हो गयी। बारात मे आज्ञा कर दी गयी कि जितने गोप और ग्वाल हैं वे उठकर खिचड़ी खायें। सभी काम एक साथ निपट जाय तब विदाई होगी।

अब वहाँ का हाल देखिये। अहीर खरभरा कर उठे। गोप और ग्वाल वहाँ से चले। अब दूल्हा सांवर खिचड़ी और भात खाने चलेंगे। गउरा के जवान उठे। गोप आँगन में पहुँच गये। अहीरों का पत्तल बिछ गया। सोलह प्रकार के सामान पत्तल पर गिरने लगे। सब लोग मडली बना कर बैठे हुए थे। बीच मे आग रखी हुई थी। कटोरो मे सब्जियाँ रखी हुई थी। पानी आदि भी हाथ मुँह धोने के लिए दे दिया गया। तब चौधरी ने कहा—पंचों, कौर उठाओ, सीताराम करो। अहीर गर्दन झुका कर भोजन करने लगे। खिचड़ी-भात खा कर, हाथ मुँह धोकर वे मगही पान खाने लगे। ऊपर से सूर्ती और सोपारी ठोंकने लगे। सुरवली मे जलसा हो रहा था। लोरिक ने भी भोजन कर लिया था। उसने बमरी से कहा—ऐ मेरे ससुर, देखो, सायत आ गयी है। सतिया की विदाई इसी क्षण कर दो। मुहूर्त की घड़ी मे हम लोग प्रस्थान कर देंगे तथा दक्षिण की ओर चल देंगे। तब धरमी की विदाई होने लगी। सावर बमरी के दरवाजे पर गये। जितने लोग बमरी के अपने थे वे पाँव लगी करने गये, प्रणाम करने लगे। धरमी सावर ने भी बमरी को प्रणाम किया। बमरी ने उन्हे हृदय से आशीर्वाद दिया। तुम लाख वर्ष जीवित रहो। तुम्हारा शरीर, तुम्हारी जाँघ बढ़े। उन्होंने साठ मुहरों का हार संवरू के गले मे पहना दिया पाँवलगी और आशीर्वाद के बाद सतिया की डोली उठी। आगे-आगे सतिया की डोली चली। पीछे पीछे बारात चली। सभी लोग रात को चलते रहे, दिन मे दौड़ते रहे। कही उन्होने डेरा नही डाला, न विश्राम किया। चलते चलते वे बरईपुर पहुँचे। वहाँ गद्दी से बरइनि उठी। वह मगही पान बेच रही थी। लोरिक से उसने ललकार कर कहा—ऐ मेरे सैंया, ऐ सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मालिक, यही तुमने बात दी थी, यही तुमने करार किया था कि जिस दिन सुरहुलि से मउजी की शादी कर लौटूगा और गउरा जाते समय बरईपुर मे जब बारात आयेगी तब मैं तुम्हारी डोली ले चलूगा। दोनो डोलियाँ गउरा गुजरात चलेंगी। तब वीर अहीर लोरिक ने कहा—बरइनि मेरा कहना मानो। युद्ध मेरा उठना बैठना है, लोहा लेना ही मेरे प्राण का आधार है। यदि मैं मेहरियो के काम-धाम मे फँसू तो क्या करूँगा और क्या खिलाऊँगा? ऐ बरइनि, तुम अपना काम देखो। ढोली का मगही पान बेचो। जब लोरिक ने यह बात कही तो बरइनि की आशा टूट गयी। बारात वहाँ से दक्षिण

चली। रात में बारात चलती रही, दिन में दौड़ती रही। उसने कहीं डेरा नहीं डाला। विश्राम नहीं किया। चलते चलते बारात गउरा पहुँच गयी। गउरा की सीमा पर जब बारात पहुँची तब अहीर वीर लोरिक ने कहा—ऐ बाजा बजाने वाले चमार, सात रंग का बाजा बजाओ। ऐसी लकड़ी बजाओ कि गउरा में उसकी ध्वनि स्थिर हो जाय। तुम लोग अपना पैसा, कौड़ी, अपनी मजूरी ठोक बजा कर ले लो। उसके बाद मैं बिदायी दूँगा। मैं सब को एक-एक बछिया दान में दूँगा। गउरा में लकड़ी बज उठी। अहीर के घर तक बाजों की ध्वनि पहुँची। सभी लोग बाहर निकल कर बारात की राह देखने लगे। जब गाँव निकट आ गया तब चारों ओर उज्ज्वल प्रकाश फैलने लगा। सवा लाख बारात गउरा उमड़ती चली आ रही थी। घड़ी भर के भीतर वह दरवाजे पर आ गयी। दूल्हा सांवर पालकी पर चढ़ गये। परिछन होने लगा। दूल्हा और दुलहिन उतर कर कोहबर में चले गये। वहाँ पूजा हुआ। उन्हें गुड़ घी खिलाया गया। कोहबर में दोनों की गाँठ खुली। वर अपने आसन से उठा, सब को प्रणाम किया। फिर बारात में चले गये। खिचड़ी और भात खाया। दो एक दिन घर में रहे। तदुपरान्त मल सांवर बोले—काका मेरी बात सुनो। छः महीने तथा आधा पक्ष सुरवली में बीत गये। मुझे लक्ष्मियों की (गायों) की चिन्ता है। मैं उनके पास जाऊँगा। तब सतिया सत के साथ बोली—ऐ मेरे स्वामी, दूसरे की बछिया यहाँ लाकर तुम अलग क्यों हो रहे हो? मैं भी बोहा में चलूंगी। गायों का गोबर होगा, उपले होंगे। मैं भी गायों से दोनों समय भेंट करूँगी। उस समय दोनों बोहा में चल पड़े। वहाँ जाकर सांवर ने तम्बू तान दिया। सतिया उसमें प्रवेश कर गयी। धरमी स्वयं वहाँ से चल पड़े और जाकर कुश की चटाई पर बैठ गये।

□ □

३. हल्दी—चनवा का उद्धार

भावार्थ—(१—२००)

सुमिरन—गायक कहता है—[illegible] को [illegible] देवी को [illegible] करो। आधी रात में देवताओं से [illegible] करो। [illegible] देवताओं के दूतों का स्मरण करो। ये ही तीन [illegible] के [illegible] हैं। हे [illegible], तुमसे रामायण की रचना हुई। लक्ष्मण ने [illegible] छोड़ दिया। सीता ने अपना नैहर छोड़ दिया [illegible] ने जाकर धनुष तोड़ा।

गायक कहता है अब उस समय का हाल सुनिये। [illegible] गुरुकुल में गया हुआ था और [illegible] का विवाह और गौना सम्पन्न हुआ था, उसी समय [illegible] के साथ चनवा का विवाह सम्पन्न हुआ। वह चनवा को [illegible] ले गया।

गायक की दुर्गा से गायन में सहायता करने की प्रार्थना

हे मैया फटेश्वरी, हे [illegible] मेरे [illegible] बैठिये। जिह्वाग्र पर, हे माँ दुर्गा, [illegible] कीजिए। हे देवी, यदि एक भी शब्द [illegible] तो मैं फिर से तुम्हारा नाम नहीं लूँगा। [illegible] है वह इस क्षण, हे माता दुर्गा, [illegible] माँ। तुम्हारी [illegible] जानना है।

जिस दिन चनवा का गौना हो गया, [illegible] कराकर सेवहरि चला गया और [illegible] और गायों के चरागाह पर चला गया। [illegible] तैयारी की। बुढ़िया [illegible] हुई थी। [illegible] [illegible] मेरे [illegible] गायों के [illegible] है। [illegible] ने कहा—[illegible] [illegible]

फिर ज्योनार की तैयारी होने लगी। राम रसोई समाप्त हुई। पानी गर्म करके सेवहरि के पास आया। जब अहीर ने गर्म किया हुआ पानी देखा तो वह आश्चर्य में पड़ गया। कहने लगा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया। खौलता हुआ पानी यहाँ रखा गया है। जब यह मेरे शरीर पर पड़ेगा तो मेरा शरीर जल जायगा। मैं तख्त पर स्नान नहीं करूँगा। यह वेश्या मेरी शत्रु हो गयी है। इसने मुझे मारने के लिए यह कार्य किया है। उसने स्नान किया फिर हाथ मुँह धोकर भोजन करने के स्थान पर जाकर बैठ गया। उसने ठहर पर की ज्योनार देखी। बारह प्रकार की तरकारियाँ तथा छत्तीस प्रकार के व्यंजन हैं। दइयंवा की लड़की ने ठाट से ज्योनार बनायी है। सब ठाट देखकर सेवहरि ने कहा—यह आते ही मेरी जड़ के लिए, जीवन के लिए काल बन गयी। उसने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरी तकदीर में क्या लिख दिया? यह बुजरी, वेश्या मेरे लिए शत्रु हो गयी हैं। लगता है यह मेरी जान ले लेगी। छत्तीस दोने में तरकारी रखी हुई है। न जाने किसमें इसने विष डाल दिया है। मैं किसमें का विष खा जाऊँगा तथा क्षण में ही पीढ़े पर उलट जाऊँगा। मल्ल सिवहरि ने कहा—ऐ बुजरी वेश्या चनइनी, तुमने इस प्रकार से क्यों बनाया है। मैं तो बासी भात का खाने वाला हूँ। रोज बासी मट्ठा खाता हूँ। तुमने छत्तीस दोने में विष रखा है। न जाने कौन मुझे मीठा लगेगा। कोई दोना मैं उठाकर खा लूंगा और सहज में मेरी ज़िंदगी चली जायगी। तुम मेरे घर में शत्रु आयी हो। चनवा ने कहा—घर में खुशी बिखेर कर दो चार कौर भोजन कर लो। अहीर ठहर से उठ गया। उसने हाथ मुँह धो लिया। फिर वह आँगन में चला गया। कम्बल बिछा लिया तथा बीच आँगन में सो गया।

अब चनवा का हाल सुनो। उसने अपनी सासु को बुलाया। सास पतोहू ने मन भर कर भोजन किया। भोजन करने के बाद चनवा ने सास का पलंग लगाया और उस पर उन्हें सुला दिया। फिर उसने अपना बिछौना ठीक किया, धोती का काछ बांधा तथा सीधे आंगन में चली गयी जहाँ मल्ल सिवहरि सो रहा था। उसकी गर्दन में हाथ लगाया और उसे उठा दिया। उसे ले जाकर पलंग पर लेटा दिया। मल्ल सिवहरि सो गया। इधर चनवा आभरण ठीक करने लगी। फिर आरती सजाकर सिवहरि की शैय्या पर चली गयी। थोड़ी रात रह गयी, भोर के झुटपुटे में सिवहरि उठा तथा दूध दूहने वाला बर्तन लेकर गायों के अड़ार पर चला गया। अड़ार पर चरवाह के छोटे-छोटे बच्चे थे। उन्होंने सिवहरि से कहा—ऐ मालिक, हमें भूख लगी है, (वट) बर के पके हुए फलों को आप हमें खिलाइये। सिवहरि बर (वट) के पेड़ पर चढ़ गया। खोद खोद कर फलों को गिराने लगा। लड़के चुन-चुन कर फलों को खाने लगे। जब वे पूर्ण रूप से तृप्त हो गये तब कहने लगे—मालिक, अब हमसे जबर्दस्ती खाया नहीं जायगा। इधर वेश्या चनैनी निकल कर आँगन में खड़ी हुई। उसने सास से कहा—हे अम्मा, हे सासू, आज मैं महल में सो रही थी तो मैंने एक विचित्र सपना देखा। मेरे पिता अचेत हैं और उनको ज़मीन पर उतारा

गया है। मेरे भाई महादेव चारपाई पर पडे हुए हैं। मैं जल्दी गउरा आना चाहती हूँ और बाप-भाई का मुंह देखना चाहती हूँ। नही तो मेरे नाम पर कलंक लगेगा। लोग मेरी निंदा करेंगे। सिवहरि की माँ घर से निकली और अपने बेटे के पास बैठ गयी। उससे कहा—दुलहिन भवन मे सो रही थी तो उसने विचित्र सपना देखा। उसके पिता सहदेव मरणासन्न चारपाई पर पडे हुए हैं। उनके भाई महदेव को गउरा मे जमीन पर लेटा दिया गया है। जल्दी से दुलहिन को नैहर पहुँचा दो वह जाकर बाप और भाई का मुंह देखे। नही तो उसकी बदनामी होगी और हमेशा के लिए उसको कलक लग जायेगा। माँ की यह बात सिवहरि के हृदय मे बैठ गयी। उसने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे मस्तक मे क्या लिख दिया? यह बुजरी मेरी मुद्दई है। यह किसी तरह से यहाँ से हट जाती तो मेरे सिर की बला टल जाती। आगे-आगे चन्दा चली। उसके पीछे सिवहरि चला। वे जगल मे प्रवेश करते गये। दोनों बडी तेजी से पैर बढा रहे थे। वे बेबरा नदी पर पहुँचे। वहाँ नदी फुफकार रही थी वहाँ कोई नाव या पतवार नही दिखाई पड रही थी। दोनो तट पर खडे थे। तब वेश्या चनैनी बोली—हे स्वामी, रात को यह मेरा शरीर तुम्हारा है, दिन मे यह शरीर मेरा है। तुम उलट कर पीछे देखते रहो। मैं जरा नदी मे स्नान कर लूं। रात मे मैंने भोजन बनाया दिन मे मेरे शरीर की ओढनी महक रही है। सिवहरि उलट कर पीछे देखने लगा। तब तक चनवा ने अपनी धोती का काछ सभाला और नदी मे ऐसी डुबकी लगायी कि वह आधी नदी पार कर गयी। फिर उसने जमकर डुबकी मारी। उसने कहा—सैया, मेरी बात सुनो तुमने अपनी गाठ को रोक करके मुझे अपनी पत्नी बनाया। मैं गउरा मे तुम्हे धिक्कारूँगी। सिवहरि ने दुख से कहा—हे ब्रह्मा, हे नारायण, तुमने मुझे सारा गुण दिया पर तैरने का गुण मेरे पास नही है। नही तो चार हाथ तैर कर मैं नदी के पार हो जाता। और इस भागने वाली का जोश देखता। इतना कह कर वह अपने घर चला गया। चनवा उस पार चली गयी। उस पार पहुँच कर उसने अपनी दो भीगी धोतियो को हाथ मे उठाया तथा पानी निचोड कर उन्हे सुखाया। हाथ पैर सभाल कर वह वहाँ से भागी तथा जगल और झाडी की ओर आगे बढ गयी। जब वह आधे जगल मे चली गयी तब बाठा ने जो वहाँ शिकार खेल रहा था, उसे देखा। उसके पास आठ धनुष थे। वह धनुष के साथ कुत्तो का पीछा कर रहा था। वह हँसते हुए चदा के पास पहुँच गया और उसका पीछा करने लगा। आगे आगे चनवा भागी चली जा रही थी। पीछे चमार बाठा उसका पीछा कर रहा था। जगल मे कुछ दूर जाने के बाद जब चनवा थक गयी तब अपनी इज्जत बचाने के लिए उसने नम्रतापूर्वक कहा—हे चमार, हे मेरे पति, तुम हमारे मालिक हो। मैं तुम्हे छोड कर किसी और की नही होऊँगी किन्तु आज मैं इतवार का व्रत रख रही हूँ। यदि तुमने मेरी देह म कुछ गडबडी कर दी तो मेरा व्रत भग हो जायगा। जब चदा ने यह कहा तब चमार बाठा ने कुछ धैर्य धारण किया। फिर वेश्या चनइनी ने कहा—हे मेरे बाठा, दिन का

थोड़ा समय रह गया है अब मैं यहाँ फलाहार करूँगी। यहाँ तूत का फल फला हुआ है तुम उन्हें उठा कर लाओ। बांठा वहाँ से चला और पेड़ के नीचे पहुँच गया।

भावार्थ—(३०१—६००)

तोता और चिड़ियों ने चाट कर तूत के फलों को नीचे गिरा दिया था, चमार बांठा ने उन्हें अपने गमछे में बटोर लिया और चनवा के पास पहुँचा दिया। जिस समय बंठवा ने तूत के फलों का कूट लगाया उस समय चनवा क्रोध में जलकर खाक हो गयी। उसने कहा—चिड़ियों का जूठा किया हुआ फल है मैं उससे कैसे फलाहार करूँ? मेरा व्रत खण्डित हो जायगा। मैं भूखी ही रहूँगी। चनवा ने कहा—ऐ स्वामी, ऐ मेरे सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट, तुम जूठे फल लाये। आज मेरा व्रत रखना व्यर्थ हो जायगा। तुम पेड़ पर जाओ तथा तूत के फल तोड़ लाओ। जिस समय बांठा तूत के पेड़ पर चढ़ गया उस समय चनवा ने अपना सत-स्मरण करना शुरू कर दिया। उसने कहा—हे गउरा की देवी मैं तुम्हारा सुमिरन करती हूँ। बोहा की देवी कनिका मुरारी मैं तुम्हारा स्मरण करती हूँ। लोरिक की भवानी, मैं तुम्हारा सुमिरन करती हूँ। हे दुर्गा, देखिये मेरी इज्जत चली जा रही है। तब पेड़ की डाली बढ़कर आकाश में चली गयी। डाल से लता निकली और उसने बांठा चमार को लपेट लिया। वह उसी में बंधा रह गया। वेश्या चनइनी वहाँ से भागी तथा सीधे गउरा चली आयी।

अब वहाँ का हाल सुनिये। चन्ना जब कोस भर आ गयी तब अपने मन में सोचने लगी और कहने लगी—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया? यदि वह चमार बंधे-बंधे मर जायगा तो हमेशा-हमेशा के लिए हमारा पूजमान बन जायगा। फिर उसने गउरा की देवी को स्मरण किया। बोहा की कनिका मुरारी देवी का स्मरण किया। लोरिक की भवानी का स्मरण किया और उनसे सहायता मांगी कि चमार की बौंड़ (लता) कट जाय। बांठा धरती में भहरा कर गिर जाय। तब दुर्गा ने प्रकट होकर लता का घेरा काट दिया चमार बांठा आकाश में जाती हुई डाली से गिर कर धरती पर आ गया। उसने अपनी धूल झाड़ी। हाथ में धनुष उठाया, तथा चंदा के पीछे-पीछे दौड़ने लगा। आगे-आगे चनइनी चली जा रही थी। जब वह गउरा की सीमा पर पहुँची तो उसे सामने कुछ भेड़िहार दिखाई पड़े। वे भेड़ों का समूह लिये खड़े थे। चमार बांठा वहाँ चिल्लाया। भइया चरवाह सुनो। मैंने शाम को गौना कराया। प्रातः काल मेरी विवाहिता भागी जा रही है। ज़रा तुम उसको आगे जाकर रोको। मैं जल्दी उसके पास पहुँचूंगा। तब वेश्या चनैनी ने कहा—भइया अहीर सुनो। मैं तुम्हारे रोकने से नहीं रुकूँगी। यदि दिन-दोपहर का समय हो जायगा तब तुम्हारे पशुओं को खाज हो जाएगी। उससे तुम्हारी क्षति होगी तथा तुम्हारे बाल बच्चे मरने लगेंगे। तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जायगा। गड़ेरिया तब वहाँ रुक गया। चन्दा आगे चली गयी।

बाठा ने हलवाहा को आवाज लगायी। भइया हलवाह मैंने शाम को गौना कराया और प्रात काल मेरी विवाहिता भागी जा रही है। ज़रा आगे जाकर उसको रोका। वेश्या चनइनी ने उनसे कहा मैं तुम्हारे रोवे नहीं रखूंगी। किसान खेत पर आयेगा। तुमसे काम के बारे मे पूछेगा। जब काम नही दिखाओगे तो तुम्हारी हलवाही समाप्त हो जायगी। तुम्हारे बच्चे मरगे। इसमे कौन सी अच्छाई है। यह कहकर चनइनी वहाँ से भागी। वह गउरा गुजरात पहुँच गयी। आगे गाँव की सीमा थी। चनइनी को एक बछडा दिखाई पडा। उसने बछडे से रो-रोकर कहा—ऐ मेरे बछडा पिछइया, सुनो। मैं बिजरिया नगर से भागी हूँ। बेवरा नदी पार कर यहाँ आयी हूँ। जब मैं आधे जगल में आयी तो बाठा आठ कुत्ते तथा नौ धनुप लेकर जगल म शिकार खेल रहा था। उसने मेरा पीछा किया। मैं आगे आगे भाग आयी। तुम ज़रा उसको रोको तो मैं किले मे पहुँच जाऊँ। इसी बीच बाठा चमार भी वहाँ पहुँचा। जब वह पास आया तो बछडा उसकी ओर तेजी से झुका। बाठा चमार भागा। बछडा शक्ति लगाकर तेज़ी से उसके पीछे दौडा। चनवा इस बीच अपने किले म प्रवेश कर गयी। बाद मे बाठा चमार सागर के भीटे पर चढ गया। वहाँ साठ पार का बास झडे के साथ गाड दिया। तथा अपने हाथ मे गुलेल और गोसी ले ली। कहने लगा—जैसी जिसकी बाँह है वैसे ही वह दूध से सागर भर दे, नही तो साठ पोर के बास के वजन के बराबर सोना दे। या चन्दा को विवाह के लिए घर से बाहर निकलवावे। तभी सागर के नीव मे पानी पीने दूँगा। वहाँ के राजा सहदेव ने सोलह सौ नौकरानियो को वहाँ भेजा। वे अपने हाथ मे घडे लेकर वहाँ पहुँची। जब वे सागर के भीटे पर पहुँची तब चमार बाठा ने गिन-गिनकर गोली मारनी शुरू की। घडो के सतरह-सतरह टुकडे हो गये। वे सभी राजा के यहाँ पहुँची। राजा सहदेव अपनी चाँदनी पर बैठे हुए थे। उनसे दो लौंडियो न जो पनिहारिन का काम करती थी कहा—हे राजा तुम गउरा मे बडे शक्तिशाली थे। तुमसे बढकर कोई और दूसरा शक्तिशाली नही था। आज तुमसे भी अधिक जबर्दस्त राजा चढ आया है तथा सागर के भीटे पर टिक गया है। उसन साठ पोर का बास गाड दिया है तथा पल्थी मार कर वहाँ बैठ गया है। उसका कहना है कि साठ पोर के बास के बराबर सोना दो या पोखरे के बराबर दूध भर दो या चन्ना को बाहर निकाल कर शादी करवा दो। तभी सागर के नीचे वह पानी पीने देगा। चमार तीन दिन तीन रात तक उपद्रव करता रहा। इधर लोरिक सुरहुल के युद्ध के बाद विश्राम कर रहा था। अपनी विवाहिता क साथ वह कमरे म सो रहा था। बाठा गउरा के सभी कुवो म हड्डियाँ और गोबर डाल देता था। गउरा का एक ही कुवा बच रहा था। वह लोरिक क दरबार का कुँवा था। बाठा बडा उपद्रव कर रहा था।

इधर राजा सहदेव और उनकी पत्नी ने आपस म बात चीत की तथा प्रात - काल बहुत तडके ही रानी को लोरिक के पास भेजा और समझा कर कहा कि जाकर लोरिक स कहो कि वह चमार बाठा को मार डाल तो हमेशा का

जाएगा। नहीं तो चमार चन्दा को निकाल ले जायगा और भोग विलास करेगा। रानी लोरिक के घर प्रातःकाल पहुँची उनकी छोटी बखरी पीतल की थी। भीतर फलों का ढेर था। सोने से जड़ित उसका पलंग था। लोरिक उस पर सो रहा था। मंजरी उठ कर आंगन साफ कर रही थी तथा दरवाजे की ओर जा रही थी। उसी समय अम्मां सास पहुँची और नम्रतापूर्वक बोलीं—ऐ दुलहिन मांजरि, भइया लोरिक कहाँ हैं ? उनका पता-ठिकाना नहीं लगता। दावन मंजरी ने कहा कि वे अभी पलंग पर सो रहे हैं। उन्हें जगा कर मतलब की बात कर लो। सेल्हिया रानी वहाँ गयी। लोरिक चद्दर ताने शैया पर सो रहा था। उसे रानी ने इधर-उधर हिलाया पर वह कुछ बोल नहीं रहा था। रानी ने चिकोटी काटी फिर भी अहीर का पूत जाग नहीं रहा था। रानी क्रुद्ध हुई। मंजरी के पास गयीं और कहा— दुलहिन बेटा कैसे जागेगा ? मंजरी ने कहा—सास मेरी बात सुनो। धोती तुमने पहन रखी है उसे डाल पर लटका दो और मेरे सइयां के पास सो जाओ तब वह जग जायेगा। रानी ने डाल पर धोती रख दी तथा वह लोरिक के बगल में सो गयी। जब सेल्हिया का बदन छू गया तब अहीर लोरिक जग गया। उसको रोमांच हो आया। उसने सेल्हिया की टांग पर अपनी टांग रख दी। सेल्हिया ने उसे डांटा—लोरिक तुम बिगड़ गये हो, पागल हो गये हो। तुम्हारा ज्ञान और बुद्धि हर ली गयी है। जिस तन से निकले हो उसको खराब करना चाहते हो। जब लोरिक ने यह बात सुनी तो हाथ से तलवार खींच ली। बुजरो, मेरी बात सुनो। तुम्हारे ऊपर क्या विपदा आयी है ? कौन मुसीबत आयी है कि तुम मेरी शैया पर आ कर सो गयी। सेल्हिया ने कहा—मेरी बेटी चनवा भाग कर बेवरा के पार आ रही थी। आधे जंगल में वह आयी तो बांठा चमार की दृष्टि उस पर पड़ी। वह वहाँ शिकार खेल रहा था। धनुष से कुत्तों को मार रहा था। उसने मेरी बिटिया का पीछा किया और गउरा तक आ गया। उसने यहाँ के सारे कुओं में हड्डियाँ और गोबर भर दिया है। सागर का पानी साफ है। वहाँ चमार बैठ कर रखवाली कर रहा है। अन्न और पानी के बिना गउरा के लोग मर रहे हैं। यह तुम्हारा कुआँ इसलिए बचा है कि चमार तुमसे डरता है। तब लोरिक ने सेल्हिया से कहा। तुम अपने घर जाओ। किले का काम देखो। अब सात घड़ी दिन चढ़ेगा। नहाने का समय होगा उस समय मैं सागर पर चढ़ाई करूँगा और सागर में स्नान करूँगा।

भावार्थ—(६०१—६००)

मैं देखूंगा कि कौन मर्द रखवाली करता है ? आज ही झगड़ा निपट जायगा ऐ बुढ़िया, तुम घर जाओ। मैं तैयार हो कर दस बजे तालाब पर आऊँगा। सेल्हिया घर लौट आयी। उस समय वीर लोरिक उठा, दिशा-मैदान (शौच आदि) के लिए गया, हाथ-मुँह धोया, कुल्ला किया, जल पान किया। मगही पान खाया, फिर हाथ में एक मिट्टी का पात्र लिया तथा आ कर सागर पर चढ़ गया। टोकरी में झुक-झुक कर पानी भरने लगा। बांठा के कानों में आवाज पहुँची तो वह ललकारने लगा

कहने लगा—हे देव, हे नारायन; हे ब्रह्मा तुमने मेरे ललाट में क्या लिख दिया। यह कौन है जो अपनी जाघ के बूते पर चढ़ आया है। किसके तलुये में दाँत जमा है ? वीर लोरिक ने कहा—सागर के इस भीटे पर ऐसा गीदड़ आ गया है कि वह साला हुँवा हुँवा चिल्ला रहा है। बातों बातों में संघर्ष छिड़ गया दोनों वहाँ पैंतरा करने लगे जैसे भादो में भैंसा चिल्लाते हैं वैसे ही वे चिल्लाने लगे। लोरिक ने उस पर वार किया। चमार निकल कर आकाश में उड़ गया आत्म रक्षा करते हुए वह फिर धरती पर आ कर खड़ा हो गया उसने लोरिक पर अपना दाव मारा। लोरिक भी उड़ कर आकाश में चला गया। पुनः पीठ के बल धरती पर आ गया। वह चित्त नहीं हुआ, उसकी पराजय नहीं हुई। लोरिक ने कहा—ऐ मेरे वीर भाई बाठा, मेरी बात सुनो। घटे भर के लिए झगड़ा बन्द कर दो। मुझे अवकाश दो। मैं जरा पान खा लूं। लड़ाई बन्द हो गयी। अहीर गठरा गया और क्रुद्ध हो कर सीधे गुरु अजयी के घर गया। चुपके से अजयी अपने कमरे में चला गया। लोरिक दरवाजे पर खड़ा हो गया। गुरु अजयी की पत्नी विजवा ने उसे बैठने के लिए काली कुर्सी दी। उसने कहा—हे देवर, तुम्हारे गुरु अजयी घर में नहीं हैं। वह तुम्हारे जाजिम पर चले गये हैं। तुम्हारा गुरु से क्या प्रयोजन है ? ऐ अहीर, तुम बताओ। लोरिक ने कहा—ऐ विजवा धोबिन सुनो। लोरिक की जाघ की शक्ति से गुरु के अनेक गदहे चर रहे हैं। किन्तु गुरु अजयी ने मुझको और बाठा को दोनों को एक ही दाव दिया है। हम दोनों दिन भर लड़ते रहे पर किसी की पराजय नहीं हुई। यदि मैं अजयी को पा जाऊं तो दो भागों में खण्डित कर दूँ। धोबिन ने कहा—देवर, कुर्सी पर बैठ जाओ। तुमने गुरु अजयी से सभी गुण सीखे। अब एक गुण यहाँ हम से सीख लो। धोबिन कोठरी में गयी और उसने दो बीड़ा पान लगाया। एक बीड़ा उसने अपने मुँह में दबाया और एक बीड़ा लोरिक के हाथ में दिया। वीर लोरिक ने उसे अपने मुँह में दबा लिया। अब विजवा और लोरिक के बीच पैंतरा होने लगा। जब लोरिक ने उस पर वार किया तो विजवा ने उसकी जाघ पर मुँह से पान का रंग फेंक दिया, पिचकारी मार दी। कहने लगी—देखो, कैसे रुधिर की धारा बह रही है ? लोरिक उधर देखने लगा। तब विजवा ने उस पर वार कर दिया। उसके शरीर पर हमला हो गया। विजवा ने दस पाँच झाड़ू उस पर और प्रहार किये। फिर समझा कर उसने लोरिक से कहा—ऐ लवड़ू देवर ! जा कर इसी प्रकार झगड़ा करो फिर धोखे से उस पर मार कर दो। बाद में बिजली की तलवार उस पर गिरा दो। तब क्षण में ही झगड़ा निपट जायगा। लोरिक ने दो बीड़े पान लिये और उन्हें अपनी गाँठ में बाँध लिया। सागर पर आकर खँखारा। बाँठा और लोरिक की जोड़ी वहाँ खड़ी हो गयी। लोरिक ने कहा—आज हमारा तुम्हारा झगड़ा निपट जायगा। दोनों वहाँ पैंतरा करने लगे। दोनों तरफ से एक दूसरे पर हमले होने लगे। अहीर ने खींच कर मुँह से पान की पिचकारी मारी और कहने लगा—भाई बाठा, मेरी बात मानो। हम और तुम पैंतरा चाल चल रहे हैं। तुम्हारी जाँघ से खून की

धारा कैसे फूट कर बह रही है। बांठा उलट कर जांघ देखने लगा। इसी बीच लोरिक ने बिजली की तलवार खींची और बांठा पर प्रहार कर दिया। उसके हाथ कट गये। वह धरती पर भहरा कर गिर पड़ा। लाश ने गिरते हुए कहा—ऐ गुरु भाई सुनो। मेरी बात मानो। आखिर तो तुमने मुझे मार ही दिया एक बुंद तुम मुझे पानी पिला दो। लोरिक सीधा आदमी था। वह सागर में चला गया और दोनों हाथों से पानी उठाने लगा। इधर बांठा ने बायाँ हाथ फैला कर हाथ से एक हड्डी खींची और अहीर पर प्रहार कर दिया। अहीर पानी ले कर आ रहा था। उसका दाहिना पैर टूट गया। बांठा अहीर की गर्दन काटने को तैयार हो गया। तब माँ दुर्गा उधर झुकीं। अहीर को लेकर उड़ीं तथा गांव की सीमा के बाहर चली गयीं। उनकी अंगुली में अमृत था। उससे लोरिक का शरीर उन्होंने (सामान्य) समतूल कर दिया। इधर चनवा ने बांठा चमार को गिरते हुए देखा तो वह चांदनी से उतरी। उसकी पगड़ी उतार कर अपने हाथों से उसके दोनों कंधों और बाहों को उसने जोड़ दिया। बांठा का हाथ घूमा और चनवा के स्तन पर चला गया। लोरिक की नज़र उस पर पड़ी। उसने चन्दा को डाँटा और कहा—तुम्हारी जाति वेश्या की है। तुम्हारा सारा परिवार वेश्याओं का है। यदि वह दामाद तुम्हारा सम्बन्धी रहा, हितू रहा तो तुम लोगों ने मेरा उससे झगड़ा क्यों करवा दिया? मैंने उस गुरुभाई को काट दिया। उसकी मृत्यु हो गयी। लोरिक वहाँ से चला और अपने घर के दरवाजे पर आ गया। तब चौधरी ने गांव में न्योता घुमाया। सारे अहीर और उनके परिवार एकत्र हुए। महफिल मण्डली बना कर बैठ गयी। जब राजा सहदेव और महदेव वहाँ पधारे। मुखिया चौधरी ने जो जाति बिरादरी के रक्षक थे, कहा—ऐ अहीरों सुनो। तुम लोग यहाँ बैठो तो सवाल हल हो जाय। उन्होंने सहदेव से कहा—तुम्हारा काम राजा का है। हे राजा, मैं इस जाति का चौधरी हूँ। तुम्हारी लड़की चमार के साथ आयी है। उसको माँस खाने का पाप लगा है। तुम शपथ लो तथा कथा पुराण सुनो। भाई बन्धुओं को निमन्त्रित करो। उन्हें कच्चा-पक्का भोजन बना कर खिलाओ तब तुम्हें बिरादरी में रहने दिया जायगा। जब चौधरी ने यह बात कही तो राजा सहदेव ने यह दण्ड मन्जूर कर लिया। शुक्रवार का दिन तय हो गया। उन्होंने कथा-पुराण सुना। शपथ ली। सभी जगह निमन्त्रण बाँटे तथा दरवाजे पर जाजिम बिछवा दिया। भारी संख्या में वहाँ गोप और ग्वाल एकत्र हुए। वहाँ चावल के माँड़ की नदी बह गयी। लोरिक भी वहाँ आया। आगे आगे कठईत थे। उनके पीछे संवरू थे। सरदार लोरिक पीछे था। जब उन्होंने अहीरों का हाल देखा कि वे जूठे माँड़ में डूबे जा रहे हैं तो कठईत का मन खिन्न हो गया। उन्होंने कहा कि चार कौर भोजन के लिए कौन धर्म गँवाये? सहदेव के यहाँ हम भात नहीं खायेंगे और न हम माँड़ में पैर ही रखेंगे। जब लोरिक ने यह बात सुनी तो उसने काका को बायीं काँख में दबा लिया तथा दाहिने अपने भाई सांवर को दबा लिया फिर उछल कर उस पार जा कर खड़ा हो गया। चांदनी से चनवा

इसको देख रही थी। वह आश्चर्य चकित हो गई। हे दैव, हे नारायण, लोरिक गउरा में कर्णधार बन गया, नेता बन गया।

अब वहाँ का हाल सुनिये। अहीर वहाँ मन्डली बना कर बैठे हुए थे। बीड़ी और तमाखू वहाँ रखा गया था। जाजिम पर फर्शी हुक्का भी रखा गया था। अहीर गड़गड़ा नामक बड़ा हुक्का खींच रहे थे। बुटवल का गाँजा वहाँ एकत्र किया गया था। धरमी सावर चिलम पर दम लगा रहे थे। दरवाजे पर जलसा हो रहा था। जब राम रसोई तैयार हो गयी तब घर के अन्दर से खबर आयी, पुकार हुई पर्चा, भोजन तैयार है। चल कर ठहर पर भोजन करो। अहीर हाथ पाँव धोने लगे। आँगन में मुँह साफ करने तथा कुल्ला करने का क्रम चला। मण्डली बना कर अहीर वहाँ बैठ गये। चाँदनी की दीवान के पास सभी लोग बैठे हुए थे। अन्त में कठईत बैठे हुए थे। इस ओर धर्मी सांवर थे। बीच में लोरिक बैठा हुआ था। सामने झरना की झाँकी थी। चनवा झाँकी से सबको देख रही थी। सोलह प्रकार का भोजन वहाँ परोस दिया गया। पत्तल पर घी भी चला दिया गया। 'सीता राम' हुआ और अहीरों ने कौर उठाया। लोरिक ने अपना कौर टाल दिया फिर कौर सानने लगा। तब खिड़की से चनवा कंकड़ फेंकने लगी। कंकड़ जाकर अहीर के पत्तल पर गिरने लगे। लोरिक लोटे से पानी पी रहा था तथा चाँदनी की ओर देख रहा था। चनवा अपना आँचल खोल कर दिखा रही थी। वह अहीर की चित्त में बसती जा रही थी। लोरिक भोजन कम कर रहा था। और पानी अधिक पी रहा था।

भावार्थ—(९०१—१२००)

चौधरी ने लोरिक को देखा तो कहा—लोटे से वह बहुत अधिक पानी पी रहा है क्या उसने कुछ अधिक कोदो खा लिया है ? बूढ़े कठईत ने तुरन्त कहा—यह मेरे कुल का बुरा स्वभाव है कि हम कोदो कम खाते हैं और पानी अधिक पीते हैं। अब आगे का हाल सुनिये। ग्वालों ने खाना खा लिया। मुँह धो लिया तथा तैयार हो कर जाजिम पर बैठ गये। रानी सेल्हिया अब अपने हाथों से पान का बीड़ा लगा-कर सब वीरों को बाँट रही हैं। वीर मगही पान खा रहे हैं। सेल्हिया वीर लोरिक को मार डालने के लिए पान के पत्ते पर सिंहिया (संखिया) विष डाल रही है। वह सोच रही है कैसे शत्रु लोरिक को मार डाला जाय कि उसका बड़ा नाम समाप्त हो जाय। वेश्या चनवा ने यह देखा। वह अहीर के आगे गयी तथा पान का बीड़ा छीन लिया और उसे पास में बँधे हुए बकरे के पास धरती पर फेंक दिया। बकरा उसे चबा गया तथा घटे-पहर भर में मर कर धराशायी हो गया। अहीर भात खा कर अपने अपने घर जाने लगे। चनवा ने लोरिक से नम्रतापूर्वक कहा कि तुम अपनी वीरता की लज्जा रखो तथा चलो हम पूर्व देश में चलें। चनइनी ने जब यह कहा तो लोरिक मन में हँसा, मुस्कराया। वह वहाँ से घर चल पड़ा और अपना काम-धाम देखने लगा। वह भड़भूजे के यहाँ गया तथा उससे जो की लाई (बहुरी) तैयार

करवायी। बनियों के पास जा कर गुड़ की छोटी छोटी डलियाँ ले लीं। प्रातःकाल होने पर वह सोलह सौ लड़कों के पास गया और उनसे कहा कि तुम लोग छिवली वन में जाओ वहाँ कांस नामक घास उगी हुई है। वहाँ से कांस की मूठ बना कर मेरे पास लाओ। जितना मूठ घास लाओगे उतनी जौ की लाई (वहुरी) मैं तुम्हें दूँगा। वह स्वयं पलाश के पेड़ पर जाकर बैठ गया। कांस की मूठ से वह रस्सी तैयार करने लगा। उस वक्त चमार के लड़के आकर कहने लगे। ऐ मालिक, हमसे कांस-कुश काटा न जायगा। हम लोग चमड़ा तैयार कर देंगे। लोरिक ने चमार के बच्चों को छुट्टी दे दी। जो रस्सी या बरहा तैयार हुआ उसको लोरिक बांठा के परिवार वालों के पास ले गया। उन्होंने रस्सी को सँवार दिया। उसे लेकर उसने अपने द्वार पर टाँग दिया। उसकी पत्नी मंजरी ने उसे देखा तो उससे पूछा कि इस रस्सी का क्या काम है? तब लोरिक ने कहा—ऐ विवाहिता तुम मेरी बात सुनों। साँवर भइया का हुक्म हुआ है। उन्होंने मजबूत रस्सा माँगा है। उससे वे बछड़ों को बाँधेंगे और उनके अंडकोश कुटवायेंगे। जब दिन का थोड़ा भाग शेष रहा तो लोरिक रस्सा लेकर महीचन तेली के घर गया। वह बाल बच्चों के साथ ठहर पर भोजन कर रहा था। उसने महीचन से कहा कि इस रस्से में तेल डाल दो। मेरा रस्सा रात भर तेल खायेगा। महीचन ने नम्रतापूर्वक कहा—मालिक मेरे बाल-बच्चे भोजन कर रहे हैं। तुम रस्से को आँगन में रख दो। खा पी कर जब तैयार हो जाऊँगा तो लोहे के बर्तन में जो तेल रखा हुआ है उसको तुम्हारे रस्से पर गिरा दूँगा। अहीर रस्सा महीचन के आँगन में छोड़ कर घर चला आया।

महीचन के सारे बच्चे रस्से में लिपट गये और उसे ठीक करने लगे। तेली महीचन फूट-फूट कर रोने लगा। प्रातःकाल झुटपुटे में, जब कौवे बोलने लगेंगे तब वीर लोरिक यहाँ आयेगा। यदि रस्से को वह सधा हुआ नहीं पायेगा तो वह खड़ा कर हमें कोल्हू में पेरवा देगा। मेरा निर्बल प्राण उसी क्षण निकल जायगा। उसने अपनी पत्नी से कहा—देखो, यह रस्सा अचल होना चाहिए। यह जुंविश न खाये। यह कह कर महीचन मध्य रात्रि में रोने लगा। इधर अहीर भोजन कर सो रहा था। मंजरी सोच रही थी। मेरी प्रजा तेली क्यों रो रहा है? उसके घर में क्या मुसीबत आ गयी है? वह महीचन के घर गयी। जा कर पूछा—तेली, किस चिन्ता में तुम मध्य रात्रि में रो रहे हो? किसका तेलहन खा डाला है? वह किसान कौन है जो तुम्हें मार रहा है? तेली ने कहा—बहन मंजरी सुनो। यह बरहा प्रिय लोरिक का है। हम लोग कल भोजन कर रहे थे तो वह इसे यहाँ लाये। मैंने उन्हें कह दिया कि ऐ मालिक, खा कर उठते ही इस बरहे को तेल में डुबा दूँगा। मैं और तथा मेरे सारे बाल बच्चे इसमें लग गये कि कहीं बरहा कमजोर न रह जाय (पर यह उठ नहीं रहा है।) मंजरी बरहा के पास पहुँची। दाहिने हाथ में पकड़ कर उसे तेल के कोठिले में डाल दिया। मंजरी ने उससे कह दिया कि लोरिक को यह मत बताना कि मंजरी ने इस बरहे को कोठिले में डाला है। कह देना कि इस सूखे बरहे

को मेरे बाल बच्चो ने कोठिले मे डाला है। यह रात भर तेल मे पडा रहा है, अब यह अचल है, अटूट है। ऐ लोरिक अब तुम इसे जा कर निकाल लो। यह बरहा हम लोगो से नही निकलेगा। प्रातः काल हुआ। पूर्व मे कौवो ने शोर मचाया। वीर मर्द लोरिक उठकर तेली के घर गया तथा उससे बरहे के बारे मे पूछा तेली की पत्नी ने लोरिक को बताया कि ऐ मालिक, तुम्हारा सूखा बरहा हम लोगो ने तेल के कोठिले मे डाल दिया। वह रात भर तेल खाता रहा। अब तुम अपना बरहा निकाल ले जाओ। मजरी फिर तेली के घर गयी और पूछा ऐ तेली महीचन, तुम क्यों रो रहे थे। तुम्हे किसने जबर्दस्ती दबा रखा है। महीचन ने कहा—ऐ मलकिन मेरी बात सुनिये। एक तो सहदेव गउरा मे शक्तिशाली हैं और इधर तुम्हारे लोरिक शक्तिशाली हैं। मैंने उनका सामान लिया है। ऐ भाग्यशालिनी, मजरी तुम उसे तेल से निकाल दो। मजरी ने कहा—चेला तुम मेरी बात सुनो। मैं तुम्हारा बरहा उठा दूंगी किन्तु मेरा नाम कोई सुनने न पावे। यदि मेरे सुखनदन मेरा नाम सुनेंगे तो मेरी अल्हड़ जिंदगी समाप्त कर देंगे। महीचन ने कहा—मुझे अपने काम से काम है। कहने की मुझे क्या जरूरत है ? तब महर की पुत्री ने कनिष्ठिका से, बानी अगुली से रस्सी उठाली तथा लोहे का कुठिला गिरा दिया। दूसरे दिन लोरिक बरहा के पास पहुँचा। प्रात. काल तड़के उसे लेकर वह घर आया। मजरी उसे देखकर जलभुन गयी, क्रुद्ध हुई। पूछा—मेरे सुखनन्दन, मेरे मालिक, इस रस्से का क्या होगा ? मुझे सचसच बताओ। लोरिक ने कहा—सासड बोहे से मेरे भाई सवरू ने खबर दी है कि पशुओं के झुड मे बछडे उत्तेजित हो उठते हैं तथा बछियों का पीछा करते हैं। बछडो का बधिया कराना है। फिर उस समय का, उस स्थान का हाल सुनिये। अहीर के चित्त मे चनइनी चढ गयी है। रात मे एक घटा व्यतीत हुआ। पूर्व में पुरवाई चलने लगी। पछुवा हवा भी झकझोरने लगी। उत्तरी हवा भभकने लगी और दक्षिण दिशा मे मूसलाधार पानी बरसने लगा। आर्द्रा नक्षत्र की वर्षा होने लगी। लोरिक वहाँ से बरहा लेकर चला तथा गउरा गाँव मे प्रवेश कर गया। चनवा की चांदनी पर पहुँचा। उसने बरहे का एक छोर अपने पैर के नीचे रखा। उसका आधा अपने हाथ मे उठा लिया और झटक कर उसे ऐसा फेंका कि बरहा चांदनी पर जाकर गिरा। चनवा चारपाई से उठ बैठी। उसने बरहे को धरती पर गिरा दिया। लोरिक ने उसे हाथ मे उठा लिया। पिछवाड़े से उसने तड़प कर कहा—ऐ वेश्या चनइनी, तुम विक्षिप्त हो, बावली हो। तुम्हारी मति और तुम्हारा ज्ञान हर लिया गया है। बुजरो, यदि तुमने इस बार बरहा फेंका तो तुम्हारी निंदा हो जायगी। यहाँ मैं कील और कांटा गाड दूंगा तथा उसमें आधा बरहा बांध दूंगा। आधा काटकर घर से जाऊंगा। जब प्रात.काल होगा, भोर होगा, पूर्व मे कौए शोर मचाना शुरू करेंगे तब गउरा के लोग इसे देखेंगे। तुम्हारी निंदा होगी। फिर लोरिक ने दुहराकर रस्सी फेंकी। वह चांदनी पर जाकर गिरी। चनवा ने उसे खंभे मे तथा चारपाई के पावा मे घुमा घुमा कर बांध दिया।

भावार्थ—(१२०१—१५००)

अहीर की रस्सी लटकने लगी लोरिक ने उसे हाथ से पकड़ा और उसको तीन बार झटका दिया पर रस्सी अचल रही, अडोल रही। फिर वह रस्सी पर चढ़ने लगा और चांदनी पर ऊपर जाने लगा। जब वह शून्य में आधी दूर तक चढ़ गया तब नीचे ज़मीन की ओर देखने लगा। उस समय वह भयभीत हो गया। दांतों से अपनी अंगुली काटने लगा। कहने लगा—हे मैया दुर्गा, तुम आदि काल से ही पूज्य हो। हे देवी, यदि रस्सी आधे में टूट गयी तो मैं चांदनी से गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाऊंगा। तब वह गर्हित व्यक्ति भी मेरी निंदा करेगा जिसके मल द्वार से निकला हुआ मल कौवा भी नहीं खाता। कहेगा, साला चढ़ना जानता नहीं था और राजा की चांदनी पर चढ़ गया। उसकी हड्डी पसली टूट कर बिखर गयी। ऐसा कहते हुए वह चढ़ता चला गया और जाकर चांदनी पर खड़ा हो गया। तब चंदा उससे बात-चीत करने लगी, सवाल जवाब करने लगी। अहीर तुम मेरी बात सुनो। गांव घर के नाते मैं तुम्हारी बहन लगूंगी। किन्तु अहीर उसके शरीर के पास पहुँच गया। चंदा ने उसे डांटा फिर कहने लगी, ऐ सइंया इसमें कोई झगड़े की बात नहीं है। तुम मेरा संग छोड़ दो। किन्तु अहीर ने चंदा पर चढ़ाई कर दी। चंदा उसको डांटती रही। फिर चंदा ने कहा—अहीर तुम शपथ ग्रहण करो कि फिर तुम मेरी सेज के पास न आओगे। अब अगर अपनी पत्नी मंजरी का साथ छोड़ दोगे तभी मेरी शैया पर पैर रखोगे। घर पर भाई और माँ को भूल जाओ तब तुम मेरी सेज पर पांव रखो। गुरु अजयी का मोह छोड़ दो, तब मेरी पलंग पर पैर रखोगे। हम लोग पूर्व दिशा में चल देंगे। अहीर लोरिक ने कसम खाली। जब फिर चढ़ाई का समय आया तब वेश्या चनैनी ने कहा—संवरू का साथ छोड़ दो। लोरिक ने शपथ लेली। जब लोरिक ने सेज पर पांव रखा पलंग के पाये टूट कर चूर चूर हो गये चंदा चांदनी पर सिर पटकने लगी। यह मेरे भाई की चारपाई है। इसके पैर टूट गये। प्रातःकाल हो गया, पौ फटने लगी। कौवे शोर मचाने लगे। अब झगड़ा लगने की नौबत आ गयी थी। लोरिक शपथ ले चुका था। उसने चनवा से कहा—तुम रुखानी और बसुला लाओ मैं चारपाई के चूरों को ठीक कर दूँ। वह बढ़ई की कर्मशाला में गयी और वहाँ से रुखानी तथा बसुला लाकर उसने लोरिक को दे दिया। लोरिक ने चारपाई के चूरे ठीक कर दिये। फिर लोरिक ने चंदा पर चढ़ाई कर दी। चंदा रोने लगी। उसने लोरिक से कहा—तुम अपने दांतों से मेरा शरीर का मांस क्यों काट रहे हो? तुम मेरा प्राण क्यों ले रहे हो। यह तुम कितनी बार कर चुके कितनी बार और करोगे? लोरिक ने कहा मैं एक सौ साठ-बार कर चुका हूँ, एक सौ साठ-बार और करूंगा। फिर गंगा में जाकर स्नान करूंगा। जाकर पत्नी के पास सोऊँगा तब मैं संतुष्ट होऊँगा, प्रातःकाल मेरा शरीर निर्मल होगा। चन्दा ने उससे कहा—तुम मुझसे दिन और समय बताओ कि तुम पूर्व में कब चलोगे? तुम मेरे सुंदर शरीर के मांस को क्यों काट रहे हो? लोरिक ने कहा—मेरी स्त्री सुनो। जब

पूर्व के ग्राहक आयेंगे, खरीददार आयेंगे। बोहा के दसबीस बछडो को बेचूंगा, पास मे पूंजी जमा कर लूगा तब गउरा छोडूंगा और भोग-विलास करूंगा।

अब वहाँ का हाल सुनिये। लोरिक वहाँ कल्लोल कर रहा था। दोनो ने चद्दर तान लिये थे। चंदा आधी रात को उठकर चलने वाली थी। वही समय था जब सेल्हिया (चंदा की माँ) उठकर मट्ठा मथा करती थी। मुंगिया लौंडी से कहा जाकर देखो। अभी तक मेरी बेटी चदा नही उठी। भोर का झुटपुटा हो चुका है, बिहान हो चुका है। सेविका चाँदनी पर गयी। उसने देखा वहाँ भैंस और भैंसा चद्दर तान कर पडे हुए हैं तथा खून से लथपथ हैं। लौंडी वहाँ से भगी। लोरिक चाँदनी मे उठा, जूते पहने, चदा की चादर बटोरी, रस्सी लटकाई तथा जमीन पर उतर कर खडा हो गया। चदा ने रस्सी खोल दी लोरिक ने उसे समाल लिया। वह गउरा गाँव की ओर चला। प्रात काल हो रहा था। हलवाहा जाग उठा था। वह आगे मिला। उसने पूछा—'मालिक सारी रात कहाँ गुजारी। लोरिक ने नम्रता पूर्वक कहा—भैया संवरू ने खबर दी थी। मैं मजबूत रस्सी लेकर गया था। बछडे बहुत ही उन्मत्त हो रहे थे। मैंने उन्हे पकड कर खूटे मे बांध दिया। अब मैं घर लौट रहा हूँ। हँसकर हलवाहा बोला मैं तुम्हारा हाल जानता हूँ। चाँदनी पर बछिया उन्मत्त थी। उसे तुम्हारी हवा जो लगी थी। बीर मर्द लोरिक अपनी बखरी मे चला गया और कुर्सी पर बैठ गया। मजरी धीरे धीरे आगन बटोर रही थी। वह लोरिक के पास पहुँची और उससे तुरन्त सवाल जवाब करने लगी। कहने लगी—ऐ स्वामी, ऐ मेरे सुख-नंदन, ऐ मेरे सिर मोर। तुम्हारी रात कहाँ बीती है? हमे सचसच बताओ। लोरिक ने कहा—विवाहिता मेरी बात सुनो। सायर भैया ने खबर भेजी कि बछडे उन्मत्त हैं। कलोर बछियो को वे तग कर रहे थे, लाँघ रहे थे। हमने पकड कर बछडो को कुटवाया, पकडकर उनको बाँधा। तब घर आ रहा हूँ। मजरी बोली—यह चादर तो चनवा की है? तुम मुझे सचसच बताओ। अहीर लोरिक ने कहा—मैं गुरु अजयी के यहाँ गया था। बोहा—जाते समय मैंने विजवा से चद्दर मागी। विजवा ने चन्दा की चद्दर दी। मैंने उसी चादर की पगडी बाँध रखी है। तब मजरी बोली—सैंया, तुम्हारे गाल पर टिकुली चिपकी हुई है। तुम मुझे सच्ची बात बताओ।

लोरिक ने कहा—गुरु अजयी के घर गया था। मुझे विजवा मिली। उसने मेरे ऊपर सिन्दूर और टिकुली डाली। हो सकता है उसकी टिकुली तेरे चद्दर मे लिपट गयी हो। मजरी बोली—तुम इधर उधर की व्यर्थ की बात कर रहे हो। तुम्हारे शरीर में खून क्यो लगा है? वीर मर्द अहीर लोरिक ने कहा—मेरी बात सुनो। मैंने बछडो का बोहा मे पटक पटक कर मारा। किसी का सींग टूटा, किसी का वसा (एक प्रकार की टेढी सींग) टूटा। इसी कारण मेरे शरीर पर खून लगा है। मजरी ने मचिया पर बैठी हुई अपनी सास से कहा कि लोरिक चंदा [illegible] और पूर्व दिशा मे हल्दीपुर जायेंगे। गउरा में मेरे ऊपर [illegible]

तरह विपत्ति झेलूंगी। प्रातःकाल हुआ। झुटपुटे में पूर्व दिशा में कौवे शोर करने लगे। वेश्या चनैनी उठी दस सेर धान को गंठियाया। फिर सहदेव की बेटी (चन्दा) कोइरियों के कोड़ार में चली। कोइरी के यहाँ उसको रख दिया और स्वयं लोरिक के घर चली। मंजरी प्रातःकाल घर में धीरे धीरे झाड़ू दे रही थी। दरवाज़े पर वेश्या चनैनी खड़ी हो गयी। बोली—भउजी मांजरि सुनो। आजकल भैया लोरिक दिखाई नहीं दे रहे हैं। यह सुनकर मंजरी खाक हो गयी। कहने लगी—इस गउरा में आग लग जाय। यहाँ कोयला बरसे। लोग रात में यहाँ पत्नी और भर्तार हो जाते हैं तथा दिन में भाई बहन। महर की बेटी मंजरी की यह बात सुनकर चनवा वहाँ से भगी तथा झगड़ू कोइरी के कोड़ार में पहुँच गयी। चार पसेरी धान गंठिया कर वहाँ मंजरी भी पहुँच गयी। दोनों स्त्रियाँ वहाँ उदास बैठ गयीं। फिर चनवा बोली—ऐ कोइरी झगड़ू मेरी बात सुनो। जैसा जिसका शरीर है उसको वैसा ही बैगन तुम दो। चनवा का शरीर गोरा था। मंजरी का शरीर सांवला था। जब उसने यह बात सुनी तो धीरे से कहा—ऐ झगड़ू कोइरी मेरी बात मानो। जिसके पति जैसे सुन्दर हों उसको वैसा ही सुन्दर बैगन दो। जिसके पति काने हों उसको सड़े हुए बैगन दो। लोरिक सुन्दर था अतः कोइरी ने उसके लिए सुन्दर बैगन छाँटने शुरू किये। चनवा का पति मल्ल सिवहर काना था। उसको कोइरी ने चुनकर सड़ा हुआ बैगन दिया। बातों बातों में दोनों में झगड़ा हो गया। दोनों स्त्रियाँ झगड़ू कोइरी के कोड़ार में झगड़ पड़ीं जिससे नेवार मूली के पेड़ टूट गये, पोस्ता के पेड़ टूट गये जो एक रुपये सेर बिकता है। कोइरी वहाँ रोने लगा। कोड़ार में सिर पटकने लगा। दो स्त्रियाँ लड़ रही हैं। मैं किसको डांटू। कैसे झगड़ा निपटाऊँ? एक शक्तिशाली व्यक्ति की बेटी एक जबर्दस्त व्यक्ति की बहू है। उसने किसी से कुछ नहीं कहा और सीधे अखाड़े पर चला गया जहाँ बीर लोरिक था। झगड़ू ने लोरिक से कहा—दो स्त्रियाँ लड़ पड़ी हैं। जबर्दस्त झगड़ा हो गया है। मेरा खेत नष्ट हुआ जा रहा है। मैं अपने बाल बच्चों को कैसे जिलाऊँगा? कैसे कर चुकाऊँगा? लोरिक ने गुरु अजयी से नम्रतापूर्वक कहा—। गुरु मेरी बात सुनो और जाकर जरा झगड़ा निपटा दो।

भावार्थ—(१५०१—१८००)

गुरु अजयी ने कहा—चेला, मेरी बात मानो। दो स्त्रियाँ झगड़ू कोइरी के कोड़ार में जा कर लड़ रही हैं। वे दोनों वहाँ नंगी हैं और उनका शरीर उघरा हुआ है। मैं झगड़ा कैसे निपटाऊँ? हमें जिनकी परछाईं नहीं देखनी चाहिए, मैं भाई की उन बहुओं का ललाट देखूं। ऐ लोरिक, तुम जाकर स्वयं झगड़ा निपटाओ। मर्द बीर लोरिक यहाँ से चला तथा झगड़ू के घर की ओर गया और दूर से ही खँखारा। मंजरी के कानों में शब्द पड़ा। इसी बीच उसने चनवा को दाव मारा। चनवा धरती पर भहरा कर गिर पड़ी महर की धिया मंजरी वहाँ से भागी। आकर अपने महल में प्रवेश कर गयी। वेश्या चनैनी ने अपनी धूल झाड़ी। फिर वह कोने

मे बैठ गयी, मूली के पत्ते निकाल निकाल कर खाने लगी। जब वह स्वस्थ हुई तो अहीर खेत पर पहुँच गया। सहदेव की बेटी जिसका सुन्दर नाम चनवा था, बोल उठी—"ऐ अहीर लोरिक, तुम मेरी बात सुनो। मजरी आज गर्म हो गयी थी। उसने मुझे कटु बातें कही। इसलिए अब तुम पूर्व की ओर मेरा उद्धार करो। हम लोग हरदीपुर की बस्ती मे चलें। इधर गउरा मे विपत्ति पड़े तथा मजरी रांड का कष्ट भोगे।" लोरिक ने कहा—जरा मौसम आ जाने दो ताकि मैं बछड़ो को बेचूं। जिससे रास्ते के लिए खर्च मिल जाय। मैं खर्चा एकत्र कर लू ताकि विपत्ति आवे तो हरदीपुर मे बैठ कर खाऊँ। वेश्या चनैनी ने कहा—खर्चे की कोई चिन्ता नही है। मैं पिता का धन ले लूंगी, उनकी पगड़ी ले लूगी जिसमे हीरा और मोती जड़े हुए हैं। यदि कही रास्ते मे विपत्ति पड़ी तो बैठ कर हम दो चार पुश्त खायेंगे। उसने कहा—मैं सोना और द्रव्य ले लूगी। हम लोग हल्दी मे चल कर दो चार पुश्त खायेंगे। ऐ लोरिक, तुम दिन और मुकाम तय कर लो ताकि हम हल्दी निकल चलें। वीर लोरिक ने कहा—आज और कल का दिन बीत जाने दो। परसों शुक्रवार का दिन होगा। तब हम हरदी बाजार के लिए प्रस्थान कर देंगे। रास्ते मे सुरहाताल है, वहाँ पीपल का वृक्ष है। वहाँ हमारा मुकाम रहेगा। जो व्यक्ति घर से पहले निकलेगा वह ताल के भीटे पर बाट देखेगा। दिन और स्थान निश्चित हो गया कि आधी रात ढलने पर जो घर से पहले निकलेगा पीपल के पेड के नीचे आकर प्रतीक्षा करेगा। अब वेश्या चन्दा अपने किले मे चली गयी। वीर मर्द लोरिक ने जाकर तख्त पर स्नान किया, पानी पिया, फिर भोजन के लिए चला गया। वह खा पीकर तैयार हुआ। फिर सोने चला गया। वह चारपाई पर झूठमूठ सो गया, नाक बजाने लगा। मजरी इधर सोच मे पड़ी हुई है। मेरे पति कहाँ से थक कर आये हैं कि विकट निद्रा म सो गये हैं। वह अपना पलग बिछाने लगी। लोरिक के सिर की ओर बिजली की तलवार टँगी हुई थी। मजरी ने उसको अपनी गर्दन के नीचे रख लिया। उसका तकिया बना लिया, फिर वह सो गयी। इधर लोरिक उठ उठ कर देखता रहा। आधी रात ढल जाने पर उसकी विवाहिता पहरा देने लगी। उसकी आँखो मे नीद नही आ रही थी। वह पलग पर एक टक देख रही थी। इधर आधी रात के बाद लोरिक उठ उठ कर देख रहा था। मजरी [illegible] पर टकटकी लगाये देख रही थी। वह पूरी तरह से पहरा दे रही थी कि देखे लोरिक कैसे पूर्व देश मे जाता है।

अब आगे का हाल सुनिये। लोरिक घर से बाहर [illegible] खूटी पर टँगा हुआ था। उसने टूटा खड्ग लेकर [illegible] किया। पीपल के पेड के पास जा कर देखा तो वहाँ [illegible] मजरी रोती रही, अपने भाग्य का कोसती रही। [illegible] जाकर खड़ा हो गया। महर की प्रिया [illegible]। [illegible] वेश्या चनैनी का हाल सुनिये। उसने [illegible]

पेड़ के नीचे पहले ही जा बैठी, फिर कहीं छिप गयी। अहीर ने इधर-उधर घूम कर देखा फिर वह अपशब्द कहने लगा। यह चनैनी वेश्या जाति की है। उसका सारा परिवार वेश्या का है। मैं उस वेश्या के चक्कर में पड़ गया। मेरे घर में विवाहिता है। ऐ बुजरो चन्दा, मैं अब घर लौट जाऊँगा।' मैं हल्दी नहीं जाऊँगा। अहीर लौटने लगा तब चनवा हँस पड़ी। वह वेश्या झाड़ की आड़ में छिपी हुई थी। हँसते हुए वह रास्ते पर आ गयी। तब वीर अहीर लोरिक ने कहा—ऐ विवाहिता, मेरी पत्नी मजरी पूरी पहरेदारी कर रही है। उसने अपने सिर के नीचे बिजली वाली तलवार रख ली है। मैं टूटी हुई तलवार हाथ में लेकर सुरवली ताल में आ गया हूँ। मैं निश्चित किये हुए स्थान पर पहुँच गया हूँ। हम परदेश कैसे चलेंगे। कोई सम्बन्धी मिल जायेगा तो मैं कौन सी युक्ति निकालूंगा। इस टूटे खड्ग की क्या हस्ती है ? इससे मैं कैसे बड़ी लड़ाई करूँगा। जब लोरिक ने ऐसा कहा तब चनैनी बोल उठी। ऐ मेरे स्वामी, ऐ मेरे सुखनन्दन, ऐ मेरे सिर के मुकुट, तुम भगवती का सुमिरन करो जो आदिकाल से ही तुम्हारे लिए पूजमान हैं। दुर्गा मंजरी को निद्रा में विस्मृत कर दें। दुर्गा ने अपनी शक्ति बढ़ायी। मंजरी की आँख में उन्होंने उसी क्षण निद्रा भर दी। अहीर ताल से लौट गया। वह कमरे में गया, मंजरी के सिर के नीचे रखी हुई तलवार उसने खींच ली तथा वहाँ टूटी हुई तलवार रख दी। बिजली वाली तलवार लेकर वह द्वार से चला। चन्दा और लोरिक दोनों पूर्व की ओर बढ़े। वे रात दिन चलते रहे। रास्ते में उन्होंने कहीं विश्राम नहीं किया, कहीं डेरा नहीं डाला। इधर मंजरी की आँख खुली, वह आँख फाड़-फाड़ कर देखने लगी। टूटी तलवार रखकर बिजली की तलवार कौन ले गया ? वह ज़ोर-ज़ोर से रुदन करने लगी। घूम-घूम कर हाथ में गैस लेकर उसे खोजने लगी। वह बाहर देखने गयी। घनघोर वर्षा हो रही थी। उत्पात मचा हुआ था। घर बहा जा रहा था। सास खुइलनि से मजरी ने कहा—अम्मां बात सुनो। लोरिक और चन्दा, इन दोनों ने उढ़ार किया है वे हल्दीपुर पार जा रहे हैं। ये दोनों आधे जंगल में पहुँच गये। आंवला का पेड़ फला हुआ था। पेड़ ने कहा—चनइनी जाति की वेश्या है। उसका सारा परिवार वेश्या है। इसने विवाहित पति को छोड़ दिया है। पर पुरुष के साथ वह हल्दी जा रही है। आंवले के पेड़ ने फिर कहा—ऐ वेश्या चनैनी सुनो। तूने अपने विवाहित पति को छोड़ दिया, पर पुरुष के साथ तुम हल्दी जा रही हो। वेश्या चनैनी ने लोरिक से कहा—सैंया मेरी बात मानो। तुम अपनी तेज़ तलवार निकालो तथा आंवले के पेड़ को धराशायी कर दो।

बीर लोरिक ने कहा—ऐ विवाहिता, ऐ स्त्री सुनो। तुम रास्ता चलते झगड़ा करती रहती हो। कहाँ-कहाँ लोरिक तलवार उठायेगा ? दोनों आगे बढ़े। पूर्व की ओर सीधे चले। वे बोहा के पास पहुँचे। वहाँ एक कल्याणी गाय बछड़ा दे रहीं थी। वेश्या चनैनी ने लोरिक से पूछा—यह किस अभागे की गाय है कि जंगल में बछड़ा दे रही है, झाड़ी में ब्या रही है। कल्याणी गाय ने कहा—हम अभागे लोरिक की

गउवें हैं, हम जगल झाडी मे बछडे देते हैं। गाय ने फिर नम्रतापूर्वक कहा—धर्मी सवरू की गाये हैं जो पशुओ के बाडे मे बधी हुई है और वे वहां बछडे देती हैं। इतना सुनते ही लोरिक गाय के पास गया। अपनी गोद मे बछडे को उठा लिया तथा अडार की ओर चल पडा। पीछे-पीछे गाय चन्दा को भगाने लगी। सवरू की गायें बिगड उठी। गायो के झुण्ड मे खलबली मच गयी। मल्ल सवरू ने कहा—नान्हूँ तुम मेरी बात सुनो। तुम पलाश के वृक्ष पर चढ कर देखो। क्या वन में कोई लकड-बग्घा आ गया है ? या वन बिलाव आ गया है। छिउली के पेड पर चढ कर नान्हूँ चारो ओर देखने लगा। फिर उस ढोर के चरवाहे नान्हूँ ने कहा—ऐ बहनोई, धर्मी सवरू सुनो। आगे-आगे बहनोई लोरिक बछडे को लिये चले आ रहे हैं। पीछे से चला को गाय खदेडे लिये आ रही है। जब सवरू ने यह सुना तो नान्हूँ से कहा—नान्हूँ, इतना समय बीत गया पर तुमने कभी ऐसे कटु शब्द नही कहे। पर आज क्या बात हो गयी है जो ऐसी बात कर रहे हो ? अभी इस प्रकार की बात हो ही रही थी कि लोरिक वहा आ पहुँचा। बछडे को अडार पर उतार दिया तथा स्वय धर्मी सवरू के पास पहुँच गया। चनवा छोटे तम्बू मे चली गयी। सहदेव की वह बेटी मैना चन्दा वही बैठ गयी। लोरिक ने सवरू को झुक कर अभिवादन किया। उन्होने जी भर कर लोरिक को आशीर्वाद दिया। ऐ लोरिक तुम अमर रहो, लाख वर्ष जीयो। जैसे गगा का पानी बढ़ता है।

भावार्थ—(१८०१—२१००)

वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े। बोहा मे दोना भाई मिले। सवरू ने लोरिक से कहा—हम यहाँ सुरक्षित बैठेंगे तथा बोहा मे आनन्द करेंगे। तब वीर लोरिक ने कहा—मेरे भाई सवरू सुनो। मैंने चोरी की है। मैंने सहदेव की बेटी को हरण लिया है और उसको लेकर पूर्व देश मे भाग रहा हूँ। दस दिना म मैं हल्दी पहुँच जाऊँगा।' यह सुनकर मल सवरू ने चरवाहा नान्हूँ से नम्रतापूर्वक कहा—तुम दो भैंसों को छोड दो उनका दूध दुह लो ताकि ये दोनो छक कर पीयें। ये हरदी बाजार जायेंगे। लोरिक ने कहा—'भइया यदि तुम दूध नही दोगे तो रास्ते म मुझे और कौन दूध देगा ! क्या जाने रास्ते मे लडाई ही छिड जाय तुम मुझे थोड़ी दूर पहुँचा दो। यह सुन कर सवरू जल गये। कहा—लोरिक मेरी बात सुनो। मैं दूध दे रहा।' यदि आगे लडाई छिड जाय तो तुम दोनो आदमी आपस मे मुकाबला कर लेना। इतनी बातचीत के बाद लोरिक बोहा से आगे बढ़ गया। बेश्या चनैनी आगे-आगे चली, पीछे-पीछे लोरिक चला। वे पूर्व दिशा मे चलने लगे, जगल और झाडियों को पार किया तब बेवरा नदी मिली। बेवरा नदी पर कोई नाव दिखाई नहीं पडी। नदी के दोनो कगारा पर जल उफन रहा था। लोरिक ने चनवा से तुरन्त बातचीत शुरू की, सवाल जवाब किया। ऐ स्त्री, तुम किनारे पर बैठो। मैं गूले पेड़ और लकड़ियाँ एकत्र

करूँ तथा उनकी नौका बनाऊँ तथा हम दोनों खेकर उस पार चलें। चनैनी वहाँ बैठी रही अहीर जंगल में प्रवेश कर गया। उसने जंगल झाड़ी से मोटी लकड़ियाँ प्राप्त कीं फिर पेड़ की लताओं को काटकर उन्हें बाँधा। नदी में कुंदों को डाल दिया गया कुंदों की नाव चल पड़ी। लोरिक ने खेने के लिए एक लग्गी बनायी। चनवा को बैठा लिया। फिर उसे बीच धार में खेने लगा। इधर से तेजी से एक बोझ सा बहा चला आ रहा था। उसमें एक बड़ा सा चूहा था। चूहा बहता हुआ आकर लकड़ी के कुंदों से टकरा गया। चनवा ने चूहे को देखा उसने उसे कुंदों पर रख लिया। थोड़ी देर में जब धूप में चूहे को कुछ आराम मिला तथा उसका शरीर शान्त हुआ तब वह कुन्दों के जोड़ों और बन्धनों के बीच चला गया। कुन्दों के बन्धनों को वह काटने लगा। तीन बन्धनों के कट जाने से कुन्दों के दो भाग हो गये। एक देश की ओर वेश्या चनैनी बहने लगी दूसरी ओर लोरिक उछलने लगा। उसने चनवा से कहा—वेश्या, मेरी बात सुनो। मैं तुम्हारे चक्कर में पड़ गया। तुम्हारी बात मान ली। अपनी विवाहिता को घर पर छोड़ दिया। तुम हमेशा ऐसा ही काम करती रहोगी तो लोरिक कब तक युद्ध करता रहेगा? लोरिक ने यह कहते हुए कुन्दों को फिर जोड़ दिया। जब कुन्दों का जोड़ ठीक हो गया तो लोरिक ने उसे खेना शुरू किया वे बेवरा नदी के उस पार उतर गये। तट पर सेमल का वृक्ष था उसके नीचे दोनों ने डेरा डाला। भोजन बनाने के लिए उन्होंने उपले तैयार किए।

अब चनवा के पति सिवहरि का हाल सुनिये। वह बिजरी गाँव छोड़कर राजा सहदेव के पास आया। वहाँ जाकर लोटने लगा पहले तो सहदेव को इसका कारण समझ में नहीं आया। बाद में उन्होंने कहा—तुम उढ़ार करने वालों का पीछा करो। यदि रास्ते में उनसे भेंट हो जाय तो लड़ाई में लोरिक का सिर तोड़ दो। तीन सौ साठ तीरों को एकत्र कर सिवहरि वहाँ से चला, सांसड़ बोहा में पहुँचा जहाँ मल्ल सांवर बैठे थे। उसने कहा—ऐ धर्मी मल सांवर, क्या तुमने उढ़री उढ़रा (स्त्री भगाने वाले लोरिक तथा भागी हुई स्त्री चन्दा) को देखा है। मल सांवर ने कहा—ऐ संगी सिवहरि, मैंने दोनों को देखा है। वे बेवरा नदी के उस पार पहुँच गए हैं। सिवहरि ने सांवर से उपाय पूछा कि मैं कैसे दोनों से भेंट करूँ? सांवर ने कहा—इधर बोतल टंगी हुई हैं। दो बोतल शराब डट लो फिर जूता पहन कर शीघ्र ही वहाँ पहुँच जाओ। सिवहरि ने मद पीया। अपना ठाट बनाया। जूते पहने तथा भीम बनकर तेज़ी से दौड़ा। क्षण में वह डगमगा कर गिर गया फिर तीन सौ साठ बाणों को लेकर बेवरा नदी पर पहुँचा। उसने उढ़ार करने वाले लोरिक चन्दा का हाल देखा। वहाँ आग सुलग रही थी। दोनों भोजन की तैयारी कर रहे थे। तब सिवहरि ने अपना बाण साधा तथा सेमल के पेड़ की ओर उसे फेंकने लगा। किन्तु बीर मर्द लोरिक खेलाड़ी था। वह वहाँ से हट गया। सेमल का वृक्ष धरती पर गिर कर चूर-चूर हो गया किन्तु जब उसने दूसरा बाण निकाला तो वह बेकार था। और बाण भी बेकार थे। वह आश्चर्य में पड़ गया। अब क्या करूँ? सिवहरि कहने लगा—हे दैव, हे नारायण

आपने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया ? मुझे सारा गुण दिया पर तैरने का गुण नहीं दिया, नहीं तो मैं तैर कर बेवरा को पार कर जाता। लड़ाई करके लोरिक का मुँह तोड़ देता। यह कहते हुए वह लौट कर घर आने लगा। लोरिक और चदा दोनों की जोड़ी आगे बढ़ी। वे पूर्व की ओर चलने लगे। वे दिन-रात चलते रहे, उन्होंने कहीं डेरा नहीं डाला। हल्दी के भीटे पर पहुँच कर पनघट पर उन्होंने डेरा डाला, तम्बू खड़ा किया। फिर चनवा से उसने नम्रतापूर्वक कहा— ऐ मेरी विवाहिता मेरी बात सुनो। हम लोग रास्ता चलते रहे अतः मुझे थकान लग रही है। तुम यहाँ खाना बनाओ। मैं हल्दी जा रहा हूँ। हल्दी में मद की दुकान है। मैं वहाँ जाकर मद पीऊँगा। इतना कह कर उसने अपना बक्सा खोला। शरीर पर अगरखा डाला, पैर में जामा पहिना, तर्कश धारण किया तथा विशेष प्रकार का जूता पहना। उसने छप्पन पेंचों वाली छुरी तथा कटारी ली, फिर तलवार सभाली। जैसे हथिनी झूमते हुए चलती है वह झूमते हुए चल पड़ा। पूछते-पूछते हल्दी बाजार में वह कलवार के घर पहुँचा, भट्ठी पर पहुँचा। भट्ठी पर दस पाँच पीने वाले मद पी रहे थे। लोरिक दरवाजे पर खड़ा था। जमुनी वहाँ गद्दी पर बैठी थी। उसने जब लोरिक को देखा तो आश्चर्य में पड़ गयी। दाँतों तले अंगुली दबाने लगी। कहने लगी—हे दैव, हे नारायण तुमने ललाट में क्या लिख दिया ? इस व्यक्ति ने किस जात का पीसा हुआ खाया है। किस सरोवर का जल पीया है। इसको किस प्रकार की चारपाई पर सुलाऊँ ! चारपाई का बाध इसको गड़ेगा। जमुनी कलवारिन ने उससे पूछा—'तुम्हारा वतन कहाँ है, तुम्हारा मूल स्थान कहाँ है ? ऐ दूर देश के वासी तुमने कहाँ की चढ़ाई की है। इस भट्ठी के पास आकर कैसे खड़े हुए ?' लोरिक ने कहा—गउरा मेरा वतन है, गउरा मेरा मूल स्थान है। मैंने हल्दी की चढ़ाई की है। खोजते-खोजते मैं तुम्हारी भट्ठी तक पहुँचा हूँ। इतना सुनकर जमुनी अपनी गद्दी से उठ गयी। जाकर उसने अन्दर से काली कुर्सी निकलवायी तथा आदर सहित लोरिक को बैठने के लिए दिया। जमुनी बोतल भरने लगी फिर हाथ में गिलास लेकर वह उसे लोरिक के पास ले गयी। लोरिक ने बोतल उठाया तथा गिलास में दारू उड़ेलने लगा। उसने ज्यों ही एक घूंट मुँह में डाला उसको बाहर निकाल दिया। उसने गिलास को बाहर फेंक दिया तथा जमुनी पर क्रुद्ध हो उठा। अरे कलवारिन, तुम दुष्ट हो। भट्ठी की मलकिन, मैं ऐसा-वैसा पीने वाला नहीं हूँ। तुम लौंग और काली मिर्च से भट्ठी में शराब बनाओ। मैं तुम्हारी बढ़िया शराब पीऊँगा, फिर सागर के भीटे पर जाऊँगा। मेरी विवाहिता भोजन बना कर हल्दी के सागर के भीटे पर मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी। जमुनी कलवारिन ने कहा—हे बालक, सुनो। तुम कुर्सी पर हृदय रख कर बैठो मैं तुरन्त भट्ठी चढ़ा रही हूँ। जैसे ही दारू तैयार हो जाता है मैं तुम्हें दूँगी।

अब चनवा का हाल सुनिये। लोरिक को गए हुए बहुत देर हो गयी। वह भोजन बनाकर दारू पीने वाले लोरिक की प्रतीक्षा कर रही थी। जमुनी की भट्ठी

उतरी। गिलास भर कर वह लोरिक के पास गयी और उसे उसके हाथ में दे दिया। जब उसने जमुनी का दारू मुँह में डाला तो उसका शरीर गमगमा उठा। दारू का घूंट पीकर वह जमुनी की ओर देखने लगा। जमुनी अपनी गद्दी से उसे देखने लगी। दोनों की नज़रें एक दूसरे से लड़ गयीं, मिल गयीं। फिर जमुनी हँस पड़ी। जब उसकी बत्तीसी चमकी, लोरिक मूर्च्छित हो उठा, कुर्सी से गिर पड़ा।

भावार्थ—(२१०१—२४००)

कलारिन जमुनी वहाँ दौड़ पड़ी। हल्दी में जितने पीने वाले थे वे गुहार करने लगे। उन्होंने कहा—ऐ पीने वालों, चलो हम राजा महुवरि के दरवार में चलें। जमुनी ऐसी टोनहिन हो गयी है कि अपने द्वार पर आये हुए परदेशी पर जादू मार दिया है। वह कुर्सी से गिर पड़ा है। चलकर सूवा के यहाँ शोर मचाओ ताकि वह जमुनी को गड्ढे में भरवा दे। जमुनी यह बात सुन रही थी। वह डर गयी। सचमुच प्रजा राजा से जाकर यह बात कह देगी। मेरी बड़ी निंदा होगी। जमुनी ने लोटे में पानी ले लिया तथा हाथ में पंखा उठा लिया और जाकर उसने लोरिक के हाथ मुँह धोये, फिर हाथ से पंखा झलना शुरू किया। जब उसका मिजाज़ कुछ शांत हुआ तब लोरिक उसके सम्मुख बैठ गया। वह कहने लगा—मैंने पान-सोपारी खायी, ज़र्दा कुछ तेज़ हो गया तुम्हारी कुर्सी पर मुझे गर्मी लग गयी। मैं धरती पर गिर पड़ा। अब लोरिक फिर बोतल से खेल करने लगा। जमुनी उसे बोतल भर-भर कर देने लगी। लोरिक उसे पीता जाता था। जब वह दस-पांच बोतल पी गया तो उसकी नज़रों पर नशा चढ़ने लगा किन्तु उसने पीना बन्द नहीं किया। वह कुर्सी से ज़मीन पर गिर पड़ा। रात के तब तक बारह बज गये। जमुनी ने दुकान बन्द कर दी, भट्ठी बुझा दी, दरवाज़ा बन्द कर दिया। उसने घर जाकर दरवाज़ा खोला तथा पानी गर्म करने लगी, खाना बनाने लगी। भोजन लेकर वह अहीर के पास पहुँची। उसका रूप देखा। वह ज़मीन पर पड़ा हुआ था। घर से चाभी लाकर कमरे का ताला खोला। गद्दी का तकिया उठाया। उसे गर्दन पर रख दिया। फिर उसने अपनी साड़ी का काछ संभाला तथा दरवाजे पर चली आयी जहाँ मर्द लोरिक गिरा हुआ था। उसके दोनों पैरों को बटोर कर उनमें अपना हाथ डाल दिया। दूसरा हाथ उसने लोरिक की गर्दन में डाला। उसको टांग कर ले गयी और पलंग पर सुला दिया। आधी रात के बाद एक घड़ी और बीत गयी थी। इधर चनवा लोरिक का रास्ता देख रही थी। पीने वाला लोरिक कहाँ गिर गया? अभी तक वह नहीं आया।

इधर जमुनी का हाल सुनिये। उसने सोलह श्रृंगार किये तथा मुख पर बत्तीस आभरण चढ़ा लिये। जाकर पलंग पर सो गयी। लोरिक के आगे गिलास था। जब वह आँख खोलता था तो गिलास में दारू उड़ेलता था तथा उसे पी लेता था। इसी बीच उसने जमुनी से कहा—ऐ कलारिन, मेरी विवाहिता सागर पर भोजन बनाकर मेरी प्रतीक्षा कर रही है। आधी रात ढल चुकी है। मैं वहाँ कैसे जल्दी पहुँच जाऊँ? जमुनी ने कहा—भैया मेरी बात सुनो। तुम पलंग पर सोये रहो। मैं तुम्हारी

विवाहिता को यहाँ ला रही हूँ। इतना कह कर उसने गिलास मे और शराब उडेल दिये। अहीर वह भी पी गया तथा पलग पर सो गया। जमुनी वहाँ से सागर के भीटे पर गयी। चनवा दीप जलाकर बैठी हुई थी, हल्दी की राह देख रही थी। जमुनी ने खंखारा। फिर विनम्रता पूर्वक बोली—अरे भाई, इस तालाब पर कौन परदेशी है? यहाँ किसने धूनी रमाई है? तुम्हारा वतन कहाँ है? आदि स्थान कहाँ है? वेश्या चनैनी ने कहा—स्त्री सुनो, गउरा मेरा घर है, वही मेरी बुनियाद है। हमने हल्दी की चढाई की है तथा हल्दी के इस सागर के भीटे पर हम टिके हुए हैं। मैं यहाँ भोजन बनाने लगी। मेरे स्वामी पीने गये हैं, न जाने खा पीकर कहाँ गिर पडे हैं। मुझे यहाँ चक्कर आ रहा है। कलारिन जमुनी ने कहा—जितना तुमने खाना बनाया है उसमे से भर पेट खा लो। जो बच जाय उसको यही रख दो। फिर बर्तन आदि साफ कर लो। चलो मैं तुम्हारे पीने वाले का पता बता दूँ। खाना खाकर तथा बर्तन साफ कर उसने उन्हे सभाल लिया। छोटे तम्बू की रस्सी काट कर उसे बटोर लिया। जमुनी ने उसे अपनी काख मे दबा लिया। चन्ना ने बर्तनो का पिटारा स्वय ले लिया। दोनो जमुनी के घर पहुँची। जमुनी ने तम्बू को आँगन मे रख दिया। उसने दूसरा दरवाजा खोल दिया उसमे डेरा, पिटारा आदि रख दिया गया। सोलह प्रकार की खाद्य सामग्री रख दी गयी। जमुनी ने चन्ना से कहा, तुम यहाँ विधिपूर्वक भोजन बनाओ तब तक तुम्हारे पीने वाले यहाँ आ जायेंगे।

चन्ना ने नम्रता पूर्वक पूछा—मेरे स्वामी कहाँ गिरे हैं? वे हमारे घर कैसे आयेंगे? जमुनी ने कहा—तुम केवल भोजन की चिन्ता करो। तुम्हारे पीने वाले कही होंगे। यहाँ आ जायेंगे और ठहर पर आकर भोजन करेंगे। वह स्वयं लोरिक को लेकर शैया पर सो गयी। वहाँ बिहार होने लगा। जब लोरिक का नशा उतरा तब वह अलग हो गया। जमुनी ने फिर लोरिक को ले जाकर कमरा बता दिया। वह कमरे के दरवाजे पर जाकर चनवा को झाकने लगा। चनवा बोल उठी—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने मेरे ललाट मे क्या लिख दिया! मैंने एक सौत को गउरा मे छोडा, हल्दीपुर पाल आयी। यहाँ भी एक सौत तैयार हो गयी। जमुनी यह सुन कर मुस्कराती रही। प्रातः काल हुआ, झुटपुटे के समय कौवे बोलने लगे। लोरिक ने कलारिन जमुनी से कहा—तुम अपनी गद्दी आदि संभालो। अपना घर संभालो। मैं अब काम खोजने जाऊँगा। जमुनी ने पूछा तुम्हारी जाति क्या है? लोरिक ने कहा—मेरी जाति ग्वाल की है मैं गाय भैंस का चरवाहा हूँ। अपने लिए काम मैं ढूढ लूँगा। जब मैं जीने खाने का उपाय कर लूँगा तब हरदीपुर मे रहूँगा। नही तो कही आगे जाऊँगा तथा जल्दी से नया मुल्क देखूँगा। कलारिन जमुनी ने उससे विनम्रता पूर्वक कहा—ऐ अहीर, शाम तक यहाँ बैठे रहो। मैं महुअरि के दरबार मे जा रही हूँ। मैं जाकर दरख्वास्त दूँगी तथा तुम्हारे लिए रोजगार खोज दूँगी। कलारिन जमुनी वहाँ से चली। हल्दी मे सूवा की कचहरी लगी हुई थी। महुअरि वहाँ बैठे हुए थे। जमुनी ने उनसे कहा—राजा मेरी बात सुनिये। एक परदेशी आ''

हुआ है वह अपने लिए रोज़गार खोज रहा है। वह तुम्हारे हल्दी के बाज़ार में टिक कर रहेगा। महुअरि ने कहा—'ऐ धनिया, तुम अहीर को बुलवा लो। उसको मैं रोजगार दूंगा। जमुनी वहाँ से अपने महल में वापस आयी। लोरिक से कहा कि—'ऐ परदेसी तुम्हें सूबा ने बुलाया है।' आगे जमुनी चली। पीछे लोरिक जा रहा है। उसने लोहे का सामान (कवच अस्त्र-शस्त्र आदि) उतार रखा था। सादे कपड़े उसने पहन लिये थे। दरबार लगा हुआ था। लोगों की नज़र अहीर पर पड़ी तो कचेहरी काँप गयी, चकित हो उठी। लोगों ने कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा तुमने ललाट में क्या लिख दिया! इस वीर ने किस जाँत का पीसा खाया है? किस सरोवर का इसने जल पीया है। अहीर वहाँ खड़ा हो गया। महुअरि ने उससे उसका स्थान आदि पूछा, गंतव्य पूछा, हल्दी में टिक जाने का कारण पूछा। यहाँ तुम कौन सा रोजगार करोगे? वीर लोरिक ने कहा—'राजा मेरी बात सुनिये। हल्दी शहर में जितनी तुम्हारी प्रजा बसी हुई है, सबके पास लक्ष्मी गायें हैं। राजा और प्रजा सबकी गायें कल प्रातः गिनवा दीजिए (मैं उनकी चरवाही करूंगा)। इससे मेरा खर्चा चलेगा।' अहीर घर गया, हाथ मुँह धोया, मगही पान खाया। दूसरे दिन प्रातः काल गायें खुल गयीं, अहीर को गायें गिनवा दी गयीं। सब लोग गाय गिनवा कर वापस लौट गये। अहीर ने पशुओं को बटोर लिया। जितनी भी गायें और भैंसें थीं सबको लेकर लोरिक गांव की सीमा पर पहुँचा। पके हुए गेहूँ और गोजई के खेतों में वह सात घड़ी तक गायें चराता रहा। गायें गर्दन उठा कर देखती रहीं। चारो ओर हरियाली दिखाई पड़ रही थी। लोरिक पशुओं को चराकर हल्दी वापस आया। हल्दी में धूल उड़ने लगी, सारी चीजें गर्द में मिल गयीं। खेत में पके हुए गेहूँ और गोजई की दुर्दशा देख कर किसान गिर पड़े। रक्त के आँसू बहने लगे। वे एकमत होकर राजा की चाँदनी में गये। गुहार करने लगे। हे राजा महुअरि सुनिये।

भावार्थ—(२४०१—२७००)

प्रजा ने कहा—आपने प्रातःकाल ही चरवाह नियुक्त किया। उसने दोपहर में ही धूल उड़ादी। गेहूँ और गोजई जो पक रही थी, नष्ट हो गयी। हम लोग अपने बाल बच्चों को कैसे जीवित रखेंगे? तुम्हारा कर कैसे अदा करेंगे। जब इतनी बात कही गयी तो राजा क्षीण पड़ गया। उसने कहा—ऐ हल्दी के किसानों, डंडा और लाठी हाथ में ले लो तथा जाकर अहीर को खेत पर मारो। किसान उत्तेजित हो उठे। चलकर अहीर को जबर्दस्ती पीट डालेंगे। वे हल्दी की सीमा पर पहुँचे। अहीर डंडार—पर बैठा हुआ था। लोग एक बीघा फासले पर थे, पर किसी की आगे बढ़ जाने की हिम्मत नहीं थी। लोरिक ने कहा—ऐ हल्दी के लोगों, मैंने कभी गाय भैंस की चरवाही नहीं की है और न कभी मांग कर खाना खाया है। लोहा ही मेरा उठना है और बैठना है। युद्ध ही मेरे जीवन का आधार है। कहीं राजा पर विपत्ति आये तो वह मुझे रण में खड़ा कर दें! जब आमना सामना हो जायगा तब खेत पर तलवारें चल जायँगी। अब दो सिपाही छोड़े गये। वे जमुनी के घर चले गये।

उन्होंने लोरिक से कहा—तुम्हे राजा महुअरि ने चांदनी पर बुलाया है। लोरिक राजा के किले की ओर चला। वहाँ कचहरी लगी हुई थी। मन्त्री ने कहा—'ऐ राजा, नेउरी की तुम्हारी प्रजा ढीठ हो गयी है। उसने तुम्हारा धन रोक रखा है। तुम अहीर को नउरी मे भेज दो। वह जाकर सारा लगान वसूल कर लाये। वहाँ जाकर वह जूझ मरेगा। तब हर दिन का झगडा मिट जायगा। अहीर सुदर है, जैसे द्वितीया का चद्र उगा हो। वह युद्ध मे समाप्त हो जायगा। उसकी स्त्री को लाकर आप रनिवास भोग कीजिए।' राजा महुअरि ने विनम्रता पूर्वक कहा—ऐ अहीर, तुम नेउरापुर जाओ। वहाँ की प्रजा ढीठ हो गयी है। तुम जाकर लगान वसूल कर लो तथा हल्दी बाजार मे बैठ कर खाओ। मैं तुम्ह हल्दी का आधा राज्य दे दूँगा। आधा किले का महल दे दूँगा। यदि तुम नेउरापुर से जाकर लगान लाओ तब जानूगा कि तुम अहीर वश के हो। लोरिक ने कहा—राजा महुअरि, सुनो। मैं नगे पैर नही जाऊँगा। मेरे साथ सरदार रहेगे। वे सदा पहरे पर तैनात रहेगे। इधर हल्दी का हाल सुनिये। कचहरी के लोग आपस मे विचार करने लगे। उन्होंने राजा से कहा—ऐ राजा, सुनिये। किसी के लिए मृत्यु खोजी जाती है। इसकी मृत्यु सहज ही म आ गयी है। इसे काट खान वाला घोडा जरूर दे दीजिए। जब घोडा मगर का ढक्कन लोरिक खोलेगा तो घोडा उसका प्राण ले लेगा। सहज ही मे झगडा निपट जायेगा। तब तुम चदा को लेकर रनिवास भोग करना। राजा महुअरि ने लोरिक से कहा—ऐ लोरिक, घुडसाल मे पचास घोडे बधे हुए हैं। तुम उनमे से जाकर एक घोडा चुन लो। अहीर घुडसाल मे गया और अदाज लेने लगा। कोई घोडा हाथ रखते ही धरती पर गिर गया। किसी की कटि पर उसने हाथ रखा तो उसकी पीठ नीचे झुक गयी। अदाज लेते लेते लोरिक पूर्व की ओर निकल गया। वहाँ भिलासी घोडी बधी हुई थी। उसने जब घोडी की पीठ पर हाथ रखा तो उसने धीरे से कहा—'ऐ भैया बीर लोरिक, मेरी बात सुनो। तुमने मेरी पीठ पर हाथ रख दिया। जिस दिन मेरे बेटा पैदा हुआ उसने पृथ्वी पर पैर रखा। यह पहले से लिखा हुआ है कि उस पर अहीर बीर लोरिक ही चढेगा। दूसरा उस पर कोई नही चढेगा। दूसरे के लिए वह घोडा काट खाने वाला बन गया है। अहीर के लिए वह पूज्य है। घोडी ने लोरिक से कहा कि घोडा मगरू क्षत्रिय वर्ग का है। उसका मालिक तेली है।' अहीर अब उस चांदनी पर गया जहाँ राजा महुअरि बैठा था। उसने कहा—ऐ राजा, तुम मुझे तुरन्त घोडा दो कि हम नेउरीपुर जायँ। मुझे काट खाने वाला घोड़ा दो। मैं नेउरियापुर पाल जाऊँगा। मन्त्री ने यह बात पहले ही सुझायी थी। कचहरी के सभी लोग हँस पडे। किसी के लिए मौत खोजनी पडती है। अहीर की मृत्यु स्वत निकट आ गयी है। लोगो ने कहा—जाकर घुडसाल का ताला खोल दो। लोरिक घोडे को देखेगा, ढक्कन उठायेगा। घोडा मगर उसे खा डालेगा। हर रोज की मुसीबत टल जायगी। राजा महुअरि ने कहा—ऐ अहीर मैं तुम्हारी बात नही मानूगा। मैं तुम्हे काट खाने वाला घोडा कैसे दे दूँ। शायद वह

ज़िंदगी ले ले । मैं उसकी जिम्मेदारी नहीं लूंगा । लोरिक ने कहा—वह कैसे काट कर मेरी ज़िंदगी ले लेगा ? मैं उस काट खाने वाले घोड़े को देखूंगा । ताला खोलकर वह कोठरी के अंदर जल्दी से चला गया । तख्ते उठाये । दोनों पास पास हुए । लीद के कारण बलशाली घोड़ा वहाँ शिथिल पड़ गया था उसकी आँखों में कीचड़ बह रहा था । लोरिक गड्ढे के अंदर चला गया । दोनों ओर से लीद हटायी, पेटी खोली, घोड़े के पेट पर हाथ रखा । उसको ऊपर लाया । लीद के ऊपर आकर घोड़ा खड़ा हो गया । लोरिक उसकी बगल में खड़ा था । उसकी पीठ पर जितने बाल बढ़े हुए थे उनको चाकू से काटा, आँखों का कीचड़ साफ़ किया फिर उस घोड़े का चूल पकड़ कर उसे बाहर निकाला । उसको लेकर तालाब के भीटे की ओर ले चला । हल्दी के लोग उसे देखने लगे । घर घर में लोगों ने दरवाज़े बंद कर लिये, टाट चढ़ा लिये । काट खाने वाला घोड़ा छूट गया है । किसकी मृत्यु निकट आ गयी है । लोरिक घोड़े को लेकर जमुनी के पास आया । हाथ में एक कूँचा लेकर घोड़े को सीधे ले जाकर तालाब पर खड़ा किया । उसको खूब ठीक से धोने लगा । उसने घोड़े की आँखों का कीचड़ धोया । जमुनी के घर उसे वापस लाकर दूध और काली मिर्च दिया । उसकी गद्दी और लगाम ठीक किया फिर उसकी पीठ पर बैठ गया । उसके सामने गर्म चना रखा गया । लोरिक कहने लगा, ऐ बलवान मंगर, तुम इसे खालो । दस दिनों तक घोड़े की सेवा होती रही । जब घोड़े में कुछ शक्ति आयी तो वह हल्दी में ठुमकने लगा । हल्दी के लोगों ने उसे देखा और घर के दरवाज़े बंद कर दिये । सब आश्चर्य में पड़े हुए थे । कट्टहा घोड़ा जो सबको काट खाता था, लोरिक का पूज्य हो गया है । लोरिक ने मंगर की सेवा की । उसका शरीर यथापूर्व हो गया । वह चने की दाल खाता था एक नाद में दूध और मिर्च खाता था । जब मंगर स्वस्थ हो गया तो उसने लोरिक से कहा—ऐ लोरिक, मेरी बात सुनो । तुम राजा की चाँदनी पर जाओ और मेरा सारा सामान उससे माँग लाओ । मैं ज़रा अपने बल का अंदाज़ लेना चाहता हूँ । लोरिक जमुनी के घर से महुअरि की चाँदनी पर गया । जमकर वहाँ दरबार लगा हुआ था । उसने कहा—राजा सुनो । घोड़ा अपना सामान माँग रहा है । राजा महुअरि ने कहा—एक दो सामान की क्या गिनती है ? यहाँ तो पचास साजो सामान टंगे हुए हैं । तुम जाकर देख लो । जो सामान तुम्हें भाये उसे यहाँ से शौक से ले जाओ । लोरिक ने अच्छा सा सामान चुन लिया । उसे लेकर चाँदनी पर आया । जब घोड़े के पास वह सामान ले गया तो घोड़ा जलकर खाक हो गया । उसने कहा—चेला तुम पागल हो गये हो । तुम्हारी बुद्धि हर ली गयी है । तुम मेरा बंधन ढीला कर दो । मैं राजा का पौरुष देखूं । तुम यह टूटा हुआ सामान लाये । तुम ऐसा सामान मुझे क्यों दे रहे हो ? मेरी पाखर सोने की है । मेरा कवच (ज़िरह) सोने का है । बाहर तार में पिरोये हुए मोती हैं । मेरे पैर के घुंघरू हैं । जब मैं उन्हें बांधता हूँ तो उनकी आवाज़ साठ कोस तक जाती है । लोरिक राजा महुअरि के यहाँ गया । कहने लगा—राजा तुम जल्दी से

घोडे का सामान दे दो। नही तो मैं तुम्हरी अल्हड जिंदगी समाप्त कर दूँगा। तुम सारी सामग्री दे दो ताकि मैं नेउरीपुर चाल जाऊँ। राजा महुअरि ने सामान दे दिये। लोरिक ने सामान लाकर घोडे के सामने रख दिये। घोडा मगर हस पडा। अहीर घोडे का सारा सामान कसने लगा। पाखर सजा कर उसके मुँह मे लगाम कस दिया। उसके माथे पर कवच जड दिया जिस पर गोली के वार बेकार जाते थे। फिर झालरें पहना दी जिनमे मोती जडे हुए थे। उसके पैर मे नूपुर बध गये जिनकी आवाज घनी थी। अब घोडे का हाल देखिय।

भावार्थ—(२७०१—३०००)

द्वितीया का चन्द्र उगा हुआ है। सूर्य की ओर तो देखा जा सकता है। पर मगर घोडे की ओर ताका नही जाता। अहीर अब तख्त पर स्नान करने लगा फिर जाकर ठहर पर भोजन करने लगा। उसने दोनो स्त्रियो से कहा—तुम लोग यहां दहाडती रहो मैं नेउरीपुर जा रहा हूँ। यदि मैं वहां जूझ गया तो हमेशा का कष्ट समाप्त हो जाएगा। यदि मैं नेउरी से हल्दी लौट आया तो आधा हल्दी का राज्य ले लूँगा। किले मे भी आधा बँटवारा कर लूँगा। मैं आधे का हिस्सेदार बन जाऊँगा। अहीर खा पीकर तैयार हुआ, मुख मे पान का बीडा डाला तथा अपना बाक्स खोलकर वह अस्त्रशस्त्र से सुसज्जित होने लगा। आगे लम्बा कुर्ता अगरखा पैर मे विशेष पायजाजा, एडी मे लोहे की कील वाला जूता तथा उसने तर्कश धारण किया। साठ गज का दुपट्टा उसने सभालकर अपनी पेटी मे बाँध लिया। उसने छप्पन पेचो वाली छुरी तथा कटारी ले ली। उसकी बगल मे तलवार झूल गयी। उसने साठ गज कपडे की नरमा की पगडी बाँधी जिसमे कलँगी सुशोभित थी उसने दाहिने हाथ मे बिजली की तलवार ली तथा आसन पर बैठ गया। घोडा धरती और वायु मण्डल मे घूमने लगा। फिर हल्दी की परिक्रमा करने लगा। वहां के लोग भयभीत हो उठे। आश्चर्य करने लगे। हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा आपने हमारे ललाट मे क्या लिख दिया है! ऐसा दुर्दिन आ गया है। कटूहा घोडा छूट गया है। हल्दी बाजार मे किसकी मौत आ गयी है? घोडा उडान भर कर आकाश मे चला गया। वह बादलो को चीरता हुआ नेउरियापुर मे पहुँच गया। छिउली वन मे जाकर वह उतर गया। लोरिक ने उतर कर घोडे को छिउली के पेड से बाँध दिया।

अब वहां का हाल सुनिये। राजा हरेवा-परेवा जगल मे शिकार खेलने गए थे। उनकी दृष्टि उस घोडे पर पडी जो छिउली की डाल से बँधा हुआ था। उन्होंने पहरेदार से कहा—तुम पलाश (छिउली) वन की ओर जाओ और घोडे [illegible] लो। क्या कोई राहगीर है जो रास्ता भूल गया है? या घोडे का [illegible] बेचने आ रहा है। पहरेदार भीटे पर गया, पलाश के पेड के पास [illegible] गया। वहां अहीर वीर लोरिक सो रहा था। उसने घोडे को छिउ[illegible] रखा था। पहरेदार वहां पहुँच गया तथा धीरे से बोला—भैया, [illegible] है? तुम्हारा मूलस्थान कहां है? ऐ परदेशी, तुमने इस ग्राम मे [illegible]

है ? तुम धूप में आगे चले जा रहे हो ? अहीर वीर लोरिक ने कहा—संगी मेरी बात सुनो । गउरा मेरा वतन है, मूलस्थान है । मैंने नेउरी की चढ़ाई की है । यहाँ छिउली वन में मैं उतर गया हूँ । पहरेदार ने कहा—भैया, मेरी बात सुनो । जब तुम्हारा घर गउरा में है तो तुम वहाँ के अपने किसी हितू या मित्र के बारे में बताओ । अहीर ने तुरन्त जवाब दिया । गउरा गुजरात में हमारा एक मित्र था और हम दोनों साथ में मिलकर गुल्ली डंडा खेलते थे । वह हमारा मित्र साहु बना, मैं चोर बना । मैंने गुल्ली टेढ़ी मारी जो भकताल में चली गयी । तब तक मेरा मित्र दौड़ा और हाथ में उसने गुल्ली लेकर चंपा मारा गुल्ली आकर मेरे माथे में गड़ गयी । खून बहने लगा । मेरा मित्र देश छोड़कर भाग गया । फिर उसका कोई पता ठिकाना नहीं है । मैं नेउरी में आया हूँ । पहरेदार ने कहा—लोरिक मेरी बात सुनो । मैं ही वह मित्र हूँ । तुम्हारे डर से मैं गउरा छोड़कर भाग आया तथा नेउरीपुर में आकर टिक गया । फिर गउरा वापस नहीं हुआ । फिर दोनों गले मिलकर रोने लगे । उनके रुदन से वृक्षों के पत्ते झर झरकर गिरने लगे । लोरिक ने कहा—मित्र सुनो । नेउरी में लगान रोक लिया गया है । तुम्हारा राजा यहाँ बड़ा बलवान हो गया है । तीन साल हो चुके हैं उसने हल्दी में मालगुजारी नहीं दी है । अब मैं उसे उगाहने के लिए आया हूँ । मित्र, मेरी बात सुनो । तुम्हारे राजा के लोहे के हथियार कैसे हैं ? उसके पास कौन-कौन से हथियार हैं ? मित्र पहरेदार ने समझाकर कहा—मित्र लोरिक मेरी बात सुनो । तुम्हारा घोड़ा जब आकाश में रहेगा तो राजा पहले अपनी सभी कुतियों को छोड़ेगा । वे घोड़े का लिंग पकड़कर उसे नीचे गिरा देंगी । तुम धरती पर गिर पड़ोगे तब तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जाएगा । दूसरा लोहा और तेज है उससे बड़ा कोई और लोहा नहीं है । तुम्हारा सिर ब्रह्म-फाँस में फँस जाएगा अंधकारमय है उसमें तुम्हारी जान नहीं बचेगी । लोरिक ने पूछा—मित्र, तब उपाय क्या है ? जो भी रास्ता हो तुम मुझे बताओ । पहरेदार मित्र ने कहा—जब तुम ब्रह्मफाँस में गिरो तो सरकंडों के पास चले जाना । यदि तुम सरकंडों को काट दोगे तो ब्रह्मफाँस गिर पड़ेगा । तब तुम्हारा अवसर आ जाएगा । लोरिक ने मित्र की बात ध्यान से सुनी । उसने कहा—देखना, भेद खुलने ना पावे । पहरेदार अब राजा के घर की ड्योढ़ी के लिए चला । वहाँ युद्ध की तैयारी हो रही थी । राजा ने पहरेदार से पूछा—मित्र, क्या राहगीर रास्ते की धूप से छाँह में रुक गया है तथा घोड़े को उसने छोड़ दिया है । उसे बाँधकर आराम करने लगा है ? पहरेदार ने कहा—मैं पलाश के वन में गया था । मैंने उससे स्पष्ट रूप से सारा हाल पूछा । वह घोड़े का सौदागर नहीं है । वह कहीं घोड़ा बेचने नहीं जा रहा है । वह तुम्हारा हित या मित्र नहीं है । वह भेंट मुलाकात करने नहीं आया है । वह राजा तुम्हारा दुश्मन है । हल्दी के राजा की तुमने जबर्दस्ती कौड़ी (मालगुजारी) रोक रखी है । वह उसे वापस लेना चाहता है । हल्दी का मालिक आया है, नेउरी में वह अपनी मालगुजारी वसूल कर लेगा दोनों भाई, हरेवा-परेवा ने यह बात कान लगाकर सुनी । हरेवा ने परेवा से कहा—गाँव के पास शत्रु आ गया है । नेउरी में जबर्दस्त

झगडा मचेगा। इधर लोरिक ने घोडे का शृङ्गार करना शुरू किया। उसने सोने की झूल और कवच तथा बकसुवा आदि को पहनाया। माथे का सिरस्त्राण भी उसे सजा दिया। सिरस्त्राण पर गोलियो का निशाना चूक जाता था। लोरिक उस पर सवार हुआ। उसके सवार होते ही घोडा धरती से आसमान पर उड गया। वह बादलो को चीरने लगा। मगर पैर उठाकर नाचने लगा। वहाँ का राजा दुरबीन लगाकर उसे देखने लगा। वह कुतियो के पास गया। सकुली कुतिया को उसने छोड दिया। उसने जाकर घोडे का लिंग पकड लिया। और उसको नीचे खीचने लगी। तब बीर लोरिक ने कहा—ऐ मगर स्वर्ग का घोडा कैसे मुझे नीचे लिए जा रहा है। मगर ने धीरे से कहा—मेरे मालिक, दातो से मेरा लिंग पकडकर कुतिया झूल रही है। लोरिक ने वहाँ नीचे लटककर देखा कि कुतिया ने घोडे का लिंग पकड लिया है। उसने म्यान से कटार निकाली और तुरन्त कुतिया की गर्दन काट दी। नेउरी मे रक्त की धारा गिरी, कुतिया की गर्दन स्वर्ग मे उडने लगी।

अब वहाँ का हाल सुनिये। घोडा आकाश मे पैर उठा उठाकर नाच रहा था। इधर जब अमर कुतिया नेउरी मे कट गयी तो फिर राजा ने लोरिक पर आक्रमण करने की तैयारी की। दोनो भाइयो ने (हरेवा और परेवा) आपस मे बैठक की। फिर ब्रह्मफाँस को बढ़ाकर घोडे पर फेका दुर्गा धन्य हैं, आदिकाल से ही पूजमान हैं। उन्होंने जाकर रक्षक का काम किया, अपना पहरा लगा दिया। घोडा मछली बनकर पार हो गया। ब्रह्म जाल गिर पडा। मगर आकाश मे नाचने लगा। हरेवा परेवा ने धर से ब्रह्मफाँस को छोटा करके फेंका। देवी दुर्गा ने अपना रूप प्रकट किया। वह फिर रक्षक बन गयी। ब्रह्मफाँस एकदम छोटा हो गया। तीसरी बार राजा हरेवा क्रुद्ध हुआ, बुजरो यह ब्रह्म का फाँस है। अब तुम अपनी पूरी शक्ति लगाओ। आज मैं फिर जाल फेंक रहा हूँ। आकाश मे मेरा शत्रु फँसेगा। नही तो मैं इस जाल पर मूत कर इसे फेंक दूंगा। ब्रह्म की निंदा होगी। अब दुर्गा का हाल सुनिये। दुर्गा की शक्ति लोरिक की सहायता कर रही थी। नेपथ्य मे हाथ फैलाकर वह नाच रही थी। वह यह सोच रही थी कि ब्रह्म उनके बडे भाई हैं, पिता हैं। यदि उन्होने अपनी जवान हिला दी तो मेरा यहाँ रहना कठिन हो जाएगा। अब दुर्गा मूबा के अनुकूल हो गयी। उसने फाँस बनाकर फेंका। घोडा उसमे फँस गया। खीचने पर फाँस और सकुचित होता चला गया। नीचे लोरिक का मित्र पहरेदार खडा था।

भावार्थ—(३००१—३३००)

वह आश्चर्य मे पड गया। सहज ही मेरा मित्र लोरिक कट जाएगा। दिन भर मे ही झगडा समाप्त हो जाएगा। उसने धरती से ही चिल्लाया। मित्र सुनो, यह सूवा तुम्हारा हत्यारा बन जाएगा। तुम्हारे पास गाँठ मे जो कुछ हो उससे शलाका को काटो। अहीर यह बात भूल गया था। उसने अब अपना कौतुक दिखाया बगल से उसने कटारी निकाली। जाल की शलाका को काट डाला। शलाका के कटते ही जाल धरती पर गिर पडा। घोडा कूदकर अलग हो गया। फिर अगला पैर फैलाकर करगही

नाच नाचने लगा। अहीर ने कहा—अब अवसर आ गया है। अवसर पनिहारिन से कुएँ पर पानी भरवाता है। सूवा, तुम्हारा कठिन आक्रमण मैंने बर्दाश्त कर लिया। तुम मेरा साधारण हमला संभालो। लोरिक ने म्यान फेंक दिया तथा अपनी तलवार खींच ली। उसको चार अंगुल बाहर निकाला तो उसकी ध्वनि आकाश में गूँजने लगी। नीचे आग की लहर फैल गयी और पोरसे भर ऊपर लपलपाने लगी। सूबा की पलकें घूम गयीं। उसका खड्ग धूल में मिल गया। लोरिक पूर्व से पश्चिम की ओर काटने लगा। पश्चिम से फिर दक्षिण घूम गया। जैसे कोइरी कोड़ार का खेत काटता है वैसे ही कठईत का पुत्र, जिसका दुलारा नाम लोरिक है; सबको काट रहा है।

लोरिक ने इस प्रकार काटना शुरू किया कि वहाँ कोई बच नहीं पाया। जो स्त्रियाँ बची थीं उनको भी लोरिक खोज-खोजकर काटने लगा। शायद उनके पेट में शत्रु हों जो कभी वैर साधें। ऐसा कहते हुए उसने लोगों को काटना शुरू किया। जो स्त्रियाँ विना पुरुष के हो गयी थीं वह गली-गली में बेचैन होकर घूमने लगीं। लोरिक ने नेउरी की सारी सम्पत्ति हर ली। अहीर अब हल्दी का मालिक बनेगा। उसका भाग्य खुल गया। लोरिक नेउरी के जेल में गया। वहाँ उसने पाँच सौ कैदियों को छुड़ाया। उन्होंने लोरिक को घेर लिया। वे कहने लगे—ऐ मालिक लोरिक, हमारी बात सुनिये। हमारा भाग्य था कि तुमसे भेंट हुई। तुमने हमें जेल से मुक्ति दिलाई। लोरिक ने पांच सौ कैदियों से कहा—तुम लोग अब छूट गये हो। तुम सब लोग कुछ काम करो। तुम लोगों को हल्दी चलना है। सभी कैदी नेउरीपुर गाँव में दल बनाकर प्रवेश कर गये। बारह बैलों पर कर्ण फूल, झुलनी और नथिया आदि अलंकार तथा अन्य सामानों को लोरिक ने लदवा लिया। उसने नेउरी का सारा धन बटोर लिया। वहाँ के राजा का सारा धन उसने ऊंट पर लदवाया। उसने कैदियों से कहा—ऐ भाई, तुम लोग मेरी बात सुनो। हमने तुम्हारा बन्धन तुड़वा दिया है। तुम लोग अपने घर जाओ और अपने बाल बच्चों की देखभाल करो। कमाई करो और खाओ। कैदियों ने लोरिक से कहा— हम लोग जीते जी तुम्हारा पिन्ड नहीं छोड़ेंगे। ऐ अहीर, हम लोग तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे। जहाँ तुम्हारा पसीना गिरेगा वहाँ तुम्हारे लिए ये कैदी अपना खून दे देंगे। जब अहीर के बैल लद गये तो उन्होंने हल्दी की राह ली। ऊँट, हाथी, घोड़े सब पर नेउरी का धन लाद कर हल्दी लाया गया। वहाँ के राजा महुअरि ने लोरिक से हाथ मिलाया उसने विनम्रता पूर्वक कहा—ऐ अहीर लोरिक, सुनो। तुम हल्दी का राजा हो जाओ। मैं तुम्हारी प्रजा बन कर रहूँगा। तुम चनइनी को लेकर दोनों वक्त कचहरी करो तथा छक कर मदिरा पीओ। जब महुअरि ने ऐसा कहा तो लोरिक अपने मन में मुस्कराने लगा। शहर में डुग्गी पिट गयी, 'भाइयों, आज राज्य में परिवर्तन होगा'। महुअरि आज प्रजा बन रहा है। अहीर लोरिक अब राजा बन रहा है। लोरिक हल्दी का राजा बन गया, मालिक बन गया।

अब वहाँ का हाल सुनिये। जिस दिन नेउरी मे झगडा लगा हुआ था उसी दिन बोहा मे भी युद्ध हो रहा था। भगवती दुर्गा ने लोरिक से कहा—मैं किस दल को सभालूं। दगल मे मैं किसका साथ दूँ ? लोरिक ने पूछा। माता, कौन सा दंगल? तुम क्या कह रही हो ? तुम किसकी पूजमान हो ? देवी, तुमने हमारे हाथ का गुड और घी खाया है। तुमने हमारी की हुई पूजा को स्वीकार किया है। तुम मेरा पक्ष संभालो। दूसरे पक्ष को सभालने का कोई प्रयोजन नही है। इधर बोहा मे लोहा लगा हुआ है। कोलो ने मल सवरू को रोक लिया है। सवरू ने नन्हूवा से कहा—हाथ मे डण्डा ले लो तथा कोलो का आगे बढना रोक दो। मैं भी सावधान हो रहा हूँ। खेत पर आक्रमण हो रहा है। तलवार ले लेकर कोल दौड रहे हैं। वाहा मे कोलो का दल एकत्र हो चुका है। नरानापुर गाँव के उमराव भी उनके साथ शामिल हैं गाजनगढ के तुर्क भी गढपीपरी के कोल और चडारो से मिल गये हैं। चारो दल के लोगो ने एकजुट होकर बाट-बाँट कर पत्थी पर भात खाया है। कोल तलवारें ले लेकर दौडे। नन्हूवा ने आगे जाकर उनको रोका। जिस समय वह लाठी लेकर ब्यालिस हाथ दौडा तो कोल भाग खडे हुए। नान्हूँ ने उन्हें पीपरी मे भगा दिया। नदी के किनारे आकर वह बैठ गया। पीपरी का राह देखने लगा।

अब इधर सवरू का हाल सुनिये। उन्होंने नम्रता पूर्वक कहा—हे देव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने भाग्य मे क्या लिख दिया ? कोलो का दल आ रहा है। उन्होने तीर और धनुष हाथ मे उठा लिया। जाकर समर मे डट गये। नान्हूँ को समझा कर कहा—तुम कोलो के दल को छोड दो। आज जरा लोहा लग जाने दो। नान्हूँ ने कहा—धरमी मेरी बात मानो। जब तक बहनाई लोरिक हल्दी से नही आ जायेंगे तब तक मैं बेवरा का घाट नहीं छोडूँगा। जब धरमी सावर ने यह सुना तो वह तडप कर बोले। नान्हूँ चरवाह सुनो। बाद मे लोरिक बहुत भाई का प्रेम दिखायेगा। वह रण मे क्या काम आयेगा ? तुम कोलों को छोड दो। जरा दो हाथ तलवार चल जाय। कोलों का दल चढ आया। तलवारें झनझना उठीं। इधर तीन सौ साठ चरवाह थे। वे जवान पट्ठे थे। वे बोहा मे तत्पर हो गये। कोलो से उनकी लडाई छिड गयी। जब सवरू के हाथ से बाण छूटे तो सौ दो सौ कोल भहरा कर गिर पडते थे। तीन सौ साठ चरवाहे उनको टांगें पकड कर बेवरा नदी मे फेंकते जाते थे। नदी मे लाशें बही जाती थी। कोल तलवारो से आक्रमण किये जा रहे थे। मार करते-करते सवरू के हाथ थक गये। पानी के बिना उनका कंठ सूखने लगा। उन्होंने कोलो से कहा—मैं औरों के मारने से नही मरूँगा और न मैं यहा से भागूंगा। जब मेरे भाई सुवच्चन यहाँ आयेंगे, बोहा मे लडेंगे, तब उनके हाथों मेरी मृत्यु होगी। सती ने यह बात सुनी। वह कलश मे पानी लेकर चली, सवरू के पास गयी। तब तक कोलों को भवानी वहां पहुँच गयी। उन्होंने सती का हूबहू रूप धारण कर लिया। सवरू से कहा—मेरे स्वामी, मेरे सुखनन्दन, मेरे सुहाग, मेरी बात सुनो। कोलो का तीर कहाँ-कहाँ लगा है ? मुझे शीघ्र बताओ। सवरू ने कहा—मेरी विवाहिता, सारे

शरीर में तीर लगे हैं। पर कहीं पीड़ा नहीं है। केवल एक तीर कलेजे में लगा है, वही थोड़ा दुख दे रहा है। कोलों की भवानी ने उसे देखा और उसी रास्ते अन्दर प्रवेश कर गयीं, संवरू के मस्तक पर चली गयीं। वे अन्धे हो गये। कोल प्रहार किये जा रहे थे। संवरू भी अपने आसन से तीर फेंक रहे थे। उनके छोड़े हुए तीर से सौ दो सौ कोल धराशायी हो जाते थे। उन्होंने कोलों से कहा—इस तीन भुवन में कोई मुझे मार नहीं सकता। जब पीपरी से मेरे भाई सुबच्चन आयेंगे तब तुरन्त मेरी मृत्यु होगी। उन्हीं के मारने से मैं मरूँगा। वहाँ से दस पांच कोल पीपरी के लिए चले। दिन रात चलकर वे पीपरी सुबच्चन के पास पहुँचे। मल सुबच्चन से एक कोल ने तुरन्त बातचीत की, तुरन्त सवाल जवाब किया। उसने कहा—भइया सुवचन, सुनो।

भावार्थ—(३३०१—३६००)

तुम्हारे भाई सांवर ने तुम्हें बुलाया है, बड़ा जरूरी काम है। सुबच्चन ने कहा—दूसरी पुकार में मुझे भेजो। मैं भाई को मारने के लिए नहीं जाऊँगा। इस पृथ्वी पर मेरा तीन बार जन्म हो तो भी ऐसा नहीं करूँगा। कोल यह सुन कर बिगड़ उठे। कुल मिलकर उनसे लिपट गये। उनको उठा कर बोहा में लाये। सुबच्चन मल सांवर के पास गये। दोनों भाई फूट-फूट कर रोये। फिर मलसांवर ने कहा—मैं इन कोलों के मारने से नहीं मरूँगा। मेरी मृत्यु तुम्हारे हाथों लिखी है। मैं तुम्हारे मारने से ही बोहा में मरूँगा। सुबच्चन ने कहा—भइया मलसांवर मेरी बात सुनो। हम दोनों भाई एक हो जायं। कोलों को बोहा से मार भगायें। मल्ल सांवर ने धर्म की बात कही। भैया, मैंने अहीर का नमक खाया है। मैं अहीर के लिए लड़ूँगा। साँवर ने कहा—तुमने कोलों का नमक खाया है तुम कोलों के लिए लड़ जाओ। मल्ल सुबच्चन रो पड़े। भैया, तुम इस प्रकार बैठे रहोगे तो मेरा बाण कैसे छूटेगा? कोल आपस में विचार करने लगे। सुबच्चन वैसे नहीं मारेंगे। उनके लिए गड्ढा खोद दो और उसमें इन्हें गाड़ दो। इनकी आँखों में पट्टी बांध दो। हाथ में तीर पकड़वा दो वे सीधे प्रहार करेंगे और मलसांवर की मृत्यु हो जायगी। बोहा में सभी कोलों ने इस प्रकार की योजना बना ली। उन्होंने धरती में हाथ भर गहरा गड्ढा खुदवा दिया, सुबच्चन की आँखों में पट्टी बांध दी तथा उनके हाथों में तीर और धनुष दे कर गड्ढे में खड़ा कर दिया। सुबच्चन ने तीर मारा तो वह आकाश में चला गया। पछुवा हवा थी। वह तीर को पूर्व की ओर लिये जा रही थी। तीर फिर नीचे आया। पूर्वी हवा झकझोर उठी। पूर्व की ओर मुँह करके मलसांवर बैठे हुए थे। तीर वहाँ से उड़ते हुए आकर सांवर के कलेजे में लग गया। धर्मी सांवर ने नम्रता पूर्वक कहा—पंचो, आज मेरी मृत्यु आ गयी है। इसके बाद वह मुँह से 'सीताराम' का उच्चारण करने लगे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। जिस समय सांवर को तीर लगा, गाय का उदर फट पड़ा। उसने दूध की धार मारना शुरू कर दिया। वंध्या गाय का थन सूख गया। लाश बोहा में तैरने लगी। कोल पश्चिम दिशा में पशुओं को हांकने लगे।

पर बोहा उन्होने नही छोडा। संवरू का प्राण पखेरू उड गया। कोल तमाशा देख रहे थे। धर्मी सांवर का प्राण फिर उनके शरीर में वापस आ गया। उनकी मिट्टी नम्रता पूर्वक बोल उठी। उन्होंने कहा—ऐ वीर कोलों, हमारा कहना मानो। तीनो भुवन उलट जाय पर बोहा की गाये बोहा से ऐसे नही जायेंगी। तुम लोग मेरा सिर काट कर धनुष मे लटका लो। उसे लेकर आगे-आगे पीपरी भागो। पीछे से लक्ष्मी गायें चली जायेंगी। ऐसा कहते हुए सवरू का प्राण इन्द्रपुरी मे चला गया। कोलो ने उनका सिर धनुष मे लटका लिया। आगे-आगे कोल चडार चले। पीछे से गायें दौडी जा रही थीं। वे पीपरी मे प्रवेश कर गयीं। कोलो के यहाँ विहार करने लगीं।

इधर हल्दी का हाल सुनिये। यहाँ लोरिक दाना समय कचहरी करता था। तख्त पर स्नान करता था। जमुनी के घर जाकर मद पीता था। उसकी गोद मे जाकर सोता था। वह वहाँ आनन्द कर रहा था। यहाँ गउरा-गुजरात मे मजरी पर विपत्ति पड गयी। जो मजरी घटे-घटे पर कपडा बदलती थी उस पर ऐसी विपत्ति आ गयी कि घूरो की लताएँ बटोर कर, पैबन्द जोडकर वह तन ढकने लगी। उसको कूटने पीसने का काम भी नही मिलता था। उसकी विपत्ति का अन्त नही था। वह हर समय रक्त के आँसू गिराती थी। उसने कहा—हे दैव, हे नारायण, तुमने भाग्य में क्या लिख दिया? मैं कितने दिनो तक गउरा मे विपत्ति भोगूंगी। मजरी झख रही थी। उसके पेट मे गर्भ के लक्षण दिखाई पडते थे।

अब गउरा का हाल सुनिये। उसको एक रात दाना पानी नहीं मिला। प्रातः काल वह उठी तथा नाई के घर चली। उसके दरवाजे पर दुखी होकर बैठ गयी। नाई से बोली—गागी, तुम सुनो। हमारा तुम्हारा बहुत दिनो का साथ है। मेरे स्वामी के तुम बडे प्रिय थे। उनके कारण तुम्हारे पास गाय भैंसो का झुण्ड जमा हो गया। आज तुम इस गाँव मे हो। मेरे ऊपर गउरा मे विपत्ति आ गयी है। वे हल्दीपुर मे हैं। उनका पता नहीं चलता तुम गोरोचन लेकर हल्दी पहुँचा दो। यहाँ की विपत्ति लोरिक को समझा दो। शीघ्र ही अहीर गउरा गुजरात आयेंगे फिर मेरा दिन लौट आयेगा। मैं तुम्हारा मान रखूंगी। गागी, तुम गउरा की विपत्ति देख रहे हो। तुम जाकर उनसे समझा कर यहाँ की विपत्ति कह दो। कह दो कि मजरी के गले मे जो नवलखा हार सुशोभित हो रहा था वह कोलो के घर पहुँच गया है। छाती पर पैर रख कर उन्होने हार, तथा भारी करधनी ले ली। ऐसा दिन आ गया है कि वह हार कोलिनो के गले मे चमक रहा है। गागी मजरी के घर आया। मजरी ने कोरा कागज निकाला। हाथ मे कलम और दावात ली तथा अपनी विपत्ति लिखने लगी। पत्र लिखकर उसे लपेट दिया। गागी ने उसे हाथ मे उठा लिया। गागी पूर्व की ओर तेजी से चला। रास्ते मे उसने कही विश्राम नही किया। चलते-चलते वह हल्दी पहुँचा। वह लोरिक का घर पूछते जा रहा था। गाँव के लोगो ने घर बता दिया। नाई जमुनी के घर गया। अहीर कचहरी के दरबार मे गया हुआ था। दरवाजे पर नाई को देखकर चनवा दौडकर वहाँ आ गयी।

कर

उसे ले गयी और प्रेम से उसे बैठा दिया। वह नाऊ से हाल चाल पूछने लगी। मेरे पिता सहदेव कैसे हैं ? मेरे भाई कैसे हैं ? मेरी माँ सेल्हिया कैसी हैं ? मेरी ससुराल के लोग कैसे हैं ? मेरी सास खोइलनि कैसी हैं ? मेरे भसुर सांवर कैसे हैं ? नाई गांगी ने कहा—गउरा गाँव में कुशल है। वहाँ के सभी लोग आनन्द से हैं। अहीर के यहाँ कुशल नहीं है। उसके घर मुसीवत आ गयी है। सारी बातें लिखकर मंजरी ने जो पत्र दिया था उसे नाई अपने पास रखे हुए था। उसने चनवा से कहा—मलकिन, गाँव व घर का समाचार अच्छा है। अहीर के घर कुशल नहीं है। मल सांवर मार डाले गये हैं। सारी गायें हर ली गयी हैं। नरानापुर गाँव कोलों से मिल गया है। गाँव के उमराव उनसे मिल गये हैं। गढ़ गाजन के तुर्क भी मिल गये हैं। गढ़ पीपरी के कोल-चंड़ार सभी ने मिल कर बोहा पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने सुभग सरदार सांवर को मार डाला। सारे घर को लूट लिया। लोरिक के घर में विपत्ति आ गयी है। खोजने पर भी लोगों को कूटने-पीसने का काम नहीं मिल रहा है। वेश्या चनैनी ने यह सुना। उसने कहा—नाई मेरी बात सुनो। जो बात तुमने मुझसे कही है वे मेरे स्वामी न जानने पावें। मैं तुम्हें बहुत मछली भात खिलाऊँगी तथा तुम्हारी विदाई अच्छी तरह करूँगी। गांगी नाई ने कहा—मलकिन, मैं लोरिक से क्या कहूँगा ? तुम मुझे वे बातें बता दो। वेश्या चनैनी ने नम्रता से कहा—गांगी, नाई की छत्तीस बुद्धि होती है। तुम कोई अपना ज्ञान फैलाओ। गांगी हजाम ने कहा मलकिन, इस समय मेरी छत्तीस बुद्धि बेकार हो गयी है। मुझमें एक भी बुद्धि नहीं रह गयी है। चनइनी ने कहा—जिस समय मेरे पति तुमसे पूछें तुम पूरा समाचार देना। जब भाई सांवर का समाचार पूछें तो उन्हें समझा देना कि वे कुशल से हैं। बकेन गायें भी ठीक हैं। कहना—भइया के बेटा उत्पन्न हुआ है। बधाइयाँ बज रही हैं। लोरिक ने जैसा बोहा छोड़ा है वैसा ही एक और बन बया है। बोहा में इतनी गायें हो गयी हैं कि स्थान की कमी पड़ गयी है। चनइनी की यह बात गांगी ने स्वीकार कर ली। नाई के लिए वह मीठा जल लायी। बाजार में उसके लिए मछली खरीदने गयी। उसने दाल, भात, तरकारी बनायी। ऊपर से मछली तैयार की। इधर बारह बजा। अहीर की कचहरी उठ गयी। अहीर जमुनी के घर गया। तख्त पर स्नान किया। मचिया पर बैठकर जमुनी लौंग और मिर्च का दारू उड़ेलने लगी।

नशा खाकर अहीर घर के लिए चला। जब घर के द्वार पर खड़ा हुआ तो अन्दर गंगिया बैठा हुआ था। अहीर की नज़र उस पर पड़ी। वह दौड़ा। गंगिया उसे पहचान कर खड़ा हो गया। अहीर उसे जी भर कर आशीर्वाद देने लगा। गंगिया, तुम अजर अमर रहो। तुम लाख वर्ष तक जीओ। जैसे गंगा का जल बढ़ता है वैसे ही तुम्हारी आयु बढ़े। तुम गउरा का समाचार बताओ। गउरा के लोग कैसे हैं। मेरे धरमी भैया कैसे हैं। –

भावार्थ—(३६०१—३८००)

मेरी मैया खोइलनि कैसी है ? काका कठईत घर पर कैसे हैं ? बकेन गायें

कैसी हैं। तब गागी हजाम बोला—गउरा गाँव मे कुशल मङ्गल है। गउरा के सभी लोग सकुशल हैं। तुम्हारो लक्ष्मी गाये कुशल हैं। धरमी को पुत्र पैदा हुआ है। बोहा मे आनन्द और बधाई हो रही है। उसने कहा—तुम बहुत कम गाये छोड कर आये थे। अब उनकी सख्या बहुत हो गयी है। जब एक बोहा में गायें नहीं समा सकी तो धरमी ने दूसरा बोहा बनाया है। एक ही कुशल नही है। मजरी ने दूसरा पुरुष कर रखा है। लोरिक यह सुन कर मन में मुस्कराया। धरमी भाई कुशल हैं। हमारे बछडे कुशल से हैं। बोहा की लक्ष्मो कुशल से हैं। गउरा के लोग आनन्द से हैं। बुजरी, मेरी औरत चली गयी। हमने दो औरतो को रखा है। जब मैं लौट कर वापस जाऊँगा तो विवाहिता के साथ रगरेली करने वाले पुरुष को देखूगा। इधर भय से गागी का प्राण काँप रहा था। मैंने बातो को इधर उधर कर दिया। कोई आ जाय और कही सच्ची बात न कह दे। जब अहीर सब बाते सुनेगा तो मेरे शरीर को काट डालेगा। नाई डर रहा है। उसने लोरिक से कहा—मालिक मेरी बात सुनिये। हमारे देश मे सूखा पडा हुआ है। खोजने पर भी चारा नही मिलता। तुम मेरे बाल बच्चो के लिए आहार जुटा दो। मैं कल के दिन यहाँ नहीं ठहरूँगा। मैं गउरा जाऊँगा। अहीर लोरिक ने कहा—मेरे नाई गागी सुनो। तुम आज ही मेरे घर आये हो। तुम कल हल्दी मे रुक जाओ। कल तुम्हें लेकर बाजार चलूँगा। तुम्हारे लिए कुछ सामान बनवाऊँगा। परसो सवेरे उठ कर तुम चले जाना। लोरिक की बात हजाम ने मान ली। उसको भोजन बनवा कर उसने खिलाया, बडा सम्मान दिया। प्रात काल होते ही उसको शहर मे ले गया। उसके शरीर के लिए कम्बल दिया। फिर कुर्ता बनवाया। धोती का जोडा दिया। हजाम ने झोली मे सोना और द्रव्य कस कर भर लिया। नाई का घोडा लद गया। लोरिक ने उसे रास्ता बता दिया। नाई घोडे पर बैठ गया। वह पश्चिम की ओर चला। हल्दी की अन्तिम सीमा आयी। राजा वहाँ दल बल के साथ कुर्सी पर बैठा हुआ था। तीन चार नौकर थे। राजा ने निगाह उठा कर देखा। नाई ने कौन सी बात बता दी है कि अहीर को इतनी प्रसन्नता हो गयी है। उसने नाई को इतनी बडी बिदायी दी है जैसे देश मे विवाह का उत्सव हो रहा हो। राजा ने नौकरो को दौडाया। उन्होने घोडे का लगाम पकड लिया। सोनवा नाइन ने गगिया से पूछा—तुम ने कौन सी शुभ बाते बतायी हैं कि लोरिक तुम से प्रसन्न हो गया है। उसने इतनी बिदायी दी है। वह नाई से पूछती रही, किन्तु नाई चुप्पी साधे रहा। उसने मुँह से आवाज नही निकाली।

अब शोभा का हाल सुनिये। उसने जदुआ बारी को हुक्म दिया। तुम सोलह सौ बैलो को हल्दी जाने के लिए लदवा दो। फागुन का महीना था। गेहूँ तथा जौ कट रहा था। शोभा ने अपने बैलो को हल्दी के लिए छोड दिया। बैलो ने हल्दी म धूल उडा दी। वहा के किसान फूट फूट कर रोने लगे। धरती पर सिर
उन्हाने लोरिक से कहा—लोरिक तुम बडे शक्तिशाली थे। तुम से अ

शाली नहीं था। न जाने कहाँ से आ कर यह जबर्दस्त राजा टिका हुआ हैं। उसने सोलह सौ बैलों को हल्दी की सीमा में हाँक दिया है। बैलों ने पके हुए गेहूँ और गोजई को धूल में मिला दिया है। हम अपने बाल-बच्चों को कैसे जिलायेंगे। तुम्हारा लगान कैसे देंगे ? लोरिक सब कुछ ध्यान से सुन रहा था। प्रजा ने पुकार की। अहीर अपनी चाँदनी से उतरा। उसने प्रजा से कहा—तुम लोग हल्दी में चल कर बैलों को हाँको। मैं भी साथ में चल रहा हूँ। वह कौन सा जबर्दस्त राजा है, मैं देखूंगा। लोरिक हल्दी के सागर पर गया। वह बैलों को हँकवा रहा था। फिर उसने अपनी नजर दौड़ायी। उसने देखा कि सामने घोड़ा बँधा हुआ है। अहीर हार कर उसके पास गया। वह आश्चर्य में पड़ गया। उसको ज्ञान हुआ। यहाँ का राजा शक्तिशाली है। गउरा से जो नाई, हजाम आया था, उसकी मैंने विदायी की। वह घोड़ा यहाँ बांसवारी में बँधा हुआ है। लगता है इस राजा ने नाई को मार कर फेंकवा दिया है। लोरिक और पास गया और धीरे से बोला। भैया परदेशी सुनो। किसके बलबूते पर तुमने हल्दी में धूल उड़ा दी है ! शोभा बोला कि मैंने अपने बल-बूते पर हल्दी को धूल में मिला दिया है। बातों बातों में दोनों में झगड़ा हो गया। बात करते करते वे बैलों के पास पहुँच गये। तब नायक मुस्करा उठा। शोभा नाई हँस पड़ा। उसकी बत्तीसी खिल गयी। तब लोरिक शक्ति आजमाने की बात छोड़ दी। दोनों मर्द मिल गये। फूट फूट कर रोने लगे।

अब वहाँ का हाल सुनिये। शोभा नायक ने कहा। मेरे लोरिक भाई सुनो। मेरी बात मानो। गंगिया गउरा से आया। हल्दी में तुम्हारे घर ठहरा। न जाने घर में कुशल मंगल का क्या समाचार उसने दिया—कि तुम्हारे शरीर में प्रसन्नता छा गयी। तुमने उसको इतनी विदायी दी। मैंने उसका घोड़ा ले लिया है। तब अहीर ने कहा—संगी, तुम मेरी बात सुनो। नाई हरामी है उसने कहा है कि गउरा गाँव में कुशल है ! गउरा गाँव के लोग, खोइलनि, मेरे काका, भइया संवरू सब कुशल से हैं ! मेरी गायें ठीक हैं। संवरू को बेटा पैदा हुआ है। बोहा में बधाई बज रही है। मैं एक ही बोहा में गायें छोड़ कर आया। वहाँ बहुत गायें बढ़ गयी हैं। धरमी वहाँ घूम घूम कर दूसरे बोहा की निगरानी करते हैं ? दो-दो बोहा में गायें एकत्र हो गयीं। घर में बधाई बज रही है। उसने मुझसे कहा एक ही कुशल नहीं है कि मंजरी ने दूसरा पुरुष रख लिया है। लोरिक ने कहा—नाई ने मुझसे कहा है कि धन-जन सभी सुखी हैं। मेरी बुजरी विवाहिता चली गयी है। उसने दूसरा विवाह किया है। मैं चल कर उसके पुरुष को देखूंगा। शोभा ने उसे समझाया। संगी, वीर लोरिक सुनो। तुम्हारा घर नष्ट हो चुका है नरानापुर गाँव और उसके उमराव मिल गये। गढ़ गाजन के तुर्क मिल गये तथा पिपरी के कोल चंड़ार मिल गये। चारों दलों ने एक होकर एक परात में खाना खाया तथा बोहा पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने सुभग सरदार सांवर को मार डाला। गउरा में सब कुछ विपरीत हो गया है। सारी गायें नष्ट हो गयी हैं।

मंजरी जब खेत मे जाती थी तो घटे-घटे पर पुराने कपडे बदलती थी। उसको अब कपडे नही मिलते। आज वह नगी और कपडो के बिना है। वह पुराने कपडे घरो से बटोरती है और पैवन्द जोड कर उनको पहनती है। बारह मन का मूसल उसके हाथ मे घिस गया है। गउरा मे कही कुटौनी पिसौनी का काम भी नही मिलता। तुम्हारी विवाहिता दाने दाने के लिए मर रही है। यह सुन कर अहीर लोरिक का हृदय चीख उठा। वह हल्दी मे डूबने लगा। वह चाँदनो पर चढ गया। कचहरी मे लोग बैठे हुए थे। जाकर अहीर ने कहा पचो, राम राम बोलो। मेरे घर भारी आपत्ति आ गयी है। मेरा गउरा गाँव लुट गया है। गउरा का सारा धन और पूँजी लुट गयी है। कोल चडारा ने उसे बाँट कर खा लिया है। मेरी विवाहिता जो हमेशा नौलखा हार पहनती थी, उसका हार पिपरी की कोलिनो के पास पहुँच गया है। उसकी छाती पर पैर रख कर कोलो ने छीन लिया है। दुर्दिन आ गया है, कोलनियो के गले मे हार सुशोभित हो रहा है। अहीर ने कचहरी मे ऐसी बात कही। हल्दी के लोग वहाँ एकत्र हैं। उसने कहा हिन्दुओ, राम नाम धारण करो। जो तुर्क हैं वे सलाम करे। मेरे घर पर मल सावर मारे गये हैं। मेरी सारी बकेन गायें हर ली गयी हैं। मैं जाकर भाई का बदला लूगा, वैर साधूगा। तभी मेरे कुल की प्रतिष्ठा रहेगी। कोलो से मेरा सघर्ष होगा। जिसको राम विजय देगा वही प्राप्त करेगा। मैं जाकर पिपरी मे जूझ जाऊँगा। हर दिन का झगडा समाप्त हो जायगा और कही वहाँ से जीवित लौटा तो अडार की सारी गायो को वापस कर लूगा। जब उनको अपनी जगह पर स्थिर कर लूँगा तब फिर हल्दी वापस आऊँगा। लोरिक ने प्रजा से सारी बातें कही। वहाँ से उठ कर घर आया। उसी समय अस्तबल मे गया जहाँ घोडा मगर बँधा हुआ था। उसने उसकी जीन कसी। मुख मे लगाम डाला। उसके बाल मे मोती गुथवा दिये। पैर मे नूपुर बाँधा जिसकी आवाज साठ कोस तक जाती थी। मस्तक मे कवच बाँधा जिस पर गोलियो के निशान चूक जाते थे। घोडे का लगाम उसने छोड दिया। विवाहिता से उसने बात तक नही की। वह घोडे पर कूद कर बैठ गया। घोडा धरती छोड कर आसमान मे उडने लगा।

भावार्थ—(३९०१—४०१३)

वह दिन भर चलता था। शाम को वह हल्दी मे चू जाता था। वीर अहीर लोरिक ने कहा—मगर, तुम मेरी बात सुनो। तुम दिनभर चलते रहे फिर तुम हल्दी मे आ गये। मगर घोडा ने तुरन्त कहा— लोरिक, मदिरा ले लेकर तुम बहुत दिनो तक जीवन्त रहे मस्त रहे। जमुनी के पैर के नीचे सोते रहे। पर तुमने जमुनी से बात भी नही की और तुम गउरा की ओर चल पडे। जमुनी का जादू तुम्हें खीच रहा है। तुम्हें हल्दी के बाजार मे पटक रहा है। तुम दिन भर [illegible] शहर में उडते रहोगे, शाम को जमुनी के घर आ जाओगे। अब [illegible] सुनिए। अहीर का घोडा चला तथा जमुनी के पास आ गया। [illegible] पर बैठी हुई थी। दुकान पर सामान बेच रही थी। अहीर [illegible]

गया। उसके चरण पकड़ लिये। कहा—जमुना, तुम मेरी बात मानो। मैं हल्दी जा रहा हूँ। मैंने सुना है कि मल सांवर मारे गये हैं। मेरी सारी बकेन गायें हर ली गयी हैं। कोल सारे पशुपक्षियों को खा गये। गुड़-अन्न का संग्रह तथा सभी धन और पूँजी वे लूट कर खा गये। आज मेरे घर में कोई सहारा नहीं है। इसीलिए घर जाने की मैं तैयारी कर रहा था। तब जमुनी कलवारिन ने कहा— हे मेरे स्वामी, हे सुखनंदन, हे मेरे सिंदूर, मेरी बात सुनो। तुम मेरे घर में टिके हुए थे। तुमने यहाँ झगड़ा मोल ले लिया। शत्रु तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम्हारे जाने की बात देख रहे हैं। यदि कोई मुसीबत आ जायगी तो हम लोगों की बड़ी यातना होगी। मुझसे लोग कहेंगे बुजरो तुमने अहीर जमाई को अपने यहाँ टिका रखा था। इस देश का ध्वंस करा दिया। लोग बड़ी बड़ी माँग करेंगे। मैं कुछ कहने में असमर्थ हूँ। वीर लोरिक ने कहा—ऐ मेरी विवाहिता, तुम मेरी बात सुनो। मैं पीपरी में जाते ही युद्ध करूँगा। मैं पीपरी के कोलों को मार डालूंगा फिर बकेन गायों को खदेड़ लाऊँगा। जब तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति आयेगी या कोई शुभ होगा। तो गउरा गुजरात में ठहर का भोजन छोड़ कर मैं हल्दीपुर पाल आ जाऊँगा और यहाँ हाथ धोऊँगा। जमुनी ने लोरिक को छुट्टी दे दी। लोरिक घोड़े पर कूद कर चढ़ गया। वेश्या चनइनी यह बात सुन रही थी। वह महल से बाहर निकली। राजा के अस्तबल में गयी। बेलसिया घोड़ी को खोल कर उस पर उसने आखर और पाखर (घोड़े का साज और सामान) सजा दी। मुँह में लगाम लगा दिया। फिर उसने अपना वस्त्र छोड़ कर मर्द का वेश बना लिया। उसने अंगरखा धारण किया पैर में रेशमी पैजामा पहना, दिल्ली शाही जूते कसे, हाथ में तलवार ली। फिर जमकर घोड़े पर बैठ गयी। चनवा के आसन पर बैठते ही घोड़ी उड़ चली। फिर उसने सीधे चलना शुरू किया। अहीर के सामने जब घोड़ी आ गयी तब उसने अपने मन में कहा—यह कहाँ का शूरमा है। यह साथ साथ चल रहा है। क्षत्रिय के रूप में है। लोरिक ने उसे झुककर प्रणाम किया। चनवा मुसकराने लगी। उसने दो धारों वाली तलवार निकाली। लोरिक आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे भाग्य में क्या लिख दिया? मैं वेश्या के चक्कर में पड़ गया। मेरा सारा धन गायब हो गया। वीर लोरिक अपने मन में सोच रहा था। चनवा तुम्हारी जाति वेश्या की है। तुम्हारा संपूर्ण परिवार वेश्या का है। मैं तुम्हारे मत में आ गया। मेरे गउरा में सारा विध्वंस हो गया। चनवा पर्दे में सब कुछ सुन रही थी दोनों घोड़ा उड़ाये चले जा रहे थे। कुछ समय बीतने के बाद वे बोहा में चू गये।

□□

हल्दी से लोरिक की बोहा में वापसी
पीपरी का युद्ध—लोरिक की मृत्यु

भावार्थ—(१—३००)

अब वहाँ का हाल सुनिये। हल्दी से सारा सामान लद गया हाथी और घोड़े वहाँ से चले। तम्बू और कनात सब सज गये। महुअरि ने सारी सामग्री लदवा दी। थोड़े समय में हल्दी से सब लोग बोहा पहुँचे। बोहा में तम्बू और कनात ताने जाने लगे, डेरा डाल दिया गया। महुअरि ने हल्दी के उर्दू-बाजार का तम्बू दिया था। अहीर का बाजार वहाँ लग गया। रंग-रंग के सौदे, क्रय-विक्रय की सामग्री, वहाँ सजा दी गयी। अहीर लोरिक ने कहा कि बड़ा तम्बू छोड़ दो। वह तम्बू मालिक का है। वहाँ लोरिक का पलंग डाल दिया गया। वह वेश्या के साथ बैठा हुआ था। घोड़ा बोहे में बाँधा गया था। अहीर उठा और घूम-घूम कर बोहा देखने लगा। कहने लगा—मेरी तकदीर फूट गयी। मेरी गायें किस देश में चली गयीं। मेरे भाग्य में भारी विपत्ति लिखी हुई है। अहीर यही दिन-रात सोच रहा था। अब आगे का हाल देखिये। लोरिक ने कहा—ऐ सिपाहियो, ऐ नौकरो, तुम लोग गउरा नगर में चले जाओ। वहाँ डुग्गी पिटवा दो। 'गउरा में जितना मक्खन और दूध है उसको लेकर लोग बोहा आवें। वहाँ पूरब का राजा आया हुआ है। दूध और मट्ठा की खोज हो रही है।'

गायक राम का नाम सुमिरन करता है। तुम अपने संगी और समान उम्र वालों को न भूलो। दुर्गा माँ को मत भूलो। हे दुर्गा, मैं तुम्हारे ही बल और पौरुष के दम पर तुम्हारा नाम हरदम लेता हूँ। माँ तुम मेरे छोटे प्राण को न बिसारो। मुझे रास्ते पर लगा दो। अब वहाँ का हाल सुनिये। गउरा बारह पत्लियों का है। वहाँ तिरपनवें बस्ती में अहीर बसे हुए हैं। वहाँ घर घर में डुग्गी पीट दी गयी। कि लोग मट्ठा महकर सवेरे चलें। मजरी ने अपनी सास से कहा—मेरी सास, सुनिये, जरा आप कहीं से थोड़ा मट्ठा खोज लाइये। आधे आधे मुनाफ़े पर मट्ठा लाइये। जब बोहा से मैं अधिक पैसे लाऊँगी तो पैसे में आधा-आधा बाँट लेंगे। बिक्री में आधा हमारा होगा। बाल बच्चों के साथ हम दरवाज़े पर बना कर

करेंगे। सवेरे बहुत तड़के अहीरिनें घर घर में मट्ठा मह रही थीं। मंजरी सवेरे जाकर एक बर्तन उठा लायी और उसे अपने घर में रख लिया। सब लोगों ने हाथ मुँह धोया, कुल्ला किया, जलपान किया। सभी ग्वालिनें दूध, मट्ठा, दही तथा मक्खन लेकर बोहा चलीं। नदी पर पहुँच गयीं। लोरिक कुर्सी पर बैठा हुआ था, गोपियों का हाल देख रहा था। सभी मट्ठा ले लेकर पार जा रही थीं। पहले सभी ग्वालिनें चढ़ गयीं। मंजरी भी ऊँचे बैठ गयी। उस समय वीर मर्द लोरिक ने सिपाहियों से कहा—आगे से गोपियों में दस को छोड़ दो तथा पीछे से पाँच को छोड़ दो। बीच में जो चिड़िया है उसका मट्ठा उठा लाओ।

अब वहाँ का हाल सुनिये। सब लोगों का मट्ठा ले लिया गया। सब का मट्ठा बिक गया। मंजरी ने अपनी डाली उतारी चार चार अंगुल का पैबंद पहने हुए वह घूम रही थी। वह चारो ओर घूमने लगी। तब वेश्या चनैनी ने कहा—ऐ मेरे स्वामी, ऐ मेरे सुखनंदन, ऐ मेरे मुकुट, मैं क्यों न इस गोपी का मट्ठा ले लूं और दाम दे दूँ। लोरिक ने कहा—नीचे सोना या द्रव्य रख दो तथा ऊपर रोकड़ रख दो। उसके ऊपर चावल रख दो। मिट्टी का बर्तन निकालकर उसमें अच्छा बर्तन रख दो। गोपी ग्वालिन वहाँ आयेगी। अपनी डाली उठा ले जायगी। चनवा ने डाली में पर्याप्त चावल भर दिया, सोलह प्रकार के द्रव्य उसमें रख दिये। फिर उसके ऊपर दस पाँच सेर चावल भर दिया ताकि द्रव्य छिप जाय। अपनी डाली लेकर मंजरी ने बेवरा नदी के पार गयी। केवट ने उसे पार उतार दिया। सभी ग्वालिनों ने आगे जाकर आपस में परामर्श किया कि एक दूसरे की टोकरी और बिक्री को देखें। सब ने अपनी टोकरियाँ उतारीं और जाँच पड़ताल शुरू हुई। जब मंजरी की डलिया देखी गयी, और चावल में हाथ डाला गया तो उसमें से सोने के रुपये मुट्ठी में निकले। जब टोकरी में झंकार हुई तब गोपियों ने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने भाग्य में क्या लिख दिया। मंजरी ने इतने दिनों तक अपना सत कायम रखा पर बोहा में जाकर उसने अपना सत गंवा दिया। सभी ग्वालिनें गउरा चली आयीं। मंजरी को पास से जाकर देखने लगीं। उसके घर में लोरिक का जन्म हो चुका था। उसकी गोद का लड़का अभी छोटा और कोमल था। बुढ़िया खोइलनि नाती को टाँगे हुए थी। तब तक ग्वालिनें बोहा से वहाँ पहुँच गयीं। बुढ़िया खोइलनि से वे कहने लगीं—मंजरी ने इतने दिनों तक सत रखा। आज बोहा में जाकर उसे गंवा दिया। जब बुढ़िया खोइलनि ने यह सुना तो हाथ में कोरा बाँस लेकर मंजरी को खदेड़ा। सहदेव की बेटी जिसका नाम दावन मंजरी था, बोली—सास, यदि तुम्हारा मन ऐसे नहीं मानता तो तुम कड़ाही चढ़ा दो। उसमें बिक्री का सारा धन रख दो, सारा रोकड़ रख दो। यदि मैंने सत गवाँ दिया है तो मेरा हाथ उसमें जल जायेगा। अगर मुझमें सत है, सत्पुरुष का सत्य है तो (खौलती) कढ़ाही से मैं सारा धन निकाल लूंगी। खोइलनि ने कड़ाही चढ़वा दी। उसमें

बिक्री वाली सारी चीजे छोड दी गयी। कडाही की पेंदी मे आग तेज हुई। उसमे दो एक रुपये फेंक दिये गये। मजरी कडाही की ओर झुकी। उसने कहा—'हे देव हे नारायण, तुमने मेरे भाग्य मे क्या लिख दिया। यदि मैं एक ही बाप की बेटी हूँ, यदि एक ही पुरुष की स्त्री हूँ। यदि उसके सत धर्म पर स्थिर हूँ तो मैं रुपये निकाल लू।' मजरी ने कडाही मे हाथ डाल दिया। रुपयो की खोज की। उसके हाथ मे आग नही लगी। सभी ग्वालिनो का मन उदास हो गया। खोइलनि ने फिर मट्ठा ला दिया। मंजरी को फिर बोहा भेज दिया। सारी ग्वालिनें चली, मजरी पीछे पीछे चली। दूसरे दिन जब बेवरा का तट आया तो आधी-तिहाई ग्वालिनें उस पार चली गयी। अहीर ने केवट से कहा—तुम मेरी बात सुनो। तुम सभी ग्वालिनो को पार उतारो जो सबसे पीछे आ रही है, उसको पार मत उतारो। जब वह नाव पर अपनी टोकरी रखे तो तुम उसे जमीन पर उतार दो। उसको नाव पर मत चढने देना। वह अपनी टोकरी पार न लाने पावे। अहीर लोरिक ने यह बात वहाँ कह दी। भीमली नाव इस पार खेने लगा। जब मजरी नाव पर बैठ गयी तब उसका हाथ पकड कर नाव से उतार दिया। उसने कहा—मैं तुझे पार नही करूँगा। राजा की आज्ञा है। मजरी रोने लगी। रक्त के आँसू गिराने लगी। आज बहुत दिनो पर शुभ-लक्षण दिखाई पड रहे थे। पर दुख ने ऐसा पीछा कर लिया है। शरीर पर ग्रह अभी लगा हुआ है। मजरी रो रही है, और अपने सत का सुमिरन कर रही है। कह रही है—'मैं गउरा की गउराइनि का स्मरण करती हूँ, बोहा की भवानी दुर्गा का स्मरण करती हूँ जो सब दिनो की पूजमान हैं। यदि मेरे अदर 'सत' शेष है तो मैं नदी पार कर जाऊँ।' उस समय दुर्गा प्रगट हुईं। बीच मे उन्होंने कँकालो का दो दल खडा कर दिया। नदी की धारा दोनो ओर रुक गयी। मजरी टोकरी लेकर बोहा मे चली गयी। जैसे ही उसने मट्ठा उतारा, लोरिक के सिपाही छूटे। कहा—तुम अपनी टोकरी लिये चलो। मालिक तुम्हारा मट्ठा रोज रोज खायेंगे। मजरी ने कहा—भइया सिपाही सुनो। मेरे एक छोटा लडका है। उसने हाथ मे रोटी लेकर उसको इस टोकरी मे गिरा दिया है। यह मट्ठा राजा के योग्य नही है। तुम दूसरी ग्वालिन का मट्ठा वहाँ ले जाओ। बहुत कहने पर वह बात मान गयी तथा बुलावा मान कर चलने को तैयार हो गयी। आगे आगे राजा के सिपाही चले। पीछे से इधर उधर नजर दौडाती हुई मजरी चली। उसने दरवाजे पर मट्ठा रख दिया फिर पीछे हट गयी। इधर लोरिक का हाल सुनिये। नीचे बिजली की तलवार रखी हुई थी उसने उसे द्वार पर लटका दिया।

अब वहाँ का हाल देखिये। वीर लोरिक ने चनवा से कहा—विवाहिता, उस मजरी से बात कर लो। सूवा उसका मट्ठा खरीदेगा। मजरी ने विनम्रता पूर्वक कहा—वेश्या, मुझे कुछ नही चाहिए। बस, मुझे यह बिजली की तलवार मिल जाय। वह अपने मन मे झख रही थी। जैसी हमारी बिजली की तलवार थी तलवार है। शायद इस सूबे से मेरे स्वामी की लड़ाई हुई। उसने

जबर्दस्ती मार डाला। उनकी हड्डी और माँस को ले लिया। नम्रता पूर्वक तब लोरिक ने कहा— ग्वालिन सुनो। तुम इस तलवार को उतार कर ले जाओ। मंजरी उसी क्षण तलवार के पास गयी। हाथ में बिजली की तलवार लेकर वह अलग जाकर खड़ी हो गयी। उसने कहा—ऐ पूर्वी राजा, मैं बोहा में लकड़ी जुटाऊँगी फिर बेवरा के तट पर उसे सजाऊँगी। बेवरा में स्नान करूँगी। यदि मैं एक बाप की बेटी हूँगी। यदि एक पुरुष की स्त्री हूँगी तो हे ब्रह्मा, तुम सरजू से संगरा नामक लकड़ी छोड़ देना। मैं उसे लेकर सती हो जाऊँगी। लोरिक इधर माँ दुर्गा का स्मरण कर रहा था। कह रहा था—दुर्गा, सुनिये। मेरी विवाहिता चिता पर चढ़ रही है। आप ऐसी शक्ति बढ़ा दीजिए कि मेरी विवाहिता जलने न पावे। इतना कह कर लोरिक ने नदी पर चिता सजवा दी। उसी समय मंजरी ने तलवार लेकर बेवरा नदी में गोता लगाया। उस दिन केवट भीमलिया रोने लगा। रो रोकर मंजरी के पैर पकड़ने लगा। तुम मेरी आजीविका छोड़ दो।

भावार्थ—(३०१—६०२)

केवट ने कहा—मुझसे गलती हो गयी। किसी के कहने से तुम्हारे साथ मैंने ऐसा व्यवहार किया है। मैं तुम्हें विपत्ति में नहीं डालना चाहता था। राजा ने बोहा में हुक्म दिया। तभी मैंने नाव को उस पार नहीं किया। उसने मंजरी से कहा—यदि मेरे बाल बच्चे मर गये तो तुम्हें कितना पाप लगेगा। मैं मालगुजारी कैसे दूँगा? इधर चिता की आग सुलग गयी। मंजरी उसमें छिप गयी, प्रवेश कर गयी। वेश्या चनवा ने जब यह देखा तो वह आश्चर्य में पड़ गयी, दाँतों तले अंगुली दबाने लगी। कहने लगी—हे दैव, हे नारायण, तुमने मेरे ललाट में क्या किया, क्या लिख दिया? जिसकी विवाहिता जल रही है और जिसके हृदय में तनिक भी दर्द नहीं है, उसकी दृष्टि से हमारी अपहृता की, उढ़ारी हुई स्त्री में क्या गिनती है? हे दैव, हमारी पूछ कौन करेगा? लोरिक वहाँ से कूदा और जाकर उसने मंजरी की कलाई पकड़ ली। उसने ठोकर मारी तथा आग इधर उधर बिखर गयी। मंजरी को लेकर वह तम्बू में प्रवेश कर गया। वहाँ जाकर उससे हाल चाल पूछने लगा। मंजरी ने कहा—हे दैव, हे नारायण, तुमने मेरे माथे में क्या लिख दिया। कल खोइलनि ने मेरे ऊपर विश्वास नहीं किया। आज बोहा में भी ऐसी नौबत आयी। कल से ही राजा उसके पीछे पड़ा हुआ था। आज वह उसको तम्बू में ले गया। बोहा से ग्वालिनों ने जाकर खोइलनि को यह बात बतायी। कल की सी बात आज भी हुई। गुण्डा मंजरी का शरीर खरीद ले गया। तम्बू में वह दिखाई नहीं पड़ी। न जाने वह किस गाँव, किस मुल्क में चली गयी। जब उन्होंने खोइलनि से यह बात कही तो खोइलनि ने नम्रतापूर्वक कहा। हमारा नाम गीदड़ हो गया है। हमारा यह छोटा बच्चा परेशान है। लड़के को लेकर बुढ़िया खोइलनि अजई के घर गयी। कहा—बेटा अजई सुनो। बोहा में लोरिक की

वह हर ली गयी। उसका कुछ पता ठिकाना नहीं है। जब भइया लोरिक यहाँ नही हैं तो ऐरे गैरे सभी लोहा ले रहे हैं, लडाई कर रहे हैं। लोरिक के बल पर तुम्हारे गदहे उपद्रव किया करते थे। उसकी विवाहिता बोहा मे हर ली गयी है। उसका तुम पता लगाओ। शायद कभी अहीर फिर लौटे। तुमसे दो चार बातें पूछे, हाल चाल पूछे। तब तुम कौन सी बात, किसके झगडे की बात बताओगे। तुम कैसे बताओगे कि ऐ चेला, तुम्हारी विवाहिता हर ली गयी है। खोइलनि भी इस बात पर अजयी थू थू करने लगा। ऐ बुढिया मैं बोहा मे नही जाऊँगा। तुम्हारे कार्य का ध्यान नही करूँगा। मैं दौडकर सागर पर गया था। फिर सारा बोहा उजड गया। कोला ने तीर मारा मैं वहाँ से गउरा भाग आया। घर पर मैंने बाण निकलवाया, [redacted] महीने तक हमे गाय का दूध पीना पडा। धोबी इतना कह रहा था पर मन मे यह सोच विचार कर रहा था, हे दैव, हे नारायण, मैं मर्द क्या हुआ! यदि चेला लोरिक गउरा लौट आया तो मैं उसे अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा? जिसकी विवाहिता हर ली गयी है, उस चेले को कौन सा जवाब दूँगा। तब अजई ने नम्रतापूर्वक कहा—ऐ मेरी पत्नी बिजवा, मरी बात सुनो। सारा हाल सुनकर धोबिन ने नम्रता से कहा—सैंया, तुम व्यर्थ मे मर्द हुए। तुम औरत का वेश धारण कर लो, मेरा पोशाक लेकर पहन लो मैं सासड बोहा मे जा रही हूँ। मै अपनी देवरानी का पता लगाऊँगी। फिर गउरा गाव आऊँगी। अजयी ने अपना पोशाक छोड दिया, धोबिन की साडी पहन ली और घर पर बैठ गया। धोबिन ने गोरे बदन पर अगरखा और पैजामा डाल लिया। हाथ मे मजबूत डडा लिया वह ब्यालिस हाथ उछल पडी। जब वह गाँव के बाहर निकली तो वहाँ सेमल का एक पेड मिला। तेजी से कूदकर बिजवा ने सेमल के पेड पर वार किया। पेड टूट कर गिर पडा। धोबी के कानो मे आवाज पडी। उसी समय वह घबराकर बाहर निकला। साडी फाडकर उसने उतार दिया। जाकर उसने बिजवा को हाथ जोडा। फिर बोला—विवाहिता, मेरी बात सुनो। तुम मुझे मेरा पहनावा दे दो। मैं जाकर सब कुछ पता लगाऊँगा। स्त्री जाति होकर जब तुम रण जीत कर आओगी तो मेरे वश का नाम डूब जायेगा धोबी वहाँ से चला। झरिया मैदान के पास गया। वहाँ हाथी, घोडे तथा भेडे चरती थी और जाकर सभी झरने मे पानी पीते थे। अजयी गायो की आड मे गया। फिर एक खोखले पेड मे जाकर छिप गया। प्रात काल हुआ। झुटपुटे मे कौवे शोर मचाने लगे। हाथी और घोडे फिर बोहा मे छूटे। अजयी ने अपनी बर्छी (शाल) लेकर घोडो की पूँछ काट दी। ऊँटो के दोनो कान काट दिये। हाथियो के भी पेट और कान काट दिये। हाथी ऊँची चढाई पर जाते थे पर वहाँ तो एक घडी मे विध्वस शुरू हो गया। लोरिक के पास यह शिकायत पहुँची। मालिक, सुनो। बोहा मे केवल तुम्ही शक्तिशाली थे। तुमसे अधिक शक्तिशाली कोई दूसरा नहीं था। न जाने कहाँ से एक और शक्तिशाली आकर यहाँ टिक गया है कि हाथी और घोडो का सहार हो गया है। सूँड और कान के बिना हाथी और घोडे क्षत विक्षत होकर भाग गये हैं। तब वीर लोरिक हाथ मे तलवार लेकर वहाँ से चला। वह

में घूमने लगा। घूमघूमकर घड़ी घड़ी वह गायों को देखता था। उसने कहा—ऐ बांके लड़ाके, सुनो। तुम मैदान में निकल आओ। जब गुरु अजयी ने यह सुना तो वह खोखले पेड़ से खड़खड़ा कर निकल आया। दोनों में पैंतरेबाजी होने लगी। दोनों एक दूसरे पर वार करने के लिए पास आये। तब गुरु अजयी ने कहा—राजा तुम मुझे मारो जितनी शक्ति हो, तुम लगाओ। तब अहीर ने दुहराकर कहा—राजा तुम मेरी बात सुनो। मैं पहले चोट नहीं करूँगा। पीछे मैं कुछ उठा भी नहीं रखूँगा। मुझे अपने पशुओं को शपथ है। यदि मैं पहले आक्रमण करूँगा तो गाय मारूँगा। अजयी यह सुन रहा था और अपना चक्र फेंकता जा रहा था। लोरिक बच गया तो अजयी उसके पास पहुँचा। लोरिक ओड़न का प्रहार रोक रहा था। जब पहली चोट लगी तो भय से काँप गया। उसने अजयी से कहा—भाई मैं चारों ओर घूम आया। ऐसी चोट किसी ने नहीं की। ऐसी चोट मेरा गुरु अजयी ही करता था। दुनिया में और कोई ऐसी चोट नहीं कर सकता था। जब गुरु अजयी ने यह बात सुनी तो उसने अपना डण्डा खींचकर हटा लिया। दोनों गले मिल कर रोने लगे। लोरिक ने उससे नम्रता पूर्वक पूछा—गुरु अजयी तुम्हारा आक्रमण इतना जबर्दस्त है फिर सरदार संवरू कैसे जूझ गये? अजयी ने तुरन्त जवाब दिया। चेला, संवरू ने गुहार की थी। मैं युद्ध में खड़ा हुआ। पर जब कोलों ने तीर चलाये तो उससे कलेजा बिंध गया। मैं किसी प्रकार घर आया, तीर निकाला। खाने पीने से, गुड़ घी के सेवन से किसी प्रकार जान बची। लोरिक ने कहा—गुरु अजयी मेरी बात सुनो। मेरे सम्बन्धी, हाथ पाँव सहायक कहाँ हैं? गुरु अजयी ने बताया—चेला, नन्हुवाँ जो तुम्हारा चरवाहा था और तुम्हारी लक्ष्मियों की देखभाल करता था, वह गउरा की गली में है। और वह भड़भूजे के यहाँ भाड़ झोंक रहा है।

अब लोरिक का हाल सुनिये। प्रातःकाल बहुत सबेरे उसने नौकरों और सिपाहियों को गउरा जाने का आदेश देकर कहा कि गउरा की गली में भड़भूजे के यहाँ जो नौकर भाड़ झोंक रहा है उसे जा कर कह दो कि जो पूर्वी राजा यहाँ आ कर टिका हुआ है उसने तुम्हें बुलाया है। सिपाही वहाँ छूटे तथा भड़भूजे के दरबार में गये।

अब भड़भूजे का हाल सुनिये। उसने सिपाहियों को समझा कर कहा—मैंने नान्हूँ को जिलाया है। तुम्हारी बातें हमारे कलेजे में लग रही हैं। चाहे कोई भी राजा बुलावे, इनको हम बोहा में नहीं जाने देंगे। जब उसने ऐसा कहा तो सिपाहियों ने नन्हुवाँ को ज़बर्दस्ती पकड़ लिया। उसे खींच कर बोहा ले जाने लगे। चरवाह नान्हूँ बोहा से तम्बू में गया जहाँ अहीर लोरिक था। लोरिक सामने पड़ गया। नान्हूँ देखते ही उसको पहचान गया।

अब चरवाहा का हाल सुनिये। उसकी आँखें लोरिक पर टिक गयीं। लोरिक उठा। तुरन्त प्रश्न करने लगा। कहने लगा 'नान्हूँ चरवाह, मेरी बात सुनो। घर

का कुशल मङ्गल कहो। घर के लोग कैसे हैं। नान्हूं ने नाराज हो कर कहा—'मेरे बहनोई लोरिक सुनो। मैं जिस दिन से बोहा मे टिका हूं, बडी बडी यातनाएँ सहनी पडी हैं। मैं दूध और मट्ठा खाया करता था अब अन्न का पानी (धोवन) मेरे लिए हराम हो गया है। देश मे जब कोई काम नही मिला तब मैं भडभूजे का भाड झोंक रहा हूं। तब मर्द लोरिक ने-कहा—तुम पिपरी चले जाओ और पता लगा लाओ कि गायें कैसी हैं? कितनो गाये बची हैं? चरवाह नन्हुंवा ने कहा—वहनोई, मेरी बात सुनो। जब हम दो आदमी पीपरी कोलो के घर जायेगे तो वे हमे पहचान कर मार डालेंगे। नान्हूं ने कहा—ऐ लोरिक, तुम घर जाओ। तुम्हारी जो एक विवाहिता पत्नी है, उससे भेंट करो। जब वह स्वामी को पहचान नही पायेगी, तब समझना कि कोल चडार तुम्हें पहचान नही सकेंगे। नान्हूं चरवाह पीपरी चला। तेजी से रास्ता नापा, पीपरी पहुँचा, गायो के अडार गया जहाँ कोल-चडार रहते थे। वह गायो के अडार पर बैठ गया। देवसिया ने नान्हूं का रूप देखा और उसे थोडा थोडा पहचान गया। लगता था वह अहीर के वर्ग का है, गउरा से आया है, अहीर की पीठ का है। देवसिया ने मन मे कहा—इससे स्पष्ट रूप से पूछे। (५८५ से ६०२ तक पाठ मे पुनरावृत्ति है)।

भावार्थ—(६०३—८००)

अब नन्हुवा का हाल सुनिये। उसने नम्रतापूर्वक कहा—मेरे ऊपर बहुत भार पडी, विपत्ति पडी। मैं गउरा मे गाये चराया करता था। दोनो समय दूध खाता था। अब मेरे लिए मट्ठा सपना हो गया है। सारी गायें चली गयी। मेरा जीवन दूभर हो गया है। मैंने कहा अब पीपरी चलूंगा। कोलो का साथ करूंगा, गायो का दूध पीऊंगा।

अब देवसी का हाल सुनिये। उसने कहा—'ऐ नान्हूं चरवाह, तुम मेरी बात सुनो। तुम जाति पाति मे रहते तो पीपरी मे रहते। तुम्हारा दल अहीरो का है। हमारा दल कोलो का है।' तब नन्हुंवा ने नम्रता स कहा—देवसी मेरी बात सुनो। मैं जाऊंगा नही। मैं यहीं कोलो मे रहूँगा। उसने जमा कर बात कही। मैं कोल-चडार हो कर रहूँगा। मैं गायो का दूध दोनो वक्त पीऊँगा। कोलो ने नान्हूं को वहाँ स्थान दे दिया। उन्होने आपस मे कहा—जा कर भट्ठी से शराब लाओ नान्हूं को जाति-पाँति मे मिला लो। समय तय हो गया। कोला ने दिन निश्चित कर दिया। उन्होंने भट्ठी चढवा दी। सभी कोल वहाँ पहुँचे। शाम को अलाव पर सभी बैठे। दाने मे भर भर कर दारू पीने लगे। नान्हू भी पास मे बैठा हुआ था, दोना लिए हुए थे। वह दारू अलग रख देता था तथा दाँत से दोना पकडे हुए था। वह झूठमूठ मुंह मे दोना लगाये हुए था। दारू पीने से व्यक्ति नर्क मे जाता है। नान्हूं ने क —चौधरी, मेरी बात सुनो। तुम लोग भोजन परोसो। फिर मेरा भोजन

ने बोतल लिया और कोलों के बर्तन में दारू उड़ेलने लगा। कोलों ने पहले पीया। अलाव के पास वे शोर करने लगे। कुछ इधर लेट गये, कुछ उधर गिर पड़े। नान्हूँ उठा। उसने खोद कर आग को और तेज कर दिया। कोलों का मुँह पकड़ पकड़ कर उन्हें अलाव के पास कर दिया। बहुत से कोल जल गये। नान्हूँ वहाँ से अड़ार पर आ गया जहाँ कल्याणी गाय थी। उसने गाय से कहा—गाय सुनो। तुम्हारा सेवक यहाँ आया हुआ है, बोहा के बीच टिका हुआ है। उसने मुझे यह जानने के लिए पीपरी में भेजा है कि यहाँ कितनी गायें हैं।

कल्यानी गाय ने कहा—'नान्हूँ मेरी बात सुनो।' कोलों के जितने सम्बन्धी थे, उन्होंने गायों को नाथ कर यहाँ हँकवा दिया। कोलों की बेटियों का गौना है। लड़कियों के गौने की शुभ घड़ी सातवें दिन है। उनका एक साथ गौना होगा। सारी गायें एक साथ चली जायेंगी, बिखर जायेंगी। फिर सरदार लोरिक क्या करेगा? हम लोगों का मालिक पीपरी में बाद में आकर क्या करेगा? नान्हूँ वहाँ से उसी क्षण रवाना हुआ, बोहा का रास्ता पकड़ा। और वहाँ आ पहुँचा।

अब लोरिक का हाल सुनिये। वह कुर्सी पर बैठा हुआ था। नान्हूँ उसके पास जा कर बैठ गया। उसने कहा—बहनोई लोरिक सुनो। गायों ने यह बात कही है कि कोलों ने मुहूर्त निश्चय किया है। वे गायों को दहेज में दे देंगे। आज से सातवें दिन कोल गायों को इधर-उधर कर देंगे। जब नान्हूँ चरवाह ने यह बात कही तो लोरिक निराश हो गया। उसने दो नाइयों से नान्हूँ की दाढ़ी और नाखून काटने के लिए कहा। एक ने बँगला शैली में उसका बाल काटा। उसके लिए सारा सामान तैयार हुआ। उसको जोड़े की धोती मिली! देह के लिए कुर्ता और कमीज मिली। उसका शृंगार बन गया। वीर मर्द लोरिक ने कहा—नान्हूँ तुम बोहा में बैठे रहो। मैं जा कर गायों को लौटा लाऊँगा। तब मेरे परिवार की प्रतिष्ठा रहेगी। उसने मंगर को सोने की झूल से सजा दिया। सोने का उसका लगाम लगा दिया। सोने का कवच पहना दिया। स्वयं पगड़ी पहनी जिसमें कलंगी लगी हुई थी। अपने पैरों के शृंगार भी उसने पहन लिये। फिर घोड़े के सिर पर बारह तारों की मोतियों की झालर सजा दी। उसके पैर में नूपुर बाँध दिये। सूर्य की ओर देखा जा सकता है पर घोड़े की ओर नहीं देखा जा सकता। आधी रात ढल जाने पर घोड़ा पश्चिम की ओर तेजी से भागा। फिर मंगर आसमान में उड़ा। लोरिक हवा खाने लगा, हवा में उड़ने लगा।

अब पीपरी का हाल सुनिये। वहाँ ककरउवां कोल आराम से सो रहा था। तब उसकी पत्नी बिरिन्हिया ने कहा—स्वामी मेरी बात सुनो। मैं महल में सोते हुए अजीब सपना देख रही हूँ। लगता है जैसे अहीर पूर्व से लौट आया है। उसका घोड़ा आकाश में नाच रहा है। कोलों ने तीर और धनुष उठा लिया है। घोड़ा टाप मारते हुए आकाश में उड़ रहा है। उसको लेकर लोरिक पीपरी में गिरा है। वह बिरन्ही

से कह रहा है—बिरन्ही तुम सुनो। मैं पूर्व से, हल्दी से यहाँ आ गया हूँ। मेरे गाँव गउरा मे विपत्ति पडी है। मैंने सम्पत्ति और विपत्ति का भोग कर लिया है। बिरन्ही माता मेरा कहना सुनो। मैं दूध और घी का खाने वाला हूँ। मेरे लिए अब मट्ठा भी सपना हो गया है। मेरा जीवन अकेला है। मैं कोलो से मिल कर रहूँगा। दूध आदि खाऊँगा।

मैंने ऐसा सपना देखा है। उसने हमारा मकान छुडवा दिया है। बाण सधान हो चुका है। घोडा लेकर लोरिक पीपरी मे आ गिरा है। मैं आँगन मे खडी हूँ। तब बिरन्ही ने कहा है—भैया मेरी बात मानो। तुम्हारी जाति अहीर की है तुम अपनी बुद्धि से काम लो। हमारी जाति बेवकूफ कोलो की है। तब लोरिक ने होशियारी से यह बात कही है। भाई कोल चडारो, यह बात सुनो मैं अपनी जाति पाति वापस ले लूँगा। मेरा जीवन बचा हुआ है। बिरन्ही को उसकी बात पर विश्वास हो गया है। अहीर बच गया है, पीपरी गाँव मे युद्ध के लिए आ गया है। वह गायो पर पहरा डाल देगा। लोरिक नम्रता पूर्वक कह रहा है। बिरिन्हिया सुनो। मैं तुम्हारे हाथ मे आ गया हूँ। घोडे को तुमने मरवा दिया है तुम उसको जीवित कर देती तो उसे पीपरी मे बँधवा देता। यदि कही गाढी मुसीबत पड जायगी तो मैं अपना काम निकाल लूँगा। जब अहीर ने यह बात कही तो बिरिन्हिया बोल उठी। कानी अगुली मे अमृत है। वह अमृत घोडे पर छिडक रहा है। जब घोडे की नाक मे अमृत पड गया तो घोडा फिर खडा हो गया। वह पीपरी मे थिरक उठा।

अब अहीर आँगन मे खडा है। बिरिन्हिया से कह रहा है—मुझे ऐसी प्यास लगी है कि मेरा कलेजा दुख रहा है। तुम जरा मुझे ठण्डा पानी का घूँट पिला दो ताकि मेरा शरीर शीतल हो जाय। वह गगरा (घडा) और रस्सी लेकर कुँए की जगत पर गयी। गगरा को जमीन से छोडा और आवाज हुई तो अहीर कुँए पर पहुँच गया। उसने जमा कर बात कही—पानी कितना नीचे है? कितनी गहराई मे है। उसने छोटी गडारी (घिरनी) से घडा डुबाया। लोरिक ने अपनी बिजली की तलवार खींची। फिर तलवार बिरिन्हिया पर गिर पडी। उसकी गर्दन कुँए मे चली गयी। उसका धड जगत पर गिर पडा। अहीर वहाँ से चला और उसने गायो का खोल दिया उन्हें पीपरी से बाहर कर दिया। पीपरी सोने की थी। कोलो ने उसे मिट्टी से पाट दिया था। वहाँ समर की तैयारी होने लगी अहीर ने गायो के पैर खोल दिये। वे पीपरी से दौडी और गाँव की सीमा पर पहुँच गयी। पीपरी मे आग लग गयी। वहाँ का देवसी जगल मे शिकार खेलने गया था। बारह मने का सुअर मार कर उसने उसे कन्धे पर लटका लिया था। उसने पीपरी मे धुँवा उठते देखा तो वह झखने लगा। क्या बिरिन्ही मर गयी है और उसको चिता पर रख दिया गया है। या अहीर पूर्व से लौट आया है जिसने युद्ध करके आग लगा दी है। पीपरी जल रही है। उसने सूअर को रास्ते मे पटक दिया। फिर आगे बढ गया। पशुओ को आगे से

लिया। लोरिक गायों को हाँकने लगा। वहाँ संघर्ष शुरू हुआ। लोरिक ने गायों को हांक कर अपने घोड़े को दौड़ा दिया। कोल देवसिया ने कस कर उस पर वाण मारा। अहीर के पाँव में चोट आयी। जब वह अशक्त हो गया तो देवसी ने उसे अपनी पीठ पर लटका लिया। हत्यारे कोल टांगा लेकर लोरिक की गर्दन काटने दौड़े। उस समय घोड़ा मंगर ने कसकर लोरिक को अपने दांतों में पकड़ लिया और उड़ गया। घोड़ा उड़ते हुए गउरा में आकर गिरा।

अब वहाँ का उस समय का हाल सुनिये। लोरिक आँगन में गिरा। उसके बेटे उसका स्वरूप उसकी हालत देखने लगे। उसके दोनों पैर एक दूसरे से जुड़ गये थे।

भावार्थ—(६०१—१०१८)

अहीर लोरिक के पुत्र ने कहा—मेरे पिता, वीर लोरिक सुनिये। हमें विजली का कारगर धनुष दे दीजिए, संवरू दादा का तेग दे दीजिए। हम आगे बढ़कर कोलों को मारेंगे, तुम्हारा बैर साधेंगे। बच्चों ने धनुष ले लिया फिर गायों के आगे चले गये। उनको एकत्र कर लिया। कल्याणी गाय कोल देवसी को काटते खदेड़ते गउरा गाँव चली। जब गउरा सामने दिखाई पड़ा तो कोल देवसी आड़ में छिप गया बच्चों की नज़र उस पर पड़ी। उन्होंने बाण खींचकर मारा। देवसी वाण ताने रह गया। वह खड़े-खड़े गिर गया। तब मोरिक ने लोरिक से कहा—मेरे पिता लोरिक, मेरी बात सुनिये। आपके बैरी को हमने खेत पर मार गिराया है। चलकर अपना वैर साध लीजिए।

अब वहाँ का, उस समय का हाल सुनिये। बीर लोरिक पालकी पर वैठ गया, कहारों ने उसे उठा लिया। अब वे सीमा पार पहुँचे। देवसिया गिरा था। लोरिक ने देखा कोल अपना तेज धनुष लिये हुए खड़ा है, उसका प्राण अभी शरीर में है। लोरिक ने अपने बेटों से कहा—तुम लोग यहाँ मेरी बात सुनो। मैं तो अपना बैर साध नहीं पाया। अब कोल को मारूँगा ? लड़कों ने कहा—ऐ पिता आप यहाँ खड़े रहिये। हम लोग कोल के पास जा रहे हैं। उन्होंने जाकर उसे तीर से मारा। देवसी भहरा कर गिर गया। लोरिक ने उसकी गर्दन काट दी और अपना वैर साध लिया। फिर घोड़े पर वैठा। दोनों हाथों में छोटे घड़े लेकर वह पीपर के पेड़ पर चढ़ गया। उनमें उसने दूध भर लिये फिर वहाँ से कूदा। घड़ों का दूध हिल गया तो अहीर का मन निराश हो गया। उसने कहा—हे दैव, हे नारायण, हे ब्रह्मा, तुमने मेरे मस्तक में क्या लिख दिया ? मेरा शरीर हल्का हो गया। यदि मेरा पैर कहीं नीचे ऊँचे हो जाय, मुझसे कोई ओछा काम हो जाय, कहीं मस्तक झुक जाय तो देश में बड़ी निन्दा होगी। कलियुग के लोग क्या गीत गायेंगे ? लोरिक गउरा में इस प्रकार की बात कह रहा था। प्रातः काल उसके मन में एक वात उठी। उसने मजदूरों को

बुलवाया और गड्ढा खुदवाया। द्वार पर गड्ढा तैयार हो गया। उसमे उपले कण्डे रख दिये गये। फिर उसमे हविष्य डाल दिया गया। उसे जला दिया गया। घी की आहुति दी जाने लगी। अहीर की समाधि तैयार हो गयी। दुर्गा के स्थान पर जलसा उत्सव होने लगा। दुर्गा वहाँ अभोरिक द्वारा दिया जाने वाला पिण्ड खाने लगी। आग धू-धू जलने लगी। घी की आहुति लपलपाने लगी। अहीर लोरिक उसमे कूद गया और पालकी मे बैठ गया। अहीर ने सीता राम कहा—उनके प्राण निकल गये। बढ़ी हुई आग और बढ़ने लगी। लोरिक का ब्रह्माण्ड जलने लगा। गाँव और घर के लोगो ने मिलकर मुख से 'सीता राम' निकाला। लोरिक अपने स्थान गउरा गुजरात मे जलकर राख हो गया।

□ □

भावार्थ—समाप्त

मूलपाठ की नामानुक्रमणिका



संक्षिप्त पुस्तक सूची

उपाध्याय, कृष्ण देव :

भोजपुरी ग्राम गीत—(भाग १, २) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संवत् २००० ।

उपाध्याय, कृष्ण देव :

भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी १९६० ।

गुप्त, माता प्रसाद :

चांदायन—प्रामाणिक प्रकाशन आगरा, १९६८ ।

चतुर्वेदी, परशुराम :

भारतीय प्रेमाख्यान—भारती भण्डार, इलाहाबाद १९६५ ।

सूफी काव्य संग्रह—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

तिवारी, उदयनारायण :

भोजपुरी भाषा और साहित्य—बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना १९५८ ।

तिवारी, नित्यानंद :

मध्ययुगीन रोमांचक प्रेमाख्यान—नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली १९७० ।

त्रिपाठी, रामनरेश :

कविता कौमुदी—(भाग ५) हिन्दी मंदिर, इलाहाबाद १९२९ ।

परमार, श्याम :

भारतीय लोकसाहित्य—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९५४ ।

पाण्डेय, त्रिलोचन :

कुमाऊँनी लोकसाहित्य की पृष्ठ भूमि—साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद १९७९ ।

पाण्डेय, वैद्यनाथ तथा शर्मा राधावल्लभ :

अंगिका संस्कार गीत—बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना १९६८ ।

पाण्डेय, श्याम मनोहर :

मध्ययुगीन प्रेमाख्यान—इलाहाबाद, (द्वितीय संस्करण) १९८२ ।

पाण्डेय, श्याम मनोहर :

लोकमहाकाव्य चनैनी—साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद १९८२ ।

पाण्डेय, श्याम मनोहर :

लोकमहाकाव्य लोरिकी—साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड, इलाहाबाद १९७९ ।

पाण्डेय, श्याम मनोहर :
सूफी काव्य विमर्श—विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा १९६८।
राकेश, राम इकबाल सिंह :
मैथिली लोकगीत—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग संवत् २०१२।
सक्सेना, बाबूराम :
अवधी का विकास—प्रयाग, हिन्दुस्तानी एकेडमी।
सत्येन्द्र :
जाहर पीर-गुरु गुग्गा हिन्दी विद्यापीठ, आगरा १९५६।
सत्येन्द्र :
ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन—साहित्य रत्न भण्डार, आगरा १९५०।
सत्येन्द्र :
लोकसाहित्य विज्ञान—शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा १९७१।
सिन्हा, सत्यव्रत :
भोजपुरी लोकगाथा—हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद १९५८।
श्रीकृष्ण दास :
लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या—साहित्य-भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद संवत् २०१३।

□ □

A Selected Bibliography

Abraham S. D. Roger and Foss George.
Anglo American folksong style .
New Jersey, Prentice Hall inc, 1966.

Barber, Richard.
The Knight and Chivalry ·
London, Sphere books Ltd. 1974.

Beck Brenda E. F.
The Three Twins
(The Telling of a South Indian folkepic) : Bloomington, Indiana University Press, 1982.

Biebuyck, Daniel and Matteene Kahombo.
The mwindo epic :
From the Banyanga, Congo Republic, Berkley, University of California Press, 1971.

Bowra, C. M.
Heroic Poetry :
London, Macmillan and company Ltd. 1964.

Chadwick, H. M.
The Heroic Age ·
Cambridge, Cambridge University Press, 1975.

Chadwick, H. M., Chadwick Norak.
The Growth of Literature (3 volumes) ·
Cambridge, Cambridge University Press, 1968.

Child, Francis James.
The English and Scottish Popular Ballads (5 volumes) :
New York, Dover Publications, 1965.

Dan Ben Amos and Kenneth S. Goldstein.
Folklore :
(Performance and Communication): the Hague, Mouton 1975

Deg, Linda.
Folk Tale and Society ·
(Story telling in a Hungarian peasant community) : Bloomington, Indiana University Press, 1969.

Dorson, Richard M.
African folklore :
Newyork, Anchor books, 1972.

Dorson, Richard M.
Folklore :
(Selected Essays) : Bloomington, Indiana University Press, 1972.

Dundes, Alan.
Essays in Folkloristics :
Meerut, Folklore Institute, 1978.

Dundes, Alan.
The Study of Folklore :
Englewood, Cliffs, N.J. Prentice-Hall, inc. 1965.

Edmonson, Munro S.
Lore :
(An Introduction to the Science of Folklore and Literature)
Newyork, Holt Rinehart and Winston, Inc. 1971.

Emeneau M. B.
Toda songs :
Oxford, Clarendon Press, 1971.

Finnegan, Ruth.
Oral Literature in Africa :
Oxford, Clarendon Press, 1970.

Finnegan. Ruth.
Oral Poetry :
(Its Nature, Significance and Social Context) Cambridge, Cambridge University Press, 1977.

Ghosal, Satyendranath.
Beginning of Secular Romances in Bengali Literature :
Santiniketan, 1959.

Hayes, E. Nelson and Hayes Tanya (ed).
Claude Le'vi-strauss :
(The Anthropologist as Hero) : Cambridge, Massachusetts, 1970.

Henige, David P.
The Chronology of Oral Tradition .
Oxford, Clarendon Press, 1974.

Jacobs, Melville.
The content and style of an oral literatuie
Newyork, Viking lund Publications in Anthropology, 1959.

Jakobson, Roman.
Selected Writings
Vol. IV. The Hague, Mouton and Co. 1966.

Jan Vansina.
Oral Tradition ·
Harmondsworth, Middlesex, England, Penguin Books Ltd. 1976.

Kailaspathy, K.
Tamil Heroic Poetry ·
Oxford, The Clarendon Press, 1968.

Ker W. P.
Epic and Romance ·
(Essays on Medieval Literature) : Newyork, Dover Publications, 1957.

Kunene, D. P.
Heroic Poetry of Basotho :
Oxford, Clarendon Press, 1971.

Levi Strauss, Claude.
From Honey to Ashes :
Translated from the French by John and Doreen Weightman.
London, Jonathan Cape Ltd. 1973.

Levi Strauss, Claude.
The Raw and the Cooked ·
Translated from the French by John and Doreen
London, Jonathan Cape Ltd. 1969.

Levi Strauss Claude.
The Savage Mind :
London, Weidenfield and Nicolson, 1974.

Levi Strauss, Claude.
Structural Anthropology :
Translated from the French by Claire Jacobson and Brook Grundfest Schoepf, England, Penguin Books, 1972.

Lomax Alan.
Folksong Style and Culture :
Washington, American Association for the Advanced Science, 1968.

Lord, Albert.
The Singer of Tales :
Newyork, Athenaeum Edition. 1965. Maranda Elli Kongas and Maranda Pierre.

Structural Models in Folklore and Transformational Essays :
The Hague, Mounton, 1971.

Neto, Carvalho.
The Concept of Folklore :
Translated from Spanish by Jacques M. P. Wilson, Florida, University of Miami Press, 1971.

Niane.
Sundiata :
(An Epic of Old Mali) : Translated by G. D. Pickef. London, Longmans Green and Co. Ltd., 1969.

Oinas, Felex J.
Heroic Epic and Saga :
Bloomington, Indiana University Press, 1977.

Pandey, Shyam Manohar.
Abduction of Sita in the Ramayana of Tulsidasa :
Orientalia Lovaniensia Periodica, Leuven, Belgium, 1977, Vol. 8.

Pandey, Shyam Manohar.
Maulana Daud and his Contributions to the Hindi Sufi Literature :
Annali Istituto Universitario Orientale, Napoli. Italy, 1978 (3S—1).

Pandey, Shyam Manohar.
The Hindi Oral Epic Loriki
Allahabad, Sahitya Bhawan Private Ltd. 1979.

Pandey, Shyam Manohar.
Some Problems in Studying Candayan :
In current research in early bhakti literature, Le[illegible], [illegible].
1980.

Pandey, Shyam Manohar.
Hindi Oral Epic Canaini :
Allahabad. 1982.

Pandey, Shyam Manohar,
Love Symbolism in Candayan :
In Bhakti in current research, (ed.) [illegible]
Berlin, 1983.

Paredes, Americo and Bauman Richard [illegible]
Towards new perspectives in fo[illegible]
Austin, the University of Texas [illegible]

Parry, Adam (Ed.).
The making of Homeric Ve[illegible]
(The collected papers of [illegible]

Parry, M. and Lord A. (Ed.).
Serbo Croatian Heroic S[illegible]
Vol. I, Massachusetts. [illegible]

Propp V.
Morphology of the [illegible]
Austin, Univer[illegible]

Roghair Gene H.
The epic of P[illegible]
(A study [illegible]
Clarend[illegible]

Sen, Suku[illegible]
Vip[illegible]
Cal[illegible]

Sidhanta N. K.
The Heroic Age of India :
London, Kegan Paul, Trench Trubner and Co. Ltd. 1929.

Sokolov, Y. M.
Russian Folklore :
Detroit Folklore Associates, 1971.

Thompson Stith.
The Folktale :
Berkley, University of California Press, 1977.

Thompson Stith.
Motif Index of Folkliterature :
6 Volumes. Bloomington, Indiana University Press, 1966.

Thompson Stith and Roberts, Warren, E.
Types of Indic Oral Tales :
Helsinki, 1960.

Watts, Ann Chalmers.
The Lyre and Harp :
(A Comparative Reconsideration of Oral Tradition in Hom and old English Epic Poetry), New haven, Yale Universit Press, 1969.

Wimberly, Lowry Charles.
Folklore in the English and Scottish Ballads :
Newyork, Dover Publications, 1965.

